यह पञ्चाङ्ग ... आफ इण्डिया में रजिस्टर्ड हो चुका है, अतः कोई महाशय इसके किसी भी मजमून की नकल करने का साहस न करें। रजिस्टर्ड नं० २८४

श्री बघाटमहीमहेन्द्र "धर्ममार्तण्ड"

पँवारकुलभूषण श्रीमद्राजाधिराज
श्री १०५ दुर्गासिंहजी बहादुर, C. I. E.
सोलन

हृदन्तरज्ञानतमोवितान-निवारणं पण्डितमण्डलीडयम् ।
त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयखं 'मार्तण्डपञ्चांग' मिदं चकास्तु ॥

सार्वदेशिक सर्वोत्प सर्वाङ्गशुद्ध पञ्चाङ्ग

श्रीगणेशाय नमः

मार्तण्ड के उदय से जगमग हुआ आकाश ।
क्या तारा क्या चन्द्रमा सबका छुपे प्रकाश ॥

श्रीलक्ष्म्यै नमः

सन् 1955-56

राजा भृगुः

मन्त्री बुधः

बघाटमहीमहेन्द्रधर्ममार्तण्ड श्री १०५ दुर्गासिंहवर्मभिः संरक्षितम्

ऋपगढ़ीया (ऋपड़) क्षवृत्तीयं दृग्गणितैक्यविषयं

अलंकृतम् धर्मशास्त्रसम्मतं च

भारत के विख्यात पञ्चाङ्गकर्ता
एवं ग्रन्थकार

दैवज्ञरत्नराजज्योतिषी
श्री पं० मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य
कुराली (पंजाब)

BAGHAT

श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्गम्

PANCHANG

श्रीविक्रमार्कीय सं० २०१२ शके १८७७ सन् १९५५-५६ ई०, जयहिन्द सं० ८ (१५ अगस्त से ९)

गुरुवर्य्य श्री ६ पुण्यपाद कै० वा० गोविन्दसदाशिव आपटे एम. ए. बी. एस. सी. गणकचक्रचूडामणीत्याद्युपाधिधारिणाम एवञ्च श्रीजयपुरमहाराजाश्रित-सिद्धान्तपञ्चाननपूज्यश्री ६ पं० केदारनाथसाहित्यभूषणज्यौतिषपञ्चालयाध्यक्षाणां शिष्येण श्रीमद्दैवज्ञवर्य पं० रामचन्द्रात्मजेन पञ्चाम्बुदेशान्तर्गतकुरालीनिवासिना बघाटराजा-श्रितेन ज्यौतिषाचार्य्येण श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मणा विरचितम् । गणितकर्त्तारौ—सा० स्याचार्यश्रीसत्यव्रत-प्रियव्रतशास्त्रिणौ ।

बांकीपुर पटना ❀ मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, पो० बक्स ७५, बनारस । ❀ किनारी बाजार देहली

विषय-सूची

आशीराशंसना

जयन्ति श्रीमहाविद्यापादपङ्कजरेणवः ।
यत्कृपालेशमात्रेण रङ्को राजति सत्वरम् ॥१॥
श्रीदुर्गासिंहवर्माख्यो राजा राजगुणैर्युतः ।
सनातनी धर्मधुरं, वहन् भागवतोत्तमः ॥२॥
बघाटेशः सोलनाख्य[1] राजधान्यामुदारधीः ।
राजते धर्ममार्तण्डो गोविप्रगणपूजकः ॥३॥
निदेशात्तस्य राजर्षेरिदम्पञ्चाङ्गमुत्तमम् ।
प्रसूत्य मार्तण्डसममज्ञानान्ध्यं व्यपोहतु ॥४॥

१. पुरानवपलान्यस्ति रेखातः सोलनं पुरम् ।
यत्र रुद्रव्यङ्गुलाद्रि (७।११) मितांगुलप्रभा ॥

श्री १००८ आनन्दमयी मां

पात्रे भवाग्निघनतापविमुक्तिदायै
श्रद्धावनम्रमनसां शरणागतानाम् ।
आनन्दच भक्तिमभिता सततं ददत्यै
आनन्दसान्द्ररुचिराकृतये नमस्ते ॥—सत्यव्रत

भारत के उपराष्ट्रपति महामान्य डा० सर श्रीराधाकृष्णन महोदय की श्रीमार्तण्ड-पञ्चाङ्ग पर सम्मति—

Vice-President's Secretariat
New Delhi.

Dear Shri Sharma,

Thank you for your letter & a copy of Shri MARTAND PANCHANGAM, which I glanced throughout with interest.

3–2–53

Yours Sincerely
S. Radha Krishnan

पञ्चाङ्ग कर्ता के सुपुत्र—उपसम्पादक

अवतरणिका

श्री पिता[illegible] (प्रधान सम्पादक) ने किया है, और गणितादि का सम्पूर्ण [illegible]

अवतरणिका

"ज्योतिश्चक्रस्य केन्द्राय जगतः स्थितिरूपिणे। त्रिनेत्रनेत्ररूपाय ग्रहेशाय नमो नमः॥"

इस पृथिवी क यायम्योत्तरीय दोनों ध्रुवों के मध्य समानान्तर में जिस वृत्त की कल्पना है उसे विषुवद्वृत्त कहते हैं, और सूर्य के गमन मार्ग को क्रान्तिवृत्त कहते हैं। यह क्रान्तिवृत्त जहां विषुवद्वृत्त को काटता है उसे अयन सम्पात कहते हैं। यह वर्ष में दो बार होता है, एक सायनमेष संक्रान्ति के समय वसन्तसम्पात दूसरा सायनतुला संक्रान्ति के समय शरत्सम्पात। यह भचक्र रेवती के अन्तिम भाग से २७ अंश दोनों ओर जाकर लौटता है। एक बार में २६००० वर्ष का समय लगता है। रेवती योग तारा से जो सम्पात की दूरी है उसे अयनांश कहते हैं "स्फुटदृक्तुल्यतां गच्छेदयने विषुवद्द्वये।" सायन कर्कसंक्रान्ति और सायन मकरसंक्रान्ति एवं सायन मेषसंक्रान्ति तथा सायन तुलासंक्रान्ति के समय अयन चलन स्पष्ट दीखता है। इसी अयन चलन एवं वेधोपलब्ध अयनांश तथा आरम्भ स्थान सम्बन्धी मतभेद होने से आज ज्योतिष संस्थाओं में मतभेद बढ़ता ही जा रहा है। इसी का यह परिणाम है कि प्रायः दाक्षिणात्यों के पंचाङ्गों में मलमास संक्रान्ति निरयन ग्रहों में बहुधा अवाञ्छनीय अंशों तक का अन्तर देखने में आता है। इसी अयनांश को बहुधा १९ से लेकर २४ तक माननेवाले देखे जाते हैं। परन्तु हमने आर्ष वाक्यों का समादर कर पञ्चाङ्गनिर्माण को एक महान् एवं लौकिक व्यवहार तथा धर्म का प्रधान उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य समझते हुए श्री मार्तण्ड पञ्चाङ्ग में सूक्ष्म अयनांश का साधन करने में सम्प्रति बहुसम्मत चित्रापक्षीय मत को और श्री १०५ धर्म मार्तण्ड बघाटनरेशजी के आदेशानुसार धर्म-शास्त्र सम्मत तिथ्यादि साधन में अदृश्य (आर्ष) गणना को ही स्वीकार किया है। आचार्य कमलाकर ने अपने सिद्धान्ततत्त्वविवेक में लिखा भी है—

"अदृष्टफलसिद्ध्यर्थं यथार्काद्युक्तितः कुरु। गणितं यदि दृष्टार्थं तद्दृष्टं युग्भवः सदा॥"

शाकल्यसंहिता में भी—

"तिथ्यादिसाधने बर्ष्यावि नार्केन्द्वोर्बीजयोगिता। राहुदर्शनतोऽन्यत्र दृक्सिद्धा नेष्यते तिथिः॥"

उधर स्पष्टग्रहों के विषय में फलितज्योतिष के श्री केशवाचार्यादिकों ने "यत्पक्षे हि घटन्तु" तथा "यान्ति संसाधिताः खेटा येन दृग्गणितैक्यताम्" इत्यादि लिखकर वर्ष प्रश्न के लिये तात्कालिक दृक्पक्षीय गणित को ही स्वीकृत किया है। तदनुकूल हमने भी सर्व ध्रुवे के अनुसार विशेष परिश्रमपूर्वक दृक्पक्षीय दैनिक सूक्ष्मग्रह स्पष्ट करके लिखे हैं जो यन्त्रों द्वारा वेध करके आकाश में प्रत्यक्ष दिखाये जा सकते हैं। जो दैनिक ग्रहों के साथ लिखा हुआ सूर्य है वह वेधोपयोगी दृक्पक्षीय है, और तिथ्यादि के सामने लष्टर में जो दैनिक सूर्य लिखा हुआ है वह सूर्यसंक्रमण एवं क्षयाधिकमासनिर्णयार्थ सौरपक्षीय है, इस वर्ष दृक्पक्षीय अनार्षगणितागत सूर्य के अनुसार अधिकमास आश्विन आता है और सूर्यसिद्धान्तीय गणित से भाद्रपद। सो निम्नलिखित वाक्य को दृष्टिगोचर रखते हुए भाद्रपद ही अधिकमास शास्त्रसम्मत सिद्ध होता है। क्योंकि महाकवि कालिदासजी ने लिखा है—

"श्रीसूर्यसिद्धान्तमतोद्भवार्कात्साध्यौ तदा तावधिकक्षयाख्यौ।
मासौ तथा सङ्क्रमकाल एव साध्यः सदा हौरिकशास्त्रविद्भिः॥"

[प्रश्न मुहूर्तादिक में चन्द्रमा का स्पष्ट नवांशादि देखने के लिए दस दस घटी के अन्तर पर (दिन में ६ बार) सौरपक्षीय चन्द्रस्पष्ट भी कठिन परिश्रम करके लिखा है, जोकि आप को अन्य किसी भी पञ्चांग में नहीं मिलेगा।

इस पञ्चांग का फलित लेखन एवं अन्य उपयुक्त विषयों का सङ्कलन मेरे पूज्य श्री पितृ[illegible] (प्रधान सम्पादक) ने किया है, और गणितादि का सम्पूर्ण [illegible] ने किया है। यद्यपि मैंने श्रीपूज्य ज्येष्ठ भ्राता साहित्याचार्य श्री सत्यव्रतजी शास्त्री कविवर्य के तत्त्वावधान में सम्पूर्ण गणित किया है, तथापि यह अङ्कजाल बड़ा ही गहन है, अतः कदाचित् "गन्तुर्हि स्खलनं भवेत्"—"भ्रान्तिर्मनुष्यधर्मः" इस न्याय से प्रमादवश कोई त्रुटि अथवा लिखने छपने की कोई अक्षम्य अशुद्धि रह गई हो तो उसे विद्वान् निर्मत्सर हो दयार्द्रदृष्ट्या सुधार कर अपने नूतन सुझाव के साथ सूचित करने की कृपा करें यही नम्र निवेदन है।

निर्मत्सराणां सतामनुचरः—

श्री मार्तण्डभवन कुराली (अम्बाला) वै. शु. ५ सं. २०११	प्रियव्रतशर्मा शास्त्री (पञ्जाब) साहित्याचार्य- (राजस्थान) सिद्धान्त ज्योतिष- शास्त्री (काशी)

❋ कात्यायनोक्त नक्षत्रों के समर्थक ❋

महोदयो! आपको यह विदित ही है कि गत वर्षों के पञ्चाङ्गों में हमने कात्यायनोक्त नक्षत्रों के विषय में धर्मसिन्धु सत्कृत्यमुक्तावली के प्रमाण लिखे थे और काशीस्थ पण्डित-सभा का व्यवस्थापत्र भी छपाया था। अब इस विषय में विशेष पिष्टपेषण न करते हुए केवल "मुहूर्तमार्तण्ड" संस्कृत व्याख्या सहित के पृष्ठ ३३ के नीचे लिखी हुई कुछ पंक्तियां उद्धृत करते हैं "अश्विनी-चित्रा-श्रवण-धनिष्ठास्वपि साङ्गो विवाहः प्राचीनज्योतिष-संहिताग्रन्थेभ्यः सर्वेभ्यश्च गृह्यसूत्रेभ्यो निर्विवादं लभ्यते सिद्धान्तश्चैष प्रायः सर्वेषां प्रधान-पण्डितानां, प्रमाणानि तु अश्विनीतिलकादिषु संगृहीतानि द्रष्टव्यानि" (यह पुस्तक निर्णयसागर प्रेस मुंबई में ईस्वी सन् १९२५ में छपी है देखकर भ्रमनिवृत्त करें) अब आगे उन दूरदर्शी विद्वान् पंचांगकर्ताओं तथा शास्त्रपारंगत महामहोपाध्यायादि धुरन्धर विद्वानों के नाम लिखते हैं जिन्होंने सम्मतिपत्र भेजकर चित्रादि में विवाहमुहूर्त हो सकते हैं, ऐसा सप्रमाण सिद्ध किया है। यदि उन पत्रों को छपाया जावे तो एक पुस्तक तैयार हो सकती है। स्थानसंकोच से उनके नाममात्र लिखते हैं—

(१) म. म. श्री मथुरा प्रसादजी दीक्षित, प्रतापविजयादि के लेखक।
(२) सिद्धान्त पंचानन पं. केदारनाथ जी राजपण्डित, जयपुर।
(३) म.म. श्री नारायणशास्त्री खिस्ते (भूतपूर्व प्रिन्सिपल गवर्नमेन्ट संस्कृत-कालेज, बनारस)।
(४) श्री गणपतिशास्त्री मोकाटे व्याकरणाचार्य (भूतपूर्व प्रो०—ग० सं० कालेज, काशी)।
(५) श्री गोपालशास्त्री नेने व्याकरणाचार्य (भू. पू. प्रधानाध्यापक—ग० सं० कालेज काशी)।
(६) श्री ताराचरणशर्म भट्टाचार्यः (प्रिन्सिपल—टीकमणि संस्कृत कालेज, काशी)।
(७) श्री यागेश्वरपाठकः दैवज्ञवाचस्पति (अध्यक्ष—शारदाज्योतिर्महाविद्यालय, बनारस)।
(८) पं० श्री नीलकंठज्यौतिषी (प्रधान ज्योतिश्शास्त्राध्यापक-साङ्गवेदमहाविद्यालय, बनारस)
(९) श्री ढुण्ढिराजशास्त्री न्यायाचार्यः (प्रधानाध्यापक—नित्यानन्दवेदविद्यालय, बनारस)।
(१०) श्री अनन्तशास्त्री फड़के, व्याकरणपुराणेतिहासाचार्य (प्रो०—ग० सं० कालेज, बनारस)।
(११) श्री गौरीनाथपाठकः साहित्याचार्यः (प्रधानमन्त्री—पण्डितसभा, काशी)।
(१२) श्री विश्वनाथमिश्रः दैवज्ञवाचस्पति, काशी। (१३) श्रीरामचन्द्रशास्त्री खनङ्गःमीमांसाचार्यः (हिन्दूविश्वविद्यालयः, काशी)। (१४) श्री लालचन्द्र वैद्यः (प्रिन्सिपल—अर्जुन आयुर्वेद-विद्यालयः, काशी)। (१५) श्रीमाधवाचार्य शास्त्री, कविसम्राट् शास्त्रार्थमहारथी, कौल।
(१६) श्री पं. मदनमोहन शास्त्री, ज्यो. चा., सम्पादक पञ्चाङ्ग. कल्पद्रुम, जम्मू।
(१७) श्री पं० बंशीधर जी, ज्यो. भू., गणितमार्तण्ड (सं. जयपुर पञ्चाङ्ग)।
(१८) श्रद्धेय श्रीमहाकाल पञ्चाङ्गकर्ता, अवन्तिका।

(१९) श्री पं० विशुद्धानन्द ज्यो. चा. (चिन्तादलन पञ्चाङ्गकर्ता)। (२०) श्री पं० हंसराज कपिल, ज्यो. चा., हरयाना (पंचाङ्गकर्ता)। (२१) श्री पं. गिरधारीलाल ज्यो., (श्रीसूर्य-पंचाङ्गकर्ता)। (२२) श्रीदेवशीवीरजी खोना, पंचाङ्गकर्ता (सौराष्ट्र) (२३) श्री कृष्णजी विट्ठल सोमाणी (पंचाङ्गकर्त्ता)। (२४) श्री हरिहरभट्ट (पञ्चाङ्गकर्ता)। (२५) श्री वेदशास्त्रसम्पन्न श्रीमणिशंकरशर्म्मा (पंचाङ्गकर्ता)। (२६) श्री पं० मेदिनीधर शर्म्मा पंचाङ्गकर्ता (गढ़वाल)। (२७) श्री पं० हरदेवशर्म्मा त्रिवेदी विश्वविजय पंचांगकर्ता। (२८) श्री पं. मदनमोहन शर्म्मा स्यालकोटी, पंचांगकर्ता, देहली। (२९) श्रीमान् श्रद्धेय राजपण्डित नुल्करराज शर्म्मा (पटियाला)। (३०) श्री. पं. अच्युतानन्दजी झा, ज्योतिषाचार्य, नु. दाथ (दरभंगा)। (३१) श्री पं. ठाकुरदत्तशर्म्मा पुंछ (काश्मीर)। (३२) श्री पं० कुबेरदत्तजी शास्त्री, उपाचार्य, श्री. रा. कृ. महाविद्यालय, खुर्जा।

कात्यायनोक्त नक्षत्र चतुष्टयी में विवाहमुहूर्त लगाने में निम्नलिखित धुरन्धर विद्वान् भी सहमत हैं—जैनमुनि श्री विकाशविजयजी महाराज। महामना पूज्य स्व० मालवीयजी के सहयोगी ज्योतिषरत्न श्री पं० रामेश्वर मिश्र, सिद्धेश्वरी काशी। श्री पं० देवदत्तजी राजज्योतिषी पटियाला। श्री पं० रविदत्तजी ज्यो० कालका। श्री नर्मदाशंकर कृष्णाराम दर्शनशास्त्री पंचाङ्गकर्ता अहमदाबाद। श्री शंकरलाल छगनजी धर्मशास्त्री पंचाङ्गकर्ता अहमदाबाद। श्री पं० पुलस्त्यरामजी ज्योतिषी पंचाङ्गगणितज्ञ खन्याण (नाभा)। श्री पं० श्रीगोपाल शास्त्रीजी मोरिण्डा। श्री पं० हरिभानुदत्त शास्त्रीजी तथा श्री पं० लक्ष्मीदत्तजी ज्योतिषी कथारत्न तथा श्री गुरमुखरायजी वैद्यराज तथा पं० ज्ञानचन्द्रजी जैतली अमृतसर। श्री पं० हरिदत्तजी शास्त्री ज्योतिषी गढ़वाल। श्री पं० अभयानन्दजी शास्त्री सूर्यपुर (पेप्सू) श्री पं० परमानन्दजी वेदपाठी तथा श्री पं. शिवकुमारजी कमंठ चरणियां। गणकरत्न श्री पं० वंशीधरजी शास्त्री मु० डटोह (बिलासपुर) श्री पं० रक्खारामजी शर्मा शाण्डल्य मु० पोसी (होश्यारपुर)। श्री पं० टीकारामजी वेदाचार्य प्रो० वेदविद्यालय खुर्जा। श्री पं० दयालु-चन्द्रजी शास्त्री मुलतानी। श्री पं० चन्द्रमणि ज्यो० मु० बडोह (होश्यारपुर) श्री पं० लज्जारामजी सं० सरहिन्द। श्री पं० फकीरचन्द्रजी पराशर तंत्रशास्त्री बाजार आखाड़ा कुल्लू। श्री पं० बहादुरचन्द्र शास्त्री अबोहर। श्री पं० धर्मानन्दजी ज्यो० कनखल। श्री पं० शंकरदत्त ज्यो० मुमाड़ी गढ़वाल।

ऐसे ही अमृतसर के निम्नलिखित विशिष्ट विद्वानों ने भी सम्मतिपत्र भेजकर समर्थन किया है—

श्री पं० मिहिरचन्द्रजी शास्त्री निरुक्तभाष्यकार प्रधानाध्यापक संस्कृत कालेज, श्री पं० लब्भूरामजी प्रो० सं० कालेज। श्री पं० रक्षारामजी शर्म्मा प्रिन्सिपल, श्री सागरमल्ल कालेज। श्री पं० देवीदत्त शास्त्री, वाइस प्रि० हिन्दूसभा कालेज। श्री पं० बालकनाथ जी जेतली प्रधान। श्री पं० रलियाराम जी शास्त्री, प्रधानाध्यापक पी० बी० हाईस्कूल। श्री पं० वासुदेवजी वै. रा. कर्मकाण्डकलानिधिः। श्री पं० किशोरी-लाल जी वै. क. दैवज्ञ। श्री पं० देवीचन्द्र जी वेदपारङ्गत। श्री पं० सत्यपाल जैतली कर्नट ज्यो.। श्री पं० हरिकृष्ण शास्त्री ज्योतिष-कर्मकाण्ड पारङ्गत।

अबोहरमंडी से श्री पं० हजारीलाल ज्यो. लिखते हैं कि—

यहां की ब्राह्मण सभा ने विवाहार्थ चित्रादि चार नक्षत्रों को हृदय से स्वीकार किया है॥ श्री चामुण्डानन्दिकेश्वर ज्योतिषकार्यालयाध्यक्ष शेराठाणा जिला कांगड़ा के प्रधान ज्योतिश्शास्त्रवेत्ता श्री पं० बदरीदत्त ज्यो. अवस्थी लिखते हैं कि—"सद्गुणयुक्त नक्षत्रों के अभाव में आवश्यकता में इन (चित्रादि) सम नक्षत्रों में विवाह किया जाना युक्त है और उसके लिये सूत्रग्रन्थ बलवत्प्रमाण उपस्थित हैं, प्रायः मुहूर्तों में हमें पक्षत्रय का दर्शन होता है ग्राह्य, अग्राह्य और सम जब ग्राह्य का अभाव हो तो सम ही लिया जाता है वह मुहूर्त दोषयुक्त नहीं होता है, इत्यादि॥

इसी तरह श्रीयुक्त श्रद्धेय श्रीधर मायाधारी जी शास्त्री सभापति ज्योतिष सम्मेलन हिन्दूसभा कालेज अमृतसर से भी २४-८-५३ को सम्मतिपत्र कात्यायनोक्त वैवाहिक नक्षत्रों के समर्थन में मिला है। स्थानाभाव से नकल नहीं दे सके। ज्योतिश्शास्त्र के महा-विद्वान् श्री सीतारामजी झा ज्यो. आ. काशी वाले भी इन नक्षत्रों का समर्थन करते हैं।

नोट—चित्रावतुष्टय नाटक का उत्तर देखने के लिये "भ्रमभञ्जन नाटक" पृष्ठ ११५ पर पढ़िये।

मन्त्रों का अद्भुत चमत्कार

मननात्त्रायते यस्मात्तस्मान्मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात्सिद्धिर्जपात्सिद्धिर्जपात्सिद्धिर्न संशयः॥

मंत्र ऐसे दिव्यशब्दों का समूह होता है कि जिनके दृढ़ इच्छा शक्ति पूर्वक उच्चारण मात्र से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं, थोड़े शब्दों में इसी का नाम मंत्र है। इसमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारणमात्र से शून्य महाकाश में एक विचित्र कंपन (स्वर लहरी) उत्पन्न होता है। जिसमें रचना करने की तथा इच्छित वस्तु को आकर्षित करने की बड़ी प्रबल शक्ति होती है और वह मानसिक तथा भौतिक आकृतिपर आश्चर्यजनक प्रभाव डालनेके साथ-साथ जिन कामों को हम असंभव समझते हैं या वर्षों में भी नहीं कर सकते। उन्हें वह दिव्यशक्ति चन्द मिनटों में पूर्ण कर सकती है।

मन्त्र शास्त्रों का कथन है कि वेदमन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तांत्रिक मन्त्रों को भगवान् शिव ने शक्तिमान् बनाया। इसी तरह कलियुग में शिवावतार श्री शाबर-नाथजी ने शाबरमंत्रों को अद्भुत शक्ति प्रदान की है। मंत्र का पुरश्चरण करते हुए गुप्त रक्खे, प्रकट करने से उस किये हुए पुरश्चरण का प्रभाव कम वा नहीं के बराबर रह जाता है। ऐसी गलती होने पर पुनः गुप्तरीति से पुरश्चरण करें अत्युत्कट प्रभाव होगा।

शाबरी मन्त्रों के चमत्कार—कलियुगी क्षुद्रजीवों के उपकारार्थ श्री शाबरनाथजी ने शाबरीमन्त्रों का निर्माण किया है। शाबरीमंत्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है जिसके प्रायः कोई अर्थ नहीं होते परन्तु श्री शंकरजी के प्रताप से वह असर से खाली नहीं है। श्री गो० तुलसीदासजी ने इस विषय में क्या ही अच्छा कहा है—

अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेशप्रतापू॥

नोट—स्मरण रहे इन मंत्रों को जैसा लिखा वा बतलाया गया हो वैसा ही जपना और बोलना चाहिये। अपनी बुद्धि के घोड़े दौड़ाकर किसी शब्द वा अक्षर को न्यूनाधिक न करें।

—: यंत्र-विज्ञान :—

अनन्त अज्ञात प्रकृति के अन्तराल में मानवज्ञान से परे कितनी अपार एवं महाशक्तियां छिपी पड़ी हैं इसकी गणना, कौन कर सकता है? मनुष्य ज्ञानके उस अपार सिन्धु के किनारे भटकता रहता है, और कभी एक दो पुलिन पर पड़े सीप या मोती पा जाता है, वह समझता है कि बस यहीं समाप्त है इतना ही सब कुछ है, महर्षियों की कठोर साधना ने उन्हें जहां पहुँचा दिया था, वहां उनके लिये स्थूल और सूक्ष्म के सारे रहस्य हस्तामलक-वत् थे। प्रकृति के उदर का विशाल प्रान्त उनकी दृष्टि के सामने अनावृत था। उन्होंने उससे [illegible]

[illegible] हुआ, प्रसंगवश जितने की आवश्यकता पड़ी उसे वे जगत् में प्रगट कर गये। यंत्रविज्ञान उन तपोमूर्त्ति ऋषियों की एक उदार देन है, पुरश्चरण के बाद उसके

वह दूध [illegible] देने लगेगी और बच्चा भी लगाने लगेगी। कुमारी कन्या को [illegible] पिलावे।

[illegible] हुआ, प्रसगवश जितने की आवश्यकता पड़ी उसे वे जगत् में प्रगट कर गये। यत्रविज्ञान उन तपोमूर्त्ति ऋषियों की एक उदार देन है, पुरश्चरण के बाद उसके अन्दर एक महाशक्ति उत्पन्न होती है। ऋषियों ने बतलाया है कि कामना या उद्देश भेद से एक ही यंत्र विभिन्न वस्तुओं से विभिन्न पदार्थों पर सीधे वक्त उलटे आदि क्रमों से बनाया जाता है जैसा उद्देश होता है वैसा ही विधान के अनुसार ये यंत्र रेखाचित्र या मण्डलाकृति से बनाये जाते हैं किंबहुना मन्त्रकी भांति यंत्र भी एक स्वतंत्र एवं शक्तिशाली विज्ञान है। जिन कार्यों में औषधि और मानवी बुद्धि असमर्थ हो जाती है, वह भी श्रद्धापूर्वक सिद्ध किये यंत्रों द्वारा बड़ी सरलता से सिद्ध होते देखे गये हैं।

बच्चे के पसली (डिब्बा) रोग का मन्त्र

डिब्बा रोग से सैकड़ों बच्चे अकाल काल के ग्रास बनते हैं। इस रोग के लिये यह मन्त्र अद्भुत प्रभाव रखता है।

समुद्र किनारे सुरागाय, सुरागाय के पेट में बच्चा, बच्चे के पेट म डिब्बा। डिब्बा कटे सरकंडा बढ़े। दुहाई लूनिया चमारीकी छूत॥ विधि—एक सरकंडा १४ अंगुल जिसमें जड़ भी हो, जड़ की ओर से मन्त्र पढ़कर छू कहते हुए फूक मारकर ३ बार नापो, सरकंडा बढ़ जावेगा, बढ़े भाग को काट दो, यह क्रिया दिन में ३ बार करो जब तक रोग रहे, उतने दिन करो। बच्चा इस भयानक रोग से बच जावेगा। ग्रहण में जप करके पहिले सिद्ध कर लेवे।

आधे सिरदर्द का मन्त्र—आधे सिर का दर्द बड़ा ही भयानक है। निम्नलिखित मन्त्र से दर्द दूर हो जावेगा और वह आपका कृतज्ञ रहेगा।

मन्त्र यह है—ॐ वन में फिरे अन्जनी कच्चे फल खाय, हांक मारूं हनुमन्त की "अमुक" का आधा सीसी जाय, फुरो मन्त्र ईश्वर बिचे मेरे गुरु का शब्द सांचा॥ विधि—सारे मस्तक पर अगूंठा और अंगुली से बीच की खाल खींचे विभूति लगावे और मन्त्र पढ़ता जावे ७ बार।

पहले दिवाली को जप करके सिद्ध कर लेवे।

यंत्र आधे शिर का इस यंत्र को ग्रहण में लिखकर चलते जल में गेर कर सिद्ध कर ले पीछे अनार की कलम स्याही से लिखकर धूप दे शिर में बांधे तो आधा शिर दर्द दूर हो। बच्चों को मिठाई देवे।

५३	४२
३११	७०

दांतदाढ़ के दर्द का अद्भुत मन्त्र—जिस मनुष्य की दांत या दाढ़ में दर्द होता है उसे दिन-रात चैन नहीं पड़ता बहुत से मनुष्य उस दांत या दाढ़ को निकलवा देते हैं। यह मन्त्र दर्द को शीघ्र दूर कर के रोगी को सुख की नींद सुला देता है।

मन्त्र—डांक कीलूं डिका वाली कीलूं सात तरह की दाढ़ कीलूं और कीलूं चकपैया इसकी दाढ़ बन्द हो जाय फुरो मन्त्र ईश्वर बिचे मेरे गुरु का शब्द सांचा॥ विधि—एक लोहे की कील से झाड़कर उस कील को जमीन में गाड़ दे या दबा दे।

सूचना—इस मंत्र को भी दिवाली या ग्रहण में जप लेवे तो चलेगा।

यंत्र गौ भैंस दुग्ध देवे।

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	२९	८	१
४	५	३०	१३

विधि—इस यंत्र को दिवाली की रात को लिख लिखकर धूप देता रहे पीछे जल में प्रवाह दे उसके बाद जब किसी की गौ या भैंस दुग्ध न देवे और ना ही बच्छा लगावे तो इस यंत्र को शुद्धकेशर अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखकर गौ हो तो गले में और भैंस हो तो दायें सींग में गुग्गल की धूप देकर बांधे तो वह दूध [illegible] देने लगेगी और बच्छा भी लगाने लगेगी। कुमारी कन्या को दूध पिलावे।

सिद्ध आकर्षण विधान

घर से कोई स्त्री पुरुष या बालक रूठ कर चला गया हो या विदेशी घर आने का विचार न रखता हो तो निम्नलिखित विधान उस व्यक्ति को लौटाने में अमोघ सिद्ध होता है, कुम्हार के घर से स्वयं जाकर एक नया पक्का घड़ा जो कहीं से फूटा टूटा न हो ले आइये और साथ ही एक कसोरा भी, स्मरण रहे कि उनमें कहीं काला दाग न हो। घड़े के ऊपर और कसोरे के बीच में निम्नलिखित नवार्ण मंत्र का यंत्र केशर से लिखिये, और साथ ही एक यंत्र भोजपत्र पर लिख कर उसी घड़े में डाल दीजिये और तांबे के ४ पैसे भी, कम ज्यादा नहीं। कसोरे से ढक कर घड़े को बाईं ओर घुमाइये और यह मंत्र पढ़िये।

"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे" सात बार घुमाकर घड़े को एकान्त में रख दीजिये ऐसे सात रोज करे, सात दिन में ही वहां से वह व्यक्ति चल पड़ेगा या अपना पता भेज देगा। इस आकर्षण विधान करने से पहले उपरोक्त मंत्र को ब्रह्मचर्य पूर्वक सवालक्ष जप लेवे और यंत्र को भी दिवाली की रात को लिख कर चलता कर लेवे फिर देखो चमत्कार।

ऐं	ह्रीं	क्लीं
डा	मु	चा
यै	वि	च्चे

ॐ अस्य श्री शीतलामन्त्रस्य उपमन्यु ऋषिः बृहतीछन्दः श्री शीतला देवता विस्फोटक-शान्त्यर्थे जपे विनियोगः॥

ऋष्यादिन्यासः—ॐ उपमन्यु ऋषये नमः शिरसि। ॐ बृहती छन्दसे नमो मुखे। ॐ श्री शीतलादेवतायै नमो हृदि। ॐ विस्फोटकशान्त्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे। मूलेन करौ प्रमृज्य॥ करषडङ्गन्यासौ॥ ॐ ह्रां श्रां अङ्गुष्ठाभ्यां (हृदयाय) नमः। ॐ ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां (शिर से) स्वाहा। ॐ ह्रूं श्रूं मध्यमाभ्यां (शिखायै) वषट्। ॐ ह्रैं श्रैं अनामिकाभ्यां (कवचाय) हुम्। ॐ ह्रौं श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां (नेत्रत्रयाय) वौषट्। ॐ ह्रः श्रः करतल करपृष्ठाभ्यां (अस्त्राय फट्)॥ वैकट् का हृदयादि न्यास करन्यास से पीछे करे।

ध्यानम्—

दिग्वाससुम्मार्जनिकाञ्च सूर्पं करद्वये संदधतीं घनाभाम्। श्रीशीतलां सर्वरुजार्तिनाशां-रक्ताङ्गरागखजमर्चयामि॥१॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य १२५००० सपादलक्षं जपेत् दशांशं पायसेन जहुयात्। मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं शीतलायै नमः॥ स्फोटानां पीड़ा नश्यतीति॥

सवा लक्ष प्रयोग करने के बाद नाभिमात्र जल में खड़ा होकर १ सहस्र मन्त्र से जल अभिमन्त्रित कर बुहारी से शीतला के फफोलों पर मार्जन करने से तत्काल आराम होगा॥ अनुभूत है।

यह यंत्र शीतलावाले के गले में बांधे

१४८	१५२	१५७
०५१	६२१	६४१
१४१	१५५	१४९

यह यंत्र शीतलावाले की शय्या के सिरहाने की लकड़ी से बांधे

६१	२	१५
४१	१	०१
११	१६६	११

(१९) श्री प० विशुद्धानन्द ज्यो. चा. (चिन्तादलन पञ्चाङ्गकर्ता)। (२०) श्री प० हंसराज कपिल, ज्यो. चा., हरयाना (पंचाङ्गकर्ता)। (२१) श्री पं. गिरधारीलाल ज्यो., (श्रीसूर्य-पंचाङ्गकर्ता)। (२२) श्रीदेवशीबीरजी खोना, पंचाङ्गकर्ता (सौराष्ट्र) (२३) श्री कृष्णजी विट्ठल सोमाणी (पंचाङ्गकर्त्ता)। (२४) श्री हरिहरभट्ट (पञ्चाङ्गकर्ता)। (२५) श्री वेदशास्त्रसम्पन्न श्रीमणिशंकरशर्म्मा (पंचाङ्गकर्ता)। (२६) श्री पं० मेदिनीधर शर्म्मा पंचाङ्गकर्ता (गढ़वाल)। (२७) श्री पं० हरदेवशर्म्मा त्रिवेदी विश्वविजय पंचांगकर्ता। (२८) श्री पं. मदनमोहन शर्म्मा स्यालकोटी, पंचांगकर्ता, देहली। (२९) श्रीमान् श्रद्धेय राजपण्डित मुल्कराज शर्म्मा (पटियाला)। (३०) श्री. पं. अच्युतानन्दजी झा, ज्योतिषाचार्य, मु. दाथ (दरभंगा)। (३१) श्री पं. ठाकुरदत्तशर्म्मा पुंछ (काश्मीर)। (३२) श्री पं० कुबेरदत्तजी शास्त्री, उपाचार्य, श्री. रा. कृ. महाविद्यालय, खुर्जा।

कात्यायनोक्त नक्षत्र चतुष्टयी में विवाहमुहूर्त लगाने में निम्नलिखित धुरन्धर विद्वान् भी सहमत हैं—जैनमुनि श्री विकाशविजयजी महाराज। महामना पूज्य स्व० मालवीयजी के सहयोगी ज्योतिषरत्न श्री पं० रामेश्वर मिश्र, सिद्धेश्वरी काशी। श्री पं० देवीदत्तजी राजज्योतिषी पटियाला। श्री पं० रविदत्तजी ज्यो० कालका। श्री नर्मदाशंकर कृष्णाराम दर्शनशास्त्री पंचाङ्गकर्ता अहमदाबाद। श्री शंकरलाल छगनजी धर्मशास्त्री पंचाङ्गकर्ता अहमदाबाद। श्री पं० पुलस्त्यरामजी ज्योतिषी पंचाङ्गगणितज्ञ खन्याण (नाभा)। श्री पं० श्रीगोपाल शास्त्रीजी मोरिण्डा। श्री पं० हरिभानुदत्त शास्त्रीजी तथा श्री पं० लक्ष्मीदत्तजी ज्योतिषी कथारत्न तथा श्री गुरमुखरायजी वैद्यराज तथा पं० ज्ञानचन्द्रजी जैतली अमृतसर। श्री पं० हरिदत्तजी शास्त्री ज्योतिषी गढ़वाल। श्री पं० अभयानन्दजी शास्त्री सूर्यपुर (पेप्सू) श्री. पं० परमानन्दजी वेदपाठी तथा श्री. पं. शिवकुमारजी कर्मठ चरणियां। गणकरत्न श्री पं० वंशीधरजी शास्त्री मु० डटोह (बिलासपुर) श्री पं० रक्खारामजी शर्मा शाण्डिल्य मु० पोसी (होश्यारपुर)। श्री पं० टीकारामजी वेदाचार्य प्रो० वेदविद्यालय खुर्जा। श्री पं० दयालु-चन्द्रजी शास्त्री मुलतानी। श्री पं० चन्द्रमणि ज्यो० मु० बडोह (होश्यारपुर) श्री पं० लज्जारामजीसंड सरहिन्द। श्री पं० फकीरचन्द्रजी पराशर तंत्रशास्त्री बाजार आखाडा कुल्लू। श्री पं० बहादुरचन्द्र शास्त्री अबोहर। श्री पं० धर्मानन्दजी ज्यो० कनखल। श्री पं० शंकरदत्त ज्यो० मुमाड़ी गढ़वाल।

ऐसे ही अमृतसर के निम्नलिखित विशिष्ट विद्वानों ने भी सम्मतिपत्र भेजकर समर्थन किया है—

श्री पं० मिहिरचन्द्रजी शास्त्री निरुक्तभाष्यकार प्रधानाध्यापक संस्कृत कालेज, श्री पं० लब्धरामजी प्रो० सं० कालेज। श्री पं० रक्षारामजी शर्म्मा प्रिन्सिपल, श्री नागरमल्ल कालेज। श्री पं० देवीदत्त शास्त्री, वाइस प्रि० हिन्दूसभा कालेज। श्री पं० बालकनाथ जी जेतली प्रधान। श्री पं० हलियाराम जी शास्त्री, प्रधानाध्यापक पी० बी० हाईस्कूल। श्री पं० वासुदेवजी वै. रा. कर्मकाण्डकलानिधिः। श्री पं० किशोरी-लाल जी वै. क. दैवज्ञ। श्री पं० देवीचन्द्र जी वेदपारङ्गत। श्री पं० सत्यपाल जैतली कर्मठ ज्यो.। श्री पं० हरिकृष्ण शास्त्री ज्योतिष-कर्मकाण्ड पारङ्गत।

अबोहरमंडी से श्री पं० हजारीलाल ज्यो. लिखते हैं कि—

यहां की ब्राह्मण सभा ने विवाहार्थ चित्रादि चार नक्षत्रों को हृदय से स्वीकार किया है॥ श्री चामुण्डानन्दिकेश्वर ज्योतिषकार्यालयाध्यक्ष शेराठाणा जिला कांगड़ा के प्रधान ज्योतिश्शास्त्रवेत्ता श्री पं० बदरीदत्त ज्यो. अवस्थी लिखते हैं कि—"सद्गुणयुक्त नक्षत्रों के अभाव में आवश्यकता में इन (चित्रादि) सम नक्षत्रों में विवाह किया जाना युक्त है और उसके लिये सूत्रग्रन्थ बलवत्प्रमाण उपस्थित हैं, प्रायः मुहूर्तों में हमें पक्षत्रय का दर्शन होता है ग्राह्य, अग्राह्य और सम जब ग्राह्य का अभाव हो तो सम ही लिया जाता है वह मुहूर्त दोषयुक्त नहीं होता है, इत्यादि॥

इसी तरह श्रीयुक्त श्रद्धेय श्रीधर मायाधारी जी शास्त्री सभापति ज्योतिष सम्मेलन हिन्दूसभा कालेज अमृतसर से भी २४–८–५३ को सम्मतिपत्र कात्यायनोक्त वैवाहिक नक्षत्रों के समर्थन में मिला है। स्थानाभाव से नकल नहीं दे सके। ज्योतिश्शास्त्र के महा-विद्वान् श्री सीतारामजी झा ज्यो. आ. काशी वाले भी इन नक्षत्रों का समर्थन करते हैं।

नोट—चित्रावतुष्टय नाटक का उत्तर देखने के लिये "भ्रमभञ्जन नाटक" पृष्ठ ११५ पर पढ़िये।

मन्त्रों का अद्भुत चमत्कार

मननात्त्रायते यस्मात्तस्मान्मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात्सिद्धिर्जपात्सिद्धिर्जपात्सिद्धिर्न संशयः॥

मंत्र ऐसे दिव्यशब्दों का समूह होता है कि जिनके दृढ़ इच्छा शक्ति पूर्वक उच्चारण मात्र से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं, थोड़े शब्दों में इसी का नाम मंत्र है। इसमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारणमात्र से शून्य महाकाश में एक विचित्र कंपन (स्वरलहरी) उत्पन्न होता है। जिसमें रचना करने की तथा इच्छित वस्तु को आकर्षित करने की बड़ी प्रबल शक्ति होती है और वह मानसिक तथा भौतिक आकृतिपर आश्चर्यजनक प्रभाव डालनेके साथ-साथ जिन कामों को हम असंभव समझते हैं या वर्षों में भी नहीं कर सकते। उन्हें वह दिव्यशक्ति चन्द मिनटों में पूर्ण कर सकती है।

मन्त्र शास्त्रों का कथन है कि वेदमन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तांत्रिक मन्त्रों को भगवान् शिव ने शक्तिमान् बनाया। इसी तरह कलियुग में शिवावतार श्री शावर-नाथजी ने शावरमंत्रों को अद्भुत शक्ति प्रदान की है। मंत्र का पुरश्चरण करते हुए गुप्त रक्खे, प्रकट करने से उस किये हुए पुरश्चरण का प्रभाव कम वा नहीं के बराबर रह जाता है। ऐसी गलती होने पर पुनः गुप्तरीति से पुरश्चरण करें अत्युत्कट प्रभाव होगा।

शावरी मन्त्रों के चमत्कार—कलियुगी क्षुद्रजीवों के उपकारार्थ श्री शावरनाथजी ने शावरीमन्त्रों का निर्माण किया है। शावरीमंत्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है जिसके प्रायः कोई अर्थ नहीं होते परन्तु श्री शंकरजी के प्रताप से वह असर से खाली नहीं है। श्री गो० तुलसीदासजी ने इस विषय में क्या ही अच्छा कहा है—

अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेशप्रतापू॥

नोट—स्मरण रहे इन मंत्रों को जैसा लिखा वा बतलाया गया हो वैसा ही जपना और बोलना चाहिये। अपनी बुद्धि के घोड़े दौड़ाकर किसी शब्द वा अक्षर को न्यूनाधिक न करें।

—: यंत्र-विज्ञान :—

अनन्त अज्ञात प्रकृति के अन्तराल में मानवज्ञान से परे कितनी अपार एवं महाशक्तियां छिपी पड़ी हैं इसकी गणना कौन कर सकता है? मनुष्य ज्ञानके उस अपार सिन्धु के किनारे भटकता रहता है, और कभी एक दो पुलिन पर पड़े सीप या मोती पा जाता है, वह समझता है कि बस यहीं समाप्त है इतना ही सब कुछ है, महर्षियों की कठोर साधना ने उन्हें जहां पहुँचा दिया था, वहां उनके लिये स्थूल और सूक्ष्म के सारे रहस्य हस्तामलक-वत् थे। प्रकृति के उदर का विशाल प्रान्त उनकी दृष्टि के सामने अनावृत था। उन्होंने

...हुआ, प्रसंगवश जितने की आवश्यकता पड़ी उसे वे जगत् में प्रगट कर गये। यन्त्रविज्ञान उन तपोमूर्त्ति ऋषियों की एक उदार देन है, पुरश्चरण के बाद उसके

वह दूध ... देने लगेगी और बच्चा भी लगाने लगेगी। कुमारी कन्या को ... पिलावे।

...हुआ, प्रसंगवश जितने की आवश्यकता पड़ी उसे वे जगत् में प्रगट कर गये। यंत्रविज्ञान उन तपोमूर्ति ऋषियों की एक उदार देन है, पुरश्चरण के बाद उसके अन्दर एक महाशक्ति उत्पन्न होती है। ऋषियों ने बतलाया है कि कामना या उद्देश भेद से एक ही यंत्र विभिन्न वस्तुओं से विभिन्न पदार्थों पर सीधे वक्त उलटे आदि क्रमों से बनाया जाता है जैसा उद्देश होता है वैसा ही विधान के अनुसार ये यंत्र रेखाचित्र या मण्डलाकृति से बनाये जाते हैं किंबहुना मन्त्रकी भांति यंत्र भी एक स्वतंत्र एवं शक्तिशाली विज्ञान है। जिन कार्यों में औषधि और मानवी बुद्धि असमर्थ हो जाती है, वह भी श्रद्धापूर्वक सिद्ध किये यंत्रों द्वारा बड़ी सरलता से सिद्ध होते देखे गये हैं।

बच्चे के पसली (डिब्बा) रोग का मन्त्र

डिब्बा रोग से सैंकड़ों बच्चे अकाल काल के ग्रास बनते हैं। इस रोग के लिये यह मन्त्र अद्भुत प्रभाव रखता है।

समुद्र किनारे सुरागाय, सुरागाय के पेट में बच्चा, बच्चे के पेट म डिब्बा। डिब्बा कटे सरकंडा बढ़े। दुहाई लूनिया चमारीकी छूत॥ विधि—एक सरकंडा १४ अंगुल जिसमें जड़ भी हो, जड़ की ओर से मन्त्र पढ़कर छू कहते हुए फूक मारकर ३ बार नापो, सरकंडा बढ़ जावेगा, बढ़े भाग को काट दो, यह क्रिया दिन में ३ बार करो जब तक रोग रहे, उतने दिन करो। बच्चा इस भयानक रोग से बच जावेगा। ग्रहण में जप करके पहिले सिद्ध कर लेवे।

आधे सिरदर्द का मन्त्र—आधे सिर का दर्द बड़ा ही भयानक है। निम्नलिखित मन्त्र से दर्द दूर हो जावेगा और वह आपका कृतज्ञ रहेगा।

मन्त्र यह है—ॐ बन में फिरे अन्जनी कच्चे फल खाय, हांक मारूं हनुमन्त की "अमुक" का आधा सीसी जाय, फुरो मन्त्र ईश्वर बिचे मेरे गुरु का शब्द सांचा॥ विधि—सारे मस्तक पर अंगूठा और अंगुली से बीच की खाल खींचे विभूति लगावे और मन्त्र पढ़ता जावे ७ बार।

पहले दिवाली को जप करके सिद्ध कर लेवे।

यंत्रआधे शिर का इस यंत्र को ग्रहण में लिखकर चलते जल में गेर कर सिद्ध कर ले पीछे अनार की कलम स्याही से लिखकर धूप दे शिर में बांधे तो आधा शिर दर्द दूर हो। बच्चों को मिठाई देवे।

५३	४२
३११	७०

दांतदाढ़ के दर्द का अद्भुत मन्त्र—जिस मनुष्य की दांत या दाढ़ में दर्द होता है उसे दिन-रात चैन नहीं पड़ता बहुत से मनुष्य उस दांत या दाढ़ को निकलवा देते हैं। यह मन्त्र दर्द को शीघ्र दूर कर के रोगी को सुख की नींद सुला देता है।

मन्त्र—डांक कीलूं डिक वाली कीलूं सात तरह की दाढ़ कीलूं और कीलूं चकपैया इसकी दाढ़ बन्द हो जाय फुरो मन्त्र ईश्वर बिचे मेरे गुरु का शब्द सांचा॥ **विधि**—एक लोहे की कील से झाड़कर उस कील को जमीन में गाड़ दे या दबा दे।

सूचना—इस मंत्र को भी दिवाली या ग्रहण में जप लेवे तो चलेगा।

यंत्र गौ भैंस दुग्ध देवे।

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	२९	८	१
४	५	३०	१३

विधि—इस यंत्र को दिवाली की रात को लिख लिखकर धूप देता रहे पीछे जल में प्रवाह दे उसके बाद जब किसी की गौ या भैंस दुग्ध न देवे और ना ही बच्छा लगावे तो इस यंत्र को शुद्धकेशर अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखकर गौ हो तो गले में और भैंस हो तो दायें सींग में गुग्गल की धूप देकर बांधे तो वह दूध देने लगेगी और बच्छा भी लगाने लगेगी। कुमारी कन्या को दूध पिलावे।

सिद्ध आकर्षण विधान

घर से कोई स्त्री पुरुष या बालक रूठ कर चला गया हो या विदेशी घर आने का विचार न रखता हो तो निम्नलिखित विधान उस व्यक्ति को लौटाने में अमोघ सिद्ध होता है, कुम्हार के घर से स्वयं जाकर एक नया पक्का घड़ा जो कहीं से फूटा टूटा न हो ले आइये और साथ ही एक कसोराभी, स्मरण रहे कि उनमें कहीं काला दाग न हो। घड़े के ऊपर और कसोरे के बीच में निम्नलिखित नवार्ण मंत्र का यंत्र केशर से लिखिये, और साथ ही एक यंत्र भोजपत्र पर लिख कर उसी घड़े में डाल दीजिये और तांबे के ४ पैसे भी, कम ज्यादा नहीं। कसोरे से ढक कर घड़े को बाईं ओर घुमाइये और यह मंत्र पढ़िये।

"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे" सात बार घुमाकर घड़े को एकान्त में रख दीजिये ऐसे सात रोज करे, सात दिन में ही वहां से वह व्यक्ति चल पड़ेगा या अपना पता भेज देगा। इस आकर्षण विधान करने से पहले उपरोक्त मंत्र को ब्रह्मचर्य पूर्वक सवालक्ष जप लेवे और यंत्र को भी दिवाली की रात को लिख कर चलता कर लेवे फिर देखो चमत्कार।

ऐं	ह्रीं	क्लीं
डा	मुं	चा
यै	वि	च्चे

ॐ अस्य श्री शीतलामन्त्रस्य उपमन्यु ऋषिः बृहतीछन्दः श्री शीतला देवता विस्फोटक-शान्त्यर्थे जपे विनियोगः॥

ऋष्यादिन्यासः—ॐ उपमन्यु ऋषये नमः शिरसि। ॐ बृहती छन्दसे नमो मुखे। ॐ श्री शीतलादेवतायै नमो हृदि। ॐ विस्फोटकशान्त्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे। मूलेन करौ प्रमृज्य॥ करषडङ्गन्यासौ॥ ॐ ह्रां श्रां अङ्गुष्ठाभ्यां (हृदयाय) नमः। ॐ ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां (शिर से) स्वाहा। ॐ ह्रूं श्रूं मध्यमाभ्यां (शिखायै) वषट्। ॐ ह्रैं श्रैं अनामिकाभ्यां (कवचाय) हुम्। ॐ ह्रौं श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां (नेत्रत्रयाय) वौषट्। ॐ ह्रः श्रः करतल करपृष्ठाभ्यां (अस्त्राय फट्)॥ ब्रैकट् का हृदयादि न्यास करन्यास से पीछे करे।

ध्यानम्—

दिग्वासम्मार्जनिकाञ्च सूर्पं करद्वये संदधती घनाभाम्। श्रीशीतलां सर्वरुजार्तिनाशां-रक्ताङ्गरागस्रजमर्चयामि॥१॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य १२५००० सपादलक्षं जपेत् दशांशं पायसेन जहुयात्। मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं शीतलायै नमः॥ स्फोटानां पीड़ा नश्यतीति॥

सवा लक्ष प्रयोग करने के बाद नाभिमात्र जल में खड़ा होकर १ सहस्र मन्त्र से जल अभिमन्त्रित कर बुहारी से शीतला के फफोलों पर मार्जन करने से तत्काल आराम होगा॥ अनुभूत है।

यह यंत्र शीतलावाले के गले में बांधे

१४८	१५२	१५७
०५४	६२४	६२४
१४१	१५५	१४९

यह यंत्र शीतलावाले की शय्या के सिरहाने की लकड़ी से बांधे

६१	२	१५
२४	४	०४
११	१६६	११

(१) वैशाख मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१	७।३४	९।२९	११।४३	१४।५	१६।२५	१८।४५	२१।७	२३।२७	१।३१	३।१३	४।३९	६।१
२	७।३०	९।२५	११।३९	१४।१	१६।२१	१८।४१	२१।३	२३।२३	१।२७	३।९	४।३५	५।५७
३	७।२६	९।२१	११।३५	१३।५७	१६।१७	१८।३७	२०।५९	२३।१९	१।२३	३।५	४।३१	५।५३
४	७।२२	९।१७	११।३१	१३।५३	१६।१३	१८।३३	२०।५५	२३।१५	१।१९	३।१	४।२७	५।४९
५	७।१८	९।१३	११।२७	१३।४९	१६।९	१८।२९	२०।५१	२३।११	१।१५	२।५७	४।२३	५।४५
६	७।१४	९।९	११।२३	१३।४५	१६।५	१८।२५	२०।४७	२३।७	१।११	२।५३	४।१९	५।४१
७	७।१०	९।५	११।१९	१३।४१	१६।१	१८।२१	२०।४३	२३।३	१।७	२।४९	४।१५	५।३७
८	७।६	९।१	११।१५	१३।३७	१५।५७	१८।१७	२०।३९	२२।५९	१।३	२।४५	४।११	५।३३
९	७।२	८।५७	११।११	१३।३३	१५।५३	१८।१३	२०।३५	२२।५५	०।५९	२।४१	४।७	५।२९
१०	६।५८	८।५३	११।७	१३।२९	१५।४९	१८।९	२०।३१	२२।५१	०।५५	२।३७	४।३	५।२५
११	६।५४	८।४९	११।३	१३।२५	१५।४५	१८।५	२०।२७	२२।४७	०।५१	२।३३	३।५९	५।२१
१२	६।५०	८।४५	१०।५९	१३।२१	१५।४१	१८।१	२०।२३	२२।४३	०।४७	२।२९	३।५५	५।१७
१३	६।४६	८।४१	१०।५५	१३।१७	१५।३७	१७।५७	२०।१९	२२।३९	०।४३	२।२५	३।५१	५।१३
१४	६।४२	८।३७	१०।५१	१३।१३	१५।३३	१७।५३	२०।१५	२२।३५	०।३९	२।२१	३।४७	५।९
१५	६।३८	८।३३	१०।४७	१३।९	१५।२९	१७।४९	२०।११	२२।३१	०।३५	२।१७	३।४३	५।५
१६	६।३४	८।२९	१०।४३	१३।५	१५।२५	१७।४५	२०।७	२२।२७	०।३१	२।१३	३।३९	५।१
१७	६।३०	८।२५	१०।३९	१३।१	१५।२१	१७।४१	२०।३	२२।२३	०।२७	२।९	३।३५	४।५७
१८	६।२६	८।२१	१०।३५	१२।५७	१५।१७	१७।३७	१९।५९	२२।१९	०।२३	२।५	३।३१	४।५३
१९	६।२२	८।१७	१०।३१	१२।५३	१५।१३	१७।३३	१९।५५	२२।१५	०।१९	२।१	३।२७	४।४९
२०	६।१८	८।१३	१०।२७	१२।४९	१५।९	१७।२९	१९।५१	२२।११	०।१५	१।५७	३।२३	४।४५
२१	६।१४	८।९	१०।२३	१२।४५	१५।५	१७।२५	१९।४७	२२।७	०।११	१।५३	३।१९	४।४१
२२	६।१०	८।५	१०।१९	१२।४१	१५।१	१७।२१	१९।४३	२२।३	०।७	१।४९	३।१५	४।३७
२३	६।६	८।१	१०।१५	१२।३७	१४।५७	१७।१७	१९।३९	२१।५९	०।३	१।४५	३।११	४।३३
२४	६।२	७।५७	१०।११	१२।३३	१४।५३	१७।१३	१९।३५	२१।५५	२३।५९	१।४१	३।७	४।२९
२५	५।५८	७।५३	१०।७	१२।२९	१४।४९	१७।९	१९।३१	२१।५१	२३।५५	१।३७	३।३	४।२५
२६	५।५४	७।४९	१०।३	१२।२५	१४।४५	१७।५	१९।२७	२१।४७	२३।५१	१।३३	२।५९	४।२१
२७	५।५०	७।४५	९।५९	१२।२१	१४।४१	१७।१	१९।२३	२१।४३	२३।४७	१।२९	२।५५	४।१७
२८	५।४६	७।४१	९।५५	१२।१७	१४।३७	१६।५७	१९।१९	२१।३९	२३।४३	१।२५	२।५१	४।१३
२९	५।४२	७।३७	९।५१	१२।१३	१४।३३	१६।५३	१९।१५	२१।३५	२३।३९	१।२१	२।४७	४।९
३०	५।३८	७।३३	९।४७	१२।९	१४।२९	१६।४९	१९।११	२१।३१	२३।३५	१।१७	२।४३	४।५
३१	५।३४	७।२९	९।४३	१२।५	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२७	२३।३१	१।१३	२।३९	४।१

(२) ज्येष्ठ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	७।२८	९।४३	१२।४	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२६	२३।३०	१।१२	२।३८	४।१	५।३४
२	७।२४	९।३९	१२।०	१४।२१	१६।४१	१९।३	२१।२२	२३।२६	१।८	२।३४	३।५७	५।३०
३	७।२०	९।३५	११।५६	१४।१७	१६।३७	१८।५९	२१।१८	२३।२२	१।४	२।३०	३।५३	५।२६
४	७।१६	९।३१	११।५२	१४।१३	१६।३३	१८।५५	२१।१४	२३।१८	१।०	२।२६	३।४९	५।२२
५	७।१२	९।२७	११।४८	१४।९	१६।२९	१८।५१	२१।१०	२३।१४	०।५६	२।२२	३।४५	५।१८
६	७।८	९।२३	११।४४	१४।५	१६।२५	१८।४७	२१।६	२३।१०	०।५२	२।१८	३।४१	५।१४
७	७।४	९।१९	११।४०	१४।१	१६।२१	१८।४३	२१।२	२३।६	०।४८	२।१४	३।३७	५।१०
८	७।०	९।१५	११।३६	१३।५७	१६।१७	१८।३९	२०।५८	२३।२	०।४४	२।१०	३।३३	५।६
९	६।५६	९।११	११।३२	१३।५३	१६।१३	१८।३५	२०।५४	२२।५८	०।४०	२।६	३।२९	५।२
१०	६।५२	९।७	११।२८	१३।४९	१६।९	१८।३१	२०।५०	२२।५४	०।३६	२।२	३।२५	४।५८
११	६।४७	९।२	११।२३	१३।४४	१६।४	१८।२६	२०।४५	२२।४९	०।३१	१।५७	३।२०	४।५३
१२	६।४३	८।५८	११।१९	१३।४०	१६।०	१८।२२	२०।४१	२२।४५	०।२७	१।५३	३।१६	४।४९
१३	६।३९	८।५४	११।१५	१३।३६	१५।५६	१८।१८	२०।३७	२२।४१	०।२३	१।४९	३।१२	४।४५
१४	६।३५	८।५०	११।११	१३।३२	१५।५२	१८।१४	२०।३३	२२।३७	०।१९	१।४५	३।८	४।४१
१५	६।३१	८।४६	११।७	१३।२८	१५।४८	१८।१०	२०।२९	२२।३३	०।१५	१।४१	३।४	४।३७
१६	६।२७	८।४२	११।३	१३।२४	१५।४४	१८।६	२०।२५	२२।२९	०।११	१।३७	३।०	४।३३
१७	६।२३	८।३८	१०।५९	१३।२०	१५।४०	१८।२	२०।२१	२२।२५	०।७	१।३३	२।५६	४।२९
१८	६।१९	८।३४	१०।५५	१३।१६	१५।३६	१७।५८	२०।१७	२२।२१	०।३	१।२९	२।५२	४।२५
१९	६।१५	८।३०	१०।५१	१३।१२	१५।३२	१७।५४	२०।१३	२२।१७	२३।५९	१।२५	२।४८	४।२१
२०	६।११	८।२६	१०।४७	१३।८	१५।२८	१७।५०	२०।९	२२।१३	२३।५५	१।२१	२।४४	४।१७
२१	६।६	८।२१	१०।४२	१३।३	१५।२३	१७।४५	२०।४	२२।८	२३।५०	१।१६	२।३९	४।१२
२२	६।२	८।१७	१०।३८	१२।५९	१५।१९	१७।४१	२०।०	२२।४	२३।४६	१।१२	२।३५	४।८
२३	५।५८	८।१३	१०।३४	१२।५५	१५।१५	१७।३७	१९।५६	२२।०	२३।४२	१।८	२।३१	४।४
२४	५।५४	८।९	१०।३०	१२।५१	१५।११	१७।३३	१९।५२	२१।५६	२३।३८	१।४	२।२७	४।०
२५	५।५०	८।५	१०।२६	१२।४७	१५।७	१७।२९	१९।४८	२१।५२	२३।३४	१।०	२।२३	३।५६
२६	५।४६	८।१	१०।२२	१२।४३	१५।३	१७।२५	१९।४४	२१।४८	२३।३०	०।५६	२।१९	३।५२
२७	५।४२	७।५७	१०।१८	१२।३९	१४।५९	१७।२१	१९।४०	२१।४४	२३।२६	०।५२	२।१५	३।४८
२८	५।३८	७।५३	१०।१४	१२।३५	१४।५५	१७।१७	१९।३६	२१।४०	२३।२२	०।४८	२।११	३।४४
२९	५।३४	७।४९	१०।१०	१२।३१	१४।५१	१७।१३	१९।३२	२१।३६	२३।१८	०।४४	२।७	३।४०
३०	५।३०	७।४५	१०।६	१२।२७	१४।४७	१७।९	१९।२८	२१।३२	२३।१४	०।४०	२।३	३।३६
३१	५।२६	७।४१	१०।२	१२।२३	१४।४३	१७।५	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५९	३।३२

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना ।

(३) आषाढ़ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	७।४०	१०।२	१२।२२	१४।४२	१७।४	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५८	३।३२	५।२६
२	७।३६	९।५८	१२।१८	१४।३८	१७।०	१९।२०	२१।२४	२३।६	०।३२	१।५४	३।२८	५।२२
३	७।३२	९।५४	१२।१४	१४।३४	१६।५६	१९।१६	२१।२०	२३।२	०।२८	१।५०	३।२४	५।१८
४	७।२८	९।५०	१२।१०	१४।३०	१६।५२	१९।१२	२१।१६	२२।५८	०।२४	१।४६	३।२०	५।१४
५	७।२४	९।४६	१२।६	१४।२६	१६।४८	१९।८	२१।१२	२२।५४	०।२०	१।४२	३।१६	५।१०
६	७।२०	९।४२	१२।२	१४।२२	१६।४४	१९।४	२१।८	२२।५०	०।१६	१।३८	३।१२	५।६
७	७।१६	९।३८	११।५८	१४।१८	१६।४०	१९।०	२१।४	२२।४६	०।१२	१।३४	३।८	५।२
८	७।१२	९।३४	११।५४	१४।१४	१६।३६	१८।५६	२१।०	२२।४२	०।८	१।३०	३।४	४।५८
९	७।८	९।३०	११।५०	१४।१०	१६।३२	१८।५२	२०।५६	२२।३८	०।४	१।२६	३।०	४।५४
१०	७।४	९।२६	११।४६	१४।६	१६।२८	१८।४८	२०।५२	२२।३४	०।०	१।२२	२।५६	४।५०
११	७।०	९।२२	११।४२	१४।२	१६।२४	१८।४४	२०।४८	२२।३०	२३।५६	१।१८	२।५२	४।४६
१२	६।५७	९।१९	११।३९	१३।५९	१६।२१	१८।४१	२०।४५	२२।२७	२३।५३	१।१५	२।४९	४।४३
१३	६।५३	९।१५	११।३५	१३।५५	१६।१७	१८।३७	२०।४१	२२।२३	२३।४९	१।११	२।४५	४।३९
१४	६।४९	९।११	११।३१	१३।५१	१६।१३	१८।३३	२०।३७	२२।१९	२३।४५	१।७	२।४१	४।३५
१५	६।४५	९।७	११।२७	१३।४७	१६।९	१८।२९	२०।३३	२२।१५	२३।४१	१।३	२।३७	४।३१
१६	६।४१	९।३	११।२३	१३।४३	१६।५	१८।२५	२०।२९	२२।११	२३।३७	०।५९	२।३३	४।२७
१७	६।३७	८।५९	११।१९	१३।३९	१६।१	१८।२१	२०।२५	२२।७	२३।३३	०।५५	२।२९	४।२३
१८	६।३३	८।५५	११।१५	१३।३५	१५।५७	१८।१७	२०।२१	२२।३	२३।२९	०।५१	२।२५	४।१९
१९	६।२९	८।५१	११।११	१३।३१	१५।५३	१८।१३	२०।१७	२१।५९	२३।२५	०।४७	२।२१	४।१५
२०	६।२५	८।४७	११।७	१३।२७	१५।४९	१८।९	२०।१३	२१।५५	२३।२१	०।४३	२।१७	४।११
२१	६।२१	८।४३	११।३	१३।२३	१५।४५	१८।५	२०।९	२१।५१	२३।१७	०।३९	२।१३	४।७
२२	६।१८	८।४०	११।०	१३।२०	१५।४२	१८।२	२०।६	२१।४८	२३।१४	०।३६	२।१०	४।४
२३	६।१४	८।३६	१०।५६	१३।१६	१५।३८	१७।५८	२०।२	२१।४४	२३।१०	०।३२	२।६	४।०
२४	६।१०	८।३२	१०।५२	१३।१२	१५।३४	१७।५४	१९।५८	२१।४०	२३।६	०।२८	२।२	३।५६
२५	६।६	८।२८	१०।४८	१३।८	१५।३०	१७।५०	१९।५४	२१।३६	२३।२	०।२४	१।५८	३।५२
२६	६।२	८।२४	१०।४४	१३।४	१५।२६	१७।४६	१९।५०	२१।३२	२२।५८	०।२०	१।५४	३।४८
२७	५।५८	८।२०	१०।४०	१३।०	१५।२२	१७।४२	१९।४६	२१।२८	२२।५४	०।१६	१।५०	३।४४
२८	५।५४	८।१६	१०।३६	१२।५६	१५।१८	१७।३८	१९।४२	२१।२४	२२।५०	०।१२	१।४६	३।४०
२९	५।५०	८।१२	१०।३२	१२।५२	१५।१४	१७।३४	१९।३८	२१।२०	२२।४६	०।८	१।४२	३।३६
३०	५।४६	८।८	१०।२८	१२।४८	१५।१०	१७।३०	१९।३४	२१।१६	२२।४२	०।४	१।३८	३।३२
३१	५।४२	८।४	१०।२४	१२।४४	१५।६	१७।२६	१९।३०	२१।१२	२२।३८	०।०	१।३४	३।२८
३२	५।३८	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।३०	३।२४

(४) श्रावण मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।२९	३।२४	५।३८
२	७।५५	१०।१५	१२।३५	१४।५७	१७।१७	१९।२१	२१।३	२२।२९	२३।५१	१।२४	३।१९	५।३३
३	७।५१	१०।११	१२।३१	१४।५३	१७।१३	१९।१७	२०।५९	२२।२५	२३।४७	१।२०	३।१५	५।२९
४	७।४७	१०।७	१२।२७	१४।४९	१७।९	१९।१३	२०।५५	२२।२१	२३।४३	१।१६	३।११	५।२५
५	७।४३	१०।३	१२।२३	१४।४५	१७।५	१९।९	२०।५१	२२।१७	२३।३९	१।१२	३।७	५।२१
६	७।३९	९।५९	१२।१९	१४।४१	१७।१	१९।५	२०।४७	२२।१३	२३।३५	१।८	३।३	५।१७
७	७।३५	९।५५	१२।१५	१४।३७	१६।५७	१९।१	२०।४३	२२।९	२३।३१	१।४	२।५९	५।१३
८	७।३०	९।५०	१२।१०	१४।३२	१६।५२	१८।५६	२०।३८	२२।४	२३।२६	०।५९	२।५४	५।८
९	७।२६	९।४६	१२।६	१४।२८	१६।४८	१८।५२	२०।३४	२२।०	२३।२२	०।५५	२।५०	५।४
१०	७।२२	९।४२	१२।२	१४।२४	१६।४४	१८।४८	२०।३०	२१।५६	२३।१८	०।५१	२।४६	५।०
११	७।१८	९।३८	११।५८	१४।२०	१६।४०	१८।४४	२०।२६	२१।५२	२३।१४	०।४७	२।४२	४।५६
१२	७।१४	९।३४	११।५४	१४।१६	१६।३६	१८।४०	२०।२२	२१।४८	२३।१०	०।४३	२।३८	४।५२
१३	७।१०	९।३०	११।५०	१४।१२	१६।३२	१८।३६	२०।१८	२१।४४	२३।६	०।३९	२।३४	४।४८
१४	७।६	९।२६	११।४६	१४।८	१६।२८	१८।३२	२०।१४	२१।४०	२३।२	०।३५	२।३०	४।४४
१५	७।२	९।२२	११।४२	१४।४	१६।२४	१८।२८	२०।१०	२१।३६	२२।५८	०।३१	२।२६	४।४०
१६	६।५७	९।१७	११।३७	१३।५९	१६।१९	१८।२३	२०।५	२१।३१	२२।५३	०।२६	२।२१	४।३५
१७	६।५३	९।१३	११।३३	१३।५५	१६।१५	१८।१९	२०।१	२१।२७	२२।४९	०।२२	२।१७	४।३१
१८	६।४९	९।९	११।२९	१३।५१	१६।११	१८।१५	१९।५७	२१।२३	२२।४५	०।१८	२।१३	४।२७
१९	६।४५	९।५	११।२५	१३।४७	१६।७	१८।११	१९।५३	२१।१९	२२।४१	०।१४	२।९	४।२३
२०	६।४१	९।१	११।२१	१३।४३	१६।३	१८।७	१९।४९	२१।१५	२२।३७	०।१०	२।५	४।१९
२१	६।३७	८।५७	११।१७	१३।३९	१५।५९	१८।३	१९।४५	२१।११	२२।३३	०।६	२।१	४।१५
२२	६।३३	८।५३	११।१३	१३।३५	१५।५५	१७।५९	१९।४१	२१।७	२२।२९	०।२	१।५७	४।११
२३	६।२९	८।४९	११।९	१३।३१	१५।५१	१७।५५	१९।३७	२१।३	२२।२५	२३।५८	१।५३	४।७
२४	६।२४	८।४४	११।४	१३।२६	१५।४६	१७।५०	१९।३२	२०।५८	२२।२०	२३।५३	१।४८	४।२
२५	६।२०	८।४०	११।०	१३।२२	१५।४२	१७।४६	१९।२८	२०।५४	२२।१६	२३।४९	१।४४	३।५८
२६	६।१६	८।३६	१०।५६	१३।१८	१५।३८	१७।४२	१९।२४	२०।५०	२२।१२	२३।४५	१।४०	३।५४
२७	६।१२	८।३२	१०।५२	१३।१४	१५।३४	१७।३८	१९।२०	२०।४६	२२।८	२३।४१	१।३६	३।५०
२८	६।८	८।२८	१०।४८	१३।१०	१५।३०	१७।३४	१९।१६	२०।४२	२२।४	२३।३७	१।३२	३।४६
२९	६।४	८।२४	१०।४४	१३।६	१५।२६	१७।३०	१९।१२	२०।३८	२२।०	२३।३३	१।२८	३।४२
३०	६।०	८।२०	१०।४०	१३।२	१५।२२	१७।२६	१९।८	२०।३४	२१।५६	२३।२९	१।२४	३।३८
३१	५।५६	८।१६	१०।३६	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२५	१।२०	३।३४

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(५) भाद्रपद मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथु.	कर्क
१	८।१७	१०।३७	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२६	१।२०	३।३४	५।५६
२	८।१३	१०।३३	१२।५४	१५।१४	१७।१८	१९।०	२०।२६	२१।४८	२३।२२	१।१६	३।३०	५।५२
३	८।९	१०।२९	१२।५०	१५।१०	१७।१४	१८।५६	२०।२२	२१।४४	२३।१८	१।१२	३।२६	५।४८
४	८।५	१०।२५	१२।४६	१५।६	१७।१०	१८।५२	२०।१८	२१।४०	२३।१४	१।८	३।२२	५।४४
५	८।१	१०।२१	१२।४२	१५।२	१७।६	१८।४८	२०।१४	२१।३६	२३।१०	१।४	३।१८	५।४०
६	७।५७	१०।१७	१२।३८	१४।५८	१७।२	१८।४४	२०।१०	२१।३२	२३।६	१।०	३।१४	५।३६
७	७।५३	१०।१३	१२।३४	१४।५४	१६।५८	१८।४०	२०।६	२१।२८	२३।२	०।५६	३।१०	५।३२
८	७।४८	१०।८	१२।२९	१४।४९	१६।५३	१८।३५	२०।१	२१।२३	२२।५७	०।५१	३।५	५।२७
९	७।४४	१०।४	१२।२५	१४।४५	१६।४९	१८।३१	१९।५७	२१।१९	२२।५३	०।४७	३।१	५।२३
१०	७।४०	१०।०	१२।२१	१४।४१	१६।४५	१८।२७	१९।५३	२१।१५	२२।४९	०।४३	२।५७	५।१९
११	७।३६	९।५६	१२।१७	१४।३७	१६।४१	१८।२३	१९।४९	२१।११	२२।४५	०।३९	२।५३	५।१५
१२	७।३२	९।५२	१२।१३	१४।३३	१६।३७	१८।१९	१९।४५	२१।७	२२।४१	०।३५	२।४९	५।११
१३	७।२८	९।४८	१२।९	१४।२९	१६।३३	१८।१५	१९।४१	२१।३	२२।३७	०।३१	२।४५	५।७
१४	७।२४	९।४४	१२।५	१४।२५	१६।२९	१८।११	१९।३७	२०।५९	२२।३३	०।२७	२।४१	५।३
१५	७।१९	९।३९	१२।०	१४।२०	१६।२५	१८।६	१९।३२	२०।५४	२२।२८	०।२२	२।३६	४।५८
१६	७।१५	९।३५	११।५६	१४।१६	१६।२०	१८।२	१९।२८	२०।५०	२२।२४	०।१८	२।३२	४।५४
१७	७।११	९।३१	११।५२	१४।१२	१६।१६	१७।५८	१९।२४	२०।४६	२२।२०	०।१४	२।२८	४।५०
१८	७।७	९।२७	११।४८	१४।८	१६।१२	१७।५४	१९।२०	२०।४२	२२।१६	०।१०	२।२४	४।४६
१९	७।३	९।२३	११।४४	१४।४	१६।८	१७।५०	१९।१६	२०।३८	२२।१२	०।६	२।२०	४।४२
२०	६।५९	९।१९	११।४०	१४।०	१६।४	१७।४६	१९।१२	२०।३४	२२।८	०।२	२।१६	४।३८
२१	६।५५	९।१५	११।३६	१३।५६	१६।०	१७।४२	१९।८	२०।३०	२२।४	२३।५८	२।१२	४।३४
२२	६।५०	९।१०	११।३१	१३।५१	१५।५५	१७।३७	१९।३	२०।२५	२१।५९	२३।५३	२।७	४।२९
२३	६।४६	९।६	११।२७	१३।४७	१५।५१	१७।३३	१८।५९	२०।२१	२१।५५	२३।४९	२।३	४।२५
२४	६।४२	९।२	११।२३	१३।४३	१५।४७	१७।२९	१८।५५	२०।१७	२१।५१	२३।४५	१।५९	४।२१
२५	६।३८	८।५८	११।१९	१३।३९	१५।४३	१७।२५	१८।५१	२०।१३	२१।४७	२३।४१	१।५५	४।१७
२६	६।३४	८।५४	११।१५	१३।३५	१५।३९	१७।२१	१८।४७	२०।९	२१।४३	२३।३७	१।५१	४।१३
२७	६।३०	८।५०	११।११	१३।३१	१५।३५	१७।१७	१८।४३	२०।५	२१।३९	२३।३३	१।४७	४।९
२८	६।२६	८।४६	११।७	१३।२७	१५।३१	१७।१३	१८।३९	२०।१	२१।३५	२३।२९	१।४३	४।५
२९	६।२२	८।४२	११।३	१३।२३	१५।२७	१७।९	१८।३५	१९।५७	२१।३१	२३।२५	१।३९	४।१
३०	६।१८	८।३८	१०।५९	१३।१९	१५।२३	१७।५	१८।३१	१९।५३	२१।२७	२३।२१	१।३५	३।५७
३१	६।१४	८।३४	१०।५५	१३।१५	१५।१९	१७।१	१८।२७	१९।४९	२१।२३	२३।१७	१।३१	३।५३

(६) आश्विन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	८।३४	१०।५६	१३।१५	१५।२०	१७।२	१८।२७	१९।५०	२१।२३	२३।१८	१।३२	३।५३	६।१४
२	८।३०	१०।५२	१३।११	१५।१६	१६।५८	१८।२३	१९।४६	२१।१९	२३।१४	१।२८	३।४९	६।१०
३	८।२६	१०।४८	१३।७	१५।१२	१६।५४	१८।१९	१९।४२	२१।१५	२३।१०	१।२४	३।४५	६।६
४	८।२२	१०।४४	१३।३	१५।८	१६।५०	१८।१५	१९।३८	२१।११	२३।६	१।२०	३।४१	६।२
५	८।१८	१०।४०	१२।५९	१५।४	१६।४६	१८।११	१९।३४	२१।७	२३।२	१।१६	३।३७	५।५८
६	८।१४	१०।३६	१२।५५	१५।०	१६।४२	१८।७	१९।३०	२१।३	२२।५८	१।१२	३।३३	५।५४
७	८।१०	१०।३२	१२।५१	१४।५६	१६।३८	१८।३	१९।२६	२०।५९	२२।५४	१।८	३।२९	५।५०
८	८।६	१०।२८	१२।४७	१४।५२	१६।३४	१७।५९	१९।२२	२०।५५	२२।५०	१।४	३।२५	५।४६
९	८।२	१०।२४	१२।४३	१४।४८	१६।३०	१७।५५	१९।१८	२०।५१	२२।४६	१।०	३।२१	५।४२
१०	७।५८	१०।२०	१२।३९	१४।४४	१६।२६	१७।५१	१९।१४	२०।४७	२२।४२	०।५६	३।१७	५।३८
११	७।५४	१०।१६	१२।३५	१४।४०	१६।२२	१७।४७	१९।१०	२०।४३	२२।३८	०।५२	३।१३	५।३४
१२	७।५०	१०।१२	१२।३१	१४।३६	१६।१८	१७।४३	१९।६	२०।३९	२२।३४	०।४८	३।९	५।३०
१३	७।४६	१०।८	१२।२७	१४।३२	१६।१४	१७।३९	१९।२	२०।३५	२२।३०	०।४४	३।५	५।२६
१४	७।४२	१०।४	१२।२३	१४।२८	१६।१०	१७।३५	१८।५८	२०।३१	२२।२६	०।४०	३।१	५।२२
१५	७।३८	१०।०	१२।१९	१४।२४	१६।६	१७।३१	१८।५४	२०।२७	२२।२२	०।३६	२।५७	५।१८
१६	७।३३	९।५५	१२।१४	१४।१९	१६।१	१७।२६	१८।४९	२०।२२	२२।१७	०।३१	२।५२	५।१३
१७	७।२९	९।५१	१२।१०	१४।१५	१५।५७	१७।२२	१८।४५	२०।१८	२२।१३	०।२७	२।४८	५।९
१८	७।२५	९।४७	१२।६	१४।११	१५।५३	१७।१८	१८।४१	२०।१४	२२।९	०।२३	२।४४	५।५
१९	७।२१	९।४३	१२।२	१४।७	१५।४९	१७।१४	१८।३७	२०।१०	२२।५	०।१९	२।४०	५।१
२०	७।१७	९।३९	११।५८	१४।३	१५।४५	१७।१०	१८।३३	२०।६	२२।१	०।१५	२।३६	४।५७
२१	७।१३	९।३५	११।५४	१३।५९	१५।४१	१७।६	१८।२९	२०।२	२१।५७	०।११	२।३२	४।५३
२२	७।९	९।३१	११।५०	१३।५५	१५।३७	१७।२	१८।२५	१९।५८	२१।५३	०।७	२।२८	४।४९
२३	७।५	९।२७	११।४६	१३।५१	१५।३३	१६।५८	१८।२१	१९।५४	२१।४९	०।३	२।२४	४।४५
२४	७।१	९।२३	११।४२	१३।४७	१५।२९	१६।५४	१८।१७	१९।५०	२१।४५	२३।५९	२।२०	४।४१
२५	६।५७	९।१९	११।३८	१३।४३	१५।२५	१६।५०	१८।१३	१९।४६	२१।४१	२३।५५	२।१६	४।३७
२६	६।५३	९।१५	११।३४	१३।३९	१५।२१	१६।४६	१८।९	१९।४२	२१।३७	२३।५१	२।१२	४।३३
२७	६।४९	९।११	११।३०	१३।३५	१५।१७	१६।४२	१८।५	१९।३८	२१।३३	२३।४७	२।८	४।२९
२८	६।४५	९।७	११।२६	१३।३१	१५।१३	१६।३८	१८।१	१९।३४	२१।२९	२३।४३	२।४	४।२५
२९	६।४१	९।३	११।२२	१३।२७	१५।९	१६।३४	१७।५७	१९।३०	२१।२५	२३।३९	२।०	४।२१
३०	६।३७	८।५९	११।१८	१३।२३	१५।५	१६।३०	१७।५३	१९।२६	२१।२१	२३।३५	१।५६	४।१७
३१	६।३३	८।५५	११।१४	१३।१९	१५।१	१६।२६	१७।४९	१९।२२	२१।१७	२३।३१	१।५२	४।१३

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना ।

(७) कार्तिक मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	८।५६	११।१५	१३।२०	१५।२	१६।२७	१७।५०	१९।२३	२१।१८	२३।३२	१।५३	४।१४	६।३४
२	८।५२	११।११	१३।१६	१४।५८	१६।२३	१७।४६	१९।१९	२१।१४	२३।२८	१।४९	४।१०	६।३०
३	८।४८	११।७	१३।१२	१४।५४	१६।१९	१७।४२	१९।१५	२१।१०	२३।२४	१।४५	४।६	६।२६
४	८।४४	११।३	१३।८	१४।५०	१६।१५	१७।३८	१९।११	२१।६	२३।२०	१।४१	४।२	६।२२
५	८।४०	१०।५९	१३।४	१४।४६	१६।११	१७।३४	१९।७	२१।२	२३।१६	१।३७	३।५८	६।१८
६	८।३५	१०।५४	१२।५९	१४।४१	१६।६	१७।२९	१९।२	२०।५७	२३।११	१।३२	३।५३	६।१३
७	८।३१	१०।५०	१२।५५	१४।३७	१६।२	१७।२५	१८।५८	२०।५३	२३।७	१।२८	३।४९	६।९
८	८।२७	१०।४६	१२।५१	१४।३३	१५।५८	१७।२१	१८।५४	२०।४९	२३।३	१।२४	३।४५	६।५
९	८।२३	१०।४२	१२।४७	१४।२९	१५।५४	१७।१७	१८।५०	२०।४५	२२।५९	१।२०	३।४१	६।१
१०	८।१९	१०।३८	१२।४३	१४।२५	१५।५०	१७।१३	१८।४६	२०।४१	२२।५५	१।१६	३।३७	५।५७
११	८।१५	१०।३४	१२।३९	१४।२१	१५।४६	१७।९	१८।४२	२०।३७	२२।५१	१।१२	३।३३	५।५३
१२	८।१०	१०।२९	१२।३४	१४।१६	१५।४१	१७।४	१८।३७	२०।३२	२२।४६	१।७	३।२८	५।४८
१३	८।६	१०।२५	१२।३०	१४।१२	१५।३७	१७।०	१८।३३	२०।२८	२२।४२	१।३	३।२४	५।४४
१४	८।२	१०।२१	१२।२६	१४।८	१५।३३	१६।५६	१८।२९	२०।२४	२२।३८	०।५९	३।२०	५।४०
१५	७।५८	१०।१७	१२।२२	१४।४	१५।२९	१६।५२	१८।२५	२०।२०	२२।३४	०।५५	३।१६	५।३६
१६	७।५४	१०।१३	१२।१८	१४।०	१५।२५	१६।४८	१८।२१	२०।१६	२२।३०	०।५१	३।१२	५।३२
१७	७।५०	१०।९	१२।१४	१३।५६	१५।२१	१६।४४	१८।१७	२०।१२	२२।२६	०।४७	३।८	५।२८
१८	७।४५	१०।४	१२।९	१३।५१	१५।१६	१६।३९	१८।१२	२०।७	२२।२१	०।४२	३।३	५।२३
१९	७।४१	१०।०	१२।५	१३।४७	१५।१२	१६।३५	१८।८	२०।३	२२।१७	०।३८	२।५९	५।१९
२०	७।३७	९।५६	१२।१	१३।४३	१५।८	१६।३१	१८।४	१९।५९	२२।१३	०।३४	२।५५	५।१५
२१	७।३३	९।५२	११।५७	१३।३९	१५।४	१६।२७	१८।०	१९।५५	२२।९	०।३०	२।५१	५।११
२२	७।२९	९।४८	११।५३	१३।३५	१५।०	१६।२३	१७।५६	१९।५१	२२।५	०।२६	२।४७	५।७
२३	७।२५	९।४४	११।४९	१३।३१	१४।५६	१६।१९	१७।५२	१९।४७	२२।१	०।२२	२।४३	५।३
२४	७।२०	९।३९	११।४४	१३।२६	१४।५१	१६।१४	१७।४७	१९।४२	२१।५६	०।१७	२।३८	४।५८
२५	७।१६	९।३५	११।४०	१३।२२	१४।४७	१६।१०	१७।४३	१९।३८	२१।५२	०।१३	२।३४	४।५४
२६	७।१२	९।३१	११।३६	१३।१८	१४।४३	१६।६	१७।३९	१९।३४	२१।४८	०।९	२।३०	४।५०
२७	७।८	९।२७	११।३२	१३।१४	१४।३९	१६।२	१७।३५	१९।३०	२१।४४	०।५	२।२६	४।४६
२८	७।४	९।२३	११।२८	१३।१०	१४।३५	१५।५८	१७।३१	१९।२६	२१।४०	०।१	२।२२	४।४२
२९	७।०	९।१९	११।२४	१३।६	१४।३१	१५।५४	१७।२७	१९।२२	२१।३६	२३।५७	२।१८	४।३८
३०	६।५६	९।१५	११।२०	१३।२	१४।२७	१५।५०	१७।२३	१९।१८	२१।३२	२३।५३	२।१४	४।३४

(८) मार्गशीर्ष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	९।१८	११।२२	१३।४	१४।३०	१५।५२	१७।२५	१९।२०	२१।३४	२३।५६	२।१६	४।३६	६।५८
२	९।१४	११।१८	१३।०	१४।२६	१५।४८	१७।२१	१९।१६	२१।३०	२३।५२	२।१२	४।३२	६।५४
३	९।१०	११।१४	१२।५६	१४।२२	१५।४४	१७।१७	१९।१२	२१।२६	२३।४८	२।८	४।२८	६।५०
४	९।६	११।१०	१२।५२	१४।१८	१५।४०	१७।१३	१९।८	२१।२२	२३।४४	२।४	४।२४	६।४६
५	९।१	११।५	१२।४७	१४।१३	१५।३५	१७।८	१९।३	२१।१७	२३।३९	१।५९	४।१९	६।४१
६	८।५७	११।१	१२।४३	१४।९	१५।३१	१७।४	१८।५९	२१।१३	२३।३५	१।५५	४।१५	६।३७
७	८।५३	१०।५७	१२।३९	१४।५	१५।२७	१७।०	१८।५५	२१।९	२३।३१	१।५१	४।११	६।३३
८	८।४८	१०।५२	१२।३४	१४।०	१५।२२	१६।५५	१८।५०	२१।४	२३।२६	१।४६	४।६	६।२८
९	८।४४	१०।४८	१२।३०	१३।५६	१५।१८	१६।५१	१८।४६	२१।०	२३।२२	१।४२	४।२	६।२४
१०	८।४०	१०।४४	१२।२६	१३।५२	१५।१४	१६।४७	१८।४२	२०।५६	२३।१८	१।३८	३।५८	६।२०
११	८।३५	१०।३९	१२।२१	१३।४७	१५।९	१६।४२	१८।३७	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।५३	६।१५
१२	८।३१	१०।३५	१२।१७	१३।४३	१५।५	१६।३८	१८।३३	२०।४७	२३।९	१।२९	३।४९	६।११
१३	८।२७	१०।३१	१२।१३	१३।३९	१५।१	१६।३४	१८।२९	२०।४३	२३।५	१।२५	३।४५	६।७
१४	८।२२	१०।२६	१२।८	१३।३४	१४।५६	१६।२९	१८।२४	२०।३८	२३।०	१।२०	३।४०	६।२
१५	८।१८	१०।२२	१२।४	१३।३०	१४।५२	१६।२५	१८।२०	२०।३४	२२।५६	१।१६	३।३६	५।५८
१६	८।१४	१०।१८	१२।०	१३।२६	१४।४८	१६।२१	१८।१६	२०।३०	२२।५२	१।१२	३।३२	५।५४
१७	८।९	१०।१३	११।५५	१३।२१	१४।४३	१६।१६	१८।११	२०।२५	२२।४७	१।७	३।२७	५।४९
१८	८।५	१०।९	११।५१	१३।१७	१४।३९	१६।१२	१८।७	२०।२१	२२।४३	१।३	३।२३	५।४५
१९	८।१	१०।५	११।४७	१३।१३	१४।३५	१६।८	१८।३	२०।१७	२२।३९	०।५९	३।१९	५।४१
२०	७।५७	१०।१	११।४३	१३।९	१४।३१	१६।४	१७।५९	२०।१३	२२।३५	०।५५	३।१५	५।३७
२१	७।५२	९।५६	११।३८	१३।४	१४।२६	१५।५९	१७।५४	२०।८	२२।३०	०।५०	३।१०	५।३२
२२	७।४८	९।५२	११।३४	१३।०	१४।२२	१५।५५	१७।५०	२०।४	२२।२६	०।४६	३।६	५।२८
२३	७।४४	९।४८	११।३०	१२।५६	१४।१८	१५।५१	१७।४६	२०।०	२२।२२	०।४२	३।२	५।२४
२४	७।३९	९।४३	११।२५	१२।५१	१४।१३	१५।४६	१७।४१	१९।५५	२२।१७	०।३७	२।५७	५।१९
२५	७।३५	९।३९	११।२१	१२।४७	१४।९	१५।४२	१७।३७	१९।५१	२२।१३	०।३३	२।५३	५।१५
२६	७।३१	९।३५	११।१७	१२।४३	१४।५	१५।३८	१७।३३	१९।४७	२२।९	०।२९	२।४९	५।११
२७	७।२६	९।३०	११।१२	१२।३८	१४।०	१५।३३	१७।२८	१९।४२	२२।४	०।२४	२।४४	५।६
२८	७।२२	९।२६	११।८	१२।३४	१३।५६	१५।२९	१७।२४	१९।३८	२२।०	०।२०	२।४०	५।२
२९	७।१८	९।२२	११।४	१२।३०	१३।५२	१५।२५	१७।२०	१९।३४	२१।५६	०।१६	२।३६	४।५८

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(९) पौष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चि.
१	९।२३	११।५	१२।३१	१३।५३	१५।२७	१७।२१	१९।३५	२१।५७	०।१८	२।३८	४।५९	७।१९
२	९।१८	११।०	१२।२६	१३।४८	१५।२२	१७।१६	१९।३०	२१।५२	०।१३	२।३३	४।५४	७।१४
३	९।१४	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१५।१८	१७।१२	१९।२६	२१।४८	०।९	२।२९	४।५०	७।१०
४	९।१०	१०।५२	१२।१८	१३।४०	१५।१४	१७।८	१९।२२	२१।४४	०।५	२।२५	४।४६	७।६
५	९।६	१०।४८	१२।१४	१३।३६	१५।१०	१७।४	१९।१८	२१।४०	०।१	२।२१	४।४२	७।२
६	९।२	१०।४४	१२।१०	१३।३२	१५।६	१७।०	१९।१४	२१।३६	२३।५७	२।१७	४।३८	६।५८
७	८।५८	१०।४०	१२।६	१३।२८	१५।२	१६।५६	१९।१०	२१।३२	२३।५३	२।१३	४।३४	६।५४
८	८।५४	१०।३६	१२।२	१३।२४	१४।५८	१६।५२	१९।६	२१।२८	२३।४९	२।९	४।३०	६।५०
९	८।५०	१०।३२	११।५८	१३।२०	१४।५४	१६।४८	१९।२	२१।२४	२३।४५	२।५	४।२६	६।४६
१०	८।४५	१०।२७	११।५३	१३।१५	१४।४९	१६।४३	१८।५७	२१।१९	२३।४०	२।०	४।२१	६।४१
११	८।४१	१०।२३	११।४९	१३।११	१४।४५	१६।३९	१८।५३	२१।१५	२३।३६	१।५६	४।१७	६।३७
१२	८।३७	१०।१९	११।४५	१३।७	१४।४१	१६।३५	१८।४९	२१।११	२३।३२	१।५२	४।१३	६।३३
१३	८।३३	१०।१५	११।४१	१३।३	१४।३७	१६।३१	१८।४५	२१।७	२३।२८	१।४८	४।९	६।२९
१४	८।२९	१०।११	११।३७	१२।५९	१४।३३	१६।२७	१८।४१	२१।३	२३।२४	१।४४	४।५	६।२५
१५	८।२५	१०।७	११।३३	१२।५५	१४।२९	१६।२३	१८।३७	२०।५९	२३।२०	१।४०	४।१	६।२१
१६	८।२१	१०।३	११।२९	१२।५१	१४।२५	१६।१९	१८।३३	२०।५५	२३।१६	१।३६	३।५७	६।१७
१७	८।१७	९।५९	११।२५	१२।४७	१४।२१	१६।१५	१८।२९	२०।५१	२३।१२	१।३२	३।५३	६।१३
१८	८।१३	९।५५	११।२१	१२।४३	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४७	२३।८	१।२८	३।४९	६।९
१९	८।९	९।५१	११।१७	१२।३९	१४।१३	१६।७	१८।२१	२०।४३	२३।४	१।२४	३।४५	६।५
२०	८।४	९।४६	११।१२	१२।३४	१४।८	१६।२	१८।१६	२०।३८	२२।५९	१।१९	३।४०	६।०
२१	८।०	९।४२	११।८	१२।३०	१४।४	१५।५८	१८।१२	२०।३४	२२।५५	१।१५	३।३६	५।५६
२२	७।५६	९।३८	११।४	१२।२६	१४।०	१५।५४	१८।८	२०।३०	२२।५१	१।११	३।३२	५।५२
२३	७।५२	९।३४	११।०	१२।२२	१३।५६	१५।५०	१८।४	२०।२६	२२।४७	१।७	३।२८	५।४८
२४	७।४८	९।३०	१०।५६	१२।१८	१३।५२	१५।४६	१८।०	२०।२२	२२।४३	१।३	३।२४	५।४४
२५	७।४४	९।२६	१०।५२	१२।१४	१३।४८	१५।४२	१७।५६	२०।१८	२२।३९	०।५९	३।२०	५।४०
२६	७।४०	९।२२	१०।४८	१२।१०	१३।४४	१५।३८	१७।५२	२०।१४	२२।३५	०।५५	३।१६	५।३६
२७	७।३६	९।१८	१०।४४	१२।६	१३।४०	१५।३४	१७।४८	२०।१०	२२।३१	०।५१	३।१२	५।३२
२८	७।३२	९।१४	१०।४०	१२।२	१३।३६	१५।३०	१७।४४	२०।६	२२।२७	०।४७	३।८	५।२८
२९	७।२८	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२३	०।४३	३।४	५।२४

(१०) माघ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु
१	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२२	०।४२	३।४	५।२४	७।२८
२	९।६	१०।३२	११।५४	१३।२८	१५।२२	१७।३६	१९।५८	२२।१८	०।३८	३।०	५।२०	७।२४
३	९।२	१०।२८	११।५०	१३।२४	१५।१८	१७।३२	१९।५४	२२।१४	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
४	८।५८	१०।२४	११।४६	१३।२०	१५।१४	१७।२८	१९।५०	२२।१०	०।३०	२।५२	५।१२	७।१६
५	८।५४	१०।२०	११।४२	१३।१६	१५।१०	१७।२४	१९।४६	२२।६	०।२६	२।४८	५।८	७।१२
६	८।५०	१०।१६	११।३८	१३।१२	१५।६	१७।२०	१९।४२	२२।२	०।२२	२।४४	५।४	७।८
७	८।४६	१०।१२	११।३४	१३।८	१५।२	१७।१६	१९।३८	२१।५८	०।१८	२।४०	५।०	७।४
८	८।४२	१०।८	११।३०	१३।४	१४।५८	१७।१२	१९।३४	२१।५४	०।१४	२।३६	४।५६	७।०
९	८।३८	१०।४	११।२६	१३।०	१४।५४	१७।८	१९।३०	२१।५०	०।१०	२।३२	४।५२	६।५६
१०	८।३४	१०।०	११।२२	१२।५६	१४।५०	१७।४	१९।२६	२१।४६	०।६	२।२८	४।४८	६।५२
११	८।३०	९।५६	११।१८	१२।५२	१४।४६	१७।०	१९।२२	२१।४२	०।२	२।२४	४।४४	६।४८
१२	८।२६	९।५२	११।१४	१२।४८	१४।४२	१६।५६	१९।१८	२१।३८	२३।५८	२।२०	४।४०	६।४४
१३	८।२२	९।४८	११।१०	१२।४४	१४।३८	१६।५२	१९।१४	२१।३४	२३।५४	२।१६	४।३६	६।४०
१४	८।१८	९।४४	११।६	१२।४०	१४।३४	१६।४८	१९।१०	२१।३०	२३।५०	२।१२	४।३२	६।३६
१५	८।१३	९।३९	११।१	१२।३५	१४।२९	१६।४३	१९।५	२१।२५	२३।४५	२।७	४।२७	६।३१
१६	८।९	९।३५	१०।५७	१२।३१	१४।२५	१६।३९	१९।१	२१।२१	२३।४१	२।३	४।२३	६।२७
१७	८।५	९।३१	१०।५३	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५७	२१।१७	२३।३७	१।५९	४।१९	६।२३
१८	८।१	९।२७	१०।४९	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५३	२१।१३	२३।३३	१।५५	४।१५	६।१९
१९	७।५७	९।२३	१०।४५	१२।१९	१४।१३	१६।२७	१८।४९	२१।९	२३।२९	१।५१	४।११	६।१५
२०	७।५३	९।१९	१०।४१	१२।१५	१४।९	१६।२३	१८।४५	२१।५	२३।२५	१।४७	४।७	६।११
२१	७।४९	९।१५	१०।३७	१२।११	१४।५	१६।१९	१८।४१	२१।१	२३।२१	१।४३	४।३	६।७
२२	७।४५	९।११	१०।३३	१२।७	१४।१	१६।१५	१८।३७	२०।५७	२३।१७	१।३९	३।५९	६।३
२३	७।४१	९।७	१०।२९	१२।३	१३।५७	१६।११	१८।३३	२०।५३	२३।१३	१।३५	३।५५	५।५९
२४	७।३७	९।३	१०।२५	११।५९	१३।५३	१६।७	१८।२९	२०।४९	२३।९	१।३१	३।५१	५।५५
२५	७।३३	८।५९	१०।२१	११।५५	१३।४९	१६।३	१८।२५	२०।४५	२३।५	१।२७	३।४७	५।५१
२६	७।२९	८।५५	१०।१७	११।५१	१३।४५	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२३।१	१।२३	३।४३	५।४७
२७	७।२५	८।५१	१०।१३	११।४७	१३।४१	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।५७	१।१९	३।३९	५।४३
२८	७।२१	८।४७	१०।९	११।४३	१३।३७	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।५३	१।१५	३।३५	५।३९
२९	७।१७	८।४३	१०।५	११।३९	१३।३३	१५।४७	१८।९	२०।२९	२२।४९	१।११	३।३१	५।३५
३०	७।१३	८।३९	१०।१	११।३५	१३।२९	१५।४३	१८।५	२०।२५	२२।४५	१।७	३।२७	५।३१

सूचना--मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उस से पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(११) फाल्गुन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर
१	८।३८	१०।०	११।३४	१३।२८	१५।४२	१८।४	२०।२४	२२।४४	१।६	३।२६	५।३०	७।१२
२	८।३४	९।५६	११।३०	१३।२४	१५।३८	१८।०	२०।२०	२२।४०	१।२	३।२२	५।२६	७।८
३	८।३०	९।५२	११।२६	१३।२०	१५।३४	१७।५६	२०।१६	२२।३६	०।५८	३।१८	५।२२	७।४
४	८।२६	९।४८	११।२२	१३।१६	१५।३०	१७।५२	२०।१२	२२।३२	०।५४	३।१४	५।१८	७।०
५	८।२२	९।४४	११।१८	१३।१२	१५।२६	१७।४८	२०।८	२२।२८	०।५०	३।१०	५।१४	६।५६
६	८।१८	९।४०	११।१४	१३।८	१५।२२	१७।४४	२०।४	२२।२४	०।४६	३।६	५।१०	६।५२
७	८।१४	९।३६	११।१०	१३।४	१५।१८	१७।४०	२०।०	२२।२०	०।४२	३।२	५।६	६।४८
८	८।१०	९।३२	११।६	१३।०	१५।१४	१७।३६	१९।५६	२२।१६	०।३८	२।५८	५।२	६।४४
९	८।६	९।२८	११।२	१२।५६	१५।१०	१७।३२	१९।५२	२२।१२	०।३४	२।५४	४।५८	६।४०
१०	८।२	९।२४	१०।५८	१२।५२	१५।६	१७।२८	१९।४८	२२।८	०।३०	२।५०	४।५४	६।३६
११	७।५८	९।२०	१०।५४	१२।४८	१५।२	१७।२४	१९।४४	२२।४	०।२६	२।४६	४।५०	६।३२
१२	७।५४	९।१६	१०।५०	१२।४४	१४।५८	१७।२०	१९।४०	२२।०	०।२२	२।४२	४।४६	६।२८
१३	७।५०	९।१२	१०।४६	१२।४०	१४।५४	१७।१६	१९।३६	२१।५६	०।१८	२।३८	४।४२	६।२४
१४	७।४६	९।८	१०।४२	१२।३६	१४।५०	१७।१२	१९।३२	२१।५२	०।१४	२।३४	४।३८	६।२०
१५	७।४१	९।३	१०।३७	१२।३१	१४।४५	१७।७	१९।२७	२१।४७	०।९	२।२९	४।३३	६।१५
१६	७।३७	८।५९	१०।३३	१२।२७	१४।४१	१७।३	१९।२३	२१।४३	०।५	२।२५	४।२९	६।११
१७	७।३३	८।५५	१०।२९	१२।२३	१४।३७	१६।५९	१९।१९	२१।३९	०।१	२।२१	४।२५	६।७
१८	७।२९	८।५१	१०।२५	१२।१९	१४।३३	१६।५५	१९।१५	२१।३५	२३।५७	२।१७	४।२१	६।३
१९	७।२५	८।४७	१०।२१	१२।१५	१४।२९	१६।५१	१९।११	२१।३१	२३।५३	२।१३	४।१७	५।५९
२०	७।२१	८।४३	१०।१७	१२।११	१४।२५	१६।४७	१९।७	२१।२७	२३।४९	२।९	४।१३	५।५५
२१	७।१७	८।३९	१०।१३	१२।७	१४।२१	१६।४३	१९।३	२१।२३	२३।४५	२।५	४।९	५।५१
२२	७।१३	८।३५	१०।९	१२।३	१४।१७	१६।३९	१८।५९	२१।१९	२३।४१	२।१	४।५	५।४७
२३	७।९	८।३१	१०।५	११।५९	१४।१३	१६।३५	१८।५५	२१।१५	२३।३७	१।५७	४।१	५।४३
२४	७।५	८।२७	१०।१	११।५५	१४।९	१६।३१	१८।५१	२१।११	२३।३३	१।५३	३।५७	५।३९
२५	७।१	८।२३	९।५७	११।५१	१४।५	१६।२७	१८।४७	२१।७	२३।२९	१।४९	३।५३	५।३५
२६	६।५७	८।१९	९।५३	११।४७	१४।१	१६।२३	१८।४३	२१।३	२३।२५	१।४५	३।४९	५।३१
२७	६।५३	८।१५	९।४९	११।४३	१३।५७	१६।१९	१८।३९	२०।५९	२३।२१	१।४१	३।४५	५।२७
२८	६।४९	८।११	९।४५	११।३९	१३।५३	१६।१५	१८।३५	२०।५५	२३।१७	१।३७	३।४१	५।२३
२९	६।४५	८।७	९।४१	११।३५	१३।४९	१६।११	१८।३१	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।३७	५।१९
३०	६।४१	८।३	९।३७	११।३१	१३।४५	१६।७	१८।२७	२०।४७	२३।९	१।२९	३।३३	५।१५

(१२) चैत्र मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
१	८।२	९।३६	११।३०	१३।४४	१६।६	१८।२७	२०।४७	२३।८	१।२८	३।३२	५।१४	६।४०
२	७।५८	९।३२	११।२६	१३।४०	१६।२	१८।२३	२०।४३	२३।४	१।२४	३।२८	५।१०	६।३६
३	७।५४	९।२८	११।२२	१३।३६	१५।५८	१८।१९	२०।३९	२३।०	१।२०	३।२४	५।६	६।३२
४	७।५०	९।२४	११।१८	१३।३२	१५।५४	१८।१५	२०।३५	२२।५६	१।१६	३।२०	५।२	६।२८
५	७।४६	९।२०	११।१४	१३।२८	१५।५०	१८।११	२०।३१	२२।५२	१।१२	३।१६	४।५८	६।२४
६	७।४२	९।१६	११।१०	१३।२४	१५।४६	१८।७	२०।२७	२२।४८	१।८	३।१२	४।५४	६।२०
७	७।३८	९।१२	११।६	१३।२०	१५।४२	१८।३	२०।२३	२२।४४	१।४	३।८	४।५०	६।१६
८	७।३४	९।८	११।२	१३।१६	१५।३८	१७।५९	२०।१९	२२।४०	१।०	३।४	४।४६	६।१२
९	७।३०	९।४	१०।५८	१३।१२	१५।३४	१७।५५	२०।१५	२२।३६	०।५६	३।०	४।४२	६।८
१०	७।२५	८।५९	१०।५३	१३।७	१५।२९	१७।५०	२०।१०	२२।३१	०।५१	२।५५	४।३७	६।३
११	७।२१	८।५५	१०।४९	१३।३	१५।२५	१७।४६	२०।६	२२।२७	०।४७	२।५१	४।३३	५।५९
१२	७।१७	८।५१	१०।४५	१२।५९	१५।२१	१७।४२	२०।२	२२।२३	०।४३	२।४७	४।२९	५।५५
१३	७।१३	८।४७	१०।४१	१२।५५	१५।१७	१७।३८	१९।५८	२२।१९	०।३९	२।४३	४।२५	५।५१
१४	७।९	८।४३	१०।३७	१२।५१	१५।१३	१७।३४	१९।५४	२२।१५	०।३५	२।३९	४।२१	५।४७
१५	७।५	८।३९	१०।३३	१२।४७	१५।९	१७।३०	१९।५०	२२।११	०।३१	२।३५	४।१७	५।४३
१६	७।१	८।३५	१०।२९	१२।४३	१५।५	१७।२६	१९।४६	२२।७	०।२७	२।३१	४।१३	५।३९
१७	६।५७	८।३१	१०।२५	१२।३९	१५।१	१७।२२	१९।४२	२२।३	०।२३	२।२७	४।९	५।३५
१८	६।५३	८।२७	१०।२१	१२।३५	१४।५७	१७।१८	१९।३८	२१।५९	०।१९	२।२३	४।५	५।३१
१९	६।४९	८।२३	१०।१७	१२।३१	१४।५३	१७।१४	१९।३४	२१।५५	०।१५	२।१९	४।१	५।२७
२०	६।४४	८।१८	१०।१२	१२।२६	१४।४८	१७।९	१९।२९	२१।५०	०।१०	२।१४	३।५६	५।२२
२१	६।४०	८।१४	१०।८	१२।२२	१४।४४	१७।५	१९।२५	२१।४६	०।६	२।१०	३।५२	५।१८
२२	६।३६	८।१०	१०।४	१२।१८	१४।४०	१७।१	१९।२१	२१।४२	०।२	२।६	३।४८	५।१४
२३	६।३२	८।६	१०।०	१२।१४	१४।३६	१६।५७	१९।१७	२१।३८	२३।५८	२।२	३।४४	५।१०
२४	६।२८	८।२	९।५६	१२।१०	१४।३२	१६।५३	१९।१३	२१।३४	२३।५४	१।५८	३।४०	५।६
२५	६।२४	७।५८	९।५२	१२।६	१४।२८	१६।४९	१९।९	२१।३०	२३।५०	१।५४	३।३६	५।२
२६	६।२०	७।५४	९।४८	१२।२	१४।२४	१६।४५	१९।५	२१।२६	२३।४६	१।५०	३।३२	४।५८
२७	६।१६	७।५०	९।४४	११।५८	१४।२०	१६।४१	१९।१	२१।२२	२३।४२	१।४६	३।२८	४।५४
२८	६।१२	७।४६	९।४०	११।५४	१४।१६	१६।३७	१८।५७	२१।१८	२३।३८	१।४२	३।२४	४।५०
२९	६।८	७।४२	९।३६	११।५०	१४।१२	१६।३३	१८।५३	२१।१४	२३।३४	१।३८	३।२०	४।४६
३०	६।४	७।३८	९।३२	११।४६	१४।८	१६।२९	१८।४९	२१।१०	२३।३०	१।३४	३।१६	४।४२

सूचना:— मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(९) पौष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चि.
१	९।२३	११।५	१२।३१	१३।५३	१५।२७	१७।२१	१९।३५	२१।५७	०।१८	२।३८	४।५९	७।१९
२	९।१८	११।०	१२।२६	१३।४८	१५।२२	१७।१६	१९।३०	२१।५२	०।१३	२।३३	४।५४	७।१४
३	९।१४	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१५।१८	१७।१२	१९।२६	२१।४८	०।९	२।२९	४।५०	७।१०
४	९।१०	१०।५२	१२।१८	१३।४०	१५।१४	१७।८	१९।२२	२१।४४	०।५	२।२५	४।४६	७।६
५	९।६	१०।४८	१२।१४	१३।३६	१५।१०	१७।४	१९।१८	२१।४०	०।१	२।२१	४।४२	७।२
६	९।२	१०।४४	१२।१०	१३।३२	१५।६	१७।०	१९।१४	२१।३६	२३।५७	२।१७	४।३८	६।५८
७	८।५८	१०।४०	१२।६	१३।२८	१५।२	१६।५६	१९।१०	२१।३२	२३।५३	२।१३	४।३४	६।५४
८	८।५४	१०।३६	१२।२	१३।२४	१४।५८	१६।५२	१९।६	२१।२८	२३।४९	२।९	४।३०	६।५०
९	८।५०	१०।३२	११।५८	१३।२०	१४।५४	१६।४८	१९।२	२१।२४	२३।४५	२।५	४।२६	६।४६
१०	८।४५	१०।२७	११।५३	१३।१५	१४।४९	१६।४३	१८।५७	२१।१९	२३।४०	२।०	४।२१	६।४१
११	८।४१	१०।२३	११।४९	१३।११	१४।४५	१६।३९	१८।५३	२१।१५	२३।३६	१।५६	४।१७	६।३७
१२	८।३७	१०।१९	११।४५	१३।७	१४।४१	१६।३५	१८।४९	२१।११	२३।३२	१।५२	४।१३	६।३३
१३	८।३३	१०।१५	११।४१	१३।३	१४।३७	१६।३१	१८।४५	२१।७	२३।२८	१।४८	४।९	६।२९
१४	८।२९	१०।११	११।३७	१२।५९	१४।३३	१६।२७	१८।४१	२१।३	२३।२४	१।४४	४।५	६।२५
१५	८।२५	१०।७	११।३३	१२।५५	१४।२९	१६।२३	१८।३७	२०।५९	२३।२०	१।४०	४।१	६।२१
१६	८।२१	१०।३	११।२९	१२।५१	१४।२५	१६।१९	१८।३३	२०।५५	२३।१६	१।३६	३।५७	६।१७
१७	८।१७	९।५९	११।२५	१२।४७	१४।२१	१६।१५	१८।२९	२०।५१	२३।१२	१।३२	३।५३	६।१३
१८	८।१३	९।५५	११।२१	१२।४३	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४७	२३।८	१।२८	३।४९	६।९
१९	८।९	९।५१	११।१७	१२।३९	१४।१३	१६।७	१८।२१	२०।४३	२३।४	१।२४	३।४५	६।५
२०	८।४	९।४६	११।१२	१२।३४	१४।८	१६।२	१८।१६	२०।३८	२२।५९	१।१९	३।४०	६।०
२१	८।०	९।४२	११।८	१२।३०	१४।४	१५।५८	१८।१२	२०।३४	२२।५५	१।१५	३।३६	५।५६
२२	७।५६	९।३८	११।४	१२।२६	१४।०	१५।५४	१८।८	२०।३०	२२।५१	१।११	३।३२	५।५२
२३	७।५२	९।३४	११।०	१२।२२	१३।५६	१५।५०	१८।४	२०।२६	२२।४७	१।७	३।२८	५।४८
२४	७।४८	९।३०	१०।५६	१२।१८	१३।५२	१५।४६	१८।०	२०।२२	२२।४३	१।३	३।२४	५।४४
२५	७।४४	९।२६	१०।५२	१२।१४	१३।४८	१५।४२	१७।५६	२०।१८	२२।३९	०।५९	३।२०	५।४०
२६	७।४०	९।२२	१०।४८	१२।१०	१३।४४	१५।३८	१७।५२	२०।१४	२२।३५	०।५५	३।१६	५।३६
२७	७।३६	९।१८	१०।४४	१२।६	१३।४०	१५।३४	१७।४८	२०।१०	२२।३१	०।५१	३।१२	५।३२
२८	७।३२	९।१४	१०।४०	१२।२	१३।३६	१५।३०	१७।४४	२०।६	२२।२७	०।४७	३।८	५।२८
२९	७।२८	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२३	०।४३	३।४	५।२४

(१०) माघ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु
१	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२२	०।४२	३।४	५।२४	७।२८
२	९।६	१०।३२	११।५४	१३।२८	१५।२२	१७।३६	१९।५८	२२।१८	०।३८	३।०	५।२०	७।२४
३	९।२	१०।२८	११।५०	१३।२४	१५।१८	१७।३२	१९।५४	२२।१४	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
४	८।५८	१०।२४	११।४६	१३।२०	१५।१४	१७।२८	१९।५०	२२।१०	०।३०	२।५२	५।१२	७।१६
५	८।५४	१०।२०	११।४२	१३।१६	१५।१०	१७।२४	१९।४६	२२।६	०।२६	२।४८	५।८	७।१२
६	८।५०	१०।१६	११।३८	१३।१२	१५।६	१७।२०	१९।४२	२२।२	०।२२	२।४४	५।४	७।८
७	८।४६	१०।१२	११।३४	१३।८	१५।२	१७।१६	१९।३८	२१।५८	०।१८	२।४०	५।०	७।४
८	८।४२	१०।८	११।३०	१३।४	१४।५८	१७।१२	१९।३४	२१।५४	०।१४	२।३६	४।५६	७।०
९	८।३८	१०।४	११।२६	१३।०	१४।५४	१७।८	१९।३०	२१।५०	०।१०	२।३२	४।५२	६।५६
१०	८।३४	१०।०	११।२२	१२।५६	१४।५०	१७।४	१९।२६	२१।४६	०।६	२।२८	४।४८	६।५२
११	८।३०	९।५६	११।१८	१२।५२	१४।४६	१७।०	१९।२२	२१।४२	०।२	२।२४	४।४४	६।४८
१२	८।२६	९।५२	११।१४	१२।४८	१४।४२	१६।५६	१९।१८	२१।३८	२३।५८	२।२०	४।४०	६।४४
१३	८।२२	९।४८	११।१०	१२।४४	१४।३८	१६।५२	१९।१४	२१।३४	२३।५४	२।१६	४।३६	६।४०
१४	८।१८	९।४४	११।६	१२।४०	१४।३४	१६।४८	१९।१०	२१।३०	२३।५०	२।१२	४।३२	६।३६
१५	८।१३	९।३९	११।१	१२।३५	१४।२९	१६।४३	१९।५	२१।२५	२३।४६	२।७	४।२७	६।३१
१६	८।९	९।३५	१०।५७	१२।३१	१४।२५	१६।३९	१९।१	२१।२१	२३।४२	२।३	४।२३	६।२७
१७	८।५	९।३१	१०।५३	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५७	२१।१७	२३।३७	१।५९	४।१९	६।२३
१८	८।१	९।२७	१०।४९	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५३	२१।१३	२३।३३	१।५५	४।१५	६।१९
१९	७।५७	९।२३	१०।४५	१२।१९	१४।१३	१६।२७	१८।४९	२१।९	२३।२९	१।५१	४।११	६।१५
२०	७।५३	९।१९	१०।४१	१२।१५	१४।९	१६।२३	१८।४५	२१।५	२३।२५	१।४७	४।७	६।११
२१	७।४९	९।१५	१०।३७	१२।११	१४।५	१६।१९	१८।४१	२१।१	२३।२१	१।४३	४।३	६।७
२२	७।४५	९।११	१०।३३	१२।७	१४।१	१६।१५	१८।३७	२०।५७	२३।१७	१।३९	३।५९	६।३
२३	७।४१	९।७	१०।२९	१२।३	१३।५७	१६।११	१८।३३	२०।५३	२३।१३	१।३५	३।५५	५।५९
२४	७।३७	९।३	१०।२५	११।५९	१३।५३	१६।७	१८।२९	२०।४९	२३।९	१।३१	३।५१	५।५५
२५	७।३३	८।५९	१०।२१	११।५५	१३।४९	१६।३	१८।२५	२०।४५	२३।५	१।२७	३।४७	५।५१
२६	७।२९	८।५५	१०।१७	११।५१	१३।४५	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२३।१	१।२३	३।४३	५।४७
२७	७।२५	८।५१	१०।१३	११।४७	१३।४१	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।५७	१।१९	३।३९	५।४३
२८	७।२१	८।४७	१०।९	११।४३	१३।३७	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।५३	१।१५	३।३५	५।३९
२९	७।१७	८।४३	१०।५	११।३९	१३।३३	१५।४७	१८।९	२०।२९	२२।४९	१।११	३।३१	५।३५
३०	७।१३	८।३९	१०।१	११।३५	१३।२९	१५।४३	१८।५	२०।२५	२२।४५	१।७	३।२७	५।३१

सूचना--मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उस से पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(११) फाल्गुन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर
१	८।३८	१०।०	११।३४	१३।२८	१५।४२	१८।४	२०।२४	२२।४४	१।६	३।२६	५।३०	७।१२
२	८।३४	९।५६	११।३०	१३।२४	१५।३८	१८।०	२०।२०	२२।४०	१।२	३।२२	५।२६	७।८
३	८।३०	९।५२	११।२६	१३।२०	१५।३४	१७।५६	२०।१६	२२।३६	०।५८	३।१८	५।२२	७।४
४	८।२६	९।४८	११।२२	१३।१६	१५।३०	१७।५२	२०।१२	२२।३२	०।५४	३।१४	५।१८	७।०
५	८।२२	९।४४	११।१८	१३।१२	१५।२६	१७।४८	२०।८	२२।२८	०।५०	३।१०	५।१४	६।५६
६	८।१८	९।४०	११।१४	१३।८	१५।२२	१७।४४	२०।४	२२।२४	०।४६	३।६	५।१०	६।५२
७	८।१४	९।३६	११।१०	१३।४	१५।१८	१७।४०	२०।०	२२।२०	०।४२	३।२	५।६	६।४८
८	८।१०	९।३२	११।६	१३।०	१५।१४	१७।३६	१९।५६	२२।१६	०।३८	२।५८	५।२	६।४४
९	८।६	९।२८	११।२	१२।५६	१५।१०	१७।३२	१९।५२	२२।१२	०।३४	२।५४	४।५८	६।४०
१०	८।२	९।२४	१०।५८	१२।५२	१५।६	१७।२८	१९।४८	२२।८	०।३०	२।५०	४।५४	६।३६
११	७।५८	९।२०	१०।५४	१२।४८	१५।२	१७।२४	१९।४४	२२।४	०।२६	२।४६	४।५०	६।३२
१२	७।५४	९।१६	१०।५०	१२।४४	१४।५८	१७।२०	१९।४०	२२।०	०।२२	२।४२	४।४६	६।२८
१३	७।५०	९।१२	१०।४६	१२।४०	१४।५४	१७।१६	१९।३६	२१।५६	०।१८	२।३८	४।४२	६।२४
१४	७।४६	९।८	१०।४२	१२।३६	१४।५०	१७।१२	१९।३२	२१।५२	०।१४	२।३४	४।३८	६।२०
१५	७।४१	९।३	१०।३७	१२।३१	१४।४५	१७।७	१९।२७	२१।४७	०।९	२।२९	४।३३	६।१५
१६	७।३७	८।५९	१०।३३	१२।२७	१४।४१	१७।३	१९।२३	२१।४३	०।५	२।२५	४।२९	६।११
१७	७।३३	८।५५	१०।२९	१२।२३	१४।३७	१६।५९	१९।१९	२१।३९	०।१	२।२१	४।२५	६।७
१८	७।२९	८।५१	१०।२५	१२।१९	१४।३३	१६।५५	१९।१५	२१।३५	२३।५७	२।१७	४।२१	६।३
१९	७।२५	८।४७	१०।२१	१२।१५	१४।२९	१६।५१	१९।११	२१।३१	२३।५३	२।१३	४।१७	५।५९
२०	७।२१	८।४३	१०।१७	१२।११	१४।२५	१६।४७	१९।७	२१।२७	२३।४९	२।९	४।१३	५।५५
२१	७।१७	८।३९	१०।१३	१२।७	१४।२१	१६।४३	१९।३	२१।२३	२३।४५	२।५	४।९	५।५१
२२	७।१३	८।३५	१०।९	१२।३	१४।१७	१६।३९	१८।५९	२१।१९	२३।४१	२।१	४।५	५।४७
२३	७।९	८।३१	१०।५	११।५९	१४।१३	१६।३५	१८।५५	२१।१५	२३।३७	१।५७	४।१	५।४३
२४	७।५	८।२७	१०।१	११।५५	१४।९	१६।३१	१८।५१	२१।११	२३।३३	१।५३	३।५७	५।३९
२५	७।१	८।२३	९।५७	११।५१	१४।५	१६।२७	१८।४७	२१।७	२३।२९	१।४९	३।५३	५।३५
२६	६।५७	८।१९	९।५३	११।४७	१४।१	१६।२३	१८।४३	२१।३	२३।२५	१।४५	३।४९	५।३१
२७	६।५३	८।१५	९।४९	११।४३	१३।५७	१६।१९	१८।३९	२०।५९	२३।२१	१।४१	३।४५	५।२७
२८	६।४९	८।११	९।४५	११।३९	१३।५३	१६।१५	१८।३५	२०।५५	२३।१७	१।३७	३।४१	५।२३
२९	६।४५	८।७	९।४१	११।३५	१३।४९	१६।११	१८।३१	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।३७	५।१९
३०	६।४१	८।३	९।३७	११।३१	१३।४५	१६।७	१८।२७	२०।४७	२३।९	१।२९	३।३३	५।१५

(१२) चैत्र मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्ट	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
१	८।२	९।३६	११।३०	१३।४४	१६।६	१८।२७	२०।४७	२३।८	१।२८	३।३२	५।१४	६।४०
२	७।५८	९।३२	११।२६	१३।४०	१६।२	१८।२३	२०।४३	२३।४	१।२४	३।२८	५।१०	६।३६
३	७।५४	९।२८	११।२२	१३।३६	१५।५८	१८।१९	२०।३९	२३।०	१।२०	३।२४	५।६	६।३२
४	७।५०	९।२४	११।१८	१३।३२	१५।५४	१८।१५	२०।३५	२२।५६	१।१६	३।२०	५।२	६।२८
५	७।४६	९।२०	११।१४	१३।२८	१५।५०	१८।११	२०।३१	२२।५२	१।१२	३।१६	४।५८	६।२४
६	७।४२	९।१६	११।१०	१३।२४	१५।४६	१८।७	२०।२७	२२।४८	१।८	३।१२	४।५४	६।२०
७	७।३८	९।१२	११।६	१३।२०	१५।४२	१८।३	२०।२३	२२।४४	१।४	३।८	४।५०	६।१६
८	७।३४	९।८	११।२	१३।१६	१५।३८	१७।५९	२०।१९	२२।४०	१।०	३।४	४।४६	६।१२
९	७।३०	९।४	१०।५८	१३।१२	१५।३४	१७।५५	२०।१५	२२।३६	०।५६	३।०	४।४२	६।८
१०	७।२५	८।५९	१०।५३	१३।७	१५।२९	१७।५०	२०।१०	२२।३१	०।५१	२।५५	४।३७	६।३
११	७।२१	८।५५	१०।४९	१३।३	१५।२५	१७।४६	२०।६	२२।२७	०।४७	२।५१	४।३३	५।५९
१२	७।१७	८।५१	१०।४५	१२।५९	१५।२१	१७।४२	२०।२	२२।२३	०।४३	२।४७	४।२९	५।५५
१३	७।१३	८।४७	१०।४१	१२।५५	१५।१७	१७।३८	१९।५८	२२।१९	०।३९	२।४३	४।२५	५।५१
१४	७।९	८।४३	१०।३७	१२।५१	१५।१३	१७।३४	१९।५४	२२।१५	०।३५	२।३९	४।२१	५।४७
१५	७।५	८।३९	१०।३३	१२।४७	१५।९	१७।३०	१९।५०	२२।११	०।३१	२।३५	४।१७	५।४३
१६	७।१	८।३५	१०।२९	१२।४३	१५।५	१७।२६	१९।४६	२२।७	०।२७	२।३१	४।१३	५।३९
१७	६।५७	८।३१	१०।२५	१२।३९	१५।१	१७।२२	१९।४२	२२।३	०।२३	२।२७	४।९	५।३५
१८	६।५३	८।२७	१०।२१	१२।३५	१४।५७	१७।१८	१९।३८	२१।५९	०।१९	२।२३	४।५	५।३१
१९	६।४९	८।२३	१०।१७	१२।३१	१४।५३	१७।१४	१९।३४	२१।५५	०।१५	२।१९	४।१	५।२७
२०	६।४४	८।१८	१०।१२	१२।२६	१४।४८	१७।९	१९।२९	२१।५०	०।१०	२।१४	३।५६	५।२२
२१	६।४०	८।१४	१०।८	१२।२२	१४।४४	१७।५	१९।२५	२१।४६	०।६	२।१०	३।५२	५।१८
२२	६।३६	८।१०	१०।४	१२।१८	१४।४०	१७।१	१९।२१	२१।४२	०।२	२।६	३।४८	५।१४
२३	६।३२	८।६	१०।०	१२।१४	१४।३६	१६।५७	१९।१७	२१।३८	२३।५८	२।२	३।४४	५।१०
२४	६।२८	८।२	९।५६	१२।१०	१४।३२	१६।५३	१९।१३	२१।३४	२३।५४	१।५८	३।४०	५।६
२५	६।२४	७।५८	९।५२	१२।६	१४।२८	१६।४९	१९।९	२१।३०	२३।५०	१।५४	३।३६	५।२
२६	६।२०	७।५४	९।४८	१२।२	१४।२४	१६।४५	१९।५	२१।२६	२३।४६	१।५०	३।३२	४।५८
२७	६।१६	७।५०	९।४४	११।५८	१४।२०	१६।४१	१९।१	२१।२२	२३।४२	१।४६	३।२८	४।५४
२८	६।१२	७।४६	९।४०	११।५४	१४।१६	१६।३७	१८।५७	२१।१८	२३।३८	१।४२	३।२४	४।५०
२९	६।८	७।४२	९।३६	११।५०	१४।१२	१६।३३	१८।५३	२१।१४	२३।३४	१।३८	३।२०	४।४६
३०	६।४	७।३८	९।३२	११।४६	१४।८	१६।२९	१८।४९	२१।१०	२३।३०	१।३४	३।१६	४।४२

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

दैनिक लग्नसारणी देखने की रीति——

दैनिक लग्नसारणी में जो घण्टे मिनट लिखे हैं वे रेल्वे व्यावहारिक ढंग से लिखे गये हैं। जैसे रात के १को १ लिखा गया है और दिन के १ को १३, तथा २ को १४, एवं ३को १५, रात के १२ को २४ (०) लिखा है। जैसे——वैशाख प्रविष्टे १० को ५ बजे शाम का लग्न देखना हैं तो वैशाख मास की सारणी में उस दिन १५।४९ सिंह है याने मध्याह्नोत्तर ३।४९ बजे तक सिंह लग्न खतम होकर कन्या लग्न शुरू हो गया——जिसका समाप्तिकाल १८।९ अर्थात् शाम के ६ बजकर ९ मिनट पर है। अतः मध्याह्नोत्तर ५ बजे कन्या लग्न की सन्धि में एक आध मिनट का कहीं २ अन्तर रहेगा।

नवांश का प्रारम्भ एवं समाप्ति लाने की विधि——

जिस लग्न में नवांश काल जानना हो उस काल का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल दोनों लग्नसारिणी द्वारा निकालें; फिर लग्न के समाप्ति काल में से लग्न के प्रारम्भ काल को घटा देवें, शेष घंटा मिनट बचेंगे। घंटा को ६० से गुणा कर उसमें मिनट भी मिला दें। इस प्रकार वह सम्पूर्ण लग्नमान के मिनट हो जावेंगे। उन मिनटों में ९ का भाग देवें, लब्धि १ नवांश के मिनट जानें। ९ का भाग देने से जो शेष बचा हो उसको ६० से गुणा करके दुबारा फिर ९ का भाग देने पर सेकेण्ड आवेंगे। यह मिनट और सैकेण्ड एक नवांश का मान होगा। तुम्हें जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्या से उस एक नवांश के मान को गुणा कर जो मिनट प्राप्त हों उन मिनटों को लग्न के प्रारम्भ काल में जोड़ने से अभीष्ट नवांश का प्रारम्भ काल आ जावेगा और इस नवांश के प्रारम्भ काल में एक नवांश का मान जोड़ देने से नवांश का समाप्ति काल आ जावेगा। निम्नलिखित उदाहरण से इसका अच्छी तरह स्पष्टीकरण हो जावेगा।

उदाहरण——वैशाख प्रविष्टे १ को मेष लग्न में सिंह के नवांश का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल निकालना है। अब ऊपर कहे हुए के अनुसार मेषारम्भकाल ६ घंटा १ मिनट को मेष समाप्तिकाल ७ घंटा ३४ मिनट में से घटाया तो १ घंटा ३३ मिनट शेष बचे। १ घंटा को ६० से गुणा किया और उसमें ३३ मिनट जोड़ें तो ९३ मिनट हुए। अर्थात् मेष लग्न का कुल मान ९३ मिनट हैं। अब इन ९३ मिनटों को ९ का भाग देने पर १० मिनट २० सैकेंड एक नवांश का मान प्राप्त हुआ। अब हमें मेष लग्न में सिंह नवांश के प्रारम्भ काल का ज्ञान करना हैं। यहां मेष से लेकर कर्क तक अर्थात् ४ नवांश गत हुए, अतः इस एक नवांश के मान (१० मिनट २० सैकेंड) को ४ से गुणा किया तो ४१ मिनट २० सकेन्ड हुआ। इस ४१ मिनट २० सैकेन्ड को मेष लग्न के प्रारम्भकाल ६ घंटा १ मिनट में जोड़ा तो ६ घंटा ४२ मिनट २० सेकेन्ड मेष लग्न के सिंह नवांश का प्रारम्भ काल हुआ। इसी प्रारम्भकाल ६ घंटा ४२ मिनट २० सैकेन्ड में एक नवांश का मान १० मिनट २० सैकेन्ड (जो कि अभी पीछे ही निकाला है) जोड़ देने से मेष लग्न के सिंह नवांशका समाप्ति (अन्त) काल ६ घंटा ५२ मिनट ४० सैकेन्ड हुआ। इसी प्रकार [illegible] को भी निकालें।

विवाह, यज्ञोपवीत, गृहप्रतिष्ठा एवं गृहप्रवेश प्रभृति शुभ मुहूर्त्तों में उपयुक्त सूक्ष्म विधि से छिद्र किये गये नवांशों को प्रयोग में लाने से शास्त्रोक्त शुभफल की प्राप्ति हो सकती है। अथ चन्द्रोदयास्तज्ञानम्-तिथिप्रमाणेन हतं निशायाः प्रमाणमूनं च युतं भुजाभ्याम्॥ कृष्णे सिते यास्तिथिभक्तनाड्यश्चन्द्रोदये 'चास्तमये' च ताः स्युः ॥१॥ भावार्थ——जिस तिथि का चन्द्रोदयास्त मालूम करना हो उस तिथि की संख्या से उस दिन के रात्रिमान की घटचादि को गुणें, शुक्लपक्ष की तिथि हो तो उनमें २ घटी जोड़ना, यदि कृष्णपक्ष की हो तो गुणन की हुई अंक संख्या में से दो घटी निकाल देना, तदनन्तर उनमें १५ का भाग देकर दो फल घटी पलात्मक लाना, यदि शुक्लपक्ष की तिथि हो तो लब्ध घटचादि के समय सूर्यास्त के अनन्तर चन्द्रास्त होगा, यदि कृष्णपक्ष हो तो लब्ध पलात्मक फल को दिनमान में युक्त करने से जो जो घटचादि होवें उतनी घटी सूर्योदय के पीछे चन्द्रोदय होगा। इस रीति से चन्द्रोदय स्थूलमान से आता है, सूक्ष्म चन्द्रोदयास्त "सर्वानन्द लाघव" से जाने।

अथ प्रसूति लग्न विचार

मेष——जन्म समय मेष लग्न हो तो माता का पूर्व या पश्चिम में शिर, उपसूतिका २ या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरांत दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लालमलीन। ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान गोदान मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों में बचे तो १०० वर्ष जीवे।

वृष——माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आई, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से में सूतिका स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहिले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया, १।२८ ३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन——माता का शिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, शिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे, ४।१०।१४ ३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवावे। यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क——माता का उत्तर में शिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्मा, घर के दक्षिणभाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव के पहले मधुर एवं शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसन आदि का चिह्न, देर से रोया, ५।२५।४०।४८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेशसमय तुलादान, छायादान, मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह——माता का पश्चिम या पूर्व में शिर, मलीन-सा लाल वस्त्र, घर [illegible] कसैला या

खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, ५।१३।२८।३६।४८। इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या——माता का दक्षिण में शिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्ध शब्द किया। घर के नैर्ऋत कोण में सूतिका स्थान, ४।१६।२३।३६।५५ वर्ष कष्टकारक हैं, यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला——माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठण्डा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई गई थी, जन्म समय स्त्री ३ या ६, वहां १ कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहर कर अर्द्ध शब्द करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका स्थान, ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान, हवन जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक——माता का दक्षिण या उत्तर में शिर, रक्त वा दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक अमचूर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आई, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया और छींक भी किया, दीर्घ केश, घर के पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु——माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, पीत वा रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ से उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्य कोण में सूतिकास्थान, २।१०।१८।३१।३८।४२। ६७ इन वर्षों के प्रारम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर——माता का शिर दक्षिण में, ऊपर काला या जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध कसैला भोजन, ठण्डा जल पान किया था, जन्म-समय स्त्रियां २, पीछे से १ आई, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्टकारक वर्षों से बचे तो ९५ वर्ष जीवे।

कुम्भ——माता का शिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्र वर्ण या कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४ या २ स्त्री पीछे से आई। उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिकागृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन——माता का शिर उत्तर में, पीत या मलीन वस्त्र, विचित्र सा अल्प भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ से उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका स्थान, १।८।१३।३६।४८ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रहशान्ति हवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे।

स्मरण रहे कि अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें वही बालक जन्म लग्न जानना, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

अथादौ पितृपरोक्ष ज्ञानम्——१ जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे, २ बुध शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, ३ लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो, ४ भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो, इन ४ योगों में से एक योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जहां राहु शय्या तहां भंग जहां कुज होय।
रविस्थान में दीप कहीं शनी लोह कहि सोय॥

जन्मकुण्डली में दिशा ज्ञान——पूर्व, द्वितीय तृतीय ईशान। चतुर्थ——उत्तर। पञ्चम षष्ठ वायव्य। सप्तम पश्चिम। अष्टम नवम नैर्ऋत। दशम दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

अथ प्रसूतिस्थानात् पाकशालादि विचारः——

जन्म कुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हों वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान, और शनि से अशुभ (मैला) स्थान जानना चाहिये। दो० लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्नप दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार॥ केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली (स्वराशिमित्रोच्च व मूल त्रिकोण राशिका) केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है। ग्रहों की दिशा——सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैर्ऋत।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्——चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रिका जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं तो दीपक में तेल ज्यादा कहना यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो तो दीपक में आधा तेल कहना, यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तेल कहना। सो–तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्मे तब आई, तब कहि दीपक तैल नहि। सित शनि-दशमें धाम पञ्चम तनुपै चन्द्रमा, शिशु जन्मे तब वाम, दीप तैल सों युक्ति कहि।

लग्नाद्दीपवर्तिज्ञानम्——जन्म लग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतरगतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिका—यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूति का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्नसे चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह हों उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसकी गणना करें अन्यथा उसे नहीं जोड़े। इसी प्रकार जो ग्रह लग्न में हों, और उसके अंश लग्न से अधिक हों, तब ही उसकी संख्या जोड़ना अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्न चन्द्रान्तर्गत कोई ग्रह वक्र अथवा उच्च का हो तो तीन गुणा करना और स्वराशि

स्वनवमांश स्वद्रेष्काण में हों तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के अस्त के होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान में रखने योग्य है कि वह लग्न चन्द्रान्तर्गत ग्रहलग्न के भोग्यांश से सप्तम भाव पर्य्यन्त होवे तो सूतिका गृह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्य्यन्त हो तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो जहां शुभ ग्रह हों वहां धर्मशीला सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों से विधवा व दुश्चरित्रा कहे।

अथ शय्या शिर वा पाद विचार

लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषडकान्त्येषु पादाः । लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४।५ में दक्षिण, ६ में नैऋत्य ७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्य कोण, १०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशानकोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना। इन स्थानों में से जिस स्थान में पाप ग्रहयुक्त हो तो वही सूतिका के पलंग का पावा फटा टूटा समझना।

अथ चिह्नज्ञानम्—षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामें कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण॥ भानु तथा सौरी तन धन कुज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वामकर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाहु॥ सुहृद भाव में कवि तम भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न॥ नौमें पांचमें भृगु बसे तनु वा चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद॥

बालारिष्ट

दो॰—द्यूनाष्टमतनु पाप खग, बरहैं शशी जो खीन। कण्टकशुभखग ना बसे, वेगि ताहि यम लीन॥
बसे चन्द्रमा द्वादशे अष्ट भवन में पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप॥
लग्नाष्टम शशि राहु युत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप॥
लग्नाष्टम शशि राहु युत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव॥

अथ काणयोगाः—तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आइ बसे त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुत भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिय घर नाथ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान॥

मूकयोगाः—पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिक हि मूक कहि सोय॥ शुक्र त्रिके गुरुसिंह अज, दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश॥

दुःखदयोगाः—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश। जन्म समय जाके परे ताको अंग कलेश॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख विस्वाबीस। पापग्रहयुत लग्न पति, परै लग्न में आय। वीर्य्य हीन नर होय सो अधिक व्याधि रुजताय॥

बन्धनयोगाः—क्रूर रहै धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सुर बन्धूर करि, निकसै कारागार॥

सुखदयोगाः—अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह में परे तो जानो सुख संग॥ जन्म लग्न में उच्च ग्रह जो काहू के होय। मित्र दृष्टि तापर परे सर्व सुखी नर होय॥

क्लीब (नपुंसक) योगाः—दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जानु। शुक्र भवन ते रिष्क षट मन्द बसे क्लिब भानु॥

कुष्ठयोगाः—लग्नप बुध कुज शशि युते राहु युक्त वा केतु। स्वेत कुष्ट को योग यह वरणत गुणी सचेतु॥ भौम भास्कर मन्दयुत रक्तकृष्ण कह कुष्ट। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट॥ जलजगंडयुत चन्द्र जो ग्रन्थिगंड कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो, बुध त्रिकयुत तनु नाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयी रोग भृगुसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक; दिन प्रति रुजि कहि दून॥

केमद्रुमः—आगे पीछे चन्द्र के जो न परे ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय॥ उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय।

सर्पवेष्टित योगाः—यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है।

यमल जन्म योगाः—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धन के उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभाव राशिके लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे—शनि मंगल से ५।७।९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु समय विचार—जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब कहना। अथवा जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा लग्न राशि में आता है तब मरण कहना। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योग युक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पाप ग्रहों करके देखा जाता हो तब मरण कहना चाहिये। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इस वास्ते आयु का प्रथम विचार कर फिर मृत्यु कहे।

प्रसवकष्ट दूर—प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे। और साथ ही "ॐ मुक्ताः पाशविपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भे मेहि माचिर माचिर स्वाहा॥" इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीसका यन्त्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवे तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मन्त्र तथा यन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात को मन्त्र का जप करके तथा यन्त्र को लिख लिख कर चलता कर लेवे। तब कष्ट को मिटाता है।

अमावस्या की नन्दादि संज्ञा—दर्शस्य घटिकाषष्ट्या भानुभानप्रकीर्तिता। नन्दा-भद्रा जया रिक्ता पूर्णा च तिथयः क्रमात्॥

भावार्थ—अमावस्या की साठ घड़ियों में क्रमशः बारह २ घड़ियां नन्दा, भद्रा, जया रिक्ता, पूर्णा संज्ञक होती हैं। यदि अमावस्या का स्पष्ट घट्यादिमान ६० घड़ी से न्यूनाधिक हो तो ५ का भाग देकर १२ घड़ियों से न्यूनाधिक जाने।

तीसका यन्त्र

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

अथ पुरुष-जन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	क्रूर अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन २	धननाश	सम्पत्तिमान्	ऋणी	धनी गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज ३	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत् ४	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहा	दुःखी
सुत ५	सुतहानि	धनीपुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु ६	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित	सबल	सबल
स्त्री ७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगिणी	स्त्रीहा
मृत्यु ८	अल्पायु	रोगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्वः	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुत
धर्म ९	दुष्टमती	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म १०	शूर	तेजयुत	तेजवान्	कीर्तिमान्	संपत्तिमान्	संपत्ति०	पराक्रमी	मानी	पितृहानि
लाभ ११	धनी	धनी	धनी	धनी	सलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय १२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदारहा	दरिद्री	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्री-जन्मकुण्डल्यां भावस्थ ग्रहफलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	वन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन २	दरिद्रा	बहुधना	वन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्त्ता
सहज ३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	ससहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत् ४	सपीड़ा	दुर्भगा	दुखार्त्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत ५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकीर्तियुता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु ६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति ७	दुःखार्त्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु ८	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्नी	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म ९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोकार्त्ता
कर्म १०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिणी
लाभ ११	सधना	गुणज्ञा	सलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुसुता	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय १२	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सव्यया	सव्यया	मूढा	दुष्टा	रोगिणी

अथ मातृसुखनाशयोगः—(१) पाप ग्रह से युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होव, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे, (३) पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हों, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मंगल होवे, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो; इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप-दान करना चाहिये।

पितृनाशयोगाः—(१) सूर्य मंगल दशमें वा नवमें गये हों (२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो (३) शत्रु राशि का मंगल १० वें हो (४) पाप ग्रह से युक्त सूर्य सातवें पड़ा हो; इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो॥

भ्रातृनाशयोगाः—भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संग त्रिक होय।
जाके ऐसो योग है भ्रातृ हीन नर होय॥

संतानसुखनाशयोगः

गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव। ऐसा योग जो लखि परे, ताके पुत्र अभाव॥ पुत्र धर्म अरु लग्नपति, जाय परे त्रिक थान। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान॥

रोगिणी स्त्रीयोगाः—शुक्र और सूर्य सप्तम पञ्चम और नवम में हों तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोगाः—सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पाँचवें गुरु बसै नीचजात मनसाई॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होइ कुछ दिवस में यदपि ब्रह्मको बाल॥ जिनके बुध भृगु राहु संग, सप्तम भाव विराज। लहे सर्वदा राज सुख होवे वेश्याबाज॥

जारजयोगाः—भानु चन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है पर पुरुषको भाषत ज्योतिषमग्न॥ रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तरा जन्म में तब शिशु कहो परार॥

अथ मातापित्रोः अरिष्टफलम्—

जिस बालक की जन्म कुण्डली में सूर्य के साथ पापी ग्रह बैठे हों अथवा देखते हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ा हो तो उस बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिए। इसी प्रकार सूर्य से ४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो तो भी पिता को कष्ट जानना। इसी प्रकार यदि चन्द्र के साथ २।१२।४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो तो माता को कष्ट जानना।

अथ स्त्री जातक—क्रूरलग्नयुत क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहिं होय। सो कन्या कुल गरल है, भूलि न व्याहेउ कोय॥ जाके कुज दशमें बस ऋूर्ण, होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु॥ क्रूरयुक्त लग्नेश जो पाप ग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवरकहुँ कुज नीच॥ राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर॥लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज रण्डा कहे, पति को तजे तमारि॥ छठे आठवें चन्द्र जो क्रूर परे निज अंग। भौम आठवें भवन में सो पति करिहैं भंग॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सों हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दोय या तीन॥ द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसे त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम। पापग्रहों के बीच में लग्न होइ वा चन्द। सौत्रिय नाशे कुल दुवो भाषत कविकुल वृन्द॥ सप्तम भृगु जाके बसे सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृगु बसे बुध जन कहत विचारि॥

वैधव्य विषकन्या योगाः—चौ०—रविवार द्वितीया जो होय। श्लेषा ताहि दिन में जोय॥१॥ कृतिका होय शनिश्चर वार॥ साते तिथि का करो विचार॥२॥ होय शत-भिषामंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार॥३॥ इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जानो सोय॥४॥ जन्म लग्न द्वेशुभ ग्रह होय। एक पापग्रह नभ १० में जोय॥५॥ शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो। ता कन्या को विधवा जानो॥६॥ अश्लेषा द्वितीया को होय। मन्दवार युत लीजो जोय॥७॥ परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार॥८॥ रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय॥९॥ ऐसो योग लखि जो परे। तो कन्या को विधवा करे॥१०॥ दो०—धर्म सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान। सूर्य होय सुत सदन में कन्या बिधवा मान॥११॥

वैधव्य विषकन्या भंग योगाः—जन्म लग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्न पति सुभगा कन्या होय॥

काकवन्ध्यादि योगाः—ज्ञे अष्टमे काकवन्ध्या। मन्दार्कावष्टमे वन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या॥

स्त्रीणां राजयोगाः—चौपाई—केंद्रधाम नभगा शुभ होई। नरतनु पाय कलत्र समोई॥ रानी होय बहुत धन ताके। मन प्रसन्न होइ है सुत वाके—चन्द्रज तुंग बसे तनु जाई। लाभ भवन गुरु आवे धाई॥ सो तिय होय नृपति की नारी। जनविख्यात होय सुकुमारी। जो षट्वर्ग शुद्ध गुरु होई। शशि दृग केन्द्रभवन में होई॥ ऐसे योग जन्मे सुकुमारी। रानी होय सदन धनभारी॥ दोहा—कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरि युत ताको पति नृप शूर। लाभ भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौन। सुरगुरु परिपूर्ण लखे रानी होइ हैं तीन॥

स्त्रीणां पुत्रभाव विचारः—पञ्चमे शुभसंदृष्टे पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्॥

स्त्री आदि के लिये अशुभ प्रसव मास—कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथिनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊंटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चा जन्मे तो ६ मास में पिता व घर वाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन को घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे कि यहां सर्वत्र सौरमास का ग्रहण है। प्रसूता गौ आदि का लक्षण [illegible]

व्याहृति मन्त्रों से घृताक्त श्वेत सरसों का हवन करे, बच्चा जन्मे तो कार्तिक शांति करे, तो शुभ रहे।

त्रिखल जन्म फल—यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण माता पिता को भय धन हानि आदि कष्ट होते हैं, कृपणता तोड़कर त्रिखल शान्ति करे तो शुभ होता है।

बालककी दन्तोत्पत्ति फल

बालक के जन्मते ही दांत निकले हुए हों तो माता पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से जन्मे तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातुल पक्ष को भय हो। एक मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवें में ज्येष्ठ बन्धु नष्ट, छठे में बहु भोग, ७वें में पितृसुख, ८वें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में धनी।

अथैकनक्षत्रजननफलम्—वृद्ध गर्ग जी कहते हैं कि यदि भ्राताओं वा पिता पुत्र माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्—

शीर्षे	मुखे	कण्ठे ५	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जान्वोः	पादे	स्थान,
४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०	घटी.
पशुना	धनना	धनना	कुटिला	धनला	दयाव.	कामिनी	मातृना	भ्रातृना	वैधव्यं	फलम्

कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्—

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठा	विशाखा (४ च०)
फलम्	(१।२।३ च०) श्वशुरहानि	(२।३।४ च०) सास नाश	ज्येष्ठनाश	देवरनाश

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः॥

तिथिगण्डान्त—पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की आदि की दो दो घड़ी तिथिगण्डान्त होता है। यह गंडान्त जन्म यात्रा में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होनेवाला बालक माता पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाय तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र के ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिये, तत्पश्चात् शांति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरणजन्मफल

मूल पाद फल			आश्लेषा पाद फल		
चरण		फल	चरण		फल
१	म	पितृनाश	४		पितृनाश
२	,,	मातृनाश	३	,,	मातृनाश
३	,,	धननाश	२	,,	धननाश
४	,,	शान्ति से शुभ	१	,,	शान्ति से शुभ

मूलजनने वृक्ष विभाग फलम्

मूल	स्तंभ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्पे	फलम्	शिव	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मन्त्री पदम्	मन्त्री पदम्	विपुल लाभ	अल्प जीव	फल

अथ मूलपुरुषचक्रम्

मूर्ध्नि	मुख	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जान्वोः	पादे	स्थान
५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६	घटी
राजा	पि. म.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा	मतिमा	फलम्

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्म मासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र. श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ. भा.
जन्म लग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूल निवास स्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है एक प्रकार से स्वल्प भय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातं संहरते कुलम्॥ यत्र गण्डे क्रियते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्॥ दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गंडातिगंडे च परिघे यमघण्टके॥ ब्रह्मदंडे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्॥

यथा सर्पविषश्चैव मन्त्रश्चदगाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते॥
रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूरयेत्। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेन हि॥
बालकाम्बापितृस्नानं विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्॥
विरुद्धावयवे मूले विधिरेवं स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मंतव्यं क्षेममीप्सुभिः॥

अथाभुक्तमूलविचारः—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र आदि की चार घटी विशेष आधी घटी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग कर दे या आठ वर्ष, असमर्थ हो तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे। धनगंडे दरिद्रोऽपि शांतिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः॥

अश्विनीजातस्य फलम्—अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है।

गण्डमूलोत्पन्न बालकका जन्म काल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	समय
मू० ज्ये० पिता को भय	म० श्ले० माता को भय	रे० अश्वि० शरीर भय	ल

मघा पादफलम्—मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धनविद्या लाभ होवे।

ज्येष्ठापाद फलम्—प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश। तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने आपका नाश होता है। ज्येष्ठाद्यपादजो ज्येष्ठे हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा॥

रेवती पादफलम्—रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मन्त्री वा मुख्तार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चौथे चरण में अनेक कष्ट हों।

कृष्ण चतुर्दशी जन्म फलम्

१	२	३	४	५	६	भाग
शुभ	पितृहानि	मातृहानि	मातुल हानि	कुल कष्ट	धनहानि	फल

चतुर्दशी की घड़ियों के छः भाग कर देखें कि जन्म किस भाग में है। तदनुसार फल जाने, अशुभ हो तो शांति करे। अमावस्याजन्मफलम्—जिसके घर सिनीवाली अमावस्या के दिन स्त्री, पशु, गौ, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूति होवे तो उसे धनहानि अपयश आदि भय होते हैं। कुहू अमावस्या में प्रसूति हो तो विशेष अशुभ होवे। सिनीवाली—जिस अमावस्या में चन्द्र की कलांश शेष हों; कुहू—जिस में चन्द्र की पूर्णकला नष्ट हों।

ग्रहण व्यतिपातादि जन्मफल—व्यतिपात में जन्म हो तो अंगहानि, वैधृति में पितृकष्ट वा दारिद्र, चन्द्र सूर्य ग्रहण में जन्म हो तो व्याधि, पीड़ा, कलह, धनहानि हो, जपहोमशान्ति कराने से कल्याण हो।

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़ें और बलि को ७ बार शिर पर घुमा कर यथोक्त स्थान पर मौन होकर रख आवे ॥

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है?	ग्रसित लक्षण	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	पूजनद्रव्य	बलिविधान व समय	स्नान पूजा मार्जन मंत्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद, मन्दस्वर, कम्पन, अरुचि, अंगशोष।	नदीके दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक ५ आटेके सतिये, कपूर लोहबान	श्वेतभात, ५ पूर्णपोली (सुहाली) १ पहर दिन चढे पूर्वदिशामें चौरस्ते पर रखना।	ॐब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वैश्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥	राई खस आक के फल बिल्ली और मनुष्य के बाल निम्बपत्र गोघृत।
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथ पैर अकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्ररोग, भय, कृशता।	एक सेर चावल का आटा	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावल के आटे के सतिये १०	भात एक सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय पश्चिमदिशामें चौरास्तेपर रखना	ॐनमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रं ह्रं दुष्टा ग्रहा गच्छन्त्वत स्थानाद्द्राजया स्वाहा	
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हड्फूटन, खांसी, शिरझुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा।	एक सेर चावल का आटा	रक्तचंदन, रक्तपुष्प, श्वेतध्वजादीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १०।	एकसेर लालभात, आधसेर पूर्णपोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दनाविधानोक्त	
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्रभंग, शिरझुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	तिलचूर्ण एकसेर	श्वेतपुष्प श्वेतध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प।	भात १ सेर आटेके पूड़े आध सेर, पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्षके नीचे रखना।	सुनन्दनाविधानोक्त	लसुन गो शृंग, सांप की कांचली नीम के पत्त, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।
पंचम दिन मास वर्ष में बिडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर शरीर में गर्मी, तेज।	एक सेर चावल का आटा।	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये।	श्वेतभात, ७ पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	ॐभगवती ह्रींह्रींह्रं ह्रं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलि गृह्ण गृह्ण अस्त्रं ठःठ चामुण्डे सर्वारिचण्डिके ठःठःस्वाहा	
षष्ठ दिन मास वर्ष में षट्कारिका	ज्वर, हड्फूटन, हंसना कभी २ रोना, मोह, मूर्च्छा।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा ५।	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां, १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरस्ते पर रखना।	योगिनीविधानोक्त	
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीरकम्पन।	चावलों का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५ श्वेतध्वजा ५।	भात, ७पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम में चौरस्तेपर मौनहोकर रखना।	बिडालिकाविधानोक्त	कूट गुग्गुल, राई, हाथी दांत, घृत।
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, ५ रंग की झंडी ५ दीपक ५।	गेहूं की रोटी, मसूरकी दाल हरासाग छागमांस, संध्यामें चौरस्ते पर रखना।	बिडालिकाविधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, अफारा, घृणा।	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प, ५ दीपक, ५ रंग की झंडी ५।	भात, मत्स्य, मांस, पापड़ी सुहाली उत्तरमें प्रातः चौरस्तेपर रखना।	ॐनमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हनहनहुंफट्स्वाहा	गोशृंग, लसुन, सांप की कांचली
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हड्फूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास।	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, २५ झंडी, २५ दीपक २५ सतिये।	गुड़के घी भुनेचावल, गोघृत, सायंकालदक्षिणमें चौरस्तेपर रखना	ॐ नमो भगवते वैस्वदेवाय हन हुं फट् स्वाहा।	
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर, हड्फूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेतपुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद झंडी, २५ आटे के सतिये।	श्वेतभात ७ पूड़े, सुहाली ७ सायं व प्रातः दक्षिणमें चौरस्तेपर रखना	ॐनमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्रहस्ताय ज्वल २ दुष्टग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।	निम्बपत्र मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्रपीड़ा, संताप।	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, १३ झंडी, १३ सतिये आटे के।	सुहाली पूड़े ७ पूड़ियां ७ मत्स्य-मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण चौरस्ते पर रखना।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हनहन शोषय २ मर्दय २ शोषय२ हं३ हन२ दुष्टानां ह्रं ह्रं फट्स्वाहा	

अथ नक्षत्रकष्टावलीचक्रम।

अथ नक्षत्रकष्टावलीचक्रम् ।

यस्मिन्नृक्षे यदा नृणां रोगः संजायते तदा । तद्विष्णुपूजा कर्तव्या तत्तदीश्वरतुष्टये ॥ ऋक्षेशरूपं कनकेन कृत्वा तल्लिगमंत्रैश्च सुगन्धपुष्पैः ।
वस्त्राक्षतैर्गुग्गुलधूपदीपैर्नैवेद्यताम्बूलफलैश्च सम्यक् । पूजां च कृत्वा भयनाशनाय द्विजाय दद्या–(दतुलं वनञ्च) ॥

सस्वामिक नक्षत्राणि	कष्टदिनानि चरण १	२	३	४	करे धारणम्	कष्टलक्षणानि	गन्धादिकम्	बलिद्रव्यम्	होमद्रव्यम्	दानभोजनम्	जपनीयमन्त्राः	जप-संख्या
अश्विनी (दस्रौ)	९	११	१०	२०	अपामार्ग-मूलम्	वातज्वरअर्द्ध-गात्रपीडानिद्रा-भंग बुद्धिभ्रम	श्वेतचन्दन गन्ध, कमलपुष्प घृत-गुग्गुलधूप घृतदीप क्षीर मोदक गुड नैवेद्य	गुडौदन	खण्ड यवाज्य	सुवर्णघृतकुम्भ ब्राह्मणभोजन	ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् वाचेन्द्रो बलेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् । ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः ॥१॥	५ हजार
भरणी (यमः)	०	८०	४०	११	अगस्त-मूलम्	अनेक रोग तीव्र-ज्वर आलस्य छर्दिरोग।	अगरगंध करवीरपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप गुडोदन नैवेद्य	कृसरान्न (खिचड़ी)	घृतमधु तिलाक्षत	गोमहिषीघृत शर्करा छायापा. ब्राह्मणभोजन	ॐ यमाय त्वामखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु । पृथिव्याः संस्पृश-स्पाहि अर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॐ यमाय नमः ।	१० हजार
कृत्तिका (अग्निः)	९	११	१६	२८	कार्पास-मूलम्	ऊरुशूल अतिदाह नेत्रपीड़ा अनिद्रा	श्वेतचन्दनगंध जुहीपुष्प घृतगुग्गुल-धूपघृतदीपतिलमाषान्नबडाधीका नैवेद्य	पायस	तिल यव घृत	स्वर्ण गोदान ब्राह्मणभोजन	ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपां रेतांसि जिन्वति । ॐ अग्नये नमः ॥ ३ ॥	१० हजार
रोहिणी (ब्रह्मा)	७	९	१८	३०	अपामार्ग-मूलम्	ज्वरपीडाकुक्षि शूलशिरःपीडा प्रलाप	श्वेतचन्दनगंधकमलपुष्प दशांग-धूप घृतदीप घृत पायस नैवेद्य	मध्वाज्यक्षौद्र शाल्यन्न क्षीर	तिलाज्य यव	सप्तधान्य कृष्णा गोदान ५ कुमारीभोजन	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनआवः । सुबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विव्वः । ॐ ब्रह्मणे नमः ॥४॥	५ हजार
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	९	५	७	१०	जयन्ती-मूलम्	अर्द्धगात्रपीडा, महाकष्टत्रिदोष	श्वेतचन्दन गन्ध, कमलपुष्प दशांग धूप घृतदीपपायस अपूपमध्वोदन नैवेद्य	दधि शर्करा शाल्य	दधिपायस	दधितण्डुल सवत्सागोदान ब्राह्मणभोजन	ॐ इमंदेवा असपत्नं सुबध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विष एषवोऽमी राजा-सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा । ॐ चंद्रमसे नमः ॥	१० हजार
आर्द्रा (शिवः)	०	१८	०	०	सर्वदनाश्व-त्थमूलम्	ज्वरसर्वांगपीडा त्रिदोषअनिद्रा	श्वेतचन्दनगन्ध सौरभपुष्प दशांग धूपघृतदीप पायसौदन नैवेद्य	दध्योदन मध्वाज्य	घृतमधु	कृष्णवृषभ कृष्ण-वस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नमः । बाहुभ्यामुतते नमः ॥ ॐ रुद्राय नमः ॥ ॥६॥	१ हजार
पुनर्वसु (अदिति)	७	१४	२	२१	अर्क-मूलम्	ज्वरशिरपीडा कटिपीडा	हरिद्राकुंकुमगन्धसेवन्तिकापुष्प अष्टगन्ध धूप घृतदीप घृताक्त पीतवर्णान्न नैवेद्य	साज्य-पीततण्डुल	घृत तण्डुल	वस्त्र स्वर्ण कमल ५ कन्या ५ भोजन	ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता सपिता सपुत्रः । विश्वदेवा अदितिः पंचजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् । ॐ अदितये नमः॥७॥	१० हजार
पुष्य (गुरुः)	७	७	१०	२१	तुषार-मूलम्	ज्वर शूल कष्ट।	महा कुंकुम गन्ध कमलपुष्प घृतगुग्गुल-धूपघृतदीपघृतपायसशर्करानैवेद्य	समण्डक मोदक	घृत पायस	सुवर्ण गौ पीतवस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छ वस ऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् । ॐ बृहस्पतये नमः ॥८॥	१० हजार

आश्लेषा (सर्पः)	०	०	४१	०	पटोल– मूलम्	सर्वांगपीड़ा पा. मृत्युसम कष्ट	कुंकुम अगरगन्ध अगस्त पुष्प घृत गुग्गुलधूपघृतदीप घृतक्षीर नैवेद्य	हवि दध्योदन	शर्करा घृत	सवत्साकृष्णागौ छायापात्रब्राह्मणभो.	ॐ नमोस्तु सर्प्पेभ्यो ये केच पृथिवीमनु ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः । ॐ सर्प्पेभ्यो नमः ॥९॥	१० हजार
मघा (पितरः)	१५	७	१७	२०	भृङ्गराज मूलम्	अर्द्धगात्रपीडा तथा शिरपीडा	श्वेतचंदनगन्ध चम्पकपुष्प, घृत गुग्गुलधूप घृतदीप घृतमिष्टान्न	सतिलाज्य दुग्धान्न	तिलाज्य तण्डुल	सवस्त्रतिलमाष दान ब्राह्मणभोजन	ॐपितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः । प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः अक्षन्नपितरोमीमदन्तपितरोऽती तृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॐ पितृभ्योनमः ।	१० हजार
पू. फा. (भगः)	०	१५	०	३०	कण्टकारि- मूलम्	ज्वरशिरपीडा गात्रव्यथा	श्वेतचन्दनगन्ध मालतीपुष्प घृत बिल्व धूप घृतदीप अपूपोदन मोदक नैवेद्य	घृतौदन पायस	प्रियंगु कंगनीतिल	पित्तलयवमाषान्न स्वर्णगोदानभोजन	ॐभगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाद दन्नः भगप्रणोजनय गोभिरश्वैर्भगप्रनृभिर्नृ वंतः स्याम ॥ ॐ भगाय नमः ॥११॥	१० हजार
उ. फा. (अर्यमा)	७	१४	७	६०	पटोल- मूलम्	कुक्षिशूल, शिरःशूल ज्वर अतिकष्ट	कर्पूरकेसर गन्ध अर्क पुष्प घृत गुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	घृतशर्करा शाल्यन्न	तिलाज्य	सुवस्त्ररजतस्वर्णान्न गोदान ब्रा० भोजन	ॐदेव्यावध्वर्यू आगतं रथेन सूर्यत्वचा। मध्वायज्ञं समञ्जाथे तं प्रत्नया यं वेनश्चित्रम् । ॐ अर्यम्णे नम ॥१२॥	१० हजार
हस्त (सविता)	१५	१७	१५	०	जाति- मूलम्	अफारा ऊरु शूल सर्वांग- पीड़ा प्रस्वेद	रक्तचन्दन केसरगन्ध कमलपुष्प घृत गुग्गुल धूप घृतदीप घृत पायस नैवेद्य	मिष्टान्न	दधि घृत	सुवर्णपयस्विनीगोदान ब्राह्मणभोजन	ॐविभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपता वविहुतम् । वात जूतो यो अभिरक्षतित्मना प्रजाः पुपोष पुरुधाविराजति। ॐसवित्रे नमः	५ हजार
चित्रा (विश्वकर्मा)	११	९	९	१६	मखव- मूलम्	विचित्रानेक- रोग, अतिकष्ट	केसरअगरगन्धविचित्रवर्ण पुष्प घृत गुग्गुल धूप घृतदीप विचित्रान्न मोदक नैवेद्य	विचित्रान्न घृत	तिलाज्य तण्डुल	तिलगुडविचित्रवृष.छा.पा ब्रा.भो.	ॐत्वष्टातुरीयो अद्भुत इंद्राग्नी पुष्टिवर्द्धना द्विपदाच्छन्दऽइंद्रियमक्षागौर्नावयोदधुः॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः ॥१४॥	१० हजार
स्वाति (वायुः)	६०	१७	३[illegible]	०	जाति– मूलम्	नानाकष्ट	चन्दनगंधदमनकपुष्पअगरगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायसनैवेद्य	घृत पायस	तिलाज्य यव	स्वर्ण रक्तधेनुदान पक्वान्न ब्रा. भोजन	ॐ वायोयेते सहस्रिणो रथासस्तेभिराग हि नियुत्वान् सोमपीतये ॥ ॐ वायवे नमः ॥१५॥	१० हजार
विशाखा (इंद्राग्नि)	१५	०	४	१३	गुञ्जा- मूलम्	कुक्षिशूलस- र्वांग पीड़ा	चंदनकेसरगंध कमलपुष्प देवदारु घृत धूप घृतदीप घृतपायसनैवेद्य	सहवि चित्रान्न	आज्य पायस	रक्तपीतवस्त्रक.वृ. छायापा.दा.व.भो.	ॐइंद्राग्नी आगतं सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम् । अस्यपातं धियोषिता ॥ ॐइंद्राग्निभ्यां नमः।	१० हजार
अनूराधा (मित्रः)	६०	१२	३६	०	सुपुष्प- मूलम्	तीव्र ज्वर शिरपीड़ा	केसरगन्धकमलपुष्प चन्दनधूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	मध्वाज्य माषान्न	गुड यवाज्य	स्वर्णगोछा.पा.दा. ब्रा. भोजन	ॐनमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृतं सपर्यत दूरदृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्यायशंसत । ॐ मित्राय नमः ॥१७॥	१० हजार
ज्येष्ठा (इन्द्रः)	५९	९	६	४	अपामार्ग- मूलम्	व्याकुलतापित्त रोगकम्पन	श्वेतचंदनगन्ध चम्पकादिपुष्प कर्पूर धूप घृतदीप मनोहर मिष्टान्न नैवेद्य	दध्योदन गुपुष्प	तण्डुलतिल घृत	स्वर्णतिलनीलवस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम्। ह्वयामिशक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्तिनो [illegible] ॥१८॥	१० हजार

मूलम् (राक्षसः)	०	९	१५	६	मन्दार-मूलम्	उदरतथामुख-रोगसन्निभय	कृष्णअगरगन्धनीलोत्पलपुष्पघृतदीप कृष्णागुरुधूप माषमिश्रान्न-नैवेद्य	सहवि माषान्न	घृत कन्दमूल	स्वर्ण व.कृ. गौछा पात्र दा.कु.पू.वि.	ॐ मातेवपुत्रं पृथिवीपुरीष्यमग्निं स्वेयोनाव भारुखा। तांविश्वेदेवऋतुभिः संवदानः प्रजा-पतिविश्वकर्मा विमुञ्चतु। ॐनिर्ऋतय नमः ।।१९।	५ हजार
पू. षा. (जलम्)	०	१५	२४	१०	कार्पास-मूलम्	शिरपीड़ाकम्प, महाकष्ट	श्वेतचन्दनगंधकमलपुष्पघृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	घृतपायस मिष्टान्न	तिलतण्डुल घृत	स्वर्णव.ति.त.ज. कु.गो.दा.ब्रा.भो.	ॐ अपाघमप किल्विषमपकृत्यामपोरपः। अपामार्गत्वमस्मदपदुःष्वप्न्य सुव ।। ॐ अद्भ्यो नमः ।।२०।।	५ हजार
उ. षा. (विश्वेदेवा)	३०	२४	२६	१६	कार्पास-मूलम्	ऊरुशूल कटि-पीड़ा प्रलाप	श्वेतचन्दनगंध कमलपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायसान्न नैवेद्य	सहविपा. तिलाज्य	तिलाज्य यव	आमान्नस्वर्णदान ब्राह्मणभोजन	ॐ विश्वेदेवाः शृणुतमं हवंमम अन्तरिक्षे य उपद्यविष्ठाय अग्निजिह्वा उतवाय जत्राआसद्यास्मिन्वर्हिषिमादयध्वम् । ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।।२१।।	१० हजार
श्रवण (विष्णुः)	६०	२४	६	९	अपामार्ग मूलम्	अतिसार सर्वांग पीड़ा त्रि भय	श्वेतचन्दनगंध मालतीपुष्प कर्पूरगु. धूप घृतदीपषड्रस शाल्यन्न नैवेद्य	सहवि पायस	तिलाज्य यव	स्वर्णगोछायापा. ब्राह्मणभोजन	ॐ विष्णो रराटमसि विष्णो श्नप्त्रेस्थो विष्णोःस्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णव-मसि विष्णवेत्वा ॐ विष्णवे नमः।।२२।।	१० हजार
धनिष्ठा (वसवः)	१५	२	२०	२१	भृंगराज-मूलम्	मूत्रकृच्छ्र ज्वर रक्तातिसार	श्वेतचन्दनगन्ध कमलपुष्पगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	पायसमो. पूपतिपि.	तिलाज्य पायस	छत्रोपानत्अश्वस्व-गो.दा.ब्रा.भो.	ॐवसोःपवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्र-मसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सवितापुनातु वसोःपवित्रणशतधारेण सुप्वाकामधुक्षः ।। वसुभ्योनमः	१० हजार
शतभिषा (वरुणः)	०	४५	३	२२	कमल-मूलम्	सन्निपातमय वातज्वरकष्ट	केसरअगरगंध कमलपुष्प कर्पूरचं धूप घृतदीप घृतपोलिका नैवद्य	घृत. चित्रान्न	आज्य दध्योदन	स्वर्णतिलान्नघट छायापात्रगोदा. कु.पू.ब्रा. भोजन	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कम्भ-सर्जनीस्थो वरुणस्यऋतसदन्यसि वरुण-स्यऋतसदनमसि वरुणस्यऋतसदन-मासीद ।। ॐ वरुणाय नमः ।।२४।।	१० हजार
पू. भा. (अजैकपाः)	०	१२	२१	१९	भृंगराज मूलम्	शरीरपीड़ार्ति व्याकुलतावमन	केसरचन्दनगंध श्वेतार्कपुष्प शतौष. मिश्रितधूप घृतदीप दधिपायसनैवेद्य	दध्योदन	क्षीराज्य शर्करा	स्वर्णरजत अन्नश्वेत छा. पात्र दान ब्रा.भोजन	ॐउतनोऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वज एकपात्पृ-थिवीसमुद्रः। विश्वेदेवाः ऋतावृधोहुवानः स्तुतामंत्रा कविशस्ताअवन्तु। ॐअजैकपदे नमः	१० हजार
उ. भा. (अहिर्बुध्न्य)	१०	२	९	१५	अश्वत्थ मूलम्	शूल ज्वर वात व्याधि अतिसार कामला रोग	चन्दनकर्पूरगंध कमलपुष्प बिल्व गुग्गुलधूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	तिलाज्य मुद्गमाष	तिलाज्य यव	स्वर्णरजततिल कृष्णवस्त्रदान ब्रा. भोजन	ॐशिवोनामासि स्वधितिस्ते पितानमस्ते अस्तु मामा हिंसीः। निवर्तयाम्यायुषे ऽन्नाद्याय प्रजननायरायस्पोषायसुप्रजास्त्वा-यसुवीर्याय। ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः ।।२६।।	१० हजार
रेवती (पूषा)	१८	१०	९	२०	अश्वत्थ-मूलम्	चित्तभ्रम उरु शू.ज्वर वा.पि.	रक्तचन्दनगंध मंदारपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	सहवि दध्यन्न	तिलाज्य तण्डुल	रजतवस्त्रपैत्तल. पा.वृ.छा.दा.ब्रा.भो.	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इहस्मसि ।। ॐपूष्णे नमः	५ हजार

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(१) जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र वा यमघंट कुयोग हो।

(२) सूर्यवार को मघा द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र हो।

(३) सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११) हो।

(५) बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा (२।७।१२)) आश्ले. हो।

(६) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (३।८।१३) व मघा हस्त हो।

(७) शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा व श्रवण या रिक्ता (४।९।१४) आर्द्रा व धनिष्ठा हो।

(८) शनिवार को नवमी व पूषा. या हस्त वा पूभा. या पूर्णा (५।१०।१५) व भरणी हो।

(९) सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।९।१२।१४।३० तिथि भरणी कृत्ति. आर्द्रा. आश्ले. पूर्वा ३ विशा. ज्ये. धनि. शत. नक्षत्र हो तो मृत्यु व मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परन्तु जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना। क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं, हां, ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है।

अथ रोगत्रिनाड़ीचक्रम्

आर्द्रा.	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमाः
पुन	मघा	हस्त	विशा	मूल	श्रवण	पू. भा.	अश्वि	रो.	मध्याः
पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.	अन्त्याः

सूर्य नक्षत्र दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र 'रोगत्रिनाड़ीचक्र' में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है, मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उसी दिन निस्संदेह रोगी की मृत्यु कह। यह रोग त्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय भी वर्जित करना।

कालस्य मुखदंष्ट्राज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३ संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०।१८ वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाड़) होती है। काल के मुख दाड़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु पर्यन्त हालत होती है। रोग पर, सर्पादिदर्शन पर, विग्रह-युद्ध में जाने पर, काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

ज्वरयन्त्र

ओं

प	व	क	०
३	४९	८	३३
३५	८७	५	३९
५१	७	३	२५

ज्वर आने से पहले यह यन्त्र लिख कर अपनी कलाई पर धूप देकर बांध तो बारी का बुखार दूर हो। पहले यंत्र सिद्ध कर लेवे फिर लिखकर देना शुरू करे। विधि—सफेद कागज पर अनार की कलम और लाल चन्दन से २१ सौ लिख कर आट की गोलियां बना मछलियों को डाल देवे।

तिथिकष्टावलीयन्त्रम्

ति.	तिथीश	कष्टदि.	बलि व दान
१	अग्नि	१२	शर्कराज्य बलि घृतदान
२	ब्रह्मा	५	पायस बलि भोजनदान
३	काम	७	घृतान्न बलि रक्तवस्त्रदान
४	गणेश	१६	मोदकान्न बलि मुंगादान
५	सर्प	२१	पायस बलि दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलि चित्रवस्त्रदान
७	सूर्य	८	पायस बलि ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलि पीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिष्टान्नबलिरक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलि पीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलि श्वेतवस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्करावलिसुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि क्षौद्रशाकभो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि रौप्यदान
३०	पितर	१८	पूपकान्नबलि उत्तमान्नभो.

वारकष्टावलीयन्त्रम्

वा.	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	५	पायसबलि सूर्यदान
चं.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्वबलि गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधुबलिशुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि शनिदान

कालांगविभाग

कालपुरुष के शिर में मेष राशि का स्थान है, मुख में वृष राशि का, दोनों भुजाओं में मिथुन राशि का, हृदय में कर्क राशिका, उदर में सिंह राशि का, कमर में कन्या राशि का, बस्ति (मूत्राशय) में तुला राशि का, गुप्तेन्द्रिय में वृश्चिक राशि का, ऊरु (दोनों जंघाओं) में धनु राशि का, दोनों जानु (घुटनों) में मकर राशिका, पिण्डलियों में कुम्भ राशि का और दोनों पादों में मीन राशि का स्थान है। कई एक आचार्य द्वादश भावों में भी इन अंगों की कल्पना करते हैं जैसे प्रथम भाव में शिर, द्वितीय भाव में मुख, तृतीय भाव में भुजा, चतुर्थ भाव में में हृदय, पंचम भाव में उदर, छठे भाव में कमर, सप्तम भाव में बस्ति, अष्टम भाव में गुप्तेन्द्रिय, नवम भाव में ऊरु, दशम भाव में जानु, एकादश भाव में जंघा और द्वादश भाव में पादों को जानना। उपरोक्त मषादि १२ राशि अथवा लग्नादि द्वादश भाव शुभ ग्रहों से युक्त वा दृष्ट हों तो वह अंग पुष्ट और सुन्दर होता है और पापग्रह से युक्त वा दृष्ट हों तो वह अंग रोगादि से युक्त होता है, अंगों का विचार करके फलादेश कहना युक्तियुक्त होता है।

करते हैं कि प्रथम भाव में शनि, द्वितीय भाव में बुध, तृतीय भाव में मंगल, चतुर्थ

ग्रह गोचराद्यैर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकलानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः

सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूँ	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मुगा	रक्तगौ	रक्तचन्दन	७०००
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कर्पूर	श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कर्पूर	शस्त्र	फल	१९०००
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि	श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	६०००
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तैल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णागौ	भैंस	उपानह	२३०००
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तैल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तैल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारेल	कंबल	बकरा	शस्त्र	१७०००
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कर्पूर	मिसरी	श्वेतचंदन	हाथीदांत	मुंथेशवत्

जपनीयमन्त्राः	समय-समिधः	
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सू. उ.	अर्क
ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्या	पलाश
ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपामार्ग
ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रौ	दूर्वा
ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मुन्थेशमन्त्रः	मुन्थेशकाले	

सूर्यादिग्रहपीडासु स्नानार्थमौषधानि—(यथा सिद्धौषधै रोगा नश्येयुर्मंत्रतो भयम्। तथा स्नानविधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति ॥)

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनशिला	पञ्चगव्य	बिल्वछाल	गोबर	मालतीपुष्प	इलायची	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गजमद	रक्तचन्दन	अक्षत	श्वेतसरसों	मनशिला	सुरमा	तिलपत्र	तिलपत्र
देवदारु	शंख	धमनी	फल	मुलहठी	सुवृक्षला	लोबान	मुत्थरां	मुत्थरां
केशर	सिप्पी	रक्तपुष्प	गोरोचन	मधु	केशर	धमनी	गजदंत	गजदंत
खस	श्वेतचंदन	सगरफ	मधु	मालती		सौंफ	कस्तूरी	छागमूत्र
मुलैठी	स्फटिक	मालकंगनी	मोती			मुत्थरां		
रक्तपुष्प		मौलसिरी	सुवर्ण			खिल्लां		
रक्तकनेर								

शनिविचारः—अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्—कल्याणी प्रददाति वै रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिं बन्धुविरोध-देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम् ॥ मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्निभयं लोहं शस्त्रभयं सदैवमसुखं कुर्यादसौ सर्वदा ॥१॥ अथ बृहत् कल्याणी (साढेसाती) फलम्—राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिः नानाक्लेशं करोति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्। हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम् रामा ऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे बाधया ॥ २ ॥

सप्तधान्य—उड़द १, मूंगी २, कणक (गेहूं) ३, छोले (चने) ४, जौ ५, धान्य (तण्डुल) ६, कंगनी ७

अष्टगन्ध—अगर, तगर, कस्तूरी, दोनों कुंकुम, कपूर, दोनों चन्दन।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्त्यै सामान्यमौषधिस्नानम्

लाजवंती (छुई-मुई); कूट, खिल्लां, कांगनी, जव, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि, लोध इन औषधियों के जल से सतीर्थादिक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नाश होती है, तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शान्ति होती है ॥ गुरु के वचन, देवता ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता; जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह भी पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः) ॥

॥ देशभेद से दशानिर्णयः ॥

शुक्लगेऽर्के होरायां दिवा विंशोत्तरी दशा। कृष्णे चन्द्रस्य होरायां
रात्रावष्टोत्तरी मता ॥ अन्यथा योगिनी कार्या सदा कार्या महादशा ॥१॥

अर्थः—देश भेद से दक्षिण गुजरात में अष्टोत्तरी, दिल्ली, राजस्थान, मध्यभारत, पंजाब, युक्त प्रान्तों में विंशोत्तरी करना लिखा है। किन्तु विशेष निर्णय में यथा समय के फल विकास कार्य के लिये शुक्ल पक्ष में दिन का जन्म, सूर्य की होरा ये तीनों एक साथ जन्मकाल में हों तो विंशोत्तरी उत्तम फलकारक सिद्ध होगी। कृष्ण पक्ष, रात्रि का जन्म, चन्द्र की होरा में जन्म लेनेवालों को अष्टोत्तरी से फल कहना। अन्यथा योगिनी दशा से विचार करना।

अथ कार्यसिद्धि-प्रश्न

प्रश्नकर्त्ता श्री देवी जी का स्मरण करके पंचदशी यंत्र पर अंगुली धरे। यदि १।५।९ पर धरे तो शीघ्र कार्य सिद्ध हो। ३।७ पर धरे तो सहारे से कार्य सिद्ध होवे ४।६ पर धरे तो भी कार्य सिद्ध होवे। २।८ अंकपर अंगुली धरे तो कार्य सिद्ध नहीं होता है।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

गोचरग्रहाणां द्वादशभावफलबोधकचक्रम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानना.	भयं	श्रीः	मानभंग	दैन्यं	विजयः	मार्गः	पीड़ा	सुकृ.ना.	सिद्धिः	धनला.	द्रव्यना.
चन्द्रः	अन्नला.	धननाश	सुखं	रोगः	कार्यनाशः	धनला.	स्त्रीला.	रोगः	धर्मला.	सौख्यं	धनला.	धनना.
भौमः	शत्रुभी.	धननाश	धनलाभ	शत्रुभीः	धननाश	धनला.	द्रव्यना.	शत्रुभीः	शत्रुपी.	शोकः	धनला.	धनना.
बुधः	बंधनं.	धनलाभ	शत्रुभीः	पशुलाभ	सुखं	स्थानला	पीड़ा.	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनला.	धनना.
गुरुः	भयं	धनलाभ	क्लेशः	धननाश	सुखं	शोकः	राजमा.	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनला.	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुना.	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभः	शत्रुभीः	शोकः	धनला	वस्त्रला.	दुःखं	धनला.	धनला.
शनिः	भयं	धननाश	ऐश्वर्यं	शत्रुभीः	पुत्रनाशः	धनला.	दोषः	पीड़ा	धर्मना.	दौर्मन.	धनला.	धनना.
राहुः	हानिः	ननाश	धनलाभ	वैरं	शोकः	श्रीः	कलहः	मृत्यु	दुःखं	वैरं	सुखं	शोकः
केतुः	रोगः	वैरं	सुख	भयं	सुखं	धनलाः	कलहः	रोगः	पापं	शोकः	कीर्त्तिः	शत्रुभी.

उपरोक्त गोचर फल जन्म राशि या जन्मलग्न के अंश से आदि लेकर अग्रिम राशि के उतने अंश तक प्रथम भाव एवं द्वादश भावों की अंशों पर कल्पना करने से अधिक मिलता है केवल राशि से फल में अधिक अन्तर रहता है।

ग्रहमैत्रीचक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
चं.मं. बु.	सू.बु.	सू.चं. बृ.	सू.शु.	सू.मं. चं.	बु.श.	शु.बु.	मित्राणि
बु.	मं. बृ. शु.श.	शु. श.	मं.बृ. श.	श.	मं.बृ.	बृ.	समाः
शु.श.	००	बु.	चं.	बु. शु.	सू.चं.	सू.चं मं,	शत्रवः

शनि-यन्त्र

यह यन्त्र शनिवार को भोज पत्र पर लिख कर धारण करने से शनिकृत अरिष्ट निवृत्त करता है।

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

अथ ग्रहाणामेकर्क्षभोगफलसमयादिज्ञानम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा. के.	ग्रहाः
मा १	दि२।	मा१।।	मा. १	म.१२	मा. १	मा३०	मा. १८	एकर्क्षभोग
आदौ	भांत्ये	भादौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्त्ये	अन्त्ये	फलसमयः
दि.५	घ.३	दि.८	दि.७	मा. २	दि. ७	मा. ६	मा. ६	गंतव्यराशेः प्राक्फलम्

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थधारणाय मणयः

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यं	मुक्ताफलम्	प्रवाल	पन्ना	पुष्परागं	हीरा	नीलम	गोमेदम्	वैडूर्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	रौप्यम्	लोहम्	लाजवर्त्तं	लाजवर्त्तं

अथ शनैश्चरस्तोत्रम्—पिप्पलाद उवाच—ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोस्तु ते। नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चांतकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो!। नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥ इस स्तोत्र को प्रातः पढ़न से साढेसाती व ढैया की दुःखद पीड़ा नहीं होती॥ अथ शनैश्चर पाद विचार–ग्रहगोचर फल विचार में प्रायः शनैश्चर के राशि बदलने पर सुवर्णादिपाद विचार इस प्रकार देखा जाता है कि शनैश्चर, जिस दिन जिस समय राश्यन्तर में जावे उस समय अपनी जन्मराशि से चन्द्रमा (जन्मनि रसे रुद्र सुवर्ण हानि) १।६।११ वें स्थान में हो तो सुवर्ण पाद जानना फल हानि॥ यदि २।५।९ वें हो तो चांदी के पाद आया जानना फल शुभ (द्विपञ्चनन्दा रजतं शुभं च) यदि ४।८।१२ वें हो तो लोह के पाद आया जानना फल कष्ट (चतुरष्टमद्वादशलोहकष्टम्) यदि ३।७।१० वें हो तो ताम्रपाद आया जानना फल शुभ (त्रिसप्तदशमे ताम्रं शुभञ्च) अथ सुवर्णपादफलं—कुटुम्बरोधं बहुरोगयुक्तं क्लेशोदयं चैव करोति नित्यम्। द्रव्यार्थनाशं बहुलं करोति सुवर्णपादे स्वजने विरोधम्॥ अथ रजतपादफलम्—व्यापारसुखं धनधान्यसम्पत्महत्प्रतापः खलु राजमान्यम्। तद्वर्षमध्ये सुखसम्पदाप्तिः स्यान्मंगलं वै यदि रौप्यपादे॥ २२॥ अथ ताम्रपादफलम्—अनन्तलक्ष्मीं प्रकरोति लाभं कलत्रपुत्रैः सुखसम्पदाप्तिम्। लाभोदयं चैव करोति सौख्यं शरीरसौख्यं खलु ताम्रपादे॥३॥ अथ लोहपादफलम्—शरीरपीडा रुधिरप्रकोपं कलत्रपीडां पशु-पुत्र पीडाम्। व्यापारनाशं नृपतेर्भयञ्च लोहस्य पादे खलु निर्धनत्वम्॥४॥

ग्रह पीड़ा नाशकारी नवग्रह मुद्रिका

ई. बुध पन्ना	प. शुक्र हीरा	आ. चन्द्र मोती
उ. बृ. पुखरा.	मध्येसू. माणि	द. भौम मूंगा
वा. केतु वैदूर्य	प. शनि [illegible]	नै. राहु गोमद

ग्रहाणां दृष्टयादिचक्रम्

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां एकपाददृष्टिः
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९	द्विपाददृष्टिः
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४२	ग्रहाणां वर्षाणि
हरिवंश श्रवण	त्रिपुर जप	रुद्री जप	कांस्य दान	अमावस्या व्रत	गोरक्षा	मृत्युञ्जय जप	भुजग दान	ध्वजा दान	नेष्टग्रहस्य वर्षे दानोपायसाधनं
कृ. उफा. उषा	रो. ह. श्र.	मृ. चि. ध.	आश्ले. ज्ये. रे	पुन वि. पू. भा.	भ. पूफा पू. षा.	पुष्य. अ. उ. भा.	आर्द्रा स्वा. श.	म. म. अश्वि.	विंशोत्तरीनक्षत्राणि
६	१०	७	१७	१६	२०	१९	१८	७	विंशोत्तरीवर्षाणि
चं. मं. बृ.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु	र. च. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बु	मित्र-ग्रहाः
बु.	मं. श. गु. शु.	शु श.	मं. श. गु.	श. रा.	मं. गु.	गु.	गु.	०	सम-ग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं	०	शत्रु-ग्रहाः
मेष १०	वृषभ ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशयः परमोच्चांशः
तुला १०	वृश्चि. ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २	धनुः १५	मिथुन १५	नीचराशयः नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे. वृश्चि.	मि. क.	ध. मी.	वृष. तु.	म. कु.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्य	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पु. स्त्री. नपुंसक
चतुरस्	व. स्थूल.	चतुष्को.	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ	आकार
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपरा.	अपरा	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षिस्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू.	दग्ध	श्मशान	वाणी	जलभू	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	वायु	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थान

राशिज्ञाने विशेषः

नक्षत्र वा राशि में श और स में ब और व में कोई भेद नहीं होता, तथा जिस के नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें। (संयोगजाक्षरे नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्)

अथ नक्षत्रराशिज्ञानचक्रम्

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	चू	ली	आ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हू	डी	मा	मो	टे	०	पू	प	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय च०	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	या	यो	ध	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च०	चो	ले	०	उ	वी	०	का	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ च०	ला	लो	०	ए	वु	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	ची

नाम्नि ऋलृक्[1] अनुस्वारमात्रायां न भवन्ति ते। चेद्भवन्ति तदा ज्ञेया इ उ ए च यथाक्रमम् ॥१॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन। ततःपश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदैः ॥२॥ प्रसुप्तो भाषितैर्येन येनागच्छति शब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णो या मात्रा स्वरः स एव हि ॥३॥ अथ जन्मराशिः—नामराश्यो प्रधानता निर्णीयते-विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥४॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥५॥ काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भू वरणे नामराशेः प्रधानता ॥६॥ कुर्यात्षोडश[3] कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥७॥ विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम्। नामभाच्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥८॥

अभिजित्–निर्णयः—वैश्वप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥ उत्तराषाढा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५ वां भाग जोड़ के उसके चार भाग करो, उसको अभिजित् का एक चरण मान कर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो। उत्तराषाढा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढा का एक एक चरण मानो। श्रवण का १५ वां भाग छोड़ के जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण का १–१ चरण मानो। उस प्रकार को प्रायः सामान्यगणक नहीं जानते एतदर्थ यहां लिखा गया है। (अपने बच्चों का सुन्दर व शुद्ध नाम रखना चाहते हो तो "राश्यभिधान कल्पलता" मोतीलाल बनारसीदास, नैपाली खपरा, पो० ब० ७५ बनारस से मँगाइये। मूल्य १।) रु०।

नक्षत्र विषघटी ज्ञानम्—अब विषघटी के स्पष्ट करने की क्रिया समझ लीजिये। क्योंकि नक्षत्रगुणज्ञानचक्र में नक्षत्रों की विषघटी के मध्यम ध्रुवांक लिखे हैं, इनका स्पष्ट ऐसे करना यथा—जिस दिन विषघटी देखना हैं उस दिन के सर्वर्क्ष से उसी नक्षत्र के ध्रुवांक को गुणाकर ६० का भाग देने से जो लब्धि मिले वही विषघटी के प्रवेश का समय है और विष-घटी ४ घटी की होती है। इनका भी स्पष्ट करना जरूरी है। उदाहरण—मघा के सर्वर्क्ष ५५ को मघा के ध्रुवांक ३० से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्धि २७।३० मिले, बस इसी समय से विषघटी का प्रारम्भ हुआ, विषघटी ४ को ५५ से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्ध ३।४० मिले, बस इतने समय तक अर्थात् २७।३० से ३१।१० तक शुभ कार्य नहीं करना।

जन्मकुण्डली से विशेष विचार और इष्टशुद्धि

लघु भ्राता का जन्म समय जानना—(१) जन्म लग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़े जो राशि हो, उस पर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है।

(२) तृतीयेश, तृतीयस्थग्रह, तृतीयेशस्थ राशीश की दशा में छोटा भ्राता का जन्म होता है यदि भ्रातृ-प्रतिबन्धक योग न हो तो।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावे, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहिन को कष्ट होता है।

(२) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावे, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटावे (यथा—ल० तृ०–शे। द × मं = यो. शे.—यो. = शे.) शेष राशि में जब गोचर का शनि होता है तब भ्रातृकष्ट होता है।

(३) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, मंगल इन चारों स्पष्टों को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर शनि होता है उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब भ्रातृकष्ट जानिये।

माता की मृत्यु का समय जानना—(१) जन्म के सूर्य स्पष्ट में से चन्द्रस्पष्ट को घटावे तो शेष के उस राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि वा गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना।

(२) सुखेश, चन्द्रमा या इनके साथ वाला ग्रह सुखस्थ ग्रह चतुर्थ भाव पूर्णदर्शी ग्रह इनमें जो माता के लिये विशेष अरिष्टकारी ग्रह हो उस ग्रह की दशान्तर्दशा में माता को कष्ट होता है।

टिप्पणी—(१) जजोर्जः, यथा ज्ञानचन्द्रस्य मकरराशिः। कषसंयोगे क्षः, यथा क्षेमचन्द्रस्य मिथुनराशिः। एवं ज्ञालारामस्य कुम्भराशिः। (२) यथा–ऋषभदेवः ऋतकरामः कृतरामः। (३) गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तोन्नयनं ततः। जातकर्माभिधेयं च निष्क्रमप्राशने क्रमात्। चूडोपनयनं वेद-व्रतानां च चतुष्टयम्। गोदान-समावर्तनको विवाहः षोडशक्रियाः॥

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना—(१) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़ योगफल

(३) माघशुक्लनवमी को बादल या वर्षा आदि हो तो भाद्रपद में वर्षा अच्छी

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना—(१) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़ योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब सन्तान उत्पन्न होती है।

(२) चं० ल० गु० इन तीनों से पंचम स्थानेश या नवम स्थानेश की दशान्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है।

विवाह स्त्री सुख होने का समय जानना–(१) जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है।

(२) चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़ उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर में गुरु चन्द्र होते हैं तब विवाह होता है।

(४) श० चं० सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय जानना—(१) गुलिकस्पष्ट से सूर्यस्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में गोचर का शनि जब हो तब पिता रोगग्रस्त होता है। और उक्त शेष राश्यादि के समय जब गोचर का गुरु होता है तब पिता की मृत्यु होती है।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो तो उसकी दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

पाराशरोक्त प्राणपद से जन्मेष्टकाल शुद्ध करना—जहां अटे-सटे से लग्न बनाया गया हो, या जन्मपत्री के लग्न की अपेक्षा लग्न अधिक शुद्ध देखना हो तो इष्टकाल की घड़ियों को ४ से गुणा करें। पल १५ से अधिक हों तो १५ का भाग देकर जो लब्धि आवे वह चारगुणी की हुई इष्ट घटी के अंक में मिला दें। १५ का भाग देने से जो शेष फल रहें उनको दुगुने कर चतुर्गुणित इष्ट घटी के नीचे रखना। पश्चात् १२ का भाग देना शेष राशिअंश बचे उनमें स्पष्ट सूर्य यदि चरराशि का हो तो ज्यों का त्यों, स्थिर में हो तो ८ राशि मिलाकर, द्विस्वभाव, में हो तो ४ राशि मिला देने से राश्यादि प्राणपद बन जाता है। प्राणपद मनुष्यों की कुण्डली में प्रायः १।५।९ स्थान में, पशुओं की कुण्डली में २।६।१० स्थान में, पक्षियों की कुण्डली में ३।७।११ स्थान में और कीट सर्प जलचर जन्तुओं की कुण्डली में ४।८।१२ स्थान में रहता है। लग्न के व प्राणपद के अंश सदा एक समान रहते हैं।

वर्षाविचार

(१) पौष मास में मूल नक्षत्र से लेकर भरणी नक्षत्र तक के ११ नक्षत्रों को ध्यान पूर्वक देखकर कापी में लिख रक्खें, यदि इन दिनों में बादल हों तो आगे वर्षाकाल में सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र से लेकर विशाखा तक ११ नक्षत्रों में वर्षा होवे। अर्थात् मूल नक्षत्र में बादल हों तो आगे वर्षाकाल में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र वर्षता निकले। ऐसे ही पूर्वाषाढा से पुनर्वसु, उत्तराषाढा से पुष्य, श्रवण से आश्लेषा, धनिष्ठा से मघा, शतभिषा से पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद से उ. फा. उ. भा. से हस्त. रेवती से चित्रा, अश्विनी से स्वाति और भरणी से विशाखा नक्षत्र में वर्षा होवे॥ सुज्ञ जनों को चाहिये कि इन दिनों को अवश्य देखें और विचारपूर्वक अपने पास नोट कर लें जिससे वर्षा का अन्दाज ध्यान में रहे॥

(२) माघशुक्लसप्तमी को पूर्व उत्तर की वायु चले आकाश बादलों से ढका रहे या बिजली चमके तो आगामी वर्ष अच्छा होता है, इस दिन आकाश निर्मल हो तो दुर्भिक्ष पड़ता है, निश्चय है।

(३) माघशुक्लनवमी को बादल या वर्षा आदि हो तो भाद्रपद में वर्षा अच्छी होती है।

(४) चैत्रकृष्ण में आकाश का निर्मल रहना अच्छा है, यदि यहां मूल से भरणी नक्षत्र तक बादल व वर्षा हो तो अनावृष्टि होती है। पौष में तो इन नक्षत्रों में बादल होना अच्छा है और इधर इस मास में निर्मल रहना अच्छा है॥

(५) चैत्रशुक्लप्रतिपदा को वर्षा बिजली या मेघगर्जन हो तो श्रावण भाद्रपद में वर्षा की खेंच जरूर होती है॥

(६) अश्विनी भरणी नक्षत्र पर सूर्य रहते यदि वायु-शास्त्र सम्बन्धी कोई वर्षानाशक अपयोग बना हो, परन्तु कृत्तिका के सूर्य में बिजली छींटें आदि हो जायें तो अशुभ फल नहीं होता है। रोहिणी में तपे, कृत्तिका में छींटें बिजली वा वर्षा हो और मृगशिरा में वायु चले तो वर्षाकाल में अच्छी वर्षा होती है, परन्तु रोहिणी में मेघ गर्जे, थोड़ी वर्षा हो या वायु चले, कृत्तिका में तपे पर मेघ गर्जन बिजली छींटें न हों, मृगशीर्ष में तपत हो तो वर्षा में खेंच होती है और दुर्भिक्ष पड़ता है॥

(७) कृत्तिका में यदि वर्षा बूंदा-बांदी हो जाय तो वायुमण्डल में पहले कुछ अशुभ योग भी हुए हों तो उनका बुरा फल नहीं होता, वर्षा काल में अच्छा पानी वर्षता है। अतः कृत्तिका के सूर्य में बूंदा-बांदी बिजली बादल का होना अच्छा है।

(८) रोहिणी पर सूर्य को अच्छा तपना चाहिये, गर्मी अधिक हो तो वर्षा श्रेष्ठ, वायु अधिक हो तो वर्षा की खेंच और वर्षा हो तो पहिले वर्षा की खेंच होकर पीछे वर्षा होती है, इन १५ दिनों में वायु, बादल, बिजली वर्षा होना हितकर नहीं, स्वच्छ धूप पड़नी चाहिये, रोहिणी में बूंदाबांदी होने पर वर्षा की खींच जरूर होती है यह अनुभवसिद्ध है, आषाढ़ी पूर्णिमा की वायु अच्छी होने पर भी इसके खेंच का असर तो पहिले होता ही है॥

(९) मृगशिरा नक्षत्र पर सूर्य रहे तब तक जोर का पवन चलना अच्छा है, यदि वायु न चले तो वर्षा देर से आती है और कम भी होती है॥

वर्षा विज्ञान

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहते नीचे लिखे दिनों में जहां कहीं थोड़ी सी वर्षा हो तो इतने दिनों तक वहां वर्षा न होवे। जैसे रोहिणी में सूर्य प्रवेश के प्रथम दिन थोड़ी-सी वर्षा हो तो उस दिन से ७२ दिन तक वर्षा की खेंच रहती है।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
७५	५०	४५	४२	३९	३४	२१	३०	२८	२४	२१	१६	१२

सूर्य रोहिणी पर रहे उन दिनों मे गर्मी ज्यादा पड़े तो आगे वर्षा श्रेष्ठ। वायुसे राजाओं में विग्रह। थोड़ी वर्षा से संवत् नेष्ट, दैवात् यदि अधिक वर्षा हो जावे और नदियों में वर्षा का जल भी चल पड़े तो अशुभ फल नष्ट होकर वर्षा अच्छी होती है। उन दिनों में बिजली से वर्षा की कमी। अधिक दिन की बिजली से शुभ, बादल की दिशा में वर्षा की कमी। निर्मल दिशा में वर्षा अधिक होती है।

वर्षा ज्ञानसारिणी

दिसंबर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जून	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
जुलाई	जू.																	जु.													
जनवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जुलाई	जु.																	अ.													
अगस्त	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
फरवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८			
अगस्त	अ.																	सि.													
सितंबर	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मार्च	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
सितंबर	सि.																			अ.											
अक्टूबर	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अप्रैल	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
अक्टूबर	अ.																			न.											
नवंबर	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

वर्षाज्ञान सारणी से वर्षा जानने की रीति—दिसंबर, जनवरी, फरवरी व मार्च इन चारों मासों की तारीखों में जिन-जिनतारीखों में जहां वर्षा होती है उसके हिसाब से ही वर्षा ऋतु में जुलाई, अगस्त, सितंबर, अक्टूबर इन चार मासों में वहां वर्षा प्रायः हुआ करती है। प्राचीन ज्योतिष के वृष्टि विज्ञान के सिद्धांत से आधुनिक समय के अनुसार भारत में १२ दिसंबर के बाद ही शीतकाल में वर्षा साधारण रूप से होने का नियम है। जैसे मान लो कि शीतकाल में लुधियाना में १९ दिसंबर को वर्षा हुई है तो वर्षा ऋतु में वहां २ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार मान लिया कि शीतकाल में १५ जनवरी को देहली में वर्षा हुई है तो ऊपर की वर्षा ज्ञानसारणी यह बता देगी कि वर्षा ऋतु में वहां २९ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार जैसे कि २२ फरवरी को शीतकाल में कहीं वर्षा हुई हो तो वहां ५ सितम्बर को वर्षा होगी। इसमें ज्योतिष शास्त्र के विज्ञान का नियम यह भी है कि जिन-जिन तारीखों में शतभिषा श्लेषा मघा स्वाती आर्द्रा नक्षत्र पड़ जायें और उन तारीखों में वर्षा हो जाय तो आगे वर्षाऋतु में जो तारीखें सारणी में आकर पड़ेंगी उन तारीखों में वर्षा अवश्य होगी और अधिक भी होगी, क्योंकि यह नक्षत्र बहुत जलवाले माने जाते हैं। इसी प्रकार शीतकाल में जिन-जिन तारीखों में पू. भा. उ. भा. पू. फा. उ. फा. रोहिणी ये पांच नक्षत्र पड़ जावें और उन तारीखों में वर्षा हो जाय तो आगे वर्षा ऋतु में जिन महीनों की जो तारीखें सारणी में पड़ेंगी उनमें कई दिनों की वर्षा की [illegible]। वर्षा ज्ञान के लिये शीतकाल में होनेवाली वर्षा को तारीखवार [illegible] सहित नोट करके देखने

अथ अनावृष्टिशान्तिप्रयोग

गंगा, यमुना आदि महानदी को छोड़ के अन्य किसी नदी के तट पर वा तालाब वा वन वा शिव के मन्दिर में जाकर वहां मेघों का आवाहन करे। कमल के आकार का अष्टदल का यंत्र बना के उसमें पर्जन्य सहित सातों मेघों को स्थापन करके कनेर के पीले लाल तथा श्वेत पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आदि से पूजा करे। (मेघों के नाम और आवाहन मंत्र) ॐ ह्रीं मेघदूताय नमः आगच्छ २ स्वाहा ॥१॥ ॐ ह्रीं मेघदूती कमलोद्भवाय नमः आगच्छ २ स्वाहा। ।२॥ ॐ ह्रीं महानीलराजाय हिमवद्वासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥३॥ ॐ ह्रीं नन्दकेश्वराय जठरनिवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥४॥ ॐ ह्रीं सिंहराजाय कैलाश-निवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥५॥ ॐ ह्रीं कुम्भराजाय वामश्रृंङ्गमेरुनिवासाय मेघ-राजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥६॥ ॐ ह्रीं नन्दराजाय दक्षिणश्रृंगमेरुनिवासाय मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥७॥ फिर नाभि मात्र जल में खड़ा होवे ऊपर लिखे प्रत्येक मंत्र को १०००-१००० जपे पश्चात् गुगल, श्वेत चन्दन, अगर, कनेर के पुष्प और बहुत-सी शहद, तथा घृत की १०८-१०८ आहुति प्रत्येक मंत्र से दे तो निश्चय ही वर्षा होवे॥ अतिवृष्टि शान्ति प्रयोग। "ॐ नमो हनवन्त वीर अंजनी पवन देवता की आण जहू ऐसी मेघ मण्डली वर्षसी इत उत फूट सत खण्ड जावसी।" अति वर्षा के समय इस मंत्र का ७-७ बार जाप करके तीन बार ताली बजाकर आकाश की ओर मुख करके फूंक मारने से अतिवर्षा करते हुवे मेघ भी तत्काल फट जावे। इसी मंत्र को जपता हुआ वर्षते हुए पानी को झाड़ू से दूर करके उस झाड़ू को सीधा खड़ा कर दे तो वर्षा बन्द हो जावे। मन्त्र को पहले दीपमाला में जपकर

[illegible] | वैशाख | ज्येष्ठ | आषाढ़ | श्रावण | भाद्रपद | आश्विन

राशयः	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन
मेष	लाभ-खर्च सम, स्वास्थ्य ठीक, बन्धुसुख, शुभ-कार्य की चिन्ता।	स्त्री की तरफ से चिन्ता कष्ट, व्यापार से लाभ, विवाद में जय।	सन्तति चिन्ता, मित्र-मिलाप, लाभ अच्छा, नीच से भय।	सवारी से भय, राज से मान, गृहसम्बन्धी चिन्ता, मित्रबन्धु से लाभ।	गृह चिन्ता, शुभ में खर्च, वायुपीड़ा, नये काम का विचार।	स्वास्थ्य मध्यम, मित्र-बन्धु सुख, इधर-उधर की दौड़-धूप।
वृष	कारोबार मध्यम, शत्रु-नाश, मित्र से खुशी, विवाद में जय, यात्रा।	लाभ कम, यात्रा से हानि पित्त पीड़ा, कारोबार की चिन्ता।	शरीर व नेत्र में कष्ट, यात्रा से लाभ, बन्धु-सुख, शुभ में खर्च।	बन्धु पीड़ा, वायु-विकार, लाभ, कारोबार मध्यम।	जायदाद वा यात्रा की चिन्ता, अच्छे पुरुष से मेल, लाभ कम।	चित्त अशान्त, बन्धु-कष्ट, कारोबार ठीक, वायु पीड़ा।
मिथुन	मंगलकार्य का उत्साह, कारोबार ठीक, खर्च विशेष, धर्म में रुचि।	मित्र मिलाप, पुत्र से सन्तोष, आशा सफल, शुभ में खर्च।	मानवृद्धि, धर्म कृत्य में खर्च, यात्रा भी हो, सन्तति सुख।	लाभ अच्छा, शत्रुनाश, भाग्योदय, जल वा अग्नि से भय।	लाभ खर्च सम, गुप्तचिन्ता, शत्रुभय, नये काम का उत्साह।	लाभ, गृह के झंझटों से उदासी, वायुपीड़ा, पशु सुख।
कर्क	स्वास्थ्य खराब, करोबार मध्यम, गुप्त चिन्ता, नये काम का विचार।	अधर्म में प्रवृत्ति, चित्त-भ्रम, कारोबार ठीक, खर्च विशेष।	स्वास्थ्य मध्यम, शत्रु-भय, अकस्मात् लाभ, धर्म में रुचि।	धर्म में रुचि, कारोबार में गड़बड़ी, रक्त विकार।	कार्य की चिन्ता, शत्रु व जल से भय, वायुविकार, लाभ कम।	लेने देने का झगड़ा, कारोबार मध्यम, पुत्र-द्वारा कष्ट, यात्रा।
सिंह	भाग्यवृद्धि, सन्तति द्वारा खर्च, वृथायात्रा, शत्रु-नाश, लाभ, अच्छा।	कारोबार मध्यम, स्वजन विरोध, हैरानी, सन्तति चिन्ता।	कारोबार उत्तम, मित्र-विरोध, गृहभूम्यादि की चिन्ता।	शिर वा नेत्र में कष्ट; शत्रुनाश, सन्तति चिन्ता, लाभ अच्छा।	कारोबार मध्यम, बन्धु सुख, मानवृद्धि, यात्रा कष्ट।	शुभ में खर्च, मित्रमेल, चोर भय, लाभ कम, शिरोवेदना।
कन्या	खर्च से हैरानी, लाभ कम, चित्तभ्रम, मासान्त में कुछ खुशी।	विवाद में हानि, मित्र-बन्धु विरोध, रोगभय, गृह चिन्ता।	भ्रम, चिन्ता, कुटुम्ब-क्लेश, खर्च, लाभ कम।	लाभ से खर्च विशेष, शत्रु वृद्धि, ज्वर वा उदर विकार।	कारोबार मध्यम, कुटुम्ब क्लेश, मासान्त में लाभ।	चित्त उदास, यात्रा-विचार, उद्योग से कुछ लाभ, पशुभय।
तुला	स्त्रीपुत्र से विवाद, कारो-बार की चिन्ता, नीचभय, भ्रमण का विचार।	सन्ततिसुख, शत्रु चिन्ता, लाभ मध्यम, राजभय, यात्रा कष्ट।	लाभ होते रुके, राज्य-भय, स्वास्थ्य हानि, यात्रा कष्ट।	इज्जत का भय, कारो-बार मध्यम, स्त्रीपुत्र द्वारा खर्च।	जमीन मकान की चिन्ता, कारोबार ढीला, वृथा विवाद।	नये २ विचार, वायु पीड़ा, उदासी, वृथा-क्रोध, गृहक्लेश।
वृश्चिक	नये विचार, लाभ मध्यम, मित्र से सन्तोष, वृथा-यात्रा।	कार्य में विघ्न, उदासी, स्वास्थ्य चिन्ता, स्त्री पुत्रार्थ खर्च।	स्त्री सुख, बन्धु मित्र-विरोध, गुप्त चिन्ता, धर्म में रुचि, बेचैनी।	चित्त में उद्वेग, स्वजन विरोध, कारोबार ढीला, मित्र सुख।	लाभ में कमी, खर्च विशेष, बन्धु द्वारा सन्तोष।	गत मास की अपेक्षा श्रेष्ठ, मित्र बन्धु सुख, मन कुछ अशान्त।
धनु	स्वास्थ्य हानि, शत्रुनाश स्त्री सुख, पुत्र चिन्ता।	लाभ होते हुए भी तंगी, शरीर सुख कम, कार्य-नाश।	प्रियवस्तु का लाभ, उत्साह वृद्धि, कारोबार ठीक, शिरःपीड़ा।	धर्म लाभ, स्त्री सुख, वृथा खर्च, कारोबार, मध्यम, वायुपीड़ा।	बन्धुकष्ट, कुछ लाभ, सन्तान चिन्ता, शत्रु-भय।	कारोबार ढीला, अचानक लाभ, विवादजय, खर्च।
मकर	चित्त चञ्चल, उदासी लाभमध्यम, पुत्र-स्त्रीचि., कलंकभय।	शरीर सुखमध्यम, मित्र-बन्धुविरोध, कार्य ठीक।	स्त्री की ओर से खुशी, लाभ अच्छा, यात्रा कष्ट, बन्धु मिलाप।	शुभ में व्यय, सेवक वा मित्र से विरोध, लाभ अच्छा।	लाभ मध्यम, कार्य-सिद्धि, जय, नीच भय।	चिन्ता दूर, लाभ अच्छा, वायुविकार, चौरभय, मित्रवियोग।
कुम्भ	कुटुम्ब के झंझटों से हैरानी, आवश्यक कार्य में देरी, लाभअच्छा।	यात्रा में हानि, चित्त-खिन्न, दुःस्वप्न, सन्तान-चिन्ता।	दुष्टसंग, वृथा खर्च, पशुपीड़ा उन्नति, शरीर पीड़ा।	उद्योग करते हुए भी लाभ कम, पुत्र स्त्री-चिन्ता, शत्रुनाश।	अचानक यात्रा, लाभ मध्यम, पित्तपीड़ा, बन्धु-मिलाप।	शत्रुनाश, कष्ट से लाभ, जय, श्रम, यात्रा।
मीन	रोजगार से मध्यम लाभ, दुःस्वप्न, भाग्य की चिन्ता, मासान्त में सुख।	शुभ में खर्च, शत्रुपीड़ा, राजभय, यात्रा कष्ट, पुत्र सुख।	कारोबार की चिन्ता, खर्च विशेष, चोर भय, पशु कष्ट।	लाभ मध्यम, उदर-पीड़ा, नये काम का अस-फल विचार।	कारोबार में गड़बड़ी, शत्रु व रोग भय, धर्म में रुचि।	पुत्रसुख, शत्रुनाश, धन-चिन्ता, चित्त अशान्त, क्लेश।

नोट—यह राशिफल सामूहिकरूपेण स्थूल मान से मिलता है, सूक्ष्म मासिक फल जानना हो तो अपना वर्षफल बनवाइये।

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश सं. २०१२ वि.

राशय:	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
मेष	नवीन उद्योग सफल, प्रतिष्ठा वृद्धि, शत्रुनाश, पशुलाभ।	मांगलिक कार्यों की योजनाएं, यात्रा कष्ट, शत्रु विवाद।	पराक्रम वृद्धि, यात्रा की चिन्ता, लाभ-मध्यम, बन्धुसुख।	लाभ कम, खर्च ज्यादा, शत्रुभय, स्त्रीपुत्रचिन्ता।	वृथा यात्रा, बन्धु-चिन्ता, कारोबार कम, वायुविकार।	उदर विकार, बन्धु, विरोध, लाभ अच्छा, स्थानान्तर का विचार।
वृष	पुत्रस्त्रीकष्ट, इष्टकार्य-सिद्धि, लाभ अच्छा, शुभ में खर्च।	कारोबार ठीक, मित्र समागम, वस्तुसंग्रह की चिन्ता।	अकस्मात् लाभ, राज्य में जय, शत्रु वृद्धि, स्त्री-चिन्ता, यशवृद्धि।	स्वास्थ्यहानि, व्यय अधिक, स्त्रीचिन्ता, कारो-बार ठीक।	विवाद में जय, लाभ उत्तम, स्वास्थ्य हानि, मित्रवियोग, उदासी।	लेनदेन की कठिनाई, जिम्मेदारी बढ़े, वायु-पीड़ा, चित्त अशान्त।
मिथुन	बन्धु सुख, पुत्र चिन्ता, कार्यों में विलम्ब, उत्साह-वृद्धि।	लाभ अच्छा, जोखिम के काम से भय, मान-वृद्धि, पुत्र सुख।	निज व्यवसाय से अच्छा लाभ, सिर छाती में कष्ट, पुत्र सुख।	लाभ अच्छा, शत्रु-नाश, धर्मरुचि, चित्त-शान्त, पशुलाभ।	यात्रा से लाभ, सुतमित्र की चिन्ता, शुभ में खर्च, उत्साह।	राज्यमान, विवाद में जय, लाभ अच्छा, वायु विकार, स्त्री कष्ट।
कर्क	सामान्य हानि, रोज-गार की चिन्ता, पशु-पीड़ा, सफल यात्रा।	लाभ होकर बाद हानि, स्त्री सुख, मित्रमिलाप, शत्रुभय।	भाग्योदय में रुकावट लाभकम, खर्च से घब-राहट।	हृदय में कष्ट, बन्धु-चिन्ता, लाभमध्यम, यात्राकष्ट।	क्रोधवृद्धि, घर में क्लेश, कारोबार कुछ ठीक, शत्रुभय, स्त्री सुख।	शुभ में प्रवृत्ति, मित्र-वियोग, सन्ततिचिन्ता, शत्रुनाश, लाभ में विघ्न।
सिंह	किसी के सहयोग से लाभ, दिलखुश, शत्रुभय खर्च अधिक।	कारोबार ठीक, छाती व मस्तक में कष्ट, बन्धु-विरोध।	स्वास्थ्य ठीक, कारोबार से लाभ, यशवृद्धि, वृथा-भय, दुःस्वप्न।	कारोबार की चिन्ता, स्वामीकोप, यात्रा, ऋण का प्रसंग बने।	स्वास्थ्य ठीक, अपने ही शत्रु दीखें, खर्च ज्यादा।	लाभ मिलता भी हाथ न आवे, बड़े पुरुष का कोप, साधु संगति।
कन्या	लाभ मिलता भी पल्ले न पड़े, मित्र बंधु से विवाद, दुःस्वप्न।	स्त्री कष्ट, वाहन सुख, लाभ कम, हैरानी, चोरभय।	शत्रुहानि, धनसन्तान की चिन्ता, शुभ में खर्च, मित्र से सुख।	घरू चिन्ता, पुण्य में रुचि, महापुरुष से मिलाप, उत्साह बढ़े।	लाभ अच्छा, गुप्त चिन्ता, स्त्रीपुत्र कष्ट, वायुपीड़ा, यात्रा कष्ट।	पराक्रम उत्तम, मकान आदि की चिन्ता, लाभ-श्रेष्ठ, शुभ में व्यय।
तुला	मित्रों से सफलता, मन में खेद, आलस्य-वृद्धि।	विवाद में भय, स्त्री-पुत्र द्वारा खर्च, वायु-पीड़ा, उद्वेग।	स्वास्थ्य मध्यम, मास-मध्य में लाभ, अचानक यात्रा।	कुटुम्ब में क्लेश, लाभ का अवसर हाथ से जावे, शत्रुभय।	लाभ की आशा में दौड़-धूप, राज्यभय, शरीर कष्ट, मासान्त शुभ।	किसी के भरोसे पर हानि, चित्तभ्रम, कार्या-न्तर का विचार।
वृश्चिक	मानसिक व्यथा, पशु-कष्ट, मित्रमिलाप, मन में खेद, साधारण लाभ।	लाभ मध्यम, वृथाखर्च, रोगभय, स्थानहानि, बन्धु-कष्ट।	शिरपीड़ा, अग्निभय, वृथाव्यय, लाभ अच्छा मित्रमिलाप।	पारिवारिक चिन्ता, राज-पक्ष से फिकर, झूठे कलंक का भय।	नई २ चिन्तायें, छाती में पीड़ा, स्थानान्तर का विचार।	स्वास्थ्य हानि, धन-हानि, शत्रुपीड़ा, मित्र-बन्धु विरोध।
धनु	यात्रा, नए कार्य में सफलता, आर्थिक-चिन्ता बनी रहे।	मानवृद्धि, शिरपीड़ा, कारोबार अच्छा, यात्रा से लाभ।	स्वास्थ्य ढीला, सन्तति-सुख, बन्धुकष्ट, शत्रु-नाश।	उद्योग से सफलता, लाभ के कामों में विघ्न, शरीर ढीला।	चित्तभ्रम, सफलता में रोक, नया झगड़ा, माससध्य में लाभ।	सन्तति सुख लाभ के प्रयत्न, निष्फल, यात्राकष्ट, मित्रमिलाप।
मकर	अशुभ विचार, लाभ कम, शत्रुनाश, वृथा खर्च, बन्धु कष्ट।	कार्य सिद्धि, खर्च की विशेषता, बन्धु वियोग, स्वास्थ्य ठीक।	बिगड़े काम बनें, गुप्त-चिन्ता, लाभखर्चसम, रोगभय।	कोपवृद्धि, नये काम का विचार, मित्रसुख, मासान्त में कष्ट।	शत्रु हानि, सेवक वा बन्धु से बिगाड़, लाभ अच्छा, वायु पीड़ा।	अभीष्ट वस्तु लाभ, यात्रासुख, स्वास्थ्य ढीला, शुभ लगन।
कुम्भ	रोजगार में तरक्की, स्वजन विवाद, शुभ, कार्यों का विचार।	नये मित्र बन्धु से सन्तोष, कारोबार बढ़े, यश हो।	चिन्ता दूर, व्यापार से लाभ, शत्रु वा नौकर से सावधान।	स्त्रीपुत्र से सन्तोष, मस्तकपीड़ा, बुद्धि मलिन, लाभ उत्तम।	चिन्ता वृद्धि, कारोबार ठीक, नये काम का विचार, धर्म रुचि।	स्वास्थ्य अच्छा, कार्य-सिद्धि, शुभसमाचार श्रवण।
मीन	अनेक उलझनों से चिन्तित साधारण लाभ, व्यय	लाभ होकर भी हाथ न आवे, कार्य विघ्न,	उदर वा हृदय में रोग, लाभ से खर्च ज्यादा,	अशुभविचार हों, काम-काज धीरे २ सुधरे,	स्वास्थ्य ठीक, बन्धु प्रेम, तरक्की, कार्य	हानि होकर लाभ हो, चिन्तित कार्य बने,

अथ केरलमते प्रश्न-विचारः

प्रातःकाले वदेत्पुष्पं मध्याह्ने तु फलं वदेत् । सायंकाले वदेन्मूलं रात्रौ तु देवतां वदेत् ॥

ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष	अष्टकवर्गः
अइउएओ	कखगघङ	चछजझञ	टठडढण	तथदधन	पफबभम	यरलव	शषसह	प्रश्नाक्षराणि
अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	प्रश्ननिर्णयः
धातु	धातु	मूल	जीव	जीव	जीव	मूल	जीव	प्रश्नः
कुशल	रोगी	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	कुशल	रोगी	प्रवासीप्रश्न
स्थिर	महाकष्ट	चंचल	चंचल	महाकष्ट	स्थिर	स्थिर	कष्ट	प्रवासीचरादि
समीप	समीप	दूर	पुनर्गतः	मार्गस्थ	मार्गस्थ	दूरस्थ	पुनर्गत	प्रवासीगमागं
स्वल्प	सप्त	एकविंश	१ मास	सार्धमा	२ मास	६ मास	१ वर्ष	प्रश्नदिनानि
पत्र	अस्थि	फल	काष्ठ	धान्य	तृण	जीव	पुष्प	मुष्टि प्रश्न
गोधूम	तिल	पीतान्न	दाल	तण्डुल	चणे	गुड़	यव	धान्य ज्ञान
कौसुम्भ	श्वेत	लोहितांग	पांडुनील	पीत	आकाश	श्याम	मिश्र	मुष्टि वर्ण
सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	रोगी प्रश्नः
सप्तदिन	दो मास	पक्ष	१ मास	पक्ष	१ मास	सप्तदिन	२ मास	कष्टदिन
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	नष्ट लाभः
पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिक्नष्टः
ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	धानक	नौकर	टहलन	नाई	चौर जाति
ऊखले	अग्निगृहे	अरण्ये	अंतरिक्षे	भांडगते	काष्ठशिल	गृहे	भूविमध्ये	नष्टस्थानम्
भैरव	जगदंबा	सूर्य्य	हनुमत	रुद्रगण	सरस्वती	गणेश	पितृ	देव पूजा
आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	शत्रुगमागमौ
जय	हानिः	जय	हानिः	जय	हानिः	जय	हानिः	शत्रुजयहानि
न मोक्षं	मोक्षं	न मोक्षं	मोक्षं	न मोक्षं	मोक्षं	न मोक्षं	मोक्षं	बंदीमोक्षप्रश्न
सप्तदिन	१ वर्ष	पक्ष १५	मास ६	मास १	मास ६	मास ३	वर्ष १	दिनानि
स्थिर	न सिद्धि	त्वरितं	दीर्घकालं	त्वरितं	दीर्घकालं	स्थिर	न सिद्धि	कार्य्यसिद्धि
शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	व्यवहार प्रश्न
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	स्त्रीलाभ प्रश्न
पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्रकन्या प्रश्न
शतं	एक	शतं	२०	६०	४५	७५	१६	आयु प्रश्न
विलंब	उत्तम	विलंब	उत्तम	उत्तम	न वर्षा	उत्तम	न वर्षा	वृष्टिप्रश्न
२७	७	३०	२०	१०	६०	३०	६०	दिनानि

रोगोत्पत्ति सन्तान प्रतिबन्धादि में देवदोष ज्ञान

प्रश्नलग्न से ३।६।९।१२ स्थान शुभग्रहरहित कोई पापग्रह हो तो विष जल शस्त्र से मरे हुए किसी स्वकुलोत्पन्न व्यक्ति का दोष जानें। यदि ८।१२ वें स्थान में राहु हो तो प्रेतदोष, गुरु हो तो पितृदोष, चन्द्रमा या शुक्र हो तो जलदेवी का दोष, सूर्य हो तो देवीदोष, (लग्न में सूर्य हो तो क्षेत्रपाल का दोष,) शनि हो तो सती दोष, बुध हो तो भूतदोष, भौम हो तो शाकिनीदोष स्वधर्महानि अथवा ईश्वर से विमुख मनुष्य को होता है। भौम स्वक्षेत्री १२ में हो तो छाया चुड़ैल, चौथे श. मं. राहु चौपटिया, बली वा नीच भौम २।४।८वें हो तो शत्रु के घर से मसाणी, १० सू. मं. सौकण, १२ भौम नणद बड़ी, ८ वें भौम नणद छोटी, ४ भौम मैण, १० मं. गु. सती कुल की, १० मं. चं. अपने दुर्गास्थान का दोष कहना। यह ग्रह योग न हों तो केवल प्रश्नलग्न से दोष निम्नलिखित जानें बलवान् मेषलग्न में प्रश्न हो तो पितृदोष कहें, वृष हो तो आकाशदेवी का, मिथुन हो तो महामाया का, कर्क में शाकिनी का, सिंह में जलभय प्रेतदोष, कन्या में केवल ग्रहदोष, तुला में क्षेत्रपाल का, वृश्चिक में नाग का, धन में कर्मजन्य, मकर में श्रीदुर्गा का, कुम्भ में भूतप्रेत का, मीन में योगिनी का दोष कहें। बलवान् पापग्रह केन्द्र में हो तो पूर्वोक्त देवता असाध्य, शुभ ग्रह हों तो साध्य होते हैं।

चैत्र शुक्ल १ को वर्षफल श्रवण

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥१॥ विनायकं प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवतां गुरुम्। संवत्सरफलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया ॥२॥ सम्यक् विचार्य गणितं दैवज्ञजनतुष्टिदम्। मुकुन्दवल्लभेनेदं तिथिपत्रं विनिर्मितम् ॥३॥ अनेन धार्मिकजनः कालज्ञानसहायिना। तिथिपत्रेण सन्तुष्टो भवत्वित्येव याच्यते ॥४॥ तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च। पञ्चांगस्य फलं श्रुत्वा गंगास्नानफलं लभेत् ॥५॥

चैत्र शुक्ल १ को नूतन संवत्सर प्रारम्भ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वज लगावें। तोरण आदि से गृह सुशोभित करें, मंगल स्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजाकर, स्त्रियां शिशु आदि वस्त्र-आभूषण आदि परिधान कर उत्सव मनावें। ज्योतिषीजी का सत्कार कर उनसे नूतन संवत्सर का फल श्रवण करें। प्रातःकाल में कटुनिम्ब के कोमल पत्र और पुष्प लावें, उसमें कालीमिर्च, हींग नमक (सेंधा) अजवायन, जीरा और खांड मिलाकर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शान्ति होती है (वर्ष पर्यन्त ज्वरादि बीमारी नहीं होती)।

पञ्चाङ्गस्य गणेश और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को यथाशक्ति दानादि से प्रसन्न करें, मिष्टान्न आदि भोजन करावें, गीत (गायन) वाद्य कथा श्रवण आदि कर सम्पूर्ण दिन आनन्द से व्यतीत करें। गृहस्थियों को विलासयुक्त आनन्दपूर्वक वर्षारम्भ दिन व्यतीत करने से सम्पूर्ण वर्ष आनन्दमय जाता है।

वर्षफल श्रवण का माहात्म्य—

ये चैत्रशुक्लप्रतिपत्तिथौ फलं शृण्वन्ति भक्त्या प्रतिवार्षिकं नराः। ते दुःखदारिद्र्यरुगादिवर्जिता नन्दन्ति लोके धनधान्यसंकुलाः ॥१॥ शाकस्य श्रवणात्सुपुण्यजननं संवत्सरस्याक्षयतां, राज्ञो राजकुले जयो विजयते मन्त्री फलं वृद्धिदम्। धान्यं धान्यपतेः रसं रसपतेः क्षेत्रेषु वृद्धिस्तथा, सस्यं सर्वसुखञ्च वत्सरफलं संशृण्वतां सिद्धिदम् ॥२॥ इति संवत्सरादिफलश्रुतिः।

सृष्टिक्रम वर्णन

अथवा सृष्टि के संक्षिप्त इतिहास की अवतरणिका—समस्त जगत् की उत्पत्ति स्थिति और लय कारणरूप ब्रह्मा की आयु अपने ही दिनों के मान से सौ वर्ष की होती है। अब ब्रह्मा की आयु के ५० वर्ष व्यतीत होकर, ५१ वें वर्ष के प्रथम दिनका उदय है। इस दिनकी १३ घड़ी, ४२ पल, ३ विपल, ४३ प्रतिविपल व्यतीत हो चुके हैं। मनुष्यमान से ब्रह्मा की आयु का विस्तार इस प्रकार है—एक चतुर्युगी का एक महायुग होता है, उसकी सौरमान से वर्ष-संख्या ४३२०००० है। इस प्रकार के एक हजार युगों का ब्रह्म का एक दिन होता है (ऐसे ब्रह्मा के हजार युगों की विष्णु की एक घड़ी होती है, विष्णु के १२ लाख युगों का रौद्रकलार्ध होता है। रुद्र के अर्बुद संख्यक युगों का अक्षरात्मक ब्रह्म होता है। ब्रह्मा के इस एक दिन में जो १४ मन्वन्तर होते हैं, उनमें से १ स्वायम्भुव, २ स्वारोचिष, ३ उत्तम, ४ तामस, ५ रैवत, ६ चाक्षुष, ये छः मनु व्यतीत हो गये हैं, अब सातवां वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है, उसमें भी २७ चतुर्युगी गत होकर अठाइसवीं चतुर्युगी के ३ युग व्यतीत हो गये हैं, और यह २८ वां कलियुग है।

अथ युगकाल व्यवस्था—सत्ययुग—कार्तिक शुक्ल नवमी बुधवार के प्रथम पहर श्रवण नक्षत्र वृद्धियोग में सतयुग की उत्पत्ति हुई, इसकी आयु १७२८००० वर्ष की थी, इसमें श्रीनारायण के मत्स्य, कच्छप, वराह और नृसिंह, ये ४ अंशावतार हुए, श्रीमत्स्यजी ने वेदों के चोर शंखासुर को मारकर ब्रह्मा को वेद लाकर दिये, भगवान् कच्छप ने पृथ्वी की रक्षार्थ मन्दराचल को पीठ पर धारण कर शेषनाग की डोर से देवदैत्यों द्वारा समुद्र-मंथन करा कर चौदह रत्न प्रकट किये। श्रीवराहजीने हिरण्याक्ष का वध करके रसातल में गई हुई पृथ्वी का उद्धार किया। श्रीनृसिंहावतारने हिरण्यकशिपु का वध करके भक्त प्रह्लाद की रक्षा की। इस युग में धर्म अपने चारों पद पर कायम था, गौएँ कामधेनु के समान होती थीं, प्रायः स्वर्ण के पात्र और सिक्के के स्थान में रत्न का परस्पर व्यवहार था। इच्छित वर्षा होती थी, एक बार बीज बोकर २१ बार काटते थे। ब्राह्मण चारों वेद के जानकार तथा सत्यभाषी परद्रव्य-परस्त्री-पराङ्मुख और त्यागी होते थे। शाप देने और वर प्रदान करने में भी समर्थ थे। स्त्रियां पद्मिनी और पतिव्रता होती थीं। शासक (राजवंश) वर्ग न्यायपरायणान्तःकरण से प्रजा को स्वपुत्रवत् समझते हुए राज्य करते थे। वैश्य लोग सत्यवक्ता धर्मात्मा व्यापारी और शूद्र लोग सेवाधर्म में रहते हुए जीवन व्यतीत करते थे। इस युग में तीर्थ पुष्कर प्रधान था।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया चन्द्रवार के द्वितीय प्रहर रोहिणी नक्षत्र शोभन योग में त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२९६००० वर्ष की थी, इसमें भगवान् के श्रीवामन, श्रीपरशुराम और श्रीरामचन्द्र ये तीन अवतार हुए। श्री वामनजी ने राजा बलि से ३ पैर पृथ्वी दान लेकर समग्र पृथ्वी को ३ पैर में नाप बलि को पाताल का राज्य दिया। श्रीपरशुरामजी ने कर्तव्य विमुख एवं अन्यायी विलासिता के प्रेम में प्रमत्त अभिमानी क्षत्रियों का २१ बार नाश करके ब्राह्मणराज्य स्थापित किया था। श्रीरामचन्द्रजी ने महा-अभिमानी राक्षसराज रावण का वध करके देवता और ऋषियों को निर्भय किया था। इस युग में धर्म तीन पैर का रह गया था। गौवें त्रिकाल दूध देनेवाली होती थीं, प्रायः चांदी के पात्र और स्वर्ण के सिक्के का व्यवहार था, वर्षा मौके पर होती थी, एक बार बोकर सात बार काटते थे। ब्राह्मण तीन वेदों के वक्ता और किञ्चिन्न्यून तपोनिष्ठ परस्त्री-परद्रव्य से पराङ्मुख होते थे, वर शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां चित्रिणी पतिव्रता होती थीं। इस युग में सूर्यवंशी धर्मात्मा क्षत्रियोंका राज्य था। विचित्र विमानों द्वारा वह इन्द्रलोक पर्यन्त भी जाते थे। वैश्य लोग सत्यवादी और सत्य की तुला में तोलते थे। शूद्र स्वधर्मानुसार सेवा में तत्पर रहते थे। इस युग में तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था। **द्वापर**—माघ कृष्ण ३० शुक्रवार तृतीयप्रहर धनिष्ठा नक्षत्र वरीयान् योग में द्वापरयुग की उत्पत्ति हुई, इसकी आयु ८६४००० वर्ष की थी। इसमें पूर्ण ब्रह्म के श्रीकृष्ण श्रीबलदेव ये दो अवतार हुए। भगवान् श्रीकृष्णने दैत्यराज कंसादि दुष्टों का वध किया, तथा संसारार्णवमग्न जीवों के उद्धारार्थ अर्जुन को लक्ष्य करके गीता ज्ञान का उपदेश दिया। श्रीबलदेवजी ने सामयिक लीला करते हुए दुष्टों का नाश करके धर्मका उद्धार किया। इस युग में धर्म दो पैर वाला रह गया था, गौवें दो वक्त घटपूर्ण दुग्ध देनेवाली होती थीं। प्रायः ताम्र पित्तल के पात्र और स्वर्ण तथा रौप्यमयी मुद्राओं का व्यवहार होने लगा था। वर्षा समय पर हो जाती थी, एक बार अन्न का बीज बोकर ३ बार काटते थे। ब्राह्मण लोग दो वेदों के पारंगत होते थे और कुछ असत्य विशेषतया सत्यवक्ता तथा तप यज्ञ देव-पूजनादि करनेवाले किञ्चित् लोभयुक्त वाक्यसिद्धि वाले अर्थात् वर और शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां शंखिनी जाति की सुशीला धर्मयुक्ता होती थीं। इस युग में धर्मप्राण चन्द्रवंशी राजा हुए। प्रायः चारों वर्ण अपने अपने वर्णाश्रम धर्म पर कायम थे, परस्त्री-परद्रव्य से लोग डरते थे। इस युग में तीर्थ कुरुक्षेत्र प्रधान था। **कलियुग**—भाद्रपद कृष्ण १३ अर्धरात्रि के समय आश्लेषा नक्षत्र व्यतिपात योग में कलियुग की उत्पत्ति हुई थी, इसकी आयु ४३२००० वर्ष की है। इसमें भगवान के अवतार श्री ... और श्री

श्रीनारायण के मत्स्य, कच्छप, वराह और नृसिंह, ये ४ अंशावतार हुए, ...

कल्कि (निष्कलंक) हैं जिनमें अहिंसा धर्म का उद्धारक श्री बुद्धावतार तो हो चुका, और कल्कि
अवतार जब कलियुग के ८२१ वर्ष शेष रहेंगे तब शंभल ग्राम में विष्णुयश ब्राह्मण के घर
होगा। इस अवतार द्वारा दुष्टों का नाश होकर पृथ्वी पर लुप्तधर्म को स्थापना के साथ
साथ न्यायपरायण क्षत्रियराज्य भी कायम होगा। इस युग में एक पैरवाला धर्म रह जायगा।
गौएँ दूध कम देंगी मृण्मय पात्र और ताम्रपात्र तथा कागज मुद्रा प्रायः चलेगी। अतिवृष्टि
और अनावृष्टि से देशों में भय का सञ्चार होगा। ब्राह्मण लोग वेदज्ञान से शून्य तथा स्नान
सन्ध्या तपश्चर्या से भी हीन होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को तिलाञ्जलि दे देंगे। वैश्य
लोग व्यापार में असत्य व्यवहार विशेषरूप से उपयोग में लाने लगेंगे शास्त्र निन्दित
मृतचर्म (जूता आदि) के व्यापार से भी लाभ उठायेंगे, शूद्र लोग पाखण्डी होकर बहुधा
उच्चवर्णवालों के उपदेष्टा होंगे। प्रजा में वर्णसंकरत्व बढ़ जायगा, धूर्तों की पूजा होगी, अनेक
कुकर्मों की वृद्धि होगी। स्त्रियां ज्यादा हस्तिनी पैदा होंगी, व्यभिचारिणी स्त्री अपने को
सती कहेंगी। पतिव्रता कहीं-कहीं देखने में आयेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में होकर चलेंगे।
स्त्रियों के छोटी आयु में गर्भ होने लगेगा। पिता कन्या-विक्रय करेंगे। गौ ब्राह्मण की हत्या
से भय न करेंगे। पुत्रों का माता पिता के साथ द्रव्य के कारण प्रेम रहेगा। राज्यव्यवस्था में
धर्म का स्थान शून्य के बराबर होगा। धर्म-कर्म और तीर्थ पर लोगों की श्रद्धा कम होगी।
इस युग में प्रधान तीर्थ गंगा हरिद्वार होगा।

अथ कलिरूपं चोक्तं चिरन्तनैः—पिशाचवदनः क्रूरः कलिश्च कलहप्रियः। धृत्वा वाम-
करे शिश्नं दक्षे जिह्वाञ्च नृत्यति ॥ **अथ कलिमाहात्म्यम्**—धर्मः प्रव्रजितस्तपः प्रचलितं
सत्यं च दूरं गतं, पृथ्वी मन्दफला नराः कपटिनश्चित्तञ्च शाठ्योज्झितम्। राजानोऽर्थपरा
ह्यलक्षणनराः पुत्राः पितुर्द्वेषिणः साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्ते कलौ दुर्युगे॥ निर्बीजा
पृथ्वी निरौषधिरसा नीचा महत्त्वं गताः, भूपाला निजधर्मकर्मरहिता विप्राः कुमार्गं गताः।
भार्या भर्तृविरोधिनी पररता पुत्राः पितुर्द्वेषिणो, हा! कष्टं खलु वर्तते कलियुगे धन्या मृता
ये नराः॥ न देवे देवत्वं कपटपटवस्तापसजनाः, जनो मिथ्यावादी विरलतरवृष्टिर्जलधरः।
प्रसंगो नीचानां अवनिपतयो दुष्टमतयो, जनाः शिष्टा नष्टा अहह! कलिकालो विलसति॥
तदैव विष्णुस्त्यजति कलौ गंगायाः स्थितिः। पृथिवी गंगया हीना भविष्यत्यन्तिमे कलौ।
भगीरथं प्रति गंगावाक्यञ्च—यावद्धरण्यां तुलसी प्रपूज्यते गुरुर्नरस्या-
मेदिनीं नरपुंगव॥ यावत्समुद्रं वड़वानलश्च वसामि तावत्व चक्रवाते॥ इति॥ कलौ दश
दिवि कल्पपादपः। सहस्राणीति वाक्यमन्तिमकलौ, ज्ञेयम्, नान्येषु कलिष्विति॥

अथ वर्षराजादि फल विचार २०१२

अथ श्रीमन्नृपतिधर्ममूर्ति-विक्रमादित्यानां राज्यसिंहासनाध्यासनादतीताब्दानि तत्सं-
वताभिधः २०१२ श्रीमन्नृपतिचक्रचूड़ामणि—शकजातियवननिर्बीजक-शालिवाहनराज्याद्
गतहायनानि तत् शकाभिधः १८७७ श्रीकृष्णजन्म सं० ५१९१ श्री महावीरनिर्वाण (जैन)
संवत्सरः २४८१—८२ ईस्वीसन् १९५५—५६ हिजरी सन् १३७४—७५ फसली सन्
१९६० वर्षादौ गुरुमानेन प्रभवादि षष्टयब्दानां मध्ये द्वाविंशत्यां कीलक नाम संवत्सरस्तस्य-
फलम्—कीलाब्दे त्वीतिभीतिश्च प्रजाक्षोभनृपाहवौ। तथापि वर्षते लोकः समधान्यार्घ-
वृष्टिभिः॥ कीलवर्ष में ईति भीति हो, पृथ्वी में राजाओं के संग्राम से क्षोभ हो, तो भी
अच्छी वर्षा होने से धान्य सस्ता हो और लोग बढ़ें॥ जैनाचार्यों ने इसका विशेष
फल कहा है, तद्यथा—कीलके वत्सरे विष्णुः स्वामी, वर्षा मध्यमा, चैत्रे धान्यं महर्घम्,
वैशाखे रोगः, मकरे दुर्भिक्षम्, पश्चिमायां समर्घता, ज्येष्ठे धान्यसंग्रहः आषाढे श्रावणेऽ-
ल्पमेघः, अन्नं महर्घम्, धान्ये द्विगुणो लाभः, भाद्रपदेऽष्टमीतिथौ मेघः, आश्विने वर्षा, अन्नं
महर्घम्, राजधानीनगरे उद्ध्वंसः, न रोगा बहुला, गोधूमा महर्घाः, सर्वधान्यं समर्घम्, रसाः,
समर्घाः, कार्तिकादिमासत्रये समर्घता, माघमासेऽन्नमहर्घता, रोगपीड़ा महती, फाल्गुनमध्ये
राजा राज्यसुस्थः, प्रजासुखं, अथात्र वर्षे राजा शुक्रः, मन्त्री बुधः, सस्येशः शनिः। धान्येशः शुक्रः।
मेघेशो बुधः। रसेशश्चन्द्रः। नीरसेशः शनिः। फलेशो भौमः। धनेशः शनिः। दुर्गेशो बुधः।
राजा शुक्रस्तस्य फलम्—शुक्रस्य राज्ये बहुसस्यसंकुला सुतीव्रवेगाः सरितोऽम्बुराशिभिः।
फलन्ति वृक्षा बहुगोप्रसूतिर्वसुन्धरा पार्थिवसौख्यसंयुता॥ इस वर्ष का राजा शुक्र होने के
कारण खेतियां बहुत उत्पन्न हों, नदियां बड़े वेग से बहेंगी। वृक्षों में फल बहुत लगेंगे।
गायें अधिक ब्यावें, और पृथ्वी पार्थिव सुख से युक्त हो। **मन्त्री बुधस्तस्य फलम्**—शशि-
सुते शुभमन्त्रिसमागते स्वपतिना रमते मदनक्रियाम्॥ बहुधनं बहुवादिसमन्वितं यवमसूर-
चणान्नमहर्घताम्। इस वर्ष मन्त्री बुध है, अतः स्त्रियां अपने पतियों के साथ आनन्द में
रत हों। बहुत धन हो और जौ तथा मसूर, चनें, इन की मंहगाई हो। **सस्येशः शनिस्तस्य फलम्**—
रविसुते यदि धान्यपतौ जना नृपतिभिः परिपीड़ितविग्रहाः। गदभयंतुषधान्यहरं सदा दुरितवाद-
विवादयुता नराः॥ इस वर्ष सस्येश शनि होने के कारण लोग राजभय से पीड़ित रहें, तथा
रोगभय भी हो। जौ, गेहूँ, आदि की खेतियां खराब हों और मनुष्य खोटे वादविवाद में लगे
रहें। **धान्येशः शुक्रस्तस्य फलम्**—भृगौ पश्चिमधान्येशे पश्चाद्धान्यं न पच्यते। सस्यं समर्घतां याति
स्वल्पं क्षीरं गवामपि॥ इस वर्ष धान्येश शुक्र होने के कारण पश्चात् धान्य (जाड़े की खेतियां)
नहीं पकें। अन्न सस्ता हो और गायों में दूध कम हो। **मेघेशो बुधस्तस्य फलम्**—अमृतरश्मिसुते
यदि वारिपे बहुजलं तृणधान्यजलादिकम्। द्विजवरा यजनोत्सुकचेतसो विविधसौख्ययुता धरणी
धरा॥ इस वर्ष में मेघेश बुध होने के कारण जल बहुत बर्षे। जौ, गेहूँ की खेती अच्छी हो।
ब्राह्मण लोग यज्ञ करने में उत्सुक हों और पृथ्वी विविध सौख्यसंपन्न हो। **रसेशश्चन्द्रस्तस्य
फलम्**—यदि विधौ रसपे भुवि मानवो नवनवां युवतीं बुभुजे प्रियाम्। जलधरा बहुवारिवि-
धायका रसवती धनधान्यवती मही॥ इस वर्ष रसेश चन्द्रमा होने के कारण मनुष्य अपनी
सुन्दर स्त्रियों के साथ सुखलाभ करें। बादलों से बहुत पानी बर्षे और पृथ्वी रसवती तथा
धनधान्यवती हो। **नीरसेशः शनिस्तस्य फलम्**—अयःपिण्डादिलोहानां कृष्णवस्त्रादिवस्तुनाम्।
अर्घवृद्धिः प्रजायेत मन्दे नीरसनायके॥ इस वर्ष नीरसेश शनि होने के कारण पिण्डाकार लोहादि
तथा काले वस्त्रादि की कीमत बढ़े। **फलेशो भौमस्तस्य फलम्**—फलपतिर्यदि भूतनयो
भवेत्, न बहु पुष्पफलान्वितपादपाः। गदभयान्वितदेशजनास्तदा नृपतयो बहुविग्रहकारकाः॥
इस वर्ष फलेश भौम होने के कारण वृक्षों में फल फूल कम लगें। मनुष्यों में रोग भय हो तथा
राजाओं में विग्रह हो। **धनेशः शनिस्तस्य फलम्**—द्रविणपे रविजे विरलंधनं गदरता धरणी-
पतयस्तदा। अधनतां वणिजः कृषिजीविनो द्विजवराः परपीड़ितमानसाः॥ इस वर्ष धनेश
शनि होने के कारण लोगों के पास धन नहीं रहे। राजा लोग रोगी रहें। वाणिज्य करने
वाले तथा खेती करने वाले निर्धन हों और ब्राह्मण लोग पराई पीड़ा से दुःखी रहें।
दुर्गेशो बुधस्तस्य फलम्—विषमसाम्यसुखं शशिजे प्रभौ भवति राष्ट्रजनेषु विशेषताम्। शशि-
सुते यदि कोटकनायके पथिषु द्रव्यवतां न भयं क्वचित्॥ इस वर्ष दुर्गेश बुध होने के कारण
शहरी लोगों को सम विषम सुख मिले और धनवानों को रास्ते में भी कुछ भय नहीं हो।

नव मेघों में पुष्कर नाम मेघ का फल—वृष्टि अच्छी हो दक्षिण में अकालभय। **द्वादश नागों
में केवल नाम नाग का फल**—प्रजा में रोग वृद्धि खण्डवृष्टि हो। **सप्त पवनों में से
प्रवह नामक पवन का फल**—वायु का संचार सुखप्रद हो। वर्षा ऋतु में वायु के कारण

मेघ छिन्न-भिन्न होते रहें। शनि की दृष्टि पश्चिम में है फल—पश्चिमीय प्रदेशों में भय। इस वर्ष भारत में तीन ग्रहण दिखाई देंगे। जिन में पहला सूर्यग्रहण आषाढ़कृष्ण ३० को और दूसरा खण्ड ग्रास चन्द्रग्रहण कार्तिक शुक्ल १५ को तीसरा खण्डग्रास सूर्यग्रहण मार्गकृष्ण ३० को होगा। इस वर्ष सोमवती ३० तीन हैं आषाढ़ में, कार्तिक में, फाल्गुन में, बुधाष्टमी २ हैं, श्रावण कृष्ण और श्रावण शुक्ल में।

अथ वर्षादीनां विश्वामानम्—वर्षा विस्वे ११, धान्य १३, तृण ११, शीत ५, तेज ५, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ११, तृषा ११, निद्रा १३, आलस्य ९, उद्यम १३, शान्ति ११, क्रोध ११, दम्भ ११, पाखण्ड ९, लोभ ७, मैथुन ९, रसनिष्पत्ति ११, फलनिष्पत्ति ११, उत्साह ३, उग्रता ९, पाप १३, पुण्य ७, व्याधि १३, व्याधिनाश १, आचार ९, अनाचार ७, मृत्यु १५, जन्म १, देशोपद्रव १, देशस्वास्थ्य १, चौरभय ३, चौरनाश ९, अग्नि ३, अग्निशान्ति ३, टिड्डी १९, तोता १७, मूषक ३, सुवर्ण ३, ताम्र १३, स्वचक्र १३, परचक्र ३, अतिवृष्टि ११, अनावृष्टि ११, उद्भिज्ज (वृक्षलता क्षुप आदि) १३, जरायुज (मनुष्य एवं गौ आदि पशु) ३, अण्डज (पक्षी तथा सर्प आदि) ७, स्वेदज (पसीने से उत्पन्न जूं आदि) ११, संवत् विस्वा ५, **वर्षस्तम्भचतुष्टय विचारः**—इस वर्ष जल का स्तम्भ रुपये में ६ आने हैं। **फल**—वर्षा की कमी से कृषक चिन्तित रहें। तृण का स्तम्भ लगभग ८ आने हैं। **फल**—तृण की उत्पत्ति मध्यम हो। वायु और अन्न के स्तम्भ का अभाव है। **फल**—गर्मी विशेष पड़े, ठंडी सुखद वायु कम चले, देवमातृक देशों में अन्न की उत्पत्ति अत्यन्त कम हो। नहर वाले देशों में भी अन्न का झाड़ अनु-मान से कम उतरे।

आर्षमान (वर्ष रक्षा के ४ किले) पहिला आर्ष गतवर्ष पौष की अमावस मूल का लगभग १४ विस्वे हैं। दूसरा आर्ष अक्षय तृतीया रोहिणी का १० विस्वे हैं। तीसरा आर्ष पूर्णमासी को श्रवण का ११ विस्वे हैं। चौथा आर्ष कार्तिक शुक्ल १५ को कृत्तिका का १४ विस्वे के आसन्न हैं। अतः आर्षमान विचार से यह वर्ष प्रजा के लिये मध्यम ही प्रमाणित होगा।

अखैतीज रोहिणी नहीं होई। पौष अमावस मूल न जोई॥ राखीश्रवणों हीन विचारौ। कार्तिक पून्यो कृत्तिका टारो॥ मही मांह खलबली प्रकाशै। कहे भड्डली साख विनाशै॥

अथ नव वर्षप्रवेशः—गत सं० २०११ वि. चैत्र कृ. ३० गुरुवार को इष्टघट्यादि ७।८ वृष लग्न के ६ अंश पर नव वर्षप्रवेश होगा। दक्षिण पश्चिम में अकाल, पूर्व में राजविग्रह, उत्तर में अन्नादिक की उत्पत्ति आधी रहे। **वर्षेश लग्नम्**—सं० २०१२ वि. वै.कृ. ६ बुधवार को इष्टघट्यादि ५१।१६ मकर लग्न के १७ अंश पर श्रीसूर्यनारायण मेषादि राशि में प्रवेश करेंगे। यहां लग्न को अपूर्ण दृष्टि से शुभाशुभ ग्रह देख रहे हैं। और लग्नेश उच्चराशि का होकर लग्न में पड़ा है अतः यह वर्ष प्रजा को आर्थिक संकट बेकारी से कष्ट देगा। नीच जातिवालों के लिए उन्नतिप्रद रहेगा। इस वर्ष का पांचवां दसवां बारहवां मास प्रजा को चिन्ता भय के देने वाला है। **सूर्य का आर्द्राप्रवेश कालिकफलविचार**—संवत् २०१२ वि. आषाढ़ शु. ३ बुधवार को इष्टघट्यादि १५।५२ पर सिंह लग्न के २८ अंश पर श्रीसूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। **तात्कालिक ति. ३ का फल**—फसल को टिड्डी आदि का भय हो। **वार बुध का फल**—उच्च जातियों का कल्याण हो। **नक्षत्र पुष्य का फल**—जल बहुत वर्षे, पृथ्वी सब धान्यों से संयुक्त रहे। **योग व्याघात का फल**—दुर्भिक्ष, कहीं अकाल से मनुष्यों को हानि पहुंचे। **समय द्वितीय पहर का फल**—खेती को हानि पहुंचे, घास कम हो। **विशेष फल**—आर्द्राप्रवेश कुण्डली में यदि चन्द्रमा केन्द्र त्रिकोण में जलचर राशि का हो और शुभग्रह उसे देखते हों तो उस वर्ष उत्तम वर्षा होकर पृथ्वी अन्न पदार्थ से परिपूर्ण हो। इस वर्ष चन्द्रमा जलचर राशि कर्क में तो है, परन्तु वह व्यय स्थान में पड़ा है और शनैश्चर ... [illegible]

शुक्र देख रहे हैं, लग्नेश चतुर्थेश का सम्बन्ध एकादश स्थान में है, इत्यादि योगों पर सूक्ष्मदृष्ट्या विचारकरने से ज्ञात होता है। इस वर्ष अनियमित असामयिक वृष्टि के कारण बहुत जगह अन्नो-त्पत्ति में बाधा होगी।

अथ लाभव्ययचक्रम्

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
लाभ	२	११	१४	८	११	१४	११	२	५	८	८	५
व्यय	८	१४	११	११	५	११	१४	८	१४	८	८	१४

लाभव्यय देखने की रीति—लाभ और व्यय के अंकों को जोड़कर एक घटावें, और ८ का भाग दें शेष १।२।६।७ बचे तो उस वर्ष में लाभ उत्तम होवे, और शेष ३।४।५।० बचे तो लाभ बहुत कम होवे, और चिन्ता भी रहे।

वर्षलग्नम्
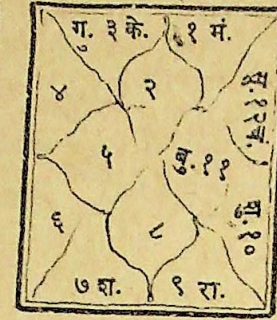
वर्षेश (जगल्लग्नम्)
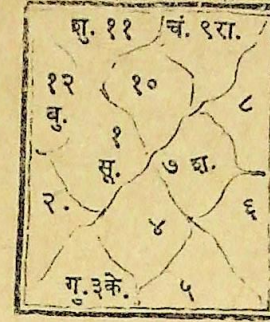
आर्द्रा प्रवेशलग्नम्
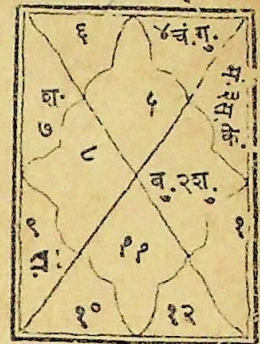
जन्मलग्न जन्मराशि और वर्षलग्न से यदि वर्षेश (जगल्लग्न) ८ वां १२ वां हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होता।

सूचना—राजा का फल काश्मीर व अफगानिस्तान में विशेष होगा, मन्त्री का वाल्हीक और मालवे में सस्येश का पौण्ड्र विदर्भ में, धान्येश का नर्मदा किनारे तथा मध्यदेश में, मेघेश का मगध देश में, रसेश का कोङ्कण मगध में, नीरसेश का मालवा देश में, फलेश धनेश और दुर्गेश का फल सब जगह विशेष होता है।

अथ व्रतोत्सवपरिचय

पञ्चाङ्गों में प्रायः सर्वत्र व्रतोत्सव पर्वों का उल्लेख रहता है, इनकी सृष्टि मनो-विनोद ही के लिए नहीं हुई है, किन्तु यह सत्कर्म के प्रवर्तक तथा जातीय इतिहास के अटल स्मारक हैं। परन्तु खेद इस बात का है कि जनता में आमोद-प्रमोद वर्धन होने पर भी अब भक्ति उत्साह कम होने लगा है।

चैत्रशुक्ल प्रतिपदा—चैत्र शु० १ को प्रातः बिस्तर से उठते समय जिसका चन्द्र (बायां) स्वर चलता हो उसे उस वर्ष में लाभ और आरोग्यादि सुख मिलते हैं। यदि सूर्य (दाहिना) स्वर चलता हो तो अशुभ अथवा साधारण वर्ष निकलता है। यदि स्वर ठीक न हो तो दाहिनी करवट लेटे रहें जब चन्द्र चलने लगे तब ईश्वरस्मरण पूर्वक उठ बैठना चाहिये, जिससे अशुभ फल कम हो। आज घर को सब प्रकार से सुसज्जित करके दरवाजों पर ध्वजा तोरणादि लगाना चाहिये, नया वर्ष ... [illegible] ... पदार्थ और श्वेत वस्त्र ... की चांदनी

होकर पृथ्वी अन्न पदार्थ से परिपूर्ण हो। इस वर्ष चन्द्रमा जलचर राशि कर्क में तो है, परन्तु वह

प्रथम जगत् की रचा है, इस दिन ब्रह्माजी का पूजन एवं वर्षेशादिकों का फल श्रवण करना चाहिए, और सर्व प्रकार से शक्ति सम्पन्न होने के लिए कलशस्थापनपूर्वक प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त श्री दुर्गाका पूजन पाठ तथा हवन करना या कराना चाहिए।

गणगौरीव्रत—चैत्र शु० ३ के दिन सौभाग्यवती स्त्रियों को श्रीमहादेव गौरी का कुंकुम अगर वस्त्रालङ्कारादि से यथाशक्ति पूजनपूर्वक रात्रि में जागरण करना चाहिए। दूसरे दिन प्रातः दक्षिणा देने से सौभाग्य और वंश वृद्धि होती है।

श्रीरामनवमी—इस दिन धर्म की मर्यादा सुदृढ़ करने के लिए भगवान श्रीरामचन्द्रजी का अवतार हुआ था, अतः इस जयन्ती को व्रत पूजन जागरणोत्सव करने का विशेष माहात्म्य है।

श्रीपरशुराम जयन्ती—वैशाख शु० ३ को कर्त्तव्यविमुख एवं विलासिता के मद में प्रमत्त क्षत्रियों के अभिमान को दूर करने के लिए भगवान श्री परशुरामजी ने अवतार लिया था, इस दिन भगवान परशुराम का पूजन तथा उत्सव मनाने का विशेष माहात्म्य है। (श्रीमदमृतवाग्भवाचार्यप्रणीतश्रीपरशुराम स्तोत्र पढ़ना चाहिये)।

गंगासप्तमी—आज पतितपावनी भगवती भागीरथी के स्नान पूजन का बड़ा पुण्य है॥

नृसिंहचतुर्दशी—"भक्ति चाहिए परमात्मा कहां नहीं है" इस सिद्धान्त को पुष्ट करने के लिये भगवान् नृसिंहजी ने इस दिन सायङ्काल के समय प्रकट होकर हिरण्यकशिपु का वध कर भक्त प्रह्लाद को अभय किया, अतः इस दिन व्रत पूजन का विशेष पुण्य है।

गंगादशहरा—इस दिन गंगादि यथा लब्ध नदियों में स्नानपूर्वक कुशसहित तिलोदक देने से मनुष्य दश पापों से निवृत्त होकर विष्णु लोक को जाता है॥

गुरुपूर्णिमा—त्रिताप से बचाकर जीव को कल्याण की ओर अग्रसर करनेवाले श्री गुरुदेव की पूजा तथा भेंट आज अवश्य करनी चाहिए॥

नागपंचमी—"समः शत्रौ च मित्रे च" का सिद्धान्त पुष्ट करने को तथा भगवान की विभूति पूजनार्थ पांच फण वाले विभूतिमान नागदेव के पूजन का विधान है, विभूति पूजा का अभिप्राय उसके शरीर की पूजा नहीं, किन्तु शरीर के द्वारा परमात्मा के अंश का जितना विकाश हुआ है उसकी पूजा है॥ **उपाकर्म श्रावणी**—विशेषकर ब्राह्मणों एवं अव्रात्य यज्ञोपवीत धारी क्षत्रिय वैश्यों को श्रावणी अवश्य ही करनी चाहिए, इसके करने से कर्ता तेजस्वी और पाप रहित होता है, यह ब्राह्मण जाति का मुख्य त्यौहार है, शोक है कि हमारे देश में बहुत से ब्राह्मण भाई भी इस काम से दूर भागते हैं।

जन्माष्टमी—भारत के विधाता तथा भारत के अन्तिमपथप्रदर्शक भगवान श्रीकृष्ण-चन्द्र का जन्म अर्ध रात्रि के समय व्रज में हुआ था, शास्त्रों में आज के व्रत पूजन एवं जागरणोत्सव का विशेष माहात्म्य लिखा है। **अनन्त चतुर्दशी**—विष्णुप्रीत्यर्थं भगवान अनन्त का धारण और षोडशोपचार से पूजन तथा कथा श्रवण करना चाहिये।

विजयादशमी—यह क्षत्रियप्रधान त्यौहार है, विजय कामना से भगवती अपराजिता का पूजन करके विजयादशमी में राजाओं को युद्धोपयोगी शस्त्र अश्वादि पूजन पूर्वक सायंकाल में मार्गपाली बांधकर विजय का शकुन मनाना चाहिए, भगवान श्री रामचन्द्रजी ने भी अपनी वानरी सेना को साथ लेकर इसी दिन प्रस्थान कर रावण के दश सिर हरण करने के लिये लंका पर चढ़ाई की थी, इसी कारण से इस दिनका नाम दशहरा पड़ा।

जिससे अशुभ फल कम हो। आज घर को सब प्रकार से सुसज्जित करके दरवाजों पर ध्वजा तोरणादि लगाना चाहिये, नया वर्ष सुख से व्यतीत हो

में अर्पण कर, लक्ष्मी तथा इन्द्र के पूजनोपरान्त जागरण भी करना चाहिए। **करक (करवा) चतुर्थी**—स्त्रियों को स्थिर सौभाग्य प्राप्त्यर्थ इस व्रत को अवश्य करना चाहिए, खेद है कि इस व्रत के विषय में वामन पुराण की शास्त्रीय कथा के स्थान में कल्पित भूत की कथा प्रचलित हो रही है वह ठीक नहीं, इस व्रत में चंद्र, शिव, स्वामी कार्तिक, गणेश, गौरी का पूजन कुंकुमादि से करना लिखा है, तदनन्तर चन्द्रोदय के समय चंद्रार्घ्य देकर व्रत का पालन करना चाहिए। यह व्रत स्त्रियोंको सच्ची अर्धाङ्गिनी बनाने का उपदेश देता है, और बतलाता है कि पति के हित में ही स्त्री का हित है, स्त्रियों को चाहिए कि लौकिक पारलौकिक कोई भी कर्म अपने उद्देश्य से न कर पति के उद्देश्य से ही करें, वैसे तो "तपःप्रधाना नार्यः" लिखा है, परन्तु सौभाग्यवती स्त्रियों को पति की आज्ञा बिना अन्य व्रत करने का विधान नहीं है (हां, आज्ञा लेकर कर सकती हैं) स्त्रियों को व्रतादिसाधनों में उतना ही लगना चाहिए जितने में उनके प्राणपति को कष्ट न हो, उक्तञ्च—पत्युराज्ञां बिना नारी उपोष्य व्रतचारिणी। आयुष्यं हरते भर्तुः सा नारी नरकं व्रजेत्॥

अहोई अष्टमी—पञ्जाब तथा बंगाल प्रान्त में इस दिन पुत्रों वाली माताएँ व्रत रख कर रात्रि को भगवती काली का पूजनार्चन करके बच्चों को पकवान भरे बर्तन दिया करती हैं।

दीपावली—यद्यपि यह वैश्य प्रधान त्यौहार है, तथापि सब वर्णों को श्री लक्ष्मीजी का पूजनार्चन दारिद्र्य निवृत्त्यर्थ प्रदोष काल में करना चाहिये। राजा बलि के जेलखाने में समस्त देवी देवताओं के साथ लक्ष्मी भी कैद थी, उनको भगवान विष्णु ने आज के दिन ही छुड़ाया था।

अन्नकूट—आज नाना प्रकार के पदार्थ बनाकर भगवान को भोग लगाने का और गौओं की सेवा का विशेष माहात्म्य है॥ **गोपाष्टमी**—आज सायंकाल गौओं को पुष्पमालाओं से अलंकृत करके मिष्टान्न देकर उत्सव मनाना चाहिए।

भीष्म पंचक—महाभारत के अन्त में शरशय्या पर लेटे हुए भीष्मपितामह ने महाराजा युधिष्ठिर को सम्बोधन कर राजधर्म १, मोक्षधर्म २, नारीधर्म ३, पुरुषधर्म ४, और वर्ण धर्म ५, आदि पर अनेक अमूल्य उपदेश किये थे, जिनकी प्रशंसा भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं की है, जो सम्पूर्ण कार्तिक स्नान न कर सकें वह भीष्मपंचक में स्नान व्रत दान से अतुल पुण्य प्राप्त कर सकते हैं।

संकटचतुर्थी—इस दिन भगवान गणेश का व्रत रखकर चन्द्रोदय समय यथालब्धोपचार भगवान गणपति का पूजन करे और तिलमोदक भुग्गों का नैवेद्य लगाकर व्रतपारण करे तो सर्व संकट दूर हों, इस दिन कथा श्रवण का विशेष माहात्म्य है॥

वसन्तपंचमी—यह कान्ति एवं पुरुषार्थप्रद ऋतुराज का प्रारम्भिक उत्सव है, अपने इष्टदेव को गुलाल आदि समर्पण कर उत्सव मनाना चाहिये।

श्रीमहाशिवरात्रि—इसी दिन प्रदोष वा अर्द्धरात्रि के समय भगवान शङ्कर के पूजन का विशेष माहात्म्य है, व्रत रख कर रात्रि को जागरण करने से शिवलोक की प्राप्ति होती है। **सूचना**—यद्यपि अधिकांश हमारे धार्मिक व्रत ऐसे हैं कि जिनमें निर्जल रहने का विधान है जैसे रामनवमी, जन्माष्टमी, शिवरात्रि आदि, परन्तु यह विधान अशक्त बाल-वृद्ध रोगी के लिए नहीं है।

ग्रहणनिर्णयः ।

ज्यौतिषे ग्रहणं सारं गारुडे विषभक्षणम् । शैवे घटवती दीक्षा कौलके ग्रहनिग्रहौ ॥

संवत् २०१२ विक्रमी में इस भूमण्डल पर तीन ग्रहण होंगे । जिन में २ सूर्य के और १ चन्द्रमा का। जिसका संक्षेप में विवरण निम्नलिखित है ।

(१) **खण्डग्रास सूर्यग्रहण**——आषाढ़ कृ. ३० चन्द्रवार (ता. २० जून सन् १९५५ ई.) को मृगशीर्ष नक्षत्र में होगा, जो सम्पूर्ण भारत में खण्डग्रास दीखेगा, और बर्मा, सिलोन, हिन्द-चीन में खग्रास (पूरा सर्वग्रास) दिखाई देगा। यह ग्रहण सोमवती को होने से स्नान दानादि द्वारा अनन्तपुण्यदायक है।

कुरुक्षेत्रे स्पर्शादिकालाः (प्रचलित घड़ी अनुसार)

काल	स्पर्श प्रातः	मध्य	मोक्ष	पर्वकाल
रेलवे घंटा	७	८	९	१
मिण्ट	३५	२०	१६	४१

कुरुक्षेत्रे ग्रहण मध्यकाले ग्रासस्वरूपम्
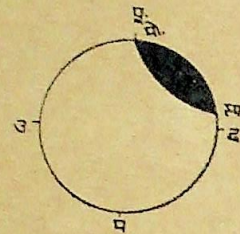
भारत व पाकिस्तान के कुछ मुख्य २ शहरों में इस ग्रहण का स्पर्शमोक्षकाल रेलवे टाईम

शहर नाम	स्पर्श प्रातः घं. मि.	मोक्ष घं. मि.	शहर नाम	स्पर्श प्रातः घं. मि.	मोक्ष घं. मि.
अमृतसर	७।४१	९।११	लाहौर	७।४१	९।१०
शिमला-(सोलन)-	७।३९	९।१५	श्रीनगर-(काश्मीर)	७।४८	९। ६
जयपुर	७।२८	९।१७	हरिद्वार	७।३५	९।२१
देहली	७।३३	९।२०	बनारस	७।२४	९।३५
पटियाला	७।३६	९।१६	मुंबई	७।१८	९।११
काठमांडू	७।३१	९।३७	कलकत्ता	७।२६	९।४९

इस ग्रहण का सूतक—यह ग्रहण आषाढ़ कृ. ३० सोमवार के प्रथम प्रहर में होने के कारण आषाढ़ कृ. १४ रविवार को सूर्यास्त में ही सूतक (वेध) का प्रारम्भ होगा। सूतक में अशक्त बालक वृद्ध रोगियों को छोड़कर भोजन का निषेध है।

ग्रहण का राशियों पर शुभाशुभ फल—यह आषाढ़ का सूर्यग्रहण मृगशिरनक्षत्र और मिथुन राशि में होगा। इसलिये मिथुन कर्क, वृश्चिक राशिवालों को और मृगशीर्ष नक्षत्रवालों को विशेष अशुभफलप्रद है। वृष सिंह तुला और मकर राशिवालों को मध्यम है। मेष कन्या धनु और कुम्भराशिवालों को शुभ है। अशुभफलवालों को दान जप करना चाहिये, इन्हें जहां तक हो सके ग्रहण न देखना ही अच्छा है।

ग्रहण का प्रभाव---ब्राह्मण क्षत्रियों को तथा यमुनातटवासियों को पीड़ा और शूद्रों को लाभादि शुभफल होवे। तिल तेल व मंजीठ लाख का भाव तेज हो।

ग्रहण का शुभाशुभफल ६ मास के अन्दर होता है।

(२) **खण्डग्रास चन्द्रग्रहण**—कार्तिक शु. १५ भौम वार (२९ नवंबर सन् १९५५ ई.) को यह ग्रहण होगा।

चन्द्रग्रहण का स्पर्शादि काल (प्रचलित घड़ी अनुसार)

काल	स्पर्श रात को	मध्य	मोक्ष रात	सर्वक्ष
रेलवे घं.	९	१०	११	१
मि.	४९	३०	११	२२

ग्रहणमध्यकाले ग्रासस्वरूपम्

इस ग्रहण का सूतक—समर्थधर्मप्राण पुरुषों को दिन के १२ बजकर ४९ मिनट से इस ग्रहण का सूतक मानना चाहिये।

ग्रहण का राशियों पर शुभाशुभ फल—यह चन्द्रग्रहण कर्क, सिंह, धनु, मीन राशिवालों को शुभफलप्रद है, और मेष, कन्या, वृश्चिक, मकर राशिवालों को तथा रोहिणी नक्षत्रवालों को चिन्ता कष्ट का देनेवाला अशुभ है।

ग्रहण का प्रभाव—यह ग्रहण स्वर्णकार, हलवाई, व्यापारी, कृषक और पर्वतवासियों को कष्टप्रद रहेगा। प्रजा में चौर अग्नि का उपद्रव तथा समुद्र में विग्रह हो।

(३) **खण्डग्रास सूर्यग्रहण**—मार्गशीर्ष कृ. ३० बुधवार (ता० १४ दिसंबर सन् १९५५ ई.) को ज्येष्ठा नक्षत्र में होगा।

कुरुक्षेत्रे स्पर्शादि कालाः (प्रचलित घड़ी अनुसार)

काल	स्पर्श दिन	मध्य	मोक्ष दिन	सर्वक्ष
रेलवे घं.	११	१२	२	३
मि.	२२	३५	३२	२३

कुरुक्षेत्रे ग्रहणमध्यकाले ग्रासस्वरूपम्

ग्रहण का राशियों पर शुभाशुभ फल—यह आषाढ़ का सूर्यग्रहण मृगशिरनक्षत्र और मिथुन राशि में होगा। इसलिये मिथुन कर्क, वृश्चिक राशिवालों को और मृगशीर्ष नक्षत्रवालों को

भारत के मुख्य शहरों में इस सूर्यग्रहण का स्पर्शमोक्षकाल,

प्रचलित घड़ी का टाईम

शहर नाम	स्पर्श दिन घं. मि.	मोक्ष दिन घं. मि.	शहर नाम	स्पर्श दिन घं. मि.	मोक्ष दिन घं. मि.
देहली	११—१९	२—२९	शिमला (सोलन)	११—२१	२—३१
अमृतसर	११—१०	२—१८	मुंबई	१०—३६	२—३८
हरिद्वार	१०—५९	२—२७	कलकत्ता	१०—५०	२—४०
पटियाला	११—२	२—२३	बनारस	११—३०	२—५४
श्रीनगर का.	११—२०	२—१३	जयपुर	१०—५९	२—३१
लाहौर	११—१२	२—१६	काठमंडू	१०—४७	२—३७

ग्रहण का सूतक—यह ग्रहण मार्गशीर्ष कृ. ३० बुधवार को मध्याह्न से पहिले होने के कारण मार्ग कृ. १४ भौमवार की रात को १० बजे से ही सूतक (वेध) का प्रारम्भ होगा।

ग्रहण का राशियों पर शुभाशुभ फल—यह ग्रहण मिथुन, कन्या, मकर, कुंभ, राशिवालों को शुभफलप्रद है। वृष, कर्क, तुला, मीन राशिवालों को मध्यम है। मेष, सिंह, वृश्चिक, धनु राशिवालों तथा ज्येष्ठा नक्षत्रवालों को शोक कष्ट देनेवाला अशुभ है।

ग्रहण का प्रभाव—यह ग्रहण मारवाड़ नेपाल और सरयू तीर वासियों को पीड़ाकारक है, और बाजरी, मोठ, चने, तांबा, वस्त्र संग्रह करनेवालों को २ मास बाद लाभ देता है।

दृश्यग्रहणे कृत्यम्—सूर्य या चन्द्रमा का कोई भी ग्रहण हो, स्पर्श होने पर स्नान करके जप करे। मध्य में समर्थ हो तो हवन अन्यथा जप ही करे। मध्य के बाद यथाशक्ति दान करे और मोक्ष के बाद पुनः शुद्ध स्नान करना चाहिये। ग्रहण में भोजन, शयन, मलमूत्र के त्याग का निषेध है। शास्त्रकारों ने ग्रहण में जप दान और हवन करने का फल अनन्त कहा है। सूर्यग्रहण में कुरुक्षेत्र का स्नान अक्षय पुण्य का लाभ देता है, कुरुक्षेत्र न मिले तो अन्य तीर्थ नदी तालाब आदि में स्नान करें।

ध्यान रहे कि चन्द्रग्रहण का समय तथा ग्रास सम्पूर्ण विश्वभर में एक ही होता है परन्तु सूर्यग्रहण का स्पर्श मोक्ष और ग्रास पृथक्-पृथक् स्थानों में पृथक् २ होता है।

सूर्यग्रहण कैसे देखना चाहिये? कांसी की थाली में जल डाल कर ग्रहण देखना चाहिये वा साफ शीशे में काजल लगाकर भी देखा जा सकता है। अन्यथा खुली आंख ग्रहण देखने से नेत्र खराब हो जाते हैं।

शनैश्चर की लघुकल्याणी बृहत्कल्याणी (ढैया साढेसाती) का विचार

जन्म का स्पष्ट चन्द्र जिस राशि के जितने अंश का होता है, उससे तीस ३० अंश पहिले शनैश्चर आने पर सूक्ष्मरीत्या साढेसाती व ढैया प्रारम्भ होती है। इतने ही अंश बाद में समाप्त होती है। केवल जन्मराशि से ढैया व साढेसाती का विचार स्थूलरूप से है।

सं० २०१२ में लघुकल्याणी (ढैया) व बृहत्कल्याणी (साढेसाती) का विचार नीचे दिया जाता है।

कार्तिक कृ. ११ तक कर्क मीन राशि वालों को और कन्या तुला वृश्चिक राशिवालों को बृहत्कल्याणी (साढेसाती) रहेगी। इसके बाद का. कृ. १२ शुक्रवार से सिंह राशिवालों को २॥ वर्ष का ढैया चांदी के पावे आवेगा, और मेषराशिवालों को भी २॥ वर्ष का ढैया लोहे के पावे आवेगा। इसी दिन तुला राशिवालों को पैरों पर उतरती, वृश्चिक राशिवालों को हृदय पर बैठती, तथा धनु राशिवालों को मस्तक पर चढ़ती साढेसाती (बृहत्कल्याणी) होगी, जो तुला राशिवालों को लोहे के, वृश्चिक राशिवालों को सुवर्ण के, धनु राशिवालों को तांबे के, पावे होगी।

जिन्हें शनैश्चर नेष्ट होवे, उन्हें शनैश्चर प्रीत्यर्थ तैल, सप्तधान्य का दान तथा महावीर जी पर शनिवार को तैल, सिन्दूर चढ़ावें तो शनिकृत पीड़ा दूर हो॥

आकाशी कौंसिल का विचार

स्वतन्त्र भारत का जन्मलग्न

ता. १५ अगस्त भृगु १९४७ इष्ट ४५—२०

विमृश्य ग्रहसद्गतिं मुनिवचः सिद्धान्तयित्वा स्फुटम्।
शास्त्रं शाकुनकं विचार्यनितरामालोच्य सत्संहिताः॥
राष्ट्रे राजसमाजधर्मविषये ह्युद्भाविनी या स्थितिः।
सा शम्भोः कृपया यथामति मया प्रागेव निर्णीयते॥

स्वतन्त्र भारत के जन्म की चलित कुण्डली

ग्रहभाव स्पष्टानुसार यहां सू. शु. श. गु. चल गये हैं।

भारतीय प्रान्तों के शुभाशुभज्ञानार्थ कूर्म चक्र

रे. अश्वि. भ. इन्द्र प्रस्थ हरिद्वार कुरुक्षेत्र	आर्द्रा. पुन. पुष्य पंजाब, गौड़, मगध, हस्तीनद	श्ले. म. पूफा. अंग, वंश, कलिंग, कौशल, बिहार, आसाम
श. पूभा. उभा. नेपाल, काश्मीर केदार खंड	कृ. रो. मृ. साकेत, मिथिला, कौशाम्बी	उफा. ह. चि. किष्किन्धा, महेन्द्र दर्दुर
उषा. श्र. ध. गुजरात, मरुस्थल सीमान्त	ज्ये. मू. पूषा. मालवा, उज्जैन सिन्धु सौराष्ट्र	स्वा. वि. अनु. कच्छ, नासिक कोङ्कण, महाराष्ट्र

सर्वतो भद्रे भविष्य

पूर्व

अ	कृ.	रो	मृ.	आ	पुन	पु.	श्ले	आ
भ.	उ	अ	व	क	ह	ड	ऊ	म
अ	ल	लृ	वृष	मिथुन	कर्क	लृ	म.	पू
रे	च	मेष	ओ	सू. मं. नंदा	औ	सिंह	ट	उ
उ.भा.	द	मीन	शुक्र रि.	शनि पूर्णा	बुध भद्रा	कन्या	प	ह
पू.भा.	स	कुंभ	अः	गुरु जया	अं	तुला	र	चि
श	ग	ऐ	मक	धन	वृ.	ए	त	स्वा
ध	ॠ	ख	ज	भ	य	न	ॠ	वि
ई	श्र	ऽभि	उ.षा.	पू.षा.	मू	ज्ये	ऽनु	इ

उत्तर — दक्षिण

पश्चिम (बृहस्पति)

यस्मिन् ऋक्षे स्थितः खेटस्तत्र वेधत्रयं भवेत् । ग्रहदृष्टिवशात्तत्र वामसम्मुखदक्षिणा ॥

यस्मिन् भागे स्थिता ये ग्रहास्तत्स्थानादि भावे दृष्टा । वेधस्थानं पीड़यन्तीह नूनं, तत्रस्था वै सत्फलं दृष्टिरिष्टाः ॥

अखिल ब्रह्माण्ड में जगत्पिता की अलौकिक शक्ति का परिज्ञान करानेवाले जो अनन्त कोटि तारे आकाशमण्डल में हमको दीखते हैं, उनमें जिन तारों (ग्रहों) का हमारी पृथ्वी से अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। उन्हीं की उच्च नीच स्थानादि स्थित एवं वक्रमार्गादि, अष्टधा गतियों के भ्रमणवशात् इस पृथ्वी के राष्ट्रों में सुभिक्ष दुर्भिक्ष कभी युद्धविग्रह वा रोग महामारी भय फूट परस्पर विद्वेष कभी शान्त कभी अशान्त वातावरण आदि अचिन्तित अकल्पित परिवर्तन सदैव हुआ करते हैं। यह बात ज्योतिःशास्त्रज्ञ भली प्रकार जानते हैं।

(ग्रहाधीनं जगत्सर्वं ग्रहाधीना नरावराः, सृष्टिरक्षणसंहाराः सर्वे चापि ग्रहानुगाः) जिस तरह इस भूमण्डल पर लोकतन्त्र राज्य का शासन करने के लिए शासनमण्डल में प्रधान मंत्री आदि कौंसिल के अधिकारियों की मत प्रदान (चुनाव) के अनन्तर तीन या पांच वर्ष के लिए नियुक्ति होती है और उन अधिकारप्राप्त व्यक्तियों की योग्यता, अयोग्यता सच्चरित्रता दुश्चरित्रता निःस्वार्थता एवं स्वार्थपरायण आदि गुणावगुणों के अनुसार जैसे शासनयन्त्र-पर अच्छा बुरा असर पड़ता है उसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में प्रतिवर्ष संसारचक्र को चलाने के लिए एक दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती आकाशीय-कौंसिल का निर्माण होता है। इस आकाशीय-कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलट फेर तथा अघटित घटनाएँ घटित होती हैं वह त्रिकालज्ञ महर्षियों के निर्मित ज्योतिर्विज्ञान के ग्रन्थों के आधार से अच्छी तरह जानी जा सकती हैं। अब हम इस वर्ष आकाशी कौंसिल का धार्मिक सामाजिक तथा राजकीय स्थिति पर जैसा भी शुभाशुभ प्रभाव पड़ेगा वह अपनी तुच्छ मति के अनुसार और प्रभुकृपावशात् जो स्फुरित हो रहा है लिख रहे हैं। इस वर्ष अकाशी कौंसिल (ग्रहपरिषद्) के राजमन्त्री आदि दशाधिकारियों तथा आर्षविचारपूर्वक । भारत एवं अन्य राष्ट्रों की राशि का आधिपत्य तथा सूक्ष्म रीत्या उस देश का [illegible]

कितने अंश में है। यह भी भली प्रकार जानकर के विश्व के राष्ट्रीयफल सहित यह आकाशी कौंन्सिल (ग्रहपरिषद्) का विचार लिखा गया है। और जहां२ वर्ष में क्रूर मन्द गति ग्रहों की युति हुई है, उनके दक्षिणोत्तर शर आदि से जो २ फल आचार्य वराह मिहिरादिकों एवं श्री जैनाचार्यों ने लिखे हैं, उनको भी यथामति स्फुट रीत्या समझ कर इसी आकाशी कौंसिल में श्रद्धापूर्वक अन्तर्हित कर दिया है। इस उपरोक्त खगोलीय कौंसिल से ज्ञात होता है कि इस वर्ष भाद्रपद या पौष के आसन्न में प्रधान मण्डल में किसी व्यक्ति का पद किसी अन्य के पास जावे या कुछ हेरफेर हो, वैशाख ज्येष्ठ में कहीं से कोई भयप्रद समाचार फैले जिससे शासक वर्ग भी चिन्तित होकर भविष्य के लिये सावधान हो जायेंगे।

स्वतन्त्र भारत के नवमवर्ष की

प्रवेश कुण्डली

इष्टघट्यादिः ४९।३२

स्वतन्त्र भारत की वर्ष कुण्डली को देखते हुए मालूम होता है कि कुछ राष्ट्र भारत को सम्मानित व आनन्दित रखने का सतत प्रयत्न करते रहेंगे। उधर अमेरिका से भी कोई महापुरुष यहां आकर परस्पर का वातावरण ठीक करने का प्रयत्न करेंगे।

राजनैतिक भारत— इस वर्ष यद्यपि भारत को कई नई समस्याओं का सामना करना पड़ेगा, फिर भी ग्रहयोग देखने से ज्ञात होता है कि यह अपनी तटस्थ नीति को अचल रक्खेगा, और अन्य देशों में उत्तरोत्तर मान वृद्धि होगी, बृटेन के साथ प्रेम मध्यम रहेगा, क्योंकि बृटेन अपनी सदा से चली आ रही आन्तरिकनिन्द्य नीति से ही भारत के साथ व्यवहार करेगा। परन्तु जब तक भारत में उपरोक्त कुण्डली वाली इस कांग्रेस की सत्ता वर्तमान है, तब तक भारतीयराष्ट्र के कर्णधार किसी भी कलुषितान्तःकरण राष्ट्र के धोखे में नहीं आवेंगे, अपना राष्ट्र स्वतन्त्र रक्खेंगे, क्योंकि कांग्रेस की जन्मकुण्डली में केन्द्रेश गुरु त्रिकोणेश चन्द्रमा का "गुरु चान्द्री" योग पड़ा है, जिसका यही फल है। इसी योग के कारण भारत की अन्तर्राष्ट्रीय गौरव वृद्धि होगी, जिसे देखकर अन्य बड़े राष्ट्रों के भाव भी [illegible]

कांग्रेस की जन्मकुण्डली

१ — ११ के. — २ — १० — १२ — शु. — ३ — बु. — ९ सू. — ८ — ४ — चं. ६ गु. — ५ — ७ — श. — रा. मं.
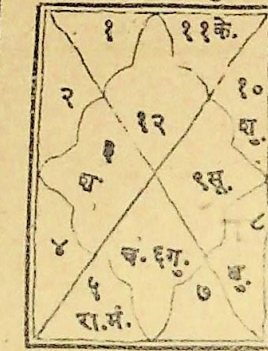
वि. सं. १९४२ पौष कृ. ७
(ता. २८–१२–१८८५)
इष्ट १२।५ (मुम्बई)

ग्रहपरिषद्) के राजमन्त्री आदि दशाधिकारियों तथा आर्यविचारपूर्वक । भारत | इष्ट १२।५ (मुम्बई) | की अन्तर्राष्ट्रीय गौरव वृद्धि होगी, जिसे देखकर अन्य बड़े राष्ट्रों
वं अन्य राष्ट्रों की राशि का आधिपत्य

आकाशी कौंसिल का भूमण्डल के राष्ट्रों पर प्रभाव
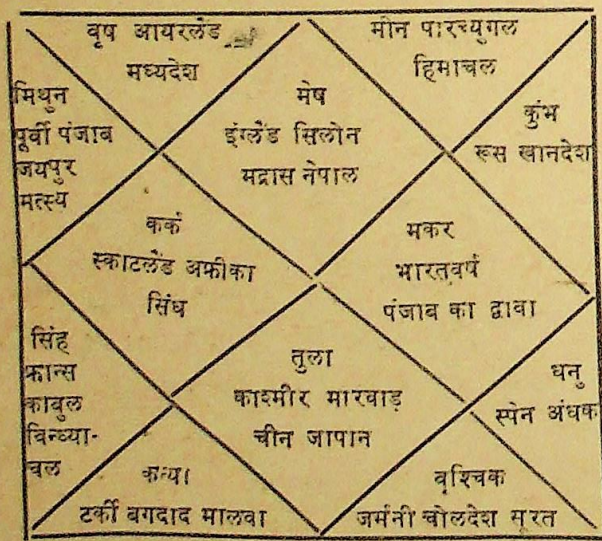
अमेरिका

इस वर्ष वृश्चिक के शनि आने पर इस देश की गतिविधि से कई देश सावधान होने लगेंगे, और कुछेक देशों से मैत्री टूटने का योग है फिर भी यह अपनी शत्रुदमन नीति पर दृढ़ता से बढ़ता चला जावेगा। मार्गशीर्ष के बाद कहीं अपनी अणुशक्ति का परीक्षण रूप में प्रयोग करे ऐसा संभव है। यहां के प्रधान को नई २ उलझनें खड़ी हों। यहां के शासक भारत की नीति से प्रभावित व शंकित रहेंगे। इस देश के कई व्यक्ति भारत में भयप्रद गुप्तचरी करेंगे ऐसा गुरु शुक्र की युति से सिद्ध है। संभव है यह कृत्य पाकिस्तान के कल्याणार्थ हो।

बृटेन

इस वर्ष यह देश अमेरिका को बाह्यरूप से प्रसन्न रखने और आन्तरिक भाव से युद्ध से पृथक् रहने की नीति अपनावेगा। यहां किसी नामवर व्यक्ति को भाद्रपद से पौषतक मृत्यु व दुर्घटना से महाभय होगा।

रूस

यहां के शासक संसार में अनेक षड्यन्त्रों द्वारा अपनी नीति की वृद्धि करते रहेंगे। धार्मिक स्वतन्त्रता और स्वोपार्जित संपत्ति के विषय में कुछ उदार नीति से नये नियम बनाने का ग्रहयोग है। वृश्चिक में शनि राहु की अंशात्मक युति के बाद इस देश में योग्य 'रूप और मजदूर वर्ग में विचित्र ढंग से दो भेद चालू होने का सूत्रपात हो जायेगा। वर्ष के प्रारंभ में कोई गृहकलह जैसी स्थिति उत्पन्न हो कर फिर शान्त हो जायेगी। युद्ध मन्त्री के पद पर किसी अन्य सहायक की आवश्यकता पड़ेगी।

जर्मनी-जापान

इस वर्ष जर्मन प्रदेश स्वतन्त्र और शस्त्रसज्जित होगा, विभक्त प्रदेश भी एक होने के लिये कटिबद्ध होगा। अन्त में कुछ संघर्ष के बाद वि. सं. २०१३ के प्रारंभ में ही एक हो कर अखंड जर्मनी बने, ऐसा भविष्य इस देश के लग्नांशाधिपत्य विचार से निश्चित होता है। जापान को इस वर्ष स्वतन्त्रता प्राप्ति का कुछ विशेष योग तो है, फिर भी पूर्ण स्वतन्त्रता सुखोपलब्धि में बाधाकारक अभी इनका भाग्येश बन रहा है।

लालचीन, नेपाल, काश्मीर, सिलोन, अफगानिस्तान, तुर्की

उपरोक्त देशों के अक्षांश के अनुसार देश भेद से ग्रहगणित करके प्रत्येक देश की वर्षप्रवेश सामयिक औदयिक कुण्डली लगा कर देखा गया तो इस वर्ष विश्व में लालचीन की प्रभाववृद्धि और सम्मानप्राप्ति के योग हैं। भारत से संबंध अच्छे रहेंगे। नेपाल के किसी प्रधान शासक का स्वास्थ्य बिगड़े और भारत से अभेद जैसा सहयोग प्राप्त हो। काश्मीर को इस वर्ष भी शत्रु-भयचिन्ता बनी रहे, परन्तु स्थिति पूर्ववत् बनी रहेगी। शत्रु कुछ न बिगाड़ सकेगा। सिलोन की आर्थिकस्थिति (गत वर्षों की अपेक्षा) अच्छी होते हुए भी लाभ प्रायः अन्यदेशीय प्राप्त करेंगे। इस वर्ष अफगानिस्तान की ग्रहस्थिति देखते हुए भारत से अच्छे संबंध बने रहने का योग है, परन्तु तुर्कीस्तान के आन्तरिक संबन्ध भारत से अच्छे नहीं रहेंगे। किसी समय अपने प्रकट शत्रु रूप में दिखाई देगा।

पाकिस्तान

इस वर्ष पाकिस्तान के किसी सत्ताधारी को मजबूरन पद छोड़ना पड़े। पाकिस्तान का भाग्येश अभी बलवान् नहीं वि. सं. २०१४ वृश्चिकान्त शनैश्चर तक देखिये क्या होता है। इसे अन्य राष्ट्रों की परस्पर टक्कर में वृथा महा जनधनहानि उठानी पड़ेगी, जिसका अनुमान लगाना बुद्धि से परे है। इस नवनिर्मित देश की सत्ता को शनि मंगल यह दोनों ग्रह दो स्थानों में विभक्त कर देंगे। पश्चात् भारी जनधन की हानि होगी। इस वर्ष के अन्त से आगामी तीन वर्षों के अन्दर स्त्री पुरुषों में किसी नये रोग की उत्पत्ति होगी, और उत्तरोत्तर वृद्धि से बलात्कार व गुप्त सतीत्वभंग की घटनाएं भी विशेष होंगी। कानूनों की अवहेलना। के साथ-साथ लीग की स्थिति भी डावांडोल हो जायेगी। इसके कुछ प्रदेशों में जल से तथा खूनखराबी से हानि होगी। भारत से शत्रुता का ही व्यवहार रहेगा।

आकाशी कौंसिल का विश्व पर प्रभाव

इस वर्ष प्रायः छोटे २ देश भी उन्नति की ओर अग्रसर हों, पूर्वीय यूरोप में खासी हलचल हो। राहु शनि भौम का संबन्ध कहीं बड़े शासकों को भय करे, कहीं प्रधान की गद्दी बदलावे, कहीं देशों की सीमाओं में हेरफेर हो। पौष से बाद विश्व में कहीं दुर्घटना या कोई आश्चर्यजनक परिवर्तन हो। शनैश्चर की

दृष्टि पश्चिम में है, सो पश्चिमी भूभाग पर विशेष अशुभफल हो। विक्रमी सं० २०१४ के बाद संसार में बड़ा ही आश्चर्यजनक परिवर्तन होगा, प्रायः सर्वत्र विश्वबन्धुत्व की भावना विशेष रूप से जागृत होगी। उस समय अखंड भारत का पुनः जन्म हो जाय तो आश्चर्य नहीं, क्योंकि ग्रहों की गति से ऐसा अव्यक्त संकेत होता है। इस भविष्यवाणी की सत्यासत्यता का निर्णय तो समय ही करेगा। आगे सर्वज्ञ प्रभु हैं।

भयरोगोपद्रव—इस वर्ष मध्यभारत, बंगाल, आसाम में अनेक व्याधियों का उपद्रव तो होगा, परन्तु मृत्युसंख्या विशेष न होगी। श्रावण के बाद पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की मृत्यु ज्यादा होगी। विश्वव्यापी युद्ध के तो अभी योग नहीं हैं फिर भी शनि, राहु मंगल की गति देखने से विदित होता है कि कहीं सैनिक मुठभेड़ तथा कहीं परस्पर लूटमार खूनखराबी साम्प्रदायिक झगड़ों से हानि अवश्य होगी। १४ ज्येष्ठ के बाद मोटर रेल्वे विमान जल जहाज विभाग में दुर्घटनाएं होने की ग्रहस्थिति है। इस वर्ष शनैश्चर अपने जन्म नक्षत्र विशाखा में भ्रमण करेगा, जो पश्चिमोत्तर में प्रजा को फोड़ाफुन्सी उदरविकार नेत्ररोग आदि से कष्ट देगा। सिंह के गुरु आने पर कोई महानुभाव स्थिर विश्वशान्ति के लिये प्रयत्न करेंगे। परन्तु उनका वह प्रयत्न सफल नहीं माना जायेगा। तृतीय महायुद्ध से पहिले सम्पूर्ण विश्व दो विभागों में अवश्य विभक्त होगा। आगामी युद्ध में राहु भौम प्रभावित आकाश मार्ग में ताश कंद कराची आदि के मध्य तात्कालिक किसी शत्रुदेशीय विमानों की भयङ्कर झङ्कार रहेगी। इस तीसरे विश्व-युद्ध से चिन्ता का कारण तो न्यूनाधिक्य रूप से सर्वत्र होगा, फिर भी भारतवासियों को विशेष चिन्तित नहीं होना चाहिये, क्योंकि इस ऋषियों के प्राचीन देश में भारतवासी आज भी धर्मपरायण होते हुए दुष्टहन्त्री श्री जगज्जननी महाशक्ति व प्रभु के आश्रित व उपासक हैं, (निर्बल के बल राम) और इससे निश्चय है कि उस समय भी भारत की बहुत अंश में रक्षा होगी।

आकाशी कौंसिल का व्यापार पर प्रभाव

वर्ष के मुख्याधिकारियों को देखते हुए यह वर्ष सुभिक्ष सस्तापन वाला दीखता है। फिर भी वैसा पूर्ण सस्तापन वि. सं. २०१४ तक असंभव है। भारत और यूरोप के बाजारों में उथल पुथल बराबर होती रहेगी, अर्थात् तेजी में मन्दी और मंदी में अचानक तेजी के योग आते रहेंगे। भारत का अन्य राष्ट्रों से व्यापारिक वस्तुओं के आदान प्रदान द्वारा पूर्ववत् व्यापार चलता रहेगा। तेल एरण्ड कालीमिर्च मीठा गतवर्ष की अपेक्षा खास तेज रहेगा, विदेशों से भी इनकी मांग आवेगी।

रसकस तेल बिनौला मूंगफली में वैशाख के बाद अचानक अचिन्तित तेजी आवेगी। वर्षारम्भ में खाद्यपदार्थ प्रायः मन्दापन में रहेंगे। आषाढ़ के बाद कुछ तेजी रहेगी। मिर्चों के सीजन में इनका भाव कुछ ऊंचा रहकर पीछे वैशाख में सीजन बाद कुछ घटेगा, उस समय खरीदने से लाभ होगा।

चान्दी सुवर्ण—२५ मई से २८ जुलाई के अन्दर चान्दी में मन्दे का वातावरण [illegible]

जा सकती है। सुवर्ण का भाव इस वर्ष करीब ७० से ९० के मध्य से चलता रहेगा। श्रावण तक सुवर्ण चान्दी के भावों में खासा हेरफेर चलेगा। वर्षारम्भ से अधिक भाद्रपद तक वस्त्रों के भाव में कुछ गिरावट रह कर पीछे रुख तेज रहे। प्र. भाद्रपद शुदी में घृत तेल मसूर तेज हों।

शेयर बाजार—चैत्र, वैशाख में शेयर बाजार तेजी में रहे, और महीनों में कुछ मन्दे या स्थिर भाव में। **विशेष**—२६ जून से २२ अगस्त तक शेयर बाजारों में भारी मन्दी आवे। २३ अगस्त से ७ सितंबर के अन्दर शेयर एकाएक तेज हो।

रुई—१८ अगस्त से ८ सितंबर तक रुई में तेजी वाले कमा लेंगे।

मार्गशीर्ष से पहिले तांबा और व तांबे की वस्तुएं संग्रह करने से आगे उत्तम लाभ हो। उपरोक्त विचार ग्रहगति से लिखे हैं, इसमें तात्कालिक शकुन वशात् कुछ न्यूनाधिक भी होना संभव है जो पत्र व्यवहार से निश्चित हो सकता है।

आश्विन से फाल्गुन तक घृत में तेजी का रुख रहेगा गतवर्ष की तरह मंदी नहीं होगी। दीपमाला से बाद चान्दी मंदी रहेगी, तेजी का ध्यान रखनेवाले प्रायः हानि में रहेंगे। फाल्गुन कृष्ण १४ से कपड़े में किसी कारणवश तेजी रहेगी।

भारत की वर्षा वायु आदि पर ग्रहों का प्रभाव

इस वर्ष मेघाडम्बर बिजली का जोर बहुत रहेगा। दक्षिण भारत में वृष्टि से हानि होगी। अन्यत्र पहिले खंड वृष्टि होती रहेगी, पीछे वृष्टि उत्तम वर्षाकाल में आषाढ़ शुदी ११ से प्र. भाद्रपद कृष्ण १४ तक मंगल गुरु एक राशि में रहेंगे। यह गुरु मंगल योग जहां जिस देश में आषाढ़ी पूर्णमासी की वायु (ठीक सूर्यास्त समय) अग्नि दक्षिण नैर्ऋत की चली होगी वहां इन दिनों वृष्टि करनेवाले मेघों को भी वायु उड़ा कर अनावृष्टि करेगी। लिखा भी है—

> एकराशिगतावेतौ धरापुत्राङ्गिरःसुतौ।
> तदा मेघा न वर्षन्ति वर्षाकाले न संशयः॥

जहां जिस प्रान्त में इस योग के कारण या और किसी भी कारण से जब भी वर्षा का अभाव हो वहां शास्त्रीय श्री महादेव पर सहस्र जलघट का अभिषेक करे और साथ ही धर्मात्मा सुशील किसी विद्वान् ब्राह्मण से नाभिमात्र जल में खड़े होकर "ॐ नमो भगवति जलदान्ते प्रत्यक्षो भव मे द्रुतम्" इस मन्त्र का १२ हजार जप करावे, ऐसे ही एक दूसरे सत्यवक्ता विद्वान् से "ह्रूं श्री ह्रूं" इस मन्त्र का सवा लक्ष जप करावे, तो अनावृष्टि दूर होकर उत्तम वर्षा होवे। स्मरण रहे कि जिन विद्वानों ने उपरोक्त मन्त्रों को पहिले विधिपूर्वक सवा लक्ष जप करके सिद्ध चलता कर लिया है, वही जप करें और नहीं, जप के अन्त में इन्हीं मन्त्रों से और मेघवाहन मन्त्रों से गुग्गुल श्वेत चन्दन अगर कनेर के फूल दाख मधु घृत तिल जौं चावल खांड मेवा से हवन करे। (देखो पृ. [illegible]

[illegible] सोने की हो तो उत्तम, चान्दी की हो तो

चान्दी सुवर्ण--२५ मई से २८ जुलाई के अन्दर चान्दी में मन्दे का वातावरण

में वर्षाकाल में चतुर्ग्रही वा पञ्चग्रही योग के कारण अतिवृष्टि होने लगे तो शान्त्यर्थ वर्षाविज्ञानसारणी पृ. २६ के लिखे प्रयोग को करें, और साथ ही "ॐ ह्रीं खसमेकतिवहुं फट् स्वाहा"। अतिवृष्टि के समय इस मन्त्र का जप करे तो वहां वर्षा अवश्य बन्द हो जावे। जापक जिस दिशा का स्मरण करे उसी तरफ वह वर्षा चली जावेगी। इस मन्त्र को भी पहिले सवा लक्ष जप हवनादि करके सिद्ध कर छोड़े तो समय पर अवश्य चमत्कार दीखे।

ग्रहयोग से तो भूमण्डल में सामूहिकरूपेण वर्षा का ज्ञान होता है। अपने स्थान में निश्चित रूप से कब वर्षा होगी। इस के लिए वर्षाविज्ञान सारणी का आश्रय लेना चाहिये। ग्रह गति देखते हुए वर्षा ऋतु के अन्त में तो वर्षा होकर कहीं भी जल की कमी न रहेगी और आग की फसल के लिये जमीन बन जावेगी, ऐसा ज्ञात होता है।

महोदयो, ये भविष्य को देख सकने वाली दृष्टि तो इस कलियुग में कठिन ही है फिर भी ज्योतिषशास्त्रदृष्ट्या और श्रीप्रभुकृपावशात् जो मुझे विश्व का शुभाशुभ फल दीख पड़ा वह मैंने अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार लिख दिया है आगे कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुंसमर्थ श्रीप्रभु ही हैं। उनकी प्रबल माया के सम्मुख मुझ जैसे अल्पज्ञ व्यक्ति क्या भविष्य लिख सकते हैं। तत्वञ्चात्रेश्वरो वेत्ति नाहं वेद्मि कदाचन।

> काले वर्षतु पर्ज्जन्यः पृथिवी शस्यशालिनी।
> देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः॥
> सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
> सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखमाप्नुयात्॥

कुराली — शुभेच्छुः—
१२-६-५४ — बघाटनरेशाश्रितो मुकुन्दवल्लभः

तेजी-मन्दी एवं सब प्राणियों का शुभाशुभ फल देखने का आर्षप्रकार।

> आषाढ्यां सर्वधान्यानि सन्ध्यायां च पृथक् पृथक्।
> तोलयेद्वर्णमानेन जलादिनापि सर्वशः॥

आषाढ़ की पूर्णमासी को संध्या के समय अनाजादि वस्तुओं को तोल २ के अलग-अलग रक्खे, फिर दूसरे दिन पूजनार्चना करके तोले जो घटे उसकी हानि जो बढ़े उसकी वृद्धि या मन्दी होवे।

> हेमी प्रधाना रजतेन मध्या तयोरलाभे खदिरेण कार्या।
> विद्धः पुमान्येन शरेण सा वा तुलाप्रमाणेन भवेद्वितस्तिः॥

अगर कनेर के फूल शुद्ध मधु घृत तिल जौं चावल खांड मेवा से हवन करे। (देखो पृ.

धान्यादि तोलने के लिये तराजू की डण्डी सोने की हो तो उत्तम, चान्दी की हो तो मध्यम, किन्तु यह नहीं मिले तो खैर के काठ या (जिस तीर से मनुष्य विधा हो, उसकी १ बालिस्त (१२ अंगुल) लम्बी बनावे।

> क्षौमं चतुःसूत्रकसंनिबद्धं षडङ्गुलं शिक्यकवस्त्रमस्याः।
> सूत्रप्रमाणञ्च दशाङ्गुलानि षडेवकक्ष्यो मयशिक्यमध्ये॥

उसके दोनों पलड़े रेशम या शण आदि के ६।६ अंगुल चौड़े और उनके चारों कोनों में १०।१० अंगुल ४ डोरियां लगावें और डण्डी को बीच में पकड़ने के लिये ६ अंगुल की डोरी डाले फिर नीचे लिखे मन्त्र से तराजू को अभिमन्त्रित करे।

तराजू का मन्त्र—

> स्तोतव्या मन्त्रयोगेन सत्या देवी सरस्वती।
> दर्शयिष्यसि यत्सत्यं सत्ये सत्यव्रता ह्यसि॥
> येन सत्येन चन्द्रार्कौ ग्रहा ज्योतिर्गणास्तथा।
> उत्तिष्ठन्तीह पूर्वेण पश्चादस्तं व्रजन्ति च॥
> यत्सत्यं सर्ववेदेषु यत्सत्यं ब्रह्मवादिषु।
> यत्सत्यं त्रिषु लोकेषु तत्सत्यमिह दृश्यताम्॥
> ब्रह्मणो दुहितासि त्वमादित्येति प्रकीर्तिता।
> काश्यपी गोत्रतश्चैव नामतो विश्रुता तुला॥

अभिमन्त्रित करने के बाद सन्ध्या के समय देवमन्दिर में जाकर पूर्वाभिमुख बैठ कर तराजू के दक्षिण बाजू के पलड़े में सोने की मोहर रक्खे अभाव में चान्दी का रुपया और उत्तर के पलड़े में दूसरी वस्तुओं को तोल २ कर जुदी २ रक्खें।

> दन्तैर्नगा गोहयाद्याश्च लोम्ना हेम्ना भूपाः शिक्थकेनद्विजाद्याः।
> तद्वद्देशा वर्षमासा दिशाश्च शेषद्रव्याण्यात्मरूपस्थितानि॥

हाथियों के लिए हाथी के दान्त, गाय घोड़ा बकरी आदि के लिये उनके केश, राजाओं के लिये सोने की तथा ब्राह्मणादि वर्णों, देशों, दिशाओं, वर्षों और महीनों आदि के लिये मोम की जुदी २ मूर्तियें कल्पना करके तोले और दूसरे जितने अन्नादि द्रव्य हैं, उनके लिये उन्हीं को रख कर तोले।

> हीनस्य नाशोऽभ्यधिकस्य वृद्धिस्तुल्येन तुल्यं तुलितं तुलायाम्।
> तोयैः कौप्यैः सैन्धवैः सारसैश्च वृष्टिर्हीना मध्यमा चोत्तमा च॥

दूसरे दिन प्रातःकाल पीछे तोलने से जो वस्तु घटे उसका नाश, जो बढ़े उसकी वृद्धि, जो न घटे और न बढ़े वह समान रहे। उसी प्रकार कुएं का पानी बढ़े तो अल्प, झरने का बढ़े तो मध्यम, और तालाब का बढ़े तो अधिक वर्षा होवे, किन्तु जो तीनों ही का पानी घटे तो अनावृष्टि होवे।

यह वस्तु तोलने की विधि परमगुप्त थी वह यहां बताई जा चुकी है,

नोट—वस्तु की कमीबेशी तुला में ज्वार के दाने डाल कर देखें।

तेजीमंदीज्ञानाथ वस्तुराशिसारिणी

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
सोना, मसूर कंबल, पस मीनाराज, गेहूं, यव	वस्त्र पुष्प सरसों, गेहूं, यव, चावल, महिष, बैल	बाजरी, रूई, कपास, कमल-कंद, गुवार, जुवार, मक्का	कोद्र, केला, दूर्वा, जायफल, तमालपत्र, दालचीनी	शाली, षट्रस, मृगछाल, गुड़, खांड	जवांसा, बटला, कुलथी मूंग सफेद गेहूं, अलसी	उड़द, लाल गेहूं, नालि, सरसों, हरड़े, मटर	गुड़खांड नागरपा, लोहमीढ़ा, शर्करा	रस, घोडाह लवण, चित्र, वस्त्र, आयुध, मूल,	कनीर, सकूट मजीठ च. जमीकंद	रस, पोस्ता रत्न, चित्र वि. वस्तु.	सीप, मोती हीरा, अतर।

श्लोक:—षट् सप्तमगो हानिं वृद्धि शुक्रः करोति शेषेषु। उपचयसंस्थाः क्रूराः शुभदाः शेषेषु हानिकराः॥१॥

उदाहरण—जिस वस्तु की तेजी व मन्दी देखनी हो, तो वस्तु की चक्र में शक्ति कौन है ऐसा पहिले देखे फिर उस राशि से कौन ग्रह किस २ स्थान में है, ऐसा देखे। यदि वस्तु की राशि से गुरु४।१०।२।११।७।९।५ राशि पर हो तो उस वस्तु की मन्दी करे और यदि १।३।६।८।१२ स्थानों में गुरु हो तो वस्तु की तेजी करता है। इसी प्रकार २।११।१०।५।८ में बुध हो तो मन्दी करें और १।३।४।६।७।९।१२ इन स्थानों में बुध होवे, तो तेजी करे। शुक्र ६।७ में सदा तेजी करे और १।२।३।४।५।८।९।१०।११।१२ में शुक्र सदा मन्दी करे। मं., श., रा., के., सू., क्षीणचन्द्र ये ग्रह ३।६।१०।११ में मन्दी करें और १।२।४।५।७।८।९ स्थानों पर तेजी करें। ऐसे पूर्ण चन्द्रमा का फल बृहस्पति सदृश देखना। ऐसे नवम ग्रह से देख कर फल की दो पंक्ति स्थापित करनी। जिन ग्रहों में ज्यादा बल होवे, और तेजी, मंदी तर्फ अधिक ग्रह होवें, वही फल विशेष होता है। यह निःसन्देह है फिर ग्रहों का उच्चमूल त्रिकोणी स्वगृहादि यथावत् बल को निर्धारित करना। जैसे कि एक तरफ मन्दी करने वाले चार ग्रह हैं और मंगल अपनी उच्च राशि मकर में गया है, तो जैसा मंगल का फल विशेष होगा, वैसा उन चार का नहीं होगा।

श्री मार्तण्ड पञ्चाङ्ग की भविष्यवाणियों की सत्यता

श्री मार्तण्ड पञ्चाङ्ग के गणितश्रम (दैनिकग्रह तथा १०।१० घटी के चन्द्र स्पष्ट आदि) की शुद्धता एवं व्यापारिक-राजनैतिक तथा दैशिक भविष्यवाणियों की सत्यता से प्रसन्न होकर विद्वज्जनों तथा अनेकों व्यापारियों ने प्रशंसा-पत्र भेजे हैं, मैं उनका हृदय से धन्यवाद करता हूं।

गत सं० २०११ वर्ष के इस पञ्चाङ्ग की भविष्य-वाणियों की सत्यता का कुछेक दिग्दर्शन देखिये——

(१) अमेरिका के सैनिक पाकिस्तान में—

"पूर्वीय प्रदेश में इनके सैनिकों का पदार्पण होगा" (पृ. ३९ कालम पहला) तदनुसार इस वर्ष इनके सैनिकों का पाकिस्तान में पदार्पण हुआ।

(२) भारत में कहीं जल प्रलय कहीं सूखा—

"वर्षा के लिये यह वर्ष बड़ा बेढंगा है। भौम गति वशात् कहीं तो अतिवृष्टि से नदी नाले भरपूर ग्राम जलमग्न दिखाई देंगे और जलप्रलय (बाढ़) से जनधन पशुओं की बहुत हानि होगी। जिससे त्राहि-त्राहि मचेगी। सरकार को सहायता के लिये बहुत खर्च करना पड़ेगा। और कहीं दूसरी तरफ क्षुद्र नदी नाले तालाबों में पानी का अभाव दिखाई देगा। बड़े दरियाओं का जल भी अपने स्तर से बहुत कम होगा॥"

(पृ. ४०—कालम दूसरा) तदनुसार एक ओर बिहार बंगाल आसाम में नदियों की भीषण बाढ़ से हाहाकार मचा, जिससे इन तीनों प्रदेशों के असंख्य व्यक्तियों के अन्न-वस्त्र निवास की चिन्ता सरकार को भी हुई, दूसरी और उड़ीसा में वृष्टि के अभाव से धूल उड़ी, और पूर्वीय पंजाब के कई जिलों में खेतियां आधी सूख गईं। इस पञ्चाङ्ग के लेखानुसार जलप्रलय वाले प्रदेशों में सरकार को करोड़ों रुपये की सहायता करनी पड़ी।

(४) पञ्जाब के प्रसिद्ध नेता डा० सत्यपाल की मृत्यु—

"ति. २ से ३१ दिन के अन्दर किसी श्रेष्ठमान्य पुरुष की मृत्यु वा मृत्यु तुल्य कष्ट होवे" (पृ. ४२) तदनुसार इन्हीं दिनों में नई राजधानी चण्डीगढ़ में डा० सत्यपाल की मृत्यु हुई।

इसी तरह अन्य दैशिक तथा राजनैतिक भविष्य एवं वार्षिक व मासिक तेजी मन्दी आदि की भविष्यवाणियाँ भी ९५ फी सदी सही उतर रही हैं, आशा है कि भविष्य में भी श्री प्रभुकृपा से सत्य ही उतरेंगी॥

दी नाले भरपूर ग्राम जलमग्न दिखाई देंगे और जलप्रलय (बाढ़) से जनधन पशुओं को

संवत् २०१२ शाकः १८७७ चैत्र शुक्लपक्षः १

सारसूर्यस्पष्टः (२५ मार्च से ७ अप्रैल तक १९५५ ई०) उत्तरा[...] बसन्ततु:।

ग्रहदर्शन—मं. सूर्यास्त बाद पश्चिम क्षितिज में, गुरु खमध्य में दीखेगा। शनि पूर्वरात्रि में पूर्व में बु. शु. सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेंगे।

दि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. क्रां	अ.	मु. मावा	चन्द्रः सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. रेल्वे		सारसूर्यस्पष्टः उदयकाले				
३०	२३	१	शु.	३	१	रे.	३५	८	ब्र.	४ ५७	३२ ४२	ब.	३	१	१२	२५	२९	मे. ३५।१८	६	२७	६	३५	११	१०	२७	४०	चन्द्रदर्शनम्, चान्द्रसंवत्सरारम्भः, नवरात्रा., घटस्थाप., वर्षफलश्र.,* *निम्बपत्रभक्ष., पञ्चकान्त. ३५।१८
अवम		२	शु.	५५	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	
३०	२८	३	श.	५२	४१	अ.	३१	४२	वै.	५०	२४	तै.	२५	२३	१३	२६	१	मेषे	६	२५	६	३७	११	११	२७	६	गणगौरी३ पू., मत्स्यज., सावन मु. ८,
३०	३२	४	र.	४६	५१	भ.	२७	५१	वि.	४२	४६	व.	१९	४६	१४	२७	२	वृ. ४१।४७	६	२३	६	३७	११	१२	२६	२८	भ.१९।४६उ.४६।५१या.कृत्ति.भौमः ४।४२,पू.भा.यां बुधः २५।५८
३०	३७	५	चं.	४०	५२	कृ.	२३	४४	प्री.	३५	२	ब.	१३	५१	१५	२८	३	वृषे	६	२२	६	३८	११	१३	२५	४६	‡श्रीमनसादेवी
३०	४२	६	मं.	३४	५४	रो.	१९	३४	आ.	२७	१६	कौ.	७	५३	१६	२९	४	मि. ४७।३४	६	२१	६	३९	११	१४	२५	२	मेलामाईसरखाना
३०	४६	७	बु.	२९	११	मृ.	१५	३५	सौ.	१९	४०	ग.	२	२	१७	३०	५	मिथुने	६	२०	६	४०	११	१५	२४	१६	भ. २९।११ उ. ५६।३० या., शत. शुक्रः २०।११
३०	५०	८	गु.	२३	५०	आ.	११	५८	शो.	१२	२२	ब.	२३	५०	१८	३१	६	क. ५४।४२	६	१८	६	४०	११	१६	२३	२९	रेवत्यां रविः १६।४५, वृषे भौमः ५५।५५, श्रीदुर्गा ८ मेला‡
३०	५४	९	शु.	१९	७	पुन.	८	५७	अ.	५९	३५ २४	कौ.	१९	७	१९	अ१	७	कर्के	६	१७	६	४१	११	१७	२२	४०	श्रीरामनवमीव्र., अप्रैल ४ ता० ३०
३०	५८	१०	श.	१५	१४	पु.	६	४६	धृ.	५३	५८	ग.	१५	१४	२०	२	८	कर्के	६	१६	६	४१	११	१८	२१	५०	भ. ४३।४५ उ. मीने बुधः ४४।५३
३१	३	११	र.	१२	१७	श्ले.	५	२४	शू.	४९	२३	वि.	१२	१७	२१	३	९	सि. ५।२४	६	१५	६	४१	११	१९	२०	५७	भ. १२।१७ या. कामदा ११ व्र.
३१	७	१२	चं.	१०	२४	म.	५	५	ग.	४५	४६	बा.	१०	२४	२२	४	१०	सिंहे	६	१४	६	४२	११	२०	२०	२	उ. भा यां बुधः ४३।१ प्रदोषव्र.
३१	१२	१३	मं.	९	४५	पू.फा.	६	००	वृ.	४३	९	तै.	९	४५	२३	५	११	कं. २१।३२	६	१३	६	४३	११	२१	१९	५	श्रीजैनमहावीरजयन्ती
३१	१६	१४	बु.	१०	२३	उ.फा.	८	८	ध्रु.	४१	३२	व.	१०	२३	२४	६	१२	कन्यायाम्	६	१२	६	४३	११	२२	१८	४	भ.१०।२३ उ. ४१।२४ या. सत्यव्रतम्
३१	२०	१५	गु.	१२	२५	ह.	११	३६	व्या	४०	५४	ब.	१२	२५	२५	७	१३	तु. ४५।१३	६	१०	६	४३	११	२३	१६	५९	वै. स्ना. प्रा.

चैत्रशुक्ल ८ गुराविष्टम् ०।० दिनगण: ३६०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	०	१०	२	१०	६	८	२
१६	२९	२५	२६	७	२७	७	७
२३	२१	३२	५७	२७	१६	२८	२८
२९	३०	१६	४७	७	१४	१३	१३
५९	४१	९५	२	३१	२	३	३
१३	७	१२	३०	००	४६	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा ४	कृ. १	प.भा २	पुन ३	श. १	वि. ३	मू. ३	आ. १

१ मं. ११ बु. १२ सू. २ १० ३ १ रा. चं.के. ४ गु. ८ ५ ७ श.

इस पक्ष मे गुड़, खांड, शक्कर, अनाज के भाव में तेजी रहेगी। रेशम, कुष्टा, बिनौला मन्दा हो। रुई में १५–२० टका खांड, गुड़, में ८ आने से १ रुपया तक और चान्दी में २–२॥ की तेजी हो। ति. ८ से गेहूँ, वस्त्र, सुवर्ण, चन्दन के भाव में अच्छी तेजी आवे। ति. ११ से रुई, चान्दी, गेहूँ के भाव में मन्दापन और बिनौला तेज।

आकाशलक्षण—इस पक्ष में प्रायः बादल चाल रहे। ति. ५ से ९ तक तथा ति. १४–१५ को वायु, बादलचाल, कहीं बन्दाबादी भी हो।

चैत्रशुक्ल १५ गुराविष्टम् ०।० दिनगण: ३६७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१	११	२	१०	६	८	२
२३	४	७	२७	१५	२६	७	७
१६	७	१८	२०	४५	५४	५	५
५९	४०	३६	५३	१५	४४	५९	५९
५८	४०	१०५	३	७१	३	३	३
५५	४४	२८	५४	१६	२०	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रे. २	कृ. ३	उ.भा २	पुन ३	श. ३	वि. ३	मू. ३	आ. १

श. वि०—यदि द्वितीया को चन्द्र श्यामरंग बादलों से ढका हुआ हो और अस्त समय फिर दृष्टिगोचर हो जाए तो घृतादि वस्तु की कीमत बढ़े। चैत्र शुदि जो पंचमी दक्षिण पूर्व वाय, वर्षा भी होवे कुछ भादो तेज बिकाय। चैत्र शुदि जो त्रयोदशी धूल उड़े दरम्यान, आगे वर्षा हो नहीं ऐसा लो तुम जान।

संवत् २०१२ शा.शकः १८७७ वैशाखकृष्णपक्षः २

दि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. तारीख	अं. अंग्रेजी	मु. मुसलमानी	चंद्रः संचारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		सौरसूर्यस्पष्टः उदय काले			
३१	२४	१	शु	१५	३०	चि.	१६	१०	ह.	४१	९	कौ.	१५	३०	२६	८	१४	तुलायाम्	६	९	६	४४	११	२४	१५	५३
३१	२८	२	श.	१९	४१	स्वा.	२१	४४	व.	४२	३	ग.	१९	४१	२७	९	१५	तुलायाभ्	६	८	६	४४	११	२५	१४	४६
३१	३२	३	र.	२४	३३	वि.	२७	५७	सि.	४३	२७	वि	२४	३३	२८	१०	१६	वृ. ११।२४	६	६	६	४४	११	२६	१३	३६
३१	३६	४	चं.	२९	५०	अनु.	३४	३१	व्य.	४५	३	बा.	२९	५०	२९	११	१७	वृश्चिके	६	५	६	४५	११	२७	१२	२३
३१	४१	५	मं.	३४	४२	ज्ये.	४१	००	व.	४६	३०	कौ.	२	१९	३०	१२	१८	ध. ४१।००	६	४	६	४६	११	२८	११	८
३१	४५	६	बु.	३९	२८	मू.	४६	५९	प.	४७	१९	ग.	७	८	वै १	१३	१९	धनुषि	६	३	६	४७	११	२९	९	५१
३१	५०	७	गु.	४३	२०	पू.षा	५२	१४	शि.	४७	४२	वि.	११	२४	२	१४	२०	धनुषि	६	१	६	४७	०	०	८	३३
३१	५५	८	शु.	४६	२	उषा.	५६	१७	सि.	४७	१५	बा.	१४	४१	३	१५	२१	म. ८।१५	६	१	६	४८	०	१	७	१४
३२	००	९	श.	४७	३८	श्र.	५९	१२	सा.	४५	५४	तै.	१६	५०	४	१६	२२	मकरे	६	००	६	४९	०	२	५	५३
३२	४	१०	र.	४७	५५	ध.	६०	००	शु.	४३	३१	व.	१७	४६	५	१७	२३	कुं. ३०।१	५	५९	६	५०	०	३	४	२८
३२	९	११	चं.	४६	५३	ध.	००	५१	शु.	४०	८	ब.	१७	२४	६	१८	२४	कुम्भे	५	५७	६	५०	०	४	३	००
३२	१४	१२	मं.	४४	३८	श	१	१६	ब्र.	३५	४५	कौ.	१५	४५	७	१९	२५	मी. ४५।४२	५	५६	६	५१	०	५	१	३१
३२	१९	१३	बु.	४१	२१	पूभा.	० ५८	३१ १५	ऐं.	३०	३३	ग.	१२	५९	८	२०	२६	मीने	५	५५	६	५२	०	६	०	१
३२	२४	१४	गु.	३७	११	.	५६	९	वै.	२४	३५	वि.	९	१६	९	२१	२७	मे. ५६।९	५	५४	६	५३	०	६	५८	२८
३२	२८	३०	शु	३२	१०	अ.	५२	५२	वि.	१७	५९	च.	४	४०	१०	२२	२८	मेषे	५	५३	६	५४	०	७	५६	५२

(८ अप्रैल से २२ अप्रैल तक १९५५ ईस्वी) उत्तरायणगोलो वसन्तर्तुः।

ग्रहदर्शन—म. सू.अ.प. क्षितिज में, गुरु खमध्य से प. की ओर आता दीखेगा। बु.ति. ३ को अस्त होगा। शु. अर्धरात्रिबाद और श. सायं पू.क्षि. में दीखेगा।

म., ५२।७ उ.
भ. २४।३३ या., पू. भा. शुक्रः ३४।११, पूर्वास्तो बुधः ३१।०
व. वि. २ शनिः ११।१४
रेव. बुधः ७।७
भ. ३९।२८ उ.अश्वि.सं.मेषेऽर्कः ५१।१६ मु.३०, पुण्यं परदिने घ.*
भ. ११।२४ या. *७।१६ या. वै मेला. रोपड़।
रोहि. भौमः ४१।२६, मू. २ राहुः मृ.४ केतुः १०।४१
श्र. ।ऽ।।।ऽ।ऽ।। ल. ११ †१०,१२
भ.१७।४६ उ.४७।५५ या. पञ्चकप्रा.३०।१, ध.ऽरा.।।।।।।ऽ।। ल.†
मेषेऽश्वि.बुधः५२।१२, मीनेशुक्रः५७।११वरूथिनी११व्रतं स्मार्तानाम्।
निम्बार्काणां ११ व्रतम् ‡अगस्त्योऽस्तः ४।१८
भ.४१।२१उ., प्रदोषव्रतम्, साः वृषे. भानुः ७।१२, ग्रीष्मर्तु प्रा. ‡
भ. ९।१६ या., उ. भा. शुक्रः ४४।३१; पञ्चक स. ५६।९

वैशाख कृष्ण ८ शुक्र इष्टम् ०।० दिनगणः ३७५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
००	१	११	२	१०	६	८	२
१	९	२२	२७	२५	२६	६	६
७	३२	१२	५८	१६	२५	४०	४०
१४	४	५०	२६	५२	५१	३४	३४
५८	४०	वक्री	५	७१	३	३	३
४१	२८	५९	१२	३४	४७	११	११
सौम्य	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अ.	कृ.	रे.	पु.	कृ.	वि.	मृ.	आ.
१	४	२	३	२	३	३	१

इस पक्ष में रुई के भाव में घटा-बढ़ी बहुत हो। सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे। गेहूँ, चावल, अलसी आदि में भी तेजी हो। ति. १२ से रुई, खांड मन्दी और सुवर्ण, चौपाये तेज हों। तिल तेल में मन्दी, चान्दी करीब २ टका मन्दी होकर फिर खासी तेज होवे। बिनौला मन्दा। योरुपीय प्रदेशों में कहीं कलह युद्ध जैसी स्थिति हो।

आकाश लक्षण—ति. १ से ६ तक कहीं२ हल्की बून्दाबान्दी का योग है। ति. ११-१२ को आंधी से कहीं वृक्षों को हानि पहुँचे।

वैशाखकृष्ण ३० शुक्र इष्टम् ०।० दिनगणः ३८२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
००	१	००	२	११	६	८	२
७	१४	६	२८	३	२५	६	६
५६	१४	३२	३९	३८	५८	१८	१८
५२	३५	१४	५	३१	५	१९	१९
५८	४०	वक्री	६	७१	४	३	३
२४	१६	१७	२५	४५	६	११	११
सौम्य	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अ.	रो.	अ.	पु.	कृ.	वि.	मृ.	मृ.
३	२	२	३	१	२	१	४

शकुन वि.—वैशाखवदी आठ दिना बिजली गर्जन होय।

वैशाख वदी ... मेघ जो आगे।

(२३ अप्रैल से ६ मई तक १९५५ ई.) उत्तरायणगोलो ग्रीष्मर्तुः।

संवत् २०१२ शाकः १८७७ वैशाख-शुक्लपक्षः ३ — (२३ अप्रल से ६ मई तक १९५५ ई.) उत्तरायणगोलो ग्रीष्मर्त्तुः।

दि. मा.		ति.	वा.	घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		हि. कैला.	अं. ग्रे.	मु. रमजा.	चन्द्रः सञ्चार.	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		सौर सूर्यस्पष्टा. उदयकाले			
३२	३१	१	श.	२६	४१	म.	४९	६	प्री.	१०	५१	ब.	२६	४१	११	२३	२९	मेषे	५	५२	६	५४	०	८	५५	१४
३२	३५	२	र.	२०	४७	कृ.	४५	२	आ.	३ / ५५	२२ / ४२	कौ.	२०	४७	१२	२४	१	वृषे ३।५	५	५१	६	५४	०	९	५३	३५
३२	३९	३	च.	१४	४३	रो.	४०	५१	सौ.	४८	२	ग.	१४	४३	१३	२५	२	वृषे	५	५०	६	५५	०	१०	५१	५३
३२	४२	४	मं.	८	४०	मृ.	३६	४९	अ.	४०	२६	वि.	८	४०	१४	२६	३	मि. ८।५०	५	४९	६	५६	०	११	५०	९
३२	४६	५	बु.	२	५२	आ.	३३	८	सु.	३३	९	बा.	२	५२	१५	२७	४	मिथुने	५	४८	६	५६	०	१२	४८	२१
क्षय		६	बु.	५४	३३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३२	५०	७	गु.	५२	३७	पुन.	२९	५८	धृ.	२६	१८	ग.	२५	१	१६	२८	५	क.१५।४५	५	४७	६	५६	०	१३	४६	३१
३२	५३	८	शु.	४८	३५	पु.	२७	३४	शू.	२०	३	वि.	२०	३६	१७	२९	६	कर्के	५	४६	६	५७	०	१४	४४	४०
३२	५७	९	श.	४५	३३	श्ले.	२५	५८	गं.	१४	२९	बा.	१७	४	१८	३०	७	सि२५।५८	५	४५	६	५८	०	१५	४२	४८
३३	१	१०	र.	४३	३४	म.	२५	२५	वृ.	९	४४	तै.	१४	३३	१९	१म	८	सिंहे	५	४५	६	५८	०	१६	४०	५४
३३	४	११	च.	४२	४९	पू.फा.	२६	५	ध्रु.	५	५४	ब.	१३	११	२०	२	९	क.४१।३४	५	४४	६	५९	०	१७	३८	५७
३३	८	१२	मं.	४३	१७	उ.फा.	२७	५९	व्या.	३	५	ब.	१३	३	२१	३	१०	कन्यायाम्	५	४३	७	०	०	१८	३६	५९
३३	१२	१३	बु.	४५	१५	ह.	३१	९	ह.	१	१६	कौ.	१४	१६	२२	४	११	कन्यायाम्	५	४२	७	०	०	१९	३४	५८
३३	१५	१४	गु.	४८	११	चि.	३५	२८	व.	०	२६	ग.	१६	४३	२३	५	१२	तु. ३।१८	५	४२	७	१	०	२०	३२	५५
३३	[illegible]	१५	शु.	५२	१६	स्वा.	४०	४८	सि.	०	३०	वि.	२०	१३	२४	६	१३	तुलायाम्	५	४१	७	२	०	२१	३०	४९

ग्रहदर्शन—मं.—सू.अ.बाद प.क्षि. मे दीखेगा। बाद बु.ति.१३ को प. मे उ.होगा, गु.साय खमध्य से प. की ओर आता एवं शु.सू.उ.से पहिले θ

चन्द्र दर्शनम् θपूर्व क्षि. मे दीखेगा, श. सू.अ. बाद पू.क्षि.में दीखेगा।
रमजान मु. ९ परशुराम जयन्ती ३ (रात्रौ प्रथमयामव्यापिनीत्वात्)
भ. ४१।४१ उ., भरि. बुधः १०।५३, अक्षया ३, त्रेतायुगादि कल्पादि
भ. ८।४० या. §§१२ मकरे गु. शु. दा. मीने. चं. दा.
भरण्यां रविः ३२।३४
*उ.फा. ऽगु. ।।।।ऽ।।। ल. १०, १२ मकरे शु. दा. मीने चं. दा.।
भ. ५२।३७ उ., श्रीगङ्गाजन्म ७
भ. २०।३६ या.
†जलकुम्भदानम्।
क्रान्ति. बुधः २३।१३. मई ५ ता. ३१
भ. १३।११ उ. ४२।४९ या., रेव. शुक्रः ५२।१७ नाहिना ११ व्रतम्*
वृषेबुधः ०।४६, पुन. ४ कर्के गुरुः १८।५१ ‡ दि.ल.४
पश्चिमोदयी बुधः ३२।४, प्रदोषव्रतम्, चि. ।।।।ऽशुऽअ.ऽ।।। ल. १०,§§
भ. ४८।११ उ.मृग.भौमः ३६।१५. नृसिंहजयन्ती चि.।।।।ऽशु.ऽअ.।।।।‡
भ. २०।१३ या. कूर्मजयन्ती वैशा. स्ना. स., सत्यव्रतम्. यमाय†

वैशाखशुक्ल ८ शुक्र इष्टम् ०।० दिनगणः ३८९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
००	१	००	२	११	६	८	२
१४	१८	२१	२९	१२	२५	५	५
४४	५५	३७	२७	१	२८	५६	५६
४०	४८	३५	९	२८	११	४	४
५८	४०	[illegible]	७	७१	४	३	३
९	८	२८	१८	५४	२०	११	११
क्रां.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भ. १	रो. ३	भ. ३	[illegible] ३	[illegible] ३	चि. २	मृ. २	मृ. ४

इस पक्ष में कहीं दक्षिण के प्रदेशों में उत्पात हो राज्य भय। अनाज, गुड़, खांड, अलसी, रूई, खल, तिल, तेल, तेज। गवारा मटर के भाव में घटावढ़ी होकर रुख तेज हो। यहां से रुई का भाव भी चमकेगा, एक ही मास के अन्दर खासी तेजी हो। ति. ६ से अलसी मन्दी, चान्दी सोना आदि धातुओं में तेजी। हल्दी, घी, चना, मिर्च, चावल, मोठ, जौ में भी तेजी आवे। ति. १२ से सट्टे की वस्तुओं में बहुत घटावढ़ी होगी। जो वस्तु पहिले तेजी पर हो वह मन्दी, और जो मन्दी पर होगी वह तेज होगी। बिनौला सरसों आदि भी तेज।

आकाश लक्षण—ति. ३-४ तथा ११ से १५ तक उत्तर भारत में कहीं २ बून्दाबान्दी का योग पाया जाता है।

वैशाख शुक्ल १५ शुक्र इष्टम् ०।० दिनगणः ३९६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
००	१	१	३	११	६	८	२
२१	२३	५	००	२०	२४	५	५
३०	३५	५७	२१	२५	५७	३३	३३
४९	४५	२५	३४	२२	१५	५०	५०
५७	३९	[illegible]	८	७२	४	३	३
५४	५३	३८	८	३	२९	११	११
क्रां.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भ. ३	मृ. १	कृ. ३	[illegible] ४	रे. २	चि. २	मृ. २	मृ. ४

श. वि.—वैशाख सुदी सातदिना बाजे पूर्वबाय।
बादल हो बिजली दिखे और बूंद पड़ जाय।

धान्य इकट्ठे तुम करो सुन लो ध्यान लगाय।
भादों मास में लाभ हो इसमें संशय नाय।

शुक्लपक्ष वैशाख की तिथि दशमी दिन देख,
बादल हो श्रावण विषे जल नहिं पड़े विशेष

दि.मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हि. केशा.	अं.	मु.	चन्द्रः सञ्चारः	सू.उ. रेल्वे	सू.अ. रेल्वे	सौर सूर्यस्पष्टः उदयकाले
संवत् २०१२ शाकः १८७७ ज्येष्ठ कृष्णपक्षः ४																
३३ २३	१	श.	५६ ५८	वि.	४६ ५४	व्य.	१ २०	बा.	२४ ३७	२५	७	१४	वृ.३०।२२	५ ४०	७ २	० २२ २८ ४३
३३ २७	२	र.	६० ००	अनु.	५३ २८	व.	२ ३९	तै.	२९ ३५	२६	८	१५	वृश्चिके	५ ३९	७ ३	० २३ २६ ३६
३३ ३०	२	च.	२ १२	ज्ये.	५९ ५९	प.	४ १६	ग.	२ १२	२७	९	१६	ध.५९।५९	५ ३८	७ ३	० २४ २४ २८
३३ ३४	३	मं.	७ १८	मू.	६० ००	शि.	५ ५०	वि.	७ १८	२८	१०	१७	धनुषि	५ ३७	७ ४	० २५ २२ १८
३३ ३८	४	बु.	११ ५३	मू.	६ ८	सि.	७ ३	बा.	११ ५३	२९	११	१८	धनुषि	५ ३६	७ ५	० २६ २० ७
३३ ४१	५	गु.	१५ ४४	पू.षा.	११ ३१	सा.	७ ४२	तै.	१५ ४४	३०	१२	१९	म.२७।३५	५ ३६	७ ५	० २७ १७ ५३
३३ ४५	६	शु.	१८ २१	उ.षा.	१५ ४८	शु.	७ २८	व.	१८ २१	३१	१३	२०	मकरे	५ ३५	७ ६	० २८ १५ ३६
३३ ४९	७	श.	१९ ५४	अ.	१९ १	शु.	६ २४	ब.	१९ ५४	१	१४	२१	कु ४९।५८	५ ३४	७ ७	० २९ १३ १७
३३ ५२	८	र.	२० ६	ध.	२० ५६	ब्र.	४ १८	कौ.	२० ६	२	१५	२२	कुम्भे	५ ३४	७ ८	१ ० १० ५७
३३ ५६	९	च.	१९ ००	श.	२१ ३५	ऐ.	५७ ११	ग.	१९ ००	३	१६	२३	कुम्भे	५ ३३	७ ८	१ १ ८ ३६
३४ ००	१०	मं.	१६ ४२	पू.भा.	२१ ४	वि.	५२ ५	वि.	१६ ४२	४	१७	२४	मी. ६।१२	५ ३२	७ ९	१ २ ६ १३
३४ ३	११	बु.	१३ २२	उ.भा.	१९ ३०	प्री.	४६ १९	बा.	१३ २२	५	१८	२५	मीने	५ ३१	७ १०	१ ३ ३ ४८
३४ ७	१२	गु.	९ ७	रे.	१७ ५	आ.	३९ ५४	तै.	९ ७	६	१९	२६	मे.१७।५	५ ३१	७ १०	१ ४ १ २०
३४ ११	१३	शु.	४ २	अ.	१३ ५५	सौ.	३२ ५५	व.	४ २	७	२०	२७	मेषे	५ ३०	७ ११	१ ४ ५८ ५०
अवम	१४	शु.	५४ २८	०	०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	० ० ० ०
३४ १४	३०	श.	५२ ३३	भ.	१० १२	शो.	२५ ३४	च.	२५ ३१	८	२१	२८	व २४।१२	५ ३०	७ १२	१ ५ ५६ १९

(७ मई से २१ मई तक १९५५ ई०) उत्तरायणगोले ग्रीष्मर्तुः।

ग्रहदर्शन—म. बु. सू. अ. बाद प. क्षितिज में गुरु खमध्य से प. की ओर आता दीखेगा। सू. उ. से पहिले पू. क्षितिज में शु. तथा श. +

+सूर्यास्त बाद पू. क्षितिज से कुछ ऊपर होगा।

रोहिण्यां बुधः १०।४६

भ. ३४।४५ उ.

भ. ७।१८ या. *अ.।।।। ल. ११,१२ कुम्भे शु. दा.

कृत्ति. रविः २०।३९

†४९।५८

भ. १८।२१ उ. ४९।७ या., मेषेऽश्वि. शुक्रः ५७।५०, श्र.ऽचं.।।।।ऽ*

सं. वृषेऽर्कः ४८।३६ मु.३० पुण्यं परदिने घ.४।३६ या पञ्चक प्रा.†

मिथुने भौमः ४०।५०

भ. ४७।५१ उ. मृग. बुधः ४३।५१

भ.१६।४२ या.उ.भा.ऽबु.।।।।ऽअ.ऽऽ।।ल. १०,११ मकरे गु.दा. कुम्भे‡

अपरा ११ व्रतम् (भद्रकाली) उ.भा.ऽबु.।।।।ऽऽ।।दि.ल.४, रेव.ऽरा.§

पञ्चक समाप्तिः १७।५, प्रदोषव्रतम् ‡शु. दा.

भ. ४।२ उ. ३१।१६ या.

§।।।।।ऽ।।ल.१०,११मकरे गु.दा. कुम्भे शु.दा.

सा. मिथुने भानुः ११।१२, वटसावित्री ३० व्रतम्

ज्येष्ठकृष्ण ८ रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ४०५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	१	३	००	६	८	२
०	२९	२०	१	१	२४	५	५
१०	३३	५९	४०	१४	१६	५	५
५७	३	८	११	५३	१९	१५	१५
५७	३९	८६	९	७२	४	३	३
४०	३८	४५	१३	१७	२९	११	११
मार्गी	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृ.	मृ.	रो.	पुन.	अ.	वि.	मू.	मृग
१	२	४	४	१	२	२	४

३ के. २ १ शु. ४ सू. मं. बु. १२ गु. ५ ११ चं. ६ ८ १० ७ श. ९ रा.

इस पक्ष में प्रजा में कोई व्याधि फैले किसी शासक की मृत्यु हो। यहां रुई के भाव में तेजी चलेगी। जिन्होंने पहिले स्टाक कर रक्खा है वे कमा लेंगे। सूत, तिल, तेल, तेज। ति. ७ से चान्दी में घटाबढ़ी चलकर भाव सम रहे। गुड़, खांड, आदि रस तथा अनाज चना, चावल, अलसी, मजीठ आदि लाल वस्तुओं में भी तेजी रहे।

आकाश लक्षण—इस पक्ष में प्रायः गर्दगुबार उड़े, धूप चमके, ति. १ से ३ तक तथा ८, ९, १० को कहीं बिजली बादल बूंदाबांदी हो।

ज्येष्ठ कृष्ण ३० शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ४११

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	२	१	३	००	६	८	२
५	३	२८	२	८	२३	४	४
५६	३०	२०	३७	२८	४९	४६	४६
१९	१४	३८	३४	५५	५५	१०	१०
५७	३९	६४	९	७२	४	३	३
२९	२६	१२	४९	२३	२१	११	११
मार्गी	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृ.	मृ.	मृ.	पुन.	अ.	वि.	मू.	मृ.
३	३	२	४	३	२	२	४

स.वि.—ज्येष्ठ वदी जो पंचमी बाजे दक्षिण वाय।

ज्येष्ठ वदी मावस दिना मेघघटा हो जाय।

(२२ मई से ५ जून तक १९५५ ई.) उत्तरायणगोले ग्रीष्मर्तुः।

संवत् २०१२ शाकः १८७७ ज्येष्ठशुक्लपक्षः ५

(२२ मई से ५ जून तक १९५५ ई.) उत्तरायणगतो ग्रीष्मर्तुः।

दि.मा.		ति.	वा.	घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		हि.	अ.	सु.	चन्द्रः सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		सौरसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
३४	१७	१	र.	४६	२५	कृ.	६	११	अ.	१८	२	कि.	१९	२९	९	२२	२९	वृषे	५	२९	७	१३	१	६	५३	४७
३४	१९	२	चं.	४०	१८	रो.	२७	५८	सु.	१०	२०	बा.	१३	२१	१०	२३	३०	मि.३०।००	५	२९	७	१३	१	७	५१	१३
३४	२१	३	मं.	३४	२४	आ.	५४	१०	धृ.	५५	३०	तै.	७	२१	११	२४	१	मिथुने	५	२९	७	१४	१	८	४८	३८
३४	२२	४	बु.	२८	५६	पुन.	५०	५३	गं	४८	३६	व.	१	४०	१२	२५	२	क. ३६।४२	५	२९	७	१५	१	९	४६	१
३४	२४	५	गु.	२४	३	पु.	४८	१६	वृ.	४२	१५	बा.	२४	३	१३	२६	३	कर्के	५	२८	७	१५	१	१०	४३	२२
३४	२५	६	शु.	१९	५६	श्ले.	४६	३०	ध्रु.	३६	३६	तै.	१९	५६	१४	२७	४	सि.४६।३०	५	२८	७	१६	१	११	४०	४३
३४	२७	७	श.	१६	४६	म.	४५	४२	व्या.	३१	४५	व.	१६	४६	१५	२८	५	सिंहे	५	२८	७	१६	१	१२	३८	२
३४	२९	८	र.	१४	४१	पू.फा.	४६	७	ह.	२७	४७	ब.	१४	४१	१६	२९	६	सिंहे	५	२८	७	१६	१	१३	३५	२१
३४	३१	९	चं.	१३	४७	उ.फा.	४७	४५	व.	२४	४८	कौ.	१३	४७	१७	३०	७	कं. १।३२	५	२८	७	१६	१	१४	३२	३९
३४	३२	१०	मं.	१४	१०	ह.	५०	४०	सि.	२२	५०	ग.	१४	१०	१८	३१	८	कन्यायाम्	५	२८	७	१७	१	१५	२९	५५
३४	३४	११	बु.	१६	००	चि.	५४	४२	व्य.	२१	५५	वि.	१६	००	१९	जू१	९	तु.२२।४१	५	२८	७	१८	१	१६	२७	८
३४	३६	१२	गु.	१८	४९	स्वा.	५९	५३	व.	२१	५१	बा.	१८	४९	२०	२	१०	तुलायाम्	५	२८	७	१८	१	१७	२४	२१
३४	३७	१३	शु.	२२	४५	वि.	६०	००	प.	२२	३६	तै.	२२	४५	२१	३	११	वृ. ४९।२१	५	२८	७	१८	१	१८	२१	३३
३४	३९	१४	श.	२७	२४	वि.	५	५०	शि.	२३	५४	व.	२७	२४	२२	४	१२	वृश्चिके	५	२७	७	१९	१	१९	१८	४३
३४	४०	१५	र.	३२	२९	अनु.	१२	१९	सि.	२५	३३	ब.	३२	२९	२३	५	१३	वृश्चिके	५	२७	७	१९	१	२०	१५	५१

ग्रहदर्शन—म.बु.—सू.अ.बाद प. क्षितिज के ऊपर एवं गु.व म. से प. की ओर नत दीखेगा। शु.सू.उ. से पहिले पू. क्षि.में तथा श.सू.अ. बाद+ +पू. क्षि. में उन्नत दीखेगा।

मिथुन बुधः ४५।५९

चन्द्रदर्शनम्

सव्वाल मु. १०

भ. १।४० उ. २८।५६ या. रोहिण्यां रविः १४।३८, आर्द्रा. भौमः* * ४९।१५, पुष्य १ गुरुः १३।१ भरि. शुक्रः १।११

मघा ।।।।।ऽऽ।। ल. ११ शु. दा. चं दा.

भ.१६।४६उ.४५।४३ या.ब. विशा. १शनिः२।३८ मघा।।।।ऽनृऽऽ।।§

उ.फा. ।।।।।ऽ।।। ल. ११ शु. दा. चं. दा. §दि. ल. ४

उ.फा. ।।।।ऽचौ.ऽ।।। दि. ल. ४, ५, रा. ल. १० घ. ४५ या., हस्तऽ‡

भ.४५।५ उ., श्रीगङ्गादशहरा, हस्तऽगु.।।।ऽचौ.।ऽ।।दि.ल.४,५

भ.१६।० या., जून ६ता.३०, निर्जला११व्रतम्, चि.।ऽ।।ऽरोऽ।।ल.†

प्रदोष व्रतम् स्वा. ऽसू.।।।ऽरो.।।।दि.ल. ४, ५

वक्री बुधः ६।५७ ‡गु.।।।ऽचौ.।ऽ।। ल.१२ चं. दा.

भ. २७।२४ उ.५९।५६ या. †१०,११मकरे गु.दा.कुम्भे शु.दा.

कृत्ति. शुक्रः२।३८ सत्यव्रतम्, अनु.।।।ऽऽअ.।ऽ।। दि. ल. ४ घ.९।१९या.

ज्येष्ठ शुक्ल ८ रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ४१६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	२	२	३	००	६	८	२
१३	८	८	३	१८	२३	८	८
३५	४४	१४	५९	८	१६	२०	२०
२१	४६	२४	३१	२८	१	४४	४४
५७	३९	३०	१०	७२	४	३	३
१९	१३	३१	३५	३१	१०	११	११
क्रां.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रो.	आ.	पुन.	पु.	भ.	चि.	मू.	पू.
३	१	४	१	२	१	१	४

३ के. | १ शु. | मं.बु. | २ | ४ | सू. | १२ | गु. | ५ चं. | ११ | ६ | ८ | १० | ७ श. | ९ रा.

इस पक्षमें शासकों में नई चिन्ता व्याप्त हो। पश्चिमी प्रान्तों में कहीं गड़बड़। कई में १५।२० चान्दी में २ की तेजी हो। रेशम अफीम के भाव में बहुत उथल-पुथल होकर बाद तेजी रहे। ति. ५ के बाद सोना चान्दी में मन्दी। तिल, तेल, हींग, सुपारी, सूत, सरसों, गुड़, खांड, घी में तेजी। फलों के व्यापार में लाभ। अलसी, ऊन मन्दी।

आकाश लक्षण—ति. १ से ७ तक उत्तर तथा मध्य भारत में कहीं २ बूंदाबान्दी का योग है। बम्बई प्रान्त में अच्छी वर्षा होगी।

ज्येष्ठ शुक्ल १५ रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ४२६

३ के. मं. बु. | १ शु. | ४ | सू. | १२ | गु. | २ | ५ | ११ | ६ | ८ चं. | १० | ७ श. | ९ रा.

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	२	२	३	००	६	८	२
२०	१३	५	५	२६	२२	३	३
१५	१८	१९	१५	३६	४८	५८	५८
५१	५८	४७	१९	४९	५६	२९	२९
५७	३९	४	११	७२	३	३	३
८	५	२०	४	३९	४३	११	११
क्रां.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	[illegible]	अ.	अ.
रो.	आ.	पु.	पुन.	भ.	वि.	मू.	मू.
४	२	४	१	४	१	१	४

घ०वि०—ज्येष्ठ मास में आर्द्रा से चित्रा तक जोय।
नभ में चमके बिजली अथवा बादल होय।

चौमासा बरसे नहीं सारा सूखा जाय।
जितना भी यह योग हो उतना जल टपकाय।

ज्येष्ठसुदी सप्तम दिने बिजुरी मेघ निहार।
दक्षिण दिशि वायु चले तिल से लाभ अपार।

संवत् २०१२ शाकः १८७७ आषाढ़ कृष्णपक्षः ६ — **(६ जून से २० जून तक १९५५ ई.) उत्तरायणगोलो ग्रीष्मर्तुः।**

ग्रहदर्शन—मं.गु. सूर्यास्त बाद पश्चिमाक्षितज से ऊपर, शुक्र सूर्योदय से पहिले पूर्व क्षि.में तथा शनि सू.अ. बाद पूर्व क्षि. से ऊपर दीखेगा, θ

दि.मा.		ति.	वा.	घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		हि.	अं.	सु.	चन्द्रः सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		सौरसूर्यस्पष्टः उदयकाले				
३४	४२	१	चं.	३७	३१	ज्ये.	१८	५५	सा.	२७	१२	बा.	५	००	२४	६	१४	ध. १८।५५	५	२७	७	१९	१	२१	१२	५९	पश्चिमास्तोबुधः ४२।५२ θबु.ति. १ को पश्चिम में अस्त है।
३४	४३	२	मं.	४२	२	मू.	२५	१०	शु.	२८	३२	तै.	९	४६	२५	७	१५	धनुषि	५	२७	७	२०	१	२२	१०	६	वृषे शुक्रः ४७।४२
३४	४५	३	बु.	४५	५१	पू.षा.	३०	४१	शु.	२९	२०	व.	१३	५६	२६	८	१६	म. ४६।४९	५	२७	७	२१	१	२३	७	१२	भः १३।५६उ. ४५।५१ या. मृगे रविः १३।२७
३४	४६	४	गु.	४८	२९	उ.षा.	३५	१४	ब्र.	२९	१९	ब.	१७	१०	२७	९	१७	मकरे	५	२७	७	२१	१	२४	४	१७	श्रीगणेश चतुर्थीव्रतम्।
३४	४८	५	शु.	५०	५	श्र.	३८	४१	ऐं.	२८	२८	कौ.	१९	१७	२८	१०	१८	मकरे	५	२६	७	२२	१	२५	१	२१	†ल. १०, ११ मकरे गु. दा
३४	४९	६	श.	५०	१६	ध.	४०	५०	वै.	२६	३५	ग.	२०	१०	२९	११	१९	कुं. ९।४५	५	२६	७	२२	१	२५	५८	२३	भ. ५०।१६ उ. पञ्चकप्रा. ९।४५
३४	५१	७	र.	४९	१३	श.	४१	४४	वि.	२३	३९	वि.	१९	४४	३०	१२	२०	कुम्भे	५	२६	७	२२	१	२६	५५	२५	भ. १९।४४ या॰, पुष्य २ गुरुः २५।२३
३४	५२	८	चं.	४६	५३	पू.भा.	४१	२६	प्री.	१९	४५	बा.	१८	३	३१	१३	२१	मी. २६।३०	५	२६	७	२३	१	२७	५२	२६	*दुर्गाष्टमी, पुन भौमः १७।५४ पञ्चक स. ३७।५०, अश्वि॰।।।।।।ऽ।।†
३४	५४	९	मं.	४३	३२	उ.भा.	४०	३	आ.	१४	५७	तै.	१५	१२	३२	१४	२२	मीने	५	२६	७	२४	१	२८	४९	२५	रेव.ऽरा.।।।ऽअ.।ऽ।।ल.१०,११ मकरे गु.दा.
३४	५५	१०	बु.	३९	१९	रे.	३७	५०	सौ.	९	२२	व.	११	२५	आ	१५	२३	मे. ३७।५०	५	२६	७	२४	१	२९	४६	२४	भ.११।२५ उ. ३९।१९ या॰, सं. मिथुनेऽर्कः १४।१८ मु. ३० पुण्यं*
३४	५७	११	गु.	३४	१४	अ.	३४	४५	शो.	३/५६	२/११	ब.	६	४६	२	१६	२४	मेषे	५	२६	७	२४	२	०	४३	२३	रोहिण्य. शुक्रः २।१८ योगिनी ११ व्रतम् अश्वि॰।।।।।ऽऽ।। दि. ल.४,५
३४	५८	१२	शु.	२८	३८	भ.	३१	१३	सु.	४८	५५	कौ.	१	२६	३	१७	२५	वृषे ४५।१३	५	२६	७	२५	२	१	४०	२०	मू. १ राहुः मृग. ३ केतुः ५।५८ प्रदोषव्रतम्
३५	००	१३	श.	२२	४१	कृ.	२७	११	धृ.	४१	२४	ब.	२२	४१	४	१८	२६	वृषे	५	२६	७	२६	२	२	३७	१६	भ. २२।४१ उ. ४९।३४ या व. वृषेबुधः १।२७
३५	१	१४	र.	१६	२८	रो.	२२	५९	शू.	३३	४२	श.	१६	२८	५	१९	२७	मि. ५०।५६	५	२६	७	२६	२	३	३४	१२	पितृकार्ये अमा.
३५	३	३०	चं.	१०	१७	मृ.	१८	५३	ग.	२६	१२	ना.	१०	१७	६	२०	२८	मिथुने	५	२६	७	२६	२	४	३१	७	सोमवती, स्वल्पग्रासं सूर्यग्रहणम्।

आषाढ़कृष्ण ८ चन्द्र इष्टम् ०।० दिनगणः ४३४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	२	२	३	१	६	८	२
२७	१८	२	६	६	२२	३	३
५२	३०	४१	४६	१८	२०	३३	३३
२६	४१	२०	४५	३८	४३	२	२
५७	३८	२९	११	७२	३	३	३
१	५२	१८	४२	४६	२२	११	११
[illegible]	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृ. २	आ. ४	मृ. ३	पु. १	कृ. ३	वि. १	मू. २	मृ. ४

३ के.बु. १
४ मं. २
गु सू. शु. १२
११
५ चं.
६ ८ १०
७ ९
श. रा.

इस पक्ष में अन्न पहिले तेज होकर पीछे मन्दा रहे। शक्कर, गुड़, खांड, घी तज। ति. १ या २ को रुई में १५–२० टका की एकाएक मन्दी हो। चान्दी तेज। शेअर और पाट हेशियन में मन्दी आवे। ति. ३ से उड़द, मोठ, मच में तेजी। अलसी के भाव में घटाबढ़ी। ति. १० बाद सोना आदि धातु अलसी, सरसों, ऊन में मन्दी हो। ति. १४ से पहिले मन्दे में रुई खरीदे तो आगे लाभ हो।

आकाश लक्षण–ति. १ तथा ३ से ६ तक १० से १३ तक गर्द गुबार, आन्धी, बादल चाल कहीं २ वर्षा भी हो।

आषाढ़कृष्ण ३० चन्द्र इष्टम् ०।० दिनगणः ४४१

४ गु २ बु. शु.
३ १
चं. सू. मं.
के
५ १२
६
७ ११
श. ९ रा.
८ १०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	१	३	१	६	८	२
४	२३	२९	८	१४	२२	३	३
२१	२	२	९	४८	००	१०	१०
७	३४	११	५९	५८	६	४७	४७
५६	३८	२८	१२	७२	२	३	३
५५	४८	४७	१	५६	४२	११	११
[illegible]	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृ. ४	[illegible] १	मृ. २	पु. २	रो. २	वि. १	मू. १	मृ. ३

शकुन विचार—आषाढ़वदी जो अष्टमी बादल उगे चन्द।
वर्षा अच्छी होयगी मिटे सभी दुख द्वन्द।

काला बादल करबरा धौलो करे सुकाल।
चन्दा उगे निर्मला निश्चय पड़े दुकाल।

आषाढ़वदी नौमी दिना बिजली बादल होय।
धान्य बेच खेती करो संग्रह [illegible] कोय।

(२१ जून से ५ जुलाई तक १९५५ ई.) दक्षिणायनम्, उत्तरगोलः वर्षर्तुः।

संवत् २०१२ शाकः १८७७ आषाढ़ शुक्लपक्षः ७

दि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. आषाढ़	अं. जून	मु. जिल्काद	चन्द्रः सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		सौरसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
३५	४	१	मं.	४	१९	आ.	१४	५८	वृ.	१८	५०	ब.	४	१९	७	२१	२९	क.५७।२३	५	२५	७	२७	२	५	२८	२
नवम		२	मं.	२४	२७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०
३५	६	३	बु.	५३	४६	पुन.	११	३२	ध्रु.	११	५१	तै.	२६	१६	८	२२	१	कर्के	५	२५	७	२७	२	६	२४	५७
३५	४	४	गु.	४९	२७	पु.	८	४३	व्या.	५९	३५	व.	२१	४१	९	२३	२	कर्के	५	२६	७	२८	२	७	२१	५२
३५	३	५	शु.	४६	२२	श्ले.	६	४६	व.	५४	४२	ब.	१७	५९	१०	२४	३	सि. ६।४६	५	२७	७	२८	२	८	१८	४७
३५	१	६	श.	४४	७	म.	५	४३	सि.	५०	३२	कौ.	१५	१४	११	२५	४	सिंहे	५	२७	७	२७	२	९	१५	४१
३५	००	७	र.	४३	८	पू. फा.	५	४८	व्य.	४७	२५	ग.	१३	३७	१२	२६	५	कं.२१।८	५	२७	७	२७	२	१०	१२	३८
३४	५८	८	चं.	४३	२५	उ. फा.	७	६	व.	४५	१६	वि.	१३	१६	१३	२७	६	कन्यायाम्	५	२८	७	२७	२	११	९	२६
३४	५७	९	मं.	४५	३	ह.	९	४२	प.	४४	१२	बा.	१४	१४	१४	२८	७	तु.४१।३६	५	२९	७	२७	२	१२	६	१८
३४	५५	१०	बु.	४७	४६	चि.	१३	३०	शि.	४३	५६	तै.	१६	२४	१५	२९	८	तुलायाम्	५	२९	७	२७	२	१३	३	१०
३४	५३	११	गु.	५१	३६	स्वा.	१८	२७	सि.	४४	३४	व.	१९	४१	१६	३०	९	तुलायाम्	५	३०	७	२७	२	१४	०	१
३४	५२	१२	शु.	५६	११	वि.	२४	१२	सा.	४५	४७	व.	२३	५३	१७	१	१०	वृ. ७।४६	५	३०	७	२७	२	१४	५६	५२
३४	५०	१३	श.	६०	००	अनु.	३०	३५	शु.	४७	२३	कौ.	२८	४०	१८	२	११	वृश्चिके	५	३१	७	२७	२	१५	५३	४३
३४	४९	१३	र	१	१०	ज्ये.	३७	९	शु.	४९	५	तै.	१	१०	१९	३	१२	धनु.३७।९	५	३१	७	२७	२	१६	५०	३५
३४	४७	१४	चं.	६	११	मू.	४३	३०	ब्र.	५०	२८	व.	६	११	२०	४	१३	धनुषि	५	३२	७	२६	२	१७	४७	२७
३४	४६	१५	मं.	१०	४४	पू. षा.	४९	११	ऐं.	५१	२२	ब.	१०	४४	२१	५	१४	धनुषि	५	३२	७	२६	२	१८	४४	१९

(२१ जून से ५ जुलाई तक १९५५ ई.) दक्षिणायनम्, उत्तरगोलः वर्षर्तुः।

ग्रहदर्शन—मं.ति.५ को अस्त एवं बुध ति.६ को पू. उदित होगा। गु. सू.अ. बाद प.क्षि.में श.पू.में उठता दीखेगा। श.सू.उ.से कुछ पूर्व पू. क्षितिज.होगा।

चन्द्रदर्शनम्, सा. कर्के भानुः ४१।७ वर्षर्तुःप्रा., दक्षिणायनम्

व्रतम्, चातुर्मास्य व्रतनियमाद्यारम्भश्च

आर्द्रायांरविः १५।५२, जिल्काद मु. ११

भ. २१।४१ उ. ४९।३७ या.,

अस्तोभौमः २३।३२, मघा. ।।।।ऽरो.ऽऽ।। दि. ल. ४ घ. ६।४६उ.,*

पूर्वोदयो बुधः ३६।२४ *रा. ल. ११, २ कुम्भे चं. दा.

भ.४३।८ उ. मृग. शुक्रः ५९।३७

भ. १३।१६ या. ह. ऽगु.।।।।ऽअ.।ऽ।ऽ ल.१० गु.दा.

मार्गी बुधः २९।१६ पुष्य ३ गुरुः ५७।७ चि.।।।।।ऽ।।।दि.ल. ५.‡

स्वा. ।।।।ऽनृ.।ऽ।।ल. १०,११ मकरे गु.दा., चि.।।।।ऽनृ.।।।।दि.ल.४

भ. १९।४१ उ. ५१।३६या.कर्के भौमः ४७।२२ देवशयनी ११†

जुलाई ७ ता. ३१, निम्बार्काणां ११ व्र.

मिथुने शुक्रः २७।३५, शनिप्रदोषव्र.

‡रा ल.१० मकरे गु.दा.

भ. ६।११ उ. ३८।२७ या., वायुपरीक्षा, सत्यव्रतम्,

पुष्ये भौमः ५८।३१, गुरुव्यासपूजनम्।

ल ८ चन्द्र इष्टम् ०।० दिनगण ४८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	१	३	१	६	८	२
११	२७	२६	९	२३	२१	२	२
९	३३	५०	३५	२०	४३	४८	४८
२६	३५	४०	४०	२८	११	३२	३२
५६	३८	७	१२	७३	२	३	३
५२	४१	१०	२५	९	१२	११	११
क्रान्ति	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आ.	पुन.	मृ.	पु.	मृ.	वि.	मू.	मू.
२	३	२	२	१	१	१	३

गु. | २ शु. बु. | ४ | ३ मं. सू. के. | १ | ५ | ६ चं. | १२ | ७ | श. | ९ रा. | ११ | ८ | १०

इस पक्ष में अधिक गर्मी से कमजोरदिलों को हानि। बच्चों को चेचक आदि का भय। सवारी की दुर्घटनाओं का भी कहीं २ भय हो। यहां वारदाना, सोना, गेहूँ चावल आदि अनाजों और चौपायों का भाव बढ़े। रुई, चान्दी में पहिले तेजी होकर पीछे मन्दी हो। अलसी, गुड़, शक्कर, खांड, घी में तेजी। वायदे के व्यापार में भारी उथल-पुथल हो। अर्थात्—तेज वस्तु मन्दी और मन्दी वस्तु तेज हो। ति. १२ से शण, कपड़ा, सूत में काफी मन्दी आवे, अलसी में घटा-बढ़ी चले।

आकाश लक्षण—ति. ५ से १४ तक बहुत जगह गड़गड़ाहट से खूब वर्षा होगी। बिजली से भी कई जगह हानि होगी।

आषाढ़शुक्ल १५ भौम इष्टम् ०।० दिनगणः ४५६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	३	१	३	२	६	८	२
१८	२	२८	११	३	२१	२	२
४४	४२	४३	१६	६	२९	२३	२३
१९	२०	३६	१६	१	४	५	५
५६	३८	३२	१२	७३	१	३	३
५२	३१	१२	४२	१५	२६	११	११
क्रान्ति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आ.	पुन.	मृ.	पु.	मृ.	वि.	मू.	मू.
४	४	२	३	३	१	१	३

शकुन विचार—पूनम नौमी षाढ़ सुदि, निर्मल निसामयङ्क।
दुर्भिक्ष निश्चय जानिये, रुले प्रजा अरु रङ्क॥

आषाढ़ सुदी नौमी दिना ना बादल ना बीज।
हलफाड़ ईंधन करो बैठा खाओ बीज॥

संवत् २०१२ शाकः १८७७ श्रावणकृष्णपक्षः ८																		चन्द्रः	सू. उ.		सू. अ.		सौरसूर्यस्पष्टः			
दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि.	अ.	मु.	सञ्चारः	रेल्वे		रेल्वे		उदयकाले			
३४	४४	१	बु.	१४	३२	उ. षा.	५३	५८	वै.	५१	३१	कौ.	१४	३२	२२	६	१५	म. ५।२३	५	३२	७	२६	२	१९	४१	११
३४	४३	२	गु.	१७	१५	श्र.	५७	४१	वि.	५०	४६	ग.	१७	१५	२३	७	१६	मकरे	५	३३	७	२६	२	२०	३८	३
३४	४१	३	शु.	१८	५२	ध.	६०	०	प्री.	४९	६	वि.	१८	५२	२४	८	१७	कु. २८।५४	५	३४	७	२६	२	२१	३४	५४
३४	४०	४	श.	१९	७	ध.	०	७	आ.	४६	२२	बा.	१९	७	२५	९	१८	कुम्भे	५	३४	७	२६	२	२२	३१	५५
३४	३८	५	र.	१८	७	श.	१	१५	सौ.	४२	३७	तै.	१८	७	२६	१०	१९	मी० ४६।१४	५	३५	७	२६	२	२३	२८	३७
३४	३६	६	च.	१५	५३	पू. भा.	१	१४	शो.	३७	५७	व.	१५	५३	२७	११	२०	मीने	५	३५	७	२५	२	२४	२५	३०
३४	३५	७	मं.	१२	३६	उ. भा.	५८	१	अ.	३२	२९	ब.	१२	३६	२८	१२	२१	मे. ५८। १	५	३५	७	२५	२	२५	२२	२४
३४	३३	८	बु.	८	२४	अ.	५५	७	सु.	२६	१९	कौ.	८	२४	२९	१३	२२	मेषे	५	३६	७	२५	२	२६	१९	१९
३४	३२	९	गु.	३	२१	भ.	५१	३६	धृ.	१९	३१	ग.	३	२१	३०	१४	२३	मेषे	५	३६	७	२५	२	२७	१६	१४
अवम.		१०	गु.	५४	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३४	३०	११	शु.	५१	४७	कृ.	४७	४०	शू.	१२	१७	ब.	२४	४६	३१	१५	२४	वृ. ५।३७	५	३७	७	२५	२	२८	१३	९
३४	२९	१२	श.	४५	३५	रो.	४३	३१	गं.	५७	४२	कौ.	१८	४१	श्रा	१६	२५	वृषे	५	३८	७	२५	२	२९	१०	५
३४	२७	१३	र.	३९	२३	मृ.	३९	१९	ध्रु.	४९	३४	ग.	१२	२९	२	१७	२६	मि. ११।२५	५	३८	७	२५	३	०	७	२
३४	२६	१४	चं.	३३	२२	आ.	३५	२०	व्या	४२	९	वि.	६	२२	३	१८	२७	मिथुने	५	३८	७	२४	३	१	३	५९
३४	२४	३०	मं.	२७	४६	पुन.	३१	४६	ह.	३५	४	च.	०	३४	४	१९	२८	क. १७।३९	५	३९	७	२४	३	२	०	५७

(६ जुलाई से १९ जुलाई तक १९५५ ई.) दक्षिणायनमुत्तरगोलो वर्षर्तुः।

ग्रहदर्शन—मं. अस्त है। बु. शु. सूर्योदय से पहिले क्षितिज में श. मायं समध्य में ग. साथं पश्चिम क्षितिजलग्न दीखेगा।

पुन. रविः १९।५१ मिथुने बुधः ५५।१७

भ. ४८।३ उ., आर्द्रा शुक्रः ५५।११, श्रव.।।।।ज्ञु.ऽअ.ऽ।। दि. ल. ६*

भ.१८।५२या. पञ्चकप्रा. २८।५४ श्रीगणेश ४व्र ध.ऽश.।।।।ऽनू.।।।।†

*रा.ल.११,१२

†ल. १२, २

भ. १५।५३ उ. ४४।१४ या.

पञ्चक समाप्तिः ५८।१

आर्द्रा. बुधः ३३।५९, अश्वि. ।।।।ऽरो.।ऽ।ऽ दि. ल. ५, रा. ल. ११,१२

भ. ३०।३३ उ. ५७।४६ या., पुष्य ४ गुरुः ३६।५४

‡वैष्णवानाम्

कामदा ११ व्र. स्मार्त्तानाम्

सं. कर्केऽर्कः, ५२।३५ मु. ३० पुण्यं २२।३५ उ., कामदा ११ व्र.‡

भ. ३९।२३ उ., प्रदोष व्र.

भ. ६।२२ या. पुन. शुक्रः ४८।३३

हरियाली ३०

श्रावणकृष्ण ८ बुध इष्टम् ०।० दिनगणः ४६४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	३	२	३	२	६	८	२
२६	७	५	१२	१२	२१	१	१
१९	४९	५७	५८	५२	२१	५७	५७
१९	४८	५१	५९	५१	१०	३८	३८
५६	३८	७०	१२	७३	०	३	३
५५	२१	९	५७	२७	४०	११	११
सौर:	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन.	पू.	मू.	पु.	आ.	वि	मू.	मू.
२	२	४	३	२	१	१	३

४ गु. मं.
२
३
के. सू. शु.
बु.
५
१
चं.
६
१२
९
७ श.
रा.
११
८
१०

डा.बि.—श्रावण पहली पंचमी, वर्षे करे निहाल।
पवन चले तो अति बुरी पड़े हलाहल काल॥

इस पक्ष में—गेहूँ, चना, उड़द, मूंग मंहगे हों। ति. ४ को सरसों बेचें तो व्यापारियों को लाभ। अलसी, कपास, बिनौला, मोठ, तिल, और रसकश तथा कर्याणे की वस्तुएं तेज हों। सोना, चान्दी में घटाबढ़ी चलकर पीछे मन्दी। रुई में पहिले कुछ तेजी होकर बाद में टका ३० की मन्दी हो। भैंसों का भाव तेज हो। ति. ९ से तिल उड़द में कुछ मन्दे का असर हो। यहां शासकों का शस्त्र संग्रह की ओर विशेष ध्यान बढ़ेगा। राजा प्रजा में परस्पर सद्भावना रहे।

आकाश लक्षण—कहीं वायु आंधी के साथ फूटे घड़े की तरह खण्डवृष्टि हो, कहीं सूखा कहीं अधिक। प्रायः बहुत जगह पर वायु बादलों को उड़ाती रहेगी। ति. ३, ४, ५, १२, १३ को वर्षा के योग पाए जाते हैं।

श्रावणकृष्ण ३० भौम इष्टम् ०।० दिनगणः ४७०

५
चं. ३ शु.
के. बु.
६
४ मं. सू. गु.
२
७ श.
१
८
१०
१२
९ रा.
११

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	२	३	२	६	८	२
२	११	१४	१४	२०	२१	१	१
०	३९	२६	१७	१४	१८	३८	३८
५७	५४	२३	२०	४	४४	३४	३४
५६	३८	९४	१३	७३	०	३	३
१८	२०	२०	५	३७	१२	११	११
सौर:	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन.	पु.	आ.	पु.	आ.	वि.	मू.	मू.
४	३	३	४	४	१	१	३

श्रावणवदी एकादशी, जो नभ वर्षा होय।
अच्छा संवत होयगा, संशय करो न कोय॥

संवत् २०१२ शाकः १८७७ श्रावणशुक्लपक्षः ९ | ति. | अं. | मु. | चन्द्र | सू. उ. | सू. अ. | सौरसूर्यस्पष्टः | (२० जुलाई से ३ अगस्त तक १९५५ ई.) दक्षिणायनमुत्तरगोलो वर्षर्त्तु

संवत् २०१२ शाकः १८७७ श्रावणशुक्लपक्षः ९

दि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि.	अं.	म.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		सौरसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
३४	२२	१	बु.	२३	४१	पु.	२८	४८	व.	२८	३०	ब.	२२	४१	५	२०	२९	कर्के	५	३९	७	२४	३	२	५७	५५
३४	२१	२	गु.	१८	२६	श्ले.	२६	३८	सि.	२२	३८	कौ.	१८	२६	६	२१	३०	सि. २६।३८	५	४०	७	२३	३	३	५४	५४
३४	१९	३	शु.	१५	४	म.	२५	२०	व्य.	१७	२७	ग.	१५	४	७	२२	१	सिंहे	५	४०	७	२३	३	४	५१	५३
३४	१७	४	श.	१२	४६	पू.फा.	२५	९	व.	१३	७	वि.	१२	४६	८	२३	२	कं. ४०।२४	५	४१	७	२२	३	५	४८	५२
३४	१४	५	र.	११	४१	उ.फा.	२६	८	प.	९	४६	बा.	११	४१	९	२४	३	कन्यायाम्	५	४१	७	२२	३	६	४५	५२
३४	११	६	चं.	११	५३	ह.	२८	२४	शि.	७	२५	तै.	११	५३	१०	२५	४	कन्यायाम्	५	४२	७	२१	३	७	४२	५४
३४	७	७	मं.	१३	२७	चि.	३१	५७	सि.	६	४	व.	१३	२७	११	२६	५	तु. ०।१०	५	४२	७	२१	३	८	३९	५७
३४	३	८	बु.	१६	४	स्वा.	३६	३६	सा.	५	३६	ब.	१६	४	१२	२७	६	तुलायाम्	५	४३	७	२०	३	९	३७	१
३४	००	९	गु.	१९	५१	वि.	४२	१२	शु.	६	२	कौ.	१९	५१	१३	२८	७	वृ. २५।४८	५	४३	७	१९	३	१०	३४	६
३३	५७	१०	शु.	२४	२२	अनु.	४८	२७	शु.	७	६	ग.	२४	२२	१४	२९	८	वृश्चिके	५	४४	७	१९	३	११	३१	१३
३३	५३	११	श.	२९	२२	ज्ये.	५५	००	ब्र.	८	३७	वि.	२९	२२	१५	३०	९	धनु. ५५।०	५	४५	७	१८	३	१२	२८	२१
३३	५०	१२	र.	३४	२५	मू.	६०	००	ऐं.	१०	१४	ब.	१	५३	१६	३१	१०	धनुषि.	५	४५	७	१८	३	१३	२५	३०
३३	४७	१३	चं.	३९	१	मू.	१	२४	वै.	११	४०	कौ.	६	४३	१७	अ१	११	धनुषि.	५	४६	७	१७	३	१४	२२	४१
३३	४३	१४	मं.	४२	५४	पू.षा	७	१६	वि.	१२	३९	ग.	१०	५७	१८	२	१२	म. २३।३२	५	४७	७	१६	३	१५	१९	५३
३३	४०	१५	बु.	४५	४३	उ.षा.	१२	१८	प्री.	१२	५७	वि.	१४	१८	१९	३	१३	मकरे	५	४८	७	१५	३	१६	१७	६

(२० जुलाई से ३ अगस्त तक १९५५ ई.) दक्षिणायनमुत्तरगोलो वर्षर्त्तु

ग्रहदर्शन—मं. अस्त है। बु. गु. क्रमशः ति. ५, ३ को अस्त होंगे। शु. सू. से पहिले पूर्व क्षितिज में होगा। श. सायंकाल में खमध्यस्थ दीखेगा।

पुष्ये रविः २३।१५ मार्गी शनिः २५।४३, नक्तव्रतारम्भः चन्द्रदर्शनम्,

भ. ४३।५५ उ. पुन. बुधः १५।४९, अस्तो गुरुः १९।४८ मु. अ.+

भ. १२।४६ या. सा. सिंहे भानुः १८।५३

पूर्वास्तो बुधः ५८।३५ नाग ५

‡श्री तुलसी जयन्ती,

भ. १३।२७ उ. ४४।४५ या., श्ले. भौमः ४९।४१, कर्के शुक्रः ५६।५९,‡

कर्के बुधः २६।५६, श्री दुर्गा ८ मेला श्रीनयनादेवी व श्रीचिन्तपूरनी

+जिल्हेज मु. १२

भ. ५६।५२ उ. पुष्ये बुधः ५।१०, श्ले. १ गुरुः ४९।४९, पुष्ये शुक्रः†

भ. २९।२२ या., पवित्रा ११ व्र. †३९।३२

श्रीविष्णवे पवित्रार्पणम्.

अगस्त ८, ता. ३१, लो. मा. तिलक जयन्ती, प्रदोषव्रतम्।

भ. ४२।५४ उ. *भद्रोत्तरम्, ऋषितर्पणम् सत्यव्रतम्।

भ. १४।१८ या., श्ले. रविः २४।१, रक्षाबन्धनम् (रक्खड़ी)*

श्रावण शुक्ल ८ बुध इष्टम् ०।० दिनगणः ४७८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	२	३	३	६	८	२
९	१६	२९	१६	००	२१	१	१
२७	४६	५	२	३	२१	१३	१३
१	३५	४२	३३	४३	२३	६	६
५७	३८	व	१३	७३	००	३	३
४	१७	१८	१२	४७	४५	११	११
क्रा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पु. २	श्ले. १	[illegible] ३	पु. ४	[illegible] ४	वि. १	मू. १	मू. ३

५ | ३ के.बु. | ४ | ६ | मं.गु.सू.शु. | २ | ७ चं.श. | १ | ८ | १० | १२ | ९ रा. | ११

इस पक्ष में—किसानों को चिन्ता और गरीब लोग कष्ट पावें। बड़े २ राष्ट्रों के मध्य स्वार्थमय खेंचातानी हो। गेहूँ, घी, गुड़-खांड तेज। रूई के व्यापार में २०—३० टका की घटाबढ़ी होकर अन्त में तेजी हो। चान्दी में २-३ टका की मन्दी हो। अलसी, बिनौला में तेजी। ति. ७ से अनाज में घटा-बढ़ी होकर तेजी, और रूई के भाव में २०-२५ टका की मन्दी। घी, तिल, सुवर्ण, खांड मन्दी होकर फिर तुरन्त तेज हों। श्वेतवस्त्र सस्ता हो।

आकाश लक्षण—इस पक्ष में वर्षा जहां होने लगेगी वहां खूब होगी और जहां नहीं होगी वहां सूखा रहेगा। ति. ३ से १२ तक बिजली बादल तथा कुछ वर्षा के योग हैं।

श्रावणशुक्ल १५ बुध इष्टम् ०।० दिनगणः ४८५

५ | ३ के. | ४ | ६ | बु.शु.सू.मं. गु. | २ | ७ श. | १ | ८ | १० चं. | १२ | ९ रा. | ११
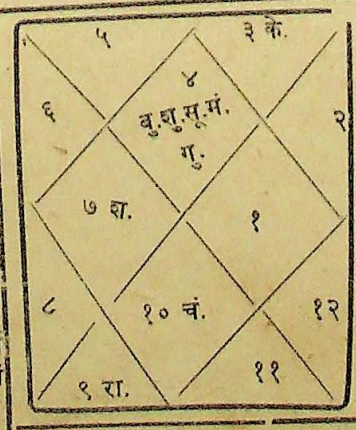
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	३	३	३	६	८	२
१६	२१	१३	१७	८	२१	०	०
१७	१४	४०	३५	४०	२९	५०	५०
६	१८	२२	१६	४५	२८	५०	५०
५७	३८	व	१३	७३	१	३	३
१३	१४	१५	१४	५४	२०	११	११
क्रा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पु. ४	श्ले. २	पु. ३	[illegible] १	पु. २	वि. १	मू. १	मू. ३

श० वि०—श्रावणशुक्ला पंचमी और छठ को जान। कुछ वर्षा पश्चिम पवन तो दुर्भिक्ष पिछान।

संवत् २०१२ शाकः १८७७ प्र. भाद्रपदकृष्णपक्षः १०																	हि.	अं.	मु.	चन्द्र	सू. उ.		सू. अ.		सौरसूर्यस्पष्टः			
दि.	मा	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	श्रावण	अगस्त	जिल्हिज	सञ्चारः	रेल्वे		रेल्वे		उदयकाले			
३३	३६	१	गु.	४७	२८	श्र.	१६	१२	आ.	१२	२०	बा.	१६	३५	२०	४	१४	कुं. ४७।३४	५	४९	७	१४	३	१७	१४	२०
३३	३३	२	शु.	४७	५०	ध.	१८	५७	सौ.	१०	४७	तै.	१७	३९	२१	५	१५	कुम्भे	५	४९	७	१३	३	१८	११	३६
३३	३०	३	श.	४६	५५	श.	२०	२५	शो.	८	१३	व.	१७	२२	२२	६	१६	कुम्भे	५	५०	७	१३	३	१९	८	५३
३३	२७	४	र.	४४	४८	पू. भा.	२०	३७	अ.	४	३९	ब.	१५	५१	२३	७	१७	मी. ५।३४	५	५१	७	१२	३	२०	६	११
३३	२३	५	चं.	४१	३६	उ. भा.	१९	४३	सु.	०/५४	४५	कौ.	१३	१२	२४	८	१८	मीने	५	५१	७	११	३	२१	३	३०
३३	१९	६	मं.	३७	३०	रे.	१७	४९	शू.	४८	४४	ग.	९	३३	२५	९	१९	मे. १७।४९	५	५१	७	१०	३	२२	०	५१
३३	१५	७	बु.	३२	३४	अ.	१५	५	गं.	४२	००	वि.	५	२	२६	१०	२०	मेषे	५	५२	७	९	३	२२	५८	१३
३३	१२	८	गु.	२७	१	भ.	११	४१	वृ.	३४	४८	कौ.	२७	१	२७	११	२१	वृ. २५।४३	५	५३	७	८	३	२३	५५	३७
३३	८	९	शु.	२१	६	कृ.	७	४८	ध्रु.	२७	१९	ग.	२१	६	२८	१२	२२	वृषे	५	५४	७	७	३	२४	५३	१
३३	५	१०	श.	१४	५७	रो.	३/५६	४२/२८	व्या	१९	४१	वि.	१४	५७	२९	१३	२३	मि. ३१।३५	५	५४	७	७	३	२५	५०	२६
३३	१	११	र.	८	४३	आ.	५५	२२	ह.	१२	१	बा.	८	४३	३०	१४	२४	मिथुने	५	५५	७	६	३	२६	४७	५२
३२	५७	१२	चं.	२	४५	पुन.	५१	४१	व.	४/५७	३१/१८	तै.	२	४५	३१	१५	२५	क. ३७।३६	५	५५	७	५	३	२७	४५	२१
अवम.		१३	चं.	५४	२३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०
३२	५४	१४	मं.	५२	३	पु.	४८	३१	व्य.	५०	३६	वि.	२४	३५	३२	१६	२६	कर्के	५	५५	७	४	३	२८	४२	५३
३२	५०	३०	बु.	४७	४७	श्ले.	४६	१०	व.	४४	३२	च.	१९	५५	भा१	१७	२७	सि. ४६।१०	५	५६	७	३	३	२९	४०	२७

(४ अगस्त से १७ अगस्ततक १९५५ ई.) दक्षिणायनमुत्तरगोलो वर्षर्तुः

ग्रहदर्शन—मं. बु. अस्त हैं। गु. ति. १४ को उदित होगा। शु. ति. ६ को पूर्व में अस्त होगा। श. सूर्यास्त बाद, खमध्य में दीखेगा।

श्ले. बुधः २६।२, पञ्चकप्रा. ४७।३४,
θदयो रात्रौ रेल्वे घं. ११ मि. ५०
भ. १७।२२ उ. ४६। ५५ या. कजली ३,
श्रीगणेश ४ व्र., बहुला ४
*पञ्चकस. १७।४९ चन्दन ६ व्र.
भ. ३७।३० उ., श्ले. शुक्रः २८।५०, पूर्वास्तः शुक्रः ५९।२० शु. अ.*
भ. ५।२ या., श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतं स्मार्त्तानाम्, चन्द्रोदयो रात्रौ‡
मघा. सिंहे बुधः ०।१६, श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्र. वैष्णवानाम्, चन्द्रो-θ
भ. ४८।१ उ., गुग्गा नवमी, ‡रेल्वे घं ११ मि. ३,
भ. १४।५७ या., श्ले. २ गुरुः ५७।२१
अजा ११ व्र., †प्रा. प्रदोषव्र. गोवत्स १२ पूजा
भ.५७।८ उ.भारते स्वातन्त्र्योत्सवः (मेला आजादी) जयहिन्द सं.९†
ϕ३० (,'ॐ हूँ फट्'' मन्त्रेण)
भ. २४।३५ या. मघासिंहे भौमः ४५।१४, गुरोरुदयः ११।२४ गु. उ.
मघा सं. सिंहेऽर्कः २०।२२ मु. १५ पुण्यं ४।२२ उ., कुशोत्पाटिनीϕ

प्र. भाद्रपदकृष्णपक्ष ८ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ४९३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	३	३	३	६	८	२
२३	२६	२९	१९	१८	२१	००	००
५५	२०	५९	२१	३२	४३	२५	२५
३७	८	२९	००	२७	४६	२४	२४
५७	३८	[illegible]	१३	७४	२	३	३
२४	१३	७	१२	१	८	११	११
सौर	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
क्रा	अ.	अ.	अ.	अ.	उ.	अ.	अ.
श्ले. ३	श्ले. ४	श्ले. ४	श्ले. १	श्ले. १	वि. १	मू. १	मृ. ३

५ | ३ के. | ४ मं. गु. सू. शु. बु. | ६ | २ | ७ श. | १ चं. | ८ | १० | १२ | ९ रा. | ११

इस पक्ष में पश्चिमोत्तर प्रदेशों में संकटमय स्थिति रहेगी। मशीनरी के पुर्जे, विदेशी चीजें तथा मेवा, राई, जीरा, कालीमिर्च, रूई बिनौला, घी, तेल, लालमिर्च, उड़द, चना, मजीठ, गुड़, शक्कर, गेहूँ और चावल तेज रहें। धातुओं का भाव भी तेज रहे। ति. ७ से रूई में घटाबढ़ी होकर मन्दी हो। चान्दी में भारी घटाबढ़ी के बाद तेजी। ति. ९ से अनाज के भाव और कपूर, खांड, रस के पदार्थों में भी मन्दी का असर रहे।

आकाश लक्षण—ति. २ से ६ तक और ९ से ३० तक खण्ड-वृष्टि के योग हैं।

प्र. भाद्रपदकृष्णपक्षः ३० बुध इष्टम् ०।० दिनगणः ४९९

५ मं. बु. | ३ के. | ४ गु. चं. शु. सू. | ६ | २ | ७ श. | १ | ८ | १० | १२ | ९ रा. | ११

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	४	४	३	३	६	८	२
२९	००	११	२०	२५	२१	००	००
४०	९	२०	४०	५६	५८	६	६
२७	२५	१०	८	४९	३७	१८	१८
५७	३८	[illegible]	१३	७४	२	३	३
३४	१४	६	११	६	४४	११	११
सौर	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
क्रा	अ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
श्ले. ४	म. १	म. ४	श्ले. २	श्ले. ३	वि. १	मू. १	मृ. ३

श०वि०—भादों कारी तीज में उत्तर दिशा प्रदोष।
बादल लख सुख मानिये मिटे मिटायो दोष।
संग्रह कर लो अन्न का हका रहे षटमास।
भादव की दोयज दिना जो ना दीखे चन्द।

संवत २०१२ शाकः १८७७ प्र० (अधिक) भाद्रपद शु० प० ११ | हि. | अं. | मु. | चन्द्र | सू. उ. | सू. अ. | सौरसूर्यस्पष्टः

(१८ अग. से १ सि. तक १९५५ ई.) ...

ग्रहदर्शन—मं. शु. अस्त हैं। बु. ति. २ को पश्चिम में उदित होगा

बादल लख सूत मानियें मिटे मिटाया दोय।

संवत् २०१२ शाकः १८७७ प्र० (अधिक) भाद्रपद शु० प० ११

दि.मा.		ति.	वा.	घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		ह / भाद्र.	अ. / अग.	मु. / मोह.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		उदयकाले			
३२	४६	१	गु.	४४	२३	म.	४४	३७	प.	३९	९	किं.	१६	५	२	१८	२८	सिंहे	५	५७	७	२	४	०	३८	३
३२	४३	२	शु.	४२	१	पू. फा.	४४	५	शि.	३४	३३	बा.	१३	१२	३	१९	२९	कं. ५९।१६	५	५८	७	१	४	१	३५	३९
३२	३९	३	श.	४०	५३	उ. फा.	४४	४८	सि.	३०	५४	तै.	११	२७	४	२०	१	कन्यायाम्	५	५८	७	००	४	२	३३	१७
३२	३५	४	र.	४१	१	ह.	४६	४५	सा.	२८	१५	व.	१०	५७	५	२१	२	कन्यायाम्	५	५८	६	५९	४	३	३०	५६
३२	३२	५	चं.	४२	३०	चि	५०	१	शु.	२६	३५	ब.	११	४५	६	२२	३	तु. १८।२३	५	५९	६	५८	४	४	२८	३७
३२	२८	६	मं.	४५	७	स्वा.	५४	२३	शु.	२५	५५	कौ.	१३	४८	७	२३	४	तुलायाम्	५	५९	६	५७	४	५	२६	१९
३२	२४	७	बु.	४८	५३	वि.	५९	४६	ब्र	२६	७	ग.	१७	००	८	२४	५	वृ. ४३।२५	५	५९	६	५६	४	६	२४	३
३२	१९	८	गु.	५३	२४	अनु.	६०	००	ऐ.	२७	३	वि.	२१	८	९	२५	६	वृश्चिके	६	००	६	५५	४	७	२१	४९
३२	१५	९	शु.	५८	२७	अनु.	५	५१	वै.	२८	२३	बा.	२५	५५	१०	२६	७	वृश्चिके	६	१	६	५४	४	८	१९	३७
३२	१०	१०	श.	६०	००	ज्ये.	१२	२०	वि.	३९	५८	तै.	३१	००	११	२७	८	ध. १२।२०	६	१	६	५३	४	९	१७	२७
३२	५	१०	र.	३	३३	मू.	१८	४८	प्री.	३१	२५	ग.	३	३३	१२	२८	९	धनुषि	६	२	६	५२	४	१०	१५	१९
३२	००	११	चं.	८	१५	पू. षा.	२४	४५	आ.	३२	२७	वि.	८	१५	१३	२९	१०	म. ४१।४	६	३	६	५०	४	११	१३	१३
३१	५५	१२	मं.	१२	१६	उ. षा.	३०	१	सौ.	३२	४९	बा.	१२	१६	१४	३०	११	मकरे	६	४	६	४९	४	१२	११	९
३१	५०	१३	बु.	१५	९	श्र.	३४	९	शो.	३२	२३	तै.	१५	९	१५	३१	१२	मकरे	६	४	६	४७	४	१३	९	८
३१	४६	१४	गु.	१७	५	ध.	३७	१२	अ.	३१	०	व.	१७	५	१६	सि १	१३	कुं. ५।४०	६	५	६	४६	४	१४	७	१०
३१	४१	१५	शु.	१७	३४	श.	३८	५५	स.	२८	३७	ब.	१७	३४	१७	२	१४	कुम्भे	६	६	६	४५	४	१५	५	१३

ग्रहदर्शन—मं. शु. अस्त हैं। बु. ति. २ को पश्चिम में उदित होगा। गुरु सूर्योदय से पहिले पूर्व क्षितिज में श. सूर्यास्त बाद खमध्य से‡

पू. फा. यां बुधः ६।१९, वृश्चिके राहुः वृषे केतुः ५८।४५, पुरुषोत्तम*
चन्द्रदर्शनम्. पश्चिमोदयो बुधः ८।१,
सिंहे मघाशुक्रः १६।३९, मुहर्रम मु. १ सन् १३७५ हिजरी,
भ. १०।५७ उ. ४१।१ या.,

*(मल) मासारम्भः

सा. कन्यायां भानुः ४२।६ शरदृतुप्रा.
भ. ४८।५३ उ.
भ. २१।८ या., उ. फा. यां बुधः ५३।३८

‡पश्चिम की ओर नत होगा।

कन्या. बुधः ५८।१६
भ. ३५।५४ उ.
भ. ८।१५ या., श्ले. ३ गुरु. १७।११ पुरुषोत्तमा ११ व्र.,
†५।४०, सत्यव्र.,
प्रदोषव्रतम्,
पू. फा. यां रविः ११।१४, पू. फा. शक्रः ३।२२.
भ. १७।५ उ. ४७।१९ या., सितम्बर ९ ता० ३०, पञ्चक प्रा.†

प्र. भाद्रपद शुक्ल ८ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ५०७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	४	३	४	६	७	१
७	५	२५	२२	५	२२	२९	२९
११	१५	१२	२४	५०	२३	४०	४०
४९	२५	१४	३६	४२	२	५२	५२
५७	५८	९९	१२	७४	३	३	३
४६	१४	२८	५८	१८	२२	११	११
क्रां.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
म.	म.	पू.फा.	श्ले.	म.	वि.	ज्ये.	मू.
३	१	४	२	२	१	४	२

६ | ४ गु.
७ | ५ | शु.बु.सू.मं. | ३
श.
८ रा.चं. | २ के.
९ | ११ | १
१० | १२

इस पक्ष में—प्रजा में रोग भय, शासक वर्ग नवीन योजनाओं के घड़ने में लगे रहें। गेहूँ, चावल, रस, घी, तेल, बिनौला, सरसों आदि तेज। लाल रङ्ग की वस्तुएँ और पशु महंगे। रूई और शेयरों के भाव में मन्दी। चान्दी में २॥ के करीब तेजी होकर मन्दी भी ३ टका हो। ति. ११ से सोना और खांड़ के भाव में तेजी चलेगी और रूई में घटाबढ़ी होकर तेजी। विदेशी वस्तुओं का भाव मन्दा होगा।

आकाश लक्षण—ति. २ से १० तक और १४–१५ को बादल वर्षा के योग हैं। वर्षा कहीं ज्यादा, कहीं कम और कहीं तो धूल ही उड़े।

प्र. भाद्रपद शुक्ल १५ शुक्र इष्टम् ०।० दिनगणः ५१५

६ बु. | ४ गु.
७ | ५ | सू. मं.शु. | ३
श.
८ रा. | २ के.
९ | ११ चं. | १
१० | १२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	५	३	४	६	७	१
१५	१०	७	२४	१५	२२	२९	२९
५	२०	३९	७	४५	५३	१५	१५
१३	५६	५८	४१	४३	२	२५	२५
५८	३८	८८	१२	७४	४	३	३
३	१०	४५	५०	२७	४	११	११
क्रां.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा.	म.	उ.फा.	श्ले.	पू.फा.	वि.	ज्ये.	मू.
१	३	४	३	१	१	४	२

शकुनवि०—सूर्योदय के साथ ही मेघ गर्जना होय। प्रहर एक या दोय में वर्षा अच्छी होय॥

द्वितीय भाद्रपद कृष्णा १२ बुधवार को प्रातः ६ बजे नरेन्द्र के लड़की पहेली लड़की उत्पन्न हुई - मघा नक्षत्र को प्रथम चरण

संवत् २०१२ शाकः १८७७ द्वि. (अधिक) भाद्रपदकृष्णपक्षः १२ | हि. अं. मु. | चन्द्र | सू. उ. | सू. अ. | सौर सूर्यस्पष्टाः

दि. मा.		ति.	वा.	घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		भाद्र.	सितं.	मुहं.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		सौर सूर्यस्पष्टाः उदयकाले			
३१	३६	१	श.	१६	४६	पू.भा.	३९	२६	धृ.	२५	१३	कौ.	१६	४६	१८	३	१५	मी २४।१८	६	६	६	४४	४	१६	३	१६
३१	३१	२	र.	१४	४६	उ.भा.	३८	४४	शू.	२०	५०	ग.	१४	४६	१९	४	१६	मीने	६	७	६	४३	४	१७	१	२१
३१	२६	३	चं.	११	३७	रे.	३७	२	गं.	१५	३७	वि.	११	३७	२०	५	१७	मे. ३७।२	६	८	६	४२	४	१७	५९	२८
३१	२२	४	मं.	७	४०	अ.	३४	२९	वृ.	९	३९	बा.	७	४०	२१	६	१८	मेषे	६	८	६	४०	४	१८	५७	३७
३१	१७	५	बु.	२	४७	भ.	३१	१४	ध्रु.	५५ (३)	५२ (३)	तै.	२	४७	२२	७	१९	वृ. ४५।१७	६	८	६	३९	४	१९	५५	४८
अवम.		६	बु.	५४	३४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३१	१२	७	गु.	५१	२८	कृ.	२७	२६	ह.	४८	२४	वि.	२४	२४	२३	८	२०	वृषे	६	९	६	३८	४	२०	५४	१
३१	७	८	शु.	४५	२३	रो.	२३	१९	व.	४०	४४	बा.	१८	२५	२४	९	२१	मि ५१।१२	६	९	६	३६	४	२१	५२	१६
३१	२	९	श.	३९	१६	मृ.	१९	५	सि.	३२	५९	तै.	१२	११	२५	१०	२२	मिथुने	६	१०	६	३५	४	२२	५०	३३
३०	५८	१०	र.	३३	१८	आ.	१४	५७	व्य.	२५	२२	व.	६	१७	२६	११	२३	क. ५७।५	६	११	६	३४	४	२३	४८	५१
३०	५३	११	चं.	२७	४४	पुन.	११	८	व.	१८	३	ब.	०	३१	२७	१२	२४	कर्के	६	११	६	३२	४	२४	४७	१२
३०	४८	१२	मं.	२२	४१	पु.	७	५१	प.	११	९	तै.	२२	४१	२८	१३	२५	कर्के	६	१२	६	३१	४	२५	४५	३७
३०	४३	१३	बु.	१८	२६	श्ले.	५	१३	शि.	५९ (४)	५ (४८)	व.	१८	२६	२९	१४	२६	सिं ५।१३	६	१३	६	३०	४	२६	४४	५
३०	३८	१४	गु.	१५	१	म.	३	२६	सा.	५४	१४	श.	१५	१	३०	१५	२७	सिंहे	६	१३	६	२८	४	२७	४२	३६
३०	३३	३०	शु.	१२	४३	पू.फा.	२	४०	शु.	५०	१६	ना.	१२	४३	३१	१६	२८	कं. १७।४७	६	१४	६	२७	४	२८	४१	९

(३ सितं. से १६ सितं. तक १९५५ ई.) दक्षिणायनमुत्तरगोलः शरदृतुः।

ग्रहदर्शन—मं. शु. अस्त हैं। बु. सूर्यास्त बाद पश्चिमक्षितिज से ऊपर एवं शनि खमध्य से पश्चिम की ओर आता दीखेगा। गुरु सूर्योदय§ §पहले पूर्व क्षितिजस्थ होगा।

हस्ते बुधः ३६।५८,
भ. ४३।११ उ., अगस्त्योदयः ५६।१५,
भ. ११।३७ या. पञ्चक स. ३७।२, श्रीगणेश ४ व्र.,
पू. फा. भौमः ४१।५४
भ. ५७।२१ उ.

भ. २४।२४ या., विशा. २ शनिः १७।३९,

उ. फा. शुक्रः ४६।५०,
भ. ६।१७ उ. ३३।१८ या.,
कमला ११ व्र.,
उ. फा. रविः ५५।४९, चित्रा. बुधः ५३।२८, कन्या. शुक्रः २७।४६,‡
भ. १८।२६ उ., ४६।४३ या., श्ले. ४ गुरुः ११।२९, ‡प्रदोष व्र.,
जन्मोत्सव धर्ममार्तण्ड श्री १०५ बघांट नरेशजी
पुरुषोत्तम (मल-अधिक) माससमाप्तिः।

द्वि. भाद्रपदकृष्ण ८ शुक्र इष्टम् ०।० दिनगण: ५२२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	५	३	४	६	७	१
२१	१४	१७	२५	२४	२३	२८	२८
५२	४७	२५	३६	२७	२३	५३	५३
१६	४६	३०	००	१६	१२	९	९
५८	३८	८०	१२	७४	४	३	३
१५	८	१३	१९	३२	३२	११	११
सौरः	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा. ३	पू.फा. १	ह. ३	श्ले. ३	पू.फा. ४	वि. २	ज्ये. ४	मृ. २

६ बु. ४ गु. ५ शु. सू. मं. ३ ७ श. ८ रा. २ चं. के. ९ ११ १ १० १२

इस पक्ष में—खेतियों को हानि पहुँचे। वृद्धों और बच्चों को कष्ट। नेपाल ब्रह्मा आदि में शासकों को कष्ट, भय। कहीं सीमा सम्बन्धी झंझट पड़ें। रूई, कपास, घी, सरसों, तेल, ऊनी कपड़ा, अफीम, सोना, चान्दी, गेहूँ, चावल इनका भाव तेज। ति. ५ से तिल, तेल के भाव में तेजी। और ति. ११ से रूई के भाव में मन्दी आवे। चान्दी में घटा-बढ़ी चलकर रुख तेज।

आकाश लक्षण—इस पक्ष में प्रायः वर्षा के कम योग हैं, फिर भी ति. १ से ४ तक तथा ति. १० से ३० तक कहीं २ कुछ वर्षा होवे।

द्वि. भाद्रपदकृष्ण ३० शुक्र इष्टम् ०।० दिनगण: ५२९
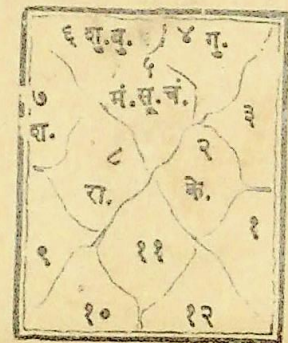
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	५	३	५	६	७	१
२८	१९	२५	२७	३	२३	२८	२८
४१	१४	३९	२	९	५७	३०	३०
९	५६	१०	००	१५	१०	५४	५४
५८	३८	६५	१२	७४	५	३	३
३३	११	४	८	३६	५	११	११
सौरः	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. १	पू.फा. २	चि. १	श्ले. ४	उ.फा. २	वि. २	ज्ये. ४	मृ. २

२-भाद्रपद कृष्णा पक्ष ... शकुन वि०—काले वर्ण के बादला, जिसमें बिजली होय।

शकुन वि०—काले वर्ण के बादला, जिसमें बिजली होय।
वर्षा

संवत् २०१२ शाकः १८७७ द्वि. शुद्ध भाद्रपद शु. प. १३ | (१७ सितं. से १ अक्तू. तक १९५५ ई.) दक्षिणा. द. गोलः शरदृतुः।

दि. मा.		ति.	वा.	घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		हि. आश्विन	अं. सितं.	मु. सफर	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		सौरसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
३०	२९	१	श.	११	३५	उ.फा.	३	६	शु.	४७	१९	ब.	११	३५	१	१७	२९	कन्यायाम्	६	१४	६	२६	४	२९	३९	४३
३०	२४	२	र.	११	४५	ह.	४	४६	ब्र.	४५	२०	कौ.	११	४५	२	१८	१	तु. ३६।१४	६	१४	६	२४	५	०	३८	१८
३०	१९	३	चं.	१३	१४	चि.	७	४२	ऐं.	४४	२३	ग.	१३	१४	३	१९	२	तुलायाम्	६	१४	६	२३	५	१	३६	५५
३०	१४	४	मं.	१५	५०	स्वा.	११	४४	वै.	४४	१८	वि.	१५	५०	४	२०	३	तुलायाम्	६	१५	६	२२	५	२	३५	३४
३०	९	५	बु.	१९	३७	वि.	१६	५४	वि.	४४	५९	बा.	१९	३७	५	२१	४	वृ. ०।३६	६	१६	६	२०	५	३	३४	१५
३०	४	६	गु.	२४	१३	अनु.	२२	५०	प्री.	४६	११	तै.	२४	१३	६	२२	५	वृश्चिके	६	१७	६	१९	५	४	३२	५९
३०	००	७	शु.	२९	१९	ज्ये.	२९	१७	आ.	४७	४३	व.	२९	१९	७	२३	६	ध. २९।१७	६	१७	६	१८	५	५	३१	४६
२९	५५	८	श.	३४	३२	मू.	३५	४६	सौ.	४९	६	वि.	१	५५	८	२४	७	धनुषि	६	१८	६	१६	५	६	३०	३६
२९	५०	९	र.	३९	१९	पू.षा.	४१	५४	शो.	५०	११	बा.	६	५५	९	२५	८	म. ५८।१६	६	१९	६	१५	५	७	२९	२७
२९	४६	१०	चं.	४३	२६	उ.षा.	४७	२१	अ.	५०	४२	तै.	११	२२	१०	२६	९	मकरे	६	२०	६	१३	५	८	२८	२०
२९	४२	११	मं.	४६	३०	श्र.	५१	४८	सु.	५०	२३	व.	१४	५८	११	२७	१०	मकरे	६	२१	६	१२	५	९	२७	१५
२९	३६	१२	बु.	४८	३१	ध.	५५	८	धृ.	४९	१३	ब.	१७	३०	१२	२८	११	कुं. २३।२८	६	२१	६	११	५	१०	२६	१२
२९	३२	१३	गु.	४९	७	श.	५७	१०	शू.	४७	१	कौ.	१८	४९	१३	२९	१२	कुम्भे	६	२२	६	१०	५	११	२५	१३
२९	२८	१४	शु.	४८	२६	पू.भा.	५७	५९	गं.	४३	४८	ग.	१८	४६	१४	३०	१३	मी. ४२।४७	६	२३	६	९	५	१२	२४	१५
२९	२३	१५	श.	४६	३२	उ.भा.	५७	३४	वृ.	३९	३५	वि.	१७	२९	१५	अ१	१४	मीने	६	२३	६	८	५	१३	२३	१९

ग्रहदर्शन—म. शु. अस्त हैं। बु. श. सूर्यास्तबाद पश्चिम क्षितिज में, गुरु सूर्योदय से पहिले पूर्व से खमध्य की ओर आता दीखेगा।

चन्द्रदर्शनम्, सं. कन्यायामर्कः २०।४६ मु. ३० पुण्य ४।४६ उ.
सफर मु. २, मेला श्रीबाबा गुसाईं आणा कुराली,
भ. ४४।३२ उ., हरितालिका ३ व्र., कलङ्क ४ (पत्थर ४) चन्द्रास्तः θ
भ. १५।५० या., तुलायां बुधः २४।४४ θचं. ७ मि. ४९
हस्ते शुक्रः ३०।४, ऋषि ५
सूर्यषष्ठी व्र. *३३।५६, पद्मा ११ व्र. सर्वेषाम्,
भ. २९।१९ उ., सा. तुला. भानुः ३५।३४
भ. १।५५ या., श्री दधीचिजयन्ती
श्रीचन्द्र ९, (उदासीन सम्प्रदाय-महोत्सवः)
§अक्तूबर १० ता. ३१सत्यव्रतम्, प्रौष्ठपदी १५, महालयारम्भः
भ. १४।५८ उ. ४६।३० या., हस्ते रविः ३३।२८, उ. फा. भौमः*
पञ्चक प्रा. २३।२८, श्रीवामन १२ मेला अम्बाला व पटियाला,
प्रदोष व्र.,
भ. ४८।२६ उ. अनन्त १४ व्र., मेला छपार व बाबा सोढल जालन्धर
भ. १७।२९ या., वक्रीबुधः ५४।१७, मघा १ सिंहे गुरुः १९।५८,§

द्वि० भाद्रपद शुक्ल ८ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ५३७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	४	६	३	५	६	७	१
६	२४	२	२८	१३	२४	२८	२८
३०	२०	४६	३६	६	३९	५	५
३६	१५	५०	५४	३९	४६	२७	२७
५८	३८	४२	११	७४	५	३	३
५०	२२	६	३८	४२	२९	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. ४	पू.फा. ४	चि. ३	आश्ले. ४	ह. १	वि. २	ज्ये. ४	मृ. २

इस पक्ष में—प्रजा में चोर तथा वायु आदि का उपद्रव होवे, कहीं युद्धविग्रह से क्षत्रियों को हानि पहुँचे। व्यापार की वृद्धि हो। रूई अलसी में तेजी, स्वर्ण, घी, तेल के भाव में कुछ नरमाई हो। गेहूँ, जौ, चना का बाजार तेज। ति. पञ्चमी से चांदी, सरसों और मूंगफली बिनौला में मन्दी आवे। घास, लकड़ी, गुड़, खांड, अफीम तेज, सोना में भी एक टका की तेजी हो, लाल रंग मिर्च, तांबा, बारदाणा तेज। चना के भाव में घटाबढ़ी के साथ अच्छी तेजी आवे।

आकाश लक्षण—ति. ९ से १३ तक विशेषकर १४–१५ को वर्षा के योग हैं। वायु का भी जोर रहे।

द्वि० भाद्रपदशुक्ल १५ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ५४४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
५	४	६	३	५	६	७	१
१३	२८	५	२९	२१	२५	२७	२७
२३	४८	३४	५६	४९	१९	४३	४३
१९	३	५	१९	३७	४८	११	११
५९	३८	६	११	७४	५	३	३
४	१९	०	९	४२	५४	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
ह. २	उ.फा. १	चि. ४	आश्ले. ४	ह. ४	वि. २	ज्ये. १	मृ. २

शकुन विचार—भादों सुदी जो पूर्णिमा बादल बिजली गाज।
बादल चन्दा ऊगसी जल्दी बेचो अनाज॥

जो चन्दा निर्मल उगे, घन ना बिजली होय।
गेहूँ जौ सञ्चय करो लाभ सवाया होय॥

भा. शु. ११ रात्रि के समय मेघ की गर्जना हो तो टिड्डियों का उपद्रव होवे।

संवत् २०१२ शाकः १८७७ अश्विनकृष्णपक्षः १४																हि.	अं.	मु.	चंद्र	सू. उ.		सू. अ.		सौरसूर्यस्पष्टः			
दि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.		आङ्गि.	अक्तू.	सफ़र	संचारः	रेल्वे		रेल्वे		उदयकाले			
२९	१९	१	र.	४३	३१	रे.	५६	५	धृ.	३४	३२	बा.	१५	१		१६	२	१५	मे. ५६।५	६	२४	६	६	५	१४	२२	२५
२९	१५	२	चं.	३९	३८	अ.	५३	४८	व्या	२८	४१	तै.	११	३४		१७	३	१६	मेषे	६	२४	६	५	५	१५	२१	३४
२९	१०	३	मं.	३४	५२	भ.	५०	४०	ह.	२२	७	व.	७	१५		१८	४	१७	मेषे	६	२४	६	४	५	१६	२०	४५
२९	५	४	बु.	२९	२७	कृ.	४७	१	व.	१५	३	ब.	२	९		१९	५	१८	वृ. ४।४५	६	२५	६	३	५	१७	१९	५९
२९	००	५	गु.	२३	३८	रो.	४२	५८	सि.	७/५९	३६/५६	तै.	२३	३८		२०	६	१९	वृषे	६	२६	६	१	५	१८	१९	१५
२८	५७	६	शु.	१७	३९	मृ.	३८	४३	व.	५२	५	व.	१७	३९		२१	७	२०	मि १०।५०	६	२७	६	०	५	१९	१८	३४
२८	५२	७	श.	११	३५	आ.	३४	३७	प.	४४	२४	ब.	११	३५		२२	८	२१	मिथुने	६	२७	६	०	५	२०	१७	५४
२८	४७	८	र.	५	४२	पुन.	३०	४२	शि.	३६	५१	कौ.	५	४२		२३	९	२२	क. १६।४१	६	२८	५	५८	५	२१	१७	१७
२८	४२	९	चं.	०	१३	पु.	२७	१३	सि.	२९	४२	ग.	०	१३		२४	१०	२३	कर्के	६	२९	५	५७	५	२२	१६	४३
अवम.		१०	चं.	५५	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२८	३७	११	मं.	५१	४	श्ले.	२४	२५	सा.	२३	५	ब.	२३	८		२५	११	२४	सि. २४।२५	६	२९	५	५७	५	२३	१६	१०
२८	३२	१२	बु.	४७	४२	म.	२२	३१	शु.	१७	९	कौ.	१९	२३		२६	१२	२५	सिंहे	६	२९	५	५६	५	२४	१५	३९
२८	२८	१३	गु.	४५	२७	पू.फा	२१	२७	शु.	११	५९	ग.	१६	३४		२७	१३	२६	कं. ३६।२९	६	३०	५	५५	५	२५	१५	११
२८	२३	१४	शु.	४४	२५	उ.फा	२१	३४	ब्र.	७	४१	वि.	१४	५६		२८	१४	२७	कन्यायाम्	६	३१	५	५३	५	२६	१४	४५
२८	१९	३०	श.	४४	३९	ह.	२२	५४	ऐं.	४	२३	च.	१४	३२		२९	१५	२८	तु. ५४।१३	६	३२	५	५२	५	२७	१४	२२

(२ अक्तू. से १५ अक्तू. तक १९५५ ई०) दक्षिणायनगोलः शरदृतुः।

ग्रहदर्शन—ति. ५ को मं. उदय बु. ति. ६ को पश्चिम में अस्त होगा। गु. सूर्योदय से पहिले पूर्व क्षितिज में श. सूर्यास्त बाद पश्चिम§

कन्यायां भौमः ५२।३७, चित्रा शुक्रः १२।३४, पञ्चक स. ५६।५, पितृपक्षः

§क्षितिज में दीखेगा। शु. अस्त है।

भ. ७।१५ उ. ३४।४२ या.,

†बुधः ३१।५९

भौमोदयः ३८।४५

भ. १७।३९ उ. ४४।३७ या., तुलायां शुक्रः ३३।१८, पश्चिमास्तो-†

सौभाग्यवतीनां श्राद्धम्,

भ. २७।४३ उ. ५५।१३ या. व कन्या. बुधः ५८।०

चित्रा. रविः ३।५२, इन्दिरा ११ व्र. स्मार्त्तानाम्,

स्वा. शुक्र. ५३।५१, इन्दिरा ११ व्र. वैष्ण.,

भ. ४५।२७ उ., विशा. ३ शनिः ५३।१४, प्रदोष व्र.,

भ. १४।५६ या. शस्त्राग्निविषादिहतानां श्राद्धम्,

अज्ञातमृततिथीनां सर्वपितॄणाञ्च श्राद्धम्, गजच्छाया २२।५४ या.,

आश्विनकृष्ण ८ रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ५५२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	६	४	६	६	७	१
२१	३	२	१	१	२६	२७	२७
१७	५४	३	२२	४८	८	१७	१७
१७	५५	४३	५१	१३	४२	४४	४४
५९	३८	५२	१०	७४	६	३	३
२३	२२	१९	३०	४३	१६	११	११
सौरः	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
ह.	उ.फा.	चि.	म.	चि.	वि.	ज्ये.	मृ.
४	३	३	१	३	२	३	३

७ श.बु.
५ गु.
६
८ शु.
रा.
सू.मं.
४
९
३ चं.
२
१०
१२
के.
११
१

व्यापारियों के लिये यह पक्ष चिन्ताप्रद है। कहीं कहीं अग्नि काण्ड से भी हानी हो। रूई में करीब ३० टका तेजी होकर बाद में मन्दी आवे। चांदी में उतार-चढ़ाव होकर–३–४ टके की तेजी हो। घी, गुड़ खण्ड अलसी सोना लालवर्ण की वस्तुयें तेज। गेहूँ जौं चना बाजरा मक्की जवार के भाव में तेजी आकर पीछे भाव कुछ मन्दा हो। ति.–छठ से सोने में दो टका की तेजी। रूई में मन्दी का झटका आवे।

आकाश लक्षणम्—ति. ५–६–तथा १०–से–१३–तक कहीं कहीं बादल-चाल वायु के साथ बूंदा बांदी भी हो।

आश्विनकृष्ण ३० शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ५५८

७शु.श.
५ गु.
६
८
बु.सू.मं.
चं.
४
रा.
९
३
२
के.
१०
१२
११
१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	५	४	६	६	७	१
२७	७	२५	२	९	२६	२६	२६
१४	४५	१०	२३	१७	४७	५८	५८
२२	१०	५६	५०	२५	१६	३८	३८
५९	३८	६५	९	७४	६	३	३
३७	२३	५८	५४	५२	३२	११	११
सौरः	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
चि.	उ.फा.	चि.	म.	पू.फा.	वि.	ज्ये.	मृ.
२	४	१	१	१	३	४	
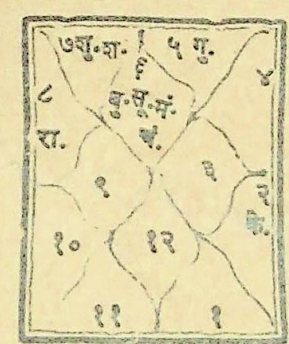
श० वि०—साते आठे क्वार सुदी जो वर्षा हो जाय। राज प्रजा दोनों सुखी सब संशय मिट जाय ॥१॥

यदि किसी की श्राद्ध तिथि याद न हो तो उसका श्राद्ध एकादशी वा अमावसको करना चाहिये।

संवत् २०१२ शाकः १८७७ आश्विन शुक्लपक्षः १५

दि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. क्रान्ति	अं. अक्षांश	मु.	चन्द्र सञ्चारः	सू.उ. रेल्वे		सू. अ रेल्वे		सौर सूर्यस्पष्टः उदयकाले			
२८	१४	१	र.	४६	१४	चि.	२५	३२	वै.	२	४	कि.	१५	२६	३०	१६	२९	तुलायाम्	६	३३	५	५०	५	२८	१४	०
२८	९	२	चं.	४८	५४	स्वा.	२९	२०	वि.	०	४७	बा.	१७	३४	१	१७	३०	तुलायाम्	६	३३	५	४८	५	२९	१३	४०
२८	५	३	मं.	५२	४६	वि.	३४	१५	प्री.	०	२१	तै.	२०	५०	२	१८	१	वृ.१८। १	६	३४	५	४७	६	०	१३	२२
२८	००	४	बु.	५७	२५	अनु.	४०	२	आ.	०	४७	व.	२५	५	३	१९	२	वृश्चिके	६	३५	५	४६	६	१	१३	६
२७	५५	५	गु.	६०	००	ज्ये.	४६	२३	सौ.	१	४६	ब.	३०	००	४	२०	३	ध.४६।२३	६	३६	५	४५	६	२	१२	५४
२७	५०	५	शु.	२	३५	मू.	५२	५५	शो.	३	६	बा.	२	३५	५	२१	४	धनुषि	६	३७	५	४४	६	३	१२	४४
२७	४५	६	श.	७	५३	पू.षा.	५९	१२	अ.	४	३३	तै.	७	५३	६	२२	५	धनुषि	६	३७	५	४३	६	४	१२	३६
२७	४१	७	र.	१२	४६	उ.षा.	६०	००	सु.	५	४०	व.	१२	४६	७	२३	६	म.१५।३६	६	३७	५	४२	६	५	१२	३१
२७	३६	८	चं.	१६	५९	उ.षा.	४	४९	धृ.	६	२०	ब.	१६	५९	८	२४	७	मकरे	६	३८	५	४१	६	६	१२	२८
२७	३२	९	मं.	२०	७	श्र.	९	३१	शू.	६	१३	कौ.	२०	७	९	२५	८	कु.४१।१९	६	३९	५	४०	६	७	१२	२७
२७	२८	१०	बु.	२२	१३	ध.	१३	८	गं.	५	१४	ग.	२२	१३	१०	२६	९	कुम्भे	६	४०	५	३९	६	८	१२	२८
२७	२४	११	गु.	२२	५४	श.	१५	३०	वृ.	३	१५	वि.	२२	५४	११	२७	१०	कुम्भे	६	४०	५	३८	६	९	१२	३१
२७	२१	१२	शु.	२२	१८	पू.भा.	१६	३४	ध्रु.	०/५६	१७/१८	बा.	२२	१८	१२	२८	११	मी. १।१८	६	४१	५	३७	६	१०	१२	३५
२७	१७	१३	श.	२०	२८	उ.भा.	१६	२७	ह.	५१	२४	तै.	२०	२८	१३	२९	१२	मीने	६	४२	५	३७	६	११	१२	४२
२७	१३	१४	र.	१७	३२	रे.	१५	१३	व.	४५	४२	व.	१७	३२	१४	३०	१३	मे.१५।१३	६	४२	५	३६	६	१२	१२	५१
२७	९	१५	चं.	१३	४३	अ.	१३	८	सि.	३९	२०	ब.	१३	४३	१५	३१	१४	मेषे	६	४३	५	३५	६	१३	१३	२

(१६ अक्टू. से ३१ अक्ट. तक १९५५ ई०) दक्षिणायनगोलौ हेमन्तर्तुः।

ग्रहदर्शन—मं.सू.उ. से पहिले पूर्वक्षितिज में गु. उससे कुछ ऊपर होगा। शु.ति.४ को बु.ति.५ को क्रमशः प.एवं पू. में उ. होंगे। श.ति.१४ को+

व.हस्तेबुधः ५०।३२, शारद नवरात्रारम्भः, घटस्थाप., मातामहश्राद्धम्, चन्द्रदर्शनम्, सं.तुलायामर्कः ४६।३४, मु.४५ पुण्यं परदिने मध्याह्नं या., हस्ते भौमः ३०।४६, रविडलावल मु. ३, +अस्त होगा। भ. २५।५ उ. ५७।२५ या., पश्चिमोदय शुक्रः ३५।२४; शु. उ. मघा.२ गुरुः ५२।९, ज्ये. ३ राहुः मू.१ केतुः ५१।३१, पू.उ.बुधः ४८।४०, सरस्वत्यावाहनम्, θआव. भौ. दा. आश्वि. ।।।।ऽबु.ऽन्. (४७ घ.ϕ मार्गीबुधः ५९।२९सरस्वती पूजा, ‡भानुः ५४।०, हेमन्तर्तु प्रा. भ. १२।४६ उ. ४४।५२ या., विशा. शुक्रः ४३।२३, सा. वृश्चिक‡ स्वा.रविः २७।३३, श्रीदुर्गा ८, सरस्वती विसर्जनम्, मेला ज्वालाजी† पञ्चक प्रा. ४१।१९, विजया १० अपराजिता पूज., मेला दशहरा,* भ. ५२।३३ उ., पट्टाभिषेके विजया १०, ϕउ.)।ऽ।।ल. ५ भ.२२।५४ या.पापांकुशा ११ व्र. *घ.ऽश.ऽ।।।।।।।दि.९ अन्य गोधूलिः प्रदोष व्र., ३१५।१३ शरत् १५ सत्यव्र. रे.।ऽ।।ऽमं.।।।।। दि.ल. ९θ चित्रा. बुधः १७।२४, रे.।ऽ।।ऽमं.ऽअ. ल. धूलिमुख †व तारादेवी, भ. १७।३२ उ. ४५।३७ या., अस्तः शनिः ५९।१९, पञ्चक स.§ वृश्चिके शुक्रः ३५।२४, कोजागरी व्र., कार्त्ति. स्ना. प्रा.,

आश्विनशुक्ल ८ चन्द्र इष्टम् ०।० दिनगणः ५६७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	५	५	४	६	६	७	१
९	१३	२०	३	२०	२७	२६	२६
१२	३१	७	४८	३१	४७	३०	३०
२८	११	८	४२	२४	४५	००	००
५९	३८	५	९	७४	६	३	३
५७	३०	२	२	५४	४७	११	११
सौर	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
चि.	ह.	ह.	म.	वि.	वि.	ज्ये.	मू.
४	२	४	२	१	३	३	१

इस पक्ष में—व्यापारिक उथल-पुथल खूब होगी। रूई तेज, सोना, चांदी, बिनौला, मूंगफली, घी के भाव में मन्दी आवे। मूंग, मोठ, चना आदि अनाज तथा हैसियन में तेजी हो। शेयरों के भाव में घटाबढ़ी होकर मन्दी, ति. ७ से चपड़ा, लाख और गुगुल, सुपारी, मिर्च, सरसों, राई, हींग, जायफल, लौंग, जावित्री करयाने की वस्तुएँ, रेशम सोना, चांदी में तेजी हो। पशुओं में गौ, भैंस रंगों में सुर्ख रंग मजीठ लाल चन्दन का बाजार तेज रहेगा। मक्की, बाजरा, जूट, सण का भाव सस्ता। तिल तेल अलसी का भाव समान रहे।

आकाश लक्षणम्—ति. ६ से १० तक और पूर्णमासी को कहीं कहीं बादल चाल हो।

आश्विनशुक्ल १५ चन्द्र इष्टम् ०।० दिनगणः ५७४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	५	५	४	६	६	७	१
१३	१८	२५	४	२९	२८	२६	२६
१३	०	८	४८	१५	३६	७	७
२	४४	७	२८	४६	१	४४	४४
६०	३८	६५	८	७४	६	३	३
११	३०	१५	१०	५५	५७	११	११
सौर	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
स्वा.	ह.	चि.	म.	वि.	ज्ये.	ज्ये.	मू.
२	३	१	२	३	४	३	१

शकुन विचार—सातें आठें क्वार सुदी जो वर्षा हो जाय। राजा प्रजा दोनों गर्वी सब संशय मिट जाय।

संवत् २०१२ शाकः १८७७ कार्तिक कृष्णपक्षः १६															हि.	अं.	मु.	चन्द्र	सू. उ.		सू. अ.		सौरसूर्यस्पष्टः			
दि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	कार्ति.	नवंबर	मु.	सञ्चारः	रेल्वे		रेल्वे		उदयकाले			
२७	५	१	मं.	९	००	भ.	१०	१२	व्य.	३२	२०	कौ.	९	००	१६	१	१५	वृ. २४।१६	६	४४	५	३४	६	१४	१३	१६
२७	२	२	बु.	३	४१	कृ.	६	३६	व.	२४	५३	ग.	३	४१	१७	२	१६	वृषे	६	४४	५	३३	६	१५	१३	३२
अवम.		३	बु.	५४	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२६	५८	४	गु.	५१	५९	रो.	५८	३८	प.	१७	१२	ब.	२४	५७	१८	३	१७	मि. १०।३३	६	४६	५	३२	६	१६	१३	४९
२६	५४	५	शु.	४५	५९	आ.	५४	१४	शि.	९	१८	कौ.	१८	५९	१९	४	१८	मिथुने	६	४७	५	३१	६	१७	१४	९
२६	५०	६	श.	४०	१०	पुन.	५०	१४	सि.	५३	४६	ग.	१३	४	२०	५	१९	क. ३६।१४	६	४८	५	३१	६	१८	१४	३१
२६	४६	७	र.	३४	४६	पु.	४६	३९	शु.	४६	२५	वि.	७	२८	२१	६	२०	कर्के	६	४९	५	३०	६	१९	१४	५४
२६	४३	८	चं.	२९	५३	श्ले.	४३	३०	शु.	३९	३६	बा.	२	१९	२२	७	२१	सिं.४३।३०	६	५०	५	२९	६	२०	१५	१९
२६	३९	९	मं.	२५	४७	म.	४१	३२	ब्र.	३३	२४	ग.	२५	४७	२३	८	२२	सिंहे	६	५१	५	२८	६	२१	१५	४६
२६	३५	१०	बु.	२२	३३	पू.फा.	४०	१४	ऐं.	२७	५६	वि.	२२	३३	२४	९	२३	कं. ५५।११	६	५१	५	२८	६	२२	१६	१५
२६	३१	११	गु.	२०	२५	उ.फा.	४०	३	वै.	२३	१६	बा.	२०	२५	२५	१०	२४	कन्यायाम्	६	५१	५	२७	६	२३	१६	४४
२६	२७	१२	शु.	१९	२९	ह.	४१	१	वि.	१९	३६	तै.	१९	२९	२६	११	२५	कन्यायाम्	६	५२	५	२७	६	२४	१७	१४
२६	२४	१३	श.	१९	५२	चि.	४३	१९	प्री.	१६	५६	व.	१९	५३	२७	१२	२६	तु. १२।१०	६	५३	५	२६	६	२५	१७	४७
२६	२०	१४	र.	२१	३३	स्वा.	४६	५१	आ.	१५	१९	श.	२१	३३	२८	१३	२७	तुलायाम्	६	५४	५	२५	६	२६	१८	२४
२६	१६	३०	चं.	२४	२१	वि.	५१	३३	सौ.	१४	२९	ना.	२४	२१	२९	१४	२८	वृ. ३५।२२	६	५४	५	२४	६	२७	१९	२

(१ नवं. से १४ नवं. तक १९५५ ई०) दक्षिणायनगोलो हेमन्तर्तुः।

ग्रहदर्शन—मं. सूर्योदय से पहिले क्षितिज में एवं गुरु इससे ऊपर दीखेगा। बु. ति. १३ पूर्व में अस्त होगा। शनि अस्त है। शु. सूर्यास्तA

नवंबर ११ ता. ३० Aबाद पश्चिम में होगा।

भ. ३०।४८ उ. ५७।५६ या.

तुलायां बुधः ४५।४८, अनु. शुक्रः १५।३४, कर्क ४ व्र. (कर्वा ४)†

†चन्द्रोदय रेल्वे घं. ८ मि. २४

भ. ४०।१० उ.

भ. ७।२८ या. विशा. रविः ४४।४७

अहोई ८

भ. ५४।१० उ., चित्रा. भौमः १६।३० स्वात्यां बुधः १३।४०,

भ. २२।३३ या.,

रमा ११ व्र. सर्वेषाम् ‡निस्सारणंम्

विशा. ४ वृश्चि. शनिः ५१।१३ प्रदोष व्र., धन १३, यमाय दीपदानम्

भ. १९।५२ उ. ५०।४२ या., पूर्वास्तो बुधः ७।३२ श्री हनुमज्जन्मदिनम्

ज्ये. शुक्रः ५६।१५ श्रीमहालक्ष्मी पू. (दीपमाला) शेषरात्रौ दारिद्र्य‡

अन्नकूटम्, गोवर्धन पूजा, वर्ष्टिकाकर्षणम् (रस्साकशी)

कार्तिककृष्ण ८ चन्द्र इष्टम् ०।० दिनगणः ५८१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	५	६	४	७	६	७	१
२०	२२	४	५	८	२९	२५	२५
१५	३०	४७	४१	०	२५	४५	४५
१९	३९	४२	५९	१६	२८	२८	२८
६०	३८	९०	७	७४	७	३	३
२५	४२	१४	१२	५५	७	११	११
गतिः	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
क्रांतिः	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
वि.	ह.	चि.	म.	अनु.	वि.	ज्ये.	मू.
१	४	४	२	२	३	३	१
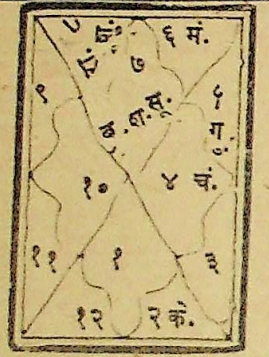
प्रजा में फोडा फुन्सी रक्त विकार से कष्ट हो, रुई शेयर अफीम चांदी के भाव पहिले कुछ मन्दे में रहकर पीछे तेज हों। चावल, गेहूँ, बाजरा, मकई मन्दी। अलसी, खल आदि के भाव में तेजी रहे। सूत, रेशम का भाव मन्दा। पशुओं का भाव तेज। ति. ५ से ऊर्द, तिल, तेल भाव में तेजी हो। ति. ९ से स्वर्ण आदि धातु तथा अफीम के भाव में तेजी। साथ ही सरसों, मसूर, ऐरण्ड का भाव भी तेज चले। ति. १२ से रुई के भाव में उतार-चढ़ाव बहुत हो। सोने के भाव में कमीवेशी। अन्त में रुख तेज हो। रस कश भी तेज हो, ति. ११ से गेहूँ, जौ, चना के भाव में तेजी खासी हो।

आकाश लक्षणम्—ति. ५-९-११-१३ को उत्तर में कहीं कहीं बादल चाल हो। प्रायः बहुत उमस आकाश साफ रहेगा।

कार्तिककृष्ण ३० चन्द्र इष्टम् ०।० दिनगणः ५८८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	५	६	४	७	७	७	१
२७	२७	१५	६	१६	०	२५	२५
१९	१	४७	२८	४४	१५	२३	२३
२	४७	११	१९	४१	१३	१२	१२
६०	३८	९६	६	७४	७	३	३
३८	४५	५	११	५५	७	११	११
गतिः	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
क्रांतिः	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
वि.	चि.	स्वा.	म.	ज्ये.	वि.	ज्ये.	मू.
३	२	३	२	१	४	३	१
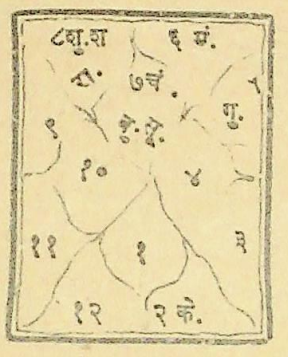
शकुन विचार—कार्तिक वदी एकादशी वर्षा बादल होय।
आसाढ़मास वर्षा अधिक संशय करो न कोय।

संवत् २०१२ शाकः १८७७ कार्तिक शुक्ल पक्षः १७	हि.	अं.	मु.	चंद्र	सू. उ.	सू. अ.	सौरसूर्यस्पष्टः	(१५ नवं. से २९ नवं. तक १९५५ ई०) दक्षिणायन...: हेमन्तर्तुः।

संवत् २०१२ शाकः १८७७ कार्त्तिक शुक्ल पक्षः १७																हि.	अं.	मु.	चंद्र	सू. उ.		सू. अ.		सौरसूर्यस्पष्टः				(१५ नवं. से २९ नवं. तक १९५५ ई०) दक्षिणायने...: हेमन्तर्तुः।
दि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.		[illegible]	[illegible]	[illegible]	संचारः	रेल्वे		रेल्वे		उदयकाले				ग्रहदर्शन—बु. श. अस्त हैं। मं. सूर्योदय से पहिले पूर्व क्षितिज पर, और गुरु खमध्य में दीखेगा। शु. सूर्यास्तबाद प० क्षितिज में दीखेगा।
२६	१२	१	मं	२८	२०	अनु.	५७	६	शो.	१४	३९	ब.	२८	२०		३०	१५	२९	वृश्चिके	६	५५	५	२४	६	२८	१९	४१	मघा ३ गुरुः ५९।४९ अन्नकूट गोव. पू. वार्षिक कर्षणम् जन्मोत्सव§
२६	८	२	बु.	३३	५	ज्ये.	६०	००	अ.	१५	२६	बा.	०	४२		१	१६	३०	वृश्चिके	६	५६	५	२४	६	२९	२०	२१	चन्द्रदर्शनम् सं. वृश्चिकेऽर्कः ३९।१२ मु. १५ पुण्यं मध्याह्नोत्तरम्,†
२६	५	३	गु.	३८	२१	ज्ये	३	२०	सु.	१६	३८	तै.	५	४३		२	१७	१	ध. ३।२०	६	५८	५	२३	७	०	२१	३	रविउलाखर मु. ४, §श्रद्धेय पं. जवाहरलालजी नेहरू
२६	१	४	शु.	४३	४१	मू.	९	५२	धृ.	१८	१	व.	११	१		३	१८	२	धनुषि	६	५९	५	२२	७	१	२१	४६	भ. ११।१ उ. ४३।४१ या., तुला, भौमः ३५।३५ ×चातु. व्र. स.
२५	५७	५	श.	४८	३७	पू.षा	१६	१४	शू.	१९	१२	ब.	१६	९		४	१९	३	म. ३२।४०	७	०	५	२१	७	२	२२	३२	अनु. रविः ५६।४४ ‡ल. ५ अत्याव. चं. दा.
२५	५३	६	र.	५२	५२	उ.षा.	२२	३	गं.	२०	०	कौ.	२०	४४		५	२०	४	मकरे	७	१	५	२१	७	३	२३	१९	θऽरा.।।।ऽरो.ऽ।।दि. ल. ९ तुलसीविवाहः भीष्म पञ्चकारम्भ-×
२५	४९	७	चं.	५६	१	श्र.	२७	२	वृ.	२०	६	ग.	२४	२६		६	२१	५	कुं. ५८।५७	७	२	५	२१	७	४	२४	९	भ. ५६।१ उ., पञ्चक प्रा. ५८।५७, ध. ऽश. ।।।ऽनृ. (३६ घ.या.)।ऽ।।‡
२५	४६	८	मं.	५८	९	ध.	३०	५२	ध्रु.	११	१८	वि.	२७	५		७	२२	६	कुंभे	७	२	५	२१	७	५	२५	१	भ. २७।५ या., वृश्चिके बुधः ५२।२०, सा. धनुषि भानुः ४०।४४,*
२५	४३	९	बु.	५८	५२	श.	३३	३५	व्या	१७	३९	बा.	२८	३०		८	२३	७	कुंभे	७	३	५	२०	७	६	२५	५६	परिक्रमा ९ स्वर्णगर्भ कूष्माण्डदानम् *गोपालाष्टमी (सायं गवांϕ
२५	४१	१०	गु.	५८	१७	पू.भा	३५	१	ह.	१४	५८	तै.	२८	३४		९	२४	८	मी. १९।३९	७	३	५	२०	७	७	२६	५२	अनु. बुधः ५७।३८ मूले धनुषि शुक्रः ३७।१०ϕपूजालंकारादिधारणम्)
२५	३९	११	शु.	५६	२९	उ.भा.	३५	११	व.	११	१६	व.	२७	२३		१०	२५	९	मीने	७	४	५	२०	७	८	२७	४८	भ. २७।२३ उ. ५६।२९ या., प्रबोधिनी ११ व्र. स्मार्त्तानाम् उ. भा.θ
२५	३७	१२	श	५३	३६	रे.	३४	१४	सि.	६	३८	ब.	२५	२		११	२६	१०	मे. ३४।१४	७	५	५	२०	७	९	२८	४६	पञ्चक समाप्तिः ३४।१४, प्रबोधिनी ११ व्र. वै. निं., रे. ।।।।।।।।।दि.β
२५	३५	१३	र	४९	४६	अ.	३२	१९	व्य.	५४	५७	कौ.	२१	४१		१२	२७	११	मेषे	७	५	५	२०	७	१०	२९	४४	प्रदोषव्र., +श्रीगुरुनानकदेव जयन्ती का. स्ना. स.
२५	३४	१४	चं.	४५	५	भ.	२९	३२	प.	४८	४	ग.	१७	२५		१३	२८	१२	वृ. ४३।४१	७	६	५	२०	७	११	३०	४४	भ. ४५।५ उ. स्वात्यां भौमः ५२।३९, वैकुण्ठ १४ व्र. β ल. ९
२५	३२	१५	मं.	३९	४९	कृ.	२६	७	शि.	४०	४०	वि.	१२	२७		१४	२९	१३	वृषे	७	७	५	२०	७	१२	३१	४५	भ. १२।२७ या., चन्द्रग्रहणम्, सत्यव्र., मेला श्रीपुष्कर व रामतीर्थ,+
																												†विशा. बुधः ३७।४८ भाई दूज, यम २, कलम दवात पू. बलराज

कार्तिक शुक्ल ८ भौम इष्टम् ०।० दिनगणः ५९६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	६	६	४	७	७	७	१
५	२	२८	७	२६	१	२४	२४
२५	१२	३८	१२	४३	११	५७	५७
१	२५	२४	११	५८	५७	४५	४५
६०	३८	९५	४	७४	७	३	३
५२	५६	५५	५५	५२	१३	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
[illegible]	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	चि.	वि.	म.	ज्ये.	वि.	ज्ये.	मू.
१	३	३	३	४	४	३	१

९ | ७ बु. मं. | ८ सू. शु. रा. श. | १० | ११ | ६ | ५ गु. | चं. | १२ | २ के. | ४ | १ | ३

शासक वर्ग में परस्पर युद्धविषयक अनेक मन्त्रणायें हों, तथा सैनिक शिक्षण पर विशेष ध्यान हो। व्यापार में सण रूई सूत अलसी तेल घी शक्कर गेहूँ गुड़ का भाव तेज हो। चान्दी में मन्दी आवे। ऊनी वस्त्र ताम्बा लाल रंग इनके भाव में तेजी आवे। जिस्त रांगा लकड़ी कोला का भाव सम रहे। ति. ९ से चांदी में तेजी और घृत अनाज तेल में मन्दे का रुख हो। पशु मंहगे हों।

आकाश लक्षणम्—ति० ४ से अष्टमी तक, ति. ११ से १५—तक कहीं-कहीं बादल चाल।

शकुन-विचार—कार्त्तिक शुदि एकादशी वर्षा बादल होय। चार मास वर्षा अधिक संशय करो न कोय॥

कार्तिक शुक्ल १५ भौम इष्टम् ०।० दिनगणः ६०३
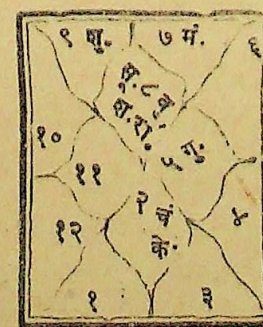
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	६	७	४	८	७	७	१
१२	६	९	७	५	२	२४	२४
३१	४४	४६	४०	२७	१	३५	३५
४५	४६	५	३५	४३	५५	२९	२९
६१	३८	९५	३	७४	७	३	३
१	५४	२९	३९	४८	४	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
[illegible]	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
अनु.	[illegible]	अनु.	म.	मू.	वि.	ज्ये.	मृ.
३	१	२	३	२	४	३	१

भाई दूज के दिन अपनी बहन के घर जाकर उसके हाथ से प्रेमपूर्वक भोजन करें और उसे यथाशक्ति अनेक प्रकार के दान देवें।
कार्त्तिक मास में आंवले के नीचे ब्राह्मणोंको भोजन करावे और बाद में आप उसी वृक्ष के नीचे भोजन करे।

संवत् २०१२ शाकः १८७७ मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः १८															हि.	अं.	भु.	चन्द्र	सू.उ.		सू. अ.		सौर सूर्यस्पष्टः			
दि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	मा.	मि.	अं.	सञ्चारः	रेल्वे		रेल्वे		उदयकाले			
२५	३०	१	बु.	३४	८	रो.	२२	१३	सि.	३२	५९	बा.	६	५८	१५	३०	१४	मि.५०।१९	७	७	५	२०	७	१३	३२	४८
२५	२८	२	गु.	२८	१४	मृ.	१८	६	सा.	२५	८	तै.	१	११	१६	१	१५	मिथुने	७	८	५	२०	७	१४	३३	५३
२५	२६	३	शु.	२२	१५	आ.	१३	५१	शु.	१७	१२	वि.	२२	१५	१७	२	१६	क.५५।४८	७	९	५	२०	७	१५	३४	५८
२५	२५	४	श.	१६	३३	पुन.	९	४७	शु.	९	२४	बा.	१६	३३	१८	३	१७	कर्के	७	१०	५	२०	७	१६	३६	४
२५	२३	५	र.	११	१२	पु.	६	६	ब्र.	१/५४	५४/५१	तै.	११	१२	१९	४	१८	कर्के	७	११	५	२०	७	१७	३७	१२
२५	२१	६	चं.	६	२४	श्ले.	२	५५	वै.	४८	२४	व.	६	२४	२०	५	१९	सि.२।५५	७	११	५	२०	७	१८	३८	२१
२५	१९	७	मं.	२	२८	म.	०/६२	३५/६	वि.	४२	३७	ब.	२	२८	२१	६	२०	सिंहे	७	११	५	२०	७	१९	३९	३०
अवम.		८	मं.	५६	५४	०.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	१८	९	बु.	५७	२४	उ.फा.	५८	३४	प्री.	३७	४०	तै.	२८	२३	२२	७	२१	क.१३।५५	७	१२	५	२०	७	२०	४०	४०
२५	१६	१०	गु.	५६	३७	ह.	५९	१८	आ.	३३	३८	व.	२७	०	२३	८	२२	कन्यायाम्	७	१३	५	२०	७	२१	४१	५२
२५	१५	११	शु.	५७	९	चि.	६०	०	सौ.	३०	३६	ब.	२६	५३	२४	९	२३	तु.३०।१७	७	१४	५	२०	७	२२	४३	६
२५	१३	१२	श.	२९	१	चि.	१	१६	शो.	२८	३२	कौ.	२८	५	२५	१०	२४	तुलायाम्	७	१४	५	२०	७	२३	४४	२१
२५	११	१३	र.	६०	०	स्वा.	४	३४	अ.	२७	२९	ग.	३०	३०	२६	११	२५	वृ.५२।५०	७	१५	५	२०	७	२४	४५	३७
२५	१०	१३	चं.	२	०	वि.	८	५६	सु.	२७	१८	व.	२	००	२७	१२	२६	वृश्चिके	७	१६	५	२०	७	२५	४६	५५
२५	८	१४	मं.	६	९	अनु.	१४	२०	धृ.	२७	५२	श.	६	९	२८	१३	२७	वृश्चिके	७	१७	५	२०	७	२६	४८	१४
२५	७	३०	बु.	११	३	ज्ये.	२०	२३	शू.	२८	५६	ना.	११	३	२९	१४	२८	ध.२०।२३	७	१८	५	२०	७	२७	४९	३२

(३०नवं. से १४ दिसं तक १९५५ ई०) दक्षिणायनगोलो हेमन्तर्तुः।

ग्रहदर्शन—— मं. सर्योदय से पहिले पूर्व में, एवं गुरु खमध्य में होगा। बुध अस्त है। श. ति. ४ को. उदय होगा। शुक्र सूर्यास्त बाद + +पश्चिम में दीखेगा।

भ. ५५।१४ उ. दिसम्बर १२ ता. ३१,

भ २२।१५ या. श्रीगणेश ४ व्र.

ज्ये. रविः ३।५१, ज्ये. बुधः २२।० उदितः शनिः ४१।१२

भ. ६।२४ उ. ३४।२६ या. पू. षा. शुक्रः १८।५६,

श्री महाकाल भैरवजयन्ती,

*रा. ल. ५,

उ. फा. ऽबु. ।।।।ऽअ. (१९ घ. या.) ऽऽ।। दि. ल. ९ श. दा., रा. ल. ५

भ. २७।० उ. ५६।३७ या.,

उत्पन्ना ११ व्र. स्मा., चि. ।।।। नृ. (१७ घ. या.) ।ऽ।। दि. ल. ९,*

अनु. १ शनिः १४।६, उत्पन्ना ११ व्र. वै. निं., मल्ल १२,

मू. धनु. बुधः ४९।८, प्रदोष व्र.,

भ. २।० उ. ३४।४ या. मेला पुरमण्डल, देविकास्नानम्।

पितृकार्येऽमा.

सूर्यग्रहणम्

मार्गशीर्ष कृष्ण ९ बुध इष्टम् ०।० दिनगणः ६११

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	६	७	४	८	७	७	१
२०	११	२२	८	१५	२	२४	२४
४०	५५	२३	४	२५	५७	१०	१०
४०	५५	४२	१९	५५	३२	२	२
६१	३८	९४	२	७४	६	३	३
१०	५४	३२	१३	४५	५३	११	११
सौर:	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्ये.	स्वा.	ज्ये.	म.	पू.षा.	वि.	ज्ये.	मू.
२	२	२	३	१	४	३	१

९शु. ७ मं.
८
१० रा.श.बु. ६
सू.
११ ५ चं.गु.
१२ २ के. ४
१ ३
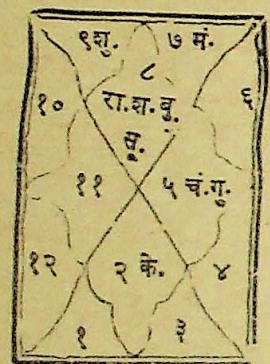
यहां पहिले रूई धातुयें, गेहूँ, खण्ड, गुड़, घी, ऊनी तथा रेशमी वस्त्र तेज हो। ति० ४ से रूई और शेयरों के भाव में मन्दी आवे। अनाज में तेजी होकर बाद में मन्दी। अलसी सरसों बिनौला मूंगफली आदि चीजों में भी मन्दी का बोल-बाला हो। जिस्त रांगा लोहा आदि तथा अन्य काले पदार्थ और घास लकड़ी चांदी चावल गुड़ खण्ड में तेजी हो। इस पक्ष में घी, चना, सूत, कपड़ा संग्रह से आगे दो मास में अच्छा लाभ हो।

आकाश लक्षणम्—ति० ३ से ७ तक और १४ से ३० को ठण्डी वायु चले कहीं कहीं बूंदा बांदी हो।

मार्गशीर्षकृष्ण ३० बुध इष्टम् ०।० दिनगणः ६१८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	६	८	४	८	७	७	१
२७	१६	३	८	२४	३	२३	२३
४९	२९	२६	१४	८	४५	४७	४७
३२	२१	५४	४३	४२	४०	४६	४६
६१	३९	९४	००	७४	६	३	३
१८	३	५४	५३	३६	४६	११	११
सौर:	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्ये.	स्वा.	मू.	म.	पू.षा.	अनु.	ज्ये.	मू.
४	३	२	३	४	१	३	१

शकुन विचार——मगसिर की तिथि सप्तमी नवमी दिश ईशान। वाय चले बादर दिखे बरसा थोड़ी जान॥

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि.	अं.	मु.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		सौरसूर्यस्पष्टः उदयकाले				(१५ दिसं.से २९ दिसं.तक १९५५ई.) उत्तरायणम्,द.गोलः शिशिरर्तुः। ग्रहदर्शन—श. मं. सूर्योदय से पहिले पूर्व में होंगे। बु. ति. १३ को पश्चिम में उदित होगा। गुरु सूर्योदय पहिले पश्चिम की ओर जाताθ
२५	५	१	गु.	१६	२४	मू.	२६	५४	गं.	३०	१९	ब.	१६	२४	३०	१५	२२	धनुषि	७	१८	५	२०	७	२८	५०	५१	चन्द्रदर्शन सम्भवः, θदीखेगा। शु.सू.अ. बाद पश्चिम क्षि. में दीखेगा।
२५	३	२	शु.	२१	४९	पू. षा.	३३	२३	वृ.	३१	३३	कौ.	२१	४९	१	१६	१	म.४९।५३	७	१९	५	२०	७	२९	५२	११	मू. सं. धनुष्यर्कः ७।३९ मु. ३० पुण्यं २३।३९ या., उ. षा. शुक्रः†
२५	२	३	श.	२६	४७	उ. षा.	३९	२३	ध्रु.	३२	२६	ग.	२६	४७	२	१७	२	मकरे	७	२०	५	२१	८	०	५३	३२	भ. ५८।५४ उ. वक्री गुरुः ५४।३३, †१।४२, जमादि उलावल मु.५
२५	००	४	र.	३१	२	श्र.	४४	४०	व्या	३२	४६	ब.	३१	२	३	१८	३	मकरे	७	२१	५	२१	८	१	५४	५४	भ. ३१।२ या., मकरे शुक्रः ४२।४८,
२४	५९	५	चं.	३४	१०	ध.	४८	४७	ह.	३२	१७	ब.	२	३६	४	१९	४	कुं.१६।४३	७	२१	५	२१	८	२	५६	१६	विशा. भौमः २३।८ पञ्चक प्रा. १६।४३
२४	५७	६	मं.	३६	११	श.	५१	५१	व.	३०	५६	कौ.	५	१०	५	२०	५	कुम्भे	७	२२	५	२२	८	३	५७	३८	पू. षा. बुधः १४।५१.
२४	५६	७	बु.	३६	५०	पू. भा	५३	३४	सि.	२८	३३	ग.	६	३०	६	२१	६	मी. ३८।८	७	२३	५	२२	८	४	५९	१	भ. ३६।५० उ.
२४	५४	८	गु.	३६	१३	उ. भा.	५४	६	व्य.	२५	१०	वि.	६	३१	७	२२	७	मीने	७	२४	५	२२	८	६	०	२४	भ. ६।३१ या., ज्ये. २ राहुः रो. ४ केतुः ४३।४०, सा. मकरेभानुःϕ
२४	५६	९	शु.	३४	२१	रे.	५३	२५	व.	२०	४९	बा.	५	१७	८	२३	८	मे.५३।२५	७	२४	५	२२	८	७	१	४८	पञ्चक स. ५३।२५, ϕ५।४१, उत्तरायणं, शिशिरर्त्तु प्रा.
२४	५७	१०	श.	३१	२७	अ.	५१	४४	प.	१५	३५	तै.	२	५४	९	२४	९	मेषे	७	२४	५	२३	८	८	३	१३	भ. ५९।३० उ.
२४	५९	११	र.	२७	३४	भ.	४९	१२	शि.	९	३५	वि.	२७	३४	१०	२५	१०	मेषे	७	२४	५	२४	८	९	४	३९	भ. २७।३४ या., मोक्षदा ११ व्र., श्रीगीताजयन्ती,
२५	००	१२	चं.	२२	५०	कृ.	४५	५६	सि.	२ ५५	५५ ४२	बा.	२२	५०	११	२६	११	वृ. ३।२३	७	२५	५	२५	८	१०	६	६	श्रव. १ शुक्रः ४६।३५ प्रदोष व्र.,
२५	२	१३	मं.	१७	३३	रो.	४२	१३	शु.	४८	६	तै.	१७	३३	१२	२७	१२	वृषे	७	२५	५	२६	८	११	७	३३	पश्चिमोदयो बुधः १६।७
२५	४	१४	बु.	११	५४	मृ.	३८	७	शु.	४०	१९	व.	११	५४	१३	२८	१३	मि.१०।१०	७	२५	५	२७	८	१२	९	०	भ. ११।५४ उ. ३८।५७ या., उ. षा. बुधः ४०।४१, पिशाचमोचन‡
२५	५	१५	गु.	६	१	आ.	३३	५४	ब्र.	३२	२१	ब.	६	१	१४	२९	१४	मिथुने	७	२६	५	२८	८	१३	१०	२७	पू. षा. रवि. ९।२० ‡श्राद्धम्, सत्यव्र., दत्तात्रेयजयन्ती

(संवत् २०१२ शाकः १८७७ मार्गशीर्षशुक्लपक्षः १९)

मार्गशीर्षशुक्ल ८ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ६२६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श	रा.	के.
८	६	८	४	९	७	७	१
६	२१	१६	८	४	४	२३	२३
०	४१	६	१४	४	३८	२२	२२
२४	३१	४३	३९	४१	२३	१९	१९
६१	३९	९५	००	७४	६	३	३
२३	१०	१०	४२	२४	२८	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मू.	वि.	[illegible]	म.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मृ.
१	१	२	३	३	१	३	१

१० शु. ८ श. रा. ७ ११ ९ बु. सू. मं. १२ चं. ६ १ ३ ५ गु. २ के. ४
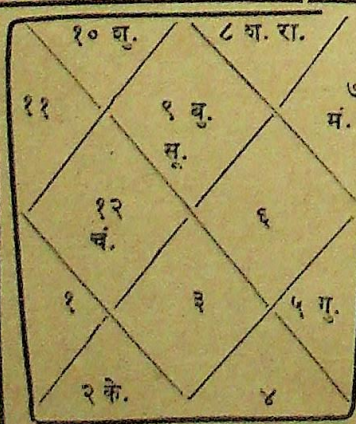
यहां व्यापार में भारी घटा-बढ़ी होगी। रूई में ४० टके के करीब मन्दी आवेगी। उस मन्दी में खरीदकर रखने से आगे लाभ होगा। चांदी में तीन ४ टका की तेजी । गेहूँ जौं, चना, चावल, अरहर, आदि धान्य और अलसी घी में मन्दी होवे सुवर्ण चांदी ऊनी वस्त्र तेज स्वर्ण के भाव में काफी फेर-फार होगा। गेरू सुरख रंग सुरख चन्दन गुड़ तेल में घटा बढ़ी खूब रहेगी। सण जूट का भाव तेज रहेगा।

आकाश लक्षणम्—ति. २ से पञ्चमी तक ८-से १३ तक कहीं-कहीं उत्तर भारत में वर्षा बूंदा बांदी के योग हैं।

शा०वि०—शुक्रवारी बादली रही शनिश्चर छाय।
तो वर्षा होगी.अधिक ऐसा योग बताय ॥

मार्गशीर्षशुक्ल १५ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ६३३

१० शु. ८ श. रा. ७ ११ ९ सू. बु. मं. १२ ६ १ ३ चं. ५ गु. २ के. ४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श	रा.	के.
८	६	८	४	९	७	७	१
१३	२६	२७	८	१२	५	२३	२३
१०	१५	१०	४	४५	२२	०	०
२७	४६	१९	३१	१२	२९	३	३
६१	३९	९४	२	७४	६	३	३
२७	१४	८	००	१६	९	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
मू.	वि.	[illegible]	म.	श्र.	[illegible]	[illegible]	मृ.
४	२	१	३	१	१	२	१

संवत् २०१२ शाकः १८७७ पौष कृष्णपक्षः २०

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हिं. तारी.	अं. तारी.	मु. तारी.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		सौरसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
२५	७	१	शु.	०	७	पुन.	२९	४९	ऐं.	२४	३२	कौ.	०	७	१५	३०	१५	क. १५।५०	७	२६	५	२९	८	१४	११	५३
अवस.		२	शु.	५४	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	९	३	श.	४९	९	पु.	२६	२	वै.	१६	५६	व.	२१	४८	१६	३१	१६	कर्के	७	२६	५	३०	८	१५	१३	१९
२५	१०	४	र.	४४	२५	श्ले.	२२	४८	वि.	९	४१	ब.	१६	४७	१७	ज१	१७	सि. २२।४८	७	२६	५	३०	८	१६	१४	४५
२५	१२	५	चं.	४०	३१	म.	२०	१४	प्री.	३/५७	१	कौ.	१२	२८	१८	२	१८	सिंहे	७	२६	५	३१	८	१७	१६	११
२५	१४	६	मं.	३७	३५	पू.फा	१८	३१	सौ.	५१	४७	ग.	९	३	१९	३	१९	कं. ३३।२०	७	२६	५	३२	८	१८	१७	३७
२५	१५	७	बु.	३५	४२	उ.फा.	१७	४९	शो.	४७	२४	वि.	६	३८	२०	४	२०	कन्यायाम्	७	२७	५	३३	८	१९	१९	३
२५	१७	८	गु.	३५	४	ह.	१८	१९	अ.	४४	३	बा.	५	२३	२१	५	२१	तु. ४९।१०	७	२७	५	३३	८	२०	२०	३०
२५	१९	९	शु.	३५	४२	चि.	२०	२	सु.	४१	३९	तै.	५	२३	२२	६	२२	तुलायाम्	७	२७	५	३४	८	२१	२१	५६
२५	२०	१०	श.	३७	४३	स्वा.	२३	२	धृ.	४०	१८	व.	६	४२	२३	७	२३	तुलायाम्	७	२७	५	३५	८	२२	२३	२३
२५	२२	११	र.	४०	४९	वि.	२७	१०	शू.	३९	४५	ब.	९	१६	२४	८	२४	वृ. ११।८	७	२८	५	३६	८	२३	२४	४९
२५	२४	१२	चं.	४५	४	अनु.	३२	२४	गं.	४०	६	कौ.	१२	५६	२५	९	२५	वृश्चिके	७	२८	५	३६	८	२४	२६	१४
२५	२५	१३	मं.	५०	३	ज्ये.	३८	२३	वृ.	४१	१	ग.	१७	३३	२६	१०	२६	ध. ३८।२३	७	२८	५	३७	८	२५	२७	३७
२५	२७	१४	बु.	५५	२८	मू.	४४	५३	ध्रु.	४२	१८	वि.	२२	४५	२७	११	२७	धनुषि	७	२८	५	३८	८	२६	२९	०
२५	२८	३०	गु.	६०	०	पू.षा.	५१	२५	व्या.	४३	३९	च.	२८	९	२८	१२	२८	धनुषि	७	२८	५	३९	८	२७	३०	३२
२५	३०	३०	शु.	०	५१	उ.षा.	५७	३३	ह.	४४	४२	ना.	०	५१	२९	१३	२९	म. ७।५७	७	२८	५	३९	८	२८	३१	४५

(३०दिसं. से १३ जन. तक १९५६ ई.) उत्तरा. द. गोलः शिशिरर्तुः।

ग्रहदर्शन—श. मं. सूर्योदय से पहिले पूर्व क्षितिज में, एवं गुरु पश्चिम की ओर जाता दीखेगा। बु. शु. सूर्यास्त बाद पश्चिम क्षितिज* में दीखेगा।

मकरे बुधः ४८।३३,

भ. २१।४८ उ. ४९।९ या.,

जन. १ ता. ३१ सन् १९५६ ई०

भ. ३७।३५ उ. वृश्चिके भौमः ४२।४१

भ. ६।३८ या.,

श्रव. बुधः ३१।३८, धनि. शुक्रः ३४।१०,

भ. ६।४२ उ. ३७।४३ या.

अनु. भौमः ४८।१० सफला ११ व्र.

§२ शनिः २५।२८,

भ. ५०।३ उ., प्रदोष व्र.

भ. २२।४५ या., उ. षा. रविः १०।४५, कुम्भे शुक्रः ५९।१८, अनु.

लोहड़ी महोत्सवः पञ्जाब देशे।

पौषकृष्ण ८ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ६४०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	७	९	४	९	७	७	१
२०	०	७	७	२१	६	२२	२२
२०	५०	५०	४५	२३	४	३७	३७
३०	३८	१७	६	५७	३	४८	४८
६१	३९	८७	३	७३	५	३	३
२७	१७	११	२१	५९	४७	११	११
सौरः	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा.	वि.	अनु.	म.	श्र.	अनु.	ज्ये.	रो.
३	४	३	३	४	१	२	४
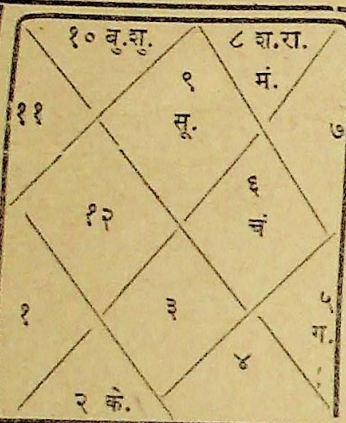
इस पक्ष में चोरी लूट मार से कहीं आतंक फैले, कहीं से युद्ध विषयक भयप्रद खबरें सुनने में आवें। चने की फसल को हानि पहुँचे। जूट रेशम रुई अनाज बिनौला में मन्दी आवे। तिल तेल हल्दी ऊन घी में तेजी का रुख रहे। कपड़ों के भाव में थोड़ी तेजी आकर बाद में मन्दी आवे। ति. ७ से गुड़, अलसी, चना, अनाज, रुई में तेजी का झटका आवे और सुवर्ण चांदी आदी प्रत्येक धातु तेज हो। ति. १३ से अनाज रेशम चांदी में मंदा। शेयरों के भाव में तेजी होवे। विदेशीय विलास सामग्री के भाव भी घटेंगे।

आकाश लक्षणम्—ति० ५ से ३० तक राजपूताना व उत्तर भारत में ठन्डी वायु तथा वर्षा के योग पाये जाते हैं।

पौषकृष्ण ३० शुक्र इष्टम् ०।० दिनगणः ६४८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	७	९	४	१०	७	७	१
२८	६	१७	७	१	६	२२	२२
३१	४	३६	११	१४	४८	१२	१२
४५	३०	२५	३८	३३	१९	२१	२१
६१	३९	५३	४	७३	५	३	३
२३	१५	३१	४५	४१	१६	११	११
सौरः	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा.	अनु.	श्र.	म.	ध.	अनु.	ज्ये.	रो.
१	१	३	३	३	२	२	४

शकुन विचार— पौ. कृ. ८ को जो पूर्व दिशा में बादल हो और गर्जना भी सुनाई दे तो आगे तृण और अनाज तेज होवेगा। तेरस, चौदस-मावसपौष वदी में जाड़ा। तीन दिनों

शकुन विचार— पौ. कृ. ८ को जो पूर्व दिशा में बादल हो और गर्जना भी सुनाई दे तो आगे तृण और अनाज तेज होवेगा। तेरस, चौदस-माघमपौष वदी में जानें। तीन दिनों

संवत् २०१२ शाकः १८७७ पौषशुक्लपक्षः २१

दि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. माघ	अं. जन.	मु. जमा.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		सौरसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
२५	३२	१	श.	५	४७	श्र.	६०	००	व.	४५	१७	ब.	५	४७	१	१४	३०	मकरे	७	२८	५	४०	९	२९	३३	८
२५	३३	२	र.	९	५८	श्र.	३	२	सि.	४५	७	कौ.	९	५८	२	१५	१	कुं. ३५।१५	७	२८	५	४१	९	०	३४	३०
२५	३५	३	चं.	१३	१	ध.	७	२८	व्य.	४४	२	ग.	१३	१	३	१६	२	कुंभे	७	२८	५	४२	९	१	३५	५२
२५	३७	४	मं.	१४	५८	श.	१०	४७	व.	४२	२	वि.	१४	५८	४	१७	३	मी. ५७।२०	७	२८	५	४२	९	२	३७	१३
२५	३८	५	बु.	१५	३२	पू.भा.	१२	५१	प.	३९	००	बा.	१५	३२	५	१८	४	मीने	७	२७	५	४३	९	३	३८	३३
२५	४०	६	गु.	१४	५०	उ.भा.	१३	३८	शि.	३४	५९	तै.	१४	५०	६	१९	५	मीने	७	२७	५	४४	९	४	३९	५१
२५	४३	७	शु.	१२	४९	रे.	१३	१४	सि.	३०	५	व.	१२	४९	७	२०	६	मे. १३।१४	७	२७	५	४४	९	५	४१	९
२५	४६	८	श.	९	५०	अ.	११	४५	सा.	२४	२२	ब.	९	५०	८	२१	७	मेषे	७	२७	५	४५	९	६	४२	२६
२५	४९	९	र.	५	५६	भ.	९	२८	शु.	१७	५७	कौ.	५	५६	९	२२	८	वृ. २३।४०	७	२७	५	४६	९	७	४३	४२
२५	५३	१०	चं.	१	९	कृ.	६	११	शु.	१०	५६	ग.	१	९	१०	२३	९	वृषे	७	२७	५	४७	९	८	४४	५७
अवम.		११	चं.	५४	४१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	५	०	९	०	०	०
२५	५७	१२	मं.	५०	८	रो.	२/५८	४३/४४	ब्र.	३/५५	२८/४५	ब.	२२	५९	११	२४	१०	मि. ३०।४३	७	२६	५	४८	९	९	४६	११
२६	१	१३	बु.	४४	१७	आ.	५४	३१	वै.	४७	५१	कौ.	१७	१२	१२	२५	११	मिथुने	७	२५	५	४९	९	१०	४७	२४
२६	५	१४	गु.	३८	२४	पुन	५०	२५	वि.	४०	१	ग.	११	२०	१३	२६	१२	क. ३६।२६	७	२५	५	५०	९	११	४८	३७
२६	८	१५	शु.	३२	४६	पु.	४६	३३	प्री.	३२	२१	वि.	५	३५	१४	२७	१३	कर्के	७	२४	५	५१	९	१२	४९	४८

(१४ जन. से २७ जन. तक १९५६ई.) उत्तरायणं द. गोलः शिशिरर्तुः

ग्रहदर्शन—मं. श. सूर्योदय से पहिले पूर्वक्षितिज से ऊपर और गुरु पश्चिम क्षितिज में होगा। बु. ति. ७ को पश्चिम में अस्त होगा। शु.θ

चन्द्रदर्शनम्. सं. मकरेऽर्कः २६।१६ मु. ३० पुण्यं पूर्वाह्णे,
जमादि उलाखर मु. ६, पञ्चकप्राः ३५।१५,
भ. ४३।५९ उ. θसूर्यास्त बाद पश्चिम क्षितिज में दीखेगा।
भ. १४।५८ या., शत. शुक्रः २५।२४
व. बुधः ३६।४८, उ. भा. ऽरा. ।।।ऽनृ. ऽ।।ल. ७ आव. चं. दा.
व. मघा. २ गुरुः ०।४१, उ. भा.ऽरा. ।।।ऽनृ. ऽ।। दि. ल. ११, गु.†
भ. १२।४९ उ. ४१।१९ या., अभि. प्र. रविः ५७।३७, पश्चिमास्तो-‡
अश्वि. ।।।।ऽ चौ. ।ऽ।। दि. ल. ११ गु. दा.
‡बुधः ४५।३५, सा. कुम्भे भानुः २४।३३, पञ्चकस, १३।१४, जन्म*
भ. २८।२९ उ. ५५।५० या., पुत्रदा ११ व्र. स्मा.,
†दा. रे. ।।।।।।।।ल. ७ अत्या. चं. दा.
श्रव. रविः १३।३२, पुत्रदा ११ व्र. वै.,
अभि. नि. रविः ५।४९, प्रदोष व्र.
भ. ३८।२४ उ. *दि. सिक्ख गुरु श्रीगोविन्द सिंह जी
भ. ५।३५ या., सत्य व्र. माघस्नानव्रत नियमाद्यारम्भः।

पौषशुक्ल ८ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ६५६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	७	९	४	१०	७	७	१
६	११	१९	६	११	७	२१	२१
४२	१९	२६	२८	२	२८	४६	४६
२६	३१	३७	२१	३६	१०	५५	५५
६१	३९	२२	५	७३	४	३	३
१७	३०	५३	५६	२२	४३	११	११
सौर	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. ४	[illegible] ३	श्र. ३	म. २	श. २	[illegible] २	ज्ये. २	रो. ४

११ शु.
९
८
रा. मं. श.
१२
१० बु. सू.
१ चं.
७
२ के.
४
६
३
५ गु.

इस पक्ष में गेहूँ जौ चना और रूई के भाव में घटावढ़ी होकर पीछे तेजी रहे गुड़ तेल शक्कर का भाव मन्दा पौष कृष्ण पक्ष में जो वस्तु मन्दी चली हो वो यहां तेजी पर होगी। ऊन रेशम में तेजी आकर पीछे मन्दा। ति० छठ से रूई में १५–२० टका की तेजी होकर बाद में ति० अष्टमी को उतनी ही मन्दी आवे। चांदी में घटा-बढ़ी होकर ३–४टका की तेजी आवेगी। गुड़ खण्ड शक्कर कपूर तिल तेल बिनौला मूंगफली में भी तेजी रुख होवे। ति० नवमी से अनाज के भाव कुछ मन्दे हों। ति० १२ से अलसी में करीब २ टका तेजी हो।

आकाश लक्षणम्—ति० २ से ८ तक तथा १०–१२ को बादल चाल तथा वर्षा भी कहीं कहीं हो।

पौषशुक्ल १५ शुक्रइष्टम् ०।० दिनगणः ६६२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	७	९	४	१०	७	७	१
१२	१५	१३	५	१८	७	२१	२१
४९	१६	१७	४९	२१	५४	२७	२७
४८	१०	१९	४५	३१	५८	५०	५०
६१	३९	७५	६	७२	४	३	३
११	२१	१०	४४	५८	१०	११	११
सौर	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्र. १	अनु. ४	श्र. १	म. २	श. ४	[illegible] २	ज्ये. २	रो. ४

*आगे तेज हो, रोकने में लाभ होवेगा।

श.वि.—पौष सु. चौदस बिना बिजली का घनघोर। शुभ वर्षा आषाढ़ में बोलें दादुर मोर॥ ति. ७।८।९ को जल वर्षे तो आगामी चौमासा उत्तम रहे। यदि ति. १३ को जल बरसे तो गेहूँ*

संवत् २०१२ शाकः १८७७ माघ कृष्णपक्षः २२

(२८ जन. से ११ फरव. तक १९५६ ई.) उत्तरायणं द.गोलः शिशिरर्तुः ।

ग्रहदर्शन—मं. श. सूर्योदय से पहिले पूर्व क्षितिज से ऊपर एवं शु. सूर्यास्त बाद पश्चिम क्षितिज में तथा गुरु पूर्व क्षितिज से नीचे है

दि. मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हि मास.	अं. जन.	मु. ता.	चन्द्र सञ्चार.	सू. उ. रेल्वे	सू. अ. रेल्वे	सौर सूर्यस्पष्टः उदयकाले	
२६ १२	१	श.	२७ ३३	श्ले.	४३ १०	आ.	२५ ०	बा.	० ९	१५	२८	१४	सिं ४३।१०	७ २४	५ ५२	९ १३ ५० ५८	पू. भा. शुक्रः २१।८ §रहेगा। बुध ति. ६ को पूर्व में उदय होगा।
२६ १६	२	र.	२२ ५४	म.	४० २५	सौ.	१८ १०	ग.	२२ ५४	१६	२९	१५	सिंहे	७ २३	५ ५२	९ १४ ५२ ७	भ. ५०।५९ उ., ज्ये. भौमः ७।४७ व. उ. षा. बुधः ५८।४६
२६ २०	३	चं.	१९ ४	पू.फा.	३८ ३४	शो.	११ ५९	वि.	१९ ४	१७	३०	१६	कं.५३।१९	७ २२	५ ५३	९ १५ ५३ १५	भ. १९।४ या., श्रीगणेशजन्म ४ (संकष्टहरिणी) चन्द्रोदय घं.९‡
२६ २४	४	मं.	१६ १४	उ.फा.	३७ ३६	अ.	६ ३०	बा.	१६ १४	१८	३१	१७	कन्यायाम्	७ २१	५ ५४	९ १६ ५४ २१	उ. फा. ।।।।ऽ शु. ऽ रो. ।ऽ।। ल. गोधूलिः, ह. ।।।।ऽरो.ऽऽ।। ल. ७ चं. दा.
२६ २७	५	बु.	१४ २८	ह.	३७ ४९	सु.	५८ ५२ ११	तै.	१४ २८	१९	फ१	१८	कन्यायाम्	७ २१	५ ५६	९ १७ ५५ २५	फरवरी २ ता. २९, ह. ।।।।।ऽऽ।। ल. गोधू.
२६ ३१	६	गु.	१३ ५४	चि.	३९ १५	शू.	५५ ३०	व.	१३ ५४	२०	२	१९	तु. ८।३२	७ २१	५ ५७	९ १८ ५६ २८	भ. १३।५४ उ. ४४।१५ या., पूर्वोदयो बुध : २६।४८,
२६ ३५	७	शु.	१४ ३६	स्वा.	४१ ५८	गं.	५३ ५२	ब.	१४ ३६	२१	३	२०	तुलायाम्	७ २०	५ ५८	९ १९ ५७ २९	अनन्त श्री जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जयन्ती,
२६ ३९	८	श.	१६ ४६	वि.	४५ ५२	वृ.	५३ ४	कौ.	१६ ४६	२२	४	२१	वृ. २९।५३	७ १९	५ ५९	९ २० ५८ २९	‡मि. ७, उ. फा. ।।।।ऽ शु.।।ऽ।।ल. ७
२६ ४३	९	र.	१९ ५४	अनु.	५० ५३	ध्रु.	५३ १३	ग.	१९ ५४	२३	५	२२	वृश्चिके	७ १९	५ ५९	९ २१ ५९ २७	भ. ५२।४ उ., मीने शुक्रः ३७।२
२६ ४६	१०	चं.	२४ १५	ज्ये.	५६ ४५	व्या	५४ ०	वि.	२४ १५	२४	६	२३	ध.५६।४५	७ १९	६ ०	९ २३ ० २४	भ. २४।१५ या., धनि. रविः १९।१८,
२६ ५०	११	मं.	२९ १४	मू.	६० ०	ह.	५५ १३	बा.	२९ १४	२५	७	२४	धनुषि	७ १८	६ १	९ २४ १ १९	षट् तिला ११ व्र., मू. ।ऽ।।ऽ चौ. ।ऽ।। दि. ल. ११ गु. दा.
२६ ५४	१२	बु.	३४ ४०	मू.	३ ११	व.	५६ ३७	कौ.	१ ५७	२६	८	२५	धनुषि	७ १७	६ २	९ २५ २ १४	मार्गी बुधः ३०।४२, उ. भा. शुक्रः २३।९
२६ ५८	१३	गु.	४० १	पू.षा.	९ ४६	सि.	५७ ५१	ग.	७ २०	२७	९	२६	म.२६।२०	७ १६	६ २	९ २६ ३ ७	भ. ४०।१ उ., प्रदोषव्रतम्,
२७ २	१४	शु.	४४ ५५	उ.षा.	१६ ४	व्य.	५८ ३९	वि.	१२ २८	२८	१०	२७	मकरे	७ १५	६ ३	९ २७ ३ ५८	भ. १२।२८ या,
२७ ५	३०	श.	४८ ५६	श्र.	२१ ४४	व.	५८ ४८	च.	१६ ५५	२९	११	२८	कुं. ५४।५	७ १५	६ ४	९ २८ ४ ४९	पञ्चक प्रा. ५४।५, युगादि मौनी ३०, प्रयागस्नाने महत्फलम्,

माघकृष्ण ८ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ६७०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	७	९	४	१०	७	७	१
२०	२०	५	४	२८	८	२१	२१
५८	३१	३५	५२	२	२६	२	२
२९	८	५७	४७	५६	२१	२६	२६
६१	३९	४०	७	७२	३	३	३
०	२३	४०	२४	२७	३९	११	११
सौरः	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	व.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्र. ४	ज्ये. २	उ.षा. ३	म. २	पू.फा. ३	अनु. २	ज्ये. २	रो. ४

खांसी आदि रोग से प्रजा को कष्ट हो, कहीं युद्ध उत्पातादि से हानि हो। कई प्रदेशों में प्रकृति कोप से खेतियों को हानि पहुँचे गेहूँ तथा रूई बिनौला जवाहरात अलसी के भाव में तेजी। गुड़ खण्ड के भाव में मन्दी। जौ चना लाल मिर्च तिल घी में भी तेजी का असर हो। ति० ५ से ७ तक सट्टे के सौदों में भी काफी घबराहट रहेगी। यहां जो वस्तु पहिले मन्दी हो वो तेज, जो तेज हो वो मन्दी होवेगी। ति० ८ से चांदी में तेजी का काम करने वाले लाभ में रहेंगे। रूई बिनौला गेहूँ में मन्दी। ति. १२ से चावल बिनौला मूंगफली तथा श्वेत वस्तुयें मन्दी हों।

आकाश लक्षणम्—ति. २ से ११ तक कहीं कहीं बादल चाल तथा वर्षा बूंदा-बांदी के योग पाये जाते हैं।

माघकृष्ण ३० शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ६७७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	७	९	४	११	७	७	१
२८	२५	४	३	६	८	२०	२०
४	६	४५	५८	२८	४९	४०	४०
४९	५८	४८	४५	९	२७	१०	१०
६०	३९	१५	७	७१	२	३	३
५१	२५	३	५१	५१	५८	११	११
सौरः	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ध. १	ज्ये. ३	उ.फा. ३	म. २	उ.भा. १	कृ. २	ज्ये. २	रो. ४

श. वि.—माघ बदी जो पंचमी बादल होवे जान। वर्षा कछु होवे नहीं भादों वर्षा जान। माघबदी जो ६ को निर्मल हो आकाश। तो तम निश्चय जानियो निपजै नहिं कपास।

संवत् २०१२ शाकः १८७७ माघशुक्लपक्षः २३ | हि | अं. | मु. | चन्द्र | सू. उ. | सू. अ. | सौरसूर्यस्पष्टः | (१२ फर. से २६ फर. तक १९५६ई.) उत्तरायणम् ...

संवत् २०१२ शाकः १८७७ माघशुक्लपक्षः २३

वि.मा.		ति.	वा.	घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		हि. फा.	अं. फर.	मु. रज्जब	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		सौरसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
२७	९	१	र.	५१	४९	ध.	२६	२६	प.	५८	१	किं.	२०	२२	१	१२	२९	कुम्भे	७	१४	६	५	९	२९	५	३९
२७	१३	२	चं.	५३	३८	श.	३०	१	शि.	५६	२८	बा.	२२	४३	२	१३	३०	कुम्भे	७	१३	६	५	१०	०	६	२८
२७	१७	३	मं.	५४	५	पू. भा.	३२	२४	सि.	५३	५१	तै.	२३	५१	३	१४	१	मी. १६।४८	७	१२	६	६	१०	१	७	१६
२७	२१	४	बु.	५३	१४	उ. भा.	३३	२६	सा.	५०	१४	व.	२३	३९	४	१५	२	मीने	७	११	६	७	१०	२	८	२
२७	२४	५	गु.	५१	१८	रे.	३३	१७	शु.	४५	४०	ब.	२२	११	५	१६	३	मे. ३३।१७	७	११	६	८	१०	३	८	४६
२७	२८	६	शु.	४७	५९	अ.	३२	२	शु.	४०	१४	कौ.	१९	३३	६	१७	४	मेषे	७	१०	६	८	१०	४	९	२८
२७	३२	७	श.	४३	५६	भ.	२९	५९	ब्र.	३४	७	ग.	१५	५७	७	१८	५	वृ. ४४।१४	७	९	६	९	१०	५	१०	८
२७	३६	८	र.	३९	४	कृ.	२७	००	ऐं.	२७	२०	वि.	११	३०	८	१९	६	वृषे	७	८	६	१०	१०	६	१०	४६
२७	४१	९	चं.	३३	४३	रो.	२३	३०	वै.	२०	०	बा.	६	२३	९	२०	७	मि. ५१।३१	७	७	६	११	१०	७	११	२१
२७	४६	१०	मं.	२७	५८	मृ.	१९	३२	वि.	१२	२५	तै.	०	५०	१०	२१	८	मिथुने	७	६	६	१२	१०	८	११	५५
२७	५१	११	बु.	२२	२	आ.	१५	२५	प्री.	५८	४९	वि.	२२	२	११	२२	९	क. ५७।१८	७	५	६	१३	१०	९	१२	२८
२७	५६	१२	गु.	१६	७	पुन.	११	१६	सौ.	४९	६	बा.	१६	७	१२	२३	१०	कर्के	७	३	६	१४	१०	१०	१२	५९
२८	१	१३	शु.	१०	२८	पु.	७	२१	शो.	४१	४१	तै.	१०	२८	१३	२४	११	कर्के	७	२	६	१४	१०	११	१३	२७
२८	६	१४	श.	५	१३	श्ले.	३	५२	अ.	३४	४४	व.	५	१३	१४	२५	१२	सिं. ३।५२	७	१	६	१४	१०	१२	१३	५३
२८	११	१५	र.	०	३५	म.	५८	५८	सु.	२८	२३	ब.	०	३५	१५	२६	१३	सिंहे	७	०	६	१५	१०	१३	१४	१६

(१२ फर. से २६ फर. तक १९५६ई.) उत्तरायणम्, दक्षिणगोलो वसन्तर्तुः

ग्रहदर्शन——मं. बु. सूर्योदय से पहिले पूर्व क्षितिज में और श. खमध्य में होगा। शु. सू.अ. बाद पश्चिम क्षितिज में तथा गुरु पूर्व क्षितिज में होगा।

सं. कुम्भेऽर्कः ५३।३६ मु. १५ पुण्यं पर दिने मध्याह्नं या., श्रीवल्लभ†
चन्द्रदर्शनम्, †जयन्ती
रज्जब मु. ७ ‡ल. १०, शु. गु. दा.
भ. २३।३९ उ. ५३।१४ या., ब. मघा. १ गुरुः ५६।४९, रे.।ऽ।।।ऽऽ।।‡
पञ्चकस. ३३।१७, वसन्त पञ्चमी अश्वि. ।।।।ऽ नृ. ।।।। ल. १०θ
अश्वि.।।।।ऽ नृ. ।।।। आ. ल. धूलिमुख θअनि. ग्र. दाना. रे.।ऽ।।।ऽऽ।।§§
भ. ४३।५६ उ., मूले धनु. भौमः २५।५५, सा. मीनेभानुः ५५।२४,ϕ
भ. ११।३० या., शत. रविः २८।५७, श्रव. बुधः १३।२०, रेव. शुक्रः§
मृ. ।।।ऽरा. ऽरो.ऽ।। ल. १० आव. शु. गु. दा.
भ. ५५।० उ., मृ. ।।।ऽरा.ऽरो.ऽ।। दि. ल. १ अनि. गु. दा.
भ. २२।२ या. जया ११ व्र, §§ दि. ल. १ आव. चं. दा.
ज्येष्ठा १ राहुः राहि. ३ केतुः ३८।३८, प्रदोष व्र.
§३४।२५, श्रीभीष्म ८, भीष्माय जलदानम्
भ. ५।१३ उ. ३२।१४ या., सत्यव्र,
माघस्नान समाप्तिः ϕवसन्तर्तु प्रा., रथ७, अरुणोदयस्नान महत्फलम्

माघशुक्ल ८ रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ६८५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	८	९	४	११	७	७	१
६	०	९	२	१५	९	२०	२०
१०	२२	४५	५६	५९	९	१४	१४
४६	२४	४१	९	१९	५५	४६	४६
६०	३९	५१	७	७१	२	३	३
३८	२६	४४	४८	२	१५	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भ.	मू.	[illegible]	म.	[illegible]	[illegible]	ज्ये.	रो.
४	१	४	१	४	२	२	४

गुड़, तेल अलसी मूंग मोठ सरसों चना मकई ज्वार बाजरा गेहूँ में तेजी रहे। रुई में २० टका, चांदी में २ टका की तेजी हो, जूट सण नमक का भाव मन्द। ति० ७ से रुई में, घटा-बढ़ी चलकर तेजी आवे। कपास सूत बिनौला घास लकड़ी और चौपाये पशुओं के भाव में भी तेजी हो। जिससे पशुओं के व्यापारी लाभ में रहें। शनि राहु की स्थिति के कारण विश्व में कहीं महा अशुभ फल होने का योग है। छोटे व्यापारियों को चाहिये, खरीदो फरोख्त करते रहें तो अवश्य लाभ में रहेंगे।

आकाश लक्षणम्——ति० ३ से ७ तक तथा ११ से १४ तक पश्चिमोत्तर में कहीं कहीं बूंदा-बांदी तथा साधारण वर्षा के योग पाये जाते हैं।

माघशुक्ल १५ रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ६९२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	८	९	४	११	७	७	१
१३	४	१७	२	२४	९	१९	१९
१४	५८	२	१	१३	२२	५२	५२
१६	३१	७	४१	४८	५९	३१	३१
६०	३९	६९	७	७०	१	३	३
२३	२६	१५	४४	२३	३०	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श.	मू.	श्र.	म.	रे.	[illegible]	ज्ये.	रो.
२	२	३	१	३	२	१	३

शकुनवि०—माघ सुदी सप्तमी बादल बिजली होय।
पूर्व उत्तर वायु चले संवत् अच्छा होय॥

माघ उजाली दूज वा तीज रखो जल धार।
चमके दामिनी जानिय चौमासा भयकार।

संवत् २०१२ शाकः १८७७ फाल्गुन कृष्णपक्षः २४ | (२७ फर. से १२ मा. तक १९५६ ई.) उत्तरायणम्, द.गो. वसन्ततुः।

वि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. फाल्गुन	अं. फरवरी	मु. रजब	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		सौरसूर्यस्पष्टः उदयकाले				ग्रहदर्शन—मं. बु. सूर्योदय से पहिले पूर्व क्षितिज से ऊपर, शनि याम्योत्तर वृत्तासन्न होगा। शु. सूर्यास्त बाद पश्चिम क्षितिज सेA
अवम.		१	र.	५६	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	
२८	१६	२	चं.	५४	००	उ.फा	५७	४८	धृ.	२२	४१	तै.	२५	२५	१६	२७	१४	कं. १३।४०	६	५९	६	१६	१०	१४	१४	३६	Aऊपर और गु. पूर्व क्षितिजस्थ रहेगा।
२८	२०	३	मं.	५२	१८	ह.	५७	४५	शू.	१७	५१	व.	२३	९	१७	२८	१५	कन्यायाम्	६	५८	६	१७	१०	१५	१४	५६	भ. २३।९ उ. ५२।१८ या.
२८	२४	४	बु.	५१	४७	चि.	५८	५४	गं.	१३	५४	ब.	२२	२	१८	२९	१६	तु. २८।१९	६	५६	६	१८	१०	१६	१५	१४	श्रीगणेश ४ व्र.
२८	२६	५	गु.	५२	३५	स्वा.	६०	००	वृ.	११	५८	कौ.	२२	११	१९	मा	१७	तुलायाम्	६	५५	६	१८	१०	१७	१५	३०	मेषेऽश्वि. शुक्रः ५७।०, मार्च ३ ता. ३१
२८	३०	६	शु.	५४	४४	स्वा.	१	२१	ध्रु.	९	१	ग.	२३	३९	२०	२	१८	वृ. ४९।८	६	५३	६	१९	१०	१८	१५	४४	भ. ५४।४४ उ., धनि· बुधः ३।३८,
२८	३५	७	श.	५७	५७	वि.	५	४	व्या	८	४	वि.	२६	२०	२१	३	१९	वृश्चिके	६	५२	६	२०	१०	१९	१५	५७	भ. २६।२० या., पू. भा. रविः ४३।५४
२८	४०	८	र.	६०	००	अनु.	९	५०	ह.	८	००	बा.	०	५	२२	४	२०	वृश्चिके	६	५१	६	२१	१०	२०	१६	९	श्रीसीताजन्म ८,
२८	४५	८	चं.	२	१४	ज्ये.	१५	३५	व.	८	४०	कौ.	२	१४	२३	५	२१	ध. १५।३५	६	४९	६	२१	१०	२१	१६	१८	
२८	५०	९	मं.	७	१३	मू.	२१	५५	सि.	९	५१	ग.	७	१३	२४	६	२२	धनुषि.	६	४८	६	२२	१०	२२	१६	२५	भ. ३९।५३ उ., कुम्भे बुधः ५३।११,
२८	५५	१०	बु.	१२	३३	पू.षा	२८	३०	व्य.	११	१८	वि.	१२	३३	२५	७	२३	म. ४५।६	६	४७	६	२३	१०	२३	१६	२८	भ. १२।३३ या,
२९	००	११	गु.	१७	५०	उ.षा	३४	५४	व.	१२	३९	बा.	१७	५०	२६	८	२४	मकरे	६	४६	६	२४	१०	२४	१६	३०	विजया ११ व्र. सर्वेषाम्, उ. षा.ऽमं।।।ऽ चौ. ।ऽ।। दि. ल. १
२९	५	१२	शु.	२२	३२	श्र.	४०	४४	प.	१३	३८	तै.	२२	३२	२७	९	२५	मकरे	६	४४	६	२४	१०	२५	१६	३१	पू. षा. भौमः ४४।२३, प्रदोषव्र.,
२९	१०	१३	श.	२६	३०	ध.	४५	४१	शि.	१४	९	व.	२६	३०	२८	१०	२६	कुं. १३।१२	६	४३	६	२५	१०	२६	१६	३०	भ. २६।३० उ. ५७।५२ या. पञ्चक प्रा. १३।१२, श्रीमहाशिवरात्रिव्र.,
२९	१५	१४	र.	२९	१५	श.	४९	३२	सि.	१३	४७	श.	२९	१५	२९	११	२७	कुम्भे	६	४३	६	२५	१०	२७	१६	२५	शत. बुधः २२।५४, मेला शिव १४,
२९	२०	३०	चं	३०	५४	पू.भा	५२	११	सा.	१२	३४	च.	०	४	३०	१२	२८	मी. ३६।३१	६	४२	६	२६	१०	२८	१६	१९	वक्री शनिः २०१० सोमवती ३०,

फाल्गुनकृष्ण ८ रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ६९९

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	१०	८	९	४	०	७	७	१
	२०	९	२५	१	२	९	१९	१९
	१६	३४	५६	१०	२२	३१	३०	३०
	९	१६	५६	५	१६	१	१७	१७
	६०	३९	८१	७	६९	०	३	३
	१२	२१	४७	६	१९	५३	११	११
क्रां:		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	पू.भा १	मू. ३	ध. १	म. १	अ. १	कृ. २	ज्ये. १	रो. ३
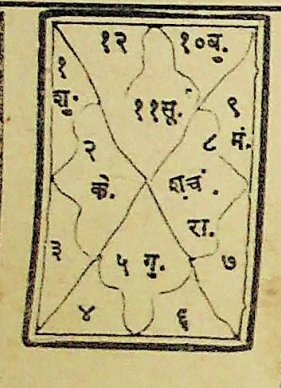
गुड़ खण्ड चना उड़द रूई और चांदी के भाव में तेजी रहे। आलू ऊन अलसी में मन्दा रहे। गेहूँ के भाव में घटा-बढ़ी रुख तेज। ति० ११ से घी तेल का भाव तेज रहे। यहां रूई के व्यापारी रूई बेचें तो लाभ में रहेंगे। अलसी सरसों तमाखूं का स्टाक करने से भविष्य में अच्छा लाभ हो।

आकाश लक्षणम्—ति. ९ से १३ तक देहली राजस्थान उत्तरी प्रान्तों में कहींर बादल चाल तथा वायु का जोर रहे।

फाल्गुनकृष्ण ३० चन्द्र इष्टम् ०।० दिनगणः ७०७
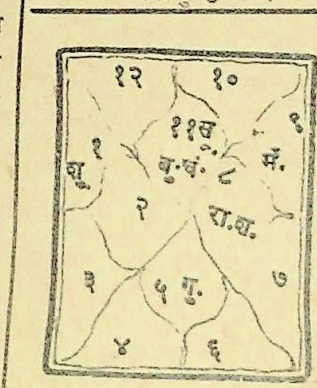
	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	१०	८	१०	४	००	७	७	१
	२८	१४	७	०	११	९	१९	१९
	१६	४८	३७	१६	३१	३४	४	४
	१९	५०	५	४१	१६	४८	५१	५१
	५९	३९	९२	६	६८	००	३	३
	५४	१८	२०	२२	११	१०	११	११
क्रां:		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	पू.भा ३	पू.षा. १	श. १	म. १	अ. ४	कृ. २	ज्ये. १	रो. ३

शकुन विचार—फाल्गुण बदी तीज को जान।
दीखै पवन मेघ प्रमान ॥
असोज सुदि में वर्षा होय।
रात दिन वर्षे मन गोय।
फाल्गुण कारी दूज दिन निर्मल रहे अकाश।
श्रावण भादों जल बहु सुघर जाय चोमास।

फाल्गुनकृष्ण पक्ष में शिवरात्रि का व्रत अवश्य करना चाहिये, इससे मनुष्य का कल्याण होता है।

संवत् २०१२ शाकः १८७७ फाल्गुन शुक्लपक्षः २५ | हि. | अं. | मु. | चन्द्रः सञ्चारः | सू. उ. रेल्वे | सू. अ. रेल्वे | सौरसूर्यस्पष्टः उदयकाले | (१३ मार्च से २६ मार्च तक १९५६ ई०) उत्तरायण... वसन्ततुः।

ग्रहदर्शन—म सू.उ. से पहिले याम्योत्तर वृत्तासन्न तथा शनि पश्चिम

संवत् २०१२ शक: १८७७ फाल्गुन शुक्लपक्ष २५															हि.	अ.	मं.	चन्द्र:	सू. उ.		सू. अ.		सारसूर्यस्पष्ट:			
दि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.				सञ्चार:	रेल्वे		रेल्वे		उदयकाले			
२९	२५	१	मं.	३१	१०	उ.भा	५३	३२	शु.	१०	२०	किं.	१	२	१	१३	२९	मीने	६	४१	६	२७	१०	२९	१६	१०
२९	३०	२	बु.	३०	१२	रे.	५३	४१	शु.	७	४	बा.	०	४१	२	१४	१	मे.५३।४१	६	३९	६	२७	११	०	१५	५९
२९	३५	३	गु.	२७	५८	अ.	५२	३८	ब्र.	२/५७	५०/४३	ग.	२७	५८	३	१५	२	मेषे	६	३८	६	२८	११	१	१५	४७
२९	४०	४	शु.	२४	४३	भ.	५०	४४	ऐं.	५१	५१	वि.	२४	४३	४	१६	३	मेषे	६	३८	६	२९	११	२	१५	३२
२९	४५	५	श.	२०	३६	कृ.	४७	५८	वि.	४५	१७	बा.	२०	३६	५	१७	४	वृ. ५।२	६	३७	६	३०	११	३	१५	१५
२९	५०	६	र.	१५	४०	रो.	४४	३२	प्री.	३८	११	तै.	१५	४०	६	१८	५	वृषे	६	३५	६	३०	११	४	१४	५५
२९	५५	७	चं.	१०	११	मृ.	४०	४०	आ.	३०	४३	व.	१०	११	७	१९	६	मि.१२।३६	६	३५	६	३१	११	५	१४	३४
३०	००	८	मं.	४	१९	आ.	३६	३४	सौ.	२३	३	ब.	४	१९	८	२०	७	मिथुने	६	३३	६	३२	११	६	१४	११
अधम.		९	मं.	५८	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३०	५	१०	बु.	५२	२१	पुन.	३२	२५	शो.	१५	११	तै.	२५	२०	९	२१	८	क.१८।२७	६	३१	६	३२	११	७	१३	४६
३०	१०	११	गु.	४६	४०	पु.	२८	२९	अ.	७	३३	व.	१९	३०	१०	२२	९	कर्के	६	३०	६	३३	११	८	१३	१७
३०	१४	१२	शु.	४१	२२	श्ले.	२४	४९	सु.	५३	४	ब.	१४	१	११	२३	१०	सि.२४।४९	६	३०	६	३४	११	९	१२	४६
३०	१८	१३	श.	३६	४४	म.	२१	४८	शू.	४६	३३	कौ.	९	३	१२	२४	११	सिंहे	६	२९	६	३५	११	१०	१२	१३
३०	२२	१४	र.	३२	५६	पू.फा	१९	३७	गं.	४०	४५	ग.	४	५०	१३	२५	१२	कं. ३४।१६	६	२७	६	३५	११	११	११	३८
३०	२८	१५	चं.	३०	४	उ.फा	१८	१३	वृ.	३५	४४	वि	१	३०	१४	२६	१३	कन्यायाम्	६	२५	६	३७	११	१२	११	२

(२२ मार्च से २८ मार्च तक १९५६ ई०) उत्तरायण [illegible] वसन्तऋतु:

ग्रहदर्शन—मं सू.उ. से पहिले याम्योत्तर वृत्तासन्न तथा शनि पश्चिम क्षितिज से ऊपर होगा। शु. सूर्यास्त बाद पश्चिम क्षितिज में †

स. मीनेऽर्कः ४३।५८ म् ४५ पुण्यं मध्याह्नोत्तरम् भरि. १ शुक्रः§

व. कर्के श्ले. ४ गुरुः ४३।५९, सायन सु. ८ पञ्चक स. ५३।४१

भ. ५६।२० उ.

भ. २४।४३ या.

उ. भा. रविः ४।४७

§ ३६।२, चन्द्रदर्शनसम्भव:

म. १०।११, उ. ३७।१५ या., पू.भा. बुधः ३७।२३, सा. मेषे भानु:*

*५१।४९ होलाष्टकारम्भ:

† तथा गुरु पूर्व क्षितिज से ऊपर होगा। बु. ति. १२ को पूर्व में A

A अस्त होगा।

भ. १९।३० उ. ४६।४० या. आमला ११ व्र.

पूर्वास्तो बुधः २२।३, निम्बार्काणां ११ व्र.,

प्रदोष व्र.,

भ. ३२।५६ उ., मीने बुधः १७।५९ कृत्ति. शुक्र. ४०।३, होलिका ‡

भ. १।३० या. सत्यव्र:

‡दहनम् (भद्रामुखं त्यक्त्वा)

फाल्गुनशुक्ल ८ सोम इष्टम् ०।० दिनगण: ७१५

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	१०	३	०	७	७	१
६	२०	२०	२९	२०	९	१८	१८
१४	२	३८	३१	२८	३१	३९	३९
११	१३	२८	५	४८	३०	२७	२७
५९	३१	१०२	५	६६	००	३	३
३०	४	५	१०	१८	४६	११	११
क्रांति	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा	पू.षा.	पू.भा	श्ले.	भ.	अनु	ज्ये.	रो.
१	३	१	४	२	२	१	३

इस पक्ष में—प्रजामें असन्तोष। प्राय: गृहस्थों में परस्पर कलह हो। गेहूँ, शक्कर, गुड़, घी, तेल, खांड, मूंगफली, के भावमें तेजी हो। रेशम, कुष्टा के भाव में मन्दी। नमक, मिर्च, कर्पाणा का भाव सम। लौंग, जैफल, नारियल कुछ तेज। सरसों, रुई का भाव तेज रहकर बाद में मन्दा। तमाखु, सीरा कोयला, लकड़ी व काले रङ्ग के चौपाये तेज हों। सोना, चान्दी का भाव समान रहे। ति. १२ से रुई के व्यापार में उतार चढ़ाव खूब हों। गेहूँ, अलसी में और तेजी आवे।

आकाशलक्षण—ति. १, २, ६, और ११ से १५ तक कहीं २ बादल वाल व वायु का जोर रहे।

फाल्गुनशुक्ल १५ चन्द्र इष्टम् ०।० दिनगण: ७२१

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	११	८	११	३	०	७	७	१
	१२	२३	१	२९	२७	९	१८	१८
	११	५६	१६	३	१	२४	२०	२०
	२	००	४३	२७	३४	५८	२३	२३
	५०	३८	१०९	४	६४	१	३	३
	२४	५३	२३	१३	५१	२०	११	११
क्रांति		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	उ.भा	पू.षा.	पू.भा	श्ले.	कृ.	अनु	ज्ये.	रो.
	३	४	४	४	१	२	१	३

श. वि.—फाल्गुन सुदी सप्तमी जो वर्षा महाघन छाय। पांचम नव आसोज सुदी जल थल एक कराय॥ फाल्गुन सुदी जो पूर्णिमा गर्जेवर्षा होय। धान्य सातवें मास में निश्चय मंहगा होय॥ फा० शु० १५ को शाम के वक्त भद्रा रहित समय में होली का पूजन और हवन करना चाहिये। होली दाहके समय पूर्व, पश्चिम, उत्तर, एवं ईशान की वायु राजा प्रजा के लिए शुभ होती है, नैर्ऋत्य कोण की वायु दुर्भिक्ष, आग्नेय की अग्निभय, वायव्य की अधिक वायु, ऊपर की भयप्रद, और चारों ओर की जोरदार वायु युद्ध आदि से प्रजा का नाश करने वाली होती है।

संवत् २०१२ शाकः १८७७ चैत्रकृष्णपक्षः २६

दि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि.	अं.	म.	चंद्रः संचारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		सौरसूर्यस्पष्टः उदय काले			
३०	३२	१	मं.	२८	२०	ह.	१७	५५	धु.	३१	३६	कौ.	२८	२०	१५	२७	१४	तु. ४८।२२	६	२३	६	३७	११	१३	१०	२३
३०	[illegible]	२	बु.	२७	४७	चि.	१८	५०	व्या	२८	२५	ग.	२७	४७	१६	२८	१५	तुलायाम्	६	२२	६	३८	११	१४	९	३९
३०	४२	३	गु.	२८	३५	स्वा.	२०	५९	ह.	२६	१७	वि.	२८	३५	१७	२९	१६	तुलायाम्	६	२१	६	३९	११	१५	८	५३
३०	४६	४	शु.	३०	४४	वि.	२४	२७	व.	२५	११	बा	३०	४४	१८	३०	१७	वृ. ८।३५	६	२०	६	४०	११	१६	८	६
३०	५०	५	श.	३३	५७	अनु.	२९	१	सि.	२४	५४	कौ.	२	२०	१९	३१	१८	वृश्चिके	६	१८	६	४०	११	१७	८	१८
३०	५४	६	र.	३८	१०	ज्ये.	३४	३४	व्य.	२५	२६	ग.	६	३	२०	अ१	१९	ध. ३४।३४	६	१७	६	४१	११	१८	६	२८
३०	५८	७	चं.	४३	६	मू.	४०	४९	व.	२६	३५	वि.	१०	३८	२१	२	२०	धनुषि	६	१६	६	४१	११	१९	५	३५
३१	३	८	मं.	४८	२१	पू.षा.	४७	२२	प.	२८	३	ब.	१५	४३	२२	३	२१	धनुषि	६	१५	६	४१	११	२०	४	४०
३१	७	९	बु.	५३	५९	उषा.	५३	५२	शि.	२९	३७	तै.	२०	५५	२३	४	२२	म. ३।५९	६	१४	६	४२	११	२१	३	४३
३१	१२	१०	गु.	५८	६	श्र.	५९	४७	सि.	३०	५२	व.	२५	४७	२४	५	२३	मकरे	६	१३	६	४३	११	२२	२	४४
३१	१६	११	शु.	६०	००	ध.	६०	००	सा.	३१	३७	ब.	३०	१	२५	६	२४	कुं. ३२।२५	६	१२	६	४३	११	२३	१	४३
३१	२०	११	श.	१	५६	ध.	५	३	शु.	३१	३४	बा.	१	५६	२६	७	२५	कुम्भे	६	१०	६	४३	११	२४	०	३९
३१	२४	१२	र.	४	३३	श	९	५	शु.	३०	३८	तै.	४	३३	२७	८	२६	मी. ५६।१५	६	९	६	४४	११	२४	५९	३३
३१	२८	१३	चं.	६	४	पू.भा.	११	५९	ब्र.	२८	४२	व.	६	४	२८	९	२७	मीने	६	८	६	४४	११	२५	५८	२४
३१	३२	१४	मं.	६	१३	उ.भा	१३	३९	ऐ.	२५	४५	श.	६	१३	२९	१०	२८	मीने	६	६	६	४४	११	२६	५७	१२
३१	३६	३०	बु.	५	६	रे.	१४	४	वै.	२१	४८	ना.	५	६	३०	११	२९	मे. १४।४	६	५	६	४५	११	२७	५५	५७

(२७ मार्च से ११ अप्रैल तक १९५६ ई०) उत्तरायणगोलो वसन्तर्तुः।

ग्रहदर्शनः—मं. सूर्योदय से पूर्व याम्योत्तरवृत्तासन्न तथा श. उससे कुछ पश्चिम की ओर झुका होगा। शु. सूर्यास्तबाद पश्चिम क्षितिज से§

उ. भा. बुधः ६।४०, होला १, मेला श्री आनन्दपुर साहिब,†
भ. ५८।११ उ., वृषे शुक्रः ४६।५५
भ. २८।३५ या., श्रीगणेश ४ व्र. †आम्रपुष्पप्राशनम्,
रेव. रविः ३२।२०, उ. षा. भौमः १३।१९
§काफी ऊपर तथा गुरु पूर्व क्षितिज से काफी ऊपर होगा।
भ. ३८।१० उ., अप्रैल ४ ता. ३०
भ. १०।३८ या., श्रीशीतला ८,
रेव. बुधः ०।१
मकरे भौमः २३।२१
भ. २५।४७ उ. ५८।६ या.
पञ्चकप्रा. ३२।२५, पापमोचिनी ११ व्र. स्मा.,
रोहि. शुक्रः २१।२३, पापमोचिनी ११ व्र. वै. निं.,
प्रदोषव्र.,
भ. ६।४ उ. ३६।८ या., मेषेऽश्वि. बुधः २६।४१
मेला पृथूदक (पिहोवा)
पञ्चक स. १४।४ मन्वादि, चान्द्रसंवत्सर समाप्तिः।

चैत्रकृष्ण ८ भौम इष्टम् ०।० दिनगणः ७२९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	११	३	१	७	७	१
२०	२६	१६	२८	५	९	१७	१७
४	६	३९	३६	३१	१०	५४	५४
४०	१९	४९	१२	३५	५०	५८	५८
५९	३८	[illegible]	२	६२	२	३	३
५	४१	५७	५५	३६	७	११	११
मोगः	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रे.	उ.षा.	उ.भा.	कृ.	कृ.	कृ.	ज्ये.	रो.
२	१	४	४	३	२	१	३

इस पक्ष में—प्रायः बच्चों को रक्त विकार व चेचक का भय हो। प्रजा में पीड़ा। रुई चान्दी के व्यापार में खासी मन्दी आवे। गेहूँ चना, उड़द आदि अनाज के भाव में तेजी रहे। बिनौला में घटावढ़ी चलकर अन्त में तेजी रहे। हैसियन, जूट के भाव में भारी उतार चढ़ाव हो। जिस्त, ताम्बा, लोहा, कली तेजी के बाद मन्दे हों। गाय, बैल सस्ते हों। ति. ८ से अलसी, ऊन, तेल, घी, सोना, चान्दी और रुई में तेजी का झटका आवे। ति. १३ से तिल, तेल, रुई, चान्दी, खांड में मन्दी आवे। जवाहरात में तेजी।

आकाश लक्षण—ति. १ से ९ तक तथा ११, १२ को बादलचाल, हवा का जोर रहे, कहीं २ बूंदाबांदी भी हो।

चैत्रकृष्ण ३० बुध इष्टम् ०।० दिनगणः ७३७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	९	०	३	१	७	७	१
२७	४	३	२८	१३	८	१७	१७
५५	१४	१६	१८	३९	५१	२९	२९
५७	२८	३३	२५	१९	११	३२	३२
५८	३८	[illegible]	२	५९	२	३	३
४५	२३	३२	२९	४९	४५	११	११
मोगः	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रे.	उ.षा.	अ.	कृ.	रो.	कृ.	ज्ये.	रो.
४	२	१	४	२	२	१	३

शकुन विचार—चैत्र वदी प्रतिपदा को गर्जे मेघ अपार, श्रावण भादवके विषे अनावृष्टि निरधार। चौथ पञ्चमी चैत्र वदि, वर्षे और चले वाय। पड़े काल उस देश में ऐसा योग बताय॥ चन्द्रमौलि शंकर चरण बार २ शिर नाय। संवत् यह पूर्ण कियो गिरा गणेश मनाय॥ चैत्र कृष्ण १ मंगलवार "को आम्रमर्य्य वसन्तस्य माकन्दकुसुमन्तव। सचन्दनं पिबाम्यद्य सर्वकामार्थ- सिद्धये" ...

घण्टात्मक स्पष्ट स्वदेशीय (लोकल) टाइम से घट्यादिक इष्ट

स्वरशास्त्र का चमत्कार

(१) प्रातः जागते समय जिस तरफ से श्वास चल रहा हो उसी ओर के हाथ

घण्टात्मक स्पष्ट स्वदेशीय (लोकल) टाइम से घटचादिक इष्ट निकालने की रीति

यदि प्रश्न वा जन्म समय का लोकल टाइम दिन के १२ बजे से पहिले हो तो जन्म वा प्रश्नकाल के लोकल घण्टे मिन्टों में से सूर्योदय के लोकल घन्टे मिन्टों को घटाकर जो घंटे मिन्ट शेष बचें, उनकी घड़ी पल बना लो, बस वही सूर्योदयात् शुद्धेष्ट होगा। यदि दिन के १२ बजे के बाद रात के १२ बजे तक जन्म व प्रश्न काल हो तो घण्टे मिनटों के घड़ी पल बना कर दिनार्द्ध में जोड़ने से सूर्योदयात् इष्टकाल आता है। यदि रात के १२ बजे से पीछे अर्द्धोदय पर्यन्त का इष्ट काल अपेक्षित हो तो १२ बजे के अनन्तर जितने घण्टे मिनट हो गये हों उनकी घड़ी पल बना कर उस दिन के मिश्रमान (दिनार्द्ध में से ३० घड़ी जोड़े हुए अंक) में जोड़ देने से सूर्योदयात् शुद्धेष्ट काल होगा।

अथवा जेब घड़ी द्वारा अभीष्ट दिन को अपने ग्राम का सूर्योदय पहिले मिला कर नोट कर रक्खें, या दूसरे दिन मिला लें, फिर जितने घन्टे मिनट सूर्योदय से जन्म अथवा प्रश्न पर्यन्त व्यतीत हो चुके हों उनकी घड़ी पल बना लेने से भी सूर्योदयात् शुद्धेष्ट आता है। इसमें स्टैंडर्ड लोकल टाइम का अन्तर जोड़ने घटाने की कोई आवश्यकता नहीं।

नोट:—१ घड़ी में २४ मिनट, एक मिनट में २॥ पल और एक सैकिण्ड में २॥ विपल होते हैं।

द्वादशांगुल शंकु पर से इष्ट साधन

यदि किसी स्थान पर अंग्रेजी घड़ी न मिले तो ज्योतिषी को चाहिए कि सूक्ष्मेष्ट ज्ञानार्थ आर्यभट्टोक्तद्वादशांगुलशंकु (गाजर सदृश ऊपर से पतला नीचे से मोटा गोलाकार) से इष्टकाल साधन करे—परद्युमानं दिनमानवर्जितं नगघ्नमक्षाप्तमहस्तु मध्यभा। भावार्थ—परमदिनमान (स्वदेशीय सब दिनमानों से बड़ा दिनमान) जो सूर्य की सायन कर्क संक्रांति के दिन होता है, उसमें से इष्ट दिनमान को हीन करे, शेष को सात गुणा करे फिर ५ से भाग दें जो लब्ध मिले सो इष्ट दिन में उसी देश की मध्यभा (मध्याह्न छाया) होती है, अर्थात् बारह अंगुल के शंकु की छाया होती है। द्युमध्यभोना दशयुक् निजेष्टभा शराहताह-र्मितिमुद्धरेत्तया। क्रमान्मतापूर्वपराद्युखण्डयोर्द्वयोरवाप्ता गतगम्यनाडिका॥ जिस समय का इष्टकाल जानना हो उस समय शंकु की अंगुल द्व्यंगुलात्मक छाया (इष्टभा) को दश १० में युक्त करें फिर इस योग में पूर्व सिद्ध मध्यभा को घटा दें, जो शेष बचे वह भाजक (जिस का भाग देना है) होता है, अपने घटी पलात्मक दिनमान को पांच गुणा कर देने पर भाज्य (जिस अंक में भाग देना है) होता है, भाज्य में भाजक का भाग देकर जो फल लाना जो फल आवे वह घटी पलात्मक इष्ट काल आता है। परन्तु इसमें यह स्मरण रखें कि यदि मध्याह्न से पहले नापा हो तो इतने घटी पल गत और मध्याह्न से पीछे नापा हो तो, इतने घटी पल शेष दिन है ऐसा जानना।

शुक्रोपासित मृतसञ्जीवनी मन्त्रः

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे भर्गोदेवस्य धीमहि सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं धियोयोनः प्रचोदयात् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

स्वरशास्त्र का चमत्कार

(१) प्रातः जागते समय जिस नथने से श्वास चल रहा हो उसी ओर के हाथ को देखकर श्वास अन्दर खींचे, पुनः देखे, भगवान् को स्मरण कर हाथ चूमे। चलते श्वास वाली ओर का पाद प्रथम पृथ्वी पर रखें। सदैव ऐसा ही करें। सदा सफलता व प्रसन्नता प्राप्त होगी, सभी दुःख दूर होंगे। (२) दिन को बायां और रात को दायां स्वर चलाया करें। भोजन करने के बाद आधा घंटा बाईं करवट लेटें, पाखाना करते और नहाते समय दायां स्वर चलाया करें जल पीने के बाद दाईं करवट लेटें और पेशाब करते समय बायां स्वर चलाया करें। रोग पास न फटकने पायेंगे। (३) जिस से कार्य लेना हो उसे चलते श्वास की ओर रख कर बातचीत करें, काम निकल आयेगा। (४) पीड़ा आरम्भ होते समय जो स्वर चल रहा हो उसे बन्द कर दें, दूसरा स्वर चलायें, पीड़ा भाग जायगी। (५) शत्रु, रूठे मित्र या क्रोधित अफसर के पास जाने से पहले शनैः शनैः श्वास अन्दर खेंच कर नाभी में ठहरायें, उस पुरुष की मूर्त्ति नाभि में देखें फिर शनैः शनैः श्वास बाहर निकाल, नाभि में बैठी उसकी मूर्त्ति का ध्यान फिर धरें, श्वास अन्दर खेंचते हुए उस रूठे पुरुष के विचार मन में लिए उसके पास जायें, उसे बन्द नथने की ओर करके बातचीत करें, इच्छाएं पूर्ण होंगी। (६) रोग सरदी से हो तो दायां और गर्मी से हो तो बायां स्वर चलाने से आराम होगा। (७) शुक्ल पक्ष के पहले रविवार को दायां स्वर चलते समय दृढ़निश्चयपूर्वक पत्र लिखें अवश्य आशा पूर्ण होगी। (८) रात के पिछले पहर पुरुष का दायां और स्त्री का बायां स्वर चलते समय भोग हो तो स्त्री-पुरुष में अटूट प्रेम बढ़े व स्वास्थ्य ठीक रहे। (९) दोनों नथने चलते समय सर्व कार्य छोड़ ईश्वराराधन से इच्छाएँ पूर्ण होंगी।

अथ योगिनीदशाकृतारिष्टशमनाय जपार्थमंगलादीनां मन्त्राः ॥

मंगलामन्त्रः	पिंगलामन्त्रः	धान्यामन्त्रः	भ्रामरीमन्त्रः
ॐ ह्रीं मंगले मंगलायै स्वाहा	ॐ ग्लौं पिंगले वीरकारिणीप्रसादे फट्स्वाहा	ॐ श्रीं धनदे धन्ये स्वाहा	ॐ भ्रामरिजगतामधीश्वरि भ्रामरि क्लीं स्वाहा
भद्रिका मन्त्रः	**उल्कामन्त्रः**	**सिद्धामन्त्रः**	**संकटामन्त्रः**
ॐ भद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय	ॐ उल्के मम रोगं नाशय जंभयस्वाहा	ॐ ह्रीं सिद्धे मे सर्वमानसं साधय	ॐ ह्रीं संकटे मम रोगं नाशय स्वाहा

प्रहरवशात् भूकम्पफलज्ञानाय चक्रम्

दिने	दिने	दिने	दिने	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ
प्र. प्रहर	द्वि. प्रहर	तृ. प्रहर	च. प्रहर	प्र० प्रहर	द्वि० प्रहर	तृ० प्रहर	च. प्रहर
राजा मृत्यु	मंत्रीभय	पशुभय	अन्नका नाश	अन्नवृद्धि	राज्यभय	प्रजापीड़ा	राजयुद्ध

अथ तेजी मन्दी निकालने की ध्रुवा ।

अथ दिन ध्रुवा ॥ १ ॥

सूर्य १३७	चन्द्र ९४	मंगल ८०९
बुध ७०२	बृहस्पति ७१३	शुक्र ८०८
शनि ८५	०	०
पृथ्वी भर का ध्रुवा		२०८५

अथ तिथि ध्रुवा ॥ २ ॥

प्रतिपद ६१०	द्वितीया ७१०	तृतीया ४८१	चतुर्थी ३५७
पंचमी ६३४	षष्ठी ३०४	सप्तमी ८१२	अष्टमी १११
नवमी ५६५	दशमी ३०५	एकादशी २३३	द्वादशी २६१
त्रयोद० ५२४	चतुर्दशी ५५२	पूर्णिमा ६३०	आमावा १६६

अथ नक्षत्र ध्रुवा ॥ ३ ॥

अश्वि १७६	भरणी ६८३	कृत्ति ३७०	रोहि० ७७५	मृग ६८२	आर्द्रा १४६	पुन ५४०
पुष्य ६३४	अश्ले १७०	मघा ७३	पू.फा. ८५	उ.फा. १४८	हस्त ८१०	चित्रा ३०५
स्वाती ८६१	विशा ७३४	अनु ७१२	ज्येष्ठा ७१६	मूल ६४३	पू.षा. ६१४	उ. षा. ६२३
अभि ६८३	श्रव ६५७	धनि ५००	शत० ५६४	पू.भा. ३३६	उ.भा. १८३	रेवती ७२०

अथ मास ध्रुवा ॥ ४ ॥

चैत्र ६१	वैशा० ६३	ज्येष्ठ ६५
आषा ६७	श्राव ६९	भाद्र ७१
आश्वि ७३	कार्ति ५१	मार्ग ५३
पौष ५५	माघ ५७	फाल्गु ६५

अथ सूर्य राशि ध्रुवा ॥५॥

मेष ५२०	वृष ७६२	मिथुन ५१०
कर्क २१८	सिंह ८३०	कन्या २६०
तुला ५०३	वृश्चिक ७११	धनु ५२४
मकर ५५४	कुम्भ २७०	मीन ५८६

अथ देश तथा ग्रामों की ध्रुवा ॥ ६ ॥

कलकत्ता २४७	नागपुर १६६	आसाम ७९१	इटावा ८९०
हरद्वार २७२	बिकानेर २१३	अजमेर १६७	बम्बई १९८
मध्य प्र० १६८	नेपाल १५४	चीन ६४२	पंजाब ४१९
रंगून १६७	सूरत १२८	युरोप ९७६	अमेरिका ३३२

अथ पदार्थों की ध्रुवा ॥ ७ ॥

सोना २५३	चांदी ७६०	ताम्बा ५६३	पीतल २५८	लोहा ९१५	कांसा २४९	पत्थर १६३	मोती १४२
रूई ७१७	कपड़ा १२७	पाट ४७६	हैसिअन ७३८	सुता १०३	तमाखू २४०	सुपारी २५२	लाह ८८
मरिच २६८	घृत ४६४	तेल १६९	अतर ७५	गुड़ २५६	चीनी ३२८	ऊन ११२	शाल ८११
धान ७१२	गेहूँ २३२	मूंग ८०१	चावल ७७४	तीसी ३८६	सरसो ८५८	राहर ३३३	तीसका ३१७
सोरा १५६	अफीम २६३	गौ १३०	बैल १६२	महिषी ६१२	भेड़ा ६१८	हाथी ८३०	घोड़ा ८३५

अथ तेजी-मन्दी देखने का चक्र ८

सूर्य १	चन्द्र २	भौम ३
तेज	अतिमन्द	तेज
राहु ४	बृहस्पति ५	शनि ६
अतितेज	मन्द	तेज
बुध ७	केतु ८	शुक्र ९
सम	तेज	तेज

॥ अथ तेजी मन्दी निकालने की रीति ॥

जिस देशकी जिस वस्तुकी, जिस दिन तेजी मन्दी निकालना हो उस देश, वस्तु, तिथि, वार, नक्षत्र, मास, राशि इन सबके ध्रुवाओंका योग (जोड़) कर नौ ९ का भाग देकर शेष से जिस दिनका विचारना है उस दिनसे शेष तुल्य कोष्ठमें ८ आठवें चक्रमें देखकर तेजी मन्दी ज्ञान कर लेना।

उदाहरण:—जैसे कलकत्ते में वैशाख सुदी तृतीया ३ चन्द्रवार को रोहिणी नक्षत्र में चांदी की तेजी मन्दी जाननी है। तो कलकत्ते की ध्रुवा २४७ वैशाख की ६३ तृतीया ध्रुवा ४८१ चन्द्रवार ध्रुवा ९४ रोहिणी नक्षत्र ध्रुवा ७७५ चांदीकी ७६० सूर्य मेष राशिका ध्रुवा ५२० सबका जोड़ २९४० इसमें ९ का भाग देनेसे शेष बचा ६ अतः ८वें चक्रमें देखा तो चन्द्र से [illegible]

भद्रायां कार्याकार्यनिर्णयः— भद्रायां मुखपुच्छघटीज्ञानम्

सर्वशुभकार्यों के लिये वर्जित काल—जन्ममास, जन्मतिथि, जन्मनक्षत्र, व्यतिपात, भद्रा, वैधृति, अमावस्या, माता पिता के श्राद्ध का दिन, तिथि-वृद्धि, तिथिक्षय, अधिक तथा क्षयमास, गुरु, शुक्र का अस्त तथा इनका बाल वृद्धत्व, १३ दिन का पक्ष, कुलिकयोग, अर्द्धयाम, महापात, विष्कुम्भ और वज्रयोग के आदि की ३ घड़ियां परिघयोग का आधा भाग, शूलयोग के आदि की ५ घड़ियां, गण्ड और अतिगण्ड के आदिकी ६ घड़ियां और व्याघातयोग के आदि की ९ घड़ियां ये सब शुभकार्यों में वर्जित हैं। मध्याह्न या मध्य रात्रि से पहले और पीछे के दस दस पलका पापग्रह, नवांशक ग्रहण के पहले के तीन दिन उत्पात और ग्रहण के पीछे के सात दिन (किसी के मत से ५ दिन, ३ दिन या ५ मुहूर्त) वर्जित हैं; स्वराशि से ४। ८।१२ वां चन्द्रमा तथा पाप ग्रह से युक्त चन्द्र व लग्न और नवांश के भी वर्जित हैं। सब शुभ कार्यों के लिये साधारणतः शुभमुहूर्त—अपने जन्मलग्न या जन्मराशि से ३।६।१०।११ वीं राशि लग्न में हों, शुभग्रह से युक्त व दृष्ट हों, लग्न से ८।१२ स्थान में कोई ग्रह न हों तो सब शुभकार्यों का आरम्भ सिद्धिदायक है॥

गुरु शुक्र के अस्त में वर्जित कर्म—बावली, बगीचा, तालाब, कूप, मकान; इनका आरम्भ और इनकी प्रतिष्ठा, व्रतारम्भ और व्रतोद्यापन, महादान, गोदान, प्रथमश्रावणीकर्म, नीलवृषभत्याग, मुंडनसंस्कार, देवतास्थापन, दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह, अपूर्वदेवतीर्थदर्शन, संन्यास, अग्निहोत्र, अभिषेक, समावर्तन, चातुर्मास्ययाग, कर्णवेध, विद्यारम्भ; इन कर्मों को गुरु शुक्र के अस्त में तथा इनके बाल्य-वार्धक्य में नहीं करना चाहिये॥ सीमन्तजातकादीनि प्राशनान्तानि यानि च। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः॥

गुरु शुक्र का बाल्यवृद्धत्व—शुक्र पश्चिमोदय के बाद १० दिन, पूर्वोदय के बाद ३ दिन बाल्य होता है। इसी प्रकार अस्त प्रथम पश्चिम में ५ दिन और पूर्व में १५ दिन वृद्धत्व होता है। गुरु का बाल्य तथा वृद्धत्व १५ दिन का ही होता है। एक आचार्य का मत है कि आवश्यक कर्म में गुरु शुक्र के बाल्य-वृद्धत्व का ३ दिन ही दोष मानना। इसी प्रकार चन्द्रमा का बाल्य आधे दिन, वृद्धत्व दोष ३ दिन मानना।

जन्मचन्द्रप्रशंसा—कृषिभवनविवाहेऽन्नप्राशने मौञ्जिबन्धे, प्रथमयुवतिसंगारामकूपादिकृत्ये। पटविधिमभिषेके जन्मचन्द्रः प्रशस्तः, इति वदति वराहः क्षौरयात्रां विहाय॥ द्वादशचन्द्रप्रशंसा-गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धने। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः॥

किस कार्य में किस ग्रह का बल देखना।

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	एषां बलम्
नृप दर्शने	सर्वसंस्कार्ये	संग्रामे	विद्याभ्यासे	विवाहे चोत्सवे	यात्रायां	दीक्षायां	पापकर्मणि	क्रूरकृत्ये	एतत् कृत्येषु

भद्रायां कार्याकार्यनिर्णयः—

वधबन्धविषाग्न्यस्त्रच्छेदनोच्चाटनादि यत्॥ तुरंगमहिषोष्ट्रादि कर्म विष्ट्यां तु सिद्ध्यति॥ न कुर्यान्मंगलं विष्ट्यां जीवितार्थी कदाचन। कुर्वन्नज्ञस्तदा क्षिप्रं तत् सर्वं नाशतां व्रजेत्॥ **आवश्यके परिहारः**—दिवापरार्द्धजा विष्टिः पूर्वार्द्धोत्था यदा निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम्॥

भद्रायां मुखपुच्छघटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	आसां तिथीनाम्
प.	आ.	उ.	नै.	ई.	द.	वा.	पू.	आसु दिग्विदिक्षु
५	२	७	४	८	३	६	१	एषु यामेष्वादौ
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखघटी ५ कृष्णे शुभम्
८	१	६	३	७	२	५	४	एषु यामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रयं पुच्छं शुक्लाशुभम्

गुर्वादित्यविचारः— एकर्क्षे गुर्वर्के व्रतबन्धोद्वाहकादयः सर्वे। न शुभफलदाश्च गदिता ऋक्षान्तरेऽस्तमितेज्येऽनर्थदः प्रोक्तः, (भृगुः)॥ एकराशौ गुरुसूर्यौ न विवाहः कदाचन। मेषस्थिते दिवानाथे गुरुसूर्यौ तदा दोषो विनश्यति। सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहः कदाचन। मघादिपञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः। गंगासिंहेज्ये च शुभप्रदः॥ **आवश्यके परिहारः**—मघादिपञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः। गोदान्तरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृत्॥ नीचराशि (मकरगतो जीवः प्रशस्तः सर्वकर्मसु। नीचांशकगतस्त्याज्यो यस्मादंशेषु नीचता॥ यात्रोद्वाहौ प्रतिष्ठाञ्च गृहचूडाव्रतादिकम्। वर्जयेद्यत्नतश्चैव जीवे वक्रातिचारगे। **अपवादः**—अतिचारे सप्तदिनं वक्रे द्वादशमेव च। वर्ज्यं नीचस्थितेऽपि वागीशे मासमेकं विवर्जयेत्॥ **अन्यच्च**—वक्रे सुरेज्ये स्वगृहे दिनत्रयम्। वर्ज्यं मुनीन्द्रैरखिलेषु कर्मसु (मुहूर्तकल्पद्रुमे)॥

ताराबलविचारः—कृष्णाष्टम्यूर्ध्वतो ग्राह्यं दशाहं तारकाबलम्। परतोऽब्जबलं ग्राह्यं सर्वमंगलकर्मसु॥ **ताराऽपवादः**—पर्याये प्रथमे वर्ज्यः विपत्प्रत्यरिनैधनाः। द्वितीये त्वंशका वर्ज्याः तृतीये त्वखिलाः शुभाः। आद्यंशो विपदि त्याज्यः प्रत्यरे चरमोऽशुभः। वधस्त्याज्यस्तृतीयोंऽशः शेषा अंशास्तु शोभनाः॥

अथ शुभाशुभ-ताराज्ञानाय चक्रम्

जन्म नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें। गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभादि फल समझें।

१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२
जन्म	संपत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परममि
शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

आवश्यक मुहूर्त

गर्भाधानसंस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां—१,२,३,५,७,१०,११,१२,१३ । **शुभ नक्षत्र**—तीनों उत्तरा, मृ. ह. अनु. रो. स्वा. श्र. ध. श. । **शुभलग्न**—जब लग्न और ४,५,७,९,१० स्थानों में शुभग्रह हों, ३, ६, ११, स्थानों में पापग्रह हों, सूर्य मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो रजोदर्शनकाल से समरात्रि हो ॥

चित्रा पुन. पुष्य. अश्विनी गर्भाधान के लिये मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिये अशुभ काल

भद्रा, ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रांति का दिन; संध्याकाल; मंगल, रवि, शनिवार; रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां; जेष्ठा रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी, ४, ८, १२, लग्नों के अन्त की आधी घड़ी, ५, ९, १ लग्नों के आदि की आधी घड़ी, ५, १, १५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी, ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक घड़ी; निधनतारा; जन्म नक्षत्र, मूल, भरणी अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र, ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृतियोग, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिघयोग का आधा भाग, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापयुक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिये वर्जित हैं।

गर्भ के मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी		मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्रमा	शनि	बुध	गर्भाधानसमयका लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिये और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिये, यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन का मुहूर्त—गर्भाधान से तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृ. पुन. पु. ह. मूल और श्रवण नक्षत्र में १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थान में पापग्रह हों तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं ॥

सीमन्तसंस्कार का मुहूर्त—गर्भाधान से छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवंन के मुहूर्त में कही गईं तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमन्त शुभ होता है ॥

गर्भरक्षा के लिये विष्णुपूजा—गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में, शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहियें।

मेधाजननसंस्कार—बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहिले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगा के सुवर्ण सहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिला के "ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा २ चार बार मधु घृत चटावें ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिका पथ्य का मुहूर्त—रिक्तामा भद्रा व्यतिपात वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों, वार चं. बु. गु. श. हों, नक्षत्र मृग. पुन. पु. श्र. रे. मृ. हों, तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिका पथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त—रेवती तीनों उत्तरा रो. मृ. ह. स्वा. अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में, रवि गुरु और भौम वारों में, १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं। आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री के जलपूजन का मुहूर्त—मास समाप्त होने पर बुध गुरु या चन्द्रवार की ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र. पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जल पूजन उत्तम है; परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र पौष या अधिक मास पूरा होने पर भी जल पूजन न करना चाहिये।

जातकर्म और नामकर्मका मुहूर्त—संक्रांति का दिन भद्रा और व्यतिपात को छोड़ कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथियों में, जन्म काल से ११ वें या १२ वें दिन सोम बुध गुरु और शुक्रवार को, मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा रो. ह. अश्विनी पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहणमुहूर्त

सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

जन्म दिन से १०।१२।१६।१८।३२ वें दिन, शुभवार में, मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. तीनों उत्तरा. रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इनसे रहित तिथियों में १।४।७।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर (१।४।५।६ ७।९।१०।११ वें शुभग्रह हों ३।६।११ पापग्रह हों तो) उत्तम होता है ॥

निष्क्रमणमुहूर्त—स्वा. अश्वि. पुष्य. ह. मृ. पुन. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में, भौम, शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता अमा भद्रादि से रहित शुभदिन में, तीसरे चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२ वें दिन बालक का निष्क्रमण करे, इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजनपूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें।

आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवा कर या भोजन

पांचवें महीने में पृथ्वी वराह का पूजन कर, भौम की पूर्णबल

भूम्युपवेशनमुहूर्त—पांचवें महीने में पृथ्वी वराह का पूजन कर, भौम को पूर्णबल में तीनों उत्तरा. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़ कर स्थिरलग्न में शुभ दिन में बालक के कर्धनीकटिसूत्रबांध कर पृथ्वी पर बिठलावें।

तत्र मन्त्रः—रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुःप्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये ! इति ॥ इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रक्खें, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है ॥

अन्नप्राशन का मुहूर्त—जन्म मास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें में कन्या का भद्रादिदोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्विनी पु. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, दशम स्थान पापग्रह रहित हो, १, ६, ८ स्थानों में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी २ के मत से जन्मनक्षत्र अनु. शततारका और स्वाती अशुभ है ॥

कर्णवेध का मुहूर्त—चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) जन्म मास, जन्म-नक्षत्र ४, ९, १४ तिथियां जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़कर जन्म से १२वें दिन या १६ वें दिन या ६वें, ७वें, ८वें, मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्विनी पुष्य अभिजित्, नक्षत्रों में, जब लग्न से अष्टमस्थान शुद्ध हो, १, ४, ५, ७, ९, १० स्थान में शुभग्रह हों, ३ ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों, तुला वृष धन या मीन लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के करने से मनुष्य के हर्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या का नासिका छेदन का मुहूर्त—कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत. स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम पहर के समय नासिका वेध शुभ।

मुण्डन का मुहूर्त—गर्भाधानकाल से या जन्म कालसे विषम अर्थात् ३ रे, ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र बुध गुरु और शुक्रवार लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टमलग्न को छोड़ २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रान्ति के दिन छोड़ कर, जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, ज्ये. मृ. रे. चि. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है। लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु ५ वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिये निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिये ॥

मुण्डनकर्म में विशेष—स्वकुलशिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुद्ध समय में अपने २ इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो—"यथाकुलधर्म वः" इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है ॥

क्षौर बनवाने का मुहूर्त—मुण्डन के लिये जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गये हैं वे ही हजामत बनवाने के लिये शुभ हैं। वर्जित काल—शनि, रवि, भौमवार हजामत से नौवें दिन, सन्ध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३ तिथियां, संक्रान्ति का दिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवा कर या भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है ॥

विशेषफल—यज्ञ, विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है ॥ किसी किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे और रूपजीवी जैसे नट, भांड़ इत्यादि वह किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं ॥ वर्णभेद से क्षौर का वार—ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय भौमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त—जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायणसूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम बुध गुरु और शुक्र वार को, ह० अश्विनी पुष्य अभि० श्र० स्वा० रे० पुन० आर्द्रा चित्रा अनुराधा नक्षत्रों में, बुरे योगों और भद्रा को छोड़ कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में मेष कर्क तुला और मकर राशियां न होनी चाहियें ॥

विद्यारम्भ का मुहूर्त—उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़ कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को, २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में, मृ० आर्द्रा पुन० हस्त चि० स्वा० श्र० ध० शत० अश्विनी मू० तीनों पूर्वा तीनों उत्तरा, रो० पुष्य आश्ले० अनु० रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है ॥

फारसी अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त—मू० भौम शनिवार हों, ४।९।१४ तिथि हों, ज्ये० आश्ले० म०, तीनों पूर्वा० भ० कृ० वि० आर्द्रा उ० पा० शत० नक्षत्र शुभ हैं ॥

सीने पिरोने (सूचीकर्म) का मुहूर्त—अश्वि० पुन० चि० अनु० ध० ये नक्षत्र सूर्य बुध चन्द्र बृ० शु० ये वार १;२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियां शुभ हैं ॥

यज्ञोपवीतसंस्कार का मुहूर्त—यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है, देवताओं की पूजा संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत के अर्थ हैं पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु-धागा)-विशेष यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु, चन्द्र शुद्धि देख कर जन्म से या गर्भ से (गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११ वें, वैश्य १२ वें इन वर्षों में यदि न किया जाय तो ब्राह्मण १६ तक क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं, उसके बाद सावित्रीपतितव्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३उत्तरा रो. आश्ले. स्वा. श्र. ध. मू. मृ. रे. चि. अनु. तीनों पूर्वा. आर्द्रा वेधरहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिये पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू. चं. बु. (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि जैसे आषाढ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२ को और संक्रान्ति दिन को तथा रोगबाण को छोड़ कर मध्याह्न के पहिले शुभ है। शु. गु. चं. और लग्नेश ६।८वें स्थान में चं. शु. १२ वें स्थान में और १।५।८ पापग्रह अशुभ हैं। शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में पापग्रह ३।६।११ स्थानों में वृष या कर्क का पूर्णचन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु शुक्र के बाल वृद्ध अस्त के समय को छोड़ कर उपनयन शुभ है।

योनिनाड्यादिज्ञानचक्रम्

नक्षत्र	योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गणः	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथमें	पंच शलाका में विद्ध	सप्त शलाका में विद्ध	विष घटीके म. ध्रु.
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्र लघु	अश्वमुख	३	पूफा.	पूफा.	५०
भ.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्र क्रूर	योनि	३	अनु.	म.	२४
कृ.	मेष	वानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्र साधा	क्षुर	६	वि.	श्र.	३०
रो.	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि.	४०
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उषा.	उषा.	१४
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूषा.	पूषा.	२१
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.	३०
पु.	मेष	वानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व	अंध	क्षिप्र लघु	बाण	३	ज्ये.	ज्ये.	२०
आश्ले.	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध.	अनु.	३२
म.	मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्र क्रूर	गृह	५	श्र.	भ.	३०
पू.फा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्र क्रूर	मंचक	२	अश्वि.	अश्वि.	२०
उ.फा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.	१८
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्र लघु	कर	५	उभा.	उभा.	२१
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदुमैत्र	मुक्ता	१	पूभा.	पूभा.	२०
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूंगा	१	श.	श.	१४
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मिश्रसाधा.	तोरण	४	कृ.	ध.	१४
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	बलिनिभ	४	भ.	आश्ले.	१०
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य.	पु.	१४
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारु	सिंहपुच्छ	११	पुन.	पुन.	५६
पू.षा.	वानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	उग्र क्रूर	गजदंत	२	आ.	आ.	२४
उ.षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.	२०
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.	०
श्र.	वानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व	सुलो.	चरचल	वामन	३	म.	कृ.	१०
ध.	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	उर्ध्व	अंध	चरचल	मर्दल	४	आश्ले.	वि.	१०
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	उर्ध्व	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.	१८
पू.भा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्र क्रूर	मंचक	२	चि.	चि.	१६
उ.भा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.	२४
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा.	३०

नामाक्षरों के वर्ग देखने का कोष्ठक। स्वकीय वर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेंढा

इस चक्र के नक्षत्र जानने पर ही योनिनाडीगण आदि मालूम हो सकते हैं, पञ्चशलाका व सप्तशलाका वेध भी ज्ञात हो सकता है, जिस नक्षत्र का तारा आकाश में देखना है तो उसके समीप कितने तारे हैं उसका रूप कैसा है यह भी इस चक्र से जान सकते हैं॥

मेलापक सारिणी देखने की रीति

मुहूर्तशास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिलें उसमें गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणोंवाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या वा चिह्न भी हैं। उसका विवरण यह है कि--एक नाड़ीदोष की जगह (३), गणमहादोष की जगह (१), भकूट महादोष षडष्टक में (६), नवपञ्चम में (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहिले है वहां शून्य (०) रक्खा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां ऋण का (—)और जहां अधिक समझा गया वहां धनका चिह्न(+) दिया गया है। गुणों की संख्याके नीचे कोई अंक वा चिह्न नहीं है वहां निर्दोष समझना चाहिये। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिये कि ३६ गुणों में केवल १२ गुण मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ीदोष और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इसलिए सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिले तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और इसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिये। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुणसे कम हो तो विवाह के लिये विचार न करना चाहिये। क्योंकि अशुभ है, एक नक्षत्र में पादभेद हो तो नाड़ीदोष नहीं माना जाता।

आवश्यके दोषदानम्---द्व्यर्के ताम्रसुवर्णमष्टरिपुके गोयुग्मम-थाङ्कके। रौप्यं कांस्यमथैकनाड़ियुजि गोस्वर्णादि दत्वोद्वहेत्॥

अपवाद---न वर्गवर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा। तारा-विरुद्धे नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे॥ कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र दूसरा हो तो वर का नाशक है, यह मैत्री और योनि मिलती हों तो इसका भी दोष नहीं।

मेलापक सारिणी

वरस्य / भांश	मेष अ १	मेष भ १	मेष कृ ।	वृष कृ ॥।	वृष रो १	वृष मृ ॥	मिथुन मृ ॥	मिथुन आ १	मिथुन पुन ॥।	कर्क पुन ।	कर्क पु १	कर्क श्ले १	सिंह म १	सिंह पूफा १	सिंह उफा ।	कन्या उफा ॥।	कन्या ह १	कन्या चि ।	तुला चि ॥	तुला स्वा १	तुला वि ॥।	वृश्चिक वि ।	वृश्चिक अनु १	वृश्चिक ज्ये १	धनु मू १	धनु पूषा १	धनु उषा ।	मकर उषा ॥।	मकर श्र १	मकर ध ॥	कुम्भ ध ॥	कुम्भ शत १	कुम्भ पूभा ॥।	मीन पूभा ।	मीन उभा १	मीन रे १
तुला चि ॥	२२	१४ ११	२८	२३ ६+	१८॥ १६	१०॥ ३६	१२ ३५	२० १५	१८॥ ५+	१९	११ ३	२५	२४॥	१०॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० ४+	२० ३४	२८ ३	२७ ०	३३॥	२२॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१३ १३	२१ १	२३॥ १	२५	२३ ३	१८ ३५	२६ ५+	१८॥ १५	१२ १६	३ १३६२	१२ ६
स्वा १	२९ २+	२८	१६ ३	११ ३६	१४ २६	२४ -६	२६ ५+	२६ ५+	२७ ५+	२७॥	२८	२३ ३	१२॥ ३	२४	२५॥	२५॥ ४	२७॥ ४+	२१ ४+	२८	२८ ३	२० ०३	९ ३४०	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	३२ ३	२१॥ ३	२२॥ ३	२६	२१ ५+	२२ ५२+	२५ ५+	१८॥ ६	१९ ६	११ ३६
वि ॥।	२१	२२ १	२० ३	१५ ३६	९ १३६	१७ -६	१८॥ ५+	२० १५	२० ५+	२०॥	२०॥	१७ ३	१६॥ ३	१८॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ ४+	२६ ४+	३३॥	१९ ३	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२१॥ ४	२७	२१ ०१	१३ १३	१५॥ १३	१५॥ ३	२९॥	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३॥ १६	१२॥ १६२	४ ३६
वृश्चिक वि ।	१६॥ ६+	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१३॥ १३	२१॥	११ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	१८ -५	१८ ५-	१४॥ -३५	२४॥ ३	२२॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२६	२१ ४	७ ३४	१५ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ ४+	१५॥ ४१	७॥ १३४	११ १३	११ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५२	९॥ ३५
अनु १	२३॥ ६	१४॥ ३६	१८॥ -६	२३॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	१९॥ ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५	२४॥	२०॥ ३	२८॥	२४	२५	२१ ३	६॥ ३४	२०॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ ४+	२५	२६	१२ ३	११ ३	२०	२४॥	२४ ५+	३० ३५	२६ ५+
ज्ये १	१० ३६	१७॥ १६	२३॥ -६	२८॥	२२॥ १	२९॥	१२ ६	२ ३१६२	४ ६३	१९॥ ५३	१९ ५+	२५ -५	३१	२३॥ १	१५॥ १३	११ १३	११ ३	२४	१९॥ ४	१४॥ ४	१९ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१७ ३	१० १३	९॥ १३५	२० १५	२० +५
धनु मू १	१९॥ ३५	१९ २५	२५ ५+	१९॥ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	२१	१४ १३	१२ ३	७॥ ३६	१७॥ ६	२३ ६	२४ ५+	१८ १५	१९॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२६	२६	२१	२६	२२॥ ४+	१६॥ +२४	१६ ३४२	२८ ३	२८ ०१	१५॥ १	१३॥ १४	१४॥ ४	१९॥ ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६॥ १३	२४॥ १	२६
पूषा १	२५॥ +५	१७॥ ३५	१९॥ -१२५	१४ १६२	१८॥ ६	१०॥ ३६	१९ ३	२६	२७	२२॥ ६	१४॥ २३६	१६॥ १६	१९ -१५	१७ ३५	२५ ५+	२८॥	२७	१२ १३	१२ १३	२७	२० १	१६॥ -१४	१५॥ ३४	१७॥ -१४	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२॥ ४	५॥ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	२९॥	२२॥ ३	३०॥
उषा १	२४ ५+	२५॥ ५+	११॥ १३५	६ १३६	१० २३६	१६॥ २६	२५ २+	२६	२७	२२॥ ६	२२॥ ६	८॥ १६३	८॥ १५३	२४ ५+	२ ५+	२८॥	२८॥	२० १	२० १	१९ ३	१२ १३	८॥ १३४	२३॥ ४+	१७॥ -१४	२५ -१	३५	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१३॥ १४	२२॥ १	२३॥ १	२८॥	२९॥	३०॥	२२॥ ३
मकर उषा ॥।	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	१९॥ २६+	२४॥ -६	२१॥ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ३	२१ ६	२४ ५+	२४ ५	१५॥ १५	२२॥ -१	२१॥ ३	१४॥ ५३	१२ ३१	२७	२१ १	१४॥ १४	२४ ४	१७ ३४	२८ ३	२७ ०३	२५॥ १+	१५॥ +१४	१६॥ १४+	२१॥ ४+	२९॥	३०॥	२२॥ ३
श्र १	२८	२७	१४॥ ३२	१२ ३५२	१७ ३५	२६ ५+	२३ -६	१९॥ -६	२१॥ -६	२८	२८ २+	१४ ३	५॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३ ५+	२४ ५+	१७ ५+	२४	२१॥ ३	१४॥ ३	१२ ३	२७	२१	१४ ४	२२॥ ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२७ -०	१७ ०४	१७॥ ४+	२०॥ ४+	२८॥	२९॥	३३॥ ३
ध ॥	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	१५ १५	११ ३५	८ ३६	१६ १६	१४॥ -६	२३	१३ ३	२७	१८॥ ६	४॥ १३६	१०॥ १६	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	१९ ३	२४	२८॥	२६	१२ ३	२६	२०॥ ४	६॥ ३४१	१४॥ ४१	२५॥ १	२७	२८ ३	१७ ३४	२३ ०४	१७॥ १४	२४॥ १	१५ १३	२२॥ +२
कुम्भ ध ॥	१९॥	१०॥ १३२	२५॥	३०	२५॥ १	१७॥ ३	११ ३५	१८ १५	१७ +५	१२ ६	४ ३६	१८ ६	२४॥	१०॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ ६+	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२३॥ १	१६॥ १४	१८ +४	१८ ३४	२८ ३	३३ ०	२७॥ १	१६॥ १४	६॥ १३४	१३॥ ४२
शत १	१४॥ ३	२८॥ १	२६॥	३१	२५ १	२६॥	२७ ५+	१२ १३५	१२ ३५	६॥ ३६	१३ ६	१९ ६	२५॥	१९॥ १	११॥ १३	१०॥ १३६	१०॥ २३६	२५ ६	२६ +५	२१ २५+	२६ ५+	२६॥	२०	१८ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१७ १४	१७॥ ४+	२४ ४+	३३	२८ ३	२९ ०१३	८ १३४०	१४॥ १४	१५॥ ६
पूभा ॥।	१७॥ ३	२४॥ ४+	१९॥ -१	२४ -१	३०	३०	२३॥ ५+	१७ ३५	१७ ३५	११॥ ३६	१९॥ ६	१२ १६	१८॥ १	२४॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५-	२६ ५+	२० -१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५ १३	२१॥	२९॥	२२॥ +४	२२॥ ४+	१८॥ -१४	२० -१	१९ १३	२८ ३	१६ ३४	२२ ०४	१९॥ ४२
मीन पूभा ।	१४॥ ३४	२१॥ ४२	१६॥ -१४	१९ १	२५	२५	२४	१७॥ ३	१७॥ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१६॥ -१६	२२॥ ६+	१४॥ ३६	१६ ३	१६ ३	१८ १+	११ १६	१८॥ ६	१२॥ १६	१९ -१५	२५ +५	९॥ १३५	१४ १२	२८॥	२८॥	२८॥	२८॥	१४॥ १	१५॥ १४	७ १३४	१५ ३४	२८ ३	३३ ०	३०॥ +२
उभा १	२३॥ ४+	१५॥ ३४	१८॥ -१४	२१ ३	२६	२८ ३	२७ ३	२५	२६॥	३६ ५	१९ ३५	२० १५	१७॥ -१६	१५ ६६	२५॥ ६+	२७	२६	९ १३२	२ १६६१	१९ ६	२१॥ १६२	१८ १५२	१८ ३५	२० -१५	२३॥ -१	२१॥ ३	२९॥	२९॥	२९॥	१४॥ १३	५॥ १३४	२४॥ १४	२१ ४	३३	२८ ३	३३ ०
रे १	२५ ४+	२३॥ ४+	१०॥ ३४	१३ ३	१७ ३	२६	२५	२४	२५	२४॥ ५	२६ ५	१३ ३५	१२ ३६	२२॥ ६+	२२॥ ६+	२४	२५	१९	१२ ६	१० ३६	४ ३६	२०॥ ३५	२६ ५+	२१ ५+	२६	२८॥	२०॥ ३	२३॥ १	२१॥ ३	२२॥ -२	१३॥ ४२	१५॥ ४	१७॥ ४२	२९॥ +२	३३	२८ ३

बिना मेल के विवाह—अयोजिता सन्विलब्धा क्रीता स्नेहादिमापिता । स्वयमेवागता कन्या मत्वास्त्वा शुद्धिमेलकं । धनसद्वसूषो यस्मिन् वरे यस्या च मोचिति । मनोभा आयत एव नान्यत्किञ्चिद्विचिन्तयेत्

विवाहकालनिर्णय—२० वर्ष से पहले पुरुष का और आठ वर्ष से पहिले तथा

ग्रहमेलापकविचारः—वर की कुण्डली में जन्मलग्न, चन्द्रमा तथा शुक्र से यदि १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक जानना, यदि कन्या के जन्म लग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों मंगल हो तो वर का नाशक होता है।

अपवादः—वर की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थानों में मंगल हो, और कन्या की जन्म कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। एवं एक की कुण्डली में मंगल हो दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ जाय, तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है और जितने ग्रह कन्या की कुण्डली में अशुभ होकर पड़े हों उतने या उनसे ज्यादा वर की कुण्डली में अशुभ ग्रह पड़े हों तो शुभ जानें। इसी प्रकार कन्या के जन्मलग्न से ७।८ स्थान तथा वर का २।७ स्थान अवश्य विचार लेना चाहिये और दोनों का पञ्चम भाव विशेषता से देखना चाहिये। कन्या के सप्तमेश तथा शुक्र आदि शुभ ग्रहों के शुभ स्थान में होने तथा शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि होने से सौभाग्य योग का विचार अत्यावश्यक है। अथवा वैधव्यादिदोषजां कन्याममच्युतविवाहादिशान्तिं विधाय दारुहर्यंगजायायुष्मते वराय दद्यात्।

विवाहार्थ वर के गुण—कुल, शील-स्वभाव, अवस्था, शरीर का रूप, विद्या, धन-सनाथता ये सात गुण जिस वरमें उत्तम मिलें उसको कन्या देनी चाहिये।

वर के दोष—दूरदेश द्वीपान्तरवासी, अत्यन्त समीपस्थ, जाति से पतित, आचारहीन, नास्तिक, आजीविका से रहित, अत्यन्त गरीब, अत्यन्त धनाढ्य, मूर्ख, शूर, मोक्ष की चाह से विरक्त, वृद्ध, कन्या से छोटा, ऐसे २ दोषों से युक्त वर को कन्या नहीं देनी चाहिये।

विवाहार्थ कन्या के दोष—अत्यन्त चौड़े मस्तक वाली, कुबड़ी, लज्जाहीन, झूठ बोलने वाली, रोगग्रस्त, अंगहीन, अतिस्थूल अथवा अति दुर्बल, लम्बी व पतली, झगड़ालू, अन्धी तथा बहिरी बोली ऐसे दस दोषों में से किसी भी दोष वाली कन्या को मुखार्थी वर्जित करें।

वाग्दान—कुड़माई—सगाई से पहिले नीचे लिखी बातों का विचार कर लेना जरूरी है—सपिण्डता, ऋषिगोत्रशुद्धि, शील, सामुद्रिक तथा ज्योतिष-शास्त्र में कहे हुए षडष्टकादि मेलापक सारणी से विचार कर लेना, और कुण्डली मिलन के समय निम्नलिखित पांच महादोष भी यत्नपूर्वक वर्जित करने चाहियें—(१) दारिद्र्य, (२) मृत्यु, (३) वैधव्य, (४) व्यभिचार, (५) संतान का अभाव।

वर वरण मुहूर्त—उ. ३ रो. कृ. पू. ३, रिक्ता अमावस्या को छोड़ कर शुभ तिथि तथा शुभवार में चन्द्रबल देख कर शुभ लग्न में पुरोहित अथवा कन्या का भ्राता वर के घर पर उत्तर वा पश्चिमाभिमुख बैठ कर पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशर चन्दनादि से तिलक लगावे। तदनन्तर वस्त्र यज्ञोपवीत तथा यथोचित द्रव्य से वर को सत्कृत कर और वर के मुख में एक छुहारा या मीठा (गुड़ बतासा) देकर यह मन्त्र पढ़े—"तस्मिन् काले-ग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते हयरोगिणे। अव्यंगे अपतितेऽक्लीबे पिता तुभ्यं प्रदास्यति॥" यदि भ्राता से भिन्न पुरोहितादि वाग्दान करे तो "पिता तुभ्यं प्रदास्यति" के स्थान में "दाता तुभ्यं प्रदास्यति" कहे।

कन्यावरण मुहूर्त—उ. षा. स्वा. श्र. पूर्वा. ३. अनु. ध. कृ. विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभ समय देखकर वस्त्रालंकार फल पुष्पों से कन्यावरण (सगाई) करना चाहिये।

विवाहकालनिर्णय—२० वर्ष से पहले पुरुष का और आठ वर्ष से पहिले तथा रजोदर्शन के पीछे कन्या का विवाह करने में दोष लगता है। अतः रजोदर्शन से पूर्व (कुचों के प्रादुर्भाव से रजोदर्शन का अनुमान करे) ८ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक सर्व सम्मत श्रौतिनिबन्धोक्त वर्षों में गुरुचन्द्र शुद्धि देख कर विवाह कर देवे। तद्यथा "मासत्रयादूर्ध्वमयुग्मवर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत्। विवाहशुद्धिं प्रवदन्ति सन्तो वात्स्यादयो गर्गवराहमुख्याः॥ द्विरागमन रजोधर्म होने पर करना योग्य है। यदि किसी योग्य वर के अन्वेषण में पिता के लगे रहने से देर हो जाने पर कन्या रजस्वला होने लगे तो माता पितादि को न कोई दोष लगता है और न प्रायश्चित्त कर्तव्य है। "वसिष्ठः—दशवर्षव्यतिक्रान्ता कन्या शुद्धिविवर्जिता। तस्यास्तारेन्दु-लग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मतः॥

आजकल वर से कितनी कम उमर कन्या की हो—विवाह के समय पति की उमर को दो से भाग देवे जो आवे उसमें ६ जोड़ने से जो वर्ष आवें वह विवाह के समय पत्नी की उमर होनी चाहिये। यथा वर की उमर यदि ३० वर्ष की हो तो वधू की उमर २१ वर्ष की होनी चाहिये, यह सुखी विवाह का फार्मूला है।

विवाह से पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या और वर के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है, वर का नहीं। कन्या का नाम रखने के लिये मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहां दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझ कर ऋण (–) का चिह्न लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ से अत्यधिक मिले उसी के बाईं और जो नक्षत्र लिखा हो उसी अक्षर के अनुसार—आगे देखो पृष्ठ ७६।

प्रयोगचक्रम्

सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग प्रारम्भ नक्षत्र तक गणना करें।

स्थान	नक्षत्र	फलानि
शीर्षे	३	नाशसिद्धिः
मुखे	३	शुभमंत्रसिद्धिः
कंठे	३	मृत्युदायकः
हस्ते	४	शत्रुभीतिः
हृदि	४	इष्टाप्तिः
उदरे	३	धनहानिः
कट्यां	३	साधनादर्थः
चरणे	४	साधनाद्वित्तः

मन्त्रदीक्षामुहूर्त—अधिकमासरहित वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. भा. फा. इन मासों में, शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियों में तथा कृष्णपक्ष की २।३।५ तिथियों में, शुभवार में वृ. मि. सिंह. कं. तु. ध. मी. लग्न हों, लग्न से १।४।७।१० वें शुभग्रह हों, ३।६।११ वें पापग्रह हों, तब मन्त्र-दीक्षा लेना उत्तम है।

विशेष—सत्तीर्थ पर, सूर्य-चन्द्रग्रहण के समय तथा श्रावणीपर्व में मन्त्रदीक्षा लेते समय मास तथा तिथ्यादि पञ्चांगशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिये॥

अनुष्ठानारम्भमुहूर्तम्—वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. माघ, फा. २।६।७।१०।१३।१५ तिथि, (अथवा या तिथियेंस्य-देवस्य तस्यां वा) र. सो. गु. शु. अ. रो. मृ. पुन., पु. उ. ३. ह. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे. (स्वस्वामिनक्षत्रे वा) चन्द्रतारानुकूले; गुरुशुक्र के उदय में शुभ लग्न से १२ वां स्थान शुद्ध होने पर (विष्णुमन्त्रे स्थिरे शिवस्य चरे दुर्गायाः द्विस्वभावे लग्ने) प्रारम्भ करना श्रेष्ठ है। सूर्यनक्षत्र से महाप्रयोगारम्भ दिन नक्षत्र ३ तक अशुभ, ६ तक शुभ, १२ तक शुभ, १७ तक शुभ, २० तक अशुभ, २७ तक शुभ जानें।

"रास्तविभागकल्पलता" ग्रन्थ देखकर निर्दोष शुद्ध सुन्दर नाम रख लेना चाहिये। बहुत से विद्वान् कन्या-संकल्प के समय पर ही "वरस्य पञ्चमं कन्या कन्याया नवमे वरः" बोलते हुए शीघ्रता से नाम बदल देते हैं जिसमें अनेक दोष रह जाते हैं। नाम बदलने का फल कुछ नहीं होता। एतदर्थ लग्न से पहले ही अच्छी तरह सारणी आदि देखकर बदलना चाहिए।

अथ विवाहमासः—विवाहशुद्धौ–मीनार्कञ्च विना प्रोक्तमुत्तरायणमुत्तमम्। वर्ज्योऽर्को धनुषश्चान्ये मध्यमाः स्युः करग्रहे॥ वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद् वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे तथा यत्र तथैव तत्र॥१॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया॥२॥

अथ जन्ममासादिषु निषेधः—सब से बड़े (जेठ) लड़के अथवा सब से बड़ी लड़की (जेठी) के जन्म मास, जन्म नक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं। अत्यावश्यके परिहारः—जातं दिनं दूषयते वसिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो—एक घर में दो शुभ काम करना मना है, परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग २ मण्डप गाड़ कर और जो पुरोहित पहिला कार्य करा चुका है, उसी से दूसरा कार्य न करावे, दूसरे आचार्य से करावे। इसी प्रकार जिस गृह में पहिला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मंडप गाड़ कर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः—ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है, अत्यावश्यकता में कृत्तिकासूर्य को छोड़ कर दानादि पूर्वक करें।

षट् मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय—दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छे मास के अन्दर करे तो निस्सन्देह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट् मास तक कन्या का विवाह न करे और कन्या वा पुत्र के विवाह के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करे अर्थात् पहिले कर ले और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध तिलतर्पण भी न करे और मुंडन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करे। वर्ष पल्टने पर फिर भले ही शुभ कार्य कर ले। वहां छः मास, का विचार नहीं है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच—साहे चिट्ठी (कुंकुमपत्रिका) आने पर, विवाह दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण में १ साल, स्त्री के मरण में ३ मास, भाई व पुत्र के मरण में १॥ मास, कुल वालों के मरण में २२॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करे। अति संकट में ३० दिन के बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करे।

विवाह के मुहूर्त प्रथम ही शुद्ध कर चुके हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देख कर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य चन्द्र देखिये और वधू की राशि से चन्द्र गुरु देखिये, बस इसी को त्रिबल शुद्धि कहते हैं। यह त्रिबल शुद्धि जिस उत्तम विवाह लग्न के दिन मिले वही विवाह दिन उत्तम है। यदि रवि गुरु पूज्य हों तो मध्यम है। यदि सूर्य गुरु नेष्ट हों तो विवाह नहीं बनेगा एसा कहना। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु० सू० चं०) शुद्धि प्रथम देखें॥ "झषचापकुलीरस्थो जीवोऽप्यशुभगोचरः। अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु" (बृह०)। तुलाराशौ अपूज्यरविः–धर्मधीधनगतो दिवाकरस्तौलिराशिजनितस्य शोभनः। आवश्यके पूज्यरविपरिहारः—गार्ग्यांगिरोवत्सवशिष्ठगौतमपराशराद्या मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहाः॥ (मु० प्र० सा०)।

विवाहादौ त्रिबलशोधनम्

पूज्यगुरुः–१०।६।३।१
श्रेष्ठगुरुः–९।५।११।२।७
नेष्टगुरु :–४।८।१२
श्रेष्ठ रविः–३।६।१०।११
पूज्यरविः–१।२।५।७।९
नेष्टरविः–४।८।१२
नेष्टचन्द्रः–४।८ पूज्यचन्द्रः–१२
श्रेष्ठचन्द्रः–१।२।३।५।६।७।९।१०।११

{ध. मी. कर्क राशि में हो तो नेष्ट गुरु भी श्रेष्ठ है।}

कन्यावरयोः तैलादिलापने (बत्र) दिनसंख्या

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैलादि ला.	७	५	९	९	५	७	७	९	५	९	५	

अथ विवाहे तिथिवारनक्षत्राणि—
रो. मृ. उत्तरा ३. म. ह. स्वा. अनु. मू. रे. एतद्वधरहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षयरहिततिथिषु शुभम्॥

अथ विवाहांग कृत्यारम्भमुहूर्तः—वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाह दिन से पहले ३।६।९ इन दिनों को छोड़ कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्द हाथ दलना पीसना कूटना मंगल-कलशादि स्थापन करना घर लीपना आंगन सफाई भूषण गढाना वस्त्र सिलाना, वेदी रचना चन्दोया बांधना गणेशादि पूजन नान्दीश्राद्धमंगलस्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाहमुहूर्त में दश दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धा तिथि इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सब का विचार करके इस वर्ष के विवाह मुहूर्त अलग दिये हुए हैं। इन दस दोषों में जो जिस मुहूर्त में हैं वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

१ लत्तादोषज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्ननक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम्	बंधुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षयं	मरणं	फलम्

यथा– सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फा. को हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ. फा. १२वां हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ; इत्यादि सब जानें।

२ पातदोषज्ञानाय चक्रम्

... २ विष्कुम्भ, हर्षण, वैधृति, साध्य,

६ बाणज्ञानाय सुलभचक्रम्

बाण गतांशाः प्रति ५ कर्म वार-समयपरत्वेन
... वर्ज्याः वर्ज्याः

१० दग्धा [illegible]दोषः

९ २ ४ ६ ५ १० सूर्य
... राशयः

२ पातदोषज्ञानाय चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.	सूर्यभुक्त नक्षत्र
श्ले	मृ	अ	कृ	भ	कृ	अ	रो	भ	भ	अ	
पुन	आ	मृ	आ	मृ	श्र	आ	ज्ये	पुन	श	ज्ये	
श	ज्ये	ज्ये	वि	श	ध	उषा	ध	श	वि	ध	
पूफा	ध	पुष्य	पूफा	पूभा	पुष्य	पूभा	श्ले	वि	उफा	म	
चि	म	ह	श	स्वा	ह	पूषा	मू	अनु	चि	पूफा	
मू	ह	रे	पूभा	म	रे	पूफा	उभा	उषा	मू	स्वा	

विवाहन.हर्षण,वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इस नक्षत्र में विवाह करने से पात दोष होता है।

३ युति—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता किन्तु श्रेष्ठ है। सू. मं. बु. श. रा. के. की युति दारिद्रय मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

४ वेधदोषचक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	
अभि.	उषा.	श्रवण	रे.	उभा.	श.	भ.	पुन.	म.	ह.	उफा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेध दोष होता है। वह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिये।

५ जामित्रदोषचक्रम्

रो.	मृ.	म.	उ.	ह.	स्वा	अनु.	मू.	उ.	उ.	रे.	न.
अनु	ज्ये	ध	पू भा.	उ भा.	अ	कृ	मृ.	पुन	उ फा	ह	श्र. न.

विवाह लग्न से ७वें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है, ऊपर वैवाहिक नक्षत्र हैं और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं, यानें १४वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय है।

७ एकार्गलदोषः

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कुम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

८ उपग्रह—

सूर्य के नक्षत्र से ५वें ७वें ८ वें १० वें १४वें १५वें १८वें १९ वें २१वें २२वें २३ वें २४ वें और २५ वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

९ कांतिसाम्यदोषचक्रम्

मे०	वृ०	मि०	क०	कं०	तु०
सिंह	म०	ध०	वृश्चि०	मी.	कुं०

नीचे या ऊपर की राशि पर सूर्य हो या चन्द्रमा हो तो स्थल कांतिसाम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य सिंह के चन्द्रमा में वा सिंह के सूर्य मेष के चन्द्रमा में।

बाण नाम	गतांशाः राशौ	प्रति अर्कस्य	५ कम वर्ज्याः	वार-समयपरत्वेन वर्ज्याः	वर्ज्याः
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्धे	रवौ	रात्रौ	त्याज्यम्
वह्नि	३।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव	वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृपसेवायां	मन्दे	दिवा	त्याज्यम्
चोर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ	वर्ज्यम्
मृत्यु	२।१०।१९।२८।	विवाहे	बुधे	संध्ययोःवर्ज्यम्	

९	२	४	६	५	१०	सूर्य
१२	११	१	३	८	७	राशयः
२	४	६	८	१०	१२	तिथयः

इन संक्रान्तियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं सो विवाह में वर्जनीय हैं।

भुजंग कांतिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीनविवाहन्तु कला पञ्च विवर्जयेत्॥

लत्तादिदोषाणां परिहारवाक्यानि—लत्तामालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र बांगर) जांगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रान्त) एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्॥ उपग्रहर्क्षे कुरुवाह्लिकेषु (आगरा प्रान्त अवधस्थान) कलिंगवंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्॥ सौराष्ट्र (कठियावाड़) शाल्वैः (उज्जैन प्रान्त) च लत्ताभं त्यजेत् विद्धं किल सर्वदेशे॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाल) जामित्रस्य च यामुने (मथुरादि प्रान्त)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः॥

विशेषपरिहारः—चित्रां गते पातविचित्रदेशे, मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः। पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः, सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः॥

युतिपरिहारः—स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा॥ अत्यावश्यके वेधपरिहारः— पादमेव शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः (नारदः)॥ अतोऽन्त्यपादमादिगो द्वितीयकस्तृतीयकम्। तृतीयको द्वितीयकं चतुर्थगस्तु चादिमः॥ भिनत्ति वेधकृद्ग्रहो न चान्यपादमादरात् (वसिष्ठः)॥ अथ पापग्रहेण भुक्तभोग्याक्रान्तनक्षत्रस्य शुभेषु त्यागः—भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः॥ अस्यापवादः— ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरभुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण भुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते॥ जामित्रपरिहारः—(व्यवहारसमुच्चये)– स्वोच्चे सौम्यालये चन्द्रे स्ववर्गे मित्रवर्गगे। हत्वा जामित्रकृद्दोषं करोति विपुलं सुखम्। मुहूर्तचिंतामणावपि—एकार्गलोपग्रहपातलत्ता जामित्रकर्तर्युदयास्तदोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥

विवाहे लग्नशुद्धिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
चं. पापः	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श. चं०	त्याज्याः
चं. मं.	कुलिकं कान्तिसाम्यञ्च				चं	मं.	८		विद्धभञ्च			गोधूली त्याज्याः

सर्वथा लग्नभंगयोगाः—व्यये शनिः खेऽब्जिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तेऽब्जागुरु सितौ)॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धि-दः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ पंगवन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः, बादरायणः—मासशून्यायह्नास्तारा राशयो बधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्या स्त्वन्यदेशे न गर्हिताः॥

कर्तरीदोषः—लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोः साध्वोः सा कर्तरी स्याद्ऋजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी नेति पितामहोक्तिः। "इयं कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहारः—पापौ कर्तरीकारकौ रिपुगृहे नीचास्तगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे—दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह॥ अपवादांतरम्—उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्ता-न्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवां-शग्रहोद्भवाः। ये दोषास्तान्विहन्त्येव यवैकादशगः शशी॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यर्क्ष-सम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे। लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशा-लये॥ सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत्॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्र-यम्। नूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिराः॥ स्मरण रहे कि पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सर्वत्र सप्तमरहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि

र.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्तगणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३		स्थानानि	लग्नं शुभं विवाहे स्याद्दशविशोपका-धिकम्
६	३	६	२	२	२	६	६	३		
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
१			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
१॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विशोपका बलम्

अथ गोधूलि लग्नविचार—लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते॥ मार्ग माघ फाल्गुन संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टि गोचर होने पर चै. वै. में गौओं की धूली से आकाश आच्छादित होने पर ज्ये. आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर श्रा. भा. आश्वि का. में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्यदोषः—कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तदा गोधू-लिकस्त्याज्यः पञ्चदोषस्तु दूषितः॥ "अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के" अर्थात् बृहस्पति-वार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्यास्त से पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जानेसे कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना।

संकीर्णचाण्डालविजातीनां विवाहमुहूर्तः—कृष्णपक्षे भानु-भौमार्कजानां, वारे योगे चापि धिष्ण्य निषिद्धे। संकीर्णानां दारकर्म प्रशस्तं, प्रीत्यर्थायुःप्राप्तये शौनकाद्याः॥

पुनर्विवाहे सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्।

३	३	३	३	२	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	मृत्यु	दर्भग	श्रीः	उन्नति	फलम्

अन्यच्च—सूर्यभात् ४।११।१८।२५ संख्यकसाभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथिमासवेधभगगुर्वस्तादिदोषोऽपि नावलोकनीयः॥

वधूप्रवेश का मुहूर्त—जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहिले पहल आती है वह वधूप्रवेश कहा जाता है। विवाह से १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन, इनके उपरांत एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरांत ३ रे, ५ वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधूप्रवेश शुभ है। वर्ष के उपरांत जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना। व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा। अमासंक्रांतितिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्। रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा. ३ पुष्य अनु. इन नक्षत्रों में और चं. बु. बृ. शु. श. इन वारों में १।२।३।५। ६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथियों में ५।८।११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधूप्रवेश शुभ है।

प्रवेशस्य समयमाह—वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः। दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः, सत्कीर्तितः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

विवाहतः प्रथमवर्षे वधूनिवासफलम्—विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं।

द्विरागमन का मुहूर्त—[illegible] से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या ५वें वर्ष वृश्चिक, कुम्भ, मेष के सूर्य में ... स्थान पापरहित हो, अपनी दशा भी

राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित्, तीनों उत्तरा. रो. स्वा. पुन., श्र. ध. श. मू. मृ.
रे. चि. और अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः—द्विरागमे षोडशवत्सरान्तरे एकादशाहे समवासरेषु। नमात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम्॥

शुक्रस्य सम्मुखे दक्षिणे निषेधः—सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीड़न आदि उपद्रव तथा दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवं विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख तथा दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः—सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे संमुखेऽस्तगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे॥ अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः—राजतं वाथ सौवर्णं कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पाम्बरयुते श्वेततण्डुलपूरिते॥ निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ताफलान्वितम्। महाश्वेतगवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्।

प्रथमस्त्री-संगममुहूर्तः—रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. ध. उत्तरा. ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम प्रहर को छोड़कर शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर प्रथम दिन स्त्री-संगम करे। मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्तव्य—स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करे आदर सत्कार करे। विशेष गुप्त बात न कहे और विशेषाधिकार भी न दे, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती, अपवाद में एक दो हो सकती हैं। प्रभु कृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है उसे समझना चाहिये। उनका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े हाथी सांड भैंस अपनी स्त्री जाति पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववध्वाः पाककर्ममुहूर्तः—द्विरागमनोत्तरं मृ. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. श्र. ध. श. रो. वि. रे. एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते), रिक्तामाक्षयरहिततिथौ, २।५।८।११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम्।

सधवास्त्रीणां वस्त्रसुवर्णरत्नभूषणादिधारणमुहूर्तः—ह. चि. स्वा. अनु. ध. रे. अश्वि. एषु भेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावास्यारहिततिथिषु, नूतनवस्त्रसौवर्णरत्नरजतदन्तादि-भूषणानां धारणं प्रशस्तम्॥

चूडीचक्रम्—सूर्यनक्षत्राद् गणना ८ अशुभ। ३ शुभ। ४ शुभ। ७ अशुभ। २ अशुभ। १ शुभ। २ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्रधारणे विशेषः—विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्ष्मापालेन समर्पितम्। निन्द्येऽपि धिष्ण्य-वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्॥

भूषणघट्टनमुहूर्तः—ह. अ. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तरा ३ रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहिततिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम्।

दुकान खोलने का मुहूर्तः—ह. चि. रो. रे. उत्तरा ३. पुष्य. अनु. अश्वि. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़ अन्य वारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३।६ में पापग्रह हों, ८।१२ वां स्थान पापरहित हो, अपनी शुभ दशा भी चलती हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र शुक्र लग्न में हों, तो अत्यन्त शुभ है॥

भर्तृगृहात्पितृगृहागमनमुहूर्तः—पूर्वा. ३. भ. मू. म. ज्ये. आ. आश्ले. एतद्भिन्नेषु चं. बृ. शु. वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः॥

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त—भ. आर्द्रा. आश्ले. म. पू. ३, ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्र—सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन नक्षत्र तक गिन कर चक्र से शुभा-शुभ फल जाने॥

नक्षत्र	२	२	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सन्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवा कर्म (नौकरी) मुहूर्त—अ. मृ. चि. ह. पुष्य. अनु. रे. एषु भेषु रिक्तामार-हिततिथौ, र. बु. बृ. शु. वारेषु शुभग्रहे लग्नस्थे, १०।११ सूर्ये भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीशयोर्मिथ्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भमुहूर्तः—अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा. ३. ह. चि. अनु. श्र. रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू. चं. बु. बृ. शु. वारेषु शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः सत्॥

द्रव्यप्रयोगमुहूर्तः—पुन. स्वा. मृ. रे. चि. अनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु ९।५।८ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९।५ शुभ-ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।

ऋण लेने के लिये वर्जित काल—मंगलवार, संक्रांतिदिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन न देना चाहिये। कृ. रो. आर्द्रा. श्ल. उ. ३. वि. ज्ये. मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

श्रीकाशीनाथमते क्रयविक्रयमुहूर्तः—पुष्य. पूभा. अनु. श्र. ह. म. स्वा. उत्तरा. ३. आश्ले. रे. एषु भेषु, सत्तिथौ शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि. वारों में बुध, रवि. श्रेष्ठ माना गया है।

वस्तु बेचने के नक्षत्र—पूफा. पूषा. पूभा. वि. कृ. श्ले. भ. ये. ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं।

नोट—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचनेवालों को ९५ फी-सदी नुकसान रहेगा इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने बेचने के नक्षत्र दिखलाये गये हैं, परन्तु संप्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिनभर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना, ऐसे व्यापारी क्या करेंगे इन नक्षत्रों को। लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये बात कहां तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करनेवाले व्यापारी

अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहाँ तक सत्य हैं।

नालिश (अर्जी) का मुहूर्त:—४।९।१४ तिथि हो, मं. श. हो, कृ. आर्द्रा. भ. अ. श्ले. म. ज्ये. मू. वि. पूर्वा. ३. नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार—

ग्रामभात् वासकर्तुर्नक्षत्र यावद् गणना कार्या स्थाननक्षत्रफलम्		
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिः नैरस्य
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

गृह स्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ ७ हस्ति, ८ (०)। इसमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो चार आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिये और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है॥

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान—

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणा कर २७ का भाग दे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जानें। इस नक्षत्र को आठ से भाग देवे। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ विचार

नई बस्ती में गृहादि बनवाना हो तो भूमिपूजनपूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा एक हाथ लम्बा एक हाथ गहरा गड्ढा बना कर उसको जल से भर देवें, प्रातःकाल उसको देखें यदि जल युक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है॥

मकान बनवाने के लिये पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा:—

मकान की नींव को इतना गहरा खोदे कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक न निकले अथवा ३॥ साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदे। खोदते समय जो जमीन में पत्थर निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़, राख, बाल निकलें तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त:—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और सौर महीने गृहारंभ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम है २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं.बु.बृ.शु. श. वारों में रो. मृ. चि. ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे. वेधरहित नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में पञ्चबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११ वें स्थान में पापग्रह, तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम् सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ-नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें		
स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पू. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीडा असत्

विशेष:—पुष्य. उ. ३. रो. म. आश्ले. पूषा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो इस नक्षत्र में और बृहस्पति को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्ति दायक होता है। रो. ह. अ. उफा. चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि. अ. चि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धन-धान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्—"संक्रान्ति मिति दिन पाँचवें सप्तम नवमें जोय। दश इक्कीस चौबीस में पट् दिन पृथ्वी सोय। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१० एता घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्ज्जनीयाः। अन्यच्च—सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तडाग, वापी कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूपविचार:—

मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
अर्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्लिचक्रविचारः।

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डितजन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावे तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतनगृहप्रवेशे मुहूर्त :—

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ-मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य-(गार्ग) कार्तिक-मासयोः॥ (यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा. ३ अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में, चं. बृ. शु. इन वारों में २।५।८।११ लग्नों में अत्यावश्यके ३।६।९।१२ लग्नों में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों ३।६।११ में क्रूर हों १।६।८।१२ वें चन्द्रमा न हो, ४था ८वां स्थान शुद्ध हो, जन्मलग्न या जन्मराशि से ८वीं राशि लग्न में न हो चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुष्पमालायुक्त कलश शंखध्वनि मंगलगान के साथ दम्पति को गृहप्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त:—पुराने अर्थात् जीर्ण वा तृण कुटीर अथवा अग्नि-वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै. श्रा. का. और मार्गशीर्ष, फा. मास में श्र. पुष्य. स्वा. और ध. [illegible]

गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्
खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागः शुभदो भवेत्

राहुमुख	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्याम्	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्य	मी. मेष वृष	मि. क. सिंह	कर्क तुला वृश्चिक	धन मकर कुम्भ
गृहारम्भे सूर्य	सिं. कं. तु.	वृश्चि. ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कन्या
जलाशयारम्भे सूर्य	म. कु. मी.	मे. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धन
खातदिशा ज्ञानं	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्
सूर्यनक्षत्रात्

स्थान	न.	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ॥

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्
सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु. ह. तीनों उ. रो. ध. श. म. पूषा. रे. पुष्य. मृ. नक्षत्र हों, वा चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १६ वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।८।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूपचक्रम्

ईशान ३ क्षारजल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तमजल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षि. ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्य ३ अमृतजल

गणनाक्रमः— मध्यपूर्व–आग्नेय–दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम् ॥

सूर्यभात्तडागचक्रम्

ई. २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृतजल

शेष ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानिः । गणनाक्रमः—पूर्व आग्नेय द० नै० प० वा० उ० ई० मध्य वारिवाहः।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशाने अ. भ. कृ. मध्यजल	पूर्व. पुन. पु. श्ले. जलाभाव.	आग्नेय म. पूफा. उफा. मध्यजलम्
उत्तर पूभा. उभा. रे. मिष्टजलम्	मध्य रो. मृ. आर्द्रा. शीघ्रजलम्	दक्षिण ह. चि. स्वा. जलाभावः
वायव्य श्र. ध. श. क्षारजलम्	पश्चिम मू. पूषा. उषा अमृतजलम्	नैर्ऋत्य. वि. अनु. ज्ये. बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्तः

देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे।
माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेप्यापञ्चमीदिने ॥
मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः । महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने ॥

अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. उत्तरा ३. रे. एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २।३।५।७।८।१०।११।१२।१३ एतत्तिथौ शुक्ले १।२।३।५। तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२।५।८।११) लग्नेषु लग्नात् १।४।७।१०।९।५।२।११। स्थानेषु शुभैः, ६।११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्णे देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवताविशेषेण लग्नम्—सिंहे सूर्यो शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे बेधाश्चरे क्षुद्राद्यंगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिने यदि तस्य प्रतिष्ठामुहूर्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः ॥

वास्तुशान्तिमुहूर्तः—श्र. ध. मृ. मू. अनु. रे. ह. चि. स्वा. उत्तरा ३. पुन. पु. रो. अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है—जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़ कर एक और जोड़ना पुनः ४ का भाग देना, यदि पूरा भाग लग जाय (० शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानि कारक, शेष दो बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुतिचक्र जरूर देखिये।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेषः—यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम् ॥ महारुद्रे व्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कस्य राहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत् ॥ दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शांतौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत् ॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ। देवखातभवने सुरालये अग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः ॥ दुर्गभंगगृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकर्मनृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षते ॥

पापग्रहमुखहवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्ति विधाय

गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम्॥ गोमूत्र-मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते॥

अथ ऋणी-धनी विचार—स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्॥

अर्थ—अपने वर्ग को दूना कर दूसरे का वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दुगुना करके अपना वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना; जिसका भाग शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचने वाले का ऋणी जानना।

हलप्रवहणमुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा. ३. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. म. वि. एषु भेषु रिक्तामाषष्ठयष्टमीरहितसत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु भूमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम् सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिननक्षत्रतक गिनें				
३	८	९	८	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्

बीजवपने राहुचक्रम् राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्तः— ह० अश्वि० पुष्य. उत्तरा. ३. चि. अनु. मृ. रे. स्वा. ध. म. मू. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः॥

विशेषः—रवौ रौद्रा (आर्द्रा)- द्यपादस्थे यदि संजायते रजः।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्॥

नवान्नभक्षणमुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है; नन्दा रिक्तातिथियों और पौष चैत्र को छोड़ कर सू. बु. गु. शुक्रवार शुभ है।

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्तः—अश्वि. पुन. पु. ह. वि. ज्ये. धनि. शत. रे. नक्षत्र में गौ लेना बेचना। अन्य पशु पुन. पु. पूर्वा ३, ह. अनु. ज्ये. मू. धनि. रे. में लेना बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ. फा. से दिन नक्षत्र तक गिनें, ३ तक लाभदायक ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ, (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक फिर दो दो के क्रम से गाय के समान फल जानो महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौनक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभफल सूर्यनक्षत्र तक गिनें (नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हानि करें घर आया)

सूर्यनक्षत्रात्काष्ठादि (गृहारा आदि) संस्थापनचक्रम्							
६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र संख्या
उत्तमधाक शुभ	शवदहन नेष्ट	सर्पभय नेष्ट	मित्रलाभ शुभ	रोगभय नेष्ट	बवाधकर्म नेष्ट	सुखं शुभ	फलम्

लतावृक्षाद्यारोपणमुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३, रो. ह. पुष्य अश्व. श. मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं. बु. बृ. शु. वार हों, शुक्ल पक्ष में ४।१।११।१२ लग्न में शुभ है॥ तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः— तृण काष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि कर्म कुम्भ मीन के चन्द्रमा में नहीं करना चाहिए।

औषध का मुहूर्तः— ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल, जन्मनक्षत्र को छोड़ कर इन नक्षत्रों में, ४।९।१४ को छोड़ कर शुभतिथियों में, भौम शनि को छोड़ अन्य वारों में शुभ है।

अथ यात्रामुहूर्तः—

ह. म. श्र. अश्वि. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रो. उत्तरा ३. पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या; भ. कृ. आर्द्रा आश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एतद्भेषु निन्द्या। तत्रात्यावश्यकेष्वपि

दिग्द्वारलग्नानि

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	शुभम्
२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	मध्यम्
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	भयम्
१ १	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	महाभयं

यात्रायां भरण्यादिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४। एता घटिका गमन-कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु दिग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्म लग्न और जन्म राशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांशक में यात्रा कदापि न करे। शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभग्रह और ३।६।१०।११ वें पाप ग्रह हों। अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२ वें चन्द्रमा, १० वें शनि, ७ वें शुक्र, १२।६।८ वें लग्नेश हो। अन्यच्च—यात्रा-यामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने॥

जन्म लग्नेश दशमेश अस्त हों वा मारक दशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा वा देवर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूलज्ञानाय चक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
पूर्व	आ.	दक्षि.	नैऋ	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	दिशा	पू.	द	प.	उ.
चं.श.	चं.बृ.	गुरु	सू.श	सू.शु.	भौम	मं.	बु.श.	वारा	ज्ये.	पूभा.	रोहि.	उफा.

दिक्शूलपरिहारः— न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्यं चन्द्रवारे पयस्तथा। गुडमंगारके वारे बुधवारे तिलानपि। गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि। माषान्भुक्त्वा शनिवारे शूले गच्छन्न दोषभाक्॥२॥

कालज्ञानम्	
शनौ	पूर्वे
शुक्रे	आग्नेय्यां
गुरौ	दक्षिणे
बुधे	नैर्ऋत्ये
भौमे	पश्चिमे
चन्द्रे	वायव्ये
रवौ	उत्तरे
सम्मुखे नेष्ट	

योगिनीवासचक्रम्

पू.	अग्नि.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर.	ईशा.	दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बायें की शुभ, युद्ध यात्रा में बायें ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है। समयशूल उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्ध रात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। गर्गगुरु अंगिरा मुहूर्त—गर्गजी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे, अंगिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाय। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषाकालः सप्तपञ्चा (५७) रुणोदयः। अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रातः शेषं सूर्योदयो भवेत्॥

चन्द्रवासचक्रम्			
पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यक-घट्यात्मकचन्द्रवासचक्रम्

पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	प.	उ.	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	घटी

घट्यात्मक चन्द्रवास जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए।

कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्—सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसंपदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषा लयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे॥ इति॥ सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा-करण-भगणदोषं, वारसंक्रांति-दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्द्धदोषम्। कुजशनिरवि-दोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः॥

सर्वांकसिद्धि योगः—शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रख क्रमशः ७।८।३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त्य में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अंक आने से सौख्य जय लाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादिमुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को और दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य को मत जाओ, हानि होती है। जानेवाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे, क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्णक्रमेण प्रस्थानविधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेऊ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधुघृत, वा रुपया शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध किसी के घर या नगर से बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान रक्खे। अथवा सब से मन की प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्राके पहले त्याज्य वस्तु—यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दे, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करे।

दिने चतुर्घटिकामुहूर्त्तम्							रात्रौ चतुर्घटिकामुहूर्त्तम्							
सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि	घटि	सु.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३॥।	शु.	च.	का.	उ.	अ	रो.	ल.
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	७॥	अ.	रो.	ला.	शु.	च.	का.	उ.
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	११।	च.	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१५	रो.	ला.	शु.	च.	का.	उ.	अ.
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ.	शुभ	चर	१८॥।	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	च.
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	२२॥	ला.	शु.	च.	का.	उ.	अ.	रो.
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	२६।	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	ज.	का.
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३०	श.	च.	का.	उ.	अ.	रो.	ला.

सूचना यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी पल ज्ञात होंगे।

यात्रायां शुभशकुनानि—मृग बायें ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन धन लक्ष्मी बहु-मिले चलते प्रातःकाल॥ विप्र २ अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गो, दधि, सर्षप, कमल, निर्मल वस्त्र, वाद्य, वश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुतस्त्री, गौरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धिवाक्य, सजलपूर्णघट यात्रा पश्चाद्रिक्तघट यात्रा समय देखने में शुभ है। अशुभशकुनानि—वन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलि, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

रामदैवज्ञोक्तं आवश्यके यात्रामुहूर्तं चक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भाति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्रय	दारिद्रय	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया-त्रयोदशी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानना, अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के स्वास की ओर का पांव आगे उठा कर चले इसी तरह सवारी पर चढ़े कार्य सिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रामुहूर्त—चि. ह. पु. मृ. पूर्वा. ३. अनु. श्र. ध. एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र-तारानुकूल सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्तः—मृ. रे. अनु. रो. उ. ३ ह. अ. पुष्य. स्वा. श्र. ध. श. एषु भेषु चं. बु. बृ. शु. श. वारेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१३। तिथिषु; ३।५।६।८।९।११। १२ एषु लग्नेषु; १।४।७।१०।५।९ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः ४।८। शुद्धौ शुभः; वि. कृ. पू. ३ भ. म. मू. ज्ये. आर्द्रा. आश्ले. नक्षत्राणि; ४।९।१४।६।१२।८।३० तिथयः, सू. मं. वारौ; १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि। मंगल को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है। विशेषः—प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति॥

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
मे.	क.	कुं.	सि.	म.	मि.	ध.	वृष	मि.	सि.	ध.	कुं.	घातचन्द्र
र.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	श.	शु.	मं.	बृ.	शु.	घातवार
म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्ले.	घातनक्षत्र
मे.	क.	ध.	मि.	वृश्चि.	वृश्चि.	मी.	ध.	कं.	वृश्चि.	मि.	मे.	चन्द्रघा.
का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	घातमास
वि.	शु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	ऽगं	बृ.	वै.	गं.	व्या.	वै.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	९	३	८	९	८	१०	
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	"

युद्ध, विवाद, राजसेवा, वाहन, रोगादि कार्यों में घात चक्र देखना और तीर्थ यात्रा तथा विवाहादि शुभकार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं है। "घाततिथिर्घातवारघातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयत्प्राज्ञस्त्वन्यकर्मसु शोभनम्॥"

वाम दक्षिण निर्देश—

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना; पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का कहा वही सरट (गिरगट) के चढ़ने का जाने। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्गविभागे पल्ली—(छिपकली, कोढ़किरली) पतनफलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभ	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंध	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधि	वामकर्णे	बहुलाभ	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभय	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागम	हस्तयोः	वस्त्रलाभ	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभ	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्टान्नभोजनं
ललाटे	बन्धु दर्शन	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाश
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	मरणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभ
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यक्षाणि—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु. अश्वि. रो. मृ. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। इतोऽन्यद्भेषु निद्याः॥

पल्लीपाते कर्त्तव्यकर्म—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करे। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धदिन, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्तलग्न में तथा अष्टमचन्द्रमा में पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शांति के लिये जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है।

छिक्का फलम्—छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है मदिरा के योग अथवा—छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं; पीन सरदी घांस फल होनी। छींकि पीठि की कुशल उचारे; बाईं कारज सबै सवारे॥१॥ सन्मुख छींक लड़ाई भाषै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी॥ अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई॥३॥ कन्या विधवा मालन धोबिन रजस्वला वेश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्का—आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु: शुभावहाः॥ एक नाक दो छींक; काम बने सब ठीक॥

तीर्थ में मुण्डन विचार—मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनी) गिरिजां गयाम्॥

अंगस्फुरणफलम्

पुरुषों का दायां अंग और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षःस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रू मध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधः	शत्रुभय
भ्रू युग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभाप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्र समीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	वस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्र पक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्वं	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामिप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्ववृद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल लसन मस्सा हो वा खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल या खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

उत्पातफलचक्रम्

उत्पात	फल	उत्पात	फल	उत्पात	फल
दिग्दाह	वर्षा न हो	भूमिकम्प	प्रजा को भय	सर्वग्रहअतिचार	शुभ फल
धूल वर्षे	दुर्भिक्ष पड़े	पहाड़ टूटे	राजा की मृत्यु	मूसल निकले	युद्ध, महर्घता
पत्थर वर्षे	अकाल हो	वृक्ष टूटे	राजा को भय	धूम्रकेतु उदय	राजभंग करे
तारे टूटे	जनक्षय	उलटी ऋतु	रोग विशेष	२।३।४ शूलोद	राजनाश
बिजली टूटे	जल सूखे	आदर्मीकेपमुहों	राजविघ्न	सुवर्ण पंक्ति	राजनाश
दिन अन्धेरा	प्रजाक्षय	ग्रहयुद्ध	राजाओंमेंविग्रह	तिकोणतारा	प्रजानाश
ग्रहसंयुति	अकाल	सूर्यचंद्र सदपड़े	देशक्षय	बनपशु गांव बसे	मनु.शून्य हों
श्वेतमंडल	भय हो	कृष्णमंडल	राज्य नाश	उल्लू बोले	गृह शून्य हो
पीतमंडल	रोग हो	धूम्रमंडल	बर्फ पत्थर पड़े	बांबीकबूतर-	गृहस्वा.नाश
नीलमंडल	वर्षा हो	बिनाऋतु फल	अन्न नाश	घर में बसे	
रक्तमंडल	युद्ध हो	सूलीभूमिगीली	बहुतवर्षा	सू.चं.बिम्ब-	रोगभय
स्त्रीवध हो	दुर्भिक्ष पड़े	विप्रबालकवध	दुर्भिक्ष पड़े	अधिकदेख पड़े	राजनाश
देवध्वंस	राजनाश	सर्वग्रास	सबवस्तुमहंगी	भूमिकम्प	दुर्भिक्ष
ग्रहास्तोदय	भयंकर वर्षा	भौमादिक वक्र	दुर्भिक्ष पड़े	१३ दिनकापक्ष	प्रजानाश

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं विधिश्च

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वाराः
तापम्	सुकांति	मृति	श्रीः	वित्त-हानि	विपत्ति	सुख सुभोग	फलम्
पुष्पं	०	मृति	०	दूर्वा	गोमय	०	पातन

तैलाभ्यङ्गे वर्ज्यानि

तदाह—
रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांतौ
वैधृतावपि। षष्ठ्यष्टम्योश्च
विष्टयां च, तैलाभ्यंगो न पर्वसु॥

विशेषः—यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो, अथवा उत्सव के दिन वा वात-रोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित, औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल, सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

काकस्पर्शादौ फलम्—मस्तक पर काकस्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है, कमर, कन्धे पर भी अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है॥ काकमैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट वा इच्छित कार्य नाश करता है। इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काक प्रतिमा मृण्मयपात्र में स्थापन कर उड़द, चावल, घी, मीठा का नैवेद्य देवे, ग्राम से दक्षिण की ओर बाहर चौरास्ते पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करे (या करावे) घृतच्छाया-पात्र दान पञ्चगव्य से स्नान भी करे, इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नाश होते हैं॥

अथ काकवचनफलविचारः—काकस्य वचनं श्रुत्वा पादच्छायां तु कारयेत्। त्रयोदशपदं दत्वा षड्भिर्भागं समाहरेत्॥ लाभच्छेदस्तथा सौख्यं भोजनं च धनागमम्। निश्शेषमरणं व्याधिरेतत्काकस्य लक्षणम्॥

कपोतः (कबूतर)—सिर पर गिरे वा स्व पालतू कबूतर के बिना अन्य कबूतर वा उल्लू गृह में चला जावे तो मृत्यु व मान स्थान हानि होती है, तद्दोष—निवृत्यर्थ दुर्गापाठ, होम सप्तधान्य दानादि करने से शान्ति हो।

मुष्टिचक्र
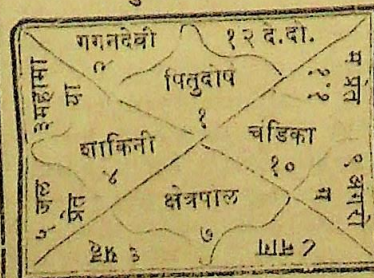
अंक प्रश्न तथा फल वर्णन

प्रश्नकर्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलावें या लिखवावें। उसमें बारह का भाग देकर पीछे यदि १।९।७ बचें तो देर से कार्य सिद्ध होवे। यदि ८।४।१०।५ बचे तो कार्यनाश होवे। ११ बचे तो सिद्धि, २ बचने से वृद्धि, ३।६।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि होवे यह फल कहे।

अथ स्वप्न-विचारः

स्वप्न ७ प्रकार का होता है, प्रथम दृष्ट (दिन में देखे हुए को देखना), द्वितीय श्रुत (सुने हुए का सुनना), तृतीय अनुभूत (जागृतावस्था में परीक्षा की हुई बातों को स्वप्न में देखना), चतुर्थ प्रार्थित (जागृतावस्था में इच्छाकी हुई बात को देखना), पञ्चम कल्पित

(दिन में कल्पना की हुई वस्तु को देखना), षष्ठ भाविक (न देखी न सुनी उससे विलक्षण), सप्तम दोषज (वात, पित्त, कफ के दोष से)॥ पूर्वोक्त सात प्रकारों में से "दृष्ट, श्रुत, अनुभूत, प्रार्थित, कल्पित" ये पांच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं। छठे भाविक स्वप्न का फल उत्तम मिलता है। सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में आता है। इतना विशेष है कि बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है। सुज्ञजन देखकर पुनः स्नानादि से शुद्ध हो देव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जाकर किसी पूर्ण दैवज्ञ के सामने फल, पुष्प, दक्षिणा रक्खे, फिर स्वस्थ चित्त से स्वप्न का वर्णन कर शुभाशुभ तथा सामान्य फल का विचार करावे।

शुभस्वप्न:—राजा, विप्र, देवता, गुरु, श्वेत वस्त्रवाली स्त्री इनका दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना। महल, पर्वत, सिंह, अश्व इन पर चढ़ना व दर्शन करना, रक्त से स्नान, रथ शय्यादि का ज्वलन, स्व शिर का छेदन, अपना मरण, वेदध्वनि श्रवण, रक्त पीत, पुष्प दर्शन, दर्पण, प्राप्ति, दही चावल भोजन, जूआ, रण विवाद में अपनी जय, इन्द्र धनुष का देखना, मठा कपास इन दो वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु स्वप्न में देखना धनैश्वर्य की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि कोई क्लर्क या मुन्शी यह स्वप्न देखें कि उसने दफ्तर के रजिस्टरों वा बहियों में गल्तियां की हैं तो उसे उसके मालिक से अच्छा काम करने की शबाश वा तरक्की मिलेगी।

यदि स्वप्न में फल पुष्प सहित वृक्ष पर अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर जाग जाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट खाय तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले। स्वप्न में बिच्छू या सर्प के जल में पैर काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर होकर सुख हो। श्वेत वस्त्रवाली स्त्री का स्नान करना, हाथों में हथकड़ी, पैरों में जंजीर का बन्धन पड़ना, नर या नारी के हाथ से जूती व खड़ाऊँ, छत्र, तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी में सर्प का दीखना, अपने पैर व भुजा के मांस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना ऐसे स्वप्न दीखें तो लक्ष्मी की प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने शिर के मांस को खाना, राज्य लाभ करता है, गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना सूर्यमण्डल का दीखना अपना मरना दीखें तो रोगी पुरुष का रोग-नाश और नीरोग पुरुष को लाभ होता है। बगुला, मुर्गी, कुब्ज का दीखना चतुर स्त्री प्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त व मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्यालाभ क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस, चरबी का खाना, विष्ठा अपने अंग में लगाना, श्वेत चन्दन, श्वेत वस्त्र पुष्पों से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर दे जाय तो भी लाभ हो। नदी समुद्र में तैरना, तालाब में तैर कर पार जाना, सूर्योदय का देखना, कष्टनिवृत्ति करता है। ऊंचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय करता है। राजा गौ, ब्राह्मण को प्रसन्न देखना, पर्वत, वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दर फल संयुक्त देखना बिगड़े काम सिद्ध होंगे ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों, तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ी पर चढ़कर पार होने से परदेश गमन हो। अगर कोई दूकानदार स्वप्न देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाये बिना भाग गया हो तो उसको समझ लेना चाहिये हमको रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे। यदि किसी की बहन यह स्वप्न देखे कि उसके भाई पर भारी विपत्ति पड़ी है और उसकी जान खतरे में है तो यदि वह कुमारी है तो उसका किसी बड़े आदमी के साथ विवाह हो जावेगा, और यदि वह विवाहिता है तो उसके घर में सर्व प्रकार से सुख शांति रहेगी। शुभ स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोवे नहीं।

अशुभ स्वप्न:—लाल वस्त्र पहिरना, सूर्य चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का टूटना, अपने घर में हंस हंस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना, नीम पलास के वृक्ष पर चढ़ना, रूई कपास, तेल लोहा मिलना, इनसे संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना या किसी के द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु व भारी कष्ट को सूचित करता है। शिर के सारे बालों का या मुख के दांतों का गिरना, द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन करना व किसी वस्तु को मांगकर ले जाना द्रव्य हानि वा कष्ट करता है। तैलपक्व गुलगुले तथा तांबे के पैसे मिलना रोग-कष्टसूचक है। अपनी स्त्री की कमीज को मरी स्त्री ले जावे तो पुत्र कष्ट या मृत्यु हो। हाथ, नाक का कटना, कीच (पंक) में फंसना, ऊंट, गधे भैंस पर चढ़कर तेल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और विवाह गीत मंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्तवस्त्रवाली स्त्री का आलिंगन करना बन्दर, सर्प पर चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृकार्यों का करना, भूत प्रेत चाण्डालों के साथ मिलना अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर दक्षिण दिशा में जाना इत्यादि स्वप्न मृत्यु कारक होते हैं। नदी में डूबना अथवा नदी के प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतु के वर्षा देखना, बाघ, रीछ, गीदड़, बिलाव, भैंस, सर्प, मक्खी का दर्शन, पर्वत शिखा का तथा बड़े, महल ध्वजा का गिरते देखना अशुभ कष्ट व चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती, देव, विप्र, इनके बिना सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ व चिन्ताकारक होता है। अगर "विधवा" स्त्री यह स्वप्न देखे कि उससे शादी करने का किसी ने सवाल किया है तो उस पर कोई सख्त बीमारी आवे, या मृत्यु होवे। कुत्ता शरीर पर कूद कर दांत से मांस काटे तो शत्रु गुप्तभाव से अनिष्ट करेगा।

स्वप्न का फल कब मिलेगा ?

रात्रि के प्रथम प्रहर का १ वर्ष में, द्वितीय का ८ मास में, तृतीय का तीन मास में तथा रात्रि के चतुर्थ प्रहर का एक मास में, अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहिले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है।

अशुभ स्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम, यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, अश्वत्थपूजन, विष्णुसहस्रनाम, गजेन्द्रमोक्ष व चण्डीपाठ, ब्राह्मण-भोजनादि करवाना चाहिये। अशुभ स्वप्नों को देखकर फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

आयुर्निर्णय—१—लग्नेश अष्टमेश से तथा जन्मलग्न और चन्द्र पर से आयुष्य का निर्णय करे। दोनों से एकवाक्यता न मिले तो जन्म लग्न होरा लग्न से आई आयु ठीक समझे चरे चरे, स्थिरे-द्विस्स्वभावे-दीर्घायुः। द्विःस्वभाव-द्विस्वभावे, चरे-स्थिरे मध्यायुः। स्थिरे स्थिरे। चरे-द्विःस्वभावे-अल्पायुः।

२—११,१,४,७,१०,५,९ इन स्थानों में लग्नेश, अष्टमेश और दशमेश के पड़ने से दीर्घायु होती है ३।४ में पापग्रह हो; पणफर में भी यदि पापग्रह हो तो मध्यायु इसके अतिरिक्त अल्पायु।

यदि किसी की बहन यह स्वप्न देखे कि उसके भाई पर भारी विपत्ति पड़ी है और उसकी

प्रश्न-जन्मवर्षादौ कार्यसिद्धिज्ञानम्

लग्नपः कार्यपश्चापि लग्नगौकार्यगौ यतौ। मिथस्थौ स्वस्वगौ दृष्टौ स्वोच्चादौ चेत्तुसिद्धिदौ ॥१॥ एषु योगेषु चन्द्रदृष्टौ सत्यां कार्यसिद्धिरवश्यमन्यथा सन्देहः।

कार्य सिद्ध होगा या नहीं ?

शुभवार में वाम स्वर चलते समय प्रश्न हो तो कार्य सिद्ध होता है। शुक्ल पक्ष में विशेष सिद्धि जाने। अशुभ वार में दक्षिण स्वर चलते समय प्रश्न हो तो कार्य सिद्ध होता है। यदि कृष्ण पक्ष भी हो तो विशेष सिद्धि होती है। विपरीत हो तो कार्य सिद्धि नहीं कहना।

क्रय विक्रय प्रश्न—प्रश्नलग्न का स्वामी क्रेता (खरीदने वाला), ग्यारहवें घर का स्वामी विक्रेता (बेचने वाला) और लग्न क्रयाणक (खरीदने योग्य वस्तु) है, ऐसा जानो। यदि लग्न बली हो अर्थात् उसको स्वामी या शुभ ग्रह देखें या शुभ ग्रह उसमें पड़े हों अथवा केन्द्र में शुभ ग्रहों का योग हो तो वस्तु के खरीदने वाले को लाभ रहेगा। यदि ग्यारहवां भाव पूर्ववत् बली हो तो बेचने वाले को लाभ जानो। कितना लाभ होगा? इसके जानने के लिये लाभेश का बल विचारो; यदि वह अपने घर में रहते तो दुगुना, शत्रु के घर में हो तो सवाया, सम घर का हो तो ड्योढ़ा और मित्र का हो तो चतुर्थांश लाभ होगा; इसी प्रकार खरीदने वाले को भी जानना चाहिये। प्रश्न का उत्तर देने में योगों पर विशेष ध्यान देना चाहिये ॥

क्या यह बात सत्य है?—प्रश्न काल के तात्कालिक नक्षत्र और योग के अंकों को जोड़कर वर्तमानतिथि से गुणा दो, फिर उसे ४ से भाग देना शेष १।३ बचे तो बात सच्ची, शेष २ बचे तो झूठी जानो ॥

स्त्री पुरुष में प्रथम किसकी मृत्यु होगी ?

स्त्री पुरुष के नामकी मात्रा को ४ से गुणा कर, जो अक्षर होवें उनको दुगुना कर जोड़ देवे फिर ३ का भाग देवे यदि २ शेष रहे तो प्रथम स्त्री की मृत्यु और १ या ० बाकी रहे तो प्रथम पुरुष की मृत्यु जानना। किन्तु मात्रा जोड़ने में भूल न करें ॥

प्रवासी प्रश्न—प्रश्नकर्ता के उच्चारण किये हुए अक्षरों को (वा फल का नाम लेवे तो फलाक्षरों को) ६ से गुणा करके उसमें १ जोड़ दे फिर सात का भाग देने से एक से आदि लेकर जो अङ्क बचे उसे फल कहे। १ शेष रहे तो प्रवासी आना चाहता है। २ शेष रहे तो मार्ग के अर्द्धभाग में है। ३ बचे तो ग्राम के निकट आ गया है। ४ बचे तो घर में लाभ सहित आ गया है। ५ बचे तो रोगी है। ६ बचे तो पीड़ित है। ७ बचे तो आने का यत्न करता है। धनेश वक्री न हो तो प्रवासी कल्याणपूर्वक है।

देशान्तर से पत्र आवेगा कि नहीं?—प्रश्न लग्न चर राशि का हो और उससे द्वितीय तृतीय स्थान में शुभग्रह युक्त अथवा दृष्टि हो तो जल्दी आवेगा मार्ग में है। स्थिर लग्न में विलम्ब से पत्र मिले। द्विस्वभाव लग्न में प्रश्न हो तो पत्र नहीं मिले। प्रश्न लग्न में बुध चंद्र हों और शुभ ग्रह देखता हो तो पत्र आवेगा, विपरीत हो तो उत्तर नहीं मिलेगा ॥

अमुक मनुष्य से रुपया मिलेगा कि नहीं?

साहूकार (जिस से नया लेन देन करना है) के नाम के अक्षरों को तीन गुणा करके उसमें अपने नाम के अक्षरों को जोड़ दें, फिर उसी संख्या में तीन का भाग देवें, शेष १ रहे तो रुपया मिले। २ शेष रहे तो न मिले। तीन (०) शेष रहे तो मुद्दत बाद फिरने से मिले ॥

इस वस्तु से लाभ होगा कि नहीं ?

इस की केवल गत घटिकाओं को तीन से गुणा करके उसमें उस वस्तु के अक्षर युक्त कर पांच और जोड़ना फिर चार का भाग देकर शेष विषम रहे तो लाभ हो, सम शेष रहे तो लाभ नहीं होवे ॥

पुत्र लाभ होगा कि नहीं? तात्कालिक तिथि की संख्या को ४ गुणा करके दो से भाग देना जो लब्धि आवे उसको तीन गुणा करके ४ से भाग देना, जो शेष बचे उससे फल कहें। १ शेष बचे तो विलम्ब से सन्तान पुत्र लाभ होगा चिरंजीविता के लिये पार्थिव-शिवपूजन करना चाहिए। २ शेष रहे तो पूर्व जन्म के पाप के कारण सन्तान सुख न होगा, गया यात्रा तथा हरिवंशपुराण का नवाह सुनने तथा सन्तान गोपाल के सवा लक्ष जप से सम्भव है कि ईश्वर कृपा करे। ३ शेष बचे तो शीघ्र लाभ होगा, किसी गरीब की कन्या को विवाह दें या उसके विवाह में गुप्तदान से मदद करें। ऐसा करने से होने वाले पुत्र का पूर्ण सुख होगा। ४ (०) शेष बचे तो सन्तान सुख शीघ्र होगा ॥

विवाह होगा कि नहीं?—यदि लग्न से २।३।६।७।१०।११ इन स्थानों में चन्द्रमा को बृहस्पति देखे तो विवाह हो जायगा। यदि चन्द्रमा के साथ पापी ग्रह हो या पापी ग्रहों की दृष्टि हो तो विवाह नहीं होगा। यदि लग्न से ३।५।६।७।११ स्थान में चन्द्रमा को सूर्य, बुध, बृहस्पति इन में से कोई देखे अथवा व्ययेश लग्न में और लग्नेश व्यय में हो यद्वा लग्नेश सप्तम में और सप्तमेश लग्न में हो अथवा २।४।७। इन राशियों में से किसी एक राशि में चन्द्रमा वा शुक्र हो तो अवश्य विवाह हो जावेगा।

अथ रोगोत्पत्तौ सन्तानप्रतिबन्धादौ च देवदोषज्ञानम्

तृतीय नवम द्वादश षष्ठ स्थान में प्रश्नलग्न से कोई पाप ग्रह हो तो विष जल शस्त्र से मरे हुए किसी स्वकुलोत्पन्न व्यक्ति का दोष जानना। यह योग पापग्रहों के साथ शुभ का संयोग होने पर नहीं होता। यदि बारहवें स्थान में राहु हो तो प्रेत दोष, बृहस्पति के होने से पितर दोष, चन्द्रमा के होने से जलदेवी का दोष, सूर्य के होने से देवी दोष, अथवा लग्न अष्टम द्वादश में सूर्य हो तो क्षेत्रफल का दोष कहे, शनि के होने से अपने गोत्र की देवी (सती) का दोष और बुध व्यय तथा अष्टम स्थान में हो तो भूतदोष जानना। व्यय तथा अष्टम में भौम हो तो शाकिनी दोष, शुक्र के होने से जल देवी का दोष होता है। परंच जो मनुष्य स्वधर्मनिष्ठ नहीं है अथवा जो ईश्वर से विमुख रहते हैं, पूर्वोक्त दोष उन्हीं को होते हैं। दोषसूचक ग्रह अपनी राशि तथा उच्च में हो बलवान् हो तो उक्त दोष साध्य, यदि चन्द्र नीच तथा निर्बल हो और दोषसूचक ग्रह भी नीच शत्रुक्षेत्र में हो तो उक्त दोष असाध्य होता है। बलवान् पापग्रह केन्द्र में हो तो पूर्वोक्त देवता असाध्य होते हैं, यदि शुभ ग्रह केन्द्रस्थान में हो तो पूर्वोक्त देवगण साध्य अर्थात् मन्त्र स्तुति पूजन आदि से उसका दोष दूर हो जाता है।

मतान्तरेण दोषज्ञानम्—तिथि वार नक्षत्र लग्न प्रहर इनको जोड़े और ८ का भाग देवे शेष ३।७ बचें तो देवता की, २।८ बचें तो पितृबाधा और ६।४ बचें तो भूत प्रेत की बाधा जानना, १।५ बचें तो ग्रहपीड़ा जानना। उदयाद् घटिका त्रिघ्ना तिथिवारेण संयुता। भक्ते द्वादशभिः शेषे जीवनं मरणं वदेत् ॥१॥ राम (३) बाण (५) रसा (६) ष्टौ (८) च नन्द (९) रुद्रा (११) च जीवति, क (१) पक्ष (२) युगा (४) सप्त (७) दशा (१०) र्काः (१२) नात्र जीवति ॥२॥

❁ अथ सर्वसाधारणोपयोगी प्रश्नः ❁

मित्र मिलाप प्र. १

७	२	१
३	६	५
४	९	८

मुकदमा प्र. २

४	२	१
३	९	८
६	७	५

यात्रा प्र. ३

५	४	३
१	६	९
२	८	७

पशु लेने का प्र. ४

२	१	३
४	५	६
७	९	८

लाभालाभ का प्र. ५

७	४	५
६	८	९
२	३	१

नौकरी का प्र. ६

१	५	८
७	३	६
९	४	२

विद्या परीक्षा प्र. ७

७	८	५
४	३	२
९	१	६

परदेशी प्र. ८

९	७	४
३	२	८
१	६	५

शत्रुनाश प्र. ९

६	८	९
२	१	३
४	५	७

प्रश्नकर्त्ता फूल द्रव्य दक्षिणा आदि से पंचांग की पूजा करके जिस विषय का प्रश्न करना चाहे उसी विषय के चक्र के कब्जरों में से किसी एक घर पर ईश्वरस्मरण करता हुआ अंगुली रक्खे, फिर उसी विषय के फल चक्र में उसी संख्या के सामने फल देख लेवे, यथार्थ फल मिलेगा। स्मरण रहै कि प्रश्न एक दिन में एक ही बार करना चाहिये, बार बार जिज्ञासा से प्रश्न करने पर फल न मिलेगा।

मित्र मिलाप फल (१)
१ मित्र शीघ्र ही मिलेगा।
२ मित्र विश्वासघाती है।
३ मित्र कुछ विलम्ब से मिले।
४ मित्र धोखा देगा।
५ मित्र बड़ा सज्जन प्रेमी है।
६ मित्र कष्टमय युक्त है।
७ मित्र अच्छा है शीघ्र मिलेगा।
८ मित्र मतलबी है।
९ मित्र दूसरे से मिलावट रखता है।

मुकद्दमे का फल (२)
१ मुकद्दमा देर से होगा।
२ मुकद्दमे में जीत होगी।
३ हाकिम ठीक न्याय नहीं करेगा।
४ कुछ कुछ जीत होगी।
५ विशेष खर्च करके जीत होगी
६ कष्ट अधिक होगा।
७ तुम्हारी हार होगी।
८ सुलह हो जायेगी।
९ पंचायत मिलकर फैसला करेगी।

यात्रा का फल (३)
१ गमन मत करो, लाभ नहीं।
२ देशाटन में हानि लाभ बराबर है।
३ भूलकर भी मत जाओ, हानि होगी।
४ शुभ दिन में जाओ लाभ होगा।
५ देशाटन में कोई चमत्कार है।
६ शकुनविचारके गमनकरोलाभ होगा
७ यात्रा पीड़ाकारक होगी।
८ यात्रा में आराम मिलेगा।
९ यात्रा करो लाभ होगा परखर्च विशेष होगा

पशु लेने का फल (४)
१ पशु से पूरा लाभ होगा।
२ पशु से हानि लाभ सम।
३ पशु मत खरीदो अच्छा नहीं।
४ तेरा विचार ठीक नहीं है।
५ फायदा रहेगा तो सही।
६ आज कल पशु लेना देना बुरा है।
७ पशु संग्रह मत करो पछताओगे।
८ तेरा विचार विलम्ब से फलेगा।
९ लेना देना ठीक नहीं हानि लाभ सम

लाभालाभ का फल (५)
१ इस माल से लाभ उत्तम होगा।
२ इस माल से लाभ कुछ न होगा।
३ यह काम घाटे का है।
४ चोरी या नुकसान का भय है।
५ साझी या व्यापारी दगा करेगा।
६ माल से सवाया लाभ होगा।
७ माल कुछ देर से लाभ देगा।
८ खरीदो मत, पड़ा है तो बेचो।
९ माल में गहरा नफा मिलेगा।

नौकरी का फल (६)
१ नौकरी जरूर मिलेगी।
२ देर से मिलेगी, धीरज धरो।
३ काम नहीं बनेगा, सचेत रहो।
४ खर्च करने से कार्य बनेगा।
५ यहां कुछ नहीं और फिकर करो।
६ शत्रु रुकावट करेंगे यह ध्यान दो।
७ किसी की सहायता से काम बनेगा
८ इस विचार में अनेक विघ्न होंगे।
९ काम सिद्ध न होगा।

विद्या परीक्षाका फल (७)
१ अभी उत्तीर्ण होना दूर है।
२ विद्या से कुछ लाभ नहीं।
३ मनोकामना पूरी होवेगी।
४ विद्या सामान्य सफलता देवेगी।
५ विद्या ही परम लाभकारी होगी।
६ उत्तीर्ण होने में कष्ट होगा।
७ अच्छे दरजे में पास होवेगा।
८ विद्या से विशेष लाभ न हो।
९ विद्या लाभकारी न होगी।

परदेशी प्रश्न फल (८)
१ परदेशी शीघ्र ही आवेगा।
२ बीमारी से लाचार है।
३ मार्ग में चला आ रहा है।
४ दूर देशान्तरों में विचरता है।
५ जल्दी ही आनेवाला है।
६ अभी मन में लौटने का नहीं है।
७ वह परदेश में ही प्रसन्न है।
८ मार्ग में तंग है जैसे आवे।
९ परदेशी परदेश में ही रहेगा।

शत्रुनाश प्रश्न फल (९)
१ शत्रु दुष्ट है नाश न होगा।
२ शत्रु से तुम्हारी जीत होगी।
३ शत्रु द्वारा विशेष हानि होवे।
४ मित्र की सहायता से जय हो।
५ शत्रु निर्बल हो गया डरो मत।
६ विश्वास न करो उससे भय है।
७ राजा की सहायता से भय मिटे।
८ सुलह हो जावेगी।
९ शत्रु के कारण धननाश होगा।

गुप्त चिंता का प्र० १०

७	८	२
९	६	१
३	४	५

कर्ज लेना देना प्र० ११

१	३	२
८	९	६
५	४	७

खेती करूं या नहीं प्र० १२

१	८	३
६	४	७
५	२	९

रोगी का प्र० १३

२	६	९
७	५	८
३	४	१

गर्भ में क्या है प्र० १४

७	६	१
४	२	८
३	५	९

चोरी गई का प्र० १५

८	७	३
४	९	६
२	५	१

पुत्र गोद लेना प्र० १६

३	५	१
४	९	८
२	६	७

अनाज खरीद का प्र० १७

८	७	५
९	४	३
२	१	६

विवाह शादी प्र० १८

५	४	३
२	१	६
८	९	७

रोजगार का प्र० १९

६	७	९
२	४	८
१	५	३

गुप्त चिंता का फल (१०)
१ मन की इच्छा पूर्ण होगी।
२ काम बनने में कुछ देर है।
३ काम का नतीजा खराब होगा।
४ किसी का भरोसा न करो।
५ चिन्ता न करो काम बनेगा।
६ मन की मन ही में रहेगी।
७ तेरा दुष्ट से वास्ता पड़ा है। ८ देरी से काम बनेगा।
९ चिन्ता जल्दी है किसी की मदद लो।

कर्ज लेने देने का फल (११)
१ यहां से कर्ज लेना देना अच्छा है।
२ जैसा प्रेम अब है आगे नहीं रहे।
३ लेने देने का नतीजा खराब रहेगा।
४ अन्त में मुश्किल होगी।
५ दिया सो खोया, लिया सो कमाया।
६ इस जगह हानि लाभ सम है।
७ लेने देने में कोई हरज नहीं।
८ अन्त समय अदालत में जाना होगा।
९ नफा नुकसान बराबर रहेगा।

खेती करूं या नहीं फल (१२)
१ खेती में लाभ रहेगा।
२ वर्षा थोड़ी होने का डर है।
३ खेती को कीड़े का भय है।
४ मनोकामना सिद्ध होगी।
५ जितनी मेहनत उतना लाभ।
६ खेती करो पर सावधानी से।
७ खेती में ओले का भय है।
८ वायु के कारण कुछ हानि होगी।
९ खेती में हानि रहेगी, मत करो।

रोगी का प्रश्न फल (१३)
१ यह रोग अधिक दिन तक रहेगा।
२ ग्रहदशा खराब है, शांति करो।
३ यह रोग ईश्वर प्रकोप का फल है।
४ चिन्ता न करो आराम होगा।
५ रोगी की आबोहवा बदली करो।
६ रोगी को पथ्य से रक्खो।
७ चिन्ता न करो, ९ दिन भारी हैं।
८ आराम हो जावेगा, पर खर्च अधिक है।
९ होनहार में किसी का वश नहीं चलता।

गर्भ में क्या है फल (१४)
१ इस गर्भ की शुभाशा नहीं।
२ पुत्री का जन्म होगा।
३ शुभ लक्षण वाला पुत्र है।
४ लड़की होगी पर आयु कम।
५ गर्भ अधूरा रहे या बच्चा मरे।
६ पुत्र का जन्म होगा।
७ दीर्घायु पुत्र होगा।
८ थोड़ी कन्या जनमेगी।
९ लड़का लड़की जोड़े होंगे।

चोरी गई का फल (१५)
१ वस्तु शीघ्र मिलेगी, चोर घर ही है।
२ खर्च करने पर माल मिलेगा।
३ पता पूरा लगे पर माल न मिलेगा।
४ चोर पक्का है, माल न मिलेगा।
५ किसी की मदद से माल मिलेगा।
६ चोरने तेरी वस्तु और को देदी।
७ माल आधा नष्ट हो गया।
८ माल नहीं मिलेगा आशा छोड़ो।
९ चोर छोटी आयु का है माल मिलेगा।

पुत्र गोद लेने का फल (१६)
१ गोद लेने से नाम रहेगा।
२ यह लड़का वफादार नहीं।
३ लड़का खर्च करावेगा।
४ लड़का अच्छा नहीं है।
५ अच्छी मिलेगी।
६ सावधानी से गोद लेना।
७ बेमुनासिब निकलेगा।
८ घर में अनबन रहेगी।
९ बुराई नहीं है।

अनाज खरीद फल (१७)
१ अनाज में भारी लाभ होगा।
२ नफा टोटा समान रहेगा।
३ घाटा रहेगा।
४ अन्न के खराब होने का भय है।
५ साझी व्यापार न करें।
६ देर से बिकेगा।
७ अनाज में सवाये होंगे।
८ बेचना ठीक है, लेना मत।
९ प्रश्न फल अशुभ है।

विवाह शादी का फल (१८)
१ विवाह देरी से होगा।
२ विवाह होगा पर अभी जल्दी नहीं
३ विवाह न होगा।
४ विवाह जरूर होगा।
५ विवाह में रुकावटें होंगी।
६ किसी की खुशामद करो।
७ खर्च करो, काम बनेगा।
८ थोड़ा विलम्ब से होगा।
९ स्त्री गुणवाली मिलेगी।

रोजगार प्रश्न फल (१९)
१ रोजगार जल्दी ही अच्छा होगा।
२ विशेषपरिश्रमकरनेसेरोजगार हो
३ किसी प्रकार की ठेकेदारी करो।
४ अजमिट्टी, कोयला से लाभ होगा।
५ अब इस व्यापार में हानि होगी।
६ दुश्मन नुकसान करेंगे सावधान
७ रोजगार ठीक होने में देर है।
८ कोई शहूकी दशा है अभी चुप रहो
९ जो विचारा है वह पूर्ण नहीं होगा।

चोर किस दिशा में है ?

तिथि शुक्ल प्रतिपदा से, वार सूर्य से, गिने नौ और मिलाय लग्न का अंक जोड़ ४ से भाग देवे। शून्य शेष रहे तो पूर्व, एक बचे तो दक्षिण, २ बचे तो पश्चिम, ३ बचे तो उत्तर, दिशा कहे। हारजीत के प्रश्न करते समय पूछनेवाला स्वयं अपने स्तन कर्ण शिर हाथ मुख नाक कमर स्पर्श करे तो जीत कहे और अंगस्पर्श करे तो हार होती है।

अथ महर्षिपराशरोक्तविंशोत्तरीमहादशा चान्तर्दशाज्ञानचक्रम्

सूर्यदशा वर्ष ६.				चन्द्रदशा वर्ष १०				भौमदशा वर्ष ७			
कृ.उ.फा.उ.षा				रो. ह. श्रवण				म. चि. ध.			
तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८	च	०	१०	०	मं	०	४	२७
च.	०	६	०	मं	०	७	०	रा	१	०	१८
मं	०	४	६	रा	१	६	०	बृ.	०	११	६
रा	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श	१	१	९
बृ.	०	९	१८	श	१	७	०	बु.	०	११	२७
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०
के	०	४	६	शु	१	८	०	र	०	४	६
शु	१	०	०	र	०	६	०	च	०	७	०

राहुदशा वर्ष १८				गुरुदशा वर्ष १६				शनिदशा वर्ष १९			
आ. स्वा. श.				पुन. वि. पूभा.				पु. अनु. उ. भा.			
तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
रा	२	८	१२	बृ.	२	१	१८	श	३	०	३
बृ.	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९
श	२	१०	६	बु.	२	३	६	के	१	१	९
बु.	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०
के	१	०	१८	शु.	२	८	०	र	०	११	१२
शु.	३	०	०	र	०	९	१८	चं	१	७	०
र	०	१०	२४	चं	१	४	०	मं	१	१	९
चं	१	६	०	म	०	११	६	रा	२	१०	६
मं	१	०	१८	रा	२	४	२४	बृ.	२	६	१२

बुधदशा वर्ष १७				केतुदशा वर्ष ७				शुक्रदशा वर्ष २०			
श्ले. ज्ये. रे				म. मू. अ.				पूफा.पूषा. भ.			
तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्			
ग्रह.	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु	३	४	०
के	०	११	२७	शु.	१	२	०	र.	१	०	०
शु	२	१०	०	र	०	४	६	च	१	८	०
र	०	१०	६	चं	०	७	०	मं	१	२	०
चं	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
मं	०	११	२७	रा	१	०	१८	बृ.	२	८	०
रा	२	६	१८	बृ.	०	११	१६	श	३	२	०
बृ.	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

शिवोक्तयोगिनीदशाऽन्तर्दशयोर्ज्ञानार्थंचक्रमिदम्

मंगला व. १			पिंगला व. २.			धान्या व. ३			भ्रामरी व. ४		
चन्द्र			सूर्य			गुरु			मंगल		
आर्द्रा चि. श्र.			पुन. स्वा. ध.			पुष्य वि. श.			अश्ले.अनु.पूभा		
मं.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि	७	०	सं.	१०	२६
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पि	२	०	धा.	४	०

भद्रा व.५			उल्का व. ६			सिद्धा व. ७			सङ्कटा व. ८			दशा तथा वर्ष
बुध			शनि			शुक्र			केतु			दशेशग्रहाः
भ.म.ज्ये.उभा			कृ. पूफा. मू. रे.			रो.उफा.पूषा.			मू. ह. उषा.			जन्मनक्षत्र
भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०	
उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०	
सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०	
सं.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०	
मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०	
पि.	३	१०	धा.	६	१०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०	
धा.	५	०	भ्रा.	८	०	मं.	११	२०	उ.	१६	०	
भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०	

अन्तर्दशामासादि
शुभदशा—मं. धा. भ. सि.
नेष्टदशा–पि. भ्रा. उ. सं.

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घटयादि को ६० में से घटा कर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाये हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र की घटयादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें, भयात की पलों को दशा के वर्षों से गुणाकर भोग की पलों से भाग देवें लब्ध अंक वर्ष, फिर शेषांक को १२ से गुणें भभोग के पलों से भागदें लब्ध मास, फिर ३० से गुणा कर भभोग के पलों का भाग दें लब्ध दिन, फिर ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्धांक घटी, फिर शेष को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में घटाने से भोग्य दशा होगी।

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्य ग्रहफलबोधकचक्रम्—

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	नृपभीः	धनलाभः	हानिः	कष्ट	शत्रुना.	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाशः	सुखं	धनला.	पीड़ा
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभः	हर्षः	शत्रुनाशः	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योद.	विजयः	धनला.	व्ययः
भौमः	व्रणाः	धननाशः	जयः	व्यसनं	दुर्गति	शत्रुना.	स्त्रीकष्टं	पीड़ा	पुण्योद.	राज्यला.	धनला.	विरोः
बुधः	सौख्यम्	धनलाभः	सुखम्	द्रव्यला.	पुत्रला.	कलहः	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	रोगः
गुरुः	सुखम्	धनलाभः	जयः	वाह.ला.	पुत्रप्रा.	कष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्मलाभः	राज्यला.	धनला.	शोकः
शुक्रः	मानप्रा०	धनप्राप्तिः	कीर्तिला.	सुखला.	धनलाभः	शत्रुभीः	स्त्रीसुखं	कष्टम्	धर्मोद.	मानला.	क्षेमला.	व्ययः
शनिः	वातार्तिः	पीड़ा	धनलाभः	दुःखम्	पुत्र पी.	जयः	स्त्रीकष्टं	रोगः	भाग्यहा.	धनहा.	धनला.	चिंता
राहुः	शिरोर्तिः	राजभीः	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाशः	शत्रुना.	रोगभीः	कष्टम्	धर्महा.	विजयः	सुलाभ	व्याधिः
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्यं	राजभीः	दुर्बुद्धिः	सुखम्	क्लेशः	पीड़ा	भाग्यना.	धनला.	लाभः	शोकः
मन्थाः	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टिः	दुःखम्	सुखाप्तिः	कष्टम्	व्यसनं	दुःखम्	भाग्योद.	राज्यप्रा.	लाभः	कष्टम्

❀ अथ वर्षप्रवेश सारणीयम् ❀

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

त्रिराशिपतिचक्रम्

मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मीन	राशयः
सू	शु	श	शु	बृ	चं	बु	मं	श	मं	बृ	चं	दि. ल. प.
बृ	चं	बु	मं	सू	शु	श	शु	श	मं	बृ	चं	चं रा. ल प.

वर्षफलसाधनप्रकारः—(१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष करना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गत वर्ष जाने। स्मरण रहे कि मेषार्कप्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछाड़ी के संवत् से करना (वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्) इस प्रकार से गतवर्ष लाकर उसी गताब्द अंक के नीचे जो सारिणी में वारादि अंक हैं उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी पल जोड़ने से वर्ष प्रवेश होता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना; ऊपर के वारांक में सात से अधिक आ जाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्ष प्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट-सूर्यवत् वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन ठीक वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी-कभी वार नहीं मिलता सो वहां पर मुख्य वर्षप्रवेश का वार जानना योग्य है। इस इष्ट के अनुसार आगे लिखी स्वदेशीय लग्नसारिणी से लग्न साधन करके वर्ष-कुंडली लगाना। वर्षप्रवेश समय का सूर्य जन्म समय के स्पष्ट सूर्यवत् तब मिलता है जब कि जन्म और वर्षप्रवेशका सामयिक गणित एक ही करण ग्रन्थ से किया हो। वर्ष बनाने में जन्मस्थान की स्वदेशीय सारणियों से वर्षलग्नादि साधन करे अन्यथा वर्षपत्र अशुद्ध होगा। मुन्थानयनप्रकारः—गताब्दवृन्द में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे वह मुन्था जानना; यह मुन्था प्रतिदिन पांच कला चलती है।

अथ त्रिपताकीचक्रम्—तिरछी और खड़ी तीन तीन रेखा खींचकर उनके कोण परस्पर मिलाकर त्रिपताकी चक्र तैयार करो, उस चक्र के पूर्व की मध्य रेखा पर वर्षप्रवेश का लग्न रख कर अन्य स्थानों में शेष क्रमशः ११ राशियों को स्थापन करो, अब ग्रह स्थापन करने की यह विधि है कि गतवर्षों में एकयुक्त कर ९ का भाग देने से जो शेष रहे उनकी संख्या की राशि पर जन्मराशि से चन्द्रमा होता है, एक युक्त गताब्दों में ४ का भाग देने से जो शेष रहे उसी संख्या पर शेष ग्रह जन्म-स्थान से होते हैं; परंच राहु केतु को विपरीत जानना॥ फल—यदि उक्त चक्र में राहु के साथ चन्द्रमा का वेध होवे तो कष्ट, सूर्य के वेध से संताप, शनैश्चर से रोग, भौम के वेध से शरीर पीड़ा होती है; शुभग्रहों के वेध से जय सौख्य लाभ होता है, [illegible]

अथ वर्षबलम्

स्थानबल—सूर्य लग्न से ९, चं० ३, मं० ६, बु०, १, गु० ११, शु० ५, श० १२, इन स्थानों में ५ बल देते हैं। **स्वोच्चबल**—सू. १।५, चं० २।४, मं० १।८।१०, बु० ३।६, गु० ९।१२।४, शु० २।७।१२, श० १०।११।७ इन स्थानों में ५ बल देते हैं। **पुरुष स्त्री बल**—स्त्रीग्रह (चं०, बु० शु० श०) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू० मं० बृ०) ४।५।६।१०।११।१२ वें स्थानों में ५ बल देते हैं। **दिनरात्रिबल**—दिन के वर्षेष्ट में पुरुष ग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं। **मित्रशत्रुज्ञानम्**—जिस ग्रह का मित्रादि देखना है उस ग्रह से ३।५।९।११ इन स्थानों पर जो ग्रह हों वह उसके मित्र होते हैं और २।६।८।१२ वें हों तो सम, १।४।७।१०वें होवें तो शत्रु।

वर्षेशनिर्णये दृष्टिज्ञानम्—९।५वें ४५ कला, ३रे ४० कला, ११वें १० कला ४।१० वें १५ कला, और १७ वें पूर्ण कला (६० कला) दृष्टि होती है।

अथ वर्षेशनिर्णयः—जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५, दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी इन पांचों अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होगा, यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उनमें से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह, बल दृष्टि अधिकार यह तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश होगा॥ यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे वा जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश होगा॥ फल—वर्षेश ६।८।१२ वें अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भय विशेष होगा यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

मुद्दा दशा चक्र विधिः

जन्मनक्षत्र की संख्या में गतवर्षगण जोड़ के २ घटा दें, ९ से भाग करने पर जो शेष बचे वह सूर्य से लेकर मुद्दा दशा होती है। योगिनी के लिये जन्मनक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़े, ३ और जोड़े, ८ से शेष करे तो मंगलादि योगिनी होती है॥

मुन्थादशा क्रमः

शेष	ग्रहाः	मास	दिन
१	सूर्य	०	१८
२	चंद्र	१	०
३	भौम	०	२१
४	राहु	१	२४
५	बृह.	१	१८
६	शनि	१	२७
७	बुध	१	२१
८	केतु	०	२१
९	शुक्र	२	०

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा

मं.	पि.	ध.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

अथ लग्नपत्रात् सूक्ष्मलग्नसाधनम्—जिस समय का लग्न साधन करना हो उस समय का प्रथम राश्यादि स्पष्टसूर्य बना लो। फिर सूर्य की राशि, अंश प्रमाण लग्नसारणी के कोष्ठक में इष्ट घटी पल युक्त करना, उससे अल्प कोष्ठक के राशि अंश लेना; राशि अंश के नीचे स्पष्ट सूर्य की कला विकला युक्त करना। तदनन्तर इष्टयुक्त किये हुए कोष्ठक और अल्पकोष्ठक का अन्तर करना, जो शेष बचे उसमें अल्प कोष्ठक और उसके आगे के (ऐष्य) कोष्ठक का अन्तर करके भाग देना, लब्ध जो अंश कला विकला फल आवे वह प्रथम आये हुए राश्यादि में युक्त करने से सूक्ष्म-[illegible] होता है।

श्री संवत् २०१२ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

केतक्यहर्गणो मासारम्भे ३५४ (मेषार्ककालेऽयनांशाः २३।१३।१)

मासः	ति.	वा.	रविः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
चैत्र-शुक्लपक्षः	१	शु.	११।१०।२३।५६	०।२५।१४।२१	१०।१६।२३।२४	२।२६।४५।४३	१०।०।२२।५०	६।२७।३१।३७	८।७।४७।२२	३।०।१८।३७	६।४।२०।४७
	३	श.	११।११।२३।१७	०।२५।५५।३०	१०।१७।५१।४	२।२६।४७।१७	१०।१।३२।३१	६।२७।२९।१३	८।७।४४।११	३।०।१८।२९	६।४।१९।२०
	४	र.	११।१२।२२।३८	०।२६।३६।४६	१०।१९।२०।३२	२।२६।४८।५९	१०।२।४३।२१	६।२७।२६।४७	८।७।४१।००	३।०।१८।४	६।४।१८।४९
	५	चं.	११।१३।२१।५७	०।२७।१८।२	१०।२०।५१।२०	२।२६।५०।५३	१०।३।५४।१४	६।२७।२४।१६	८।७।३७।४८	३।०।१७।४४	६।४।१७।१८
	६	मं.	११।१४।२१।१४	०।२७।५९।१४	१०।२२।२३।३२	२।२६।५२।५९	१०।५।५।९	६।२७।२१।४१	८।७।३४।३६	३।०।१७।२८	६।४।१५।४७
	७	बु.	११।१५।२०।२९	०।२८।४०।२३	१०।२३।५७।४	२।२६।५५।१७	१०।६।१६।७	६।२७।१९।०	८।७।३१।२४	३।०।१७।१७	६।४।१४।१५
	८	गु.	११।१६।१९।४२	०।२९।२१।३०	१०।२५।३२।१६	२।२६।५७।४७	१०।७।२७।७	६।२७।१६।१४	८।७।२८।१३	३।०।१७।९	६।४।१२।४३
	९	शु.	११।१७।१८।५३	१।०।२।३२	१०।२७।८।१८	२।२७।०।२९	१०।८।३८।१०	६।२७।१३।२४	८।७।२५।३	३।०।१७।६	६।४।११।१०
	१०	श.	११।१८।१८।२	१।०।४३।३२	१०।२८।४५।४४	२।२७।३।२२	१०।९।४९।१५	६।२७।१०।३०	८।७।२१।५२	३।०।१७।७	६।४।९।३७
	११	र.	११।१९।१७।१०	१।१।२४।२९	११।०।२५।१	२।२७।६।२९	१०।११।०।२२	६।२७।७।३०	८।७।१८।४२	३।०।१७।१३	६।४।८।२
	१२	चं.	११।२०।१६।१६	१।२।५।२०	११।२।६।२२	२।२७।९।४७	१०।१२।११।३३	६।२७।४।२६	८।७।१५।३१	३।०।१७।२२	६।४।६।२७
	१३	मं.	११।२१।१५।१९	१।२।४६।९	११।३।४९।४	२।२७।१३।१७	१०।१३।२२।४५	६।२७।१।१७	८।७।१२।२१	३।०।१७।३५	६।४।४।५२
	१४	बु.	११।२२।१४।२०	१।३।२६।५६	११।५।३३।८	२।२७।१६।५९	१०।१४।३३।५९	६।२६।५८।४	८।७।९।१०	३।०।१७।५२	६।४।३।१७
	१५	गु.	११।२३।१३।१९	१।४।७।४०	११।७।१८।३६	२।२७।२०।५३	१०।१५।४५।१५	६।२६।५४।४४	८।७।५।५९	३।०।१८।१५	६।४।१।४१
वैशाख-कृष्णपक्षः	१	शु.	११।२४।१२।१६	१।४।४८।२२	११।९।५।२६	२।२७।२४।५९	१०।१६।५६।३६	६।२६।५१।२१	८।७।२।४८	३।०।१८।४१	६।४।०।५
	२	श.	११।२५।११।११	१।५।२८।५९	११।१०।५३।३६	२।२७।२९।१७	१०।१८।७।५६	६।२६।४७।५३	८।६।५९।३७	३।०।१९।११	६।३।५८।२८
	३	र.	११।२६।१०।४	१।६।९।३२	११।१२।४३।१०	२।२७।३३।४७	१०।१९।१९।२०	६।२६।४४।१९	८।६।५६।२७	३।०।१९।४५	६।३।५६।५१
	४	चं.	११।२७।८।५५	१।६।४९।५९	११।१४।३४।५	२।२७।३८।३१	१०।२०।३०।४७	६।२६।४०।४१	८।६।५३।१६	३।०।२०।२४	६।३।५५।१२
	५	मं.	११।२८।७।४५	१।७।३०।३४	११।१६।२६।२९	२।२७।४३।१६	१०।२१।४२।१६	६।२६।३७।२	८।६।५०।६	३।०।२०।५९	६।३।५३।३२
	६	बु.	११।२९।६।३३	१।८।११।६	११।१८।२०।२४	२।२७।४८।१०	१०।२२।५३।४६	६।२६।३३।२१	८।६।४६।५५	३।०।२१।३८	६।३।५१।५३
	७	गु.	०।०।५।१८	१।८।५१।३६	११।२०।१५।५१	२।२७।५३।१४	१०।२४।५।१८	६।२६।२९।३८	८।६।४३।४४	३।०।२२।१९	६।३।५०।१४
	८	शु.	०।१।४।१	१।९।३२।४	११।२२।१२।५०	२।२७।५८।२६	१०।२५।१६।५२	६।२६।२५।५१	८।६।४०।३४	३।०।२३।३	६।३।४८।३५
	९	श.	०।२।२।४२	१।१०।१२।३१	११।२४।११।२०	२।२८।३।४७	१०।२६।२८।२८	६।२६।२२।०	८।६।३७।२३	३।०।२३।४८	६।३।४६।५६
	१०	र.	०।३।१।२१	१।१०।५२।५६	११।२६।११।२२	२।२८।९।१८	१०।२७।४०।४	६।२६।१८।७	८।६।३४।१२	३।०।२४।३८	६।३।४५।१७
	११	चं.	०।३।५९।५८	१।११।३३।१९	११।२८।१२।५६	२।२८।१४।५७	१०।२८।५१।४२	६।२६।१४।१२	८।६।३१।१	३।०।२५।२८	६।३।४३।३८
	१२	मं.	०।४।५८।३३	१।१२।१३।४१	०।०।१६।१	२।२८।२०।४६	११।०।३।२२	६।२६।१०।१६	८।६।२७।५१	३।०।२६।२४	६।३।४२।०
	१३	बु.	०।५।५७।६	१।१२।५४।१	०।२।२०।३२	२।२८।२६।४३	११।१।१५।३	६।२६।६।१५	८।६।२४।४०	३।०।२७।२०	६।३।४०।२१
	१४	गु.	०।६।५५।३७	१।१३।३४।२९	०।४।२५।५७	२।२८।३२।५०	११।२।२६।४६	६।२६।२।११	८।६।२१।२९	३।०।२८।२०	६।३।३८।४३
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११।३।[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री संवत् २०१२ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

मासारम्भे केतक्यहर्गणः ३८३

मासः	ति.	वा.	रविः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
वैशाख-शुक्लपक्षः	१	श.	०। ८।५२।३३	१।१४।५४।५०	०। ८।३९।२५	२।२८।४५।३०	११। ४।५०।१८	६।२५।५३।५५	८।६।१५। ८	३।०।३०।२७	६।३।३५।२७
	२	र.	०। ९।५०।५९	१।१५।३५। ३	०।१०।४७।३०	२।२८।५२। ४	११। ६। २। ६	६।२५।४९।४३	८।६।११।५७	३।०।३१।३५	६।३।३३।४९
	३	चं.	०।१०।४९।२२	१।१६।१५।१४	०।१२।५६।२७	२।२८।५८।४६	११। ७।१३।५६	६।२५।४५।२९	८।६। ८।४७	३।०।३२।४५	६।३।३२।११
	४	मं.	०।११।४७।४३	१।१६।५५।२३	०।१५। ६।१८	२।२९। ५।३८	११। ८।२५।४८	६।२५।४२।११	८।६। ५।३६	३।०।३३।५७	६।३।३०।३३
	५	बु.	०।१२।४६। १	१।१७।३५।३१	०।१७।१७। २	२।२९।१२।४०	११। ९।३७।४१	६।२५।३६।५०	८।६। २।२६	३।०।३५।१३	६।३।२८।५५
	७	गु.	०।१३।४४।२०	१।१८।१५।४०	०।१९।२८। ७	२।२९।१९।५१	११।१०।४९।३४	६।२५।३२।३१	८।५।५९।१५	३।०।३६।३९	६।३।२७।१७
	८	शु.	०।१४।४२।३८	१।१८।५५।४८	०।२१।३७।३५	२।२९।२७। ९	११।१२। १।२८	६।२५।२८।११	८।५।५६। ४	३।०।३८। ७	६।३।२५।४०
	९	श.	०।१५।४०।५४	१।१९।३५।५५	०।२३।४५।२७	२।२९।३४।३३	११।१३।१३।२२	६।२५।२३।४९	८।५।५२।५३	३।०।३९।३७	६।३।२४। ३
	१०	र.	०।१६।३९। ८	१।२०।१६। ०	०।२५।५१।४३	२।२९।४२। ६	११।१४।२५।१९	६।२५।१९।२७	८।५।४९।४३	३।०।४१।१०	६।३।२२।२८
	११	चं.	०।१७।३७।२०	१।२०।५६। २	०।२७।५६।३२	२।२९।४९।४५	११।१५।३७।१७	६।२५।१५। ४	८।५।४६।३२	३।०।४२।४५	६।३।२०।५६
	१२	मं.	०।१८।३५।३०	१।२१।३६। ०	०।२९।५९।२७	२।२९।५७।३१	११।१६।४९।१६	६।२५।१०।३९	८।५।४३।२२	३।०।४४।२३	६।३।१९।१८
	१३	बु.	०।१९।३३।३८	१।२२।१५।५७	१। २। १।२८	३। ०। ५।२५	११।१८। १।१७	६।२५। ६।१२	८।५।४०।११	३।०।४६। ३	६।३।१७।४०
	१४	गु.	०।२०।३१।४५	१।२२।५५।५२	१। ४। ०।४७	३। ०।१३।२६	११।१९।१३।१९	६।२५। १।४४	८।५।३७। १	३।०।४७।४६	६।३।१६।१२
	१५	शु.	०।२१।२९।५०	१।२३।३५।४५	१। ५।५७।२५	३। ०।२१।३४	११।२०।२५।२२	६।२४।५७।१५	८।५।३३।५०	३।०।४९।२१	६।३।१४।३७
ज्येष्ठ-कृष्णपक्षः	१	श.	०।२२।२७।५३	१।२४।१५।३४	१। ७।५०।४६	३। ०।२९।४८	११।२१।३७।२७	६।२४।५२।४५	८।५।३०।४०	३।०।५१।१८	६।३।१३। ६
	२	र.	०।२३।२५।५४	१।२४।५५।२१	१। ९।४०।४९	३। ०।३८।१०	११।२२।४९।३२	६।२४।४८।१३	८।५।२७।२९	३।०।५३। ७	६।३।११।३५
	२	चं.	०।२४।२३।५८	१।२५।३५। ६	१।११।२७।३६	३। ०।४६।४०	११।२४। १।३९	६।२४।४३।४१	८।५।२४।१८	३।०।५५। ०	६।३।१०। ६
	३	मं.	०।२५।२२।५१	१।२६।१४।५०	१।१३।११। ६	३। ०।५५।१८	११।२५।१३।४८	६।२४।३९। ७	८।५।२१। ८	३।०।५६।५५	६।३। ८।३४
	४	बु.	०।२६।१९।४७	१।२६।५४।३०	१।१४।५१।१८	३। १। ४। ०	११।२६।२५।५७	६।२४।३४।३३	८।५।१७।५७	३।०।५८।५२	६।३। ७। ६
	५	गु.	०।२७।१७।४१	१।२७।३४। ८	१।१६।२८।१४	३। १।१२।५२	११।२७।३८। ८	६।२४।२९।५७	८।५।१४।४६	३।१। ०।५१	६।३। ५।३८
	६	शु.	०।२८।१५।३४	१।२८।१३।४४	१।१८। १।५२	३। १।२१।५०	११।२८।५०।२०	६।२४।२५।१९	८।५।११।३६	३।१। २।५३	६।३। ४।१२
	७	श.	०।२९।१३।२६	१।२८।५३।२५	१।१९।३२।२३	३। १।३०।५८	०। ०। २।३६	६।२४।२०।४८	८।५। ८।२५	३।१। ४।५९	६।३। २।४३
	८	र.	१। ०।११।१६	१।२९।३३। ३	१।२०।५९। ८	३। १।४०।११	०। १।१४।५३	६।२४।१६।१९	८।५। ५।१५	३।१। ७।१०	६।३। १।१६
	९	चं.	१। १। ९। ५	२। ०।१२।३९	१।२२।२२। ७	३। १।४९।३०	०। २।२७।१०	६।२४।११।५१	८।५। २। ४	३।१। ९।२१	६।२।५९।५१
	१०	मं.	१। २। ६।५३	२। ०।५२।१४	१।२३।४१।२०	३। १।५८।५६	०। ३।३९।३०	६।२४। ७।२५	८।४।५८।५३	३।१।११।३७	६।२।५८।२६
	११	बु.	१। ३। ४।४०	२। १।३२।४८	१।२४।५६।४८	३। २। ८।२७	०। ४।५१।५०	६।२४। ३। ०	८।४।५५।४२	३।१।१३।५३	६।२।५७। ३
	१२	गु.	१। ४। २।२६	२। २।११।१९	१।२६। ८।३०	३। २।१८। ३	०। ६। ४।११	६।२३।५८।३७	८।४।५२।३१	३।१।१६।१४	६।२।५५।४२
	१३	शु.	१। ५। ०।१०	२। २।५०।४८	१।२७।१६।२६	३। २।२७।४५	०। ७।१६।३२	६।२३।५४।१६	८।४।४९।२१	३।१।१८।३५	६।२।५४।२१
	३०	श.	१। ५।५७।५३	२। ३।३०।१४	१।२८।२०।३८	३। २।३७।३४	०। ८।२८।५५	६।२३।४९।५५	८।४।४६।१०	३।१।२१। ०	६।२।५३। २

श्रीसंवत् २०१२ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

मासारम्भे केतक्यहर्गणः ४१२

मासः	ति.	वा.	रविः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
ज्येष्ठ-शुक्लपक्षः	१	र.	१। ६।५५।३५	२। ४। ९।४०	१।२९।१८।३५	३। २।४७।२९	०। ९।४१।१८	६।२३।४५।३६	८। ४।४२।५९	३। १।२३।२७	६। २।५१।४४
	२	चं.	१। ७।५३।१५	२। ४।४९। ३	२। ०।१२।३७	३। २।५७।२९	०।१०।५३।४३	६।२३।४१।१८	८। ४।३९।४९	३। १।२५।५६	६। २।५०।२७
	३	मं.	१। ८।५०।५४	२। ५।२८।२४	२। १। २।४३	३। ३। ७।३५	०।१२। ६। ८	६।२३।३७। २	८। ४।३६।३८	३। १।२८।२७	६। २।४९।१२
	४	बु.	१। ९।४८।३२	२। ६। ७।४४	२। १।४८।५४	३। ३।१७।४६	०।१३।१८।३४	६।२३।३२।४७	८। ४।३३।२८	३। १।३१। १	६। २।४७।५८
	५	गु.	१।१०।४६। ८	२। ६।४७। ३	२। २।३१।१०	३। ३।२८। ४	०।१४।३१। १	६।२३।२८।३४	८। ४।३०।१७	३। १।३३।३३	६। २।४६।४५
	६	शु.	१।११।४३।४३	२। ७।२६।१९	२। ३। ९।२९	३। ३।३८।२७	०।१५।४३।२९	६।२३।२४।२२	८। ४।२७। ६	३। १।३६।१६	६। २।४५।३५
	७	श.	१।१२।४१।१७	२। ८। ५।३३	२। ३।४३।५३	३। ३।४८।५६	०।१६।५५।५७	६।२३।२०।११	८। ४।२३।५५	३। १।३८।५७	६। २।४४।२५
	८	र.	१।१३।३८।५०	२। ८।४४।४६	२। ४।१४।२४	३। ३।५९।३१	०।१८। ८।२८	६।२३।१६। १	८। ४।२०।४४	३। १।४१।४२	६। २।४३।१६
	९	चं.	१।१४।३६।२१	२। ९।२४। ०	२। ४।३७।२४	३। ४।१०। ७	०।१९।२१। ४	६।२३।१२। ०	८। ४।१७।३४	३। १।४४।२८	६। २।४२। ९
	१०	मं.	१।१५।३३।५२	२।१०। ३।१३	२। ४।५५।५१	३। ४।२०।४७	०।२०।३३।४०	६।२३। ८। ३	८। ४।१४।२३	३। १।४७।१५	६। २।४१। २
	११	बु.	१।१६।३१।२२	२।१०।४२।२५	२। ५। ९।४४	३। ४।३१।३१	०।२१।४६।१६	६।२३। ४। ८	८। ४।११।१२	३। १।५०। ४	६। २।३९।५७
	१२	गु.	१।१७।२८।५१	२।११।२१।३६	२। ५।१९। ५	३। ४।४२।२१	०।२२।५८।५३	६।२३। ०।१५	८। ४। ८। १	३। १।५२।५५	६। २।३८।५३
	१३	शु.	१।१८।२६।१९	२।१२। ०।४६	२। ५।२३।५१	३। ४।५३।१५	०।२४।११।३१	६।२२।५६।२५	८। ४। ४।५०	३। १।५५।४६	६। २।३७।५१
	१४	श.	१।१९।२३।४६	२।१२।३९।५३	२। ५।२४। ७	३। ५। ४।१५	०।२५।२४।१०	६।२२।५२।३९	८। ४। १।४०	३। १।५८।४१	६। २।३६।५०
	१५	र.	१।२०।२१।१३	२।१३।१८।५८	२। ५।१९।४७	३। ५।१५।१९	०।२६।३६।४९	६।२२।४८।५६	८। ३।५८।२९	३। २। १।३६	६। २।३५।५१
आषाढ़-कृष्णपक्षः	१	चं.	१।२१।१८।३८	२।१३।५८। १	२। ५।१०।५५	३। ५।२६।२८	०।२७।४९।३०	६।२२।४५।१४	८। ३।५५।१८	३। २। ४।३४	६। २।३४।५२
	२	मं.	१।२२।१६। ३	२।१४।३७। ३	२। ४।५७।२९	३। ५।३७।४२	०।२९। २।११	६।२२।४१।३१	८। ३।५२। ७	३। २। ७।३३	६। २।३३।५६
	३	बु.	१।२३।१३।२६	२।१५।१६। ३	२। ४।४१।२४	३। ५।४९। १	१। ०।१४।५४	६।२२।३७।५९	८। ३।४८।५६	३। २।१०।३३	६। २।३३। १
	४	गु.	१।२४।१०।४९	२।१५।५५। १	२। ४।२२।४१	३। ६। ०।२५	१। १।२७।३७	६।२२।३४।२७	८। ३।४५।४६	३। २।१३।३५	६। २।३२। ८
	५	शु.	१।२५। ८।११	२।१६।३३।५९	२। ४। १।१९	३। ६।११।५३	१। २।४०।२१	६।२२।३०।५७	८। ३।४२।३५	३। २।१६।३९	६। २।३१।१५
	६	श.	१।२६। ५।३२	२।१७।१२।५५	२। ३।३७।१८	३। ६।२३।२५	१। ३।५३। ६	६।२२।२७।२९	८। ३।३९।२४	३। २।१९।४३	६। २।३०।२४
	७	र.	१।२७। २।५२	२।१७।५१।४९	२। ३।१०।३८	३। ६।३५। ३	१। ५। ५।५२	६।२२।२४। ५	८। ३।३६।१३	३। २।२२।५१	६। २।२९।३५
	८	चं.	१।२८। ०।११	२।१८।३०।४१	२। २।४१।२०	३। ६।४६।४५	१। ६।१८।३८	६।२२।२०।४३	८। ३।३३। २	३। २।२५।५९	६। २।२८।४८
	९	मं.	१।२८।५७।२९	२।१९। ९।३२	२। २। ९।२२	३। ६।५८।३४	१। ७।३१।२६	६।२२।१७।२४	८। ३।२९।५२	३। २।२९।१०	६। २।२८। १
	१०	बु.	१।२९।५४।४८	२।१९।४८।२४	२। १।३५।४६	३। ७।१०।२१	१। ८।४४।१८	६।२२।१४।१९	८। ३।२६।४१	३। २।३२।२०	६। २।२७।१६
	११	गु.	२। ०।५२। ६	२।२०।२७।१६	२। १। ३। ७	३। ७।२२।११	१। ९।५७।१२	६।२२।११।२०	८। ३।२३।३०	३। २।३५।३०	६। २।२६।३३
	१२	शु.	२। १।४९।२४	२।२१। ६। ७	२। ०।३१।२६	३। ७।३४। ३	१।११।१०। ७	६।२२। ८।२५	८। ३।२०।१९	३। २।३८।४२	६। २।२५।५२
	१३	श.	२। २।४६।४१	२।२१।४४।५७	२। ०। ०।४३	३। ७।४५।५९	१।१२।२३। ३	६।२२। ५।३५	८। ३।१७। ८	३। २।४१।५६	६। २।२५।१४
	१४	र.	२। ३।४३।५८	२।२२।२३।४६	१।२९।३०।५८	३। ७।५७।५८	१।१३।३६। २	६।२२। २।४८	८। ३।१३।५८	३। २।४५।१२	६। २।२४।३८
	३०	चं.	२। ४।४१।१४	२।२३। २।३४	१।२९। २।११	३। ८।[illegible]	१।१४।४८।५८	६।२२। ०। ६	८। ३।१०।४७	३। [illegible]	६। [illegible]

श्रीसंवत् २०१२ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

मासारम्भे केतक्यहर्गणः ४४२

मासः	ति.	वा.	रविः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
आषाढ-शुक्लपक्षः											
	१	मं.	२। ५।३८।३०	२।२३।४१।२१	१।२८।३४।२२	३। ८।२२। ४	१।१६। १।५८	६।२१।५७।२८	८। ३। ७।३६	३। २।५१।४६	६। २।२३।३०
	३	बु.	२। ६।३५।४५	२।२४।२०। ६	१।२८। ७।३०	३। ८।३४।१२	१।१७।१५। ०	६।२१।५४।५४	८। ३। ४।२६	३। २।५५। ५	६। २।२२।५९
	४	गु.	२। ७।३३। ०	२।२४।५८।४९	१।२७।४३।५५	३। ८।४६।२२	१।१८।२८। ३	६।२१।५२।२४	८। ३। १।१५	३। २।५८।५६	६। २।२२।३०
	५	शु.	२। ८।३०।१५	२।२५।३७।३१	१।२७।२४।२७	३। ८।५८।३६	१।१९।४१। ७	६।२१।५०। ०	८। २।५८। ५	३। ३। १।४९	६। २।२२। ३
	६	श.	२। ९।२७।२९	२।२६।१६।१३	१।२७। ९। ५	३। ९।१०।५४	१।२०।५४।१३	६।२१।४७।३८	८। २।५४।५४	३। ३। ५।१२	६। २।२१।३८
	७	र.	२।१०।२४।४३	२।२६।५४।५४	१।२६।५७।५०	३। ९।२३।१५	१।२२। ७।१९	६।२१।४५।२३	८। २।५१।४३	३। ३। ८।३८	६। २।२१।१४
	८	चं.	२।११।२१।५७	२।२७।३३।३५	१।२६।५०।४०	३। ९।३५।४०	१।२३।२०।२८	६।२१।४३।११	८। २।४८।३२	३। ३।१२। ५	६। २।२०।५३
	९	मं.	२।१२।१९। ९	२।२८।१२।१५	१।२६।४७।३७	३। ९।४८। ८	१।२४।३३।३७	६।२१।४१। ४	८। २।४५।२१	३। ३।१५।३३	६। २।२०।३३
	१०	बु.	२।१३।१६।२१	२।२८।५०।५३	१।२६।४८।४०	३।१०। ०।३६	१।२५।४६।४८	६।२१।३९। १	८। २।४२।१०	३। ३।१९। ३	६। २।२०।१५
	११	गु.	२।१४।१३।३३	२।२९।२९।३१	१।२६।५३।४९	३।१०।१३। ८	१।२७। ०। ०	६।२१।३७। १	८। २।३९। ०	३। ३।२२।३४	६। २।१९।५९
	१२	शु.	२।१५।१०।४६	३। ०। ८। ८	१।२७। ५।३२	३।१०।२५।४२	१।२८।१३।१०	६।२१।३५।१६	८। २।३५।४९	३। ३।२६। ७	६। २।१९।४७
	१३	श.	२।१६। ७।५९	३। ०।४६।४३	१।२७।२२।२२	३।१०।३८।१७	१।२९।२६।२१	६।२१।३३।३६	८। २।३२।३८	३। ३।२९।४०	६। २।१९।३६
	१३	र.	२।१७। ५।१२	३। १।२५।१७	१।२७।४४।२०	३।१०।५०।५४	२। ०।३९।३३	६।२१।३२। ०	८। २।२९।२७	३। ३।३३।१३	६। २।१९।२७
	१४	चं.	२।१८। २।२५	३। २। ३।४९	१।२८।११।२४	३।११। ३।३४	२। १।५२।४६	६।२१।३०।३०	८। २।२६।१६	३। ३।३६।४८	६। २।१९।१९
	१५	मं.	२।१८।५९।३८	३। २।४२।२०	१।२८।४३।३६	३।११।१६।१६	२। ३। ६। १	६।२१।२९। ४	८। २।२३। ५	३। ३।४०।२२	६। २।१९।१४
श्रावण-कृष्णपक्षः											
	१	बु.	२।१९।५६।५१	३। ३।२०।५१	१।२९।२०।५४	३।११।२८।५९	२। ४।१९।१७	६।२१।२७।४४	८। २।१९।५४	३। ३।४३।५६	६। २।१९।१०
	२	गु.	२।२०।५४। ४	३। ३।५९।२०	२। ०। ३।२०	३।११।४१।४४	२। ५।३२।३५	६।२१।२६।३१	८। २।१६।४३	३। ३।४७।३१	६। २।१९। ८
	३	शु.	२।२१।५१।१८	३। ४।३७।४८	२। ०।५०।५३	३।११।५४।३२	२। ६।४५।५४	६।२१।२५।२६	८। २।१३।३३	३। ३।५१। ७	६। २।१९। ८
	४	श.	२।२२।४८।३२	३। ५।१६।१५	२। १।४३।३३	३।१२। ७।२१	२। ७।५९।१५	६।२१।२४।२४	८। २।१०।२२	३। ३।५४।४१	६। २।१९। ९
	५	र.	२।२३।४५।४५	३। ५।५४।४१	२। २।४०।३४	३।१२।२०।१३	२। ९।१२।३६	६।२१।२३।२७	८। २। ७।११	३। ३।५८।१७	६। २।१९।१३
	६	चं.	२।२४।४२।५८	३। ६।३३। ५	२। ३।४०।५७	३।१२।३३। ७	२।१०।२५।५९	६।२१।२२।३६	८। २। ४। ०	३। ४। १।५३	६। २।१९।१९
	७	मं.	२।२५।४०।११	३। ७।११।२७	२। ४।४७।४२	३।१२।४६। २	२।११।३९।२४	६।२१।२१।५०	८। २। ०।४९	३। ४। ५।३०	६। २।१९।२७
	८	बु.	२।२६।३७।२४	३। ७।४९।४८	२। ५।५७।५१	३।१२।५८।५९	२।१२।५२।५१	६।२१।२१।१०	८। १।५७।३८	३। ४। ९। ६	६। २।१९।३८
	९	गु.	२।२७।३४।३७	३। ८।२८। ८	२। ७।१२।१६	३।१३।११।५९	२।१४। ६।१८	६।२१।२०।३५	८। १।५४।२८	३। ४।१२।४३	६। २।१९।४९
	११	शु.	२।२८।३१।५०	३। ९। ६।२८	२। ८।३१। ३	३।१३।२५। १	२।१५।१९।४७	६।२१।२०। ६	८। १।५१।१७	३। ४।१६।२०	६। २।२०। २
	१२	श.	२।२९।२९। ४	३। ९।४४।४६	२। ९।५४।१८	३।१३।३८। ६	२।१६।३३।१८	६।२१।१९।४१	८। १।४८। ६	३। ४।१९।५९	६। २।२०।१७
	१३	र.	३। ०।२६।१९	३।१०।२३। ६	२।११।२१।२१	३।१३।५१।१०	२।१७।४६।५२	६।२१।१९।२५	८। १।४४।५५	३। ४।२३।४१	६। २।२०।३३
	१४	चं.	३। १।२३।३५	३।११। १।२४	२।१२।५२। ३	३।१४। ४।१५	२।१९। ०।२७	६।२१।१८।५६	८। १।४१।४४	३। ४।२७।२३	६। २।२०।५१
	३०	मं.	३। २।२०।५१	३।११।३९।५४	२।१४।२६।२३	३।१४।१[illegible]।२०	२।२०।१४। ४	६।२१।१८।४४	८। १।३८।३४	३। ४।३१। ५	६। २।२१।११

श्री संवत् २०१२ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः।

मासारम्भे केतक्यहर्गणः ४७१

मासः	ति.	वा.	रविः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
श्रावण-शुक्लपक्षः	१	बु.	३। ३।१८। ८	३।१२।१८।१९	२।१६। ४।२३	३।१४।३०।२६	२।२१।२७।४१	६।२१।१८।३९	८। १।३५।२३	३। ४।३४।४७	६। २।२१।३३
	२	गु.	३। ४।१५।२५	३।१२।५६।४१	२।१७।४५।५०	३।१४।४३।३३	२।२२।४१।२१	६।२१।१८।४१	८। १।३३।१२	३। ४।३८।२८	६। २।२१।५७
	३	शु.	३। ५।१२।४३	३।१३।३५। १	२।१९।३१।१७	३।१४।५६।४१	२।२३।५५। १	६।२१।१८।५०	८। १।२९। १	३। ४।४२। ९	६। २।२२।२३
	४	श.	३। ६।१०। २	३।१४।१३।२२	२।२१।२०।१२	३।१५। ९।४९	२।२५। ८।४३	६।२१।१९। ७	८। १।२५।५०	३। ४।४५।५०	६। २।२२।५१
	५	र.	३। ७। ७।२१	३।१४।५१।४०	२।२३।१८।४७	३।१५।२२।५९	२।२६।२२।२६	६।२१।१९।३०	८। १।२२।३९	३। ४।४९।३०	६। २।२३।२०
	६	चं.	३। ८। ४।४१	३।१५।२९।५९	२।२५। ८।४६	३।१५।३६। ९	२।२७।३६।११	६।२१।२०। १	८। १।१९।२८	३। ४।५३।१२	६। २।२३।५२
	७	मं.	३। ९। २। १	३।१६। ८।१८	२।२७। ६।२४	३।१५।४९।२१	२।२८।४९।५६	६।२१।२०।३८	८। १।१६।१७	३। ४।५६।४९	६। २।२४।२५
	८	बु.	३। ९।५९।२१	३।१६।४६।३५	२।२९। ५।४२	३।१६। २।३३	३। ०। ३।४३	६।२१।२१।२३	८। १।१३। ६	३। ५। ०।२६	६। २।२५। ०
	९	गु.	३।१०।५६।४२	३।१७।२४।५१	३। १। ६।४०	३।१६।१५।४६	३। १।१७।३१	६।२१।२२।१५	८। १। ८।५६	३। ५। ४। ७	६। २।२५।३७
	१०	शु.	३।११।५४। ३	३।१८। ३। ७	३। ३। ९।१७	३।१६।२९। ०	३। २।३१।२१	६।२१।२३।१४	८। १। ६।४५	३। ५। ७।४७	६। २।२६।१६
	११	श.	३।१२।५१।२५	३।१८।४१।२२	३। ५।१३।३४	३।१६।४२।१५	३। ३।४५।१२	६।२१।२४।२०	८। १। ३।३४	३। ५।११।२५	६। २।२६।५७
	१२	र.	३।१३।४८।४८	३।१९।१९।३७	३। ७।१९।३१	३।१६।५५।३०	३। ४।५९। ५	६।२१।२५।३२	८। १। ०।२३	३। ५।१५। ३	६। २।२७।४०
	१३	चं.	३।१४।४६।१२	३।१९।५७।५०	३। ९।२७। ७	३।१७। ८।४६	३। ६।१२।५८	६।२१।२६।५३	८। ०।५७।१२	३। ५।१८।४०	६। २।२८।२६
	१४	मं.	३।१५।४३।३८	३।२०।३६। ४	३।११।३४। ७	३।१७।२२। २	३। ७।२६।५१	६।२१।२८। ८	८। ०।५४। १	३। ५।२२।२१	६। २।२९।१४
	१५	बु.	३।१६।४१। ५	३।२१।१४।१८	३।१३।४०।२२	३।१७।३५।१६	३। ८।४०।४५	६।२१।२९।२८	८। ०।५०।५०	३। ५।२५।२८	६। २।३०। ३
प्र. भाद्र-कृष्णपक्षः	१	गु.	३।१७।३८।३२	३।२१।५२।३२	३।१५।४५।५१	३।१७।४८।३०	३। ९।५४।३९	६।२१।३०।५४	८। ०।४७।४१	३। ५।२९।३३	६। २।३०।५४
	२	शु.	३।१८।३६। १	३।२२।३०।४५	३।१७।५०।३८	३।१८। १।४३	३।११। ८।३५	६।२१।३२।२७	८। ०।४४।३०	३। ५।३३।५८	६। २।३१।४७
	३	श.	३।१९।३३।३०	३।२३। ८।५८	३।१९।५४।३०	३।१८।१४।५७	३।१२।२२।३१	६।२१।३४। ८	८। ०।४१।१९	३। ५।३६।३८	६। २।३२।४२
	४	र.	३।२०।३१। १	३।२३।४७।१२	३।२१।५७।४६	३।१८।२८।१०	३।१३।३६।२९	६।२१।३५।५०	८। ०।३८। ९	३। ५।४०।१२	६। २।३३।३९
	५	चं.	३।२१।२८।३२	३।२४।२५।२६	३।२४। ०।१४	३।१८।४१।१३	३।१४।५०।२७	६।२१।३७।३८	८। ०।३४।५८	३। ५।४३।४६	६। २।३४।३८
	६	मं.	३।२२।२६। ५	३।२५। ३।४०	३।२६। १।५५	३।१८।५४।३६	३।१६। ४।२६	६।२१।३९।३६	८। ०।३१।४७	३। ५।४७।२०	६। २।३५।३८
	७	बु.	३।२३।२३।३८	३।२५।४१।५५	३।२८। १।२२	३।१९। ७।४८	३।१७।१८।२६	६।२१।४१।३८	८। ०।२८।३७	३। ५।५०।५३	६। २।३६।४१
	८	गु.	३।२४।२१।१२	३।२६।२०। ८	३।२९।५९।२९	३।१९।२१। ०	३।१८।३२।२७	६।२१।४३।४६	८। ०।२५।२४	३। ५।५४।२४	६। २।३७।४५
	९	शु.	३।२५।१८।४७	३।२६।५८।२१	४। १।५६।१६	३।१९।३४।१२	३।१९।४६।२८	६।२१।४६। ०	८। ०।२२।१३	३। ५।५७।५५	६। २।३८।५१
	१०	श.	३।२६।१६।२३	३।२७।३६।३३	४। ३।५१।४३	३।१९।४७।२३	३।२१। ०।३१	६।२१।४८।१९	८। ०।१९। २	३। ६। १।२५	६। २।३९।५९
	११	र.	३।२७।१४। ०	३।२८।१४।४५	४। ५।४५।५०	३।२०। ०।३५	३।२२।१४।३५	६।२१।५०।४५	८। ०।१५।५१	३। ६। ४।५५	६। २।४१।१०
	१२	चं.	३।२८।११।३८	३।२८।५२।५८	४। ७।३८।३७	३।२०।१३।४६	३।२३।२८।३९	६।२१।५३।१६	८। ०।१२।४०	३। ६। ८।२४	६। २।४२।२१
	१४	मं.	३।२९। ९।१७	३।२९।३१।११	४। ९।३०। ४	३।२०।२६।५७	३।२४।४२।४३	६।२१।५५।५३	८। ०। ९।२९	३। ६।११।५३	६। २।४३।३४
	३०	बु.	४। ०। ६।५७	४। ०। ९।२५	४।११।२०।१०	३।२०।४०। ८	३।२५।५६।४९	६।२१।५८।३७	८। ०। ६।१८	३। ६।१५।२२	६। २।४४।४९

श्रीसंवत् २०१२ रूपगड (शतद्रु), स्पष्टार्कोदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः।

मासारम्भे केतवयहर्गणः ५००

मासः	ति. वा.	रविः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
प्र. भाद्रपद-शुक्ल पक्षः	१ गु.	४। १। ४।४०	४। ०।४७।४१	४।१३। ८।४३	३।२०।५३।१६	३।२७।१०।५९	६।२२। १।२२	८। ०। ३। ७	३।६।१८।४८	६।२।४६। ४
	२ शु.	४। २। २।२४	४। १।२५।५७	४।१४।५५।५८	३।२१।६। २३	३।२८।२५।११	६।२२। ४।१२	७।२९।५९।५७	३।६।२२।१२	६।२।४७।२०
	३ श.	४। ३। ०।१०	४। २। ४।१३	४।१६।४१।५५	३।२१।१९।२८	३।२९।३९।२३	६।२२। ७। ८	७।२९।५६।४६	३।६।२५।३४	६।२।४८।३८
	४ र.	४। ३।५७।५७	४। २।४२।२८	४।१८।२६।३५	३।२१।३२।३३	४। ०।५३।३७	६।२२।१०। ८	७।२९।५३।३५	३।६।२८।५५	६।२।४९।५७
	५ चं.	४। ४।५५।४६	४। ३।२०।४३	४।२०। १।५६	३।२१।४५।३६	४। २। ७।५२	६।२२।१३।१४	७।२९।५०।२४	३।६।३२।१४	६।२।५१।१८
	६ मं.	४। ५।५३।३६	४। ३।५८।५७	४।२१।५२। ०	३।२१।५८।३७	४। ३।२२। ७	६।२२।१६।२४	७।२९।४७।१४	३।६।३५।३२	६।२।५२।४०
	७ बु.	४। ६।५१।२८	४। ४।३७।११	४।२३।३२।४६	३।२२।११।३८	४। ४।३६।२४	६।२२।१९।४०	७।२९।४४। ३	३।६।३८।४८	६।२।५४। ४
	८ गु.	४। ७।४९।२०	४। ५।१५।२५	४।२५।१२।१४	३।२२।२४।३६	४। ५।५०।४२	६।२२।२३। २	७।२९।४०।५२	३।६।४२। ४	६।२।५५।३०
	९ शु.	४। ८।४७।१४	४। ५।५३।३८	४।२६।५०।२६	३।२२।३७।३३	४। ७। ५। १	६।२२।२६।२९	७।२९।३७।४१	३।६।४५।१७	६।२।५६।५८
	१० श.	४। ९।४५। ९	४। ६।३१।५०	४।२८।२७।१६	३।२२।५०।३०	४। ८।१९।२०	६।२२।३०। ०	७।२९।३४।३०	३।६।४८।२९	६।२।५८।२७
	१० र.	४।१०।४३। ५	४। ७।१०। २	५। ०। २।४६	३।२३। ३।२५	४। ९।३३।४१	६।२२।३३।३७	७।२९।३१।१९	३।६।५१।३९	६।२।५९।५८
	११ चं.	४।११।४१। ६	४। ७।४८।१४	५। १।३६।५४	३।२३।१६।१९	४।१०।४८। ३	६।२२।३७।२०	७।२९।२८। ८	३।६।५४।४९	६।३। १।२९
	१२ मं.	४।१२।३९। ५	४। ८।२६।२५	५। ३। ९।४१	३।२३।२९।११	४।१२। २।२६	६।२२।४१। ८	७।२९।२४।५८	३।६।५७।५६	६।३। ३। २
	१३ बु.	४।१३।३७। ७	४। ९। ४।३६	५। ४।४१। ८	३।२३।४२। २	४।१३।१६।५०	६।२२।४५। ०	७।२९।२१।४७	३।७। १। ३	६।३। ४।३७
	१४ गु.	४।१४।३५।१०	४। ९।४२।४६	५। ६।११।१३	३।२३।५४।५१	४।१४।३१।१६	६।२२।४८।५८	७।२९।१८।३६	३।७। ४। ८	६।३। ६।१४
	१५ शु.	४।१५।३३।१५	४।१०।२०।५६	५। ७।३९।५८	३।२४। ७।४१	४।१५।४५।४३	६।२२।५३। २	७।२९।१५।२५	३।७। ७।१२	६।३। ७।५२
द्वि. भाद्रपद-कृष्ण-पक्षः	१ श.	४।१६।३१।२३	४।१०।५९। २	५। ९। ७। ३	३।२४।२०।२७	४।१७। ०।१२	६।२२।५७। २	७।२९।१२।१४	३।७।१०।१८	६।३। ९।३२
	२ र.	४।१७।२९।३३	४।११।३७। ८	५।१०।३२।५९	३।२४।३३। ९	४।१८।१४।४२	६।२३। १।१०	७।२९। ९। ३	३।७।१३।२०	६।३।११।१३
	३ चं.	४।१८।२७।४४	४।१२।१५।१४	५।११।५७।१२	३।२४।४५।४९	४।१९।२९।१२	६।२३। ५।२६	७।२९। ५।५२	३।७।१६।२०	६।३।१२।५६
	४ मं.	४।१९।२५।५६	४।१२।५३।२२	५।१३।२१।२५	३।२४।५८।२६	४।२०।४३।४२	६।२३। ९।४९	७।२९। २।४१	३।७।१९।१८	६।३।१४।४०
	५ बु.	४।२०।२४।१०	४।१३।३१।३०	५।१४।४३।५६	३।२५।११। ०	४।२१।५८।१२	६।२३।१४।१३	७।२८।५९।३१	३।७।२२।१४	६।३।१६।२५
	७ गु.	४।२१।२२।२५	४।१४। ९।३८	५।१६। ५।१७	३।२५।२३।३१	४।२३।१२।४४	६।२३।१८।४०	७।२८।५६।२०	३।७।२५। ८	६।३।१८।११
	८ शु.	४।२२।२०।४२	४।१४।४७।४६	५।१७।२५।३०	३।२५।३६। ०	४।२४।२७।१६	६।२३।२३।१२	७।२८।५३। ९	३।७।२८। ०	६।३।१९।५९
	९ श.	४।२३।१९। ०	४।१५।२५।५५	५।१८।४४।३५	३।२५।४८।२५	४।२५।४१।४९	६।२३।२७।५०	७।२८।४९।५८	३।७।३०।५०	६।३।२१।४७
	१० र.	४।२४।१७।२१	४।१६। ४। ४	५।१९।५७।४४	३।२६। ०।४८	४।२६।५६।२१	६।२३।३२।३१	७।२८।४६।४७	३।७।३३।४०	६।३।२३।३६
	११ चं.	४।२५।१५।४३	४।१६।४२।१४	५।२१। ९।१४	३।२६।१३। ८	४।२८।१०।५५	६।२३।३७।१८	७।२८।४३।३७	३।७।३६।२५	६।३।२५।२६
	१२ मं.	४।२६।१४। ७	४।१७।२०।२४	५।२२।१९। ८	३।२६।२५।२६	४।२९।२५।२९	६।२३।४२। ९	७।२८।४०।२६	३।७।३९। ८	६।३।२७।१८
	१३ बु.	४।२७।१२।३३	४।१७।५८।३४	५।२३।२७।२५	३।२६।३७।४०	५। ०।४०। ४	६।२३।४७। ५	७।२८।३७।१५	३।७।४१।४८	६।३।२९।१२
	१४ गु.	४।२८।११। ०	४।१८।३६।४५	५।२४।३४। ६	३।२६।४९।५२	५। १।५४।३९	६।२३।५२। ५	७।२८।३४। ४	३।७।४४।२५	६।३।३१। ७
	३० शु.	४।२९। ९।२९	४।१९।१४।५६	५।२५।३९।१०	३।२७। २। १	५। ३। ९।१५	६।२३।५७।१०	७।२८।३०।५४	३।७।४७। १	६।३।३३। २

श्रीसंवत् २०१२ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः।

मासारम्भे केतक्यहर्गणः ५३०

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
द्वि. भाद्रपद-शुक्लपक्षः	१	श.	५। ०। ८। ०	४।१९।५३। ७	५।२६।४२।३८	३।२७।१४। ६	५। ४।२३।५१	६।२४। २।१९	७।२८।२७।४३	३। ७।४९।३७	६। ३।३४।५९
	२	र.	५। १। ६।३३	४।२०।३१।१९	५।२७।४४।२८	३।२७।२६।१०	५। ५।३८।२८	६।२४। ७।३४	७।२८।२४।३२	३। ७।५२।१२	६। ३।३६।५८
	३	चं.	५। २। ५।१०	४।२१। ९।२७	५।२८।४३। ९	३।२७।३८। ९	५। ६।५३। ७	६।२४।१२।४९	७।२८।२१।२१	३। ७।५४।४५	६। ३।३८।५५
	४	मं.	५। ३। ३।४९	४।२१।४७।३४	५।२९।३८।३२	३।२७।५०। २	५। ८। ७।५१	६।२४।१८। ६	७।२८।१८।१०	३। ७।५७।१६	६। ३।४०।५४
	५	बु.	५। ४। २।२९	४।२२।२५।४२	६। ०।३०।३५	३।२८। १।५१	५। ९।२२।३५	६।२४।२३।२७	७।२८।१४।५९	३। ७।५९।४३	६। ३।४२।५३
	६	गु.	५। ५। १।११	४।२३। ३।५२	६। १।१९।१९	३।२८।१३।३६	५।१०।३७।१५	६।२४।२८।५०	७।२८।११।४९	३। ८। २। ७	६। ३।४४।५४
	७	शु.	५। ५।५९।५५	४।२३।४२। ३	६। २। ४।४४	३।२८।२५।१७	५।११।५१।५७	६।२४।३४।१७	७।२८। ८।३८	३। ८। ४।२८	६। ३।४६।५४
	८	श.	५। ६।५८।४१	४।२४।२०।१५	६। २।४६।५०	३।२८।३६।५४	५।१३। ६।३९	६।२४।३९।४६	७।२८। ५।२७	३। ८। ६।४६	६। ३।४८।५६
	९	र.	५। ७।५७।२८	४।२४।५८।२७	६। ३।२५।३६	३।२८।४८।२७	५।१४।२१।२१	६।२४।४५।१९	७।२८। २।१६	३। ८। ९। ०	६। ३।५०।५८
	१०	चं.	५। ८।५६।१८	४।२५।३६।४०	६। ४। १। ५	३।२८।५९।५६	५।१५।३६। ४	६।२४।५०।५६	७।२७।५९। ५	३। ८।११।१३	६। ३।५३। २
	११	मं.	५। ९।५५।१०	४।२६।१४।५४	६। ४।३३।२०	३।२९।११।२१	५।१६।५०।४६	६।२४।५६।३६	७।२७।५५।५५	३। ८।१३।२२	६। ३।५५। ५
	१२	बु.	५।१०।५४। ३	४।२६।५३।१०	६। ४।५७।११	३।२९।२२।४१	५।१८। ५।२९	६।२५। २।१८	७।२७।५२।४४	३। ८।१५।२९	६। ३।५७।१०
	१३	गु.	५।११।५३।५८	४।२७।३१।२६	६। ५।१५।५०	३।२९।३३।५७	५।१९।२०।१२	६।२५। ८। ४	७।२७।४९।३३	३। ८।१७।३२	६। ३।५९।१५
	१४	शु.	५।१२।५२।५५	४।२८। ९।४४	६। ५।२८। ५	३।२९।४५।१०	५।२०।३४।५५	६।२५।१३।५४	७।२७।४६।२२	३। ८।१९।३३	६। ४। १।२२
	१५	श.	५।१३।५०।५४	४।२८।४८। ३	६। ५।३४। ५	३।२९।५६।१९	५।२१।४९।३७	६।२५।१९।४८	७।२७।४३।११	३। ८।२१।३०	६। ४। ३।२८

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
आश्विन-कृष्णपक्षः	१	र.	५।१४।४९।५५	४।२९।२६।२२	६। ५।३३।४७	४। ०। ७।२३	५।२३। ४।२१	६।२५।२५।४४	७।२७।४०। ०	३। ८।२३।२५	६। ४। ५।३६
	२	चं.	५।१५।४८।५८	५। ०। ४।४३	६। ५।२७।११	४। ०।१८।२३	५।२४।१९। ५	६।२५।३१।४२	७।२७।३६।४९	३। ८।२५।१६	६। ४। ७।४४
	३	मं.	५।१६।४८। ३	५। ०।४३। ५	६। ५।१४।१७	४। ०।२९।२०	५।२५।३३।५०	६।२५।३७।४४	७।२७।३३।३८	३। ८।२७। ४	६। ४। ९।५४
	४	बु.	५।१७।४७।११	५। १।२१।२७	६। ४।५०।२३	४। ०।४०।१५	५।२६।४८।४३	६।२५।४३।५०	७।२७।३०।२७	३। ८।२८।४१	६। ४।१२। ५
	५	गु.	५।१८।४६।२१	५। १।५९।४९	६। ४।१९।२२	४। ०।५१। ३	५।२८। ३।३५	६।२५।४९।५९	७।२७।२७।१६	३। ८।३०।१८	६। ४।१४।१७
	६	शु.	५।१९।४५।३४	५। २।३८।११	६। ३।४१।१५	४। १। १।४५	५।२९।१८।२७	६।२५।५६।१०	७।२७।२४। ६	३। ८।३१।५३	६। ४।१६।२९
	७	श.	५।२०।४४।४९	५। ३।१६।३३	६। २।५६। २	४। १।१२।२१	६। ०।३३।२०	६।२६। २।२५	७।२७।२०।५५	३। ८।३३।२७	६। ४।१८।४१
	८	र.	५।२१।४४। ६	५। ३।५४।५५	६। २। ३।४३	४। १।२२।५१	६। १।४८।१३	६।२६। ८।४२	७।२७।१७।४४	३। ८।३४।५८	६। ४।२०।५२
	९	चं.	५।२२।४३।२५	५। ४।३३।१७	६। १। ४।१८	४। १।३३।१५	६। ३। ३। ५	६।२६।१५। १	७।२७।१४।३३	३। ८।३६।२८	६। ४।२३। ५
	११	मं.	५।२३।४२।४६	५। ५।११।३९	५।२९।५९।४७	४। १।४३।३३	६। ४।१७।५७	६।२६।२१।२२	७।२७।११।२२	३। ८।३७।५६	६। ४।२५।१८
	१२	बु.	५।२४।४२। ९	५। ५।५०। २	५।२८।४४।१०	४। १।५३।४६	६। ५।३२।४९	६।२६।२७।४७	७।२७। ८।११	३। ८।३९।२४	६। ४।२७।३२
	१३	गु.	५।२५।४१।३४	५। ६।२८।२४	५।२७।२८।१२	४। २। ३।५६	६। ६।४७।४१	६।२६।३४।१४	७।२७। ५। ०	३। ८।४०।४७	६। ४।२९।४५
	१४	शु.	५।२६।४१। ०	५। ७। ६।४७	५।२६।१६।५४	४। २।१३।५६	६। ८। २।३३	६।२६।४०।४४	७।२७। १।४९	३। ८।४२।१३	६। ४।३१।५९
	३०	श.	५।२७।४०।२७	५। ७।४५।१०	५।२५।१०।५६	४। २।२३।५०	६। ९।१७।२५	६।२६।४७।१६	७।२६।५८।३८	३। ८।४३।३७	६। ४।३४।१३

श्रीसंवत् २०१२ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

मासारम्भे केतक्यहर्गणः ५५९

मासः	ति.	वा.	रविः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
आश्विन-शुक्लपक्षः	१	र.	५।२८।३९।५६	५।८।२३।३३	५।२४।८।१७	४।२।३३।३५	६।१०।२२।१८	६।२६।५३।५३	७।२६।५५।२७	३।८।४४।५५	६।४।३६।२७
	२	चं.	५।२९।३९।२७	५।९।१।५६	५।२३।१०।५७	४।२।४३।२२	६।११।४७।११	६।२७।०।३१	७।२६।५२।१७	३।८।४६।१३	६।४।३८।४१
	३	मं.	६।०।३९।०	५।९।४०।१९	५।२२।१८।१६	४।२।५२।५८	६।१३।२।३	६।२७।७।१२	७।२६।४९।६	३।८।४७।३१	६।४।४०।५५
	४	बु.	६।१।३८।३५	५।१०।१८।४२	५।२१।३०।१५	४।३।२।२८	६।१४।१६।५५	६।२७।१३।५५	७।२६।४५।५५	३।८।४८।४७	६।४।४३।९
	५	गु.	६।२।३८।१४	५।१०।५७।७	५।२०।४६।५२	४।३।११।४९	६।१५।३१।४८	६।२७।२०।४२	७।२६।४२।४४	३।८।५०।२	६।४।४५।२५
	५	शु.	६।३।३७।५६	५।११।३५।३८	५।२०।२१।५८	४।३।२१।१४	६।१६।४६।४२	६।२७।२७।२६	७।२६।३९।३३	३।८।५१।२	६।४।४७।४१
	६	श.	६।४।३७।४०	५।१२।१४।१०	५।२०।७।३	४।३।३०।३१	६।१८।१।३६	६।२७।३४।११	७।२६।३६।२२	३।८।५१।५८	६।४।४९।५६
	७	र.	६।५।३७।२६	५।१२।५२।४१	५।२०।२।६	४।३।३९।४०	६।१९।१६।३०	६।२७।४०।५८	७।२६।३३।११	३।८।५२।५२	६।४।५२।११
	८	चं.	६।६।३७।१३	५।१३।३१।११	५।२०।७।८	४।३।४८।४२	६।२०।३१।२४	६।२७।४७।४५	७।२६।३०।०	३।८।५३।४३	६।४।५४।२५
	९	मं.	६।७।३७।३	५।१४।९।४२	५।२०।२२।८	४।३।५७।३६	६।२१।४६।१८	६।२७।५४।३५	७।२६।२६।४९	३।८।५४।३२	६।४।५६।४०
	१०	बु.	६।८।३६।५४	५।१४।४८।१२	५।२०।४७।७	४।४।६।२३	६।२३।१।१२	६।२८।१।२५	७।२६।२३।३८	३।८।५५।१८	६।४।५८।५४
	११	गु.	६।९।३६।४७	५।१५।२६।४२	५।२१।२२।४	४।४।१५।२	६।२४।१६।६	६।२८।८।१७	७।२६।२०।२८	३।८।५६।२	६।५।१।८
	१२	शु.	६।१०।३६।४१	५।१६।५।१३	५।२२।७।१	४।४।२३।३५	६।२५।३१।१	६।२८।१५।११	७।२६।१७।१७	३।८।५६।४२	६।५।३।२२
	१३	श.	६।११।३६।३८	५।१६।४३।४४	५।२३।२।२९	४।४।३२।०	६।२६।४५।५६	६।२८।२२।७	७।२६।१४।६	३।८।५७।१८	६।५।५।३६
	१४	र.	६।१२।३६।३७	५।१७।२२।१४	५।२४।२।५२	४।४।४०।१८	६।२८।०।५१	६।२८।२९।४	७।२६।१०।५५	३।८।५७।५६	६।५।७।५०
	१५	चं.	६।१३।३६।३७	५।१८।०।४४	५।२५।८।७	४।४।४८।२८	६।२९।१५।४६	६।२८।३६।१	७।२६।७।४४	३।८।५८।३२	६।५।१०।४
कार्तिक-कृष्णपक्षः	१	मं	६।१४।३६।३९	५।१८।३९।१५	५।२६।१८।२२	४।४।५६।३०	७।०।३०।४२	६।२८।४३।१	७।२६।४।३३	३।८।५८।५९	६।५।१२।१७
	२	बु.	६।१५।३६।४३	५।१९।१७।४६	५।२७।३३।२८	४।५।४।२४	७।१।४५।३७	६।२८।५०।२	७।२६।१।२२	३।८।५९।१५	६।५।१४।३१
	४	गु.	६।१६।३६।४९	५।१९।५६।१६	५।२८।५३।३०	४।५।१२।१२	७।३।०।३३	६।२८।५७।४	७।२५।५८।११	३।८।५९।५२	६।५।१६।४४
	५	शु.	६।१७।३६।५७	५।२०।३४।४६	६।०।१८।२६	४।५।१९।५२	७।४।१५।२९	६।२९।४।८	७।२५।५५।०	३।९।०।१५	६।५।१८।५७
	६	श.	६।१८।३७।६	५।२१।१३।१६	६।१।४८।१८	४।५।२७।२५	७।५।३०।२५	६।२९।११।१३	७।२५।५१।४९	३।९।०।३६	६।५।२१।११
	७	र.	६।१९।३७।१८	५।२१।५१।५७	६।३।१७।२८	४।५।३४।४७	७।६।४५।२१	६।२९।१८।२१	७।२५।४८।३९	३।९।०।४०	६।५।२३।२४
	८	चं.	६।२०।३७।३२	५।२२।३०।३९	६।४।४७।४२	४।५।४१।५९	७।८।०।१६	६।२९।२५।२८	७।२५।४५।२८	३।९।०।४०	६।५।२५।३५
	९	मं.	६।२१।३७।४८	५।२३।९।११	६।६।१८।५८	४।५।४९।३	७।९।१५।११	६।२९।३२।३५	७।२५।४२।१७	३।९।०।३८	६।५।२७।४६
	१०	बु.	६।२२।३८।५	५।२३।४८।४	६।७।५१।१८	४।५।५५।५८	७।१०।३०।६	६।२९।३९।४१	७।२५।३९।६	३।९।०।३३	६।५।२९।५६
	११	गु.	६।२३।३८।२४	५।२४।२६।४७	६।९।२४।४०	४।६।२।४५	७।११।४५।१	६।२९।४६।४८	७।२५।३५।५५	३।९।०।२६	६।५।३२।५
	१२	शु.	६।२४।३८।४४	५।२५।५।३१	६।१०।५९।६	४।६।९।२१	७।१२।५९।५६	६।२९।५३।५४	७।२५।३२।४५	३।९।०।१६	६।५।३४।१३
	१३	श.	६।२५।३९।६	५।२५।४४।१५	६।१२।३४।३४	४।६।१५।४९	७।१४।१४।५१	७।०।१।०	७।२५।२९।३४	३।९।०।२	६।५।३६।२१
	१४	र.	६।२६।३९।३१	५।२६।२३।२	६।१४।११।६	४।६।२२।८	७।१५।२९।४६	७।०।८।६	७।२५।२६।२३	३।८।५९।४६	६।५।३८।२८
	३०	चं.	६।२७।३९।५७	५।२७।१।४९	६।१५।४७।११	४।६।२८।१९	७।१६।४४।४१	७।०।१५।१३	७।२५।२३।१२	३।८।५९।२८	६।५।४०।३६

श्रीसंवत् २०१२ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

मासारम्भे केतवयहर्गणः ५८९

मासः	ति.	वा.	रविः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
कार्तिक-शुक्लपक्षः	१	म.	६।२८।४०।२४	५।२७।४०।३४	६।१७।२३।१७	४। ६।३४।१९	७।१७।५९।३६	७। ०।२२।१८	७।२५।२०। १	३। ८।५९। ६	६। ५।४२।४१
	२	बु.	६।२९।४०।५३	५।२८।१९।२१	६।१८।५९।२५	४। ६।४०।११	७।१९।१४।३१	७। ०।२९।२३	७।२५।१६।५०	३। ८।५८।४२	६। ५।४८।४६
	३	गु.	७। ०।४१।२३	५।२८।५८।१०	६।२०।३५।३५	४। ६।४५।५४	७।२०।२९।२६	७। ०।३६।२७	७।२५।१३।३९	३। ८।५८।१५	६। ५।४६।५०
	४	शु.	७। १।४१।५५	५।२९।३६।५८	६।२२।११।४७	४। ६।५१।२९	७।२१।४४।२१	७। ०।४३।३२	७।२५।१०।२८	३। ८।५७।४५	६। ५।४८।५४
	५	श.	७। २।४२।२८	६। ०।१५।४८	६।२३।४७।५९	४। ६।५६।५३	७।२२।५९।१६	७। ०।५०।३६	७।२५। ७।१७	३। ८।५७।१२	६। ५।५०।५७
	६	र.	७। ३।४३। ३	६। ०।५४।३८	६।२५।२४।१३	४। ७। २। ९	७।२४।१४।११	७। ०।५७।४०	७।२५। ४। ६	३। ८।५६।३७	६। ५।५३। ०
	७	चं.	७। ४।४३।४१	६। १।३३।२९	६।२७। ०।२९	४। ७। ७।१६	७।२५।२९। ६	७। १। ४।४४	७।२५। ०।५५	३। ८।५५।५९	६। ५।५५। १
	८	मं.	७। ५।४४।२१	६। २।१२।२५	६।२८।३६।२४	४। ७।१२।११	७।२६।४३।५८	७। १।११।५७	७।२४।५७।४५	३। ८।५५।११	६। ५।५७। २
	९	बु.	७। ६।४५। २	६। २।५१।२०	७। ०।१२।१५	४। ७।१६।५५	७।२७।५८।४८	७। १।१९।१०	७।२४।५४।३४	३। ८।५४।२०	६। ५।५९। १
	१०	गु.	७। ७।४५।४३	६। ३।३०।१५	७। १।४८। २	४। ७।२१।२९	७।२९।१३।३८	७। १।२६।२१	७।२४।५१।२३	३। ८।५३।२७	६। ६। १। ०
	११	शु.	७। ८।४६।२६	६। ४। ९। ९	७। ३।२३।४६	४। ७।२५।५२	८। ०।२८।२८	७। १।३३।३१	७।२४।४८।१२	३। ८।५२।३०	६। ६। २।५७
	१२	श.	७। ९।४७।१०	६। ४।४८। ४	७। ४।५९।२६	४। ७।३०। ४	८। १।४३।१७	७। १।४०।३९	७।२४।४५। १	३। ८।५१।३१	६। ६। ४।५४
	१३	र.	७।१०।४७।५५	६। ५।२६।५८	७। ६।३५। ३	४। ७।३४। ५	८। २।५८। ६	७। १।४७।४६	७।२४।४१।५०	३। ८।५०।३०	६। ६। ६।४९
	१४	चं.	७।११।४८।४२	६। ६। ५।५२	७। ८।१०।३६	४। ७।३७।२६	८। ४।१२।५५	७। १।५४।५१	७।२४।३८।४०	३। ८।४९।२५	६। ६। ८।४४
	१५	मं.	७।१२।४९।३०	६। ६।४४।४६	७। ९।४६। ५	४। ७।४१।३५	८। ५।२७।४३	७। २। १।५५	७।२४।३५।२९	३। ८।४८।१८	६। ६।१०।३७
मार्गशीर्ष-कृष्णपक्षः	१	बु.	७।१३।५०।१९	६। ७।२३।४०	७।११।२०।५८	४। ७।४५। ४	८। ६।४२।३१	७। २। ८।५७	७।२४।३२।१८	३। ८।४७। ८	६। ६।१२।३०
	२	गु.	७।१४।५१। ८	६। ८। २।३४	७।१२।५५।४७	४। ७।४८।२१	८। ७।५७।१८	७। २।१५।५८	७।२४।२९। ७	३। ८।४५।५६	६। ६।१४।२१
	३	शु.	७।१५।५१।५९	६। ८।४१।२८	७।१४।३०।३४	४। ७।५१।२८	८। ९।१२। ५	७। २।२२।५७	७।२४।२५।५६	३। ८।४४।४२	६। ६।१६।१२
	४	श.	७।१६।५२।५२	६। ९।२०।२१	७।१६। ५।१७	४। ७।५४।२४	८।१०।२६।५२	७। २।२९।५५	७।२४।२२।४५	३। ८।४३।२४	६। ६।१८। १
	५	र.	७।१७।५३।४६	६। ९।५९।१५	७।१७।३९।५८	४। ७।५७।१०	८।११।४१।३८	७। २।३६।५१	७।२४।१९।३५	३। ८।४२। ४	६। ६।१९।५०
	६	चं.	७।१८।५४।४०	६।१०।३८। ८	७।१९।१४।३५	४। ७।५९।४३	८।१२।५६।२४	७। २।४३।४६	७।२४।१६।२४	३। ८।४०।४२	६। ६।२१।३७
	७	मं.	७।१९।५५।३६	६।११।१७। १	७।२०।४९।१०	४। ८। २। ६	८।१४।११।१०	७। २।५०।३९	७।२४।१३।१३	३। ८।३९।१६	६। ६।२३।२४
	९	बु.	७।२०।५६।३४	६।११।५५।५५	७।२२।२३।४२	४। ८। ४।१९	८।१५।२५।५५	७। २।५७।३२	७।२४।१०। २	३। ८।३७।४८	६। ६।२५। ८
	१०	गु.	७।२१।५७।३२	६।१२।३४। ०	७।२३।५८।१७	४। ८। ६।२५	८।१६।४०।४२	७। ३। ४।३१	७।२४। ६।५१	३। ८।३६।१८	६। ६।२६।५३
	११	शु.	७।२२।५८।३१	६।१३।१४। ४	७।२५।३२।५६	४। ८। ८।१८	८।१७।५५।२६	७। ३।११।२८	७।२४। ३।४०	३। ८।३४।४५	६। ६।२८।३५
	१२	श.	७।२३।५९।३०	६।१३।५३। ८	७।२७। ७।३७	४। ८। ९।५९	८।१९।१०। ८	७। ३।१८।२३	७।२४। ०।२९	३। ८।३३।१०	६। ६।३०।१५
	१३	र.	७।२५। ०।३०	६।१४।३२।१२	७।२८।४२।२२	४। ८।११।२८	८।२०।२४।४९	७। ३।२५।१६	७।२३।५७।१८	३। ८।३१।३१	६। ६।३१।५३
	१३	चं.	७।२६। १।३१	६।१५।११।१५	८। ०।१७।१०	४। ८।१२।४५	८।२१।३९।२८	७। ३।३२। ६	७।२३।५४। ८	३। ८।२९।५१	६। ६।३३।३०
	१४	मं.	७।२७। २।३३	६।१५।५०।१८	८। १।५२। ०	४। ८।१३।५०	८।२२।५४। ६	७। ३।३८।५४	७।२३।५०।५७	३। ८।२८। ७	६। ६।३५। ५

श्रीसंवत् २०१२ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

मासारम्भे केतवयहर्गणः ६१९

मासः	ति.	वा.	रविः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
मार्गशीर्ष-शुक्लपक्षः	१	गु.	७।२९। ४।४०	६।१७। ८।२४	८। ५। १।५२	४। ८।१५।२५	८।२५।२३।१७	७। ३।५२।२३	७।२३।४४।३५	३। ८।२४।३२	६। ६।३८।१०
	२	शु.	८। ०। ५।४४	६।१७।४७।२६	८। ६।२६।४०	४। ८।१५।५४	८।२६।३७।५३	७। ३।५९। ४	७।२३।४१।२४	३। ८।२२।४१	६। ६।३९।४०
	३	श.	८। १। ६।४९	६।१८।२६।२७	८। ८।११।३१	४। ८।१६।११	८।२७।५२।२५	७। ४। ५।४३	७।२३।३८।१३	३। ८।२०।४६	६। ६।४१। ९
	४	र.	८। २। ७।५४	६।१९। ५।२८	८। ९।४६।२६	४। ८।१६।१६	८।२९। ६।५५	७। ४।१२।२०	७।२३।३५। ३	३। ८।१८।४९	६। ६।४२।३६
	५	चं.	८। ३। ९। १	६।१९।४४।३०	८।११।२१।२५	४। ८।१६।१०	९। ०।२१।२१	७। ४।१८।५४	७।२३।३१।५२	३। ८।१६।४९	६। ६।४४। १
	६	मं.	८। ४।१०। ९	६।२०।२३।३१	८।१२।५६।२७	४। ८।१५।५१	९। १।३५।५१	७। ४।२५।२५	७।२३।२८।४१	३। ८।१४।४७	६। ६।४५।२५
	७	बु.	८। ५।११।१७	६।२१। २।३१	८।१४।३१।३३	४। ८।१५।२१	९। २।५०।१७	७। ४।३१।५५	७।२३।२५।३०	३। ८।१२।४२	६। ६।४६।४७
	८	गु.	८। ६।१२।२५	६।२१।४१।३१	८।१६। ६।४३	४। ८।१४।३९	९। ४। ४।४१	७। ४।३८।२३	७।२३।२२।१९	३। ८।१०।३५	६। ६।४८। ७
	९	शु.	८। ७।१३।३५	६।२२।२०।३१	८।१७।४१।५६	४। ८।१३।४४	९। ५।१९। १	७। ४।४४।४९	७।२३।१९। ८	३। ८। ८।२४	६। ६।४९।२६
	१०	श.	८। ८।१४।४४	६।२२।५९।४४	८।१९।१७।१६	४। ८।१२।४०	९। ६।३३।२९	७। ४।५१।१४	७।२३।१५।५७	३। ८। ६।१४	६। ६।५०।४७
	११	र.	८। ९।१५।५४	६।२३।३८।५६	८।२०।५२।२१	४। ८।११।२५	९। ७।४७।५४	७। ४।५७।३५	७।२३।१२।४६	३। ८। ४। ३	६। ६।५२। ५
	१२	चं.	८।१०।१७। ४	६।२४।१८। ८	८।२२।२७।१२	४। ८। ९।५८	९। ९। २।१७	७। ५। ३।५४	७।२३। ९।३५	३। ८। १।५२	६। ६।५३।२१
	१३	मं.	८।११।१८।१४	६।२४।५७।१९	८।२४। १।४८	४। ८। ८।२१	९।१०।१६।३८	७। ५।१०। ८	७।२३। ६।२५	३। ७।५९।३८	६। ६।५४।३५
	१४	बु.	८।१२।१९।२४	६।२५।३६।३२	८।२५।३६।११	४। ८। ६।३१	९।११।३०।५६	७। ५।१६।२०	७।२३। ३।१४	३। ७।५७।२४	६। ६।५५।४७
	१५	गु.	८।१३।२०।३४	६।२६।१५।४६	८।२७।१०।१९	४। ८। ४।३१	९।१२।४५।१२	७। ५।२२।२९	७।२३। ०। ३	३। ७।५५। ९	६। ६।५६।५७
पौष-कृष्णपक्षः	१	शु.	८।१४।२१।४४	६।२६।५५। ०	८।२८।४४।१३	४। ८। २।१९	९।१३।५९।२६	७। ५।२८।३४	७।२२।५६।५२	३। ७।५२।५३	६। ६।५८। ५
	३	श.	८।१५।२२।५४	६।२७।३४।१६	९। ०।१७।५३	४। ७।५९।५६	९।१५।१३।३७	७। ५।३४।३७	७।२२।५३।४२	३। ७।५०।३५	६। ६।५९।१०
	४	र.	८।१६।२४। ४	६।२८।१३।३१	९। १।५१।४०	४। ७।५७।२०	९।१६।२७।४६	७। ५।४०।३६	७।२२।५०।३१	३। ७।४८।१७	६। ७। ०।१४
	५	चं.	८।१७।२५।१४	६।२८।५२।४७	९। ३।२३।४८	४। ७।५४।३४	९।१७।४१।५२	७। ५।४६।३३	७।२२।४७।२०	३। ७।४५।५७	६। ७। १।१५
	६	मं.	८।१८।२६।२४	६।२९।३२। ३	९। ४।५४।१६	४। ७।५१।३६	९।१८।५५।५६	७। ५।५२।२६	७।२२।४४। ९	३। ७।४३।३७	६। ७। २।१४
	७	बु.	८।१९।२७।३४	७। ०।११।२१	९। ६।२३। ६	४। ७।४८।२७	९।२०। ९।५८	७। ५।५८।१६	७।२२।४०।५८	३। ७।४१।१६	६। ७। ३।११
	८	गु.	८।२०।२८।४४	७। ०।५०।३८	९। ७।५०।१७	४। ७।४५। ६	९।२१।२३।५७	७। ६। ४। ३	७।२२।३७।४८	३। ७।३८।५४	६। ७। ४। ६
	९	शु.	८।२१।२९।५४	७। १।२९।५७	९। ९।१५।४८	४। ७।४१।३४	९।२२।३७।५४	७। ६। ९।४७	७।२२।३४।३७	३। ७।३६।३१	६। ७। ४।५९
	१०	श.	८।२२।३१। ४	७। २। ९।१६	९।१०।३९।३९	४। ७।३७।५०	९।२३।५१।४९	७। ६।१५।२९	७।२२।३१।२६	३। ७।३४। ६	६। ७। ५।५०
	११	र.	८।२३।३२।१५	७। २।४८।३६	९।१२। १।५२	४। ७।३३।५४	९।२५। ५।४२	७। ६।२१। ७	७।२२।२८।१५	३। ७।३१।४१	६। ७। ६।४०
	१२	चं.	८।२४।३३।२५	७। ३।२७।४३	९।१३।२२।११	४। ७।२९।४५	९।२६।१९।३४	७। ६।२६।४३	७।२२।२५। ४	३। ७।२९। ०	६। ७। ७।२९
	१३	मं.	८।२५।३४।३५	७। ४। ६।५२	९।१४।३५।४७	४। ७।२५।२६	९।२७।३३।२२	७। ६।३२।१६	७।२२।२१।५४	३। ७।२६।२०	६। ७। ८।१६
	१४	बु.	८।२६।३५।४४	७। ४।४६। ३	९।१५।४२।४१	४। ७।२०।५९	९।२८।४७। ९	७। ६।३७।४५	७।२२।१८।४३	३। ७।२३।४०	६। ७। ९। १
	३०	गु.	८।२७।३६।५२	७। ५।२५।१५	९।१६।४२।५४	४। ७।१६।२३	१०। ०। ०।५२	७। ६।४३। ३	७।२२।१५।३२	३। ७।२१। १	६। ७। ९।४३
	३०	शु.	८।२८।३८। ०	७। ६। ४।३०	९।१७।३६।२५	४। ७।११।३८	१०। १।१४।३३	७। ६।४८।१९	७।२२।१२।२१	३। ७।१८।२१	६। ७।१०।२४

श्रीसंवत् २०१२ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

मासारम्भे केतक्यहर्गणः ६४९

मासः	ति.	वा.	रविः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
पौष-शुक्लपक्षः	१	श.	८।२९।३९। ७	७। ६।४३।४६	९।१८।२३।१३	४।७। ६।४४	१०। २।२८।१२	७।६।५३।३२	७।२२। ९।१०	३।७।१५।४२	६।७।११। २
	२	र.	९। ०।४०।१४	७। ७।२३। ४	९।१९। ३।१९	४।७। १।४२	१०। ३।४१।४९	७।६।५८।४३	७।२२। ५।५९	३।७।१३। ३	६।७।११।३८
	३	चं.	९। १।४१।२१	७। ८। २।२४	९।१९।३६।४३	४।६।५६।३१	१०। ४।५५।२३	७।७। ३।५०	७।२२। २।४८	३।७।१०।२६	६।७।१२।११
	४	मं.	९। २।४२।२७	७। ८।४१।४६	९।१९।५५।३४	४।६।५१।१०	१०। ६। ८।५५	७।७। ८।५१	७।२१।५९।३८	३।७। ७।४७	६।७।१२।४४
	५	बु.	९। ३।४३।३२	७। ९।२१। ९	९।२०। ३।५९	४।६।४५।४१	१०। ७।२२।२४	७।७।१३।४७	७।२१।५६।२७	३।७। ५। ९	६।७।१३।१३
	६	गु.	९। ४।४४।३७	७।१०। ०।३४	९।२०। १।५८	४।६।४०। ४	१०। ८।३५।५१	७।७।१८।३९	७।२१।५३।१६	३।७। २।३१	६।७।१३।४०
	७	शु.	९। ५।४५।४२	७।१०।४०। १	९।१९।४९।३०	४।६।३४।१७	१०। ९।४९।१४	७।७।२३।२७	७।२१।५०। ६	३।६।५९।५३	६।७।१४। ५
	८	श.	९। ६।४६।४६	७।११।१९।३१	९।१९।२६।३७	४।६।२८।२१	१०।११। २।३६	७।७।२८।१०	७।२१।४६।५५	३।६।५७।१४	६।७।१४।२८
	९	र.	९। ७।४७।५०	७।११।५९। १	९।१८।५३।१७	४।६।२२।१७	१०।१२।१५।५४	७।७।३२।४९	७।२१।४३।४४	३।६।५४।३७	६।७।१४।४९
	१०	चं.	९। ८।४८।५३	७।१२।३८।३३	९।१८। ९।३१	४।६।१६। ५	१०।१३।२९।११	७।७।३७।२४	७।२१।४०।३३	३।६।५२। ०	६।७।१५। ८
	१२	मं.	९। ९।४९।५६	७।१३।१८। ७	९।१७।१५।१८	४।६। ९।४३	१०।१४।४२।२५	७।७।४१।५६	७।२१।३७।२३	३।६।४९।२३	६।७।१५।२५
	१३	बु.	९।१०।५०।५७	७।१३।५७।२८	९।१५।५१।४९	४।६। ३। ९	१०।१५।५५।३१	७।७।४६।३०	७।२१।३४।१२	३।६।४६।४०	६।७।१५।४०
	१४	गु.	९।११।५१।५६	७।१४।३६।४९	९।१४।३२।३०	४।५।५६।२९	१०।१७। ८।३३	७।७।५०।४८	७।२१।३१। १	३।६।४३।५८	६।७।१५।५२
	१५	शु.	९।१२।५२।५४	७।१५।१६।१०	९।१३।१७।१९	४।५।४९।४५	१०।१८।२१।३१	७।७।५४।५८	७।२१।२७।५०	३।६।४१।१८	६।७।१६। २
माघ-कृष्णपक्षः	१	श.	९।१३।५३।५१	७।१५।५५।३२	९।१२। ६।१८	४।५।४२।५५	१०।१९।३४।२५	७।७।४९।११	७।२१।२४।४०	३।६।३८।३८	६।७।१६।११
	२	र.	९।१४।५४।४७	७।१६।३४।५३	९।११। १।२४	४।५।३६। १	१०।२०।४७।१५	७।८। ३।१५	७।२१।२१।२९	३।६।३६। ०	६।७।१६।१७
	३	चं.	९।१५।५५।४२	७।१७।१४।१५	९। ९।५८।४०	४।५।२९। १	१०।२२। ०। १	७।८। ७।१६	७।२१।१८।१९	३।६।३३।२४	६।७।१६।२२
	४	मं.	९।१६।५६।३५	७।१७।५३।३७	९। ९। ०। ४	४।५।२१।५७	१०।२३।१२।४३	७।८।११।१५	७।२१।१५। ८	३।६।३०।५०	६।७।१६।२५
	५	बु.	९।१७।५७।२८	७।१८।३३। ०	९। ८। ३।३६	४।५।१४।४६	१०।२४।२५।२३	७।८।१५।११	७।२१।११।५८	३।६।२८।१६	६।७।१६।२६
	६	गु.	९।१८।५८।२०	७।१९।१२।२२	९। ७। ५।४९	४।५। ७।३१	१०।२५।३७।५८	७।८।१८।५९	७।२१। ८।४७	३।६।२५।४४	६।७।१६।२५
	७	शु.	९।१९।५९।११	७।१९।५१।४५	९। ६।१६।३७	४।५। ०।११	१०।२६।५०।२९	७।८।२२।४२	७।२१। ५।३७	३।६।२३।१३	६।७।१६।२२
	८	श.	९।२१। ०। ०	७।२०।३१। ८	९। ५।३५।५७	४।४।५२।४७	१०।२८। २।५६	७।८।२६।२१	७।२१। २।२६	३।६।२०।४४	६।७।१६।१७
	९	र.	९।२२। ०।४९	७।२१।१०।३२	९। ५। ३।५०	४।४।४५।१७	१०।२९।१५।२१	७।८।२९।५५	७।२०।५९।१५	३।६।१८।१६	६।७।१६।११
	१०	चं.	९।२३। १।३७	७।२१।४९।५५	९। ४।४०।१६	४।४।३७।४३	११। ०।२७।४१	७।८।३३।२५	७।२०।५६। ४	३।६।१५।४९	६।७।१६। २
	११	मं.	९।२४। २।२३	७।२२।२९।१९	९। ४।२५।१५	४।४।३०। ३	११। १।३९।५७	७।८।३६।५०	७।२०।५२।५३	३।६।१३।२५	६।७।१५।५२
	१२	बु.	९।२५। ३। ९	७।२३। ८।४३	९। ४।१८।४८	४।४।२२।१९	११। २।५२। ९	७।८।४०।११	७।२०।४९।४२	३।६।११। १	६।७।१५।४०
	१३	गु.	९।२६। ३।५४	७।२३।४८। ७	९। ४।२०।५३	४।४।१४।२८	११। ४। ४।१९	७।८।४३।२६	७।२०।४६।३२	३।६। ८।३८	६।७।१५।२५
	१४	शु.	९।२७। ४।३७	७।२४।२७।३३	९। ४।३०।४५	४।४। ६।३६	११। ५।१६।१८	७।८।४६।२९	७।२०।४३।२१	३।६। ६।१३	६।७।१५। ९
	३०	श.	९।२८। ५।१८	७।२५। ६।५८	९। ४।४५।४८	४।३।५८।४५	११। ६।२८। ९	७।८।४९।२७	७।२०।४०।१०	३।६। ३।४९	६।७।१४।५१

श्रीसंवत् २०१२ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

मासारम्भे केतवयहर्गणः ६७८

पक्षः	ति.	वा.	रविः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
माघ-शुक्लपक्षः	१	र.	९।२९। ५।५७	७।२५।४८।२३	९। ५। ६। १	४।३।५०।५४	११। ७।३९।५४	७।८।५२।१९	७।२०।३७। ०	३।६। १।२७	६।७।१४।३१
	२	चं.	१०। ०। ६।३६	७।२६।२५।४९	९। ५।३१।२६	४।३।४३। ५	११। ८।५१।३३	७।८।५५। ६	७।२०।३३।५०	३।५।५९। ७	६।७।१४। ८
	३	मं.	१०। १। ७।१३	७।२७। ५।१४	९। ६। २। २	४।३।३५।१५	११।१०। ३। ६	७।८।५७।४७	७।२०।३०।३९	३।५।५६।४९	६।७।१३।४३
	४	बु.	१०। २। ७।४८	७।२७।४४।४०	९। ६।३७।४८	४।३।२७।२५	११।११।१४।३३	७।९। ०।२३	७।२०।२७।२८	३।५।५४।३३	६।७।१३।१७
	५	गु.	१०। ३। ८।२१	७।२८।२४। ६	९। ७।१८।४६	४।३।१९।३५	११।१२।२५।५४	७।९। २।५३	७।२०।२४।१७	३।५।५२।१९	६।७।१२।४९
	६	शु.	१०। ४। ८।५३	७।२९। ३।३२	९। ८। ४।५५	४।३।११।४६	११।१३।३७। ८	७।९। ५।२०	७।२०।२१। ७	३।५।५०। ६	६।७।१२।१८
	७	श.	१०। ५। ९।२४	७।२९।४२।५८	९। ८।५३।५७	४।३। ३।५७	११।१४।४८।१७	७।९। ७।४०	७।२०।१७।५६	३।५।४७।५६	६।७।११।४५
	८	र.	१०। ६। ९।५३	८। ०।२२।२४	९। ९।४५।४१	४।२।५६। ९	११।१५।५९।१९	७।९। ९।५५	७।२०।१४।४६	३।५।४५।४८	६।७।११।१०
	९	चं.	१०। ७।१०।२०	८। १। १।५०	९।१०।४०। ७	४।२।४८।२१	११।१७।१०।१५	७।९।१२। ४	७।२०।११।३५	३।५।४३।४२	६।७।१०।३३
	१०	मं.	१०। ८।१०।४६	८। १।४१।१७	९।११।३७।१६	४।२।४०।३३	११।१८।२१। ५	७।९।१४। ८	७।२०। ८।२४	३।५।४१।३७	६।७। ९।५४
	११	बु.	११। ९।११।१०	८। २।२०।४३	९।१२।३७। ६	४।२।३२।४६	११।१९।३१।४९	७।९।१६। ६	७।२०। ५।१४	३।५।३९।३४	६।७। ९।१३
	१२	गु.	११।१०।११।३३	८। ३। ०।१०	९।१३।३९।३९	४।२।२४।५९	११।२०।४२।२७	७।९।१७।५९	७।२०। २। ३	३।५।३७।३४	६।७। ८।३०
	१३	शु.	११।११।११।५४	८। ३।३९।३७	९।१४।४४।५४	४।२।१७।१२	११।२१।५२।५९	७।९।१९।४६	७।१९।५८।५२	३।५।३५।३६	६।७। ७।४५
	१४	श.	१०।१२।१२।१३	८। ४।१९। ५	९।१५।५२।५२	४।२। ९।२५	११।२३। ३।२५	७।९।२१।२९	७।१९।५५।४१	३।५।३३।३९	६।७। ६।५८
	१५	र.	१०।१३।१२।३२	८। ४।५८।३१	९।१७। २। ७	४।२। १।४१	११।२४।१३।४८	७।९।२२।५९	७।१९।५२।३१	३।५।३१।४२	६।७। ६।१२
फाल्गुन-कृष्णपक्षः	२	चं.	१०।१४।१२।४९	८। ५।३७।५६	९।१८।१३। ८	४।१।५४। २	११।२५।२४। ३	७।९।२४।२४	७।१९।४९।२०	३।५।२९।४५	६।७। ५।२२
	३	मं.	१०।१५।१३। ४	८। ६।१७।२२	९।१९।२५।५७	४।१।४६।२९	११।२६।३४। ८	७।९।२५।४३	७।१९।४६। ९	३।५।२७।५०	६।७। ४।३०
	४	बु.	१०।१६।१३।१७	८। ६।५६।४५	९।२०।४०।३४	४।१।३९। १	११।२७।४४। ४	७।९।२६।५८	७।१९।४२।५९	३।५।२५।५८	६।७। ३।४०
	५	गु.	१०।१७।१३।२८	८। ७।३६। ९	९।२१।५६।५९	४।१।३१।३९	११।२८।५३।५१	७।९।२८। ६	७।१९।३९।४८	३।५।२४।१०	६।७। २।४७
	६	शु.	१०।१८।१३।३७	८। ८।१५।३२	९।२३।१५।१०	४।१।२४।२२	०। ०। ३।२९	७।९।२९।१०	७।१९।३६।३८	३।५।२२।२६	६।७। १।५२
	७	श.	१०।१९।१३।४४	८। ८।५४।५५	९।२४।३५। ९	४।१।१७।११	०। १।१२।५७	७।९।३०। ८	७।१९।३३।२७	३।५।२०।४४	६।७। ०।५५
	८	र.	१०।२०।१३।४८	८। ९।३४।१६	९।२५।५६।५६	४।१।१०। ५	०। २।२२।१६	७।९।३१। १	७।१९।३०।१७	३।५।१९। ५	६।६।५९।५६
	८	चं.	१०।२१।१३।५१	८।१०।१३।३८	९।२७।१९।५४	४।१। ३। ५	०। ३।३१।२६	७।९।३१।४८	७।१९।२७। ६	३।५।१७।२९	६।६।५८।५६
	९	मं.	१०।२२।१३।५२	८।१०।५२।५८	९।२८।४४।१०	४।०।५६।११	०। ४।४०।२७	७।९।३२।३०	७।१९।२३।५५	३।५।१५।५७	६।६।५७।५४
	१०	बु.	१०।२३।१३।५१	८।११।३२।१८	१०। ०। ९।४४	४।०।४९।२३	०। ५।४९।१८	७।९।३३। ६	७।१९।२०।४४	३।५।१४।२७	६।६।५६।५०
	११	गु.	१०।२४।१३।४९	८।१२।११।३७	१०। १।३६।३६	४।०।४२।३९	०। ६।५८। ०	७।९।३३।३८	७।१९।१७।३४	३।५।१३। ०	६।६।५५।४४
	१२	शु.	१०।२५।१३।४५	८।१२।५०।५६	१०। ३। ५। १	४।०।३६। १	०। ८। ६।३८	७।९।३४। ४	७।१९।१४।२३	३।५।११।३६	६।६।५४।३७
	१३	श.	१०।२६।१३।३८	८।१३।३०।१४	१०। ४।३४।१४	४।०।२९।२९	०। ९।१४।५७	७।९।३४।२४	७।१९।११।१३	३।५।१०।१५	६।६।५३।२८
	१४	र.	१०।२७।१३।२९	८।१४। ९।३२	१०। ६। ४।४५	४।०।२३। ३	०।१०।२३। ६	७।९।३४।३८	७।१९। ८। २	३।५। ८।५६	६।६।५२।१७
	३०	चं.	१०।२८।१३।१९	८।१४।४८।५०	१०। ७।३७। ५	४।०।१६।४१	०।११।३१।१६	७।९।३४।४८	७।१९। ४।५१	३।५। ७।४१	६।६।५१। ४

श्रीसंवत् २०१२ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

मासारम्भे केतक्यहर्गणः ७०८

मासः	ति.	वा.	रविः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
फाल्गुन-शुक्लपक्षः	१	मं	१०।२९।१३। ८	८।१५।२८। ६	१०। ९।१०।१७	४। ०।१०।२७	०।१२।३९।१७	७।९।३४।४३	७।१९। १।४१	३।५। ६।२२	६।६।४९।५१
	२	बु.	११। ०।१२।५६	८।१६। ७।२१	१०।१०।४४।५३	४। ०। ४।२१	०।१३।४७। ५	७।९।३४।३३	७।१८।५८।३०	३।५। ५। ७	६।६।४८।३८
	३	गु.	११। १।१२।४१	८।१६।४६।३४	१०।१२।२०।३६	३।२९।५८।२५	०।१४।५४।३९	७।९।३४।१७	७।१८।५५।२०	३।५। ३।५६	६।६।४७।२३
	४	शु.	११। २।१२।२३	८।१७।२५।४६	१०।१३।५७।४३	३।२९।५२।३८	०।१६। २। १	७।९।३३।५६	७।१८।५२। ९	३।५। २।५०	६।६।४६। ७
	५	श.	११। ३।१२। ३	८।१८। ४।५५	१०।१५।३६। १	३।२९।४७। १	०।१७। ९। ६	७।९।३३।२८	७।१८।४८।४९	३।५। १।४६	६।६।४४।५०
	६	र.	११। ४।११।४२	८।१८।४४। ३	१०।१७।१५।३५	३।२९।४१।३३	०।१८।१५।५५	७।९।३२।५५	७।१८।४५।४८	३।५। ०।४५	६।६।४३।३२
	७	चं.	११। ५।११।१८	८।१९।२३। ९	१०।१८।५६।२३	३।२९।३६।१५	०।१९।२२।२३	७।९।३२।१६	७।१८।४२।३७	३।४।५९।४८	६।६।४२।१२
	८	मं.	११। ६।१०।५२	८।२०। २।१३	१०।२०।३८।२८	३।२९।३१। ५	०।२०।२८।४८	७।९।३१।३०	७।१८।३९।२७	३।४।५८।५२	६।६।४०।५२
	१०	बु.	११। ७।१०।२५	८।२०।४१।१५	१०।२२।२१।३९	३।२९।२६। ६	०।२१।३४।५३	७।९।३०।३८	७।१८।३६।१६	३।४।५८। १	६।६।३९।३०
	११	गु.	११। ८। ९।५५	८।२१।२०।१६	१०।२४। ६। ७	३।२९।२१।१५	०।२२।४०।४३	७।९।२९।४२	७।१८।३३। ६	३।४।५७।१३	६।६।३८। ८
	१२	शु.	११। ९। ९।२३	८।२१।५९।१५	१०।२५।५१।५९	३।२९।१६।३४	०।२३।४६।१७	७।९।२८।४०	७।१८।२९।५५	३।४।५६।२९	६।६।३६।४४
	१३	श.	११।१०। ८।४८	८।२२।३८।१२	१०।२७।३८।५३	३।२९।१२। २	०।२४।५१।३७	७।९।२७।३२	७।१८।२६।४४	३।४।५५।४८	६।६।३५।१९
	१४	र.	११।११। ८।११	८।२३।१७। ७	१०।२९।२७।१०	३।२९। ७।४०	०।२५।५६।४३	७।९।२६।१८	७।१८।२३।३४	३।४।५५।११	६।६।३३।५३
	१५	चं.	११।१२। ७।३१	८।२३।५६। ०	११। १।१६।४३	३।२९। ३।२७	०।२७। १।३४	७।९।२४।५८	७।१८।२०।२३	३।४।४५।३७	६।६।३२।२६
चैत्र-कृष्णपक्षः	१	मं.	११।१३। ६।४९	८।२४।३४।५१	११। ३। ७।३२	३।२८।५९।२४	०।२८। ६। ९	७।९।२३।३२	७।१८।१७।१२	३।४।५४। ७	६।६।३०।५७
	२	बु.	११।१४। ६। ५	८।२५।१३।४१	११। ४।५९।३८	३।२८।५५।३०	०।२९।१०।३०	७।९।२२। १	७।१८।१४। २	३।४।५३।३८	६।६।२९।२८
	३	गु.	११।१५। ५।२०	८।२५।५२।३४	११। ६।५३। ४	३।२८।५१।४९	१। ०।१४।५६	७।९।२०।२२	७।१८।१०।५१	३।४।५३।११	६।६।२७।५७
	४	शु.	११।१६। ४।३४	८।२६।३१।२३	११। ८।४७।४९	३।२८।४८।२०	१। १।१८।५९	७।९।१८।३८	७।१८। ७।४१	३।४।५२।४८	६।६।२६।२५
	५	श.	११।१७। ३।४६	८।२७।१०।१०	११।१०।४३।५२	३।२८।४५। १	१। २।२२।४०	७।९।१६।४८	७।१८। ४।३०	३।४।५२।२९	६।६।२४।५३
	६	र.	११।१८। २।५६	८।२७।४८।५५	११।१२।४१।१३	३।२८।४१।५४	१। ३।२६। ०	७।९।१४।५४	७।१८। १।१९	३।४।५२।१२	६।६।२३।२१
	७	चं.	११।१९। २। ४	८।२८।२७।३८	११।१४।३९।५२	३।२८।३८।५७	१। ४।२८।५९	७।९।१२।५७	७।१७।५८। ८	३।४।५१।५९	६।६।२१।४९
	८	मं.	११।२०। १।१०	८।२९। ६।१९	११।१६।३९।४९	३।२८।३६।१२	१। ५।३१।३५	७।९।१०।५०	७।१७।५४।५८	३।४।५१।५०	६।६।२०।१५
	९	बु.	११।२१। ०।१४	८।२९।४४।५८	११।१८।४१। ४	३।२८।३३।३७	१। ६।३३।४९	७।९। ८।३७	७।१७।५१।४७	३।४।५१।४५	६।६।१८।४१
	१०	गु.	११।२१।५९।१६	९। ०।२३।३५	११।२०।४३।३७	३।२८।३१।१२	१। ७।३५।४२	७।९। ६।२५	७।१७।४८।३६	३।४।५१।४३	६।६।१७। ६
	११	शु.	११।२२।५८।१६	९। १। २।१०	११।२२।४८। ६	३।२८।२८।५९	१। ८।३७।१२	७।९। ४। ५	७।१७।४५।२६	३।४।५१।४३	६।६।१५।३१
	११	श.	११।२३।५७।१३	९। १।४०।४२	११।२४।५२।५५	३।२८।२६।५७	१। ९।३८।२१	७।९। १।४१	७।१७।४२।१५	३।४।५१।४८	६।६।१३।५६
	१२	र.	११।२४।५६। ८	९। २।१९।१२	११।२६।५८।१०	३।२८।२५।५०	१।१०।३९। ८	७।८।५९।११	७।१७।३९। ४	३।४।५१।५७	६।६।१२।२१
	१३	चं.	११।२५।५५। २	९। २।५७।३९	११।२९। ३।५४	३।२८।२३।२४	१।११।३९।३४	७।८।५६।३६	७।१७।३५।५३	३।४।५२।१०	६।६।१०।४५
	१४	मं.	११।२६।५३।५४	९। ३।३६। ५	०। १।१०। १	३।२८।२०।५४	१।१२।३९।३०	७।८।५३।५६	७।१७।३२।४३	३।४।५२।२७	६।६। ९। ९
	३०	बु.	११।२७।५२।४३	९। ४।१२।२८	०। ३।१६।३३	३।२८।१८।२५	१।१३।३९।१९	७।८।५२।११	७।१७।२९।३२	३।४।५२।४६	६।६। ७।३५

श्रीसंवत् २०१२ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः।

मासः	ति.	वा.	इष्टम् ०।०	इष्टम् १०।०	इष्टम् २०।०	इष्टम् ३०।०	इष्टम् ४०।०	इष्टम् ५०।०
चैत्र-शुक्लपक्षः	१	बु.	११।२१।४८।५५	११।२४। ८।४१	११।२६।२८।२८	११।२८।४८।१५	०। १। ८।५०	०। ३।३०।१९
	३	श.	०। ५।५१।४१	०। ८।१३। ६	०।१०।३४।३२	०।१२।५५।५७	०।१५।१८।१५	०।१७।४०।४३
	४	र.	०।२०। ३।१२	०।२२।२५।४०	०।२४।४८। ९	०।२७।१०।४७	०।२९।३३।५६	१। १।५७। ५
	५	चं.	१। ४।२०।१४	१। ६।४३।२३	१। ९। ६।३२	१।११।२९।४७	१।१३।५३। ३	१।१६।१६।२०
	६	मं.	१।१८।३९।३६	१।२१। २।५२	१।२३।२६।११	१।२५।४९। ०	१।२८।११।४९	२। ०।३४।३८
	७	बु.	२। २।५७।२७	२। ५।२०।१६	२। ७।४३।४०	२।१०। ४।३३	२।१२।२६।२६	२।१४।४८।१९
	८	गु.	२।१७।१०।१२	२।१९।३२। ५	२।२१।५२।४७	२।२४।१३।१०	२।२६।३३।३४	२।२८।५३।५७
	९	शु.	३। १।१४।२१	३। ३।३४।३२	३। ५।५२।५४	३। ८।११।१६	३।१०।२९।३८	३।१२।४८। ०
	१०	श.	३।१५। ६।२२	३।१७।२४। ७	३।१९।४०।३३	३।२१।५७। ०	३।२४।१३।२६	३।२६।२९।५३
	११	र.	३।२८।४६।१९	४। १। १।३९	४। ३।१५।४१	४। ५।२९।४४	४। ७।४३।४६	४। ९।५७।४९
	१२	चं.	४।१२।११।५१	४।१४।२४।३४	४।१६।३५।५३	४।१८।४७।१३	४।२०।५८।३२	४।२३। ९।५२
	१३	मं.	४।२५।२१।१२	४।२७।३१।३०	४।२९।४०।१५	५। १।४९। ०	५। ३।५७।४५	५। ६। ६।३१
	१४	बु.	५। ८।१५।१६	५।१०।२३।३२	५।१२।२९।३५	५।१४।३५।३८	५।१६।४१।४१	५।१८।४७।४४
	१५	गु.	५।२०।५३।४७	५।२२।५९।५०	५।२५। ४। ५	५।२७। ७।५९	५।२९।११।५३	६। १।१५।४७
वैशाख-कृष्णपक्षः	१	शु.	६। ३।१९।४२	६। ५।२३।३६	६। ७।२६।४६	६। ९।२८।४७	६।११।३०।४८	६।१३।३२।४९
	२	श.	६।१५।३४।५०	६।१७।३६।५१	६।१९।३८।५२	६।२१।३९।५२	६।२३।४०।४१	६।२५।४१।३०
	३	र.	६।२७।४२।१९	६।२९।४३। ८	७। १।४३।५७	७। ३।४४।३८	७। ५।४४।४२	७। ७।४५। ०
	४	चं.	७। ९।४५।११	७।११।४५।२२	७।१३।४५।३३	७।१५।४५।४४	७।१७।४५।५९	७।१९।४६।१८
	५	मं.	७।२१।४६।३८	७।२३।४६।५७	७।२५।४७।१७	७।२७।४७।३६	७।२९।४७।५६	८। १।४९। ७
	६	बु.	८। ३।५०।२१	८। ५।५१।३६	८। ७।५२।५१	८। ९।५४। ५	८।११।५५।२०	८।१३।५६।५९
	७	गु.	८।१५।५९।३५	८।१८। २।११	८।२०। ४।४७	८।२२। ७।२४	८।२४।१०। ०	८।२६।१२।३६
	८	शु.	८।२८।१७। ०	९। ०।२१।५४	९। २।२६।४८	९। ४।३३।४२	९। ६।३६।३७	९। ८।४८।३१
	९	श.	९।१०।४७।१५	९।१२।५४।२४	९।१५। १।३३	९।१७। ७।४२	९।१९।१५।११	९।२१।२३। ०
	१०	र.	९।२३।३०।२३	९।२५।४०। ९	९।२७।४९।५५	९।२९।५९।४१	१०। २। ९।२७	१०। ४।११।१३
	११	चं.	१०। ६।२८।५९	१०। ८।४१। ९	१०।१०।५३।३३	१०।१३। ५।५८	१०।१५।१८।२३	१०।१७।३०।४७
	१२	मं.	१०।१९।४३।१२	१०।२१।५७।५५	१०।२४।१२।५६	१०।२६।२७।५७	१०।२८।४२।५८	११। ०।५८। ०
	१३	बु.	११। ३।१३। १	११। ५।३२।२४	११। ७।४९।५८	११।१०। ८।३२	११।१२।२७। ६	११।१४।४५।४०
	१४	गु.	११।१७। ४।११	११।१९।२२।२१	११।२१।४०।३१	११।२३।५८।४१	११।२६।१६।५२	११।२८।३५। २
	३०	शु.	०। ०।५४।१८	०। ३।१५।२१	०। ५।३६।२४	०। ७।५७।२७	०।१०।१८।३१	०।१२।३९।३४
वैशाख-शुक्लपक्षः	१	श.	०।१५। १।२९	०।१७।२३।४४	०।१९।४६। ०	०।२२। ८।१६	०।२४।३०।३१	०।२६।५२।५२
	२	र.	०।२९।१५।५३	१। १।३८।५५	१। ४। १।५६	१। ६।२४।५८	१। ८।४७।५२	१।११।११।११
	३	चं.	१।१३।३४।३०	१।१५।५७।५०	१।१८।२१। ९	१।२०।४४।२९	१।२३। ७।४८	१।२५।३०।४८
	४	मं.	१।२७।५३।४६	२। ०।१६।४१	२। २।३९।३७	२। ५। २।३४	२। ७।२५।१३	२। ९।४७।१६
	५	बु.	२।१२। ९।१९	२।१४।३३।२३	२।१६।५३।२६	२।१९।१५।२९	२।२१।३६।३९	२।२३।५७।२४
	७	गु.	२।२६।१८।१०	२।२८।३८।५६	३। ०।५९।४१	३। ३।२०।२८	३। ५।३९।२१	३। ७।५८।१४
	८	शु.	३।१०।१७। ७	३।१२।३६। १	३।१४।५४।५४	३।१७।१३।२०	३।१९।३०।१९	३।२१।४७।१८
	९	श.	३।२४। ४।१७	३।२६।२१।१६	३।२८।३८।१५	४। ०।५६।१६	४। ३। ८।५०	४। ५।२३।२४
	१०	र.	४। ७।३७।५८	४। ९।५२।३२	४।१२। ७। ६	४।१४।२०।२६	४।१६।३२।१८	४।१८।४४।१०
	११	चं.	४।२०।५६। २	४।२३। ७।५४	४।२५।१९।४६	४।२७।३०।३७	४।२९।३३।५१	५। १।४९। ६
	१२	मं.	५। ३।५८।२०	५। ६। ७।३५	५। ८।१६।४९	५।१०।२५।३२	५।१२।३२।११	५।१४।३८।५०
	१३	बु.	५।१६।४५।२९	५।१८।५२। ८	५।२०।५८।४७	५।२३। ५।२६	५।२५।१०। ५	५।२७।१४।२८
	१४	गु.	५।२९।१८।५१	६। १।२३।१४	६। ३।२७।३७	६। ५।३२। ०	६। ७।३५।३०	६। ९।३७।५७
	१५	[illegible]	६।११।३४।२४	६।१३।४२।५१	६।१५।४५।१८	६।१७।४७।४५	६।१९।५०।१२	६।२१।५१।२१

श्रीसंवत् २०१२ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः।

मासारम्भे केतक्यहर्गणः ७०८

मासः	ति.	वा.	रविः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
फाल्गुन-शुक्लपक्षः	१	म	१०।२९।१३। ८	८।१५।२८। ६	१०। ९।१०।१७	४। ०।१०।२७	०।१२।३९।१७	७।९।३४।४३	७।१९। १।४१	३।५। ६।२२	६।६।४९।५१
	२	बु.	११। ०।१२।५६	८।१६। ७।२१	१०।१०।४४।५३	४। ०। ४।२१	०।१३।४७। ५	७।९।३४।३३	७।१८।५८।३०	३।५। ५। ७	६।६।४८।३८
	३	गु.	११। १।१२।४१	८।१६।४६।३४	१०।१२।२०।३६	३।२९।५८।२५	०।१४।५४।३९	७।९।३४।१७	७।१८।५५।२०	३।५। ३।५६	६।६।४७।२३
	४	शु.	११। २।१२।२३	८।१७।२५।४६	१०।१३।५७।४३	३।२९।५२।३८	०।१६। २। १	७।९।३३।५६	७।१८।५२। ९	३।५। २।५०	६।६।४६। ७
	५	श.	११। ३।१२। ३	८।१८। ४।५५	१०।१५।३६। १	३।२९।४७। १	०।१७। ९। ६	७।९।३३।२८	७।१८।४८।४९	३।५। १।४६	६।६।४४।५०
	६	र.	११। ४।११।४२	८।१८।४४। ३	१०।१७।१५।३५	३।२९।४१।३३	०।१८।१५।५५	७।९।३२।५५	७।१८।४५।४८	३।५। ०।४५	६।६।४३।३२
	७	चं.	११। ५।११।१८	८।१९।२३। ९	१०।१८।५६।२३	३।२९।३६।१५	०।१९।२२।२३	७।९।३२।१६	७।१८।४२।३७	३।४।५९।४८	६।६।४२।१२
	८	मं.	११। ६।१०।५२	८।२०। २।१३	१०।२०।३८।२८	३।२९।३१। ५	०।२०।२८।४८	७।९।३१।३०	७।१८।३९।२७	३।४।५८।५२	६।६।४०।५२
	१०	बु.	११। ७।१०।२५	८।२०।४१।१५	१०।२२।२१।३९	३।२९।२६। ६	०।२१।३४।५३	७।९।३०।३८	७।१८।३६।१६	३।४।५८। १	६।६।३९।३०
	११	गु.	११। ८। ९।५५	८।२१।२०।१६	१०।२४। ६। ७	३।२९।२१।१५	०।२२।४०।४३	७।९।२९।४२	७।१८।३३। ६	३।४।५७।१३	६।६।३८। ८
	१२	शु.	११। ९। ९।२३	८।२१।५९।१५	१०।२५।५१।५९	३।२९।१६।३४	०।२३।४६।१७	७।९।२८।४०	७।१८।२९।५५	३।४।५६।२९	६।६।३६।४४
	१३	श.	११।१०। ८।४८	८।२२।३८।१२	१०।२७।३८।५३	३।२९।१२। २	०।२४।५१।३७	७।९।२७।३२	७।१८।२६।४४	३।४।५५।४८	६।६।३५।१९
	१४	र.	११।११। ८।११	८।२३।१७। ७	१०।२९।२७।१०	३।२९। ७।४०	०।२५।५६।४३	७।९।२६।१८	७।१८।२३।३४	३।४।५५।११	६।६।३३।५३
	१५	चं.	११।१२। ७।३१	८।२३।५६। ०	११। १।१६।४३	३।२९। ३।२७	०।२७। १।३४	७।९।२४।५८	७।१८।२०।२३	३।४।५४।३७	६।६।३२।२६
चैत्र-कृष्णपक्षः	१	मं.	११।१३। ६।४९	८।२४।३४।५१	११। ३। ७।३२	३।२८।५९।२४	०।२८। ६। ९	७।९।२३।३२	७।१८।१७।१२	३।४।५४। ७	६।६।३०।५७
	२	बु.	११।१४। ६। ५	८।२५।१३।४१	११। ४।५९।३८	३।२८।५५।३०	०।२९।१०।३०	७।९।२२। १	७।१८।१४। २	३।४।५३।३८	६।६।२९।२८
	३	गु.	११।१५। ५।२०	८।२५।५२।३४	११। ६।५३। ४	३।२८।५१।४९	१। ०।१४।५६	७।९।२०।२२	७।१८।१०।५१	३।४।५३।११	६।६।२७।५७
	४	शु.	११।१६। ४।३४	८।२६।३१।२३	११। ८।४७।४९	३।२८।४८।२०	१। १।१८।५९	७।९।१८।३८	७।१८। ७।४१	३।४।५२।४८	६।६।२६।२५
	५	श.	११।१७। ३।४६	८।२७।१०।१०	११।१०।४३।५२	३।२८।४५। १	१। २।२२।४०	७।९।१६।४८	७।१८। ४।३०	३।४।५२।२९	६।६।२४।५३
	६	र.	११।१८। २।५६	८।२७।४८।५५	११।१२।४१।१३	३।२८।४१।५४	१। ३।२६। ०	७।९।१४।५४	७।१८। १।१९	३।४।५२।१२	६।६।२३।२१
	७	चं.	११।१९। २। ४	८।२८।२७।३८	११।१४।३९।५२	३।२८।३८।५७	१। ४।२८।५९	७।९।१२।५७	७।१७।५८। ८	३।४।५१।५९	६।६।२१।४९
	८	मं.	११।२०। १।१०	८।२९। ६।१९	११।१६।३९।४९	३।२८।३६।१२	१। ५।३१।३५	७।९।१०।५०	७।१७।५४।५८	३।४।५१।५०	६।६।२०।१५
	९	बु.	११।२१। ०।१४	८।२९।४४।५८	११।१८।४१। ४	३।२८।३३।३७	१। ६।३३।४९	७।९। ८।३७	७।१७।५१।४७	३।४।५१।४५	६।६।१८।४१
	१०	गु.	११।२१।५९।१६	९। ०।२३।३५	११।२०।४३।३७	३।२८।३१।१२	१। ७।३५।४२	७।९। ६।२५	७।१७।४८।३६	३।४।५१।४३	६।६।१७। ६
	११	शु.	११।२२।५८।१६	९। १। २।१०	११।२२।४८। ६	३।२८।२८।५९	१। ८।३७।१२	७।९। ४। ५	७।१७।४५।२६	३।४।५१।४३	६।६।१५।३१
	१२	श.	११।२३।५७।१३	९। १।४०।४२	११।२४।५३।५५	३।२८।२६।५७	१। ९।३८।२१	७।९। १।४१	७।१७।४२।१५	३।४।५१।४८	६।६।१३।५६
	१२	र.	११।२४।५६। ८	९। २।१९।१२	११।२६।५८।१०	३।२८।२५।५०	१।१०।३९। ८	७।८।५९।११	७।१७।३९। ४	३।४।५१।५७	६।६।१२।२१
	१३	चं.	११।२५।५५। २	९। २।५७।३९	११।२९। ३।५४	३।२८।२३।२४	१।११।३९।३४	७।८।५६।३६	७।१७।३५।५३	३।४।५२।१०	६।६।१०।४५
	१४	मं.	११।२६।५३।५४	९। ३।३६। ५	०। १।१०। १	३।२८।२०।५४	१।१२।३९।३०	७।८।५३।५६	७।१७।३२।४३	३।४।५२।२७	६।६। ९। ९
	३०	बु.	११।२७।५२।४३	९। ४।१४।२८	०। ३।१६।३३	३।२८।१८।२५	१।१३।३९।२९	७।८।५१।११	७।१७।२९।३२	३।४।५२।४६	६।६। ७।३५

श्रीसंवत् २०१२ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः।

मासः	ति.	वा.	इष्टम् ०।०	इष्टम् १०।०	इष्टम् २०।०	इष्टम् ३०।०	इष्टम् ४०।०	इष्टम् ५०।०
चैत्र-शुक्लपक्षः	१	शु.	११।२२।४८।५५	११।२४। ८।४१	११।२६।२८।२८	११।२८।४८।१५	०। १। ८।५०	०। ३।३०।१५
	३	श.	०। ५।५१।४१	०। ८।१३। ६	०।१०।३४।३२	०।१२।५५।५७	०।१५।१८।१५	०।१७।४०।४३
	४	र.	०।२०। ३।१२	०।२२।२५।४०	०।२४।४८। ९	०।२७।१०।४७	०।२९।३३।५६	१। १।५७। ५
	५	चं.	१। ४।२०।१४	१। ६।४३।२३	१। ९। ६।३२	१।११।२९।४७	१।१३।५३। ३	१।१६।१६।२०
	६	मं.	१।१८।३९।३६	१।२१। २।५२	१।२३।२६।११	१।२५।४९। ०	१।२८।११।४९	२। ०।३४।३८
	७	बु.	२। २।५७।२७	२। ५।२०।१६	२। ७।४३।४०	२।१०। ४।३३	२।१२।२६।२६	२।१४।४८।१९
	८	गु.	२।१७।१०।१२	२।१९।३२। ५	२।२१।५२।४७	२।२४।१३।१०	२।२६।३३।३४	२।२८।५३।५७
	९	शु.	३। १।१४।२१	३। ३।३४।३२	३। ५।५२।५४	३। ८।११।१६	३।१०।२९।३८	३।१२।४८। ०
	१०	श.	३।१५। ६।२२	३।१७।२४। ७	३।१९।४०।३३	३।२१।५७। ०	३।२४।१३।२६	३।२६।२९।५३
	११	र.	३।२८।४६।१९	४। १। १।३९	४। ३।१५।४१	४। ५।२९।४४	४। ७।४३।४६	४। ९।५७।४९
	१२	चं.	४।१२।११।५१	४।१४।२४।३४	४।१६।३५।५३	४।१८।४७।१३	४।२०।५८।३२	४।२३। ९।५२
	१३	मं.	४।२५।२१।१२	४।२७।३१।३०	४।२९।४०।१५	५। १।४९। ०	५। ३।५७।४५	५। ६। ६।३१
	१४	बु.	५। ८।१५।१६	५।१०।२३।३२	५।१२।२९।३५	५।१४।३५।३८	५।१६।४१।४१	५।१८।४७।४४
	१५	गु.	५।२०।५३।४७	५।२२।५९।५०	५।२५। ४। ५	५।२७। ७।५९	५।२९।११।५३	६। १।१५।४७
वैशाख-कृष्णपक्षः	१	शु.	६। ३।१९।४२	६। ५।२३।३६	६। ७।२६।४६	६। ९।२८।४७	६।११।३०।४८	६।१३।३२।४९
	२	श.	६।१५।३४।५०	६।१७।३६।५१	६।१९।३८।५२	६।२१।३९।५२	६।२३।४०।४१	६।२५।४१।३०
	३	र.	६।२७।४२।१९	६।२९।४३। ८	७। १।४३।५७	७। ३।४४।३८	७। ५।४४।४९	७। ७।४५। ०
	४	चं.	७। ९।४५।११	७।११।४५।२२	७।१३।४५।३३	७।१५।४५।४४	७।१७।४५।५९	७।१९।४६।१८
	५	मं.	७।२१।४६।३८	७।२३।४६।५७	७।२५।४७।१७	७।२७।४७।३६	७।२९।४७।५६	८। १।४९। ७
	६	बु.	८। ३।५०।२१	८। ५।५१।३६	८। ७।५२।५१	८। ९।५४। ५	८।११।५५।२०	८।१३।५६।५९
	७	गु.	८।१५।५९।३५	८।१८। २।११	८।२०। ४।४७	८।२२। ७।२४	८।२४।१०। ०	८।२६।१२।३६
	८	शु.	८।२८।१७। ०	९। ०।२१।५४	९। २।२६।४८	९। ४।३१।४२	९। ६।३६।३७	९। ८।४१।३१
	९	श.	९।१०।४७।१५	९।१२।५४।२४	९।१५। १।३३	९।१७। ८।४२	९।१९।१५।५१	९।२१।२३। ०
	१०	र.	९।२३।३०।२३	९।२५।४०। ९	९।२७।४९।५५	९।२९।५९।४१	१०। २। ९।२७	१०। ४।१९।१३
	११	चं.	१०। ६।२८।५९	१०। ८।४१। ९	१०।१०।५३।३३	१०।१३। ५।५८	१०।१५।१८।२३	१०।१७।३०।४७
	१२	मं.	१०।१९।४३।१२	१०।२१।५७।५५	१०।२४।१२।५६	१०।२६।२७।५७	१०।२८।४२।५८	११। ०।५८। ०
	१३	बु.	११। ३।१३। १	११। ५।३१।२४	११। ७।४९।५८	११।१०। ८।३२	११।१२।२७। ६	११।१४।४५।४०
	१४	गु.	११।१७। ४।११	११।१९।२२।२१	११।२१।४०।३१	११।२३।५८।४१	११।२६।१६।५२	११।२८।३५। २
	३०	शु.	०। ०।५४।१८	०। ३।१५।२१	०। ५।३६।२४	०। ७।५७।२७	०।१०।१८।३१	०।१२।३९।३४
वैशाख-शुक्लपक्षः	१	श.	०।१५। १।२९	०।१७।२३।४४	०।१९।४६। ०	०।२२। ८।१६	०।२४।३०।३१	०।२६।५२।५२
	२	र.	०।२९।१५।५३	१। १।३८।५५	१। ४। १।५६	१। ६।२४।५८	१। ८।४७।५९	१।११।११।११
	३	चं.	१।१३।३४।३०	१।१५।५७।५०	१।१८।२१। ९	१।२०।४४।२९	१।२३। ७।४८	१।२५।३०।४८
	४	मं.	१।२७।५३।४४	२। ०।१६।४१	२। २।३९।३७	२। ५। २।३४	२। ७।२५।१३	२। ९।४७।१६
	५	बु.	२।१२। ९।१९	२।१४।३१।२३	२।१६।५३।२६	२।१९।१५।२९	२।२१।३६।३९	२।२३।५७।२४
	७	गु.	२।२६।१८।१०	२।२८।३८।५६	३। ०।५९।४१	३। ३।२०।२८	३। ५।३९।२१	३। ७।५८।१४
	८	शु.	३।१०।१७। ७	३।१२।३६। १	३।१४।५४।५४	३।१७।१३।२०	३।१९।३०।१९	३।२१।४७।१८
	९	श.	३।२४। ४।१७	३।२६।२१।१६	३।२८।३८।१५	४। ०।५४।१६	४। ३। ८।५०	४। ५।२३।२४
	१०	र.	४। ७।३७।५८	४। ९।५२।३२	४।१२। ७। ६	४।१४।२०।२६	४।१६।३२।१८	४।१८।४४।१०
	११	चं.	४।२०।५६। २	४।२३। ७।५४	४।२५।१९।४६	४।२७।३०।३७	४।२९।३९।५१	५। १।४९। ६
	१२	मं.	५। ३।५८।२०	५। ६। ७।३५	५। ८।१६।४९	५।१०।२५।३२	५।१२।३३।११	५।१४।३८।५०
	१३	बु.	५।१६।४५।२९	५।१८।५२। ८	५।२०।५८।४७	५।२३। ५।२६	५।२५।१०। ५	५।२७।१४।२८
	१४	गु.	५।२९।१८।५१	६। १।२३।१४	६। ३।२७।३७	६। ५।३२। ०	६। ७।३५।३०	६। ९।३७।५७
	१५	बु.	६।११।४०।२४	६।१३।४२।५१	६।१५।४५।१८	६।१७।४७।४५	६।१९।५०।१२	६।२१।५१।२१

श्रीसंवत् २०१२ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः।

मासः	ति.	वा.	इष्टम् ०।०	इष्टम् १०।०	इष्टम् २०।०	इष्टम् ३०।०	इष्टम् ४०।०	इष्टम् ५०
ज्येष्ठ-कृष्णपक्षः	१	श.	६।२३।५२।२२	६।२५।५३।२४	६।२७।५८।२६	६।२९।५५।२७	७। १।५६।२९	७। ३।५७
	२	र.	७। ५।५७।२६	७। ७।५७।३७	७। ९।५७।४८	७।११।५७।५९	७।१३।५८।१०	७।१५।५८
	२	चं.	७।१७।५८।३४	७।१९।५८।५०	७।२१।५९। ६	७।२३।५९।२२	७।२५।५९।३९	७।२७।५९
	३	मं.	८। ०। ०।१२	८। २। १। ८	८। ४। २। ४	८। ६। ३। ०	८। ८। ३।५७	८।१०। ४
	४	बु.	८।१२। ५।४९	८।१४। ७।१८	८।१६। ९।३९	८।१८।१२। ०	८।२०।१४।२१	८।२२।१६
	५	गु.	८।२४।१९। ४	८।२६।२१।२५	८।२८।२५।३४	९। ०।३०। १	९। २।३६।२८	९। ४।३८
	६	शु.	९। ६।४३।२२	९। ८।४७।४९	९।१०।५३। ९	९।१२।५९।४२	९।१५। ६।१५	९।१७।१२
	७	श.	९।१९।१९।२१	९।२१।२५।५४	९।२३।३३।४२	९।२५।४१।५४	९।२७।५१। ७	१०। ०। ०
	८	र.	१०। २। ९।३३	१०। ४।१८।४४	१०। ६।२७।५७	१०। ८।३९।३६	१०।१०।५१।३०	१०।१३। ३
	९	चं.	१०।१५।१५।१८	१०।१७।२७।१३	१०।१९।३९। ७	१०।२१।५३।१२	१०।२४। ७।४१	१०।२६।२२
	१०	मं.	१०।२८।३६।४०	११। ०।५१।१०	११। ३। ५।३९	११। ५।२२।१८	११। ७।३९।१२	११। ९।५६
	११	बु.	११।१२।१३। १	११।१४।२९।५६	११।१६।४६।५७	११।१९। ५।५२	११।२१।२४।४८	११।२३।४३
	१२	गु.	११।२६। २।३९	११।२८।२१।३४	०। ०।४१। ३	०। ३। १।४८	०। ५।२२।३४	०। ७।४३
	१३	शु.	०।१०। ४। ५	०।१२।२४।५१	०।१४।४६।२८	०।१७। ८।३६	०।१९।३०।४४	०।२१।५२
	३०	श.	०।२४।१५। १	०।२६।३६। ९	०।२९। ०। २	१। १।२२।५६	१। ३।४५।५०	१। ६। ८
ज्येष्ठ-शुक्लपक्षः	१	र.	१। ८।३१।३८	१।१०।५४।४०	१।१३।१७।५४	१।१५।४१। ९	१।१८। ४।२३	१।२०।२७।३
	२	चं.	१।२२।५०।५२	१।२५।१३।५७	१।२७।३६।५८	२। ०। ०। ०	२। २।२३। १	२। ४।४६
	३	मं.	२। ७। ८।५६	२। ९।३१।१७	२।११।५३।३८	२।१४।१५।५९	२।१६।३८।२०	२।१९। ०
	४	बु.	२।२१।२२।१७	२।२३।४३।२०	२।२६। ४।२३	२।२८।२५।२६	३। ०।४६।३०	३। ३। ७
	५	गु.	३। ५।२७। ६	३। ७।४६।३१	३।१०। ५।५६	३।१२।२५।२१	३।१४।४४।४६	३।१७। ३
	६	शु.	३।१९।२२।११	३।२१।३८।३४	३।२३।५५।५७	३।२६।१३।१९	३।२८।३०।४२	४। ०।४६
	७	श.	४। ३। २।२६	४। ५।१७।३४	४। ७।३२।४२	४। ९।४७।५०	४।१२। २।५८	४।१४।१६
	८	र.	४।१६।२९।२०	४।१८।४१।४५	४।२०।५४।१०	४।२३। ६।३४	४।२५।१८।५९	४।२७।३०
	९	चं.	४।२९।४०।११	५। १।४९।५९	५। ३।५९।४७	५। ६। ९।३४	५। ८।१९।२१	५।१०।२८
	१०	मं.	५।१२।३५।४५	५।१४।४२।५४	५।१६।५०। ३	५।१८।५७।१२	५।२१। ४।२१	५।२३।११
	११	बु.	६।२५।१६।३६	५।२७।२१।३२	५।२९।२६।२८	६। १।३१।२४	६। ३।३६।२०	६। ५।४१
	१२	गु.	६। ७।४५। ३	६। ९।४७।४७	६।११।५०।३१	६।१३।५३।१५	६।१५।५५।५९	६।१७।५८
	१३	शु.	६।२०। १।२५	६।२२। २।४३	६।२४। ४। १	६।२६। ५।१९	६।२८। ६।३७	७। ०। ७
	१४	श.	७। २। ३।१४	७। ४।१०। ८	७। ६।१०।२७	७। ८।१०।४७	७।१०।११। ६	७।१२।११
	१५	र.	७।१४।११।४५	७।१६।१२। ५	७।१८।१२।१७	७।२०।१२।२४	७।२२।१२।३१	७।२४।१२
आषाढ-कृष्णपक्षः	१	चं.	७।२६।१२।४५	७।२८।१२।५२	८। ०।१३। ५	८। २।१३।५०	८। ४।१४।३५	८। ६।१५
	२	मं.	८। ८।१६। ६	८।१०।१६।५१	८।१२।१७।३६	८।१४।१९। १	८।१६।२१। ७	८।१८।२३
	३	बु.	८।२०।२५।२०	८।२२।२७।२७	८।२४।२९।३३	८।२६।३१।४०	८।२८।३५।२८	९। ०।३९
	४	गु.	९। २।४३।२०	९। ४।४७।१६	९। ६।५१।१२	९। ८।५५। ८	९।११। ०। ६	९।१३। ६
	५	शु.	९।१५।१२।१६	९।१७।१८।२१	९।१९।२४।२६	९।२१।३०।३१	९।२३।३६।५७	९।२५।४५
	६	श.	९।२७।५४।२३	१०। ०। ३। ६	१०। २।११।५०	१०। ४।२०।३३	१०। ६।२९।१६	१०। ८।४०
	७	र.	१०।१०।५१।४६	१०।१३। ३। ८	१०।१५।१४।३०	१०।१७।२५।५१	१०।१९।३७।१३	१०।२१।५०
	८	चं.	१०।२४। ४।४६	१०।२६।१८।४६	१०।२८।३२।४६	११। ०।४६।४७	११। ३। ०।४७	११। ५।१३
	९	मं.	११। ७।३३।२३	११। ९।४९।५२	११।१२। ६।२१	११।१४।२२।४९	११।१६।३९।१८	११।१८।५७
	१०	बु.	११।२१।१६।१२	११।२३।३४।३९	११।२५।५३। ६	११।२८।११।३३	०। ०।३०।२७	०। २।५१
	११	गु.	०। ५।११।३३	०। ७।३३। ६	०। ९।५३।४०	०।१२।१३।१३	०।१४।३४।२३	०।१६।५६
	१२	शु.	०।१९।१७।४४	०।२१।३९।२५	०।२४। १। ५	०।२६।२२।४६	०।२८।४५।३३	१। १। ८
	१३	श.	१। ३।३१।२६	१। ५।५४।२२	१। ८।१७।१९	१।१०।४०।२३	१।१३। ३।४५	१।१५।२७
	१४	र.	१।१७।५०।२९	१।२०।१३।५२	१।२२।३६।१४	१।२५। ०।२५	१।२७।२३।३२	१।२९।४६
	३०	चं.	२। २। ९।४६	२। ४।४३।५३	२। ६।५५।५६	२। ९।१८।३४	२।११।४१।१३	२।१४। ३

श्रीसंवत् २०१२ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः ।

मासः	ति.	वा.	इष्टम् ०।०	इष्टम् १०।०	इष्टम् २०।०	इष्टम् ३०।०	इष्टम् ४०।०	इष्टम् ५०।०
आषाढ-शुक्लपक्षः	१	मं.	२।१६।२६।३०	२।१८।४९। ९	२।२१।११।११	२।२३।३३।३६	२।२५।५४। २	२।२८।१५।२७
	३	बु.	३। ०।३६।५३	३। २।५८।१८	३। ५।१८।२७	३। ७।३८।२१	३। ९।५८।१५	३।१२।१८। ९
	४	गु.	३।१४।३८। ३	३।१६।५७।४१	३।१९।१५।२९	३।२१।३३।१८	३।२३।५१। ७	३।२६। ८।५५
	५	शु.	३।२८।२६।४४	४। ०।४३।५३	४। २।५९।३५	४। ५।१५।१८	४। ७।३१। ०	४। ९।४६।४३
	६	श.	४।१२। २।२५	४।१४।१७। २	४।१६।३०।११	४।१८।४३।२०	४।२०।५६।२९	४।२३। ९।३८
	७	र.	४।२५।२२।४७	४।२७।३४।४९	४।२९।४५।१९	५। १।५५।५०	५। ४। ६।२०	५। ६।१६।५१
	८	चं.	५। ८।२७।२१	५।१०।३७। ४	५।१२।४४।५१	५।१४।५२।३९	५।१७। ०।२७	५।१९। ८।१४
	९	मं.	५।२१।१६। २	५।२३।२३।४६	५।२५।२९। ९	५।२७।३४।३३	५।२९।३९।५६	६। १।४५।२०
	१०	बु.	६। ३।५०।४३	६। ५।५६। ७	६। ८। ०। ४	६।१०। ३।१४	६।१२। ६।२४	६।१४। ९।३४
	११	गु.	६।१६।१२।४५	६।१८।१५।५५	६।२०।१८।५२	६।२२।२०।३२	६।२४।२२।१३	६।२६।२३।५३
	१२	शु.	६।२८।२५।३४	७। ०।२७।१४	७। २।२८।५५	७। ४।२९।५४	७। ६।३०।२४	७। ८।३०।५५
	१३	श.	७।१०।३१।२६	७।१२।३१।५७	७।१४।३२।२७	७।१६।३२।५८	७।१८।३३।१०	७।२०।३३।२१
	१३	र.	७।२२।३३।३२	७।२४।३३।४३	७।२६।३३।५४	७।२८।३४। ५	८। ०।३४।२२	८। २।३४।५६
	१४	चं.	८। ४।३५।३०	८। ६।३६। ४	८। ८।३६।३९	८।१०।३७।१३	८।१२।३७।४७	८।१४।३९।१०
	१५	मं.	८।१६।४०।५७	८।१८।४२।४५	८।२०।४४।३३	८।२२।४६।२०	८।२४।४८। ८	८।२६।५०। ५

मासः	ति.	वा.	इष्टम् ०।०	इष्टम् १०।०	इष्टम् २०।०	इष्टम् ३०।०	इष्टम् ४०।०	इष्टम् ५०।०
श्रावण-कृष्णपक्षः	१	बु.	८।२८।५३।३४	९। ०।५७। ३	९। ३। ०।३२	९। ५। ४। २	९। ७। ७।३१	९। ९।११। ०
	२	गु.	९।११।१५।४५	९।१३।२२।१८	९।१५।२६।५१	९।१७।३२।२४	९।१९।३७।५८	९।२१।४३।३१
	३	शु.	९।२३।४९।४१	९।२५।५७।४९	९।२८। ५।५७	१०। ०।१४। ५	१०। २।२२।१४	१०। ४।३०।२२
	४	श.	१०। ६।३८।३०	१०। ८।४९।२०	१०।११। ०।११	१०।१३।११। ३	१०।१५।२१।५४	१०।१७।३२।४६
	५	र.	१०।१९।४३।३७	१०।२१।५६।४२	१०।२४।१०। ४	१०।२६।२३।२६	१०।२८।३६।४८	११। ०।५०।१०
	६	चं.	११। ३। ३।३३	११। ५।१९।१६	११। ७।३५।१९	११। ९।५१।२३	११।१२। ७।२६	११।१४।२३।३०
	७	मं.	११।१६।३९।३३	११।१८।५७।३१	११।२१।१५।२९	११।२३।३३।२७	११।२५।५१।२५	११।२८। ९।२४
	८	बु.	०। ०।२७।४७	०। २।४७।५३	०। ५। ७।५९	०। ७।२८। ५	०। ९।४८।१२	०।१२। ८।१८
	९	गु.	०।१४।२९।१०	०।१६।५०।४८	०।१९।१२।२६	०।२१।३४। ४	०।२३।५५।४२	०।२६।१७।२०
	११	शु.	०।२८।३९।५१	१। १। २।३२	१। ३।२५।१३	१। ५।४७।५४	१। ८।१०।३६	१।१०।३३।२५
	१२	श.	१।१२।५६।३९	१।१५।१९।५४	१।१७।४३। ८	१।२०। ६।२३	१।२२।२९।३७	१।२४।५२।५७
	१३	र.	१।२७।१६।१९	१।२९।३९।४१	२। २। ३। ४	२। ४।२६।२६	२। ६।४९।४५	२। ९।१२।३४
	१४	चं.	२।११।३५।२३	२।१३।५८।१२	२।१६।२१। १	२।१८।४३।५०	२।२१। ६। ९	३।२३।२८।५४
	३०	मं.	२।२५।४९।४०	२।२८।११।२५	३। ०।३३।११	३। २।५४।५६	३। ५।१५।२९	३। ७।३५।४५

मासः	ति.	वा.	इष्टम् ०।०	इष्टम् १०।०	इष्टम् २०।०	इष्टम् ३०।०	इष्टम् ४०।०	इष्टम् ५०।०
श्रावण-शुक्लपक्षः	१	बु.	३। ९।५६। १	३।१२।१६।१७	३।१४।३६।३३	३।१६।५६।३६	३।१९।१७।५५	३।२१।३७।१५
	२	गु.	३।२३।५१।३४	३।२६। ९।५४	३।२८।२८।१३	४। ०।४५।५३	४। ३। २।१०	४। ५।१८।२७
	३	शु.	४। ७।३४।४४	४। ९।५१। १	४।१२। ७।१८	४।१४।२२।२५	४।१६।३६। ९	४।१८।४९।५४
	४	श.	४।२१। ३।३८	४।२३।१७।२३	४।२५।३१। ७	४।२७।४३।३७	४।२९।५४।४८	५। २। ५।५९
	५	र.	५। ४।१७।१०	५। ६।२८।२१	५। ८।३९।३२	५।१०।४९।४१	५।१२।५८। १	५।१५। ६।३८
	६	चं.	५।१७।१५। ७	५।१९।२३।३५	५।२१।३२। ४	५।२३।४०। ८	५।२५।४६। १	५।२७।५१।५४
	७	मं.	५।२९।५७।४७	६। २। ३।४०	६। ४। ९।३३	६। ६।१५।२६	६। ८।१९।३७	६।१०।२३।२१
	८	बु.	६।१२।२७। ६	६।१४।३०।५१	६।१६।३४।३५	६।१८।३८।२०	६।२०।४१।२८	६।२२।४३।२५
	९	गु.	६।२४।४५।२२	६।२६।४७।१९	६।२८।४९।१६	७। ०।५१।१३	७। २।५३।१०	७। ४।५४।११
	१०	शु.	७। ६।५४।५६	७। ८।५५।४१	७।१०।५६।२६	७।१२।५७।११	७।१४।५७।५७	७।१६।५८।३८
	११	श.	७।१८।५८।४९	७।२०।५९। ०	७।२२।५९।११	७।२४।५९।२२	७।२६।५९।३३	७।२८।५९।४४
	१२	र.	८। १। ०।१४	८। ३। ०।४३	८। ५। १।१२	८। ७। १।४१	८। ९। २।१०	८।११। २।३९
	१३	चं.	८।१३। ३। ८	८।१५। ४।२७	८।१७। ५।५४	८।१९। ७।२१	८।२१। ८।४८	८।२३।१०।१६
	१४	मं.	८।२५।११।४३	८।२७।१३।३७	८।२९।१६।३७	९। १।१९।३८	९। ३।२२।३९	९। ५।२५।३९
			[illegible]	९। ९।३१।४१	९।११।३६।२४	९।१३।४१।३५	९।१५।४६।४७	९।१७।५१।५९

श्रीसंवत् २०१२ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०—१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः।

मासः	ति.	वा.	इष्टम् ०।०	इष्टम् १०।०	इष्टम् २०।०	इष्टम् ३०।०	इष्टम् ४०।०	इष्टम् ५०।०
प्र. भाद्रपद-कृष्णपक्षः	१	गु.	९।१९।५७।१०	९।२२। २।२२	९।२४। ८।२७	९।२६।१५।५६	९।२८।२३।२५	१०। ०।३०।५
	२	शु.	१०। २।३८।२४	१०। ४।४५।५३	१०। ६।५३।४०	१०। ९। ३।४९	१०।११।१३।५८	१०।१३।२४।
	३	श.	१०।१५।३४।१६	१०।१७।४४।२५	१०।१९।५४।३४	१०।२२। ७।२१	१०।२४।२०।१४	१०।२६।३३।
	४	र.	१०।२८।४६। ०	११। ०।५८।५४	११। ३।११।४७	११। ५।२७। १	११। ७।४२।२२	११। ९।५७।४८
	५	चं.	११।१२।१३। ६	११।१४।२८।२७	११।१६।४३।५४	११।१९। १।३५	११।२१।१९।१७	११।२३।३६।४८
	६	मं.	११।२५।५४।४०	११।२८।१२।२१	०। ०।३०।३०	०। २।५०।११	०। ५। ९।५३	०। ७।२९।३
	७	बु.	०। ९।४९।१६	०।१२। ८।५८	०।१४।२९।३०	०।१६।५०।५०	०।१९।१२।११	०।२१।३३।३
	८	गु.	०।२३।५४।५२	०।२६।१६।१२	०।२८।३८।३४	१। १। १। ७	१। ३।२३।४१	१। ५।४६।१४
	९	शु.	१। ८। ८।४८	१।१०।३१।२९	१।१२।५४।३६	१।१५।१७।४३	१।१७।४०।५०	१।२०। ३।१३
	१०	श.	१।२२।२७। ४	१।२४।५०।२२	१।२७।१३।४९	१।२९।३७।१६	२। २। ०।४३	२। ४।२४।१
	११	र.	२। ६।४७।३८	२। ९।१०।४५	२।११।३३।५२	२।१३।५६।५९	२।१६।२०। ६	२।१८।४३।१३
	१२	चं.	२।२१। ५।४९	२।२३।२७।५२	२।२५।४९।५५	२।२८।११।५८	३। ०।३४। २	३। २।५६।
	१४	मं.	३। ५।१७। ४	३। ७।३७।४९	३। ९।५८।३५	३।१२।१९।२१	३।१४।४०। ६	३।१७। ०।३
	३०	बु.	३।१९।१९।२१	३।२१।३८। ७	३।२३।५६।५३	३।२६।१५।३९	३।२८।३४।२५	४। ०।५२।२८
प्र. भाद्रपद-शुक्लपक्षः	१	गु.	४। ३। ९।२०	४। ५।२६।१२	४। ७।४३। ४	४। ९।५९।५६	४।१२।१६।४८	४।१४।३३।२१
	२	शु.	४।१६।४६।५६	४।१९। १।२८	४।२१।१६। ०	४।२३।३०।३१	४।२५।४५। ३	४।२७।५९।३७
	३	श.	५। ०। ९।४२	५। २।२२।२८	५। ४।३३।१३	५। ६।४४।५९	५। ८।५६।४४	५।११। ७।
	४	र.	५।१३।१६।१७	५।१५।२५।२५	५।१७।३४।३३	५।१९।४३।४१	५।२१।५२।४९	५।२४। १।
	५	चं.	५।२६। ७।३३	५।२८।१४। ०	६। ०।२०।२७	६। २।२६।५४	६। ४।३३।२१	६। ६।३९।४८
	६	मं.	६। ८।४४। ५	६।१०।४८।२२	६।१२।५२।३९	६।१४।५६।५६	६।१७। १।१४	६।१९। ५।३१
	७	बु.	६।२१। ८।४३	६।२३।११। ४	६।२५।१३।२५	६।२७।१५।४६	६।२९।१८। ८	७। १।२०।२
	८	गु.	७। ३।२२।४९	७। ५।२३।५२	७। ७।२४।५६	७। ९।२५।५९	७।११।२७। ३	७।१३।२८।
	९	शु.	७।१५।२९।१०	७।१७।२९।५६	७।१९।३०।१५	७।२१।३०।३५	७।२३।३०।५४	७।२५।३१।१
	१०	श.	७।२७।३१।३३	७।२९।३१।५३	८। १।३२।१६	८। ३।३२।३७	८। ५।३२।५९	८। ७।३३।२
	१०	र.	८। ९।३३।४२	८।११।३४। ३	८।१३।३४।३३	८।१५।३५।५१	८।१७।३७। ९	८।१९।३८।२
	११	चं.	८।२१।३९।४६	८।२३।४१। ४	८।२५।४२।२२	८।२७।४४।२१	८।२९।४६।५५	९। १।४९।३०
	१२	मं.	९। ३।५२। ४	९। ५।५४।३९	९। ७।५७।१३	९। ९।५९।४८	९।१२। ४।३२	९।१४। ९।१६
	१३	बु.	९।१६।१४। १	९।१८।१८।४५	९।२०।२३।३०	९।२२।२८।१४	९।२४।३४।१४	९।२६।४१। ७
	१४	गु.	९।२८।४८। ०	१०। ०।५४।५३	१०। ३। १।४६	१०। ५। ८।३९	१०। ७।१६।१८	१०। ९।२५।५९
	१५	शु.	१०।११।३५।३३	१०।१३।४५।१०	१०।१५।५४।४८	१०।१८। ४।२५	१०।२०।१४।१९	१०।२२।२३।३०
द्वि. भाद्रपद-कृष्णपक्षः	१	श.	१०।२४।३८।४२	१०।२६।५०।५३	१०।२९। ३। ४	११। १।१५।१६	११। ३।२७।३९	११। ५।४२।३३
	२	र.	११। ७।५७।२८	११।१०।१२।२२	११।१२।२७।१७	११।१४।४२।११	११।१६।५७।३०	११।१९।१४।३६
	३	चं.	११।२१।३१।४९	११।२३।४९। २	११।२६। ६।१६	११।२८।२३।२९	०। ०।४१।१९	०। ३। ०।३४
	४	मं.	०। ५।१९।४९	०। ७।३९। ४	०। ९।५८।१९	०।१२।१७।३४	०।१४।३७।४६	०।१६।५८।४४
	५	बु.	०।१९।१९।४२	०।२१।४०।४०	०।२४। १।३८	०।२६।२२।३६	०।२८।४४।४७	१। १। ७। ८
	७	गु.	१। ३।२९।२९	१। ५।५१।५०	१। ८।१४।११	१।१०।३६।४४	१।१२।५९।५३	१।१५।२३। २
	८	शु.	१।१७।४६।११	१।२०। ९।२०	१।२२।३२।२९	१।२४।५५।५३	१।२७।१९।२०	१।२९।४२।४७
	९	श.	२। २। ६।१४	२। ४।२९।४१	२। ६।५३। ८	२। ९।१६।२०	२।११।३९।३३	२।१४। २।४५
	१०	र.	२।१६।२५।५८	२।१८।४९।१०	२।२१।११।५४	२।२३।३४।१७	२।२५।५६।४१	२।२८।१९। ४
	११	चं.	३। ०।४१।२८	३। ३। ३।५१	३। ५।२५। ४	३। ७।४६। ७	३।१०। ७।१०	३।१२।२८।१३
	१२	मं.	३।१४।४९।१७	३।१७। ९।५९	३।१९।२९।२६	३।२१।४८।५३	३।२४। ८।२०	३।२६।२७।४८
	१३	बु.	३।२८।४७।१५	४। १। ५।४४	४। ३।२३। ९	४। ५।४०।३४	४। ७।५७।५९	४।१०।१५।२४
	१४	गु.	४।१२।३३।४९	४।१४।४८।४१	४।१७। ३।४४	४।१९।१८।४८	४।२१।३३।५१	४।२३।४८।५५
	३०	शु.	४।२६। ३।५८	४।२८।१७। ४	५। ०।२९।२६	५। २।४१।४९	५। ४।५४।११	५। ७। ६।३४

श्रीसंवत् २०१२ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः।

मासः	ति.	वा.	इष्टम् ०।०	इष्टम् १०।०	इष्टम् २०।०	इष्टम् ३०।०	इष्टम् ४०।०	इष्टम् ५०।०
द्वि. भाद्रपद-शुक्लपक्षः	१	श.	५। ९।१८।५६	५।११।२९।३१	५।१३।३९।१४	५।१५।४८।५८	५।१७।५८।४२	५।२०। ८।२५
	२	र.	५।२२।१८। ९	५।२४।२८।३१	५।२६।३३।३८	५।२८।४०।४५	६। ०।४७।५२	६। २।५४।५९
	३	चं.	६। ५। २। ६	६। ७। ८।४४	६। ९।१३।४०	६।११।१८।३६	६।१३।२३।३२	६।१५।२८।२८
	४	मं.	६।१७।३३।२४	६।१९।३८।२०	६।२१।४१।२९	६।२३।४४।१४	६।२५।४७। ०	६।२७।४९।४६
	५	बु.	६।२९।५२।३१	७। १।५५।१७	७। ३।५७।३७	७। ५।५८।५७	७। ८। ०।१७	७।१०। १।३७
	६	गु.	७।१२। २।५७	७।१४। ४।१७	७।१६। ५।३७	७।१८। ६।१७	७।२०। ६।४०	७।२२। ७। ४
	७	शु.	७।२४। ७।२७	७।२६। ७।५१	७।२८। ८।१४	८। ०। ८।३७	८। २। ८।५६	८। ४। ९।१६
	८	श.	८। ६। ९।३५	८। ८। ९।५५	८।१०।१०।१४	८।१२।१०।३४	८।१४।११।१२	८।१६।११।१०
	९	र.	८।१८।१३। ८	८।२०।१४। ६	८।२२।१५। ४	८।२४।१६। २	८।२६।१७। ०	८।२८।१९। ०
	१०	चं.	९। ०।२१।१३	९। २।२३।२७	९। ४।२५।४१	९। ६।२७।५४	९। ८।३०। ८	९।१०।३२।५४
	११	मं.	९।१२।३७। १	९।१४।४१। ९	९।१६।४५।१६	९।१८।४९।२४	९।२०।५३।३१	९।२२।५७।३९
	१२	बु.	९।२५। ३।३५	९।२७। ९।५४	९।२९।१६।१३	१०। १।२२।३२	१०। ३।२८।५१	१०। ५।३५।१०
	१३	गु.	१०। ७।४२।४६	१०। ९।५१।४३	१०।१२। ०।४१	१०।१४। ९।३९	१०।१६।१८।३६	१०।१८।२७।३४
	१४	शु.	१०।२०।३७।१६	१०।२२।४८।४८	१०।२५। ०।२१	१०।२७।११।५४	१०।२९।२३।२६	११। १।३४।५९
	१५	श.	११। ३।४७। ४	११। ६। १।२०	११। ८।१५।३६	११।१०।२९।५२	११।१२।४४। ८	११।१४।५८।२४
आश्विन-कृष्णपक्षः	१	र.	११।१७।१३।१६	११।१९।२९।५८	११।२१।४६।४१	११।२४। ३।२४	११।२६।२०। ६	११।२८।३६।४९
	२	चं.	०। ०।५४।१७	०। ३।१२।५३	०। ५।३१।३०	०। ७।५०। ६	०।१०। ८।४३	०।१२।२७।१९
	३	मं.	०।१४।४७।१३	०।१७। ७।५४	०।१९।२८।३५	०।२१।४९।१६	०।२४। ९।५७	०।२६।३०।३८
	४	बु.	०।२८।५२।३०	१। १।१४।२८	१। ३।३६।२६	१। ५।५८।२४	१। ८।२०।२३	१।१०।४२।३९
	५	गु.	१।१३। ५।३८	१।१५।२८।३७	१।१७।५१।३६	१।२०।१४।३५	१।२२।३७।३४	१।२५। ०।५६
	६	शु.	१।२७।२४।२५	१।२९।४७।५५	२। २।११।२५	२। ४।३४।५४	२। ६।५८।२२	२। ९।२१।२९
	७	श.	२।११।४४।३६	२।१४। ७।४३	२।१६।३०।५०	२।१८।५३।५७	२।२१।१६।४७	२।२३।३९।२५
	८	र.	२।२६। २। ४	२।२८।२४।४३	३। ०।४७।२१	३। ३।१०। ०	३। ५।३१।३८	३। ७।५३।११
	९	चं.	३।१०।१४।४४	३।१२।३६।१७	३।१४।५७।५०	३।१७।१८।५६	३।१९।३८।४७	३।२१।५८।३९
	११	मं.	३।२४।१८।३०	३।२६।३८।२२	३।२८।५८।१३	४। १।१६।५३	४। ३।३४।३४	४। ५।५२।१६
	१२	बु.	४। ८। ९।५७	४।१०।२७।३९	४।१२।४५।२०	४।१५। १।३५	४।१७।१७।२०	४।१९।३३। ५
	१३	गु.	४।२१।४८।५०	४।२४। ४।३५	४।२६।२०।२०	४।२८।३३।४७	५। ०।४६।५१	५। २।५९।५६
	१४	शु.	५। ५।१३। ०	५। ७।२६। ५	५। ९।३९। ९	५।११।५०। ०	५।१४। ०।२६	५।१६।१०।५२
	३०	श.	५।१८।२१।१८	५।२०।३१।४४	५।२२।४२।१०	५।२४।५०।४१	५।२६।५८।२४	५।२९। ६। ८
आश्विन-शुक्लपक्षः	१	र.	६। १।१३।५१	६। ३।२१।३५	६। ५।२९।१८	६। ७।३६। ०	६। ९।४१।२३	६।११।४६।४७
	२	चं.	६।१३।५१।१०	६।१५।५७।३४	६।१८। २।५७	६।२०। ८।१३	६।२२।११।२७	६।२४।१४।४१
	३	मं.	६।२६।१७।५५	६।२८।२१। ९	७। ०।२४।२३	७। २।२७।३७	७। ४।२९।५६	७। ६।३१।३३
	४	बु.	७। ८।३३।१०	७।१०।३४।४७	७।१२।३६।२४	७।१४।३८। १	७।१६।३९।३८	७।१८।४०।१०
	५	गु.	७।२०।४०।४४	७।२२।४१।१८	७।२४।४१।५२	७।२६।४२।२७	७।२८।४३। १	८। ०।४३।२९
	५	शु.	८। २।४३।४३	८। ४।४३।५८	८। ६।४४।१२	८। ८।४४।२७	८।१०।४४।४१	८।१२।४४।५६
	६	श.	८।१४।४५।२९	८।१६।४६।१०	८।१८।४६।५२	८।२०।४७।३३	८।२२।४८।१४	८।२४।४८।५६
	७	र.	८।२६।४९।४५	८।२८।५१।४०	९। ०।५३।३५	९। २।५५।३०	९। ४।५७।२५	९। ६।५९।२०
	८	चं.	९। ९। १।१५	९।११। ४। ५	९।१३। ७।४३	९।१५।११।२२	९।१७।१५। १	९।१९।१८।३९
	९	मं.	९।२१।२२।१८	९।२३।२६। ५	९।२५।३१।५०	९।२७।३७।३५	९।२९।४३।२०	१०। १।४९। ५
	१०	बु.	१०। ३।५४।५०	१०। ६। ०।३५	१०। ८। ८। ५	१०।१०।१६।२१	१०।१२।२४।३७	१०।१४।३२।५३
	११	गु.	१०।१६।४१।१०	१०।१८।४९।२६	१०।२०।५८।५७	१०।२३। ९।५७	१०।२५।२०।५७	१०।२७।३१।५७
	१२	शु.	१०।२९।४२।५८	११। १।५३।५८	११। ४। ५।५२	११। ६।१९।२७	११। ८।३३। ३	११।१०।४६।३८
	१३	श.	११।१३। ०।१४	११।१५।१३।४९	११।१७।२८।१९	११।१९।४४।२६	११।२२। ०।३४	११।२४।१६।४२
	१४	र.	११।२६।३३।४९	११।२८।४८।५७	०। १। ६। ४	०। ३।२४।११	०। ५।४२।१९	०। ८। ०।२७
	१५	चं.	०।१०।१८।३४	०।१२।३६।४२	०।१४।५६।१६	०।१७।१६।२७	०।१९।३६।३८	०।२१।५६।४९

श्रीसंवत् २०१२ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु दैनिकश्चन्द्रः।

मासः	ति.	वा.	इष्टम् ०।०	इष्टम् १०।०	इष्टम् २०।०	इष्टम् ३०।०	इष्टम् ४०।०	इष्टम् ५०।०
कार्तिक-कृष्णपक्षः	१	म.	०।२४।१७। ०	०।२६।३७।११	०।२८।५९। ०	१। १।२०।५०	१। ३।४२।४१	१। ६। ४।३
	२	बु.	१। ८।२६।२२	१।१०।४८।३२	१।१३।११।१८	१।१५।३४। ४	१।१७।५६।५०	१।२०।१९।३
	४	गु.	१।२२।४२।२३	१।२५। ५।३३	१।२७।२८।४९	१।२९।५२। ६	२। २।१५।२३	२। ४।३८।३
	५	शु.	२। ७। २। ०	२। ९।२५।२७	२।११।४८।५४	२।१४।१२।२१	२।१६।३५।४८	२।१८।५९।१
	६	श.	२।२१।२२।२३	२।२३।४५।१४	२।२६। ८। ५	२।२८।३०।५६	३। ०।५३।४८	३। ३।१९।३
	७	र.	३। ५।३८।३०	३। ८। ०।१८	३।१०।२२। ६	३।१२।४३।५४	३।१५। ५।४३	३।१७।२७। ८
	८	चं.	३।१९।४७।५१	३।२२। ८।३४	३।२४।२९।१७	३।२६।५०। १	३।२९।१०।४४	४। १।२९।३
	९	मं.	४। ३।४७।२७	४। ६। ५।१८	४। ८।२३। ९	४।१०।४१। ०	४।१२।५८।५१	४।१५।१५।२
	१०	बु.	४।१७।३३।४०	४।१९।४७।५७	४।२२। ४।१४	४।२४।२०।३१	४।२६।३६।४८	४।२८।५०।३
	११	गु.	५। १। ४।२१	५। ३।१८। ६	५। ५।३१।५०	५। ७।४५।३५	५। ९।५९।१९	५।१२।२०।३
	१२	शु.	५।१४।२२।४७	५।१६।३३। ०	५।१८।४४।१३	५।२०।५५।२६	५।२३। ६।३९	५।२५।१५।२
	१३	श.	५।२७।२३।३५	५।२९।३३।१०	६। १।४०।३५	६। ३।४८।५९	६। ५।५७।२४	६। ८। ४।१
	१४	र.	६।१०।१०। ४	६।१२।१५।५९	६।१४।२१।५४	६।१६।२७।४९	६।१८।३३।४४	६।२०।३८।५
	३०	चं.	६।२२।४२।३५	६।२४।४६।१४	६।२६।४९।५३	६।२८।५३।३१	७। ०।५७।१०	७। ३। ०।४
कार्तिक-शुक्लपक्षः	१	मं.	७। ५। ३। ८	७। ७। ५।१०	७। ९। ७।१३	७।११। ९।१६	७।१३।११।१८	७।१५।१३।२
	२	बु.	७।१७।१५। २	७।१९।१५।४९	७।२१।१६।३६	७।२३।१७।२३	७।२५।१८।१०	७।२७।१८।५८
	३	गु.	७।२९।१९।४५	८। १।२०।१०	८। ३।२०।२४	८। ५।२०।३९	८। ७।२०।५३	८। ९।२१। ८
	४	शु.	८।११।२१।२२	८।१३।२१।३६	८।१५।२२। ८	८।१७।२२।४१	८।१९।२३।१३	८।२१।२३।४
	५	श.	८।२३।२४।१८	८।२५।२४।५१	८।२७।२५।४७	८।२९।२७।२०	९। १।२८।५३	९। ३।३०।२
	६	र.	९। ५।३१।५९	९। ७।३३।३२	९। ९।३५। ५	९।११।३७।५२	९।१३।४०।५८	९।१५।४४।
	७	चं.	९।१७।४७।११	९।१९।५०।१८	९।२१।५३।२४	९।२३।५७।११	९।२६। २।३०	९।२८। ७।२
	८	मं.	१०। ०।१३। ९	१०। २।१८।२९	१०। ४।२३।४८	१०। ६।२९। ८	१०। ८।३६।३०	१०।१०।४४।
	९	बु.	१०।१२।५९।३७	१०।१४।५९।१०	१०।१७। ६।४४	१०।१९।१४।१७	१०।२१।२३।३४	१०।२३।३३।
	१०	गु.	१०।२५।४४। ०	१०।२७।५४।१३	११। ०। ४।२६	११। २।१४।४०	११। ४।२६।१६	११। ६।३९।
	११	शु.	११। ८।५२।११	११।११। ५। ९	११।१३।१८। ६	११।१५।३१। ४	११।१७।४५।१५	११।२०। ०।४
	१२	श.	११।२२।१६।१२	११।२४।३१।४१	११।२६।४७। ९	११।२९। २।३८	०। १।१९।२६	०। ३।३७।१
	१३	र.	०। ५।५४।५४	०। ८।१२।३८	०।१०।३०।२२	०।१२।४८। ६	०।१५। ७।२६	०।१७।२७।१
	१४	चं.	०।१९।४७। ४	०।२२। ६।५३	०।२४।२६।४२	०।२६।४६।३६	०।२९। ७।५९	१। १।२९।२
	१५	मं.	१। ३।५०।४५	१। ६।१२। ८	१। ८।३३।३१	१।१०।५५।२३	१।१३।१७।५९	१।१५।४०।३५
मार्गशीर्ष-कृष्णपक्षः	१	बु.	१।१८। ३।११	१।२०।२५।४७	१।२२।४८।२४	१।२५।११।२५	१।२७।३४।३४	१।२९।५७।४३
	२	गु.	२। २।२०।५२	२। ४।४४। १	२। ७। ७।१६	२। ९।३०।४५	२।११।५४।१५	२।१४।१४।३
	३	शु.	२।१६।४१।१४	२।१९। ४।४४	२।२१।२७।५८	२।२३।५०।५९	२।२६।१४। १	२।२८।३७।
	४	श.	३। १। ०। ४	३। ३।२३। ५	३। ५।४५। ८	३। ८। ७।११	३।१०।२९।१४	३।१२।४५।१८
	५	र.	३।१५।१३।२१	३।१७।३४।५५	३।१९।५५।४३	३।२२।१६।३१	३।२४।३७।१९	३।२६।५८।
	६	चं.	३।२९।१८।५६	४। १।३८।१६	४। ३।५६।५९	४। ६।१५।४३	४। ८।३४।२७	४।१०।५३।१०
	७	मं.	४।१३।११।५४	४।१५।२८।५३	४।१७।४५।४५	४।२०। १।३७	४।२२।१९।२९	४।२४।३६।२१
	९	बु.	४।२६।५२।५९	४।२९। ७।२१	५। १।२२।४४	५। ३।३६। ७	५। ५।५०।२९	५। ८।४५।
	१०	गु.	५।१०।१८।५३	५।१२।३०।३६	५।१४।४२।१९	५।१६।५४। २	५।१९। ५।४६	५।२१।१७।२
	११	शु.	५।२३।२९। २	५।२५।३८। ८	५।२७।४७।१४	५।२९।५६।२०	६। २। ५।२६	६। ४।१४।२
	१२	श.	६। ६।२३।३८	६। ८।३०।२२	६।१०।३६।४४	६।१२।४३। ७	६।१४।४९।३०	६।१६।५५।५
	१३	र.	६।१९। १।१५	६।२१। ७।३२	६।२३।११।४९	६।२५।१६। ६	६।२७।२०।२३	६।२९।२४।४
	१३	चं.	७। १।२८।५८	७। ३।३३। ३	७। ५।३५।२२	७। ७।३७।४२	७। ९।४०। १	७।११।४२।२
	१४	मं.	७।१३।४४।४०	७।१५।४७। ०	७।१७।४८।३८	७।१९।४९।४५	७।२१।५०।५२	७।२३।५१।५
	३०	बु.	७।२५।५३। ६	७।२७।५४।१३	७।२९।५५।२०	८। १।५५।४०	८। ३।५५।५६	८। ५।५६।१

श्रीसंवत् २०१२ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः ।

मासः	ति.	वा.	इष्टम् ०।०	इष्टम् १०।०	इष्टम् २०।०	इष्टम् ३०।०	इष्टम् ४०।०	इष्टम् ५०।०
मार्गशीर्ष-शुक्लपक्षः	१	गु.	८। ७।५६।२८	८। ९।५६।४५	८।११।५७। १	८।१३।५७।१८	८।१५।५७।३७	८।१७।५७।५७
	२	शु.	८।१९।५८।१६	८।२१।५८।३६	८।२३।५८।५५	८।२५।५९।१५	८।२८। ०।१२	९। ०। १।२४
	३	श.	९। २। २।३७	९। ४। ३।५०	९। ६। ५। २	९। ८। ६।१५	९।१०। ७।३३	९।१२।१०। ५
	४	र.	९।१४।१२।३८	९।१६।१५।१०	९।१८।१७।४३	९।२०।२०।१५	९।२२।२२।४८	९।२४।२६।३३
	५	चं.	९।२६।३३।१९	९।२८।३६। ५	१०। ०।४०।५१	१०। २।४५।३८	१०। ४।५०।२४	१०। ६।५५।२६
	६	मं.	१०। ९। २।१७	१०।११। ९। ८	१०।१३।१५।५९	१०।१५।२२।५०	१०।१७।२९।४१	१०।१९।३६।३२
	७	बु.	१०।२१।४५।३८	१०।२३।५५।१५	१०।२६। ४।५३	१०।२८।१४।३०	११। ०।२४। ८	११। २।३३।४५
	८	गु.	११। ४।४५। १	११। ६।५७।१०	११। ९। ९।२०	११।११।२१।२९	११।१३।३३।३९	११।१५।४५।४८
	९	शु.	११।१७।५९।३४	११।२०।१४।२६	११।२२।२९।१८	११।२४।४४।१०	११।२६।५९। ३	११।२९।१३।५५
	१०	श.	०। १।३०।१९	०। ३।४७।३०	०। ६। ४।४१	०। ८।२१।५२	०।१०।३९। ३	०।१२।५६।१४
	११	र.	०।१५।१५। ५	०।१७।३४।१७	०।१९।५३।३०	०।२२।१२।४३	०।२४।३१।५५	०।२६।५१।१७
	१२	चं.	०।२९।१२।१७	१। १।३३।१८	१। ३।५४।१९	१। ६।१५।१९	१। ८।३६।२०	१।१०।५७।४८
	१३	मं.	१।१३।१९।५६	१।१५।४२। ४	१।१८। ४।१२	१।२०।२६।२१	१।२२।४८।२९	१।२५।११।२३
	१४	बु.	१।२७।३४।३०	१।२९।५७।३७	२। २।२०।४४	२। ४।४३।५१	२। ७। ७। ०	२। ९।३०।२४
	१५	गु.	२।११।५३।४९	२।१४।१७।१४	२।१६।४०।३८	२।१९। ४। ३	२।२१।२७।१६	२।२३।५०।२०

मासः	ति.	वा.	इष्टम् ०।०	इष्टम् १०।०	इष्टम् २०।०	इष्टम् ३०।०	इष्टम् ४०।०	इष्टम् ५०।०
पौष-कृष्णपक्षः	१	शु.	२।२६।१३।२४	२।२८।३६।२८	३। ०।५९।३३	३। ३।२२।३६	३। ५।४४।५४	३। ८। ७।१३
	३	श.	३।१०।२९।३१	३।१२।५१।५०	३।१५।१४। ८	३।१७।३६।५४	३।१९।५६।४९	३।२२।१७।४५
	४	र.	३।२४।३८।४०	३।२६।५९।३६	३।२९।२०।३१	४। १।४०।२७	४। ३।५९।३४	४। ६।१८।५१
	५	चं.	४। ८।३८। ८	४।१०।५७।२५	४।१३।१६।४३	४।१५।३४। ३	४।१७।५१।१८	४।२०। ८।३४
	६	मं.	४।२२।२५।४९	४।२४।४३। ५	४।२७। ०। १	४।२९।१४।५५	५। १।२९।५०	५। ३।४४।४४
	७	बु.	५। ५।५९।३९	५। ८।१४।३३	५।१०।२८।५२	५।१२।४१। ५	५।१४।५३।१९	५।१७। ५।३३
	८	गु.	५।१९।१७।४६	५।२१।३०। ०	५।२३।४१।४९	५।२५।५१।२६	५।२८। १। ४	६। ०।१०।४१
	९	शु.	६। २।२०।१९	६। ४।२९।५६	६। ६।३९।३४	६। ८।४६।३४	६।१०।५३।३३	६।१३। ०।३३
	१०	श.	६।१५। ७।३१	६।१७।१४।३०	६।१९।२१।२९	६।२१।२६।५४	६।२३।३१।३८	६।२५।३६।२३
	११	र.	६।२७।४१। ७	६।२९।४५।५२	७। १।५०।३६	७। ३।५४।४५	७। ५।५७।२३	७। ८। ०। १
	१२	चं.	७।१०। २।३९	७।१२। ५।१७	७।१४। ७।५५	७।१६।१०।३३	८।१८।१२। ९	७।२०।१३।२२
	१३	मं.	७।२२।१४।३८	७।२४।१५।५३	७।२६।१७। ७	७।२८।१८।२२	८। ०।१९।२७	८। २।१९।४५
	१४	बु.	८। ४।२०। ३	८। ६।२०।२१	८। ८।२०।३९	८।१०।२०।५७	८।१२।२१।१५	८।१४।२१।३१
	३०	गु.	८।१६।२१।४५	८।१८।२२। ०	८।२०।२२।१४	८।२२।२२।२९	८।२४।२२।४३	८।२६।२२।५८
	३०	शु.	८।२८।२३।५०	९। ०।२४।४८	९। २।२५।४६	९। ४।२६।४४	९। ६।२७।४२	९। ८।२८।४०

मासः	ति.	वा.	इष्टम् ०।०	इष्टम् १०।०	इष्टम् २०।०	इष्टम् ३०।०	इष्टम् ४०।०	इष्टम् ५०।०
पौष-शुक्लपक्षः	१	श.	९।१०।२९।५६	९।१२।३२। ६	९।१४।३४।१६	९।१६।३६।२६	९।१८।३८।३६	९।२०।४०।४६
	२	र.	९।२२।४२।५६	९।२४।४६।३०	९।२६।५०।३९	९।२८।५४।४९	१०। ०।५८।५८	१०। ३। ३। ८
	३	चं.	१०। ५। ७।१८	१०। ७।१२। ०	१०। ९।१८।२१	१०।११।२४।४२	१०।१३।३१। ३	१०।१५।३७।२४
	४	म	१०।१७।४३।४५	१०।१९।५०। ६	१०।२१।५८।४८	१०।२४। ७।४१	१०।२६।१६।३५	१०।२८।२५।२८
	५	बु.	११। ०।३४।२२	११। २।४३।१५	११। ४।५४। ६	११। ७। ५।४३	११। ९।१७।२०	११।११।२८।५७
	६	गु.	११।१३।४०।३४	११।१५।५२।११	११।१८। ५।२७	११।२०।१९।४०	११।२२।३३।५४	११।२४।४८। ८
	७	शु.	११।२७। २।२१	११।२९।१६।३५	०। १।३३।३०	०। ३।४९।१२	०। ६। ५।५५	०। ८।२२।३८
	८	श.	०।१०।३९।२०	०।१२।५६। ३	०।१५।१४।२१	०।१७।३२।५७	०।१९।५१।३४	०।२२।१०।१०
	९	र.	०।२४।२८।४७	०।२६।४७।३०	०।२९। ८।१३	१। १।२८।५६	१। ३।४९।३९	१। ६।१०।२३
	१०	चं.	१। ८।३१। ६	१।१०।५२।१५	१।१३।१४। ५	१।१५।३५।५६	१।१७।५७।४७	१।२०।१९।३७
	१२	मं.	१।२२।४१।२८	१।२५। ४। १	१।२७।२६।५०	१।२९।४९।३९	२। २।१२।२८	२। ४।३५।१७
	१३	बु.	२। ६।५८।१०	२। ९।२१।३४	२।११।४४।५९	२।१४। ८।२४	२।१६।३१।४८	२।१८।५५।१३
	१४	गु.	२।२१।१८।२८	२।२३।४१।३५	२।२६। ४।४२	२।२८।२७।४९	३। ०।५०।५६	३। ३।१४। ३
	१५	श.	३। ५।३६।३५	३। ७।५९। ६	३।१०।२१।३७	३।१२।४४। ८	३।१५। ६।३९	३।१७।२८।४५

श्रीसंवत् २०१२ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः

मासः	ति.	वा.	इष्टम् ०।०	इष्टम् १०।०	इष्टम् २०।०	इष्टम् ३०।०	इष्टम् ४०।०	इष्टम् ५०।०
माघ-कृष्णपक्षः	१	श.	३।१९।५०। ३	३।२२।११।२१	३।२४।३२।३९	३।२६।५३।५७	३।२९।१५।१५	४। १।३५।२१
	२	र.	४। ३।५५।१३	४। ६।१४।५७	४। ८।३४।४१	४।१०।५४।२५	४।१३।१४।१०	४।१५।३३।५०
	३	चं.	४।१७।४९।२४	४।२०। ६।५९	४।२२।२४।३३	४।२४।४२। ८	४।२६।५९।२५	४।२९।१४।५६
	४	मं.	५। १।३०।२७	५। ३।४५।५८	५। ६। १।२९	५। ८।१७। ०	५।१०।३१।५३	५।१२।४४।४४
	५	बु.	५।१४।५७।३५	५।१७।१०।२६	५।१९।२३।१७	५।२१।३६। ८	५।२३।४८।२६	५।२५।५८।३९
	६	गु.	५।२८।२८।५२	६। ०।१९। ५	६। २।२९।१९	६। ४।३९।३२	६। ६।४९।३४	६। ८।५७। ७
	७	शु.	६।११। ४।४१	६।१३।१२।१४	६।१५।१९।४८	६।१७।२७।२१	६।१९।३४।५५	६।२१।४०।३४
	८	श.	६।२३।४५।४५	६।२५।५०।५७	६।२७।५६। ९	७। ०। १।२०	७। २। ६।३२	७। ४।१०।५१
	९	र.	७। ६।१३।५३	७। ८।१६।५६	७।१०।१९।५९	७।१२।२३। १	७।१४।२६। ४	७।१६।२९। ७
	१०	चं.	७।१८।३०।४४	७।२०।३२।११	७।२२।३३।३८	७।२४।३५। ५	७।२६।३६।३२	७।२८।३८। ०
	११	मं.	८। ०।३९। ८	८। २।३९।३३	८। ४।३९।५८	८। ६।४०।२३	८। ८।४०।४९	८।१०।४१।१४
	१२	बु.	८।१२।४१।३९	८।१४।४१।५४	८।१६।४२। ३	८।१८।४२।१२	८।२०।४२।२१	८।२२।४२।३०
	१३	गु.	८।२४।४२।३९	८।२६।४२।४९	८।२८।४३।२९	९। ०।४४। ९	९। २।४४।४९	९। ४।४५।२९
	१४	शु.	९। ६।४६। ९	९। ८।४६।४९	९।१०।४७।५५	९।१२।४९।४४	९।१४।५१।३४	९।१६।५३।२३
	३०	श.	९।१८।५५।१३	९।२०।५७। २	९।२२।५८।५२	९।२५। २।१३	९।२७। ५।५१	९।२९। ९।३०
माघ-शुक्लपक्षः	१	र.	१०। १।१३। ९	१०। ३।१६।४७	१०। ५।२०।२६	१०। ७।२४।५२	१०। ९।३०।४१	१०।११।३६।३०
	२	चं.	१०।१३।४२।१९	१०।१५।४८। ८	१०।१७।५३।५७	१०।१९।५९।४६	१०।२२। ८। १	१०।२४।१६।१५
	३	मं.	१०।२६।२४।३०	१०।२८।३२।४४	११। ०।४०।५९	११। २।४९।१३	११। ४।५९।३७	११। ७।१०।४१
	४	बु.	११। ९।२२।४६	११।११।३२।५०	११।१३।४३।५५	११।१५।५४।५९	११।१८। ७।४६	११।२०।२१।२६
	५	गु.	११।२२।३५। ६	११।२४।४८।४६	११।२७। २।२६	११।२९।१६। ६	०। १।३१।२८	०। ३।४७।३८
	६	शु.	०। ६। ३।४८	०। ८।१९।५८	०।१०।३६। ८	०।१२।५२।१९	०।१५। ९।५९	०।१७।२८। २
	७	श.	०।१९।४६। ५	०।२२। ४। ८	०।२४।२२।२१	०।२६।४०।१४	०।२९। ०।३२	१। १।२०।५१
	८	र.	१। ३।४१। ९	१। ६। १।२८	१। ८।२१।४६	१।१०।४२।२९	१।१३। ४। ४	१।१५।२५।४०
	९	चं.	१।१७।४७।१५	१।२०। ८।५१	१।२२।३०।२६	१।२४।५२।४८	१।२७।१५।३४	१।२९।३८।२०
	१०	मं.	२। २। १। ६	२। ४।२३।५३	२। ६।४६।४१	२। ९। ९।५०	२।११।३२।५९	२।१३।५६। ८
	११	बु.	२।१६।१९।१७	२।१८।४२।२६	२।२१। ५।३९	२।२३।२८।५३	२।२५।५२। ८	२।२८।१५।२२
	१२	गु.	३। ०।३८।३७	३। ३। १।५१	३। ५।२४।३४	३। ७।४७।१२	३।१०। ९।५१	३।१२।३२।३०
	१३	शु.	३।१४।५५। ८	३।१७।१७।३१	३।१९।३९। ४	३।२२। ०।३७	३।२४।२२।१०	३।२६।४३।४३
	१४	श.	३।२९। ५।१६	४। १।२५।५६	४। ३।४६। २	४। ६। ६। ८	४। ८।२६।१४	४।१०।४६।२१
	१५	र.	४।१३। ६।२७	४।१५।२४।३६	४।१७।४२।३१	४।२०। ०।२७	४।२२।१८।२३	४।२४।३६।१८
फाल्गुन-कृष्णपक्षः	२	चं.	४।२६।५८। ३	४।२९।१०। १	५। १।२६। ०	५। ३।४१।५८	५। ५।५७।५७	५। ८।१३।५५
	३	मं.	५।१०।२९।२१	५।१२।४२।४७	५।१४।५६।१४	५।१७। ९।४१	५।१९।२३। ७	५।२१।३६।३४
	४	बु.	५।२३।४९।२६	५।२६। ०।१५	५।२८।११। ५	६। ०।२१।५४	६। २।३३।४४	६। ४।४३।३३
	५	गु.	६। ६।५४। ५	६। ९। १।११	६।११।१०।१७	६।१३।१८।२३	६।१५।२६।३०	६।१७।३४।३६
	६	शु.	६।१९।४२।४२	६।२१।४८।३६	६।२३।५४। ९	६।२५।५९।४२	६।२८। ५।१५	७। ०।१०।४९
	७	श.	७। २।१६।२२	७। ४।२०।५६	७। ६।२४।२७	७। ८।२७।५८	७।१०।३१।२९	७।१२।३५। ०
	८	र.	७।१४।३८।३१	७।१६।४२। २	७।१८।४३।४२	७।२०।४५।२३	७।२२।४७। ३	७।२४।४८।४४
	८	चं.	७।२६।५०।२४	७।२८।५२। ५	८। ०।५३।१६	८। २।५३।५२	८। ४।५४।२८	८। ६।५५। ४
	९	मं.	८। ८।५५।४०	८।१०।५६।१७	८।१२।५६।५३	८।१४।५७। ७	८।१६।५७।१६	८।१८।५७।२५
	१०	बु.	८।२०।५७।३४	८।२२।५७।४३	८।२४।५७।५२	८।२६।५८। ४	८।२८।५८।३३	९। ०।५९। २
	११	गु.	९। २।५९।३१	९। ५। ०। ०	९। ७। ०।२९	९। ९। ०।५८	९।११। १।५८	९।१३। ३।२९
	१२	शु.	९।१५। ५। ०	९।१७। ६।३१	९।१९। ८। २	९।२१। ९।३३	९।२३।११। ४	९।२५।१४। ८
	१३	श.	९।२७।१७।१८	९।२९।२०।२८	१०। १।२३।३८	१०। ३।२६।४९	१०। ५।२९।५९	१०। ७।३४। ५
	१४	र.	१०। ९।३९।२२	१०।११।४४।४०	१०।१३।४९।५७	१०।१५।५५।१५	१०।१८। ०।३२	१०।२०। ५।५७
	३०	चं.	१०।२२।१३।३८	१०।२४।२१।२०	१०।२६।२९। १	१०।२८।३६।४३	११। ०।४४।२४	११। २।५२। ६

अथ शतद्रु (रूपगढ़) स्पष्टार्कोदयादारभ्य दश दश घटीषु दैनिकः स्पष्टश्चन्द्रः।

मासः	ति.	वा.	इष्टम् ०।०	इष्टम् १०।०	इष्टम् २०।०	इष्टम् ३०।०	इष्टम् ४०।०	इष्टम् ५०।०
फाल्गुन-शुक्लपक्षः	१	मं.	११। ५। १।५६	११। ७।१२।२०	११। ९।३२।४४	११।११।४३। ८	११।१३।५३।३२	११।१६। ३।५६
	२	बु.	११।१८। ६। ०	११।२०।१९। ०	११।२२।३२। ०	११।२४।४५। ०	११।२६।५८। ०	११।२९।११। ०
	३	गु.	०। १।२५।४३	०। ३।४१।२५	०। ५।५७। ८	०। ८।१२।५०	०।१०।२८।३३	०।१२।४४।१५
	४	शु.	०।१५। १।२६	०।१७।१९। ७	०।१९।३६।४९	०।२१।५४।३०	०।२४।१२।१२	०।२६।२९।५३
	५	श.	०।२८।४९।३२	१। १। ९।१८	१। ३।२९। ५	१। ५।४८।५२	१। ८। ८।३८	१।१०।२८।४५
	६	र.	१।१२।५०।१०	१।१५।११।३६	१।१७।३३। १	१।१९।५४।२७	१।२२।१५।५२	१।२४।३७।५४
	७	चं.	१।२७। ०।२५	१।२९।२२।५६	२। १।४५।२७	२। ४। ७।५८	२। ६।३०।२९	२। ८।५३।३४
	८	मं.	२।११।१६।४१	२।१३।३९।४८	२।१६। २।५५	२।१८।२६। २	२।२०।४९।११	२।२३।१२।२५
	१०	बु.	२।२५।३५।४०	२।२७।५८।५४	३। ०।२२। ९	३। २।४५।२३	३। ५। ८।१८	३। ७।३१। ७
	११	गु.	३। ९।५३।५६	३।१२।१६।४५	३।१४।३९।३४	३।१७। २।१४	३।१९।२४। ७	३।२१।४६। ०
	१२	शु.	३।२४। ७।५३	३।२६।२९।४६	३।२८।५१।३९	४। १।१२।४६	४। ३।३३। ९	४। ५।५३।३३
	१३	श.	४। ८।१३।५६	४।१०।३४।२०	४।१२।५४।४३	४।१५।१३।२८	४।१७।३३।५०	४।१९।५०।१२
	१४	र.	४।२२। ८।३४	४।२४।२६।२६	४।२६।४४।१४	४।२९। १।४५	५। १।१८।१६	५। ३।३४।४७
	१५	चं.	५। ५।५१।१८	५। ८। ७।४९	५।१०।२३।५४	५।१२।३७।५४	५।१४।५१।५४	५।१७। ५।५४
चैत्र-कृष्णपक्षः	१	मं.	५।१९।१९।५५	५।२१।३३।५५	५।२३।४७।२२	५।२५।५८।४१	५।२८।१०। १	६। ०।२१।२०
	२	बु.	६। २।३२।४०	६। ४।४३।५९	६। ६।५५। १	६। ९। ३।४४	६।११।१२।२७	६।१३।२१।१०
	३	गु.	६।१५।२९।५४	६।१७।३८।३७	६।१९।४७।२१	६।२१।५३।३९	६।२३।५९।४२	६।२६। ५।४५
	४	शु.	६।२८।११।४८	७। ०।१७।५१	७। २।२३।५४	७। ४।२८।४६	७। ६।३३।४०	७। ८।३६।३४
	५	श.	७।१०।४०।२८	७।१२।४४।२३	७।१४।४८।१७	७।१६।५२। ०	७।१८।५४। २	७।२०।५६। ५
	६	र.	७।२२।५८। ८	७।२५। ०।१०	७।२७। २।१३	७।२९। ४।१६	८। १। ५।३७	८। ३। ६।२२
	७	चं.	८। ५। ७। ७	८। ७। ७।५२	८। ९। ८।३८	८।११। ९।२३	८।१३।१०। ८	८।१५।१०।२४
	८	मं.	८।१७।१०।३६	८।१९।१०।४९	८।२१।११। १	८।२३।११।१४	८।२५।११।२६	८।२७।११।४१
	९	बु.	८।२९।११।५९	९। १।१२।१७	९। ३।१२।३५	९। ५।१२।५३	९। ७।१३।११	९। ९।१३।२९
	१०	गु.	९।११।१४।२६	९।१३।१५।४८	९।१५।१७।१०	९।१७।१८।३२	९।१९।१९।५४	९।२१।२१।१६
	११	शु.	९।२३।२२।३९	९।२५।२५।१३	९।२७।२७।४८	९।२९।३०।२२	१०। १।३२।५७	१०। ३।३५।३१
	११	श.	१०। ५।३८। ६	१०। ७।४१।५०	१०। ९।४६।४६	१०।११।५१।४२	१०।१३।५६।३८	१०।१६। १।३४
	१२	र.	१०।१८। ६।३०	१०।२०।११।३९	१०।२२।१८।५०	१०।२४।२६। १	१०।२६।३३।१२	१०।२८।४०।२३
	१३	चं.	११। ०।४७।३४	११। २।५४।४५	११। ५। ४। ०	११।७।१३।४३	११। ९।२३।२७	११।११।३३।११
	१४	मं.	११।१३।४२।५४	११।१५।५२।३८	११।१८। ४। ५	११।२०।१६।२९	११।२२।२८।५४	११।२४।४१।१९
	३०	बु.	११।२६।५३।४३	११।२९। ६। ८	०। १।२०। ७	०। ३।३५। ८	०। ५।५०। ९	०। ८। ५।११

श्रीगणेशाम्बागुरुभ्यो नमः।

खचरगतिविधानामुद्गमानुद्गमाद्यान् विविधवचनजालांल्लोकयन् शास्त्रसिद्धान्। भरतभुवि समस्तायाञ्च पञ्चापदेशे, करकलनमुहूर्तालीमहं संलिखामि॥

सं० २०१२ मध्ये विवाहादिमुहूर्ताः।

अथ समयशुद्धिः

गुर्वस्तः—श्रावण शुक्ल ३ शुक्रवार से प्र० भाद्रपद कृष्ण १२ चन्द्रवार तक (सौरमान से श्रावण प्र० ७ से श्रावण प्र० ३१ तक) गुरु अस्त रहेगा। **शुक्रास्तः**—प्र० भाद्रपदकृष्ण ६ भौमवार से आश्विनशुक्ल ३ भौमवार तक (सौरमान से श्रावण प्र० २५ से कार्तिक प्र० २ तक) शुक्र पूर्व में अस्त रहेगा।

ग्रहलाघवकार ने जो शुक्रोदयास्त के दिन लिखे हैं, वह स्थूल रूप से मध्यम मान के हैं। सूक्ष्म-स्पष्ट-मान के तो श्री केतकराचार्यकृत ज्योतिर्गणित से निकलते हैं सो हमने वही स्पष्ट करके लिखे हैं। आकाशीय वातावरण ठीक हो तो प्रत्यक्ष दिखा भी सकते हैं।

सूचना—अस्त से पहिले तीन दिन वृद्धत्व दोष और उदय से पीछे तीन दिन बाल्यत्व दोष विशेष होता है जो अस्त की भांति सर्व शुभ कार्यों में वर्जित है।

शुद्धानि सपरिहाराणि च विवाहमुहूर्तानि
सब देशों के लिये—

वै. प्र २० (वै. शु. ११ चं.) उ. फा. अनु. ।।।।ऽ।।। ल. १०, १२ मकरे. श. दा., मीने चं. दा.

ज्ये. प्र. ४ (ज्ये. कृ. १०. मं.) उ.भा. अनु.।।।।ऽअग्नि ऽऽ।। ल. १०, ११ मकरे गु. दा., कुम्भे शु. दा.,

ज्ये. प्र. ५ (ज्ये. कृ. ११ बु.) उ.भा. अनु.।।।।।ऽऽ।। दि. ल. ४,

ज्ये. प्र. ५ (ज्ये. कृ. ११ बु.) रेव. ऽरा.।।।।।।ऽ।। ल. १०, ११ मकरे गु. दा., कुम्भे श. दा.

ज्ये. प्र. १४ (ज्ये. शु. ६ शु.) मघा ।।।।।ऽ।। ल. ११ शु. दा., चं. दा.,

ज्ये. प्र. १५ (ज्ये. शु. ७ श.) मघा ।।।।ऽन्. ऽऽ।। दि. ल. ४

ज्ये. प्र. १६ (ज्ये. शु. ८ र.) उ.फा.।।।।।ऽ।।। ल. ११ श. दा., चं.दा.,

ज्ये. प्र. १७ (ज्ये. शु. ९ चं.) उ.फा. ।।।।ऽश्वो.ऽ।।। दि. ल. ४, ५, रा. ल. १०, घ. ४५ या.,

ज्ये. प्र. १७ (ज्ये. शु. ९ चं.) हस्त ऽगु.।।।।ऽची.।ऽ।। ल. १२, चं. दा.,
ज्ये.प्र. १८ (ज्य. शु. १० मं)हस्त ऽगु.।।।।ऽचौ.।ऽ।। दि. ल. ४, ५,
ज्ये. प्र. २० (ज्य. शु. १२ गु.) स्वा. ऽसु.।।।।ऽरो.।।।। दि. ल. ४, ५,
ज्ये. प्र. २३ (ज्ये. शु. १५ र.) अनु. ।।।।ऽऽअ.।ऽ।। दि. ल. ४ घ. ९।१९ या.,
ज्ये. प्र. ३२ (आषा. कृ. ९ मं.) रेव. ऽरा.।।।।ऽअ.।ऽ।। ल. १०, ११ मकर गु. दा.,
आषा. प्र. १० (आषा. शु. ५ शु.) मघा ।।।।।ऽरो.ऽऽ।।दि. ल. ४ घ. ६।४६ उ., रात्रौ ल. ११, २ कुम्भे चं. दा.,
आषा. प्र. १३ (आषा. शु. ८ चं.)हस्त. ऽगु.।।।।ऽअ.।ऽ।ऽ ल. १० गु. दा.,
आषा. प्र. १५ (आषा. शु. १० बु.) स्वा.।।।।।ऽनृ.।ऽ।। ल. १०, ११ मकरे गु. दा.,

देशाचार से केवल पञ्जाब के लिए

आषा. प्र. १६ (आषा. शु. ११ गु.) स्वा. ।।।।।।ऽ।। दि. ल. ४, ५,
आषा. प्र. १७ (आषा. शु. १२ शु.) अनु. ऽसू.ऽ।।।ऽचौ.।।।। ल. ११, १२, मीने शु. दा.
आषा. प्र. १८ (आषा. शु. १३ श.) अनु.ऽसू.ऽ।।।ऽचौ.।।।। दि. ल. ५,६
आषा. प्र. २७ (श्राव. कृ. ६ चं.) उ. भा. ऽचं. बु.।।।।ऽचौ.ऽ।।। ल. २
आषा. प्र. २८ (श्राव. कृ. ७ मं.) रेव. ऽरा.।।।।ऽरो.।ऽ।ऽ ल. ११, २

द्विगर्तादि पर्वतीय प्रान्तों के लिए

कार्ति. प्र. १३ (आश्वि. शु. १३ श.) रे. ।ऽ।।ऽमं.ऽअ.।।। ल. धूलिमुख
कार्ति. प्र. १४ (आश्वि. शु. १४ र.) रे.।ऽ।।ऽमं।।।। दि.ल. ९, आव. भौ. दा.
कार्ति. प्र. २२ (कार्ति. कृ. ८ चं.)म. ।।ऽगु.।।ऽअ. (४५ घ. या.) ऽऽ।।, ल. चिं.
कार्ति. प्र. २३ (कार्ति. कृ. ९ म.)मं।।ऽगु. ।।।ऽऽ।। दि. ल. ९ भौ. गु. दा., आव, धूलिमुख
कार्ति. प्र. २४ (कार्ति. कृ. १० बु.)उ.फा. ।ऽ।।ऽनृ. (४४ घ. या.) ऽऽ।। ल. ४ (अं. ११ उ.)

सर्व देशों के लिए

मार्ग. प्र. १० (कार्ति.शु. ११ शु.) उ. भा. ऽरा. ।।।ऽरो. ऽ।।।दि.ल.९
मार्ग. प्र. ११ (कार्ति. शु. १२ श.) रे. ।।।।।।।।। दि. ल. ९
मार्ग. प्र. २२ (मार्ग. कृ. ९ बु.) उ. फा. ऽबु. ।।।ऽअ. (१९ घ. या.) ऽऽ।। दि. ल. ९ श. दा., रा. ल. ५
माघ प्र. ५ (पौष शु. ५ बु.) उ. भा. ऽरा. ।।।ऽनृ. (२२ घ. उ.) ऽ।।। ल. ७, आव. चं. दा.
माघ प्र. ६ (पौष शु. ६ गु.) उ. भा. ऽरा. ।।।ऽनृ. ऽ।।। दि. ल. ११ गु. दा.

माघ प्र. ६ (पौष शु. ६ गु.) रे. ।।।।।।।। ल. ७, आव. चं. दा.
माघ प्र. ७ (पौष. शु. ७ शु.) रे. ।।।।।।।।। दि. ल. ११, आव. च. दा.
माघ प्र. १७ (माघ. कृ. ३ चं.) उ. फा. ।।।ऽशु. ।।ऽ।। ल. ७
माघ प्र. १८ (माघ कृ. ४ मं.) उ. फा. ।।।ऽशु.ऽरो. ।ऽ।। ल. गोधूलिः
माघ प्र. १८ (माघ कृ. ४ मं) ह. ।।।।ऽरो. ऽऽ।। ल. ७ चं. दा.
माघ प्र. १९ (माघ कृ.५ बु.)ह. ।।।।ऽरो. (५ घ.या.) ऽऽ।। ल.गोधूलिः
माघ प्र. २५ (माघ कृ. ११ मं.)मू. ।ऽ।।ऽचौ.।ऽ।ऽ (२९।१४ उ.) दि. ल. ११, गु. भौ. दा.
फाल्गु. प्र. ४ (माघ शु. ४ बु.) रे. ।ऽ।।।ऽऽ।। ल. १०, शु. गु. दा.
फाल्गु. प्र. ५ (माघ शु. ५ गु.) रे. ।ऽ।।।ऽऽ।। दि.ल. १, आवश्य.चं.दा.
फाल्गु. प्र. ९ (माघ शु. ९ चं.)मृ. ।।।ऽरा.ऽरो.ऽ।।। ल. १०, आवश्य. सू. गु. दा.
फाल्गु. प्र. १० (माघ. शु. १० मं.) मृ. ।।।ऽरा.ऽरो. ऽ।।। दि. ल. १, अत्या. गु. दा.
फाल्गु. प्र. २६ (फाल्गु. कृ. ११ गु.) उ. षा.ऽमं.।।।।ऽचौ ।ऽ।। दि. ल. १,

आर्ष (कात्यायन) मत के विवाहमुहूर्त

वै. प्र. ४ (वै. कृ. ९ श.) श्रव. ।ऽ।।ऽ।ऽ।। ल. ११
वै. प्र. ५ वै. कृ. १० र.) धनि. ऽश. ।।।।।ऽ।। ल. १०, १२
वै. प्र. २२ (वै. शु. १३ बु.) चि. ।।।ऽगु.ऽअ.ऽ।।। ल. १०,१२ मकरे गु. शु. दा., मीने चं. दा.
वै. प्र. २३ (वै. शु. १४ गु.) चि.।।।।ऽगु.ऽअ.।।।। दि. ल. ४
वै. प्र. ३१ (ज्ये. कृ.६ शु.)श्रव.ऽचं.।।।।ऽअ. ।।।ल.११, १२ कुं. शु. दा.,
ज्ये. प्र. १९ (ज्ये. शु. ११ बु.)चि. ।ऽ।।ऽरो.ऽ।।। ल. १०, ११ मकरे गु. दा., कुम्भे शु. दा.,
आषा. प्र. १ (आषा. कृ. १० बु.) अश्वि.।।।।।।ऽ।। ल. १०, ११ मकरे गु. दा.
आषा. प्र. २ (आषा. कृ. ११ गु.) अश्वि. ।।।।।ऽ।। दि. ल. ४, ५
आषा. प्र. १४ (आषा. शु. ९ मं.) चि. ।।।।।ऽ।।। दि. ल. ५, रा. ल. १० मकरे गु. दा.
आषा. प्र. १५ (आषा. शु. १० बु.) चि.।।।।ऽनृ.।।।। दि. ल. ४
आषा. प्र. २३ (श्रा. कृ. २ गु.) श्रव. ।।।ऽगु. ऽअ.ऽ।।। दि.ल. ६, रा. ल. ११, १२
आषा. प्र. २४ (श्रा. कृ. ३ शु.) ध. ऽश. ।।।ऽनृ.।।।ल.१२, २
आषा. प्र. २९ (श्रा. कृ. ८ बु.) अश्वि. ।।।।ऽरो.।ऽ।ऽ दि.ल. ५ रा. ल. ११, १२
कार्ति. प्र. ९ (आ. शु. ९ मं) ध. ऽश. ऽ।।ऽरो. (४८ घ.उ.) ।।ऽ। दि. ल. ९ [illegible]

कार्ति प्र. १४ (आ. शु. १४ र.) अश्वि. ।।।ऽबु. ऽनृ. (४७ घ. उ.) ।ऽ।। ल. ५
मार्ग. प्र. ६ (का. शु. ७ चं.) ध. ऽश.।।।ऽनृ. (३६ घ. या.) ।ऽ।। ल. ५ अत्याव. चं. दा.
मार्ग प्र. २४ (मार्ग. कृ. ११ शु.) चि. ।।।।ऽनृ. (१७ घ. या.) ।ऽ।। दि. ल. ९, रा. ल. ५
माघ प्र. ७ (पौष शु. ७ शु.) अश्वि. ।।।।।ऽचौ. ।ऽ।। ल. ९ अ. गु. दा.
(पौष शु. ८ श.) अश्वि. ।।।।ऽचौ. ।ऽ।। दि. ल. ११, गु.दा.
(माघ शु. ५ गु.) अश्वि. ।।।।।ऽनृ. ।।।। ल. १०, आव. गु.दा.
(माघ. शु. ६ शु.) अश्वि. ।।।।।ऽनृ. ।।।। आव. ल. धूलिमुख

सूचना—इस वर्ष स्थानाभाव के कारण अशुद्धसाहे नहीं लिखे गये। किसी को किसी अशुद्धसाहे के विषय में कोई पूछताछ करनी हो तो जवाबी पत्र भेजकर निर्णय कर लेवें।

नोट—१. यदि साहों में विवाह लग्न दिन में प्रातः का शुद्ध हो तो बरात एक दिन पहले पहुँच जाना योग्य है। क्योंकि उस दिन पहले सायंकाल तक शान्तिकृत और जूठा टिक्का आदि रस्में भली प्रकार सम्पन्न हो सकेंगी॥

२. विवाहादि मुहूर्तों में बाण-विचार तात्कालिक स्पष्टसूर्य के भुक्तांश पर ही किया जाना शास्त्र-सम्मत है, प्रविष्टों पर विचार करना ठीक नहीं, ऐसा काशी काश्मीर तक के सम्पूर्ण विद्वान् मानते हैं और वही जम्बू, पटियाला आदि के प्राचीन पञ्चांगों से सुस्पष्ट है। किसी भी प्रामाणिक (मुहूर्तचिन्तामणि, मुहूर्त मार्तण्ड) मूल ग्रन्थकार ने 'पश्चिम वा उत्तर भारतीयों के लिये प्रविष्टों पर से बाण विचार करना चाहिए' ऐसा नहीं लिखा।

३. यदि गुरु शुक्र के उदयानन्तर ५—७ 'दिन के भीतर विवाह-मुहूर्त बनता हो तो साहे चिट्ठी माईयां पेड़े माष-हस्तादि विवाहांगकृत्य का आरम्भ अस्त होने से पहले ही से प्रारम्भ कर लेना चाहिये।

नोट—उपनयनादि मुहूर्त देखिये भ्रमभञ्जन [illegible] के बाद

'भ्रमभञ्जन-नाटकम्' (एकाङ्कम्)

"आचार्य सत्यव्रतप्रणीतम्"

वन्दे गुरुपदद्वन्द्वं यस्मात्त्रसृमराः कराः। अज्ञान-तिमिरं घोरं हरन्ति प्रणतात्मनाम् ॥१॥
यत्र नारायणो देवो माधवश्च हरः प्रभुः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिरित्येष मम निश्चयः ॥२॥

नान्द्यन्ते—

सूत्रधारः—अहो रम्योऽयमभिनयो विवदद्विप्रमण्डलीसमनुयोजितः, वयं नाटचकलाप्रवीणाः, कुतूहलिनी चेयं रङ्गमञ्चे निबद्धदृष्टिः सभा। इदं प्रेक्षणकं भरत-मुनिशास्त्रानुसारं सकलशास्त्रपारावारपारगामिनां श्रीमदभयानन्दशास्त्रिमहामहोपाध्यायश्रीमथुराप्रसाददीक्षित-विद्यासागरश्रीपट्टाभिराममीमांसकादिप्रकाण्डविदुषां शिष्येण सत्यव्रतशर्मणा प्रणीतं प्रस्तूयते। भारते सकलनाटचकलाकोविदकुलालङ्कारहीरमण्डलीमविगणय्य तस्यां साम्राज्यमिव मन्वानस्याखर्वगर्ववर्वरस्य कस्यचिद् बालिशवल्गनं श्रुत्वा हसामि। वस्तुतो नैष तस्य दोषः। यतः—पाखण्डिभिर्बकैः कश्चिद् भृशं मिथ्याविकत्थितः। काको बलेन साम्राज्यं कर्तुमिच्छति-पत्रिषु ॥३॥ (कोलाहलमाकर्ण्य)—अहो किमेतत्, पश्यामि तावत् (परावृत्तः)

(ततः प्रविशति शिष्यमण्डल्यनुगतो गृहीतशीघ्रबोध उपाध्यायः)

उपाध्यायः—अयमहम्

हंहो ! लक्षणदक्षिणोऽस्मि निपुणः साहित्यशास्त्रे महान्।
हंहो तर्कवितर्ककर्कशमना विज्ञानविज्ञानवान् ॥
छन्दस्सु प्रतिभा मम प्रसरति प्राप्तप्रसारा स्वतः।
संसारे श्रुतयः समा हि पठिताः को याति मे तुल्यताम् ॥४॥

शिष्याः—

अस्माकं गुरुरद्य सर्वविदुषां मध्ये प्रतिष्ठायुतः। संसारे कविचक्रवर्तिपदवीं लब्ध्वा प्रतापोन्नतः॥
सर्वानप्यभिभूय पण्डितवरानत्यादरेणोर्जितान्। एकोऽयं जगतां गुरुः कविगुरुश्रेणीगुरुर्जृम्भते ॥५॥
(आकाशभाषितम्) अहो क एष पाखण्डी भवद्भिः संप्रशस्यते।
जीवत्सु खलु हंसेषु वायसः केन गीयते ॥६॥

शिष्याः—(आकाशमुत्प्लुत्योत्प्लुत्य भुवं दण्डैस्ताडयन्तः, प्रचण्डक्रोधाग्निज्वलदङ्गार-तुल्यनयनाः) अहो, कोऽस्माकं गुरुं संसारे पराबुभूषति ?।

(तत एकतो वैदिकः परतश्चेटविटौ प्रविशतः। चेटविटौ सभयमेकतस्तिष्ठतः)

चेटः—अज्ज पेक्खिज्जामो बम्हणाणं सत्यत्थं कयाचि अत्यलट्ठीपहारो वि होदु

विटः—(सुरावर्तुलपात्रमुद्घाटच) हु, हु, हु—

मज्जं पादु भवं जेण मत्तकायणमाणसो। सिहाजण्णोववीदाणं जुद्धं पेक्खदुसुक्खदम् ॥७॥

वैदिकः—कथमयं विवादः पुनः पुनरुत्थाप्यत उपाध्याय ! विवाहताराविषये।

उपाध्यायः—नारदोक्ता एकादशैव तारा ममाभिमता विवाहे।

वैदिकः—उपाध्याय ! विवाहतारा निर्णेतुमिच्छसि किम् ? उपाध्यायः—ओम्।

वैदिकः—त्वं तु विवादं वितण्डाञ्च वाञ्छसि ननु निर्णयम्।

विवादो वस्तुसिद्धिश्च वस्तुनी द्वे मते पृथक्।
पक्षापक्षौ समाश्रित्य विचारो यत्प्रवर्तते ॥८॥

उपाध्यायः— शास्त्रार्थमहं विधास्ये नतु विवादम्। वैदिकः—

विना युक्तिप्रमाणाभ्यां वस्तुसिद्धिर्न जायते। त्वं तु वाचःप्रपञ्चेन जेतुमिच्छसि सन्मतम् ॥९॥

उपाध्यायः—कात्यायनोक्तताराचतुष्टये करग्रहो नास्माभिरिष्यते। नारदेनैकादशैव मताः।

वैदिकः—तत्र न काचिद्विप्रतिपत्तिः कस्यापि। मुनिवचनमान्यतया ताराचतुष्टयमन्यदपि नादरार्हं न।

उपाध्यायः—कात्यायनोक्तताराचतुष्टयग्रहणं रूढिविरुद्धम्।

वैदिकः— प्रामाणिकत्वं वेदानां मुनीनां वचनानि च।
गरीयांस्यथवा रूढी रूढिवादिन्समुच्यताम् ॥१०॥

उपाध्यायः—स्यान्नाम मुनिवचनप्रामाण्यं गरीयः। न हि नारदवचनविरोधोऽस्माभिर्मृष्यते।

वैदिकः—एकादशैव ताराश्चेद् ग्राह्याः पाणिग्रहे मताः। कुत्रास्ति प्रतिषेधोऽपि चतसृणां वदेति मे।
नैता अङ्गीकृतास्तावन्निषिद्धा नापि नारदैः। एतेन खलु सामान्यभावस्तेषां मते स्थितः।

उपाध्यायः—ताराचतुष्टये कमपि दोषमाकलय्य नारदेन तत्र पाणिग्रहो न निर्दिष्टः ॥१२॥ इत्यनुमीयते।

वैदिकः—ननु कथमत्रानुप्रवृत्तिः ? हेतोरभावात्। सदोषेऽशिष्टत्वं हेतुश्चेन्न तत्र निषिद्धत्वस्योपाधेः सत्त्वेन तस्याभासत्वात्। निषेधस्तु तत्र नतास्येवाषेषु। तथा चाह मुनिः पतञ्जलिः—"यच्चाशिष्टप्रतिषिद्धं तन्न पुण्याय नापि पापायेति" नात्र दोषाशङ्का। अथ च स्मृत्यपेक्षया श्रुतेरिवाचार्यवचनापेक्षया मुनिवचनस्य बलीयस्तया प्रामाण्ये सर्वजनविदितेऽपि तत्त्वदर्शिकात्यायन-वचसः प्रामाण्याप्रामाण्ययोराचार्योक्तिभिर्दर्शनं नितान्तमयुक्तमुपहासास्पदञ्च। आचार्याणां मुनिवचनोपासकतायाः स्फुटमेव दृश्यमानत्वात् पश्य—

नाटचशास्त्रं संप्रणीतं मुनिना भरतेन यत्।
सर्वे तदनुवर्तन्त आचार्याभिनवादयः ॥१३॥

अपिच—

आचार्या मुनिसद्वचांस्यधीत्य व्याख्याने पटवो भवन्ति विज्ञाः।
तेषामुक्तिचयो न च प्रमाणमेते यत्सुमुनेर्भवन्ति शिष्याः ॥१४॥

उपाध्यायः—चित्रादिताराचतुष्टये विधवाया एव पाणिग्रहो नान्यस्याः।

वैदिकः—उपाध्याय ! न त्वन्निर्मितानि सूत्राणि प्रमाणम्। कात्यायनसूत्रमनधीत्य किमेतत्ते-दुर्विलसितं वाचः। (पा. गृ. सू.) "कुमार्याः पाणिं गृह्णीयात्" इति स्फुटं मुनिराह। कस्मिन्ग्रन्थे चित्रादिताराचतुष्टये विधवाया धृताया वा करग्रहो निर्दिष्टः।

उपाध्यायः—(विषयान्तरमाश्रित्य) "त्रिषु त्रिषूत्तरादिषु" इति न युक्तं विव्रियते टीकाकरैर्ज्योतिषशास्त्रशून्यैर्व्याकरणानभिज्ञैः। एवं व्याख्येयम्—उत्तरादौ येषां तेषु त्रिषु, उत्तरा-फाल्गुन्युत्तराषाढोत्तराभाद्रपदाख्येषु नक्षत्रेष्वित्यर्थः।

वैदिकः—अत्र त्रिषु द्विरुक्तिः किमभिप्राया ? उपाध्यायः—विवाहलीलासमये महर्षिः अहो अहो ही अहहेति कुर्वन्हर्षविह्वलः "त्रिषु" पदमाम्रेडयामास।

वैदिकः—ननु यदि "त्रिषु त्रिषूत्तरादिषु" अत्र हर्षे द्विरुक्ति गुणं मन्यसे यथा काव्ये तथात्र न विद्धि। एतत्सर्वं काव्य एव न तु समस्तज्ञानप्राणभूतेषु सूत्रेषु। यतः—

काव्यं तु कल्पनाप्राणं तथ्यप्राणा स्मृतिर्मता। क्वच काव्यं स्मृतिः क्वेति श्लाघ्या ते मतिरद्भुता।१४।

अथ मुनेः सूत्रनिर्माणसमये हर्षोत्पत्तौ किं कारणम्। यतः—

विना नैव विभावादे रसनिष्पत्तिरुच्यते। को नु तत्र विभावादिः कथञ्चायं रसोद्गमः ॥१५॥

तथा च—

कस्य कन्या विवाहेऽसौ सूत्र व्यरचयन्मुनिः।
रागद्वेषविमुक्तात्मा सर्वज्ञो रसविह्वलः ? ॥१६॥

अत उपाध्याय ! इदमस्ति पारस्करगृह्यसूत्रविवरणम्। "उत्तरा आदिर्येषां तान्युत्तरादीनि तेषु"। कतिषु ! त्रिषु त्रिषु। तथा हि– उत्तराफाल्गुनी हस्तचित्रेति त्रीणि, उत्तराषाढा श्रवण-धनिष्ठा इति त्रीणि, तथा, उत्तराभाद्रपदारेवत्यश्विनीति त्रीणि, इति।

उपाध्यायः—(क्रोधारक्तनयनः) नैतन्ममाभिमतम्। (दण्डेन भुवं ताडयन्)

चित्राधनिष्ठाश्रवणाश्विनीषु वेश्याविवाहो भवतात्स्वदेशे।
रण्डाविवाहः कुलटाविवाहो धृताविवाहो भवताच्चतुर्षु ॥१७॥

वैदिकः—उपाध्याय ! न किञ्चिदेतत्प्रलापमतिरिच्य। त्वमेव कुमार्याः सुभगाया धनिष्ठानक्षत्रे विवाहं समपादयः।

उपाध्यायः—कदा कस्य गृहे ? वैदिकः–लालाकिशनदासस्य गृहेऽमृतसरस्येव कटड़ासफेदकू-चाटेनीतिविदित स्थाने आश्विन ७ दिने २००७ संवत्सरे (इति प्रमाणार्थं पत्रं दर्शयति) उपाध्यायः–(विच्छायवदनो मौनमास्ते)

चेटः—(विटंप्रति) एवं जइ तयाणीं तेण पाणिग्गहो कहं णु धणिट्ठाणच्छत्तम्मि कारियो ?

विटः—विप्पोणिमंतणण्णेभी ण संकोचं जणो गदो।

टकाए गहणेभूयो धणिट्ठाखेडकम्मसु ॥१७॥

(ततः चेटविटसहिता मार्दङ्गिकाः सकिलकिलाशब्दं हसन्तो मुरजान्वादयन्तो नृत्यन्ति)

वैदिकः—(हस्तमुद्यम्य सामाजिकान्प्रति "कात्यायनेन मुनिना तु विवाहतारा:........" इति सगर्जितं पठति।) तथा चेदमस्तु भरतवाक्यम्—

देशः समृद्धिमान्भूयाद्विप्रा निर्द्वेषमानसाः।
सहयोगं प्रयच्छेयू राष्ट्राभ्युदयकर्मणि ॥१८॥

नोट—यह नाटक बहुत विशाल है, किन्तु स्थान संकोच से संक्षिप्त रूप में प्रकाशित किया जा रहा है (सत्यव्रत)

"सिंहस्थ गुरुनिषेधनिर्णयः"

श्रीदेवीपुराणे—सिंहसंस्थे गुरौ यत्नात्सर्वारम्भान्विवर्जयेत्। कालनिर्णये—शांतिकं पौष्टिकं यात्रां प्रतिष्ठोद्वाहपूर्वकम्। न कुर्यात्सर्वमाङ्गल्यं सिंहस्थे च बृहस्पतौ॥ इत्यादि वाक्यों के आधार पर यद्यपि सिंह के बृहस्पति आने पर विवाहयज्ञोपवीतादि शुभकृत्यों का निषेध है। तथापि धर्मप्राण सत्पुरुषों को संकटत्रयी अर्थात् (१) आग्रह, संकट (वरलाभोत्तर उनके विशेष जोर देने पर), (२) धर्मसंकट, (कन्या के दानकालातिक्रम वा किसी प्रकार धर्महानि के भय से) (३) प्राणसंकट (कन्या के संरक्षक पिता आदि के असाध्य रोगग्रसित होने पर मृत्यु भय से व दुर्भिक्ष देशविप्लव भय) के होने पर परिहार वाक्यों के आधार से सिंहस्थ के सिंहेश को त्याग कर कन्या के विवाहादि शुभकृत्य हो सकते हैं। तद्यथाह शौनकः—वरलाभातिकालाभ्यां दुर्भिक्षाद् देशविप्लवात्। विवाहः शुभदो नित्यं सिंहस्थेऽपि बृहस्पतौ॥ राजमार्तण्ड में लिखा है—सिंहराशौ तु सिंहांशे यदा भवति वाक्पतिः। सर्वदेशेष्वयं त्याज्यो दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ अन्यच्च—सिंहे गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्ट इति मुहूर्तचिन्तामणौ।

सर्वैः सिंहगुरुर्वर्ज्यः कलिङ्गे गौडगुर्जरे। अतः उपरोक्त संकटत्रयी में से कोई एक संकटभय होने पर आवश्यकता में सिंहस्थ गुरु का सिंहांश त्याग कर विवाहादि कृत्य करने में कोई दोष नहीं है।

हाँ ! सर्व सिंहराशिस्थ गुरुकाल में सप्ताह यज्ञ पुरश्चरण आदि नहीं किये जा सकते, केवल नैमित्तिक ये कर्म हो सकते हैं। यदि रोगभय आपत्ति आदि संकट आ पड़ें तो उनकी निवृत्ति के लिये गुरु शान्तिपूर्वक ये सब किये जा सकते हैं। यदि भयङ्कर रोगग्रस्त पुरुष श्रीभगवत्प्रीत्यर्थं ये कार्य करवाना चाहे तो वह कर सकता है, अन्यथा नहीं। विशेष जप सिंह कल्पद्रुम "निर्णय सिन्धु" आदि में स्पष्ट है।

इस वर्ष सिंहस्थ का गुरु तो आता है, परन्तु सिंहांश (अर्थात् राश्यादि ४।१३।२० से ४।१६।४० पर्यन्त) ये नहीं है, इसीलिये हमने धर्मप्राण जनता के हितार्थ शास्त्रीय व्यवस्था देखकर ये विवाह मुहूर्त लिखे हैं, भ्रम न करें।

उपनयन मुहूर्त

यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि ब्राह्मणादि जातियों में जन्मनेवाले बालक प्रायः स्वजात्युक्त गुण ९० फी सदी वीर्यगत प्रभाव के कारण जन्म से ही साथ लाते हैं। अन्य यज्ञोपवीतादि वैदिक संस्कारों से उनमें उस सत्यशक्ति का क्रमशः विकास होता है, यदि वह संस्कार वर्णोचित आयु और शुभ समय में किये जावें।

ज्ये. कृ. ५ गुरौ पू.षा.

ज्ये. शु. ५ गुरौ पुष्य (आवश्यके) इस वर्ष उपनयन मुहूर्त बहुत कम हैं सामवेदियों के लिये—वै. शु. १२ भौमवार उ. फा. का तथा ज्ये. शु. १० भौमवार हस्त का यह दो हो सकते हैं–

नोट—अत्यावश्यकता में श्रद्धापूर्वक चन्द्रबल देखकर सत्तीर्थ पर अन्य समय भी यज्ञोपवीत लिया जा सकता है। इसी तरह ऋषितर्पण के समय भी समयानुसार मंत्रदीक्षा जनेऊ लिया जा सकता है।

गृहारम्भः

ज्ये. शु. १२ गुरौ स्वा. (अभिजिति)

गृहप्रवेश मुहूर्त

ज्ये. शु. ९ चन्द्रे उ. फा. घ. १३।४७ उ. (अभिजि.)

देवप्रतिष्ठामुहूर्ताः

वै. शु. १३ बुध. हस्ते ल. ४
ज्ये. शु. ५ गुरौ पुष्ये (अभिजिति)
ज्ये. शु. ९ चन्द्रे उ. फा. (अभिजिति)
ज्ये. शु. १२ गुरौ स्वा. (अभिजिति)
ज्ये. शु. १५ रविवा. अनु. ल. ४
आषा. शु. ८ चन्द्रे हस्त (अभिजिति)

द्विरागमनमुहूर्ताः

वै. कृ. ८ भृगु. उ. षा.
वै. कृ. ११ चन्द्र शत.
वै. शु. ७ गुरौ पुन.।
वै. शु. १५ स्वा. भद्रोत्तरम्।

सूचना—यदि विवाह दिन से १६ दिन के अन्दर द्विरागमन हो जावे तो उपर्युक्त मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं।

विशेष—यदि दीपावली को दीपों के प्रकाश में स्त्री पति के घर में आवे तो उसमें भी कोई मास नक्षत्रादि की शुद्धि न देखे। ऐसे समय पति गृह प्रवेश हो तो लक्ष्मी वृद्धि व सर्वसुख प्राप्त होता है।

सूचना—इस वर्ष शुभकृत्यों के मुहूर्तों में मास शुद्धि कम होने के कारण मुहूर्त कम बनते हैं अत्यावश्यकता में [illegible]

पन्यास श्री विकाश विजय जी द्वारा प्राप्त जैनपर्वनिर्णयः—

श्रीवीर सं. २४८१-८२ आत्म सं. ५९–६० शाका सं. १८७७, वि. सं. २०१२ सन् १९५५-५६

श्रीबुद्धि विजय (बटेराये) जी का स्वर्ग दिन और श्रीमद्विजयानन्दसूरी

(आत्माराम) जी का जन्म दिन चैत्र शुदि १ शुक्रवार चैत्रप्र. १२ २५ मार्च १९५५

श्रीसिद्ध चक्र आयंबिल ओली शुरु चैत्र शुदि ७ बुधवार चैत्रप्र. १७ ३० मार्च १९५५

„ वर्धमान (महावीर) जन्मदिन „ „ १३ मंगलवार चैत्रप्र. २३ ५ अप्रैल १९५५

„ सिद्धचक्र आयंबिल ओली सं० चैत्री

पुनम, सिद्धाचल मेला „ „ १५ गुरुवार चैत्रप्र. २५ ७ „ „

श्रीऋषभदेव वर्षी तप पारणा अक्षयतृ० वै० शुदि ३ सोमवार वै.प्र. १३ २५ „ „

हस्तिनापुर तीर्थ मेला

श्रीमद् विजयानंद सूरी (आत्मा.) स्वर्गदिन आत्मसंवत् ६० ज्ये. शु. ८ रवि ज्ये० १६-२९ मई „

चौमासी अठाई प्रारम्भ आ. शुदि ८ सोम आ०प्र० १३ २७ जून „

चौमासी चौदस आ. „ १४ सोम आ०प्र० २० ४ जुलाई „

चौमासी अठाई संपूर्ण आ. „ १५ मंगल आ०प्र. २१ ५ „ „

श्रीनेमनाथ भगवान् का जन्मदिन श्रा. शुदि ५ रवि श्रा.प्र. ९ २४ „ „

„ पर्युषण पर्व अठाई प्रारम्भ अ. भा. वदि १२ मंगल भाद्रप्र. २८ १३ सितम्बर „

„ कल्पसूत्र गृहस्थापनरात्रिजागरण „ „ „ १४ गुरु भाद्रप्र ३० १५ „ „

„ कल्पसूत्र वांचना प्रारम्भ „ „ „ ३० शुक्र भाद्रप्र. ३१ १६ „ „

„ वीरजन्म उत्सव भाद्र शुदि १ शनी आ.प्र० १ १७ „ „

„ संवत्सरीपर्व „ „ ४ मंगल आ.प्र. ४ २० „ „

जगद्गुरु विजयहीर सूरि स्वर्गदिन „ „ ११ मंगल आ.प्र. ११ २७ „ „

श्रीसिद्ध चक्र आंबिल ओली प्रारंभ आश्विन „ ७ रवि का.प्र. ७ २३ अक्टूबर „

„ सिद्ध चक्र आंबिल ओली संपूर्ण „ „ १५ सोम का०प्र. १५ ३१ „ „

„ वर्धमान (महावीर) निर्वाणदीपावली का.वदि ३० सोम का०प्र. २८ १३ नवम्बर „

„ गौतमस्वामीकेवलज्ञानश्रीवीरसं. २४८२शुक्का.शु १ मंगल का०प्र. २९ १४ „ „

भाईदूज श्रीमद्विजय वल्लभसूरी जन्मदिन „ „ २ बुध का०प्र. ३० १६ „ „

ज्ञान (सौभाग्य) पंचमी „ „ ५ शनि मा० ३ १९ „ „

चौमासी अठाई प्रारंभ „ „ ७ सोम मा० ५ २१ „ „

चौमासी चौदस „ „ १४ सोम मा० १२ २८ „ „

चौमासी अठाई संपूर्ण कार्तिकी पुनम्

श्रीसिद्धाचल हस्तिनापुर, शौरीपुरमेला „ „ १५ मंगल मा० १३ २९ „ „

मौनएकादशी (१५०) कल्याणकदिन मार्ग शुदि ११ रवि पौ. १० २५ दिसम्बर „

पौषदशमी श्रीपार्श्वनाथ जन्मदिन पौष वदि १० शनि पौष. २३ ७ जनवरी १९५६

मेरु त्रयोदशी श्रीऋषभदेव मोक्षदिन माघ „ १३ गुरु माघ २७ ९ फरवरी „

चौमासी अठाई प्रारंभ फाल्गुन शुदि ६ सोम चै. ५ १८ मार्च „

चौमासी चौदस „ „ १४ सोम „ १२ २५ मार्च „

चौमासी अठाई संपूर्ण „ „ १५ मंगल „ १३ २६ „ „

श्रीऋषभदेव जन्मदीक्षा दिन वर्षीतप चैत्र वदि ८ मंगल चैत्र २१ ३ अप्रैल „

कस्य कन्या विवाहऽसौ सूत्र व्यरचयन्मुनिः।
रागद्वेषविमुक्तात्मा सर्वज्ञो रसविह्वलः ? ॥१६॥

अत उपाध्याय ! इदमस्ति पारस्करगृह्यसूत्रविवरणम्। "उत्तरा आदियेषां तान्युत्तरादीनि तेषु"। कतिषु ! त्रिषु त्रिषु। तथा हि– उत्तराफाल्गुनी हस्तचित्रेति त्रीणि, उत्तराषाढा श्रवण-धनिष्ठा इति त्रीणि, तथा, उत्तराभाद्रपदारेवत्यश्विनीति त्रीणि, इति।

उपाध्यायः—(क्रोधारक्तनयनः) नैतन्ममाभिमतम्। (दण्डेन भुवं ताडयन्)
चित्राधनिष्ठाश्रवणाश्विनीषु वेश्याविवाहो भवतात्स्वदेशे।
रण्डाविवाहः कुल्टाविवाहो धूर्ताविवाहो भवताच्चतुर्षु ॥१७॥

वैदिकः—उपाध्याय ! न किञ्चिदेतत्प्रलापमतिरिच्य। त्वमेव कुमार्याः सुभगाया धनिष्ठानक्षत्रे विवाहं समपादयः।

उपाध्यायः—कदा कस्य गृहे ? वैदिकः—लालाकिशनदासस्य गृहेऽमृतसरस्येव कटड़ासफेदक्-चाटेनीतिविदित स्थाने आश्विन ७ दिने २००७ संवत्सरे (इति प्रमाणार्थं पत्रं दर्शयति) उपाध्यायः—(विच्छायवदनो मौनमास्ते)

चेटः—(विटंप्रति) एवं जइ तयाणीं तेण पाणिग्गहो कहं णु धणिट्ठाणच्छत्तम्मि कारियो ?

विटः—विप्पोणिमंतणप्पेमी ण संकोचं जणो गदो।
टकाए गहणेभूयो धणिट्ठाखेडकम्मसु ॥१७॥

(ततः चेटविटसहिता मार्दङ्गिकाः सकिलकिलाशब्दं हसन्तो मुरजान्वादयन्तो नृत्यन्ति)

वैदिकः—(हस्तमुद्यम्य सामाजिकान्प्रति "कात्यायनेन मुनिना तु विवाहदाराः........" इति सगर्जितं पठति।) तथा चेदमस्तु भरतवाक्यम्—
देशः समृद्धिमान्भूयाद्विप्रा निर्द्वेषमानसाः।
सहयोगं प्रयच्छेयुः राष्ट्राभ्युदयकर्मणि ॥१८॥

नोट—यह नाटक बहुत विशाल है, किन्तु स्थान संकोच से संक्षिप्त रूप में प्रकाशित किया जा रहा है (सत्यव्रत)

"सिंहस्थ गुरुनिषेधनिर्णयः"

श्रीदेवीपुराणे—सिंहसंस्थे गुरौ यत्नात्सर्वारम्भान्विवर्जयेत्। कालनिर्णये—शांतिकं पौष्टिकं यात्रां प्रतिष्ठोद्वाहपूर्वकम्। न कुर्यात्सर्वमाङ्गल्यं सिंहस्थे च बृहस्पतौ ॥ इत्यादि वाक्यों के आधार पर यद्यपि सिंह के बृहस्पति आने पर विवाहयज्ञोपवीतादि शुभकृत्यों का निषेध है। तथापि धर्मप्राण सत्पुरुषों को संकटत्रयी अर्थात् (१) आग्रह, संकट (वरलाभोत्तर उनके विशेष जोर देने पर), (२) धर्मसंकट, (कन्या के दानकालातिक्रम वा किसी प्रकार यशहानि के भय से) (३) प्राणसंकट (कन्या के संरक्षक पिता आदि के असाध्य रोगग्रसित होने पर मृत्यु भय से व दुर्भिक्ष देशविप्लव भय) के होने पर परिहार वाक्यों के आधार से सिंहस्थ के सिंहेश को त्याग कर कन्या के विवाहादि शुभकृत्य हो सकते हैं। तद्यथाह शौनकः—वरलाभातिकालाभ्यां दुर्भिक्षाद् देशविप्लवात्। विवाहः शुभदो नित्यं सिंहस्थेऽपि बृहस्पतौ ॥ राजमार्तण्ड में लिखा है—सिंहराशौ तु सिंहांशे यदा भवति वाक्पतिः। सर्वदेशेष्वयं त्याज्यो दम्पत्योर्निधनप्रदः ॥ अन्यच्च—सिंहे गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्ट इति मुहूर्तचिन्तामणौ। सर्वः सिंहगुरुर्वर्ज्यः कलिङ्गे गौडगुर्जरे। अतः उपरोक्त संकटत्रयी में से कोई एक संकटभय होने पर आवश्यकता में सिंहस्थ गुरु का सिंहांश त्याग कर विवाहादि कृत्य करने में कोई दोष नहीं है।

हाँ ! सर्व सिंहराशिस्थ गुरुकाल में सप्ताह यज्ञ पुरश्चरण आदि नहीं किये जा सकते, केवल नैमित्तिक ये कार्य [illegible] सकते हैं। यदि [illegible] आपत्ति आदि संकट आ पड़ें तो उनकी निवृत्ति के लिये गुरु शान्तिपूर्वक ये सब किये जा सकते हैं। यदि भयङ्कर रोगग्रस्त पुरुष श्रीभगवत्प्रीत्यर्थ ये कार्य करवाना चाहे तो वह कर सकता है, अन्यथा नहीं। विशेष जप सिंह कल्पद्रुम "निर्णय सिन्धु" आदि में स्पष्ट है।

इस वर्ष सिंहस्थ का गुरु तो आता है, परन्तु सिंहांश (अर्थात् राश्यादि ४।१३।२० से ४।१६।४० पर्यन्त) ये नहीं है, इसीलिये हमने धर्मप्राण जनता के हितार्थ शास्त्रीय व्यवस्था देखकर ये विवाह मुहूर्त लिखे हैं, भ्रम न करें।

उपनयन मुहूर्त

यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि ब्राह्मणादि जातियों में जन्मनेवाले बालक प्रायः स्वजात्युक्त गुण ९० फी सदी वीर्यगत प्रभाव के कारण जन्म से ही साथ लाते हैं। अन्य यज्ञोपवीतादि वैदिक संस्कारों से उनमें उस सत्यशक्ति का क्रमशः विकास होता है, यदि वह संस्कार वर्णोचित आयु और शुभ समय में किये जावें।

ज्ये. कृ. ५ गुरौ पू. षा.

ज्ये. शु. ५ गुरौ पुष्य (आवश्यके) इस वर्ष उपनयन मुहूर्त बहुत कम हैं सामवेदियों के लिये—वै. शु. १२ भौमवार उ. फा. का तथा ज्ये. शु. १० भौमवार हस्त का यह दो हो सकते हैं—

नोट—अत्यावश्यकता में श्रद्धापूर्वक चन्द्रबल देखकर सत्तीर्थ पर अन्य समय भी यज्ञोपवीत लिया जा सकता है। इसी तरह ऋषितर्पण के समय भी समयानुसार मंत्रदीक्षा जनेऊ लिया जा सकता है।

गृहारम्भः

ज्ये. शु. १२ गुरौ स्वा. (अभिजिति)

गृहप्रवेश मुहूर्त

ज्ये. शु. ९ चन्द्रे उ. फा. घ. १३।४७ उ. (अभिजि.)

देवप्रतिष्ठामुहूर्ताः

वै. शु. १३ बुध. हस्ते ल. ४
ज्ये. शु. ५ गुरौ पुष्ये (अभिजिति)
ज्ये. शु. ९ चन्द्रे उ. फा. (अभिजिति)
ज्ये. शु. १२ गुरौ स्वा. (अभिजिति)
ज्ये. शु. १५ रविवा. अनु. ल. ४
आषा. शु. ८ चन्द्रे हस्त (अभिजिति)

द्विरागमनमुहूर्ताः

वै. कृ. ८ भृगु. उ. षा.
वै. कृ. ११ चन्द्र शत.
वै. शु. ७ गुरौ पुन.।
वै. शु. १५ स्वा. भद्रोत्तरम्।

सूचना—यदि विवाह दिन से १६ दिन के अन्दर द्विरागमन हो जावे तो उपर्युक्त मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं।

विशेष—यदि दीपावली की दीपों के प्रकाश में स्त्री पति के घर में आवे तो उसमें भी कोई मास नक्षत्रादि की शुद्धि न देखे। ऐसे समय पति गृह प्रवेश हो तो लक्ष्मी वृद्धि व सर्वसुख प्राप्त होता है।

सूचना—इस वर्ष शुभकृत्यों के मुहूर्तों में मास शुद्धि कम होने के कारण मुहूर्त कम बनते हैं अत्यावश्यकता में [illegible]

पन्यास श्री विकाश विजय जी द्वारा प्राप्त जैनपर्वनिर्णयः---

श्रीवीर सं. २४८१-८२ आत्म सं. ५९-६० शाका सं. १८७७, वि. सं. २०१२ सन् १९५५-५६

पर्व	मास पक्ष	तिथि	वार	प्रविष्टे	तारीख	सन्
श्रीबुद्धि विजय (बटेराये) जी का स्वर्ग दिन और श्रीमद्विजयानन्दसूरी (आत्माराम) जी का जन्म दिन	चैत्र शुदि	१	शुक्रवार	चैत्रप्र. १२	२५ मार्च	१९५५
श्रीसिद्ध चक्र आयंबिल ओली शुरु	चैत्र शुदि	७	बुधवार	चैत्रप्र. १७	३० मार्च	१९५५
,, वर्धमान (महावीर) जन्मदिन	,, ,,	१३	मंगलवार	चैत्रप्र. २३	५ अप्रैल	१९५५
,, सिद्धचक्र आयंबिल ओली सं० चैत्री पुनम, सिद्धाचल मेला	,, ,,	१५	गुरुवार	चैत्रप्र. २५	७ ,,	,,
श्रीऋषभदेव वर्षी तप पारणा अक्षयतृ० हस्तिनापुर तीर्थ मेला	वै० शुदि	३	सोमवार	वै.प्र. १३	२५ ,,	,,
श्रीमद् विजयानंद सूरी (आत्मा.) स्वर्गदिन आत्मसंवत् ६०	ज्ये. शु.	८	रवि	ज्ये० १६	२९ मई	,,
चौमासी अठाई प्रारम्भ	आ. शुदि	८	सोम	आ०प्र० १३	२७ जून	,,
चौमासी चौदस	आ. ,,	१४	सोम	आ०प्र० २०	४ जुलाई	,,
चौमासी अठाई संपूर्ण	आ. ,,	१५	मंगल	आ०प्र. २१	५ ,,	,,
श्रीनेमनाथ भगवान् का जन्मदिन	श्रा. शुदि	५	रवि	श्रा.प्र. ९	२४ ,,	,,
,, पर्युषण पर्व अठाई प्रारम्भ	अ. भा. वदि	१२	मंगल	भाद्रप्र. २८	१३ सितम्बर	,,
,, कल्पसूत्र गृहस्थापनरात्रिजागरण	,, ,, ,,	१४	गुरु	भाद्रप्र ३०	१५ ,,	,,
,, कल्पसूत्र वांचना प्रारम्भ	,, ,, ,,	३०	शुक्र	भाद्रप्र. ३१	१६ ,,	,,
,, वीरजन्म उत्सव	भाद्र शुदि	१	शनी	आ.प्र० १	१७ ,,	,,
,, संवत्सरीपर्व	,, ,,	४	मंगल	आ.प्र. ४	२० ,,	,,
जगद्गुरु विजयहीर सूरि स्वर्गदिन	,, ,,	११	मंगल	आ.प्र. ११	२७ ,,	,,
श्रीसिद्ध चक्र आंबिल ओली प्रारंभ	आश्विन ,,	७	रवि	का.प्र. ७	२३ अक्टूबर	,,
,, सिद्ध चक्र आंबिल ओली संपूर्ण	,, ,,	१५	सोम	का०प्र. १५	३१ ,,	,,
,, वर्धमान (महावीर) निर्वाणदीपावली	का. वदि	३०	सोम	का०प्र. २८	१३ नवम्बर	,,
,, गौतमस्वामीकेवलज्ञानश्रीवीरसं. २४८२	शुक्ला. शु	१	मंगल	का०प्र. २९	१४ ,,	,,
भाईदूज श्रीमद्विजय वल्लभसूरी जन्मदिन	,, ,,	२	बुध	का०प्र. ३०	१६ ,,	,,
ज्ञान (सौभाग्य) पंचमी	,, ,,	५	शनि	मा० ३	१९ ,,	,,
चौमासी अठाई प्रारंभ	,, ,,	७	सोम	मा० ५	२१ ,,	,,
चौमासी चौदस	,, ,,	१४	सोम	मा० १२	२८ ,,	,,
चौमासी अठाई संपूर्ण कार्तिकी पुनम् श्रीसिद्धाचल हस्तिनापुर, शौरीपुरमेला	,, ,,	१५	मंगल	मा० १३	२९ ,,	,,
मौनएकादशी (१५०) कल्याणकदिन	मार्ग शुदि	११	रवि	पौ. १०	२५ दिसम्बर	,,
पौषदशमी श्रीपार्श्वनाथ जन्मदिन	पौष वदि	१०	शनि	पौष. २३	७ जनवरी	१९५६
मेरु त्रयोदशी श्रीऋषभदेव मोक्षदिन	माघ ,,	१३	गुरु	माघ २७	९ फरवरी	,,
चौमासी अठाई प्रारंभ	फाल्गुन शुदि	६	सोम	चै. ५	१८ मार्च	,,
चौमासी चौदस	,, ,,	१४	सोम	,, १२	२५ मार्च	,,
चौमासी अठाई संपूर्ण	,, ,,	१५	मंगल	,, १३	२६ ,,	,,
श्रीऋषभदेव जन्मदीक्षा दिन वर्षीतप	चैत्र वदि	८	मंगल	चैत्र २१	३ अप्रैल	,,

मोतीलाल बनारसी दास, पो० ब० ७५, बनारस

के यहाँ मिलनेवाले संस्कृत-हिन्दी पुस्तकों का सूचीपत्र

वेद-उपनिषद ग्रन्थ

अथर्ववेद—मूल अजमेर ४)
„ सायणभाष्य, हिन्दी टीका रामस्वरूप ९०)
„ श्री सातवलेकर हिन्दी भाष्य (१-१८) २६)
„ जयदेव हिन्दीटीका संपूर्ण २४)
„ पिप्पलाद शाखा-संपूर्ण फोटो में छपा शारदा लिपि-अमरीका ३ बड़ी जिल्दों में ३००)
„ पिप्पलाद शाखा (१-१३) ३०)
„ की प्राचीनता ।=)
„ कौशिकसूत्र हिन्दी सहित ४५)
„ सर्वानुक्रमणि-मूल ६)
आथर्वण उपनिषद एकादश १॥)
अप्रकाशित उपनिषद (७१) ब्रह्मयोगी व्याख्या २०)
अष्टविकृति विवृति-बंगाली १)
अश्विनौदेवता संग्रह-सातवलेकर ५)
अष्टाविंशति उपनिषद २८ मूल २)
अष्टोत्तरशतोपनिषद मूल काशी ४)
अष्टोपनिषद—भास्करानंद सटीक ३)
आपस्तम्ब गृह्य सूत्र—अनुकूला-तात्पर्य ७)
„ शुल्बसूत्र-कपर्दि, करविंद, सुन्दर ३)
„ श्रौत सूत्र-धुर्तस्व. भाष्य १म भाग ५)
आपिशालिशिक्षा-बंगाली स. १)
आरण्य संहिता—सायणभाष्य १)
आर्षेय ब्राह्मण—बंगाली स. १॥)
आश्वलायन गृह्यमंत्रव्याख्या हरदत्त २॥)
आश्वलायन सूत्र प्रयोगदीपिका-मंचन ३)
आश्वलायन गृह्य सूत्र मूल ॥)
„ „ नारायणीवृत्ति ४=)

आश्वलायनगृह्य सू. देवस्वा. नारायण १म ८)
„ श्रौत सूत्र-सिद्धान्तिभाष्य ११)॥
„ „ „ नारायणवृत्ति ७)
ईशोपनिषद—शंकरभाष्य—आनंदगिरि १।-)
„ „ हिन्दी ≡)
„ अन्वय, सरल हिन्दी ।-)
„ सातवलेकर हिन्दी २)
„ प्रकाशिका-बालबोधनी १)
„ शंकर, हिन्दी अनु. टीका ॥)
„ वीरराघवाचार्य टीका १॥)
„ (मध्व) रघुनाथतीर्थ ४)
ईशादि पंचोपनिषद शंकर, आनंदगिरि ६)
ईश केन कठ रंगरामानुज भाष्य ५॥)
ईशकेनकठ—अर्थप्रकाश १॥)
ईश केनकठ प्रश्न, मण्डक मांडूक्य आनंदवल्ली भृगु—रंगरामानुजभाष्य ३॥)
ईशादि दशोपनिषद शंकरभाष्य दोभाग १०)
ईशादि दशोपनिषद—ब्रह्मयोगी व्या. १५)
„ „ पुष्टिमार्गीय—स्वा. गोपालानंद ७)
ईशादि विंशोत्तर शतोपनिषद मूल १०)
ईशादि आठ हिन्दी अनु. स्वा. विद्यानंद ५)
ईशादि नौ उपनिषद—अन्वय, हिन्दी व्या. २)
इन्द्रशक्ति का विकास—सातवलेकर ॥)
ईश्वर का साक्षात्कार— „ ३)
उदकशांती—शौनकीय ॥)
उदकशांती—आपस्तम्बीय ॥)
उपनिदानसूत्र—स: मगानांछन्द ॥)
उपनिषद मंत्रवाक्य महाकोष (२२३) १६)
उपनिषत्कांड—धर्मकोष का चार भागों में ११०)
उपनिषद समुच्चय—३२ सटीक १०=)
उरु ज्योति—वैदिक अध्यात्मसुधा—डा. वासुदेव शरण ३)

ऋग्वेद संहिता—मूल खुला ६)
„ मूल अजमेर, बुकसाइज ९)
„ „ सातवलेकर १०)
„ पदपाठ बुकसाइज १३)

ऋग्वेद संहिता

„ सायणभाष्य से प्राचीन वेंकटमाधव कृत ऋगर्थ दीपिका भाष्यसहित तथा टिप्पणी में प्राचीन जितने भी भाष्य उपलब्ध हैं वह वेंकट के भाष्य से जहां भी भिन्नता रखते हैं वह सब भी दे दिये हैं। अर्थात् इसी एक संस्करण के लेने से सभी प्राचीन भाष्यकारों का मत इसी में मिल जाता है तीन भाग छप चुके हैं। चौथा भाग (जिसमें सात मंडल तक पूरा हो जाता है) भी प्रायः छपकर तैयार ही समझिये। हर एक भाग का मूल्य ५०) रु०।
ऋग्वेद सायणभाष्य सहित इन्डेक्स सहित पांच भागों में संपूर्ण १३५)
„ माध्व भाष्य केवल दो भाग ४०)
„ स्कान्द भाष्य दो भाग ३॥)
„ कपालीशास्त्रिकृत सिद्धाञ्जन अध्यात्म भाष्य (१-१२१ सूक्त) ५५)
„ उद्गीथभाष्य ४)
„ भाष्यटीका मध्व १२)
„ सुबोध हिन्दी भाष्य सातवलेकर (१ से १९) २३)
„ वैदिक जीवन हिन्दी भाषा। अपूर्ण ही छपा है। चार बड़ी जिल्द। १००)
„ जयदेव कृत हिन्दी अनुवाद संपूर्ण ७ जिल्द ४२)
„ पं० रामगोविन्द कृत हिन्दी टीकायन्त्रस्थ

ऋग्वेद पं. रामगोविन्द कृत केवल हिन्दी अनुवाद संपूर्ण १२)
„ पर सायणभाष्य की भूमिका १॥)
„ सायण भूमिका की टीका बदरीनाथ॥=
ऋग्वेद प्रातिशाख्य—उवटभाष्य डा. मंगलदेव द्वारा संपादित ८॥)
ऋग्वेद प्रातिशाख्य—(पार्षदसूत्र पशुपतिनाथ व्याख्या) १०)
ऋग्वेद की ऋक्संख्या—युधिष्ठर मी० ॥)
ऋग्विधान—पं. जगदीश शास्त्रि संपादित १०)
ऋग्वेदीय नित्यविधि पत्रात्मक १)
ऋग्वेद मंत्रसंहिता पत्रात्मक १॥)
ऋग्वेदानुक्रमणि—माधव ४)
ऋग्वेद मंत्राणां वर्णानुक्रमसूची २)
ऋग्वेद में रुद्रदेवता ।।=)
ऋग्वेद पर व्याख्यान—पं. भगवद्दत्त २॥)
ऋग्वेद के अग्निसूक्त—सातवलेकर २)
ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका स्वा. दयानंद २॥) ३)
ऋग्यजुस्सामार्थ विधान ।)
एकाग्निकांड (कृष्णयजुर्वेद) १)
ऐतरेय ब्राह्मण—मूल पत्रात्मक २)
ऐतरेय ब्राह्मण—सायणभाष्य संपूर्ण १५॥=)
ऐतरेय ब्राह्मण—संपूर्ण हिन्दी अनुवाद ५)
ऐतरेय ब्राह्मण—अनुक्रमणिका ४)
ऐतरेय ब्राह्मण—आरण्यक कोष स्वा. केवलानंद ८)
ऐतरेयारण्यक—सायणभाष्य ४॥)
ऐतरेयालोचन—सत्यव्रतसामाश्रामी २॥)
ऐतरेयोपनिषद (मध्व) ताम्रपर्णीय १०)
ऐतरेयोपनिषद—शंकर—आनंदगिरि १॥=)
ऐतरेयोपनिषद—शंकर हिन्दी अनुवाद ।=)
ऐतरेयोपनिषद—सातवलेकर हिन्दी अनु. ॥)

ऐतरेयारण्यक—पर्यालोचन अथवा ऐतरे-
यारण्यक आचार-विचार—डा० मंगलदेव २)
कठोपनिषद—शांकरभाष्य आनंदगिरि १।।=)
कठोपनिषद—शंकर भा. हिन्दी अनु. ।।-)
कठोपनिषद—शंकर रामानुज श्रीधर ३।।)
कठोपनिषद—सातवलेकर कृत हि. अनु. १।।)
काठक गृह्यसूत्र—यजुर्वेदीय १०)
काठकसंहिता (कृष्णयजुर्वेद) ६)
कात्यायन श्रौतसूत्र—कर्कभाष्य १३)
कात्यायन श्रौतसूत्र—पं. विद्याधर व्या० ८)
„ „ केवल भूमिका ।।)
केन उपनिषद—शांकर आनंदगिरि १।।)
केनोपनिषद—शांकरभाष्य हिन्दी अनु. ।।)
केन—सातवलेकरकृत हिन्दी अनु. १।।)
केन—शंकर, रामानुज, बालबोधनी १।।।)
कौषीतकी गृह्यसूत्र—भवत्रातविवरण ५)
खादिरगृह्यसूत्र—रुद्रस्कन्द व्या० १)
खादिरगृह्यसूत्र—हिन्दी टीका सं० २।।)
गणनाथर्वशीर्षमूल =) सभाष्य ।।-)
गोपथब्राह्मण—मूल १।-)
गोभिलगृह्यसूत्र—मृदुला व्या० ३।।)
गोभिल गृह्यसूत्र—हिन्दी टीकास० २।।)
गोभिल गृह्यकर्म प्रकाशिका ३)
चरणव्यूह—(शौनक) महीदास भ० ।।।=)
चतुर्दशत्युपनिषत्सारसंग्रह—हिन्दी भाषा ५)
चारों वेदों की अनुक्रमणिका २।)
चारायणीय मन्त्रार्षाध्याय २)
छान्दोग्योपनिषद्—शंकरभाष्य आनंदगिरि ७।।)
„ रंगरामानुज भाष्य ५।।=)
„ मिताक्षरा टीका ३)
„ रंगरामानुज, उपोद्घात टिप्पणी ९)
„ भाषाटीका स्वा० विद्यानंद ५)
जैमिनीय ब्राह्मण—(द्वितीय कांड) १०)
जैमिनीय ब्राह्मण—संपूर्ण पहली बार ३०)
जमिनीय संहिता—डा. रघुवीर सं. १०)
जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण—सामवेदीय ५)
तलवकारोपनिषद् (मध्व) २।।)
ताण्ड्य महाब्राह्मण सायणभाष्य संपूर्ण २०)

तैत्तिरीय आरण्यक सायणभाष्य १३।।=)
तैत्तिरीय ब्राह्मण—भट्टभास्कर द्वितीयष्टक ३।।)
तैत्तिरीय ब्राह्मण सायणभाष्य संपूर्ण २१।।।)
तैत्तिरीय संहिता—सायणभाष्य ४१।।।)
तैत्तिरीय संहिता—अनुक्रमणिका २)
तैत्तिरीय प्रातिशाख्य—पदक्रमसदन भाष्य २।।)
तैत्तिरीयोपनिषद—शंकर—आनंदगिरि २।।=)
तैत्तिरीयोपनिषद „ „ १।।)
„ शंकर, हिन्दी टीका ।।।-)
„ भाष्यवार्तिक ३≡)
„ तात्पर्यदीपिका १)
„ (मध्व) श्रीनिवासतीर्थीय ८)
दण्डक—शुक्लयजर्वेदीय ।।।)
दन्त्योष्ठविधि—अथर्ववेदीय १।।)
दशोपनिषद—मूलमात्रं बड़ा ३)
दशोपनिषद—शंकरभाष्य १०)
दशोपनिषद हिन्दी अच्युतानंद ५)
दैवत—षड्विंशब्राह्मण सभाष्य २।।)
दैवत संहिता, प्रथम तीसरा भाग १२)
द्राह्यायनगृह्यसूत्रवृत्ति १।।)
„ „ हिन्दी टीका २।।)
धर्मकोष—उपनिषत्कांड ४ भाग ११०)
नारायणोपनिषद—हिन्दी टीका २।।)
निरुक्त—मूलमात्र ।।।=)
निरुक्त—राजवाडे सं. अंग्रेजी नोट्स १०)
निरुक्त—मुकुन्द झा व्याख्या १०)
निरुक्त—दुर्गाचार्य व्या० बंबई १४)
निरुक्त „ „ आनंदाश्रम २४।=)
निरुक्त „ „ भंडारकर १७)
निरुक्त—देवराज यज्व दुर्गाचार्य सजिल्द २०)
निरुक्त—पं. मिहिरचंद व्याख्या
(१ से ४-७) ५)
निरुक्त लघुविवृत्ति १।।)
नीतिमंजरी—सभाष्य ४।।)
नृसिंहपूर्वोत्तरतापनीय—सभाष्य २।।=)
पवमान पञ्चसूक्त—ऋग्वेदी ।।।=)
प्राजापत्यसूत्र—बंगाली सहित २)
पार्दविधानम्—शौनक कृत १।)

पारस्कर गृह्यसू —मूल ।।=)
„ „ हरिहरभाष्य ३।।)
„ „ पञ्चभाष्य ८)
„ „ तथा कामदेव भाष्य १२)
पितृसंहिता ।)
पुरुषसूक्त हिन्दी सहित =)
„ सायण, महीधर, मंगलनिम्बार्क १।)
„ सायणभाष्य ।=)
पुष्पसूत्र-(सामप्रातिशाख्य) सभाष्य ४।।)
प्रश्नोपनिषद—शंकर—आनंदगिरि १।।)
„ शंकर—हिन्दी ।≡)
„ सातवलेकर हिन्दी १।।)
„ (मध्व) २।।)
प्रश्न, मुण्डक, मांडूक, अथर्वशिखा-
रंगरामानुजभाष्य ४।।)
बृहदारण्यकोपनिषद्—शंकर आनंदगिरि १३)
„ „ „ „ काशी १६)
„ „ „ „ कलकत्ता ८।।।)
„ „ मिताक्षरा ४=)
„ „ रंगरामानुज ४।।।=)
„ स्वा. विद्यानंद हिन्दी ५)
बृहदारण्यक वार्तिकसार—हिन्दी अनुवाद
सहित संपूर्ण दो भागों में— १२)
बृहदारण्यकवार्तिकसार—सटीक १५)
भारद्वाजशिक्षा—सटीक १।।)
मन्त्रार्थदीपिका—शत्रुघ्न विरचित ५)
मन्त्रार्थचन्द्रोदय—पं. दामोदर शर्मा सं. ५)
मरुद्देवता मंत्र संग्रह—सातवलेकर ५)
महानारायणोपनिषद ।।≡)
महर्षि दयानंदकृतवेदभाष्यानुशीलन १)
मानवी आयुष्य—सातवलेकर ।)
मांडूक्योपनिषद गौडपाद शंकर भा. ३।।), ४)
„ „ „ हिन्दी टीका १)
मांडूक्य—सातवलेकर हिन्दी टीका ।।)
मांडूकी शिक्षा—संपादित २)
मुण्डकोपनिषद—शंकर, आनंदगिरि ।।।≡)
„ „ „ हिन्दी ।≡)
„ सातवलेकर हिन्दी १।।)

मुण्डकोपनिषद्—बालबोधनी १।।।)
मुक्तिकोपनिषद—हि. टीका ।।)
मैत्रायणीसंहिता (कृष्णयजुर्वेद) ६)
यजुर्वेद—मूल गुटका १।।।) बड़ा सा. २।।)
„ शुक्ल पत्रात्मक स्थूलाक्षर काशी ५)
„ „ „ „ बंबई १०)
„ उवट-महीधरभाष्य १२)
„ स्वा. दयानंदभाष्य संपूर्ण ४०)
„ „ „ „ हिन्दी ५)
„ जयदेव हिन्दी संपूर्ण १२)
„ हि. टीका (१-४) श्रीविद्या ।।)
„ सर्वानुक्रमसूत्र १।।)
„ „ „ अनन्तदेव भा० ४।।)
„ पादसूची १।।)
यजुर्वेद काण्व संहिता मूल ४)
„ „ सायण (१-२०) अध्याय ७)
यजुर्वेद प्रातिशाख्य—सटीक ३)
यजुर्वेदीय मंत्र संहिता—श्रीवेणीराम ३)
„ „ पं. रामतेज १)
यज्ञतत्वप्रकाश—म. म. श्रीचिन्नस्वा. ४)
याज्ञवल्क्यशिक्षा—शिक्षावल्ली विवृति १।)
याज्ञवल्क्य शिक्षा—हिन्दी टीका ।।=)
याज्ञिक्युपनिषद विवरण ४)
योग उपनिषद (२०) ब्रह्मयोगी व्याख्या २०)
रामतापनी उपनिषद—आनंदवन व्या० १।।।=)
„ „ सुबोधिनी हिं. टीका १।।।)
रुद्रभाष्य—अभिनवशंकराचार्य १।।=)
रुद्राध्याय—सायण भट्टभास्कर २-)
„ विष्णुसूरि १=)
रुद्रस्वाहाकार पद्धति =)
लाट्यायन श्रौतसूत्र—अग्निष्टोमान्त २।।)
लौगाक्षि गृह्यसूत्र—सभाष्य १६।।)
वंशब्राह्मण—बंगलासहित १।)
वाजसनेयि प्रातिशाख्य—(कात्यायन)
भाष्यद्वयसहित १०)
वाराहगृह्य सूत्र—हिन्दी टीका १।)
वेद का स्वयं शिक्षक—सातवलेकर ३)
वेद परिचय „ ५)

सर्वप्रकार की पुस्तकें मिलने का एकमात्र पता—मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक-विक्रेता, नेपाली खपरा, पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस

[illegible]—श्रीसद्दसन १)
वेदभाष्यसार—भट्टोजीदीक्षित १)
वेदविज्ञानमीमांसा ॥)
वैदिक सिलेक्शन—बंबई यूनि० ६)
वेदकालनिर्णय—ओरायन का हिन्दी १॥)
वेदरहस्य—श्रीनारायण स्वामी २)
वेदरहस्य—श्रीअरविंद दो भाग १३)
वेदसार—हि० टीका स० १॥)
वेदवाणी—पं० बिहारी लाल १)
वेद में कृषिविद्या—सातवलेकर ॥)
वेद में चर्खा „ ॥=)
वेद प्रकाश—सत्यज्ञानानंद १॥)
वेदों का वास्तविकस्वरूप डा. मंगलदेव ।=)
वेदांग प्रकाश—स्वा० दयानंद १०॥=)
वैखानस श्रौतसूत्र—डा. कालेंड सं० ७॥)
वैखानसस्मार्तसूत्र—मूल १॥)
वैखानसागम—मरीचिप्रोक्त २॥)
वैदिक अग्निविद्या—सातवलेकर २)
वैदिक चिकित्सा „ १॥)
वैदिक कोष—ब्राह्मणवाक्य संग्रह १५)
वैदिकपदानुक्रमकोष-संहिता, ब्राह्मण, उपनिषद आदि ग्रन्थों में पठित प्रत्येक पदके प्रत्येक रूप के पूरे पते और टिप्पणी सहित पांच भाग १००)
वैदिक स्वराज्य की महिमा—सातवलेकर ॥)
वैदिक सर्पविद्या „ ॥=)
वैदिक कहानियां—प्रो० बलदेव २)
वैदिक सम्पत्ति—हिन्दी ७)
वैदिक साहित्यपरिशीलन हिन्दी ३)
वैदिक साहित्य—रामगोविन्द त्रिवेदी ६)
वैदिक सूक्तसञ्चय—शास्त्री परीक्षा १)
वैदिक सूक्तसंग्रह—शास्त्री परीक्षा १)
[illegible]णवोपनिषद ब्रह्मयोगी व्या० २०)
शतपथ ब्राह्मण—मूल संपूर्ण अनुक्रमणिका सहित माध्यंदिन स्थूलाक्षर ३ भाग ११)
शतपथ ब्राह्मण—सस्वर १–७ कांड ६)
शतपथब्राह्मण—सायणभाष्य प्रथमकांड ८॥)
शतपथब्राह्मण सायणभाष्य संपूर्णपांच भागों में— १२५)
शतपथ बोधामृत—सातवलेकर ।)
शतरुद्री पद्धति—मैथिली ॥)
शांख्यायन आरण्यक— ॥=)
शांख्यायन ब्राह्मण— १॥=)
शाक्त उपनिषद (८) ब्रह्मयोगी व्याख्या ८)
शिक्षादि वेदांगचतुष्टय ॥)
शिक्षादिवेदांग षडङ्गानि ३)
शुल्वसूत्र—कर्कभाष्य, महीधर वृ० ।=)
श्वेताश्वतरोपनिषद—शंकर भा० ३।=)
„ „ शंकर—हिन्दी अनु० ॥=)
„ „ अन्वय पदार्थ हिन्दी ॥=)
शैव उपनिषद—(१५) ब्रह्मयोगी व्या० १२)
शौनकीयम्—मूल ॥=)
श्रीसूक्त मूल =) हिन्दी टीका ।)
श्रीसूक्त—विद्याधर, पृथ्वीधर, कंठ ॥)
श्रुति सार समुद्धरण १)
श्रुतिसिद्धान्तसारसंग्रह—उपनिषदसार ५)
श्रौतपदार्थनिर्वचनम् ६॥)
श्रौतसूत्र–(कात्यायन) देवयाज्ञिक पद्धति १२)
श्रौतपाठ–(विधुशखर) २ भाग ९)
षट् सूक्तानि—मूल ।)
सत्याषाढ़ श्रौतसूत्र संपूर्ण १० भाग ४२॥)
संन्यास उपनिषद (१७) ब्रह्मयोगी व्या० १५)
सामवेद मूल गुटका १॥) बड़ा १॥)
सामवेद—जयदेव हिन्दी अनुवाद ६)
सामवेद—कौथुमशाखीय ग्रामगेयगान ६)
सामवेदीय सुबोधिनी पद्धति ४॥)
सामवेदीय रुद्रजप विधि १)
सामवेदीय आह्निक—उपाकर्म १)
सामान्य वेदान्त उपनिषद (२४) ब्रह्मयोगी २०)
सांख्यायनगृह्य संग्रह—कौषीतकीगृह्य १॥)
सूक्तरत्न संग्रह—शास्त्रि परीक्षा १)
हिरण्यकेशीय मंत्रसंहिता १)

धर्मशास्त्र—कर्मकाण्ड

अग्निष्टोम पद्धति—आध्वर्यवपद्धति, औद्गात्रपद्धति, हौत्रपद्धति ४॥)
अर्कविवाह पद्धति =)
अग्निहोत्र चन्द्रिका—वामनशास्त्री ४।-)
अङ्गिरस्मृति सटिप्पण १२)
अन्त्यकर्मदीपक—नित्यानंद पर्वतीय २॥)
अन्तःकरण विज्ञान-भाषा ॥)
अन्त्यष्टीय श्राद्ध कर्मपद्धति–चतुर्थीलाल २)
अनुष्ठान प्रकाश—चतुर्थीलाल ११)
अहिर्बुध्न्य संहिता—पांचरात्र ३०)
अब्धिनौयान मीमांसा—समुद्रयात्रा २)
आधानपद्धति—वामनशास्त्री २॥-)
अष्टादशस्मृति—मूल गुटका बंबई ४)
आचार चंद्रिका—हिन्दी ॥)
आचारार्क—ऋग्वेदियों का आचार १)
आचारभूषण—त्र्यम्बक ६॥-)
आचारमयूख—नीलकंठ १)
आचाररत्न—खुलापत्रा २)
आचारादर्श—यजुर्वेदियों के आह्निक १)
आचारेन्दु—त्र्यम्बक ६)
आपस्तम्ब धर्मसूत्र—हिरण्यकेशी व्याख्या ३)
आपस्तम्ब धर्मसूत्र—उज्जवलवृत्ति ७)
आभ्युदयिक श्राद्ध पद्धति-जूटिका बन्धन ।=)
आर्याभिविनय—स्वा० दयानंद ।=)
आर्यविद्यासुधाकर—यज्ञेश्वर चिमण-भट रचित, डा० मंगलदेव द्वारा संपादित, अनेकों टिप्पणी सहित १०)
आर्यविधानम्—पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ विरचित भाषाटीका २ भाग में २०)
आश्लेषा-ज्येष्ठा शांति— ।)
अशौचनिर्णय—मूल ।) भाषाटीका ॥)
आह्निक कर्म सूत्रावली—बंबई ४॥)
आह्निक सूत्रावली—(मध्यंन्दिन)—वैद्यनारायणशर्मा ६)
आह्निक सूत्रावली—(माध्यंन्दिन)—पं० दौलतराम गौड ६)
आह्निक पद्धति—नव्यचण्डिदास ३)
उत्सर्गमयुख—नीलकंठ ।)
उत्सजर्नोपकरण विधि— ॥)
उपनयन-पद्धति—मूल ॥=)
उपनयन—पद्धति—भाषाटीका १॥)
उपनयन पद्धति—पं. विद्याधर गौड़ १)
उपनयन मार्तण्ड—भाषाटीका ॥)
उमामहेश्वर—गुटका १॥)
ऋग्वेदोक्तनित्यविधि— १)
एकोद्दिष्टश्राद्धपद्धति— ।), ॥)
एकादशी व्रतोद्यापन— २॥)
कर्मकाण्ड क्रमावली—सोमशम्भु ४॥)
कर्मकाण्ड प्रकाशिका— ॥=)
कर्मठगुरु—राज्यज्योतिषी पं. मुकुन्द वल्लभ कृति नित्यकर्म के लिए सबसे बढ़िया ग्रन्थ। पंडितजी के द्वारा अनुभूत अनेकों सिद्धिप्रद अनुष्ठान भी लिखे गये हैं जैसे—सिद्ध पुत्रेष्टि विधि। कर्मकाण्ड विषय का ऐसा ग्रन्थ आज तक नहीं छपा। ५)
कर्मप्रदीप—छांदोग्य परिशिष्ट २॥)
कर्ममीमांसादर्शन—भरद्वाज चारपाद हिन्दी टीका स० ८॥)
कर्ममीमांसा दर्शन—मूल २)
कर्म रहस्य—हिन्दी ॥)
कर्मविपाक—भाषाटीका ३॥), ४)
कलश प्रतिष्ठा— =)
कात्यायन मत संग्रह— २॥)
कात्यायन स्मृति— ४॥)
कात्यायनी तर्पण— =) बड़ा ।)
कात्यायनीशांति— ।)
कातीयेष्टि दीपक (दर्शपौर्णमास पद्धति) नित्यानंद पर्वतीय १॥)
कालतत्त्व विवेचन—दो भाग, रघुनाथ ३॥)
कालमाधव—माधवकृत ४)
कालमाधव कारिका— ॥)
कार्तिक शुक्ल द्वितीया कृत्यनिर्णय ≡)

कालविवेक—जीमूतवाहन ५)
काश्यपज्ञानकाण्ड—वैखानस ५॥)
क्रियाधिकार—वैखानस १०)
कुट्टाकार शिरोमणि—पूना ॥।=)
कुण्डमण्डपसिद्धि—भाषा टीका ॥)
कुण्डरत्नावली—सटीक ३)
गर्भविंशति— २)
गण्डार्क—सटीक ३॥)
गर्भ विवाह ≡)
कृत्यकल्पतरु—लक्ष्मीधर विरचित—ब्रह्मचारी काण्ड, गृहस्थकाण्ड, नियतकालकाण्ड, श्राद्धकाण्ड, दान—काण्ड, तीर्थ विवेचन काण्ड, शुद्धि काण्ड, राजधर्म काण्ड, मोक्षकाण्ड व्रतखंड व्यवहार कांड छपे हैं मूल्य १५०)
कृत्यरत्नाकर—चण्डेश्वर ६)
कृत्यसार-समुच्चय—अमृतनाथ बंबई १॥।)
कृत्यसार-समुच्चय-बृहद्‌टिप्पणी—काशी ४॥)
कृत्यप्रदीपिका— ३)
गया यात्रा पद्धति — १≡)
गया श्राद्ध पद्धति —मूल १=)
गया श्राद्ध—चतुर्थीलाल भाषाटीका ॥।=)
गायत्रीपूजा पद्धति—विभाकराचार्य ≡)
गोदानपद्धति— =)
गौतमधर्म सूत्र—हरदत्त व्याख्या ३॥)
गौतमधर्मसूत्र परिशिष्ट—द्वितीयप्रश्न १२)
गदाधरपद्धति आचार—सार ४॥)
गणपति होमपद्धति पूजा =)
गोविन्दार्चन चन्द्रिका—खुलापत्रा १०)
गौड़ीयश्राद्धप्रकाश महानिबंध चतुर्थीलाल ८)
गौरीशंकर गुटका २)
गृहस्थरत्नाकर—चण्डेश्वर ५॥)
ग्रहयज्ञप्रयोग—मूल ॥।)
ग्रहयागतत्व— बंगला ॥।=)
ग्रहप्रयोग—ग्रहशांति—वायुनंदन २॥)
ग्रहशान्ति—भाषाटीका बंबई १॥)
चतुर्लिंगतोभद्रचक्र— ≡)
चतुर्वर्गचिन्तामणि—हेमाद्रि, प्रायश्चित १५)
चतुर्वर्गचिन्तामणि—परिशेषखंड-काल निर्णय २५)
चतुर्विंशतिमतसंग्रह—भट्टोजीदीक्षित ३)
चण्डिकोपास्ति दीपिका ४॥)
चूड़ाकरण पद्धति— ≡)
छन्दोगाह्निक ॥।)
जन्मदिन पूजा पद्धति =), ।)
जयसिंहकल्पद्रुम—श्रीरत्नाकरदीक्षित १४)
जयाख्य संहिता—पांचरात्र १२)
ज्येष्ठाशान्ति—मूल ।)
जीवत्पुत्रिका ≡)
टोडरानंद—राजाटोडरमल, प्रथम भाग १०)
तिथिनिर्णय—।) भाषाटीका ॥-)
तिथिनिर्णय—भट्टोजीदीक्षित १॥)
तिथिचिंतामणि— ॥।)
तिथ्यर्क—दिवाकर कृत २)
तीर्थ चिंतामणि—वाचस्पति मिश्र ३॥।)
तीर्थतत्व—बंगला ॥।)
तीर्थ श्राद्ध =)
तुलसीपूजापद्धति — =)
तुलसीविवाह— १=)
तुलसी विवाह—काशी बड़ी १॥)
तुलादानादि पद्धति—नवग्रहहोमपद्धित —प्रायश्चित पद्धति—विष्णुयाग पद्धति। पक्की जिल्द सहित ६॥)
दण्डविवेक —वर्द्धमान कृत ८॥)
दत्तक चंद्रिका—कुबेरभट्ट १॥।≡)
दशकर्म पद्धति—मूल १) भाषाटीका १॥)
दशकर्मपद्धति भाषाटीका जिल्द बंबई २॥)
दर्शपूर्णमास प्रकाश—भाष्यवृत्ति १०=)
दानक्रियाकौमुदी—गोविन्दानंद २॥)
दत्तकप्रकाश—राज्याभिषेक कोटीहोम ॥।)
दानचंद्रिका—मूल खुला १=)
दानदीपिका—भाषाटीका ॥)
दानमयूख—नीलकंठ— २)
दायभाग-जीमूतवाहन—सटीक ३)
दीक्षातत्वमीमांसा—भाषाटीका १॥)
दीक्षाप्रकाशिका—विष्णुभट्ट १)
द्विरागमननिर्णय— =)
द्वादश हरिमंडल— ≡)
दुर्गापूजन प्रयोग खुलापत्रा ३)
दुर्गापूजा—श्यामापूजा ॥।)
देवर्षीय पितृतर्पण =)
द्वैतनिर्णय सिद्धान्त संग्रह—भानुभट्टप्रणीत ॥)
धर्मकल्पद्रुम—स्वा. दयानंद (आठ खंड) छठा छपता है १५)
धर्मचंद्रिका—स्वा. दयानंद १)
धर्मकोष—व्यवहार कांड, व्यवहारमातृका, विवाद पदानि, संपादक पं. लक्ष्मण शास्त्री ३ भाग में— ५२)
धर्मतत्वनिर्णय—पूना ॥।=)
धनिष्ठापंचकशांति— ॥), १=)
धर्मतत्वभाषा १=)
धर्मतत्व परिशिष्ट—पूना १॥)
धर्मप्रवेशिका—हिन्दी १=)
धर्मविज्ञान—हिन्दी, ३ भाग श्रीदयानंद १३)
धर्मशास्त्र संग्रह—(२६ स्मृति) जिल्द सहित कलकत्ता १७)
धर्मसिन्धु—काशीनाथ, मूल ५)
धर्मसिन्धु—पं. मिहिरचन्द्रकृत भाषाटीका १२)
धर्मप्रदीप—१२ मास तिथ्यादिनिर्णय २)
धर्मानुबन्धिश्लोकचतुर्दशी— ॥)
धार्मिकविमर्श समुच्चय— ३॥)
धार्मिक विमर्श समुच्चय द्वितीय भाग ५)
धर्मोपदेशिका—हिन्दी ॥।)
धर्मादर्श:—नूतनमतमतान्तरपर्यालोचको निबन्ध: श्रीदेवकृष्णशर्मकृत २०)
नवग्रह चक्र— -)॥
नवग्रहविधान पद्धति — ॥=)
नवरत्नविवाह पद्धति— भाषा टीका ३॥)
नवरात्र प्रदीप—विनायक १)
नान्दीमुखश्राद्ध— ।), ॥)
नारदीयमनुसंहिता—सभाष्य २॥)
नारायणबलि—भाषाटीका १॥)
नित्यकर्म पद्धति— ।), १=)
नित्यकर्म प्रयोग—गीताप्रेस १≡)
नित्यकर्मविधि—पं. बालकृष्ण १=)
नित्यकर्तव्य—स्वा० शिवानंद १=)
नित्यकर्म प्रयोगमाला—चतुर्थीलाल २)
नित्यहवन पद्धति—भाषाटीका १=)
नित्याचार प्रदीप—नृसिंह वाजपेयी १३ भाग छपा है अपूर्ण १२॥।)
नित्याचार पद्धति—विद्याकार ५॥)
नित्यनैमित्तिक कर्म समुच्चय—शुक्ल यजुर्वेदी
नित्योत्सव—उमानंद ५॥)
निर्णयसिन्धु—कमलाकर, मूल ४)
निर्णयसिन्धु—पं. ज्वालाप्रसादकृत भाषाटीका ७), ६)
निर्णयसिन्धु—भाषाटीका लखनौ १६)
निर्णयसिन्धु—कृष्णभट्ट संस्कृत व्याख्या १२)
निर्णयामृत—मूलमात्र २२)
नीतिमयूख—नीलकंठ ३॥)
नूतनगृहप्रवेश हवन पद्धति १॥)
नूतन वास्तु प्रबंध २॥)
नृसिंहप्रसाद दलपतिविरचित, व्यवहार ॥-)
नृसिंहप्रसाद—प्रायश्चितसार २)
नृसिंहप्रसाद—श्राद्धसार १॥=)
नृसिंहप्रसाद—तीर्थसार १)
परमसंहिता—पांचरात्र ॥।)
परलोकतत्व—भाषा ८)
परलोक प्रश्नोत्तरी भाषा ॥।≡)
पश्वालम्भ मीमांसा—वामनशास्त्री =)
पंचदान पद्धति— ॥।≡)
पंचमंगल— १=)
पंचमहायज्ञ—आर्यसमाज १=)
पंचांग पद्धति ≡)
पांचरात्ररक्षा—वेदांतदेशिक ।), १=)
पार्वणश्राद्ध—भाषाटीका १५)
पारमेश्वरसंहिता आगम १=)
पाराशरस्मृति—भाषाटीका १५)
पाराशर धर्म संहिता—सायणमाध्वाचार्य व्याख्या सहित केवल अन्त के तीन भाग १॥) १४॥)

वेदव्याख्याविशिका—आसिद्धसन १)
वेदभाष्यसार—भट्टोजीदीक्षित १)
वेदविज्ञानमीमांसा ।।)
वैदिक सिलेक्शन—बंबई यूनि० ६)
वेदकालनिर्णय—श्रीरायन का हिन्दी १।।)
वेदरहस्य—श्रीनारायण स्वामी २)
वेदरहस्य—श्रीअरविंद दो भाग १३)
वेदसार—हिं० टीका स० १।।)
वेदवाणी—पं० बिहारी लाल १।)
वेद में कृषिविद्या—सातवलेकर ।।)
वेद में चर्खा „ ।।=)
वेद प्रकाश—सत्यज्ञानानंद १।।)
वेदों का वास्तविकस्वरूप डा. मंगलदेव ।=)
वेदांग प्रकाश—स्वा० दयानंद १०।।=)
वैखानस श्रौतसूत्र—डा. कालेंड सं० ७।।)
वैखानसस्मार्तसूत्र—मूल १।।)
वैखानसागम—मरीचिप्रोक्त २।।)
वैदिक अग्निविद्या—सातवलेकर २)
वैदिक चिकित्सा „ १।।)
वैदिक कोष—ब्राह्मणवाक्य संग्रह १५)
वैदिकपदानुक्रमकोष-संहिता, ब्राह्मण, उपनिषद आदि ग्रन्थों में पठित प्रत्येक पदके प्रत्येक रूप के पूरे पते और टिप्पणी सहित पांच भाग १००)
वैदिक स्वराज्य की महिमा—सातवलेकर ।।।)
वैदिक सर्पविद्या „ ।।=)
वैदिक कहानियां—प्रो० बलदेव २)
वैदिक सम्पत्ति—हिन्दी ७)
वैदिक साहित्यपरिशीलन हिन्दी ३)
वैदिक साहित्य—रामगोविन्द त्रिवेदी ६)
वैदिक सूक्तसञ्चय—शास्त्री परीक्षा १)
वैदिक सूक्तसंग्रह—शास्त्री परीक्षा १।)
वैष्णवोपनिषद ब्रह्मयोगी व्या० २०)
शतपथ ब्राह्मण—मूल संपूर्ण अनुक्रमणिका सहित माध्यंदिन स्थूलाक्षर ३ भाग ११)
शतपथ ब्राह्मण—सस्वर १–७ कांड ६)
शतपथब्राह्मण—सायणभाष्य प्रथमकांड ८।।)
शतपथब्राह्मण सायणभाष्य संपूर्णपांच भागों में— १२५)
शतपथ बोधामृत—सातवलेकर ।)
शतरुद्री पद्धति—मैथिली ।।।)
शांख्यायन आरण्यक— ।।।=)
शांख्यायन ब्राह्मण— १।।।=)
शाक्त उपनिषद (८) ब्रह्मयोगी व्याख्या ८)
शिक्षादि वेदांगचतुष्टय ।।)
शिक्षादिवेदांग षडङ्गानि ३)
शुल्वसूत्र—कर्कभाष्य, महीधर वृ० ।=)
श्वेताश्वतरोपनिषद—शंकर भा० ३।=)
„ „ शंकर—हिन्दी अनु० ।।।=)
„ „ अन्वय पदार्थ हिन्दी ।।।=)
शैव उपनिषद—(१५) ब्रह्मयोगी व्या० १२)
शौनकीयम्—मूल ।।=)
श्रीसूक्त मूल =) हिन्दी टीका ।)
श्रीसूक्त—विद्याधर, पृथ्वीधर, कंठ ।।।)
श्रुति सार समुद्धरण १।)
श्रुतिसिद्धान्तसारसंग्रह—उपनिषदसार ५)
श्रौतपदार्थनिर्वचनम् ६।।)
श्रौतसूत्र-(कात्यायन) देवयाज्ञिक पद्धति १२)
श्रौतपाठ-(विधुशखर) २ भाग ९)
षट् सूक्तानि—मूल ।)
सत्याषाढ़ श्रौतसूत्र संपूर्ण १० भाग ४२।।)
संन्यास उपनिषद (१७) ब्रह्मयोगी व्या० १५)
सामवेद मूल गुटका १।।) बड़ा १।।)
सामवेद —जयदेव हिन्दी अनुवाद ६)
सामवेद—कौथुमशाखीय ग्रामगेयगान ६)
सामवेदीय सुबोधिनी पद्धति ४।।)
सामवेदीय रुद्रजप विधि १)
सामवेदीय आह्निक—उपाकर्म १।)
सामान्यवेदान्त उपनिषद (२४) ब्रह्मयोगी २०)
सांख्यायनगृह्य संग्रह—कौषीतकीगृह्य १।।)
सूक्तरत्न संग्रह—शास्त्रि परीक्षा १।)
हिरण्यकेशीय मंत्रसंहिता १।)

धर्मशास्त्र—कर्मकाण्ड

अग्निष्टोम पद्धति—आध्वर्यवपद्धति, औद्गात्रपद्धति, हौत्रपद्धति ४।।)
अर्कविवाह पद्धति =)
अग्निहोत्र चन्द्रिका—वामनशास्त्री ४।–)
अङ्गिरस्मृति सटिप्पण ।२)
अन्त्यकर्मदीपक—नित्यानंद पर्वतीय २।।)
अन्तःकरण विज्ञान-भाषा ।।।)
अन्त्येष्टि श्राद्ध कर्मपद्धति—चतुर्थीलाल २)
अनुष्ठान प्रकाश—चतुर्थीलाल ११)
अहिर्बुध्न्य संहिता—पांचरात्र ३०)
अब्धिनौयान मीमांसा—समुद्रयात्रा २)
आधानपद्धति—वामनशास्त्री २।।–)
अष्टादशस्मृति—मूल गुटका बंबई ४)
आचार चन्द्रिका—हिन्दी ।।।)
आचारार्क—ऋग्वेदियों का आचार १।)
आचारभूषण—त्र्यम्बक ६।।–)
आचारमयूख—नीलकंठ १।)
आचाररत्न—खुलापत्रा २)
आचारादर्श—यजुर्वेदियों के आह्निक १।)
आचारेन्दु—त्र्यम्बक ६)
आपस्तम्ब धर्मसूत्र—हिरण्यकेशी व्याख्या ३)
आपस्तम्ब धर्मसूत्र—उज्जवलवृत्ति ७)
आभ्युदयिक श्राद्ध पद्धति-जूटिका बन्धन ।=)
आर्याभिविनय—स्वा० दयानंद ।=)
आर्यविद्यासुधाकर—यज्ञेश्वर चिमण-भट रचित, डा० मंगलदेव द्वारा संपादित, अनेकों टिप्पणी सहित १०)
आर्यविधानम् —पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ विरचित भाषाटीका २ भाग में २०)
आश्लेषा-ज्येष्ठा शांति— ।)
अशौचनिर्णय—मूल ।) भाषाटीका ।।)
आह्निक कर्म सूत्रावली —बंबई ४।।)
आह्निक सूत्रावली—(मध्यंन्दिन)— वैद्यनारायणशर्मा ६)
आह्निक सूत्रावली—(माध्यंन्दिन)— पं० दौलतराम गौड ६)
आह्निक पद्धति —नव्यचण्डिदास ३)
उत्सर्गमयूख —नीलकंठ ।)
उत्सर्जनोपकरण विधि— ।।)
उपनयन-पद्धति—मूल ।।=)
उपनयन—पद्धति—भाषाटीका १।।)
उपनयन पद्धति—पं. विद्याधर गौड़ १।)
उपनयन मार्तण्ड—भाषाटीका ।।)
उमामहेश्वर—गुटका १।।।)
ऋग्वेदोक्तनित्यविधि— १।)
एकोद्दिष्टश्राद्धपद्धति— ।), ।।)
एकादशी व्रतोद्यापन— २।।)
कर्मकाण्ड क्रमावली—सोमशम्भु ४।।)
कर्मकाण्ड प्रकाशिका— ।।=)
कर्मठगुरु—राज्यज्योतिषी पं. मुकुन्द वल्लभ कृति नित्यकर्म के लिए सबसे बढ़िया ग्रन्थ। पंडितजी के द्वारा अनुभूत अनेकों सिद्धिप्रद अनुष्ठान भी लिखे गये हैं जैसे—सिद्ध पुत्रेष्ठि विधि। कर्मकाण्ड विषय का ऐसा ग्रन्थ आज तक नहीं छपा। ५)
कर्मप्रदीप—छांदोग्य परिशिष्ट २।)
कर्ममीमांसादर्शन—भरद्वाज चारपाद हिन्दी टीका स० ८।।)
कर्ममीमांसा दर्शन —मूल २)
कर्म रहस्य—हिन्दी ।।।)
कर्मविपाक—भाषाटीका ३।।), ४)
कलश प्रतिष्ठा— =)
कात्यायन मत संग्रह— २।)
कात्यायन स्मृति— ४।।)
कात्यायनी तर्पण — =) बड़ा ।)
कात्यायनीशांति— ।)
कातीयेष्टि दीपक (दर्शपौर्णमास पद्धति) नित्यानंद पर्वतीय १।।)
कालतत्त्व विवेचन—दो भाग, रघुनाथ ३।।।)
कालमाधव—माधवकृत ४।)
कालमाधव कारिका — ।।।)
कार्तिक शुक्ल द्वितीया कृत्यनिर्णय ≡)

कालविवेक—जीमूतवाहन ५।)
काश्यपज्ञानकाण्ड—वैखानस ५॥)
क्रियाधिकार—वैखानस १०)
कुट्टाकार शिरोमणि—पूना ॥=)
कुण्डमण्डपसिद्धि—भाषा टीका ॥)
कुण्डरत्नावली—सटीक ३)
कुण्डविंशति— २)
कुण्डार्क—सटीक ३।)
कुम्भ विवाह ≡)
कृत्यकल्पतरु—लक्ष्मीधर विरचित—ब्रह्मचारी काण्ड, गृहस्थकाण्ड, नियतकालकाण्ड, श्राद्धकाण्ड, दान—काण्ड, तीर्थ विवेचन काण्ड, शुद्धि काण्ड, राजधर्म काण्ड, मोक्षकाण्ड व्रतखंड व्यवहार कांड छपे हैं मूल्य १५०)
कृत्यरत्नाकर—चण्डेश्वर ६)
कृत्यसार-समुच्चय—अमृतनाथ बंबई १॥)
कृत्यसार-समुच्चय-बृहद्टिप्पणी—काशी ४॥)
 ३)
क्रमदीपिका— ।≡)
गया यात्रा पद्धति — ।=)
गया श्राद्ध पद्धति —मूल ॥=)
गया श्राद्ध—चतुर्थीलाल भाषाटीका ≡)
गायत्रीपूजा पद्धति—विभाकराचार्य =)
गोदानपद्धति— ३।)
गौतमधर्म सूत्र-हरदत्त व्याख्या १२)
गौतमधर्मसूत्र परिशिष्ट—द्वितीयप्रश्न ४।)
गदाधरपद्धति आचार—सार =)
गणपति होमपद्धति पूजा १०)
गोविन्दार्चन चन्द्रिका—खुलापत्रा ८)
गौड़ीयश्राद्धप्रकाश महानिबंध चतुर्थीलाल २)
गौरीशंकर गुटका ५।)
गृहस्थरत्नाकर—चण्डेश्वर ॥)
ग्रहयज्ञप्रयोग—मूल ॥=)
ग्रहयागतत्व— बंगला २॥)
ग्रहप्रयोग—ग्रहशांति—रघुनंदन १।)
ग्रहशान्ति—भाषाटीका बंबई ≡)
चतुर्लिंगतोभद्रचक्र—
चतुर्वर्गचिन्तामणि—हेमाद्रि, प्रायश्चित १५)

चतुर्वर्गचिन्तामणि—परिशेषखंड-काल निर्णय २५)
चतुर्विंशतिमतसंग्रह—भट्टोजीदीक्षित ३)
चण्डिकोपास्ति दीपिका ४॥)
चूड़ाकरण पद्धति— ≡)
छन्दोगाह्निक ॥)
जन्मदिन पूजा पद्धति =), ।)
जयसिंहकल्पद्रुम—श्रीरत्नाकरदीक्षित १४)
जयाख्य संहिता—पांचरात्र १२)
ज्येष्ठाशान्ति—मूल ।)
जीवत्पुत्रिका ≡)
टोडरानंद—राजाटोडरमल, प्रथम भाग १०)
तिथिनिर्णय—।) भाषाटीका ॥–)
तिथिनिर्णय—भट्टोजीदीक्षित १॥)
तिथिचिंतामणि— ॥)
तिथ्यर्क—दिवाकर कृत २)
तीर्थ चिंतामणि—वाचस्पति मिश्र ३॥)
तीर्थतत्व—बंगला ॥)
तीर्थ श्राद्ध =)
तुलसीपूजापद्धति — =)
तुलसीविवाह— ।=)
तुलसी विवाह—काशी बड़ी १॥)
तुलादानादि पद्धति—नवग्रहहोमपद्धित —प्रायश्चित पद्धति—विष्णुयाग पद्धति। पक्की जिल्द सहित ६।)
दण्डविवेक —वर्द्धमान कृत ८॥)
दत्तक चंद्रिका—कुबेरभट्ट १॥≡)
दशकर्म पद्धति—मूल १) भाषाटीका १॥)
दशकर्मपद्धति भाषाटीका जिल्द बंबई २।)
दर्शपूर्णमास प्रकाश—भाष्यवृत्ति १०=)
दानक्रियाकौमुदी—गोविन्दानंद २।)
दत्तकप्रकाश—राज्याभिषेक कोटीहोम ॥)
दानचंद्रिका—मूल खुला १=)
दानदीपिका—भाषाटीका ।।)
दानमयूख—नीलकंठ— २)
दायभाग-जीमूतवाहन—सटीक ३)
दीक्षातत्वमीमांसा—भाषाटीका १॥)
दीक्षाप्रकाशिका—विष्णुभट्ट १)

द्विरागमननिर्णय— =)
द्वादश हरिमंडल— ≡)
दुर्गापूजन प्रयोग खुलापत्रा ३)
दुर्गापूजा—श्यामापूजा ॥)
द्विवर्षीय पितृतर्पण =)
द्वैतनिर्णय सिद्धान्त संग्रह—भानुभट्टप्रणीत ॥)
धर्मकल्पद्रुम—स्वा. दयानंद (आठ खंड) छठा छपता है १५)
धर्मचंद्रिका—स्वा. दयानंद १)
धर्मकोष—व्यवहार कांड, व्यवहारमातृका, विवाद पदानि, संपादक पं. लक्ष्मण शास्त्री ३ भाग में— ५२)
धर्मतत्वनिर्णय—पूना ॥=)
धनिष्ठापंचकशांति— ॥), ।=)
धर्मतत्वभाषा १=)
धर्मतत्व परिशिष्ट—पूना १।)
धर्मप्रवेशिका—हिन्दी ।=)
धर्मविज्ञान—हिन्दी, ३ भाग श्रीदयानंद १३)
धर्मशास्त्र संग्रह—(२६ स्मृति) जिल्द सहित कलकत्ता १७)
धर्मसिन्धु—काशीनाथ, मूल ५)
धर्मसिन्धु—पं. मिहिरचन्द्रकृत भाषाटीका १२)
धर्मप्रदीप—१२ मास तिथ्यादिनिर्णय २)
धर्मानुबन्धिश्लोकचतुर्दशी— ॥)
धार्मिकविमर्श समुच्चय— ३॥)
धार्मिक विमर्श समुच्चय द्वितीय भाग ५)
धर्मोपदेशिका—हिन्दी ॥)
धर्मादर्शः—नूतनमतमतान्तरपर्यालोचको निबन्धः श्रीदेवकृष्णशर्माकृत २०)
नवग्रह चक्र— –)॥
नवग्रहविधान पद्धति — ॥=)
नवरत्नविवाह पद्धति— भाषा टीका ३॥)
नवरात्र प्रदीप—विनायक १)
नान्दीमुखश्राद्ध— ।), ॥)
नारदीयमनुसंहिता—सभाष्य २॥)
नारायणबलि—भाषाटीका १।)
नित्यकर्म पद्धति— ।), ।=)
नित्कर्म प्रयोग—गीताप्रेस ।≡)

नित्यकर्मविधि—पं. बालकृष्ण १=)
नित्यकर्तव्य—स्वा० शिवानंद ।=)
नित्यकर्म प्रयोगमाला—चतुर्थीलाल २
नित्यहवन पद्धति—भाषाटीका ।=
नित्याचार प्रदीप—नृसिंह वाजपेयी १३ भाग छपा है अपूर्ण १२॥
नित्याचार पद्धति—विद्याकार ५।
नित्यनैमित्तिक कर्म समुच्चय—शुक्ल यजुर्वेदी ५॥
नित्योत्सव—उमानंद ४
निर्णयसिन्धु—कमलाकर, मूल ७), ६
निर्णयसिन्धु—पं. ज्वालाप्रसादकृत भाषाटीका १६
निर्णयसिन्धु—भाषाटीका लखनौ १२
निर्णयसिन्धु—कृष्णभट्ट संस्कृत व्याख्या २२
निर्णयामृत—मूलमात्र ३॥
नीतिमयूख—नीलकंठ १॥)
नूतनगृहप्रवेश हवन पद्धति २॥)
नूतन वास्तु प्रबंध ॥–)
नृसिंहप्रसाद दलपतिविरचित, व्यवहार २)
नृसिंहप्रसाद—प्रायश्चितसार १॥=)
नृसिंहप्रसाद—श्राद्धसार १)
नृसिंहप्रसाद—तीर्थसार ॥)
परमसंहिता—पांचरात्र ८)
परलोकतत्व—भाषा ॥≡)
परलोक प्रश्नोत्तरी भाषा =)
पशवालम्भ मीमांसा—वामनशास्त्री ॥≡)
पंचदान पद्धति— ।=)
पंचमंगल— ।=)
पंचमहायज्ञ—आर्यसमाज ≡)
पंचांग पद्धति ।), ।=)
पांचरात्ररक्षा—वेदांतदेशिक १५)
पार्वणश्राद्ध—भाषाटीका ।=)
पारमेश्वरसंहिता आगम १५)
पाराशरस्मृति—भाषाटीका १॥)
पाराशर धर्म संहिता—सायणमाधवाचार्य व्याख्या सहित केवल अन्त के तीन भाग १४॥)

पितृकर्मनिर्णय—श्रीत्रिलोकनाथ मिश्र ३)
पुण्याहवाचन-दानखंडोक्त ।)
पुत्तलविधान पद्धति ।=)
पुराणोक्त ग्रहशांति वास्तु शांति १॥)
पुराणोक्त विवाह पद्धति —मूल ।)
पुरुषार्थचिंतामणि—रामकृष्णभट्ट ९), ४)
पूजा समुच्चय—१०५ विषय ३)
पूतनाशांति—भा. टी ≡), =)
पौरोहित्य कर्मसार—२ भाग १॥)
प्रायश्चित कदम्ब—भाषाटीका १)
प्रपंचसार विवेक—मूल १॥।)
प्रायश्चित मयूख—नीलकंठ २)
प्रायश्चित प्रकाश—चतुर्थीलाल १॥।)
प्रायश्चित प्रकरण—भट्टभवदेव ३॥)
प्रायश्चितन्दुशेखर—नागोजी भट्ट २।≡) १॥)
प्रतिष्ठामयूख—नीलकण्ठ ॥)
प्रतिष्ठा महोदधि—वायुनंदन ५)
प्रतिष्ठा संग्रह—पं० रामलाल ७)
प्रेतमंजरी—भा. टी. वायुनन्दन २॥)
प्रेतमंजरी—भाषाटीका बंबई १)
प्रदोषव्रतनिर्णय भा. टी. ॥)
प्रयोगपारिजातस्थषोडशसंस्कारकाण्डम् ७)
प्रयोगरत्न—नारायणभट्टीय, ऋग्वदीय ३॥)
पर्वनिर्णय— ।=)
पंचदेवतापूजन— ≡)
पार्थिवपूजन— ।)
पद्मपंचाशिका ॥)
बौधायनधर्म सूत्र—गोविंदस्वामी विवरण ७)
बृहस्पति स्मृति —रंगास्वा. संकलित १५)
बृहद्गायत्री महामंत्रीय—सरयूपारीण ॥)
ब्रह्मकर्मसमुच्चय—ऋग्वदीय ५)
ब्रह्मकर्मसमुच्चय—हिरण्यकेशी ५)
ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्ड—भा. टी. ११)
भारतीयधर्मशास्त्र—चूड़ामणि— २)
भारतधर्म समन्वय—भाषा १=)
मंगलाष्टक गाथोच्चार— ≡)

मदनमहार्णव—विभूश्वर भट्ट २४)
मदन रत्न व्यवहारकाण्ड—मदनसिंह १२)
मंत्रार्थ दीपिका—शत्रुघ्न कृत ५)
मनुस्मृति—कुल्लूक भट्ट टीका ४), ५), ७)
मनुस्मृति—मेधातिथि भाष्य संपूर्ण १३)
मनुस्मृति-सान्वय भाषाटीका बंबई ७)
मनुस्मृति—भाषाटीका ६),५), ३), ३॥), ४)
मनुस्मृति (२सरा अध्याय) सं. हिं. टीका ॥।)
मनुस्मृति (१-४) मणि प्रभा हिन्दी टीका २)
मनुटीका संग्रह—कलकत्ता १०)
मातृकाविलास— ३॥)
महालक्ष्मीपूजा— ।), ॥)
मानवधर्मसार— ॥)
मांसतत्वविवेक—विश्वनाथ ।=)
मूलाशांति— ।≡), ।=)
मूलाशांतिचक्र— ≡)
यतिधर्म संग्रह—विश्वेश्वर २॥=)
यज्ञरहस्य—गोपालचंद ।)
यज्ञमीमांसा—वेणीराम, परिवर्धित सं. २॥)
यज्ञोपवीत भाषाटीका ॥≡)
यज्ञोपवीत-धारण विधि दीपक—
विन्ध्येश्वरीप्रसाद ।)
यात्रातत्व—रघुनंदन बंगला २)
याज्ञवल्क्यस्मृति—मिताक्षरा बंबई ८)
याज्ञवल्क्यस्मृति—मिताक्षरा, वीर
मित्रोदय काशी ८)
याज्ञवल्क्यस्मृति—अपरार्क टीका १९॥)
याज्ञवल्क्यस्मृति—बालंभट्टी,
मिताक्षरा टीका (व्यवहाराध्याय) १६॥)
याज्ञवल्क्यस्मृति—सुबोधिनी, बालंभट्टी,
मिताक्षरा तथा बालक्रीड़ा बंबई १७)
याज्ञवल्क्यस्मृति—मिताक्षरानुसार
भाषा टीका सहित पं. मिहिरचन्द १२)
याज्ञवल्क्यस्मृति—केवलभाषाटीका, ॥।)
राजधर्मकौस्तुभ—अनंतदेव १०)
रामविवाह पद्धति—वायुनंदन ।)
रामार्चनचन्द्रिका—आनंदवन १॥)

रामार्चापद्धति—भाषाटीका ॥)
रुद्रयाग पद्धति —वायुनंदन २॥)
रुद्रविधान पद्धति—मूल ॥=)
रुद्रस्वाहाकार— =)॥
लघुदर्पण पद्धति—मूल ६)
लघुपूजानुष्ठान— ॥-)
लंबादरीहवन पद्धति—मूल ॥)
ललितास्तवमणि माला— ॥)
लक्ष्मीपूजन प्रयोग—बड़ा बंबई १)
लक्ष्मीपूजा पद्धति भाषाटीका ।=)
वर्षक्रिया कौमुदी—गोविन्दानंद ५॥)
वर्षकृत्य—रुद्रधर शर्मा ३)
वर्षकृत्य-इन्दुमती टिप्पणी दो भाग ७)
वर्षकृत्यदीपिका—नित्यानंद पर्वतीय ७)
वसन्तपूजन भाषाटीका ।-)
वसन्तोत्सव निर्णय— =)
वास्तुचक्र =)
वरुणमण्डल चक्र ≡)
वास्तुपूजा पद्धति गृहप्रवेशपद्धति ।=)
वास्तु प्रतिष्ठासंग्रह—खुला पं. रामचन्द्र २॥)
वास्तु शांति प्रयोग— ॥।), ॥-), ॥)
वासिष्ठ धर्मशास्त्र—सटिप्पण १)
वासिष्ठी हवन पद्धति—मूल ।=), ॥=)
वासिष्ठी हवन पद्धति—
भाषाटीका ॥।), ॥≡), ॥।=)
विधानमाला—नृसिंहभट्ट ६।=)
विधान पारिजात—अनंतदेव, १४ भाग १५)
विवादचिन्तामणि— ४), २॥)
विवादरत्नाकर—चण्डेश्वर ६)
विवाहपद्धति—झंगनिवासी पं. गौरी
शंकर कृत भाषा टीका, पंजाब विधि १॥)
विवाहपद्धति—भा. टी. चतुर्थीलाल १), १=)
विवाह पद्धति मूल चतुर्थीलाल १)
विवाहपद्धति—मूल वायुनंदन ॥≡)
विवाहसोपांग विधि—भा. टी. ३)
विवाह पद्धति—आर्यसमाज ॥)
विष्णुयाग पद्धति—वायुनंदन २॥)

विश्वकर्मापूजा ।=)
विज्ञप्तिरत्नावली—विवाह में विनती १)
वीरमित्रोदय-(व्यवहाराध्याय) मित्र
मिश्र कलकत्ता ६।)
वीर मित्रोदय—आह्निक प्रकाश— ९)
वीर मित्रोदय—पूजाप्रकाश— ६)
वीरमित्रोदय—लक्षणप्रकाश— १०॥)
वीरमित्रोदय —राजनीति प्रकाश ७॥)
,, —तीर्थप्रकाश ९)
,, —व्यवहारप्रकाश ९)
,, —श्राद्धप्रकाश ६)
,, —समयप्रकाश ४॥)
,, —भक्तिप्रकाश ३)
,, —शुद्धिप्रकाश ४॥)
वेदोक्त गृहवास्तुपद्धति ॥।=)
वैश्यसंध्याप्रयोग— =)
व्यवहारनिर्णय—वरदराज ३०)
व्यवहार मयूख—नीलकंठ १॥)
व्यवहार मयूख—नीलकंठ सटिप्पण १०)
व्यवहारमाला— १॥)
व्यासस्मृति— २॥)
वृद्धसूर्यार्णव कर्मविपाक—मूल, संपूर्ण १२)
व्रतकोश—जगन्नाथ २)
व्रतचन्द्रिका—हिन्दी १॥)
व्रतरत्नाकर—प्रथमभाग २॥)
व्रतराज—भाषाटीका १६)
व्रतोत्सव—कौमुदी ॥-)
व्रतार्क—भाषाटीका ६)
व्रतोद्यापन कौमुदी—मूल २)
व्रात्यता प्रायश्चित निर्णय—नागेशभट्ट १॥)
शय्यादान पद्धति — ≡)
शांतिकांड प्रदीप— २)
शांतिप्रकाश—चतुर्थीलाल खुला ६॥)
शांतिमयूख—नीलकंठ २॥)
शांतिसार—खुला ३॥)
शाश्वतधर्मदीपक— ३)
शास्त्रतत्त्वनिर्णय—नीलकंठ कृत ५)

विन्यास पद्धति बड़ी न्यास ।), ।=)
शिवार्चन पद्धति—वेदोक्त १॥)
शुक्लयजुर्वेदीयकर्मकाण्ड प्रदीप ७)
शुद्धि कौमुदी—गोविन्दानंद ३॥।)
शुद्धि प्रदीप—प्रायश्चित कृत १॥)
शुद्धिमयूख—नीलकंठ १)
शूद्राचार शिरोमणि—शेषकृष्ण १=)
शूद्रदशगात्र—एकादशाह वृषोत्सर्ग ।=)
शूद्रपार्वण एकोदृष्ट ≡)
श्राद्धकल्पलता—नंदपंडित ४॥)
श्राद्धक्रिया कौमुदी—गोविन्दानंद ५॥)
श्राद्ध चन्द्रिका—दिवाकरभट्ट ३)
श्राद्ध पद्धति—वाचस्पति— १॥।)
श्राद्ध प्रयोगदीपिका—श्रीगोपालशास्त्रि १)
श्राद्धमयूख—नीलकंठ १॥)
श्राद्धमंजरी—बापूभट्ट ३)
श्राद्धविवेक—रुद्रधर २)
श्राद्धसंग्रह—भा. टी. ५)
श्रावणी उपाकर्म—वायुनंदन १॥)
षडशीति—आदित्याचार्य २)
सत्यार्थप्रकाश—स्वा. दयानंद १॥)
संध्याभाष्य समुच्चय ६ सभाष्य ३)
संध्योपासन—भा. टी. =) मूल)॥
संध्योपासन—भा. टी. तर्पणसहित =)॥
संध्योपासन—क्षत्रिय =)
संध्योपासन—वैश्य =)
संध्योपासन—सामवेदीय ≡)
संध्योपासन—ऋग्वेदीय =)॥
संबंध निर्णय— १)
संन्यासग्रहणपद्धति —भा. टी. १)
सचित्रसतर्पणसन्ध्यादर्पण— हिन्दी भाषानुवाद सहित श्री दामोदर शर्मा द्वारा विरचित। सन्ध्या विषयक सर्वोत्तम पुस्तक २)
समूर्तार्चनाधिकरण—(अत्रिसंहिता) ६॥)
सरस्वतीविलास—प्रतापरुद्र २॥)
समय मयूख—नीलकंठ २)
सर्वतोभद्र चक्र— ।)
सर्वदेव प्रतिष्ठा प्रकाश —चतुर्थीलाल ४॥)
सर्वपूजा— ।)
सापिण्डय कल्पलतिका वृत्ति— ॥=)
सापिण्डयदीपक— ।=)
सापिण्डीनिर्णयेष्टिका— ।≡)
संकल्प कल्पना—सबसंकल्प ॥=)
संस्कार—गणपति रामकृष्ण १५)
संस्कारदीपक—३ भाग नित्यानंद १५)
(प्रथम ४) द्वितीय ५॥) तृतीय ५॥) पृथक-पृथक भी मिलते हैं)
संस्कार पद्धति—भास्करशास्त्री ३॥।)
संस्कार प्रकाश—चतुर्थीलाल ४॥)
संस्कारभास्कर— ६), ७)
संस्कारमयूख—नीलकंठ १॥)
संस्काररत्नमाला—दो भाग पूना १८॥।)
संस्कारविधि—स्वा० दयानंद ॥=)
संस्काविधिर विमर्श—अत्रिदेवगुप्त ३)
स्मार्तप्रभु—विद्याधर प्रथम १।) दूसरा १॥)
स्मार्तोल्लास—३ भाग २॥)
संक्षिप्तदीक्षा तुलादान पद्धति =)॥
स्मृति कौस्तुभ—अनंतदेव ५)
स्मृति चन्द्रिका—६ भाग (देवनभट्ट) १३॥।)
स्मृतितत्व—रघुनंदन भट कृत (२८ स्मृतितत्वसंग्रह) जिल्ददार १५)
स्मृति समुच्चय— २७ स्मृति ७॥)
स्मृतिसारोद्धार—विश्वम्भर त्रिपाठी ६)
स्मृत्यर्थसार—श्रीधराचार्य २।≡)
स्वस्तिवाचन— ≡)
हरदीमातृपूजा— ≡)
हरिजनस्मृति — ।)
हारलता—अनिरुद्धभट्ट २)
हिन्दुधर्मका स्वरूप— ≡)
होमपद्धति— =)
होमपद्धति और निर्णय— ≡)
त्रिंशच्छ्लोकी— ४।≡)
त्रिपिण्डी श्राद्ध पद्धति— ॥-)
त्रिस्थलीसेतु—नारायणभट्ट ५॥=)
त्रिस्थलीसेतु प्रघट्टक—नारायण १)
त्रिस्थलीसेतु—तीर्थेन्दु शेखर—काशी मोक्ष विचार ॥)

—

इतिहास, पुराण, व्रतकथा, माहात्म्य-ग्रन्थ

अग्निपुराण—बुकसाइज पक्की जिल्द ६)
अग्निवेष रामायण—भाषाटीका ॥=)
अद्भुत रामायण—मूल १।) भा. टी. २॥।)
अध्यात्मरामायण—मूल, गुटका २)
अध्यात्मरामायण—संस्कृतटीका खुला ७)
अध्यात्मरामायण—तीन संस्कृत टीका, बुकसाइज, कलकत्ता १५)
अध्यात्मरामयण—भा. टी. गोरखपुर ३)
अध्यात्म रामायण—भाषावार्तिक ५)
अनन्तव्रत कथा—भाषाटीका ।)
अक्षयनवमीकथा भाषाटीका =)
आवन्ति क्षेत्र माहात्म्य ७)
अष्टादशपुराणान्तर्गत नीतिसारसुभाषित २)
अष्टादशपुराणदर्पण—भाषा ५)
आत्म पुराण सं. टीका १८)
आत्म पुराण केवल भाषा ६०)
आत्मरामायण—भाषा ॥=)
आदित्यव्रत कथा—भाषाटीका ≡)
आदि-पुराण—भाषाटीका ४॥)
आनन्दरामायण—मूल १०)
आर्यमंजुश्री मूल कल्प—केवल दूसरा तीसरा भाग १५)
इतिहासगुरुखालसा—हिन्दी ५)
ऋषिपंचमी—भाषाटीका ।=)
एकादशीमाहात्म्य-मूल १=) केवलभाषा ॥)
एकादशीमाहात्म्य-भा.टी. खुलापत्रा २॥), ३)
करवाचतुर्थी—भाषाटीका ।)
कल्किपुराण—मूल बुकसाइजजिल्द १॥।)
कल्किपुराण—भाषाटीका ५)
कृष्णजन्माष्टमी—भा. टी. ।=)
कार्त्तिकमाहात्म्य—भाषाटीका १॥), २), ३)
कार्त्तिकमाहात्म्य-३५ अध्याय क्षेमकरी ४॥)
कार्तिकशुक्ल रविषष्ठी ≡)
काशीखण्ड—खुलापत्रा भा. टी. २०)
काशीखंड केवल भाषा बुकसाइज १०)
काशीयात्रा—भाषा सचित्र ॥=)
काशीपुरी माहात्म्य—पंचकोशी माहात्म्य दोहा चौपाई
काशीकेदार माहात्म्य—भाषाटीका ।≡)
केदारकल्प—रुद्रयामलान्तर्गत भा. टी. ३)
केदारखण्ड—मूल १०) केवल भाषा ३॥)
केदारखण्ड—भाषाटीका १०)
कूर्ममहापुराण—मूल, खुलापत्रा २०)
गया माहात्म्य—मूल ॥=) भा. टी. ७)
गरुड़ पुराण—१६ अध्याय, भा. टी. २), १॥)
गरुड़ पुराण—३४ अध्याय, भा. टी. २॥)
गरुड़पुराण—संपूर्ण मूल बुकसाइज जिल्ददार कलकत्ता ५) सादा १॥)
चंदनषष्ठी सूर्यषष्ठी ४)
चान्द्रायणव्रत कथा—भा. टी. ।)
चित्रगुप्त कथा ।)
जगन्नाथ माहात्म्य =)
जीवितपुत्रिका व्रतकथा भा. टी. २॥)
जैमिनी अश्वमेध—मूल ४॥) भा. टी. ≡)
ज्येष्ठ मास माहात्म्य भा. टी. ११)
देवी भागवत भाषा केवल ३)
देवी भागवत मूल गुटका २०)
देवीभागवत—भा. टी. खुलापत्रा १५)
धर्मसंग्रह—इतिहास पुराणोद्धृत धर्मबोध श्लोक ४०)
नृसिंहपुराण—मूल बुकसाइज २।)
पद्मपुराण—मूल बुकसाइजमें, ४ भाग में संपूर्ण पूना ३॥)
पद्मपुराण—मूल, खुलापत्रा, बंबई ३०) ५०)

पंचकोशीयात्रा— ।-)
पुराण संहिता—आलमंदार संहिता, बृहत्सदाशिवसंहिता, सनत्कुमारसंहिता ६)
पुरुषोत्तममास (अधिकमास) भा. टी. ३)
पौषमाहात्म्य—मूल ॥=)
प्रणवकल्प—सभाष्य १॥)
प्रयाग कल्पवास ।)
प्रेमसागर—भाषा, सचित्र २), २॥), ३) ४)
प्रेमसुधासागर—भा. सचित्र, गोरखपुर ३॥)
फाल्गुण माहात्म्य —मूल १।)
बालबोध रामायण १)
बहुलाव्रत कथा—भाषाटीका ≡)
बुद्धाष्टमी कथा—भाषाटीका ।-)
ब्रह्मवैवर्तपुराण—बुकसाइज, जिल्ददार ९॥)
ब्रह्मवैवर्तपुराण बुकसाइज दो भाग पूना १३॥=)
ब्रह्मवैवर्तपुराण—खुलापत्रा, बंबई १८)
ब्रह्मोत्तरखण्ड—भा. टी. ३॥)
ब्रह्माण्डपुराण—खुलापत्रा, मूल १४)
भक्तमाल—नाभाजी, सटीक ३॥)
भक्तमाल—रामरसिकावली कवित्त दोहा १०)
भक्तमाल—केवल भाषा १०)
भक्तमाल—मूल संस्कृत खुलापत्रा ५)
भागवत—संपूर्ण, मूल, गुटका, गोरखपुर ३)
भागवत—गुटका बंबई निर्णयसागर ९)
भागवत—मोटाअक्षर, मूल, बड़ासाइज, ६)
भागवत—सचूर्णिका संस्कृत टीका, बढ़िया, खुलापत्रा, बंबई ३४)
भागवत—श्रीधर संस्कृत टीका, खुला पत्रा, काशी २४)
भागवत—श्रीधरीटीका बंबई नि. सा. ६०)
भागवत—श्रीधरी मोटा अक्षर गणपत कृष्णा का छापा बढ़िया बंबई १००)
भागवत—भा. टी. खुलापत्रा, रामतेज ३०)
भागवत—भा. टी. खुलापत्रा, दौलतराम कृत सरस्वती भा. टी. प्रकाश टिप्पणी, पृष्ठ संख्या १८५० ३०)
भागवत—शालिगराम कृत भा. टी. खुला पत्रा, मोटा अक्षर, बढ़िया कागज, बंबई ५५)
भागवत—भाषाटीका, बुकसाइज, दो भाग, गोरखपुर १५)
भागवत—भा. टी. दो जिल्द, मथुरा १५)
भागवत—भाषाटीका, बुकसाइज, एक जिल्द, काशी १५)
भागवत—सुधासागर—केवलभाषा, ८॥)
भागवत—केवल भाषा, अनेकों रंगीन चित्र, दो भाग, इलाहाबाद १६)
भागवत—दशमस्कंध, भाषा टीका, खुलापत्रा बंबई ११) काशी ८)
भागवत—एकादशस्कन्ध भाषाटीका खुला बंबई ५॥)
भागवत—एकादशस्कन्ध, प्रत्येक पद का हिन्दी अनुवाद तथा भावानुवाद, २ भाग ६॥)
भागवत—राधेश्यामतर्ज-श्रीलाल कृत ५॥)
भारतसार—मूल खुलापत्रा ३॥)
भाद्रपद गणेशचतुर्थी भाषाटीका ≡)
भाद्रपद माहात्म्य मूल १)
भीष्मपञ्चक व्रत प्रयोग ।)
मंगलागौरीव्रत कथा—भा. टी. ।)
मत्स्यपुराण—बुकसाइज मूल पूना ९)
मत्स्यपुराण—बुकसाइज जिल्ददार ६)
मत्स्यपुराण—खुलापत्रा, मूल १४)
मत्स्यपुराण—बुकसाइज, केवल हिन्दी अनुवाद विस्तृत पं. रामप्रताप २०)
महाभागवतदेवी पुराण—मूल २)
महाभारत—नीलकंठीसंस्कृत टीका, संपूर्ण ६ जिल्द पूना ५०)
महाभारत—केवल विराटपर्व, ८ संस्कृत टीका बंबई ५)
महाभारत—केवल उद्योग पर्व, ५ संस्कृत टीका बम्बई १०)
महाभारत—हिन्दी टी. सातवलेकर, आदिपर्व ७)
महाभारत—हिन्दी टी. सातवलेकर सभापर्व ३॥)
महाभारत—हिन्दी टी. सातवलेकर शांतिपर्व पूर्वभाग १०)
महाभारत—केवल हिन्दी भाषा, छोटा टाइप, १० जिल्दों में संपूर्ण २०)
महाभारत—केवल हिन्दी भाषा, संपूर्ण, मोटे अक्षर, अनेकों रंगीन तथा सादे चित्र, बढ़िया कागज, १० बड़ी जिल्दों में ९०)
महाभारत—केवल भाषा संपूर्ण मोटा अक्षर बड़ी २ आठ जिल्द लखनौ ४५)
महाभारत—छोटा, संक्षिप्त, हिन्दी भा. मोटा अक्षर ८) बारीक ६)
महाभारत—गुटका, बारीक ४), ३)
महाभारत—सबलसिंह चौहान, दोहा-चौपाई लखनऊ ६) कलकत्ता १२)
महाभारत—सबलसिंह चौहान, बंबई १३॥)
महाभारत—राधेश्याम की तर्जपर ८)
महाभारत—राधेश्याम १०।-)
महाभारत की समालोचना—सातवलेकर १॥)
महाभारत तात्पर्य-टीका, ज्ञानदीपिका ४)
महाभारत संग्रह— ।=)
महालक्ष्मीव्रत कथा— ।), ॥)
मन्त्ररामायण— २)
मार्गशीर्ष माहात्म्य—भा. टी. ३)
मारकण्डेयपुराण—मूल, बुकसाइज ४।)
माघमाहात्म्य—भा. टी. ३, २॥), २॥)
माघभाद्रगणेशचौथ— ≡)
मुक्ताभरण सप्तमी—भाषाटीका ।)
मुक्ताफल—बोपदेव ६)
मूलरामायण—भा. टी. -)॥ सं. हिं. ।=)
मूलरामायण, शीलनिरूपणाध्याय सं. हिं. टीका ॥=)
मार्गशीर्ष माहात्म्य—मूल ॥।=)
युगपुराण— २)
रासपंचाध्यायी—भा. टी. ४॥)
रामाश्वमेध—मूल ४) भा. टी. ११)
रामाश्वमेध—केवल भाषावार्तिक ४॥)
रविषष्ठि कथा—भा. टी. ≡)
रामनवमी कथा भाषाटीका ।)
लघुभागवतामृत—रूपगोस्वामीकृत भाषाटीका ४)
ललितास्तवमणिमाला ॥)
ललितासहस्रनाम—सटीक २॥)
लिङ्गपुराण—बुकसाइज, मूल जिल्ददार ७॥)
लिङ्गपुराण—खुलापत्रा, बंबई, मोटा १६)
वटसावित्री कथा— ।=)
वामनद्वादशी—भा. टी. ≡)
वामनपुराण—खुला पत्रा मूल ६)
वामनपुराण—केवल भाषावार्तिक ९)
वायुपुराण—बुकसाइज, मूल ७=)
वायुपुराण—खुलापत्रा, मोटा अक्षर १२)
वायुपुराण—केवल भाषा, पं. रामप्रताप १२)
वाराहपुराण—खुलापत्रा १३)
वाराहपुराण केवल भाषा ३॥)
वाल्मीकिरामायण, मूल, खुलापत्रा १७)
वाल्मीकिरामायण मूल गुटका दो भाग में संपूर्ण (६ कांड) मदरास सं० ११)
वाल्मीकिरामायण—गोविन्दराजीय, (भूषण) रामानुजीतनि श्लोकी माहेश्वर तीर्थीयाख्यव्याख्या चतुष्टय सहित खुलापत्रा ६०) तथा बुकसाइज ५ बड़ी जिल्दों में ६०)
वाल्मीकिरामायण—तिलक, शिरोमणि भूषण ३ सं. टीका ७ भाग ३६)
वाल्मीकि रामायण—पं. ज्वालाप्रसाद कृत भा. टी. खुलापत्रा, बंबई ५०)
वाल्मीकिरामायण—भा. टी. बुकसाइज २४)
वाल्मीकिरामायण—भा. टी. बुकसाइज दस भाग में इलाहाबाद २४)

वाल्मीकिरामायण—मूल, छोटा, पाकेट-साइज, आठ भाग ६ कांड १२।)
वाल्मीकिरामायण—केवल बालकाण्ड, भा. टी. सातवलेकर ४)
वाल्मीकिरामायण—सातवलेकर भा. टी. अयोध्याकांड दो भाग ८)
वाल्मीकिरामायण—सातवलेकर भा. टी. अरण्यकांड ४)
वाल्मीकिरामायण—सातवलेकर भा. टी. किष्किंधाकांड ४)
वाल्मीकिरामायण—सातवलेकर भा. टी. सुन्दरकांड ४)
वाल्मीकिरामायण युद्धकांड भा. टीका पूर्वभागसातवलेकर ४)
वाल्मीकिरामायण—केवल भाषा मोटा अक्षर दो जिल्दों में—पं. ज्वाला प्रसादकृत बंबई ३०)
वाल्मीकिरामायण सुन्दरकांड—मूल गुटका १।), २), २।) खुला मोटा अक्षर ५)
वाल्मीकि—सुन्दरकाण्ड भा. टी. रामतेज ३)
वाल्मीकिरामायण—सुन्दरकांड भा. टी. खुला पत्रा, बंबई ५।)
वाल्मीकिरामायण—संपूर्ण, केवल भाषा, इलाहाबाद १३)
वाल्मीकि—संपूर्ण केवल भाषा, मथुरा ८)
विष्णुपुराण—बुकसाइज श्रीधर व्याख्या ६)
विष्णुपुराण—खुलापत्रा, सटीक ९)
विष्णुपुराण—भाषाटीका गोरखपुर ४)
विष्णुधर्मोत्तरपुराण—मूल, खुलापत्रा १८)
वैशाख माहात्म्य—भा. टी. २), ३)
व्यतिपातकथा—भाषाटीका ।=)
शनिप्रदोषव्रत—भा. टी. ।)
शिवपुराण—मूल, खुलापत्रा, छपता है
शिवपुराण—केवल भाषा, ८), १०)
शिवभारत—संस्कृत २।)
शिवरात्रि माहात्म्य—भाषा टीका ।।)
श्रावणमाहात्म्य—भाषाटीका ३)

श्रीसुबोधिनी—श्रीवल्लभाचार्य ४।)
संकट चतुर्थीसंपूर्ण मूल ।≡) भा. टी. ।।), १।)
सत्यनारायणकथा—भा. टी. ५ अध्याय ।-)
सत्यनारायणकथा—भा. टी. ७ अध्याय ।=)
सत्यनारायण कथा—५ अध्याय वायु नंदन भा. टी. ।≡)
सत्यनारायण—इतिहास, समुच्चय ।।-)
सत्यनारायण—भाषा राधेश्याम ।।)
स्कंदमहापुराण—मूल, संपूर्ण, खुला-पत्रा बंबई ३००)
सुखसागर (भागवत)—सरलभाषा, मोटाअक्षर सचित्र, लखनऊ २५)
सुखसागर—मोटा अक्षर, मथुरा १६)१२)
सुखसागर—मध्यम, सफेद लखनऊ १३)
सुखसागर—मध्यम मथुरा ८)
शुकसागर—सरलभाषा, ला. शालिग रामकृत, सफेद कागज, बड़ा साइज, बंबई बढ़िया ३६)
शुकसागर—गुटका, बारीक टाइप १२)
शुकोक्तिसुधासागर (भागवत भाषा) १२)
सोमावती कथा—भाषाटीका ।-)
सौरपुराण—मूल पूना ४।)
सावित्री व्रतकथा भाषाटीका ।≡)
हरितालिकाव्रत कथा—भा. टी. ।)
हरिलीला अमृत—वोपदेव १।)
हरिवंश—संस्कृत टीका, बुकसाइज १२)
हरीवंश—संस्कृत टीका, पत्रात्मक २०)
" केवल भाषा १२)
हरीवंशपुराण—भा. टी. पत्रात्मक लखनऊ ४०)
हरीवंश पुराण—भा. टी. पत्रात्मक बंबई ३२)
हरीवंश पुराण—भाषा लखनऊ १६)
हलषष्ठीव्रत कथा भाषा टीका ≡)

वेदान्त ग्रन्थ

अच्युतलेखमाला विद्वानों के लेख हिन्दी— ३)
अणुभाष्य-प्रकाश—व्याख्या २२।)
अणुभाष्य बालबोधिनी टीका— ६।)
अद्वैतचिन्तामणि—रंगोजी ।।।=)
अद्वैतमकरन्द—लक्ष्मीधर वि. ।।-)
अद्वैत ब्रह्मसिद्धि—सदानन्द यति ३।।)
अद्वैतरत्नरक्षण—श्रीमधुसूदन वि.
अद्वैत विद्यातिलक—समरपुंगव— ।।=)
अद्वैत सिद्धान्त विद्योतन—ब्रह्मानंद— ।।।=)
" " सार संग्रह ।।)
" " सार संग्रह—सदानंद ४।)
अद्वैत सिद्धि—मधुसूदनी व्याख्या २०)
" —गुरु चंद्रिका टीका— ९।)
अद्वैत सिद्धि सिद्धान्त सार सदानन्दकृत ४।)
अद्वैत रत्नाकर—भा. टी. ।।=)
अद्वैतामोद—वासुदेवशास्त्री ३)
अद्वैतामृत—भा. टी. १)
अधिकरणसारावली—श्रीवेदान्ताचार्य १।)
अध्यात्मप्रकाश—भाषा ।=)
अध्यात्म विद्योपदेश विधि ।=)
अध्यात्मविनोद—भाषा ।।=)
अनुभूतिप्रकाश—विद्यारण्यस्वामी २)
अनुव्याख्यानम्—मध्वसंप्रदाय ५)
अनुभवप्रकाश—वनानाथ भाषा १।।)
अपरोक्षानुभूति—सटीक ।।)
" —भा. टीका १।), =)।।
अभ्यासयोग—श्रीभूपेन्द्रनाथ सान्याल १।।) सजिल्द २।)
अष्टावक्र संहिता—सटीक १।)
अष्टादशश्लोकी गीतामृतवर्षिणी—श्रीवेदान्तीजी १)
अभिलाष सागर भाषा— ४)
आत्मबोध—भा. टी. ।=), ।।)
आत्मपुराण संस्कृत टीका खुला— १८)
" भाषा चिद्घनानंद खुला ६०)
आत्मानात्मविवेक— ।।)
आत्म प्रबोध—हिन्दी १)
आत्मविद्याविलास ।।)
आत्मतत्त्वविवेक—उदयनाचार्य २।।)
आत्मानुसंधान और आत्मानुभूति—श्रीभूपेन्द्रनाथ सान्याल ।।)
आनंदामृतवर्षिणी— बंबई-भाषा १।।)
" लखनऊ ।।)
ईश्वरदर्शन—स्वा. ब्रह्मानंदकृत भा. टी. २।)
इष्टसिद्धि—विमुक्तात्मा स्वोपज्ञ टीका १४)
ॐकार महिमाप्रकाश—श्रीनिवासस्वोपज्ञ व्याख्या १।)
उपाधिखंडन—श्री आनंदतीर्थ विरचित २)
उपदेश साहस्री— भगवत्पादाचार्य २)
कल्याण का मार्ग—परमहंस श्री योगानंद जी हिन्दी २।)
कल्याणकुंज—हिन्दी ।।।≡)
काथबोध—सटीक ।।)
कायपरिशुद्धि—श्रीअभ्यंकर प्रणीत १।।।=)
क्रमदीपिका—केशव भट्ट ४।)
कुंडलिया—गिरिधर ।), १)
खण्डन खण्ड खाद्य—शांकरी टीका— १२)
" शारदा टीका १२)
खंडपरिशिष्ट—ताराचरण— ।।)
गुरुकृपा—श्रीनिवासाचार्य विरचित २।)
गूढार्थ दीपिका—धनपतिसूरी ६)
चंद्रकान्तवेदान्त—इच्छाराम देसाई ३ भागों में भाषा ३०)
चर्पटपंजरिका—स्वा. योगानंदकृत हिन्दी-विवेचना सहित १।)
चैतन्य चरितावली—५ भाग सचित्र ४।=)
जप्पजीसाहब—स्वा. परमानंद कृत विस्तृत हिं. टीका २।)
जीवन्मुक्तविवेक—भाषा टीका ४)
ढ़ाइ हजार अनमोल बोल—हिन्दी ।।=
तत्वचिंतामणि—भाषा टीका-जयदयाल ५।।।≡
तत्वदीपन—अखंडानंदकृत ८

तत्व बिंदु—वाचस्पति ।।)
तत्वबोध—भा. टी. ।=)
तत्वमुक्ता कलाप सर्वार्थसिद्धि तथा आनंददायिनी ८)
तत्वसेखर—लोकाचार १।।)
तत्वत्रय—लोकाचार-सभाष्य ३)
तत्वार्थदीप निबंध—शास्त्रार्थप्रकरण ३।।)
तत्वानुसंधान—भाषा-स्वा. चिद्घनानंद ८)
तत्वसार—रत्नसारिणी व्याख्या ६)
तर्कताण्डव—व्यासतीर्थ-सव्याख्या ९।)
त्रिदंडिमत विभेदिनी—शंकराश्रम ३)
दर्शनसर्वस्व-शंकरचैतन्य भारती प्रणीत २।।)
दश श्लोकी—श्रीशंकराचार्य कृत भा. टी. ।)
दशनामापराध ज्ञानमाला—श्रीवेदान्तीजी १)
दहरविद्या प्रकाश—शिवेंद्र सरस्वति ।।)
दासबोध—भाषा ३)
दक्षिणामूर्ति संहिता ।।।-)
दिनचर्या—श्रीभूपेन्द्रनाथ सान्यालकृत १।।-)
दीक्षा और गुरुतत्व „ „ „ ।।)
दृष्टान्त दीपक-भाषा २)
दृष्टान्त मंजूषा—भाषा २)
द्वैतनिर्णय सिद्धान्त संग्रह १।=)
द्वैताब्धकण्टकोद्धार—श्रीनागराज विरचित २)
नयमंजरी—अप्पयदीक्षित २।)
न्यायपरिशुद्धि—सटीक—वेदान्ताचार्य ७।।)
न्यायभास्कर खंडन—मध्वचंद्रिका खंडन १।।)
न्याय मकरंद—आनंदबोध व्या० ६)
न्यायामृताद्वैतसिद्धि–७ टीका–१ला भाग १५)
नवधाभक्ति—हिन्दी =)
नारदभक्ति सूत्र—भा. टी. ≡)
नारायणीयम्—सटीक ४।।।)
नित्याचारदर्पण-स्वा. ब्रह्मानंदकृत हिन्दी १)
नैष्कर्मसिद्धि—सुरेश्वराचार्यकृत सटीक ३)
„ भा. टी. सहित — १।।।)
निर्भयविलास-भाषापद्य- २।।)
पंचरत्नकारिका-सदाशिवकृत ।।=)

पंचकाशविवेक—स्वा. योगानंदकृत सरलभाषा १।।)
पंचदशी—रामकृष्ण सं. टीका ४) ६।।)
पंचदशी रामकृष्णटीका पुराना छपा लखनऊ १)
„ —केवल भाषा आत्मस्वरूप ७)
„ —पं० मिहरचन्दकृत हिन्दीटीका ८)
„ —पं. रामावतार कृत हिन्दी टीका ६)
„ केवलभाषा बारीक टाईप १)
पंचीकरण—छ टीका १।।।)
„ केवल भाषा छपता है
परतत्व-भयनिरासन नक्षत्रमाला-(न्यायामृतलहरी) १)
परमार्थ पत्रावली-भाषा—जयदयाल १।।)
परमार्थ प्रकाशिका—वीरराघवाचार्य विरचित २)
परमात्म संदर्भ—बंगला २)
परमार्थसार—सं. टीका ।।)
परमेश्वर प्रार्थना—स्वा. ब्रह्मानंद ≡)
पक्षपात रहित अनुभवप्रकाश—काली-कमलीवाला ९।।)
प्रकरणपंचक-भाषा टीका ।।।)
प्रणवकल्प—सटीक १।।)
प्रपन्नामृत-श्रीअनन्ताचार्यप्रणीत ८)
प्रत्यक्तत्वचिन्तामणि—सदानन्द–दो भाग ५)
प्रकरणग्रन्थसंग्रह—श्रीशंकराचार्य— १२।।)
प्रेमयोग—वियोगीहरि १।।)
प्रेमदर्शन—भा. टी. ।-)
प्राणतत्व—भाषा १)
प्रेमयरत्नावली—बलदेवकृत २।।)
प्रस्थान भेद-श्रीमधुसूदन ।)
प्रस्थान रत्नाकर-पुरुषोत्तमजी ३)
पूर्णप्रज्ञदर्शन—मध्व १।।-)
पूर्वोत्तर मीमांसा वादनक्षत्रमाला—अप्पयदीक्षित ३)
प्रज्ञानंदप्रकाश—भाषा ३)
प्रेमपत्तन—चैतन्य सम्प्रदाय-सव्याख्या १।)

बिल्वदल—श्रीभूपेन्द्रनाथ सान्यालकृत दो भाग ७० लेख हैं। जो मनुष्य जीवन को उत्कृष्ट बनाने में सहायक होंगे ५।।)
बोधसार—दिवाकरकृतटीका १५)
बृहदारण्यकवार्तिकसार—लघुसंग्रह १५)
बृहदारण्यक वार्तिकसार—श्रीविद्यारण्यमुनिविरचित—भाषा टीका सहित दो भागों में १२)
श्रीब्रह्मदर्शन—भाषा ४)
ब्रह्मदर्पण—भाषा उपन्यास ।।)
ब्रह्मवाद—भाषाटीका १)
ब्रह्ममीमांसा भाष्य—वेदान्तपारिजात १।)
ब्रह्मानंदपदमंजरी—स्वा. ब्रह्मानंद ।=)
ब्रह्मसिद्धि—मंडनमिश्र—शंखपाणिव्याख्या ७।।)
ब्रह्मसूत्र—शंकरभाष्य—बंबई ८)
„ भामती, कल्पतरु, कल्पतरुपरिमल २५)
„ शंकर-आनंदगिरि २ भाग पूना १८)
„ रत्नप्रभा भामती, न्यायनिर्णय १८)
„ पूर्णानंदी-रत्नप्रभा ८)
„ „ „ भामती ११)
„ विज्ञान भिक्षुभाष्य ९)
„ भाष्यनिर्णय—श्रीचिद्घनानंदपुरी विरचित तृतीयपादतक ५)
„ भास्कर भाष्य— ४।।)
„ निम्बार्क भाष्य— ६)
„ सदाशिवेंद्रवृत्ति— ३।।)
„ तात्पर्यविवरण— २।)
„ मरीचिकावृत्ति— ३)
„ दीपिका—शंकरानंद— ३)
„ वृत्तिवेदाचार्य सुन्दरभट्ट ४।।)
„ वृत्ति अद्वैत मंजरी १)
„ शांकरभाष्य-पं. लक्ष्मीनाथ झा कृत प्रकाश-विकासटीका चतुः सूत्री पर्यन्त ७)
„ भाष्यार्थ रत्नमाला-सुब्रह्मण्य ६।=)
„ वत्तिहरिदीक्षित ३।।≡)

ब्रह्मसूत्र—वृत्तिमिताक्षरा अन्नमभट्टकृत ७)
„ भामती कल्पतरु परिमल चतुःसूत्री ४।।)
„ सिद्धान्त मुक्तावली ३।।।)
„ ब्रह्मामृतवर्षिणी ६।।।)
„ भाष्यार्थ प्रदीपिका सहित स्वा. गोविन्दानंद जी कृत भाषा में केवल प्रथमाध्याय ४)
„ भाष्य सिद्धान्त संग्रह १।।)
„ रत्नप्रभा—भोलेबाबाकृत हिन्दी का अनुवाद सहित केवल २रा तीसरा भाग मिलता है ११।।)
„ शांकर भाष्यानुसारी भा. टी. २।)
„ शंकरभाष्य का ठीक हिन्दी अनुवाद आलुबाबा का संपूर्ण दो भाग ६)
भक्तिचंद्रिका दो भाग १३)।।
भक्तिचंद्रिका भाष्य १)
भक्तिदर्शन—शाण्डिल्यभाषा-भाष्य १)
भक्तिनिर्णय—अनंतदेव नाममाहात्म्य ।-)
भक्त्यधिकरणमाला—नारायणतीर्थ ।।=)
भक्तिरसायन—मधुसूदन-सटीक ३)
भक्ति रसामृत सिंधु रूपगोस्वामीप्रणीत व्याख्यासहित ४)
भगवन्नामकौमुदी—लक्ष्मीधरकृत-प्रकाशटीका ।।।)
„ माहात्म्यसंग्रह-रघुनाथ १।=)
भामती—वाचस्पतिमिश्र ३)
भावरसामृत—भाषा. स्वा. गुलाबसिंह ।।-)
भास्करी—३ भाग ईश्वरप्रत्यभिज्ञा की व्याख्या
भेदसाम्राज्य—श्रीरंगरामानुजविरचित १।।)
भेदधिक्कार—नृसिंहाश्रम ३)
भगवच्चर्चा—हनुमानप्रसाद पोद्दार २ भाग १)
भवरोग की रामबाणदवा—भाषा ।-)
भगवान पर विश्वास— „ ।)
भक्तिप्रकाश पौराणिक २)
भक्तनामावली— ।।≡)

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का एकमात्र पता—मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, नेपाली खपरा, पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस

तत्व विदु—वाचस्पति ।।)
तत्वबोध—भा. टी. ।=)
तत्वमुक्ता कलाप सर्वार्थसिद्धि तथा आनंददायिनी ८)
तत्वशेखर—लोकाचार १।।)
तत्वत्रय—लोकाचार-सभाष्य ३)
तत्वार्थदीप निबंध—शास्त्रार्थप्रकरण ३।।)
तत्वानुसंधान—भाषा-स्वा. चिद्घनानंद ८)
तत्वसार—रत्नसारिणी व्याख्या ६)
तर्कताण्डव—व्यासतीर्थ-सव्याख्या ९।)
त्रिदंडिमत विभेदिनी—शंकराश्रम ३)
दर्शनसर्वस्व—शंकरचैतन्य भारती प्रणीत २।।)
दश श्लोकी—श्रीशंकराचार्य कृत भा. टी. ।)
दशनामापराध ज्ञानमाला—श्रीवेदान्तीजी १)
दहरविद्या प्रकाश—शिवेंद्र सरस्वति ।।)
दासबोध—भाषा ३)
दक्षिणामूर्ति संहिता ।।।=)
दिनचर्या—श्रीभूपेन्द्रनाथ सान्यालकृत १।।=)
दीक्षा और गुरुतत्व ,, ,, ,, ।।)
दृष्टान्त दीपक-भाषा २)
दृष्टान्त मंजूषा—भाषा २)
द्वैतनिर्णय सिद्धान्त संग्रह १।=)
द्वैताध्वकण्टकोद्धार—श्रीनागराज विरचित २)
नयमंजरी—अप्पयदीक्षित २।)
न्यायपरिशुद्धि—सटीक—वेदान्ताचार्य ७।।)
न्यायभास्कर खंडन—मध्वचंद्रिका खंडन १।।)
न्याय मकरंद—आनंदबोध व्या० ६)
न्यायामृताद्वैतसिद्धि-७ टीका-१ला भाग १५)
नवधाभक्ति—हिन्दी =)
नारदभक्ति सूत्र—भा. टी. ≡)
नारायणीयम्—सटीक ४।।।)
नित्याचारदर्पण—स्वा. ब्रह्मानंदकृत हिन्दी १)
नैष्कर्मसिद्धि—सुरेश्वराचार्यकृत सटीक ३)
,, भा. टी. सहित — १।।।)
निर्भयविलास-भाषापद्य— २।।)
पंचरत्नकारिका—सदाशिवकृत ।।=)

पंचकोशविवेक—स्वा. योगानंदकृत सरलभाषा १।।)
पंचदशी—रामकृष्ण सं. टीका ४) ६।।)
पंचदशी रामकृष्णटीका पुराना छपा लखनऊ १)
,, —केवल भाषा आत्मस्वरूप ७)
,, —पं० मिहरचन्दकृत हिन्दीटीका ८)
,, —पं. रामावतार कृत हिन्दी टीका ६)
,, केवलभाषा बारीक टाईप १)
पंचीकरण—छ टीका १।।।)
,, केवल भाषा छपता है
परतत्व-भयनिरासन नक्षत्रमाला-(न्यायामृतलहरी) १)
परमार्थ पत्रावली-भाषा—जयदयाल १।।)
परमार्थ प्रकाशिका—वीरराघवाचार्य विरचित २)
परमात्म संदर्भ—बंगला २)
परमार्थसार—सं. टीका ।।)
परमेश्वर प्रार्थना—स्वा. ब्रह्मानंद ≡)
पक्षपात रहित अनुभवप्रकाश—काली-कमलीवाला ९।।)
प्रकरणपंचक—भाषा टीका ।।।)
प्रणवकल्प—सटीक १।।)
प्रपन्नामृत—श्रीअनन्ताचार्यप्रणीत ८)
प्रत्यक्तत्वचिन्तामणि—सदानन्द—दो भाग ५)
प्रकरणग्रन्थसंग्रह—श्रीशंकराचार्य— १२।।)
प्रेमयोग—वियोगीहरि १।।)
प्रेमदर्शन—भा. टी. ।-)
प्राणतत्व—भाषा १)
प्रेमयरत्नावली—बलदेवकृत २।।)
प्रस्थान भेद—श्रीमधुसूदन ।)
प्रस्थान रत्नाकर—पुरुषोत्तमजी ३)
पूर्णप्रज्ञदर्शन—मध्व १।।-)
पूर्वोत्तर मीमांसा वादनक्षत्रमाला—अप्पयदीक्षित ३)
प्रज्ञानंदप्रकाश—भाषा ३)
प्रेमपत्तन—चैतन्य सम्प्रदाय-सव्याख्या १।)

बिल्वदल—श्रीभूपेन्द्रनाथ सान्यालकृत दो भाग ७० लेख हैं। जो मनुष्य जीवन को उत्कृष्ट बनाने में सहायक होंगे ५।।)
बोधसार—दिवाकरकृतटीका १५)
बृहदारण्यकवार्तिकसार—लघुसंग्रह १५)
बृहदारण्यक वार्तिकसार—श्रीविद्यारण्यमुनिविरचित—भाषा टीका सहित दो भागों में १२)
श्रीब्रह्मदर्शन—भाषा ४)
ब्रह्मदर्पण—भाषा उपन्यास ।।।)
ब्रह्मवाद—भाषाटीका १)
ब्रह्ममीमांसा भाष्य—वेदान्तपारिजात १।।)
ब्रह्मानंदपदमंजरी—स्वा. ब्रह्मानंद ।=)
ब्रह्मसिद्धि—मंडनमिश्र—शंखपाणिव्याख्या ७।।)
ब्रह्मसूत्र—शंकरभाष्य—बंबई ८)
,, भामती, कल्पतरु, कल्पतरुपरिमल २५)
,, शंकर-आनंदगिरि २ भाग पूना १८)
,, रत्नप्रभा भामती, न्यायनिर्णय १८)
,, पूर्णानंदी-रत्नप्रभा ८)
,, ,, ,, भामती ११)
,, विज्ञान भिक्षुभाष्य ९)
,, भाष्यनिर्णय—श्रीचिद्घनानंदपुरी विरचित तृतीयपादतक ५)
,, भास्कर भाष्य— ४।।)
,, निम्बार्क भाष्य— ६)
,, सदाशिवेंद्रवृत्ति— ३।।)
,, तात्पर्यविवरण— २।)
,, मरीचिकावृत्ति— ३)
,, दीपिका—शंकरानंद— ३)
,, वृत्तिवेदाचार्य सुन्दरभट्ट ४।।)
,, वृत्ति अद्वैत मंजरी १)
,, शांकरभाष्य—पं. लक्ष्मीनाथ झा कृत प्रकाश-विकासटीका चतुःसूत्री पर्यन्त ७)
,, भाष्यार्थ रत्नमाला-सुब्रह्मण्य ६।=)
,, वृत्तिहरिदीक्षित ३।।≡)

ब्रह्मसूत्र—वृत्तिमिताक्षरा अन्नभट्टकृत ७)
,, भामती कल्पतरु परिमल चतुःसूत्री ४।।)
,, सिद्धान्त मुक्तावली ३।।।)
,, ब्रह्मामृतवर्षिणी ६।।।)
,, भाष्यार्थ प्रदीपिका सहित स्वा. गोविन्दानंद जी कृत भाषा में केवल प्रथमाध्याय ४)
,, भाष्य सिद्धान्त संग्रह १।।)
,, रत्नप्रभा—भोलेबाबाकृत हिन्दी का अनुवाद सहित केवल २रा तीसरा भाग मिलता है ११।।।)
,, शांकर भाष्यानुसारी भा. टी. २।।)
,, शंकरभाष्य का ठीक हिन्दी अनुवाद आलुबाबा का संपूर्ण दो भाग ६)
भक्तिचंद्रिका दो भाग १३)।।
भक्तिचंद्रिका भाष्य १)
भक्तिदर्शन—शाण्डिल्यभाषा-भाष्य १।)
भक्तिनिर्णय—अनंतदेव नाममाहात्म्य ।-)
भक्त्यधिकरणमाला—नारायणतीर्थ ।।=)
भक्तिरसायन—मधुसूदन-सटीक ३)
भक्ति रसामृत सिंधु रूपगोस्वामीप्रणीत व्याख्यासहित ४)
भगवन्नामकौमुदी—लक्ष्मीधरकृत—प्रकाशटीका ।।।)
,, माहात्म्यसंग्रह-रघुनाथ १।=)
भामती—वाचस्पतिमिश्र ३)
भावरसामृत—भाषा. स्वा. गुलाबसिंह ।।-)
भास्करी—३ भाग ईश्वरप्रत्यभिज्ञा की व्याख्या
भेदसाम्राज्य—श्रीरंगरामानुजविरचित १।।)
भेदधिक्कार—नृसिंहाश्रम ३)
भगवच्चर्चा—हनुमानप्रसाद पोद्दार २ भाग १)
भवरोग की रामबाणदवा—भाषा ।-)
भगवान पर विश्वास— ,, ।)
भक्तिप्रकाश पौराणिक २)
भक्तनामावली— ।।≡)

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का एकमात्र पता—मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, नेपाली खपरा, पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस

मेदरत्न—शंकरमिश्र ।।।)
मध्वतंत्रमुखमर्दन—अप्पयदीक्षितविरचित २)
मध्वतंत्रमुखमर्दन—व्याख्या सहित १।।)
मध्वमुखालंकार—वनमालीमिश्र ।।।)
मणिरत्नमाला-स्वा. योगानंद कृत भाषाविवेचन ३)
महानय प्रकाश—शितिकंठ ।।=)
महावाक्य-स्वा. योगानंदकृत सरलभाषा १।।)
महावाक्यविवरण—हिन्दी टीका सहित १=)
महावाक्य रत्नावली ।=)
मानमाला—रामानंद व्याख्या ३)
मोक्षसाधन और योगाभ्यास—श्रीभूपेन्द्रनाथ सान्याल ।=)
यतीन्द्रमतदीपिका—श्रीनिवास १।।।=)
यतीन्द्रमतदीपिका—सटिप्पण ।≡)
योगरसायन—भाषा १)
योगवासिष्ठ तात्पर्यप्रकाश संस्कृतव्याख्या २ भागों में २५)
" तात्पर्यप्रकाश पत्रात्मक २०)
" हिन्दी भाषाटीका संपूर्ण ५ भागमें ४८)
" पृथक् २ भाग भी मिलते हैं प्रथम १०)
" द्वितीय १०) तृतीया १०) चतुर्थ १०)
पाँचवाँ ८)
" भाषा २ भाग मथुरा— १२)
" भाषा २ जिल्दों में बंबई २५)
योगवासिष्ठसार—भाषा— ४।।)
योगवासिष्ठ—हिन्दी भाषा २ जिल्द लखनऊ २२)
योगानंदसत्संग—भाषा २।।)
लघुयोगवासिष्ठ—आत्मसुख संस्कृत टीका ५)
लघुवासुदेवमनन—भाषा ।।।=)
रत्नपंचक—सभाष्य ।=)
रामानुज—वेदान्तसार— २।।)
लोकपरलोक सुधार—भाषा ५ भाग २)
व्याख्यानरत्नमाला—पं० बलदेवप्रसाद मिश्र संग्रहीत ३।।)
वाक्यसुधा. स्वा. योगानंदकृतभाषा विवेचन सहित १।।)
वाक्यवृत्ति—शंकराचार्य ।।।)
वाक्यवृत्ति—स्वा. योगानंदकृत भाषाविवेचन सहित १=)
विचारचंद्रोदय—भाषा स्व. पितांबर— २।।)
विचारदीपक—स्वा. ब्रह्मानंद भाषा २)
विचारमाला—स्वामीगोविन्ददास सटीक २)
विचारमाला—अनाथदास मूल ।=)
विचारसागर—सटीक-निश्चलदास ४।।)
" पीताम्बर टीका बंबई ११)
" " मथुरा ८)
विद्वन्मंडन—सटीक ३।।)
विवरणोपन्यास—रामानंद ३)
विवरणप्रमेयसंग्रह विद्यारण्य मुनिकृत तथा सरल हिन्दी टीका सहित ६)
विवेकमार्तंड—विश्वरूप ।।=)
विवेकचूड़ामणि—भा. टी. बंबई २।)
" "—गोरखपुर ।-)
विशिष्टाद्वैताधिकरणमाला—सुदर्शनाचार्य १)
वेदस्तुति—श्री राममूर्तिशास्त्री कृत सं. हि. दो टीका २।)
वेदस्तुति—भाषा टीका सहित ।।।=)
वेदान्त छन्दावली १।।)
वेदान्तदर्शन—भाषा टीका स्वा. दर्शनानंद ३)
वेदान्त दर्शन भा. टी.—मध्वाचार्य २।।)
" चतुःसूत्री—पर्यन्त भा. टी. ।।।)
वेदान्तदीपिका—स्वा. योगानंदजीकृत भाषा २।।)
वेदान्तदीप—रामानुज ३।।)
वेदान्तपरिभाषा—अर्थदीपिका सहित २।।)
वेदान्तपरिभाषा—प्रकाशिकाव्याख्या २।।)
" अनन्त कृष्णशास्त्री कृत टीका ६)
" शिखामणि-मणिप्रभा टीका ६)
" भा. टी. बंबई २।)
वेदान्तदर्शन—भा. टी. गोरखपुर २)
वेदान्तरहस्य—स्वा. योगानंदकृत भाषा ।।।≡)
वेदान्तरत्नमंजूषा—पुरुषोत्तमाचार्य ३)
वेदान्तसत्रमुक्तावली-पूना ३।।-)
वेदान्तसंज्ञावली १)
वेदान्तसंज्ञा—भा. टी. ।।।=)
वेदान्तसार—आपोदेव व्याख्या २)
" सारबोधिनी टीका ।=)
" संस्कृत तथा हिन्दी टीका १।=)
वेदान्त सिद्धान्त कल्पवल्ली हिन्दी टीका सहित ।।।)
वेदान्त सिद्धान्त संग्रह—वनमालिकृत ४।।)
वेदान्तसिद्धान्त सूक्तिमंजरी—सटीक ५)
वैराग्यसंदीपिनी —भा. टी. -)।।
वेदान्तसिद्धान्तादर्श— २।।)
वेदार्थसंग्रह—रामशास्त्री ५)
वेदान्तसिद्धान्तमुक्तावली—स्वा. प्रकाशानंद ३=)
वैराग्यभास्कर भाषा टीका १।)
वृत्तिप्रभाकर—निश्चलदास-भाषा ८)
वैयासिकन्यायमाला ३)
शंकरदिग्विजय—सटीक ९)
" —भा. टी. छपता है
शंकरपादभूषण—दो भाग में १२।।)
शब्दनिर्णय प्रकाशात्म— ।।।=)
शारीरिक मीमांसा वार्तिकभाष्य— ५)
शाण्डिल्य संहिता—२ भाग २=)
शास्त्रसिद्धांतलेशतात्पर्यसंग्रह—ब्रह्मेन्द्र सरस्वतीविरचित १।।।)
शास्त्रदर्पण—अमलानंद ३।)
शक्तिपात—कुंडली भाषा १)
शिवाद्वैतनिर्णय—अप्पयदीक्षित २।।।-)
शुद्धाद्वैत मार्तण्ड—श्रीगिरिधर जी १।।)
शैव परिभाषा—शिवाचार्य— ३।=)
श्रीकरभाष्य—वीरशैवभाष्य २ भाग १८)
श्रीभाष्य—यतींद्रमतदीपिका श्रीनिवासाचार्य ३)
श्रीभाष्य—संपूर्ण दो भागों में १४)
शिवलीलामृत—मराठी १।।।)
श्रुत्यानुकल्पवल्ली—पुरुषोत्तमदास ३)
श्रुत्यन्त सुरद्रुम—पुरुषोत्तम ४।।)
श्रुतिकल्पलता—वामन कृत वेदस्तुति व्याख्या ३।।)
संतप्रभाव—भाषा ।।=)
संक्षेपशारीरिक—अन्वयार्थबोधिनी टीका ८)
" मधुसूदनीटीका ८)
" सुबोधिनी अन्वयार्थ दोटीका १३।।=)
" नृसिंहाश्रमकृत तत्वबोधिनी टीका ५ भाग में
सनतसुजातीय—सभाष्य १।)
स्वानुभवादर्श—माध्वाश्रम सटीक ३)
स्तुति कुसुमांजलि—जगद्धरविरचित तथा भाषा टीका ८)
साधन संकेत—भाषा ।।)
सत्तत्वरत्नमाला-सटीक (मध्व) पत्रा ६)
सत्संग के बिखरेमोती—भाषा ।।।)
सत्संग सुधा—भाषा ।।)
सत्संगमाला— ।)
साधनपथ—भाषा =)।।
सारुक्तावली—भाषा ।=)
सारसंग्रह—रूपकविराज गौडीयवैष्णव ६)
सिद्धान्तदर्शन—विश्वदेव १।।।=)
सिद्धान्तबिन्दु—मधुसूदनविरचित पुरुषोत्तमव्याख्या ११)
सिद्धान्तबिन्दु न्यायरत्नावली नारायणी ४)
सिद्धान्तबिन्दु—वासुदेव अभ्यंकर कृत सं. टीका २।।)
सिद्धान्तबिन्दु—भाषाटीकासहित २)
सिद्धान्तसार—पं० रामावतार कृत १।।)
सिद्धान्तलेशसंग्रह—अप्पयदीक्षित १।।≡)
" भाषाटीका यंत्रस्थ
सिद्धित्रयम्—आत्मसिद्धि २)

सुखीजीवन भाषा— ।।)
सुन्दर विलास भाषा— १)
सूक्तावली—सारुक्तवलीसहित भा. टी. १)
सूक्तिसुधाकर—भाषा ।।=)
सूतसंहिता—तात्पर्यदीपिकासहित ६)
सूतसंहिता—सटीक ३ भाग में पूना १६।-)
सूत्रार्थमृतलहरी—कृष्णावधूतविरचित ३।)
सौंदर्य लहरी—भाषाटीका ५), २।।)
,, लक्ष्मीधरकृतसंस्कृत व्याख्या ३।।)
स्वरूपानुसंधान—भाषा ५)
स्वराज्यसिद्धि—श्रीमंगलहरि कृत भाषा टीका १।।।=)
ज्ञानमाला—भाषा =)
ज्ञानवैराग्यप्रकाश—स्वा. परमानंद भाषा १)

दर्शन ग्रंथ (सांख्य, वैशेषिक, योग, मीमांसा)

अर्थवादादिविचार—क्षीरसमुद्रवासि मिश्र १)
अर्थसंग्रह—लौगाक्षि—कौमुदी व्याख्या १।)
अर्थसंग्रह—कृष्णनाथ न्यायपंचानन १।।)
अर्थसंग्रह—संस्कृत तथा हिंदी व्याख्या १)
अधिकरण कौमुदी—देवनाथठक्कर १)
अनुमान चिन्तमणि—अनु० चि० दीधितिसहित ५।।=)
अनुमान दीधिति प्रसारिणी—कृष्णदास अपूर्ण २।)
अनेकान्त जयपताका—श्रीहरिभद्रसूरि स्वोपज्ञ व्याख्या २ भाग २८)
अवैदिक दर्शन संग्रह ।-)
अध्वर मीमांसा—कुतूहल वृत्ति—वासुदेवदीक्षित (अपूर्ण) ११)
आगमशास्त्र—गौडपादीय—विधुशेखर भट्टाचार्य व्याख्या ८।।)
आत्मतत्व विवेक—बौधन्यायखंडन—उदयनाचार्य विवृत्ति कल्पलता ९)
आत्मतत्वविवेक—नारायणी ७।।)
उपेन्द्र विज्ञान सूत्र—स्वोपज्ञ वृत्ति १)
उभया भावादिवारकपरिष्कार—विवरणसमेत १)
कारिकावली—सिद्धान्त मुक्तावली १।), १)
,, —मुक्तावली, दिनकरीरामरुद्री ९)
,, —मुक्तावली, प्रभा, मंजूषा, दिनकरी—रामरुद्री, गंगाराम ९)
,, मुक्तावली—न्यायचंद्रिका १।)
,, ,, —मयूषटीका सम्पूर्ण २)
,, ,, —मयूषटीका शब्दखंड ।।)
,, मयूखप्रत्यक्षखण्ड १)
,, ,, अनुमानखण्ड १)
,, —मुक्ता, दिन, राम, शब्दखण्ड ।।)
कारिकावली—कंठाभरण टीका ।।।)
,, —प्राज्ञमनोरमा १)
का० मुक्तावलीतत्वालोक ।।)
किरणावली प्रकाश—वर्धमान विरचित २ भाग १।।)
किरणावली प्रकाश दीधिति—रघुनाथ शिरोमणि ।।।=)
किरणावली भास्कर—पद्मनाभ ।।।=)
कुसुमांजलि कारिका—उदयनाचार्य ३)
कुसुमांजलि बोधिनी—वरदराज १)
कर्मयोग—स्वा० विवेकानन्द—भाषा १।-)
कर्मवाद और जन्मान्तर—भाषा ३)
कणाद—गौतमीयम्—पदार्थानुशासनम् आचार्यविश्वनाथ शास्त्री प्रणीत १।)
काली शंकरी ।।)
केवलान्वयी—छात्रोपयोगी अति सरल व्याख्या सहित यन्त्रस्थ
क्रोडपत्र संग्रह—अनुमान जागदीशी अनुमान गादाधरी १२)
ख्यातिवाद—शंकर चैतन्यभारती ।।=)
गादाधरी—अनुमान चिन्तामणि ३१।।)
,, सामान्य निरुक्ति गूढार्थ तत्वालोक १।।।)
,, —सामान्य निरुक्ति—गंगा व्याख्या ६)
,, ,, ,, —वामाचरण ६)
,, —सव्यभिचार—वामाचरण ३।।)
गोरक्षपद्धति—भाषाटीका सहित १।)
गोरक्ष सिद्धान्तसंग्रह ।=)
गोरक्ष योग मंजरी—भाषाकवित्त—चटकानाथ जी १)
घेरंड संहिता—भाषाटीका १।)
चतुर्दश लक्षणी—गदाधर सटीक १०)
जागदीशी—व्याधिकरण शिवदत्त ४)
जागदीशी—अवच्छेदकत्व निरुक्ति—मूल ।)
,, —अवच्छेदकत्व निरुक्ति—शिवदत्त २।।)
,, ,, वामाचरणकृतमनोरमा व्या० ३)
जागदीशी सिंहव्याघ्रलक्षण—श्रीवामाचरण १।)
जागदीशी—सिद्धान्त लक्षण—शिवदत्त ३)
जागदीशीसामान्यलक्षणाप्रकरणम्—काशिकानन्दी व्या० ४।।)
जागदीशी-पक्षता—पं० शिवदत्त व्याख्या ३)
जैमिनीय न्यायमाला—माधवाचार्यकृत (१–३ भाग) ४)
जैमिनीय न्यायमाला विस्तर—माधवाचार्य कृत (संपूर्ण पूना) १२)
जैमिनीय-सूत्र वृत्ति बोधिनी श्री शीतिकण्ठभट्टकृत—भाषानुवाद सहित १–४ ८)
तर्कामृत—मूल =)
तत्वोपप्लव—जयराशिकृत—पं० सुखलाल ४)
तत्वसार—राखालदासकृत ।।)
तत्वचिंतामणि—गंगेशोपाध्याय—प्रत्यक्ष खंड १ भाग १।)
तत्वचिंतामणि—दीधिति प्रकाश (अपूर्ण) ४।।)
तत्वचिंतामणि—दीधितिविवृति (अपूर्ण) ९।।)
तौतातिमत तिलक—भवदेवकृत ३ भाग ४)
तन्त्र सिद्धान्त रत्नावली—श्रीचिन्नस्वामी ४)
तर्ककौमुदी—मूल ।)
तर्कताण्डव-न्यायदीप ९।।)
तर्क प्रकरण—गंगेशोपाध्याय—तर्क रहस्य सहित १)
तर्कभाषा—(केशव)—(मूल) ।।=)
तर्कभाषा—संस्कृत तथा हिन्दी २), १।।), १)
,, —चिन्नंभट्ट—संस्कृत व्याख्या २।)
,, —तर्क रहस्य दीपिका—हिन्दी व्याख्या सहित—श्रीविश्वेश्वर ४।।)
तर्कभाषा जैन ३)
तर्कभाषा बौधन्याय—मोक्षाकार ३)
,, रहस्य प्रश्नोत्तरी ।=)
तर्क मकरंद—दीपिका प्रश्नोत्तरी ।=)
तर्क संग्रह—मूल ।)
,, —पं० ज्वाला प्रसाद कृत छात्रोपयोगी सरल हिन्दी टीका सहित ।)
,, —न्यायबोधिनी, दीपिका, मयूख, भाषा टीका १।)
,, —न्यायबोधनी, सीता सं० हिन्दी १)
तर्कसंग्रह—दीपिका—न्यायबोधिनी ।।)
तर्कसंग्रह-दीपिका—न्यायबोधिनी, अंग्रेजी नोट्स २।।)
तर्कसंग्रह चंद्रिका—मुकुन्दझा ।।।)
तर्कसंग्रह चन्द्रोदय व्याख्या १)
तर्क पद्यरत्नावली—वाजपेयी १।)
तर्क संग्रह—शिशुहिता व्याख्या =)
तर्क संग्रह—सुखप्रवेशिनी व्याख्या १।)
,, ,, दीपिका किरणावली १।)
दीपिका सर्वस्व तर्कसंग्रह कुंश्गोटी ४)
धर्म और दर्शन भाषा—पंडित—बलदेव ३)
नयविवेक—भवनाथ मिश्र तर्कपाद ३।।)
न्यायकलिका—जयन्त कृत ।=)
न्याय कोष—भीमाचार्य १५)
न्यायकौस्तुभ—प्रत्यक्ष १।।=)

न्याय कुसुमांजलि—वीरराघवाचार्य कृत व्याख्या संपूर्ण ७)
न्यायदर्शन—मूल ३)
" —वात्स्यायन भाष्य तथा विश्वनाथ वृत्ति पूना ६॥)
" —वात्स्यायन भाष्य, विश्वनाथ वृत्ति कलकत्ता ३=)
" —वात्स्यायन भाष्य—खद्योत—पूना ६)
" —वात्स्यायन भाष्य ३)
" —वात्स्यायनभाष्य, खद्योत काशी १०)
" —पं० छज्जूरामटीका— ४)
" वात्स्यायनभाष्य तथा प. सुदर्शनाचार्य कृतप्रसन्नपदा व्याख्या १०)
" —वात्स्यायनभाष्य तथा हिन्दी टीका २॥)
" —भाषाटीका स्वा० दर्शनानंद २॥)
न्याय प्रकाश चिद्धनानंद भाषा १२)
न्यायबिन्दु—सटीक—धर्मकीर्ति छपता है ५)
न्याय बिंदु टीका—धर्मोत्तराचार्य २)
न्यायबिन्दु—वैद्यनाथ भट्ट मीमांसा १॥)
न्यायमंजरी—जयन्त भट्ट १०)
न्यायरत्नमाला—पार्थसारथि मिश्र ३)
न्याय लीलावती—मूल १)
" विवृति, प्रकाश, कंठाभरण १३॥)
न्यायवार्तिक—तात्पर्य टीका—वाचस्पतिमिश्र ६)
न्याय प्रदीप—गंगा सहाय १॥)
न्यायसिद्धान्ततत्वामृत—श्रीनिवासकृत २॥)
न्यायसार—भासर्वज्ञविरचित—सटीक १॥)
" —महादेवपंडित विरचित ३)
न्यायसिद्धाञ्जन— २॥)
न्यायसिद्धान्तदीप—सटीक १२)
न्यायसिद्धान्त मंजरी—जानकीनाथ १॥)
" बृहत्तर्क प्रकाश २॥)
न्यायसिद्धान्तमाला— २ भाग १॥=)
न्यायसिद्धान्त मुक्तावली—किरणवली ४)
" " —पं. छज्जूराम टीका २)

न्यायकारिकावली (भाषा परिच्छेद) तथा उसकी टीका न्यायसिद्धान्तमुक्तावली विश्वनाथ पंचानन रचित का हिन्दी अनुवाद और हिन्दी व्याख्या। दार्शनिक आलोचना और विवेचना सहित हिन्दी में ऐसी व्याख्या आज तक नहीं छपी। लेखक—प्रो. धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री तर्क शिरोमणि, एम., ए. एम. ओ. एल। प्रत्यक्षखण्ड ५)
न्यायसिद्धान्त मुक्तावली साधु गोविंद सिंह भा. टी. ५)
न्यायसिद्धान्त मुक्तावली—प्रश्नोत्तरी श्री पं. विश्वनाथ कृत अत्युपयोगी १)
न्याय सुधा—सोमेश्वर भट्ट कृत २४)
न्याय रत्नमाला—पार्थसारथि—रामानुज व्याख्या ४॥)
नञर्थवाद— ।=)
न्यायपरिशुद्धि—केवल प्रत्यक्षाध्याय ३)
पंचलक्षणी सर्वस्व—श्रीरामशास्त्री ३)
पारिभाषिकपदार्थ संग्रह, कुकुंलोटि २॥)
पदार्थतत्वनिरूपण— १॥)
पदार्थ मंडन—वेणीदत्त ।=)
पदार्थरत्नमाला—रघुनाथ १॥)
पदार्थशास्त्र—पं. आनंद झा कृत (हिन्दी) २॥)
पूर्णयोग—भाषा श्रीअरविंद १॥)
पूर्वमीमांसाधिकरण कौमुदी—रामकृष्ण १॥)
पूर्वमीमांसा सूत्रवृत्ति—भावबोधिनी १०)
प्रभाकर विजय—नंदीश्वर २॥)
प्रमाणमंजरी—सर्वदेव ।), ॥)
प्रमाणवार्तिकभाष्य—वार्तिकालंकार—प्रज्ञाकर गुप्तविरचित १५)
प्रमाणवार्तिकम् —(सटीक) ३०)
प्रमेयकमलमार्तण्ड—प्रभाचंद्राचार्य ८)
प्रमेय रत्नावली—बलदेव विद्याभूषण २॥)
प्रमेय रत्नालंकार—अभिनवचारुकीर्तिकृत ३=)
प्रशस्तपादभाष्य टीकासंग्रह—कणादरहस्य ३)
प्रशस्तपदभाष्य सूक्ति तथा सूक्तिदीपिका द्रव्यग्रन्थात्मक ४)

प्रामाण्यवाद—सटीक ३)
" दीपिका—श्रीवामाचरण ॥)
प्रेमयोग—स्वा. विवेकानंद—भाषा १=)
बृहयोग सोपान—भाषा १॥)
बृहती—ऋजुविमला —व्याख्या ४॥)
बृहती—दो भागों में (प्रभाकर मिश्र)
शावरभाष्य व्याख्या तथा परिशिष्ट १०)
भक्तियोग—स्वा. विवेकानंद १॥)
भक्तिसार—स्वा. चरणदास भाषा ७)
भाट्टचिन्तामणि—गागाभट्ट ४॥)
भाट्टदीपिका—खंडदेव—प्रभावल्ली-निवितान्त ८)
भाट्ट दीपिका—खंडदेव—प्रभावल्लीसहित उत्तरषट्कम—अध्याय ७ से १२ तक दो जिल्दों में ३२)
भाट्टभाषाप्रकाश—नारायणतीर्थ ॥)
भारतीय दर्शन—पं० बलदेव (भाषा) ८)
भारतीय दर्शनशास्त्र का इतिहास—देवराज तिवारी हिन्दी में ६॥)
भारतीय दर्शनशास्त्र न्याय-वैशेषिक। भारतीयदर्शनशास्त्र का सामान्यपरिचय, न्याय वैशेषिक शास्त्र तथासिद्धान्तों की आलोचनात्मक विवेचना ले० श्रीधर्मेन्द्रनाथशास्त्री साधारण २॥) ग्लेज ३)
भावना विवेक—श्रीमदन मिश्र १)
भाषा परिच्छेद—मुकुंद झा १)
भाषारत्न—कणाद तर्क वागीश ७)
भास्करोदय—तर्कसंग्रह दीपिका प्रकाश नीलकंठी २)
भेदसिद्धि—विश्वनाथ ॥=)
भेदजयश्री—तर्कवागीश ॥=)
भेदरत्न—शंकरमिश्र ॥)
मातृतत्व प्रकाश— १)
माथुरीतर्कप्रकरण—श्रीवामाचार्य विवृत्ति १)
माथुरी पंचलक्षणी—मूल ।)—व्याख्या ।=)

माथुरीव्याप्ति पंचक रहस्य सिंह व्याघ्र लक्षणरहस्य—पं. शिवदत्त १॥)
" " " —पं. वामाचरण २)
मीमांसा कोष—श्रीकेवलानंद सरस्वती द्वारा संपादित दो भाग में ६५)
मीमांसा कौस्तुभ—खंडदेव—(संपूर्ण) १८)
मीमांसादर्शन—सूत्रपाठ—सूत्रसूची अकारादि क्रमसे, सूत्रपद सूची संपादक केवलानंद सरस्वती ३०)
मीमांसादर्शन—शबर भाष्यसंपूर्ण १५)
मीमांसादर्शन—तन्त्रवार्तिक—शाबरभाष्य पूना संपूर्ण ३९)
मीमांसादर्शन—जैमिनी मूल २)
मीमांसा न्यायप्रकाश—अभ्यंकर व्या. ३॥)
" " —आपादेवीमूल ॥), १)
" " मीमांसासुधास्वाद वीरराघवाचार्य विरचित ५)
" " भाट्टालंकार टीका २॥)
" " सारविवेचिनी चिन्नस्वा. ५)
" " कृष्णनाथ न्यायपंचानन टीका२॥)
मीमांसासानुक्रमणिका—मंडनमिश्र कृत ७॥)
मीमांसा परिभाषा—मूल ।) संस्कृत हिन्दी टीका ॥)
मीमांसा बालप्रकाश—भट्टशंकर ३)
मीमांसाशास्त्रसार १)
मीमांसाश्लोकवार्तिक—न्यायरत्नाकर व्या. ४॥)
मुक्तावलीविवृति—प्रश्नोत्तरी अनुमानखंड पं. हरिशंकर झा ॥)
मुक्तिवाद—चंद्रिकाव्याख्या ।)
योग के आधार—स्वा. अरविंद २)
योग के आसन—भाषा २॥)
योगप्रदीप—अरविंद भाषा ॥)
योगप्रवाह—भाषा ३॥)
योगबीज—श्रीगोरखनाथ—मूल ॥)

योगतत्वप्रकाश —भाषा ≡)॥
योगमार्गप्रकाशिका—भाषा १)
योगयाज्ञवल्क्य—मूल (संस्कृत) ।=)
योगसन्ध्या भाषाटीका सहित २)
योगसाधन की तयारी—सातवलेकर १)
योगसारसंग्रह विज्ञानभिक्षुकृत—मूल ।)
योग सत्र—पातंजलि मूल)॥।
" " भावागणेशीय टीका १)
" " किरणावली टीका ३)
" " प्रदीपिका व्याख्या १)
" " नागेशभट्टवृत्ति ३)
" " योगचंद्रिका सूत्रार्थबोधिनी ३)
" " मणिप्रभा टीका १॥)
" " विज्ञानभिक्षु कृत टीका ३॥)
" " योगप्रदीप स्वा. ओमानंद कृत विस्तृत हिन्दी अनवाद सहित ९)
" " व्यासभाष्य–वाचस्पतिटीका २॥-)
" " कवल भोजवृत्ति— १)
" पं. अनन्त कृत टीका ॥)
" व्यासभाष्य वाचस्पतिटीका भोज-वृत्ति पूना ४॥)
" सांग योग दर्शन अर्थात् पातञ्जल-दर्शन व्यासभाष्य, वाचस्पतिटीका (तत्ववैशारदीय) पातंजल रहस्य. योगवार्तिक, भास्वती ६)
योगदर्शन—भा. टी. ॥) १)
" व्यासभाष्य हरिहरानंद कृत बंगला का हिन्दी अनवाद ९)
" व्यासभाष्य तथा उसका हिन्दी अनुवाद बंगाली बावा ५)
योगदर्शन—प्रभुदयालकृत हिन्दी अनुवाद १॥)
योगदर्शन भाष्यविवरण—श्रीशंकर भगवत्पादकृतभाष्य १२॥)
राजयोग—भाषा विवेकानंद ४)
लौकिक न्यायशास्त्रार्थकला ॥)
लौकिकन्यायाञ्जलि ३ भाग ४)
वाक्यार्थरत्न —सव्याख्या ३)

विभ्रमविवेक—मंडन मिश्र १)
वादवारिधि—गदाधरभट्टकृत ४॥)
वाशिष्ठदर्शन २॥)
विधिरसायन—अप्पयदीक्षित ३)
विषयतावाद—कुण्डिराजकृत ।)
वैयासिकन्यायमाला— ३)
वैशेषिकदर्शन—प्रशस्तपाद सूक्ति, सेतु व्योमवती १०)
" प्रशस्तपाद, उपस्कार ८)
" शंकर कृत उपस्कार कलकत्ता ३॥)
" दर्शनानंदकृत हिन्दी टीका ३॥)
" प्रशस्तपाद भाष्य का हिन्दी अनुवाद १॥)
व्याप्तिपंचक—कलकत्ता १)
" रहस्य—शिवदत्तटीका १॥)
" वामाचरणटीका २)
व्युत्पत्तिवाद—गदाधरभट्ट—मूल २)
" शास्त्रार्थकलाटीका— २)
" गूढार्थतत्वालोक—टीका ६)
" आदर्शटीका सुदर्शन ११)
" जयाटीका पं. जयदेवमिश्र ३)
" कुञ्चिका—पं. गौरीनाथ ॥)
व्युत्पत्तिवाद तरणि—प्रश्नोत्तरी ॥=)
व्युत्पत्तिवाद—लकारार्थविचार-विवरणसहित६)
शक्तिवाद—हरिनाथीटीका ३)
" मंजूषा-विनोदिनी २॥)
" आदर्शटीका पं. सुदर्शनाचार्य ४॥)
" विवृत्ति ॥)
शब्दशक्तिप्रकाशिका—जगदीश १।=)
" कृष्णकान्ति, रामभद्री ७)
शास्त्रदीपिका—सव्याख्या तर्कपाद ३)
" प्रथमतर्कपाद ३॥)
शास्त्रार्थरत्नावली—म.म. जयदेवशर्मा १॥)
शिवसंहिता—भा. टी. २॥)
शिवस्वरोदय—भा. टी. १), ॥=)
षट्दर्शन—मूल गुटका २॥)
सप्तपदार्थी—सटीक २॥)

सप्तपदार्थी ३ टीका ५)
सर्वतंत्र सिद्धान्त पदार्थलक्षण संग्रह—यह संस्कृत का एकजेबी कोष है इसमें शब्दों के आकारादि क्रम से ८९०१ लक्षण वर्णित हैं पृष्ठ सं. २३६ सजिल्द छठा संस्करण ॥)
सरलराजयोग—भाषा ॥)
सर्वदर्शनकौमुदी १)
सर्वदर्शनसंग्रह—माधवाचार्य—मूल १॥)
" पूना—स्थूलाक्षर ४)
सर्वदर्शन संग्रह—अभ्यंकर टीका १५)
" भाषाटीका ५)
सांख्यकारिका—मूलगौड़पाद भाष्य ।=)
" गौड़पाद भाष्य, हिन्दी टीका १)
" चंद्रिका तथा भाषा टीका ॥=)
" किरणावलीटीका ३)
" गौड़पाद भाष्य, अभिनवराजलक्ष्मी तथा हिन्दी टीका सहित २)
" हिन्दी तथा अंग्रेजी अनुवाद १)
सांख्यतत्वकौमुदी—बालरामउदासी ३॥)
" सारबोधिनीटीका ५)
" सुषमा टीका २)
" तत्वविभाकर टीका २॥)
" तत्व विलास टीका २)
" कृष्णनाथ न्यायपंचाननकृत टीका २)
" भाषाटीका सहित १॥)
" सांख्यवसंत—नरहरिनाथ ॥-)
सांख्यप्रवचन भाष्य—विज्ञानभिक्षु २॥)
" सूत्र अनिरुद्धवृत्ति १॥)
" हिन्दी टीका १)
सांख्यदर्शन—दर्शनानंद कृत हिन्दी व्या० २)
सांख्यदर्शन का इतिहास—श्रीउदयवीर २०)
सांख्यतत्वालोक—हरिहरानंद ॥≡)
सांख्य संग्रह सांख्यतत्वविवेचन, तत्व प्रदीपादि ३)
सांख्यसार ।-)
सामान्य निरुक्ति—गंगेशोपाध्याय २॥)

सिद्धसिद्धान्त संग्रह ।≡)
सिद्धान्तसार्वभौम दो भाग २॥)
सुवर्ण सप्ततिशास्त्र— ३॥)
सूर्यनमस्कार—हिन्दी सचित्र १)
सूर्यभेदन व्यायाम— ॥)
स्याद्वादमंजरी—प्रो. ध्रुव नोट्ससहित ११)
" भा. टी. ६)
स्वरोदयसारभाषा ।)
हेतुतत्वोपदेश—जितारिविरचित १॥)
हेतुबिन्दु—टीका ११)
हमारायोग और उसका आधार— ॥)
हठयोग प्रदीपका—सटीक २)
हठयोगप्रदीपिका—भाषाटीका सहित ४)
ज्ञानस्वरोदय भाषा — ।-)
ज्ञानयोग भाषा— विवेकानंद ३)
ज्ञानयोग दो खंड ५)

काश्मीर शैव ग्रंथावली

आह्निकपद्धति-नव्यचण्डीदास कृत
ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी—उत्पलकृत अभिनवगुप्त व्याख्या
ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविवृतिविमर्शिनी—अभिनवगुप्त कृत ३ भाग
उड्डामरेश्वरतंत्र—मूल पाठ
कर्मकांडक्रमावलि—सोमशंभु विरचित
कामकलाविलास—पुण्यानन्द विरचित
क्रमदीपिका—श्रीकृष्णविरचित
गिलगित मैनुस्क्रिप्ट—देवनागरी ५ भाग में
गन्धर्वतंत्र—मूलपाठ
घटखर्पर—अभिनवगुप्त कृत विवृत्ति सहित
जन्ममरणविचार—अमरौघशासन तंत्र-वटधानिका
तंत्रसार—अभिनवगुप्त कृत
तंत्रालोक—अभिनवगुप्त कृत जयरथकृत

व्याख्या सहित १२ भागों में
देवीनामविलास—साहिब कौल विरचित
देशोपदेश नर्ममाला—क्षेमेन्द्र कृत
नरेश्वर परीक्षा—षड्ज्योति विरचित रामकृष्ण कृत व्याख्या
नेत्रतंत्र—क्षेमराजकृत व्याख्या २ भाग
परमार्थसार—अभिनवगुप्त कृत योगराज व्याख्या
परात्रींशिका—आगमशास्त्र अभिनव गुप्त व्या.
परात्रींशिका लघुवृत्ति—परात्रींशिका विवृत्ति
परात्रींशिका—तात्पर्यदीपिका
प्रासादमंडन—शिल्पशास्त्र
प्रत्यभिज्ञहृदय—क्षेमराज कृत
बृहन्नीलतंत्र—मूलपाठ
भगवद्गीता—रामकंठ कृत व्याख्या सहित
महानयप्रकाश—राजानकशितिकंठ
महार्थमंजरी—महेश्वरानन्दकृत स्वोपज्ञ-व्याख्या
मालिनी विजयतंत्र—आगमशास्त्र
मालिनी विजयवार्तिक—अभिनवगुप्तकृत
मृगेन्द्रतंत्र—विद्यापाद-योगपाद नारायण कण्ठ व्याख्या
लल्लेश्वरीवाक्यानि—राजानक भास्करकृत व्याख्या सहित
लोकप्रकाश—क्षेमेन्द्र विरचित
लौगाक्षिगृह्यसूत्राणि—देवपालकृत भाष्य दो भाग
वातूलनाथसूत्राणि—अनन्तशक्ति कृत वृत्ति
वामकेश्वरीमतविवरण—जयरथकृत
विज्ञानभैरव—क्षेमराज, शिवोपाध्याय—आनन्दभट्ट व्याख्या
शिवदृष्टि—सोमानन्द विरचित-उत्पलदेव व्याख्या
शिवसूत्रवार्तिक—वरदराजकृत
शिवसूत्रवार्तिक—राजानक भास्करकृत तथा वृत्ति सहित
शिवसूत्रविमर्शिनी—वसुगुप्तकृत-क्षेमराज-व्याख्या
शिशुपालवध—वल्लभदेव व्याख्या
षट्त्रिंशत—तत्वसंदोह-भावोपहार-बोध-पंचदशिका-अनुत्तरप्रकाश पंचाशिका सहित
स्तवचिन्तामणि—भट्टनारायण विरचित.
स्पन्दकारिका—रामकण्ठाचार्यवृत्ति
स्पन्दनिर्णय—क्षेमराजकृत
स्पन्दसंदोह—क्षेमराजकृत
स्वच्छंदतंत्र—आगमशास्त्र क्षेमराजकृत व्याख्या सात भाग
सिद्धित्रय—प्रत्यभिज्ञाकारिकावृत्ति सहित

मंत्रशास्त्र ग्रंथ

अघोरीतंत्र—भा. टी. १)
अनुष्ठान प्रकाश —पत्रात्मक ११)
अष्टसिद्धि—भाषाटीका सहित १।=)
आगम प्रामाण्य— १॥)
आनंद लहरी—भा. टी. १॥)
आर्यमंजुश्री—मूल-कल्प –२, ३ भाग ८)
इन्द्रजाल भाषा ४)
इन्द्रजाल विद्यासंग्रह-इन्द्रजालशास्त्र, कामरत्न,दत्तात्रेय, षट्कर्मदीपिका सिद्धनागार्जुन ३।॥)
ईशान शिवगुरुदेवपद्धति-४ भाग २५)
उच्छिष्ट गणपति पंचांग १।॥)
उड्डीशतंत्र—भाषाटीका ।॥)
उड्डामरेश्वरतंत्र--
उपदेशमुक्तावलि-आरती माला दो भाग में ३।=)
कर्पूरस्तव—महाकालप्रणीत ।॥)
कर्पूरादिस्तोत्र—आ. एवेलोनसम्पादित ४)
कार्तवीर्यार्जुनोपासना—मूल ३॥)
काथ.बोध—साजनीकृत ॥)
कामरत्न—भाषा ५)
कालीतंत्र मूल— १॥)
कालीनित्यार्चन—भाषा २)
कालीस्वरूपतत्व—भाषा ।=)
कुलार्णव—मूल २॥)
क्रियोड्डीशतंत्र—भा. टी. १॥)
कौलज्ञाननिर्णय—बौधतंत्र ७॥)
कौलावलिनिर्णयमूल— ४)
क्रमदीपिका —केशवभट्ट ४॥)
गंधर्वतंत्र—काश्मीर
गायत्रीतंत्र—कवचआदि ।॥)
" —भा. टी. ।॥=)
गायत्री पंचांग मूल २॥)
गायत्री पुरश्चरण— =), ॥)
" –शंकराचार्य-पूना २॥)
गायत्रीपूजा पद्धति ≡)
गायत्रीतत्वविमर्श—श्रीश्यामानंद १)
गुप्तसाधनतंत्र—भाषा ॥=)
चक्रपूजा—भाषा १॥)
चक्रपूजा के स्तोत्र ।=)
चक्षुर्विद्या विधान—हिन्दी सहित ।)
चतुर्विंशति गायत्री— ।=) भा. टी. ॥)
चण्डी—शाक्त धर्म पर प्रकाश डालनेवाली एकमात्र हिन्दीमासिक पत्रिका के गत वर्षों की फाइलें। संवत् २००३, २००४, २००५, २००६, २००७, २००८, २००९ तथा २०१० प्रत्येक का मूल्य ६॥)
चिद्गगन चंद्रिका —कालीदास मूल १)
जयाख्य संहिता—आगम १२)
डाकार्णव—बौधतंत्र ६॥)
तंत्रसार—कृष्णानंद २)
" –अभिनवगुप्त ७॥)
तंत्रसार—हिन्दी १)
तंत्रसार संग्रह—नारायणीटीका १५॥)
तंत्राभिधान—बीजनिघंटु २)
तंत्रोपाख्यान ।॥)
तंत्रालोक—अभिनवगुप्त १२ भाग
तत्वचिंतामणि—पूर्णानंद १६॥)
तारानित्यार्चन—श्रीरामदत्तशुक्ल १॥)
तत्वनिधि—कृष्णराजसंगृहीत ७)
तारा भक्ति सुधार्णव ५॥)
तारारहस्य मूल १॥)
तारास्वरूपतत्व भाषा— १)
देवीशतकम्—म. म. कृष्णनाथ ।॥)
दत्तात्रेय तंत्र—भा. टी. ॥), ।॥)
दुर्गापूजातत्व—बंगलाक्षर २॥)
दुर्गापूजा विवेक—शूलपाणि बंगलाक्षर १)
दशांगदुर्गा मूल—पत्रात्मक १॥)
दुर्गासप्तशती—सजिल्द बंबई ४), ३॥)
" –खुलापत्रा-मूल ३॥) २॥) १॥) १) ।॥)
" —तावीजी ।॥), ॥)
" —भा. टी. ।॥), १), १॥) २॥)
" —मैथिली पत्रात्मक २)
" —शान्तनवीटीका ३) नागोजी टी. २)
" —राधेश्यामकृत २॥)
" —केवलभाषा छंदों में ॥)
दुर्गापूजा श्यामापूजा ॥)
दुर्गापंचांग—मूल ।॥)
दुर्गापूजन प्रयोग पत्रात्मक ॥=)
दुर्गोपासना कल्पद्रुम—पत्रात्मक ३)
धन्वन्तरि तंत्र शिक्षा भाषाटीका ११)
निष्पन्नयोगावली—बौधतंत्र २॥)
नित्योत्सव—उमानंदनाथ कृत ७)
नेत्रतंत्र—काश्मीर– ४)
पंचमकार तथा भावत्रय २)
परशुराम कल्पसूत्र—रामेश्वर व्याख्या १९)
परानंद सूत्र सम्पादित ३॥)
पुरश्चरणदीपिका ॥–),।–)
पुराण संहिता ६)
प्रत्यंगिरापंचांग मूल १।॥)
प्रपंचसार तंत्र—सं. टी. ९)

बगुलानित्यार्चन ॥)
बगुलाविधान ।)
बगुलातंत्र—मूल ॥)
बटुकभैरवोपासनाध्याय मूल ३)
बृहत् इंद्रजाल—भाषा बंबई ४)
बृहन्नीलतंत्र—मूल ।=)
बृहत्गायत्री महामन्त्रीय सरयुपारीन ॥)
बृहद्--ब्रह्म संहिता-पूना २॥=)
ब्रह्मसंहिता—जीवस्वामी विष्णुस्तव ३)
बालास्तव मंजरी—स्तोत्र १॥)
भगवती गीता ३)
भुवनेश्वरी नित्यार्चन--भाषा २)
भैरवोपदेश भाषा २॥)
मंत्ररामायण १॥)
मंत्रसिद्धि का उपाय—भाषा १)
मंत्रमुक्तावली ।=)
मंत्रमहोदधि—पत्रात्मक चक्रसहित ९)
महानिर्वाणतंत्र--मूल ५)
महानिर्वाणतंत्र—भाषाटीका ८॥)
महामृत्युंजय जपविधि— ॥), ।=)
" पंचांग— ॥=)
महायक्षिणी साधन--भाषा १॥)
महालक्ष्मी पंचांग— ॥)
महात्रिपुरासुन्दरी पूजाकल्प १=)
मातृउपासना भाषा १॥)
मातृका भेदतंत्र-- २॥)
माहेश्वर तंत्र-संस्कृत अपौरुषेयम् ४॥)
माहेश्वरीतंत्र—भा. टी. ।=)
मेरुतंत्र—मूल १२)
मुमुक्षमार्ग हिन्दी ३)
मंत्र महार्णव—खुलापत्रा ३४)
मंत्ररत्न मंजूषा १)
मृगेंद्रतंत्र—काश्मीर
योगिनीतंत्र—मूल ४)
" —भा. टी. ७)
योगिनी हृदय केवल दूसरा भाग ॥=)

रुद्रयामल—उत्तरभाग ३॥)
ललिता सहस्रनाम—मूल ॥=)
" सटीक २॥)
वर्णबीज प्रकाश ३)
वन्देमातरम्—आद्याप्रसाद १)
वामकेश्वरतंत्र—सेतुबंधटीका
नित्याषोडशिकार्णव ६)
वामकेश्वरीमत विवर्ण—
वाममार्ग—भाषा २)
विनयसुधा भाषा १)
विष्णुसंहिता ३)
वारिवास्य रहस्य अंग्रेजीअनुवाद सहित १०)
वैखानसागम २।=)
वैदिक बगुलामुखी भाषा १)
शक्तिसंगतमंत्र केवल तृतीयखंड ६)
शतचंडी विधान भाषा १॥)
शतरत्नसंग्रह—उमापति २)
श्यामारहस्य मूल २॥)
श्यामा सपर्यावासना—श्यामानंद ३)
श्यामा पूजा पद्धति २)
शाक्त प्रमोद दशमहाविद्या १४)
शाक्तानंद तरंगिणी—हिन्दी २)
शारदातिलकमूल— ३॥)
" —राघवभट्ट—व्याख्या १२)
श्रीविद्यानित्यार्चन २॥)
श्रीविद्यामन्त्र भाष्य—त्रिकाण्डसारार्थ
व्याख्या १॥)
श्रीविद्यास्तव मंजरी ३)
षट्चक्रनिरूपण—पादुकापंचक सटीक ३)
सप्तशतीसर्वस्व—दुर्गाप्रसाद २॥)
सप्तशतीगीता—भा. टी. १)
सप्तशतीरहस्य-श्यामानंद नाथ २॥)
सात्वततंत्र—वैष्णवतंत्र १॥)
सार्थ सौन्दर्यलहरी भा. टी. २॥)
साधक का संवाद—भाषा ३)
सावरीतंत्र भाषा—सेवडे का जादू २॥)
सिरि विश्वेश्वर तंत्र ३॥)

संकोदेशटीका २॥)
स्वच्छंदतंत्र—संपूर्ण काश्मीर १६॥)
सौभाग्य लक्ष्मी भा. टी. १)
हनुमद्उपासना—मूल संपादित ३॥)
हंसविलास—हंसमिट्ठविरचित ५॥)
हिन्दुओं की पोथी भाषा २)
त्रिपुरारहस्य—माहात्म्यखंड ७)
" ज्ञानखंड केवल तीसरा
चौथा भाग १॥)
त्रिपुरासारसमुच्चय—नागभट्टविरचित १।)
ज्ञानार्णव तंत्र—मूल २)

गीता

अर्जुनगीता भाषा— =)
अवधूत गीता—मूल ।=), ॥)
" भाषाटीका ॥)
अष्टावक्रगीता—भा. टी. सहित २)
उत्तरसत्याग्रहगीता-पंडिता क्षमाराव ६॥)
उत्तरगीता—सटीक ॥)
कपिलगीता—भाषाटीकासहित १)
गांधीगीता— ३॥)
गर्भगीता भाषा =)
गीता हृदय-स्वा. सहजानंद १२)
गुरुगीता—भाषाटीका ॥)
गणेशगीता—भा. टी. ॥=)
गणेशगीता—नीलकंठ विरचित टीका ३)
जीवनमुक्त गीता भा. टी. =)
देवीगीता—भा. टी. १)
नारदगीता भा. टी. =)
पांडवगीता मूल =) भा. टी =)
पंचदश गीता भा. टी. १)
पंचरत्नगीता मूल =), स्थूलाक्षर २॥)
" भाषाटीका गुटका २॥)
" भाषाटीकास्थूलाक्षर ५)

ब्रह्मानंदमोक्षगीता-स्वा. ब्रह्मानंद २)
भगवद्गीता—मूल विष्णुसहस्रनाम ।)॥
भगवद्गीता—मूल ।=) जिल्दवाला ॥=)
भगवद्गीता—शंकर भाष्य, आनंदगिरि, नीलकंठी, मधुसूदनी भाष्योत्कर्षदीपिका श्रीधरी, अभिनवगुप्त व्याख्या गूढार्थ तत्वालोक अष्टटीका १८)
भगवद्गीता—शंकरानंदी उसकी हिन्दी टीका सहित नया संस्करण ८)
भगवद्गीता-अर्थप्रकाशिका-ब्रह्मयोगी १५)
भगवद्गीता—मधुसूदनी टीका का हिन्दी अनुवाद—श्रीहरिहर कृपालुजी १५)
भगवद्गीता—श्रीधरी-मधुसूदनी ७॥=)
भगवद्गीता शांकरभाष्य, आनंदगिरिटीका, रामानुज भाष्य, तात्पर्यचंद्रिका माध्व-भाष्य, प्रेमयदीपिका पैशाच, ब्रह्मानंदगिरि, अमृत तरंगिणी ११ टीका २०)
भगवद्गीता-शंकरभाष्य-आनन्दगिरि ९।=)
भगवद्गीता—ज्ञानेश्वरी हिन्दी ५), ६)
भगवद्गीता—चिद्घनानंदी भा. टी. १४)
भगवद्गीता—तत्वविवेचिनी भा. टी. ४)
भगवद्गीता—सर्वतोभद्र सं. टीका ४॥)
भगवद्गीता—गीर्वाणज्ञानेश्वरी-अनन्त शमांकृत दो भाग संस्कृत ५)
भगवद्गीता—अमृत तरंगिनी भा. टी. २॥)
भगवद्गीता—मूलश्लोक, अन्वय, श्रीधर स्वा. टीका. उसका हिन्दी अनुवाद और योगी श्री श्यामाचरण लाहिड़ी की अध्यात्मदीपिका और उसकी विशद् हिन्दी व्याख्या श्रीभूपेन्द्रनाथ सान्यालकृत १-१२ अध्याय तक दो जिल्दों में १८)
भगवद्गीता—पैशाच भाष्य २)
भगवद्गीता—रामानुजीय तात्पर्य-चंद्रिका ११)
" —अद्वैतांकुरीय टीका १-२ अ. ३।=)

भगवद्गीता—तत्वार्थ सुदर्शनाचार्य टीका ७)
भगवद्गीता—रामकण्ठकृतटीका ७॥)
भगवद्गीता—ज्ञानकर्मसमुच्चय व्याख्या आनंदवर्धनकृत ६॥)
भगवद्गीता—शांकर भाष्य पूना ७॥)
भगवद्गीता—शांकरभाष्य मदरास ६॥)
भगवद्गीता—निम्बार्कीयतत्व प्रकाशिका मधुसूदनी, शंकरानंद, श्रीधर, सदानंद, धनपतिसूरि, सूर्य, राघवेन्द्रकृत ८ टीका सहित १२)
भगवद्गीता—शांकर भाष्य भा. टी. २॥)
भगवद्गीता—रामानुज भाष्य भा. टी. २॥)
भगवद्गीता—पदच्छेद-अन्वय-भा. टी. १॥), ॥=), १)
भगवद्गीता—साधारण भा. टी. सादा ॥), ॥=) जिल्द
भगवद्गीता—भाषाटीका गुटका =)॥ जि. ।)॥
भगवद्गीता—पं. सातवलेकर पुरुषार्थ बोधनी हिन्दी टीका संपूर्ण १२॥)
भगवद्गीता—भा. टी. अन्वयांक दोहा २॥)
भगवद्गीता—पदच्छेद भाषा टीका—ज्वालाप्रसाद गुटका २)
भगवद्गीता —पदच्छेद अन्वयांक, पदार्थ तथा भा. टी. चिद्घनानंद के अनुसार गुटका २)
भगवद्गीतागीतारहस्य—लो. मा. तिलक १२)
भगवद्गीता—भा. टी. गुटका ॥)
भगवद्गीता—ताबीजी =) ॥), १॥)
भगवद्गीता—केवल भाषा ।)
भगवद्गीता—लाहौरी ३), २॥), १॥), १), ॥=)
भगवद्गीता—गुजराती टीका सहित ३॥)
भगवद्गीता—राधेश्यामकृत २॥)
भगवद्गीता—हरिगीतामृत छन्द में २॥)
भगवद्गीता —गीतावली का का पद्यानुवाद पं. रामशंकर २॥)
भगवद्गीता—प्रश्नोत्तर १)
भगवद्गीता—गीताज्ञान-पद्यानुवाद ॥)
भगवद्गीता—गणेशानंद कृत भा. टी. १)
भगवद्गीता का राजकीय तत्वावलोकन २)
भगवद्गीता समन्वय—पं. सातवलेकर २)
भगवद्गीता: अधिकृतपाठ: पादसूच्यासंयोजित बिल्वावलिकर संशोधित: २)
भगवद्गीता दर्शनानि—संस्कृत ४)
मोक्षगीता—सवालक्षरामनाम २॥)
रामगीता—भा. टी. बंबई ॥=)
रामगीता—पं. विजयानंद त्रिपाठी कृत हिन्दी टीका मानस के दार्शनिक सिद्धान्तों का विवेचन १)
शिवगीता—मूल ॥)
शिवगीता—भाषाटीका सहित २)
शिवगीता—संस्कृतटीका १॥)
श्रीभगद्भगवद्गीता संशोध्य—विविध-पाठान्तरैरुपाद्धात्तेन परिशिष्टादिभिश्च-संयोज्य पूना ७॥)
सप्तश्लोकी गीता भा० टी० =)
सत्याग्रह गीता—पंडित क्षमाराव २॥)

व्याकरण-प्रस्ताव

अनुवादकला—अथवा वाग्व्यवहारादर्श—लेखक—श्रीचारुदेव शास्त्री, एम. ए., एम. ओ. एल.। उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए संस्कृत अनुवाद की पुस्तक। २॥)
अनुवादचंद्रिका—लेखक—पं० चक्रधर हंस नौटियाल, एम. ए., एल. टी., शास्त्री। यह पुस्तक हाईस्कूल, इंटरमीडियेट तथा संस्कृत की प्रथमा, प्राज्ञ आदि कक्षाओं के छात्रों के लिए अतीव उपयोगी पुस्तक है। इससे बढ़कर अनुवाद की पुस्तक आज तक नहीं छपी। नौवें संस्करण में संस्कृत में सरल निबंध आदि भी दिये गये हैं। २॥)
अनुवाद कौमुदी— १॥)
अभिनव धातुरूपावलि ॥)
अभिनव शब्दरूपावलि १)
अष्टाध्यायीसूत्र—वार्तिक पाठ सहित १॥)
अष्टाध्यायीसूत्रपाठ—काशी ॥) अजमेर ॥=)
अष्टाध्यायीसूत्र पञ्चपाठी १॥)
अष्टाध्यायी—सवार्तिकगण मदरास १)
" —वृन्दावन २॥)
" —गुरुप्रसाद टीका २॥)
" —स्वामीदयानन्दभाषा ७)
" —गुरुकुल की व्याख्या १४)
अष्टाध्यायीशब्दानुक्रमणिका १२)
अव्ययविवेक—तारापद चौधरी ॥)
आचार्यपाणिनी के समय विद्यमान संस्कृत वाङ्मय ।=)
आदर्श लघुकौमदी—म. म. मथुराप्रसाद १॥)
आर्ष पानिणीय व्याकरण—पं. हरिशंकर ५)
आशबोध व्याकरण—तारानाथ २॥)
आदर्श प्रस्ताव-रत्नमाला— सम्पादक—पं० श्री विश्वनाथ शास्त्री प्रभाकर। इस पुस्तक में भिन्न-भिन्न लेखकों के लगभग १०० निबन्ध (प्रस्ताव) धार्मिक, राजनीतिक तथा सामाजिक विषयों पर दिये हैं। विशारद, मध्यमा, शास्त्री आदि के छात्रों के लिये अतीव उपयोगी। ४)
उणादिसूत्र—उज्ज्वलदत्तवृत्ति २॥)
" —श्वेत वनवासी वृत्ति ३।=)
औणादि पदार्णव—पेरुसूरिकृत. ४॥)
उणादि सूत्र—नारायणभट्टवृत्ति २॥-)
उत्तर पक्षावली— ।)
उपसर्गवृत्ति— -)
ऋजुपाणिनीयम् —श्री गोपालशास्त्र-दर्शनकेसरी ॥)
कारकोल्लास भरत ।)
कारकचक्र ॥), १॥-)
काशिकावृत्ति—वामनजयादित्य १२)
काशिका न्यास विवरणपंजिका ३५)
कविकल्पद्रुम—दुर्गाप्रसाद १॥=)
कौमुदी रूपलता १॥)
चान्द्रव्याकरण चंद्रगोमिन कृत १२)
जैनेन्द्र व्याकरण—अभयनन्दसूरिटीका ५)
तिङन्तमंजरी—धातुपाठ सहित ।=)
दुर्घटवृत्ति—सरणदेव २।=)
दशपाद्युणादिवृत्ति—युधिष्ठिरमीमांसक ३॥)
गुप्ताशुद्धिदर्शन—पंडित पद्मार-पंडित अम्बिकादत्त व्यास ॥)
धातुपाठ— ।)
धातुरूपावली— ॥)
धातुरत्नाकर—७ भागों में ३५)
धातुरूपकल्पद्रुम—जानकीनाथ ९)
धातु रूपादर्श—तारानाथ विरचित २॥)
न्यास कल्पलता पाणिनि सूत्र न्यासशास्त्रार्थ १)
नन्दीकेश्वरकाशिका— ॥)
चांगु सूत्रवृत्ति सहित ॥)
निपाताव्ययोपसर्गवृत्ति—तिलककृति २॥)
पदार्थ दीपिका कौण्डभट्ट ॥)
परमलघुकला—प्रश्नोत्तरी १)
परमलघुमंजूषा—अर्थदीपिकाटीका १॥)
परिभाषापाठ— -)
परिभाषा—वृत्ति —क्षीरदेव २॥)
परिभाषेंदुशेखर म. म. पं. जयदेवमिश्र कृत विजयाटीका ४॥)
" —भैरवीतत्वप्रकाशिका ३)
" —गदाटीका ३॥-)
" —मूल १)
" —भूतिटीका ५॥)
" —बृहत्शास्त्रार्थकलाटीका ३)

परिभाषेंदुशेखर—प्रश्नोत्तरी १।)
परिभाषेन्दु प्रश्नपंजिका ।।=)
परिभाषेन्दुदीपिका पं. हरिशंकर ।।।)
परिभाषावृत्ति, ज्ञापक समुच्चय, कारक-चक्र—पुरुषोत्तमदेव ६)
परिभाषार्थचंद्रिका—मधुसूदनप्रसाद ।)
पंचप्रक्रियासर्वज्ञात्मन २।।=)
परिष्कारदर्पण—शास्त्रार्थकला २)
पाणिनीयप्रबोध—श्री गोपालशास्त्री दर्शन केसरी कृत दो भाग २)
पाणिनीय मिताक्षरा—अन्नंभट्ट कृत १५)
पाणिनीयप्रदीप – २ भाग १।)
पाणिनीय शिक्षा—सटीक ।।=), ।=)
पाणिनीय सिद्धान्त कौमदी म. म. पं. मथुरा प्रसाद दीक्षित ३।)
प्रबंधामृत— ।।)
प्रबंधपारिजात १।)
प्रक्रियाकौमुदी—दो भागों में २०)
प्रक्रियासर्वस्व—नारायणभट्ट-२ भाग २।)
प्रक्रिया सर्वस्वपद्धति—मद्रास— ३।।=)
प्रयोगशास्त्रार्थकला—वेणीमाधव ।)
प्रस्तावतरंगिणी—श्रीचारुदेव ३)
प्राकृतप्रकाश—मनोरमाटीका २।)
" —रामपाणिवादवृत्ति १०)
" —संजीवनी एवं सुबोधिनीटीका २।)
प्राकृतमार्गोपदेशिका—पं. बेचरदास ४)
प्राकृतरूपावतार—सिंहराजकृत ५)
प्राकृतमंजरी—कात्यायन ।)
प्राकृतव्याकरण वृत्ति—त्रिविक्रमदेव ७।)
प्राकृत विमर्श—हिन्दी डा. सरयू प्रसाद ४।)
प्रारम्भिक-पाणिनीय—सं. पं० विश्वनाथ शास्त्री। थोड़े समय में व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करने के लिए। १)
प्रारंभिक रचनानुवाद कौमुदी—श्रीकपिलदेव १)

प्रौढमनोरमा—शब्दरत्न, ज्योत्स्ना, कुचमर्दिनी, प्रभा, विभा ६)
प्रौढमनोरमा—शब्दरत्न—तत्वादर्श-व्याख्या केवलपंचसंधि तक २।)
प्रौढमनोरमा—पं. सभापति मिश्र टीका १०)
प्रौढमनोरमा—शब्दरत्न भैरवी १२)
भाव प्रकाश, सरल टीका १।।)
प्रौढमनोरमा—खण्डनचक्रपाणि १।।)
प्रौढमनोरमा प्रश्नोत्तरावली—३ भाग में ३)
पूर्वपक्षावली— ।)
फक्किकामर्मवृत्ति—पं. हरिशंकर झा १।)
फक्किकासरलार्थ— १)
फक्किका प्रश्नोत्तरी— १।)
फक्किकाप्रकाश— १।)
फक्किका रत्न मंजूषा—प्रथम २) दूसरा २।)
फक्किकादर्श—विश्वनाथ झा १)
प्रस्तारचक्र =)
बटुतोषिणी—हरिशंकर झा ।।।=)
बालनिबन्धादर्श—सम्पादक-पं० विश्वनाथ शास्त्री प्रभाकर। कोमल बुद्धि प्रथमा आदि कक्षाओं के छात्रों के लिए। निबंध की पुस्तक १।)
बनारससोत्रा—प्रश्नावली— २।)
बिहार सोत्तरा प्रथमाप्रश्नावली २)
भाषाशास्त्रप्रवेशिनी २)
भावबोधिनी—पंक्तिपदार्थ २)
भाषामंजरी— ।=)
भाषावृत्ति—पुरुषोत्तमदेव ९)
भूषणसार प्रकाश — ।।।=)
भूषणसार चंद्रिका—पं. हरिशंकर झा ।।।)
मध्यमाव्याकरणसोत्राप्रश्नावली—प्रथम १।), द्वितीय १।) तृतीय २।) चतुर्थ १।।)
मध्यसिद्धान्तकौमुदी—मूल ३)
" —सं. हिं. टीका ६)
" —रहस्य २)

मनोरमारत्नविवेक—श्रीहरिशंकर झा १।।)
महाभाष्य (पातंजल) प्रदीप—उद्योत छाया सहित नवाह्निक १५)
" " —नवाह्निकदभंगा १५)
" विधिशेषरूप—२सरा खण्ड ९)
" —विधिप्रकरणरूप—३सरा खण्ड ५)
" —४ था खंड ९)
" —स्थानेविधिरूप—५वा खण्ड १०)
महाभाष्य—तत्राङ्गाधिकार-प्रदीपोद्योत २ भाग पूना ६।=)
" प्रदीपोद्योत तत्वालोक १-५ ६।)
" प्रदीपोद्योरत्न अन्नंभट्टकृत व्याख्या दो भाग २९।।)
महाभाष्य संपूर्ण मराठी अनुवाद ८०)
महाभाष्य शब्दानुक्रमणिका— १५)
महाभाष्यादर्श— १।)
महाभाष्यकुंचिका पं. हरिशंकर झा १।)
महाभाष्य प्रकाश प्रश्नोत्तरी ।।)
महाभाष्य—१-२ आह्निक भा. टी. २।)
मुग्धबोधव्याकरणसटीक ५)
मंजूषारत्न—पं. हरिशंकर— ।।)
रचनानुवाद कौमुदी—श्रीकपिलदेव ३)
रामचंद्रिका—शब्दरूपावली— ।)
रूपकौमुदी—छपता है ३)
रूपचंद्रिका —शब्द-धातुरूपावली २।)
रूपप्रभा— " " ३।)
रूपमाला—षट्लिंगविभाग ।।।=)
लघुसिद्धान्त कौमुदी—श्री पं० विश्वनाथ जी शास्त्री प्रभाकर कृत उपेंद्रविवृति तथा सत्रों का सरल हिन्दी अनुवाद। अनेकों छात्रोपयोगी परिशिष्टसमेत। इसी आवृत्ति के लिए छात्र सदा लालायित रहते हैं। अनेकों संस्करण बिक चुके हैं अब नया संस्करण बढ़िया ग्लेज कागज पर छपा है। ३४० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल प्रचारार्थ। छठा संस्करण १।।)

लघुसिद्धान्त कौमुदी—व्याकरणाचार्य पं० श्रीधरानंद शास्त्री कृत अति विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित। सब रूपसिद्धि दी गई है। १००० पृष्ठ में समाप्त। बिना गुरु के इसको समझा जा सकता है। ७)
लघुकौमुदी—सुधा संस्कृत टीका ३), ३।।)
लघुकौमुदी—सोत्रा प्रयोग सूचि ।।।=)
लघुकौमुदी—प्रश्नोत्तरी—शिवदत्त २।)
लघुशब्देन्दुकला— १।)
लघुशब्देन्दुशेखर—नित्यानंद पर्वतीय १०)
लघुशब्देन्दुशेखर—६ टीका २०)
" —नागेशोक्ति प्रकाशटीका २।)
लघुजूटिका— ।।)
लौकिकन्यायशास्त्रार्थकला ।।)
लिंगानुशासन—सटीक १।।)
लिंगानुशासन—दुर्गासिंह विरचित ८)
वाक्यपदीय—ब्रह्मकाण्ड १)
वाक्यतत्व— ।=)
वादरत्न—२ भाग ५)
वादार्थ संग्रह—४ भाग २।।)
विभक्त्यर्थ निर्णय गिरिधरोपाध्याय ७।)
विषमपदवाक्यवृत्ति लघुशब्देन्दु व्याख्यान २।)
वैयाकरणभूषणसार प्रकाश— ।।।=)
वैयाकरणसिद्धान्तकारिका— १।)
वैयाकरण लघुमंजूषा परीक्षोपयोगी ३)
वैयाकरण लघुमंजूषा—कुंजिका-कला दो टीका संपूर्ण २२।)
वैयाकरणभूषणसार—कलकत्ता मूल १=)।।
" —सरला सुबोधनी २)
" —दर्पण भूषण ६)
" —दर्पण भैरवी ७)

वैयाकरणभूषणसार—पं. श्रीसभापति जी-श्री बालकृष्ण शास्त्री पंचोली कृत प्रभा स. ५)
वैयाकरणभूषण—कौण्डभट्ट १०)
" " —निबंधसंग्रह ॥=)
व्याकरणदीपिका—औरंभभट्ट १०)
व्याकरणसिद्धान्त सुधानिधि-विश्वेश्वर सूरि १५)
व्युत्पत्तिप्रदर्शन ॥)
वृत्तिदीपिका मौणिश्रीकृष्णभट्ट ॥-)
शब्दकौस्तुभ—भट्टोजीदीक्षित १८)
शब्दकौस्तुभ—नवाह्निकमात्र ६)
शब्दरूपादर्श—जीवानंद ।॥-)
शब्दरूपावली— ।-), ।=)
शब्दापशब्दविवेक—चारुदेवशास्त्री ५)
शाकटायनव्याकरण—यक्षवर्मावृत्ति १२)
शास्त्रार्थरत्नावली—म. म. जयदेव १॥)
श्रीधरी—लघुशब्देन्दु व्याख्या १॥)
शिवतोषिणी—पं० हरिशंकर झा ।॥)
शिक्षासूत्राणि—आपिशालिपाणिनि ॥)
शब्देन्दु सुधा—श्री हरिशंकरझा १॥)
शब्दसंजरी— ।॥=)
शब्दरूपमहोदधि— ॥=)
षड्भाषाचंद्रिका ७॥)
सदाशिवभट्टी—लघुशब्देन्दुव्याख्यान ३)
संस्कृतव्याकरणशास्त्र का इतिहास-युधिष्ठिर मीमांसक १०)
सज्जनेन्द्रप्रयोगकल्पद्रुम १॥)
संधिचंद्रिका— १)
समस्यासनज्या—म. म. रामशास्त्रि २)
समासचक्र— =)॥, ।-)
सारमंजरी—
संस्कृतव्याकरण प्रवेशिका—सक्सेना ५)
संस्कृत व्याकरणप्रबोध
संस्कृतनिबंधपथप्रदर्शक—आप्टे की पुस्तक का हि. अनुवाद ४)
संस्कृतप्रथमपुस्तक—रामबिहारीशुक्ल २)
" द्वितीय " — " ३)

संस्कृतपाठशाला—सातवलेकर—२४ भाग १२)
संस्कृतसुबोधिनी ।=)
संस्कृतशिक्षा—जीवाराम प्रथम ।=) दूसरा ॥) तीसरा ॥=) चौथा ।॥), पाँचवा ॥=) छठा ।॥)
संस्कृत स्वयं शिक्षक—पं. सातवलेकर कृत तीन भाग में ५)
संस्कृतानुवाद-निबंधादर्श—लेखक—आचार्य पूर्णानंद। हाईस्कूल तथा प्रथमा के छात्रों के लिए उपयोगी है १॥)
संस्कृत व्याकरणसार-प्रो. रामचन्द्रशर्मा एम. ए. कृत हिन्दी भाषा द्वारा सं० व्याकरण सीखने के लिए उच्च कक्षाओं के छात्रोपयोगी द्वितीय संस्करण ६)
संस्कृत व्याकरण का मानचित्र-लेखक—प्रो० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री तर्कशिरोमणि, एम. ए., एम. ओ. एल.। उक्त प्रो० साहिब ने अपने जीवन-पर्यन्त अध्ययन तथा अध्यापन के निचोड़ से विलक्षण प्रकार का यह मानचित्र तैयार किया है। उनका दावा है कि इस मानचित्र को याद कर लेने से संस्कृत का बोध हो जाता है और वह इसी के द्वारा अपने छात्रों को पठन पाठन सफलतापूर्वक करवा रहे हैं। १) नेट
सारस्वत मूल—तीनों वृत्ति संपूर्ण २॥)
" —पूर्वार्द्ध १) ।॥)
" —भाषाटीका पू० ५)
" —सटीक प्रथम भाग ३॥)
" —संपूर्ण सटीक ८)
सिद्धान्तकौमुदी—मूल गुटका ३)
" —स्थूलाक्षर ३)
" —केवल तत्वबोधनीटीका १३॥)
सिद्धान्तकौमुदी—वासुदेव दीक्षित कृत बालमनोरमा तथा ज्ञानेन्द्रसरस्वती कृत तत्वबोधिनी दो संस्कृत टीकाओं सहित। म० म० श्री गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी तथा म. म. परमेश्वरानंद जी द्वारा संशोधित। संपूर्ण चार भागों में १८) संपूर्ण पुस्तक दो पक्की कपड़े की जिल्दों में द्वितीय संस्करण १८)
सिद्धान्तकौमुदी-केवल बालमनोरमा टीका काशी-पूर्वार्द्ध ६) उत्तरार्द्ध ६)
सिद्धान्तकौमुदी—केवल उत्तरार्द्ध बालमनोरमा टीका मदरास ७॥)
सिद्धान्तकौमुदीसोत्तरा—प्रयोगसूची कारकान्त ॥=) शैषिकान्त ।॥) विकारार्थकादि चुराद्यन्त १=) ण्यन्तादि उत्तरकृदन्त १)
सिद्धान्तकौमुदीसोत्तरास्वरवैदिकप्रयोग—सूची ।॥=)
स्वरवैदिकप्रक्रियाप्रश्नोत्तरी १)
स्वरसिद्धान्तचंद्रिका—श्रीनिवास ५॥)
सिद्धान्तचंद्रिका-बालबोधिनीटीका पूर्वार्द्ध १॥)
" —उत्तरार्द्ध २) संपूर्ण ३॥)
" —सुबोधिनी-तत्वदीपिका १२)
स्फोटवाद—नागेश सटीक १०)
स्फोटसिद्धि ॥=)
" —मंडनमिश्र-गोपालिका- ३।=)
सरस्वतीकण्ठाभरण-भोजदेवव्याकरण ६॥)
" —भोज-नारायण दण्डनाथ सव्याख्या ३ भाग ६)
सुगम संस्कृत व्याकरण-लेखक— आनन्द-स्वरूप गुप्त, एम. ए.। उत्तरप्रदेशीय शिक्षाबोर्ड द्वारा हाईस्कूल तथा इंटर परीक्षाओं के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम का पूर्णरूप से अनुसरण किया गया है। छात्रों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपादेय है। २॥)

काव्य, अलंकार, छन्द, चम्पु ग्रन्थ

अकबर शाहि शृंगार दर्पण—पद्मसुन्दर २)
अच्युतराम्युदय—राजनाथ (७-१२) सर्ग ५)
अच्युतराम्युदय—१-६ सर्ग सटीक १॥)
अनूपसिंह गुणावतार— १)
अन्योक्तष्टक संग्रह २)
अन्योक्त साहस्री — ॥=)
अब्दुल्लाचरित—लक्ष्मीपति ८)
अभिनव संस्कृतपरिचय—प्रो० रामचन्द्र शर्मा, एम. ए. तथा प्रो० श्रीचारुदेव शास्त्री, एम. ए., एम. ओ. एल. द्वारा संकलित। प्रभाकर परीक्षा में नियत है। २)
अमरुशतक—रसिक संजीवनी व्याख्या १॥)
अमरुशतक—भा. टी. १=)
अमरमंडन—कृष्णसूरि ३)
अलंकारकौमुदी—एस. एन. शास्त्री ३)
अलंकारकौस्तुभ—कविकर्णपूर दो भाग १०)
अलंकार प्रदीप—विश्वेश्वर ॥)
अलंकार मंजूषा—भट्टदेवशंकर ४)
अलंकारशेखर—केशव १), ।॥)
अलंकार मुक्तावली—विश्वेश्वर ।॥)
अलंकारमणिहार— २, ३, ४ भाग ८॥)
अलंकारमहोदधि—नरेंद्र प्रभसूरि ७॥)
अलंकारसर्वस्व—राजानक रुय्यक २)
अलंकार संग्रह—अमृतानंद ४), १६)
अलंकाररत्नाकर—शोभाकर ३॥)
अलंकृति मणिमाला १)
अलंकारसारमंजरी— ॥)
आनंदकंदचंपु—मिश्र १॥)
आनंदरंगचंपु—श्रीनिवासकृत डा. राघवण द्वारा संपादित ४)
आनन्द वृन्दावन चंपु—पत्रात्मक १०)
आर्या सप्तशती—गोवर्धनाचार्य-सटीक २)
" —विश्वेश्वर स्वोपज्ञ व्याख्या ४॥)

परिभाषेंदुशेखर—प्रश्नोत्तरी १)
परिभाषेन्दु प्रश्नपंजिका ।।=)
परिभाषेन्दुदीपिका पं. हरिशंकर ।।।)
परिभाषावृत्ति, ज्ञापक समुच्चय, कारक-
चक्र—पुरुषोत्तमदेव ६)
परिभाषार्थचंद्रिका—मधुसूदनप्रसाद ।।)
पंचप्रक्रियासर्वज्ञात्मन २।।।=)
परिष्कारदर्पण—शास्त्रार्थकला २)
पाणिनीयप्रबोध—श्री गोपालशास्त्री दर्शन
केसरी कृत दो भाग २)
पाणिनीय मिताक्षरा—अन्नंभट्ट कृत १५)
पाणिनीयप्रदीप – २ भाग १।)
पाणिनीय शिक्षा—सटीक ।।=), ।=)
पाणिनीय सिद्धान्त कौमदी म. म. पं. मथुरा
प्रसाद दीक्षित ३।।)
प्रबंधामृत— ।।।)
प्रबंधपारिजात १।)
प्रक्रियाकौमुदी—दो भागों में २०)
प्रक्रियासर्वस्व—नारायणभट्ट–२ भाग २।।)
प्रक्रिया सर्वस्वपद्धति-—मद्रास— ३।।=)
प्रयोगशास्त्रार्थकला—वेणीमाधव ।)
प्रस्तावतरंगिणी—श्रीचारुदेव ३)
प्राकृतप्रकाश—मनोरमाटीका २।।)
" —रामपाणिवादवृत्ति १०)
" —संजीवनी एवं सुबोधिनीटीका २।।)
प्राकृतमार्गोपदेशिका—पं. वेचरदास ४)
प्राकृतरूपावतार—सिंहराजकृत ५)
प्राकृतमंजरी—कात्यायन ।।)
प्राकृतव्याकरण वृत्ति—त्रिविक्रमदेव ७।।)
प्राकृत विमर्श—हिन्दी डा. सरयू प्रसाद ४।।)
प्रारम्भिक-पाणिनीय—सं. पं० विश्वनाथ
शास्त्री। थोड़े समय में व्याकरण का
ज्ञान प्राप्त करने के लिए। १)
प्रारंभिक रचनानुवाद कौमुदी—
श्रीकपिलदेव १)

प्रौढमनोरमा—शब्दरत्न, ज्योत्स्ना,
कुचमर्दिनी, प्रभा, विभा ६)
प्रौढमनोरमा—शब्दरत्न—तत्त्वादर्श-
व्याख्या केवलपंचसंधि तक २।।)
प्रौढमनोरमा–पं. सभापति मिश्र टीका १०)
प्रौढमनोरमा—शब्दरत्न भैरवी १२)
भाव प्रकाश, सरल टीका १।।)
प्रौढमनोरमा—खण्डनचक्रपाणि १।।)
प्रौढ़मनोरमा प्रश्नोत्तरावली–३ भाग में ३)
पूर्वपक्षावली— ।)
फक्किकामर्मवृत्ति—पं. हरिशंकर झा १।)
फक्किकासरलार्थ— १)
फक्किका प्रश्नोत्तरी— १।।)
फक्किकाप्रकाश— १।।)
फक्किका रत्न मंजूषा–प्रथम २) दूसरा २।।)
फक्किकादर्श—विश्वनाथ झा १)
प्रस्तारचक्र =)
बटुतोषिणी—हरिशंकर झा ।।।=)
बालनिबन्धादर्श—सम्पादक–पं० विश्व-
नाथ शास्त्री प्रभाकर। कोमल बुद्धि
प्रथमा आदि कक्षाओं के छात्रों के
लिए। निबंध की पुस्तक १।।)
बनारससोत्रा–प्रश्नावली— २।।)
बिहार सोत्तरा प्रथमाप्रश्नावली २)
भाषाशास्त्रप्रवेशिनी २)
भावबोधिनी—पंक्तिपदार्थ २)
भाषामंजरी– १=)
भाषावृत्ति—पुरुषोत्तमदेव ९)
भूषणसार प्रकाश — ।।।=)
भूषणसार चंद्रिका—पं. हरिशंकर झा ।।।)
मध्यमाव्याकरणसोत्राप्रश्नावली–
प्रथम १।), द्वितीय १।) तृतीय २।)
चतुर्थ १।।।)
मध्यसिद्धान्तकौमुदी—मूल ३)
" –सं. हि. टीका ६)
" —रहस्य २)

मनोरमारत्नविवेक—श्रीहरिशंकर झा १।।)
महाभाष्य (पातंजल) प्रदीप—उद्योत
छाया सहित नवाह्निक १५)
" "—नवाह्निकदर्भंगा १५)
" विधीशेषरूप—२सरा खण्ड ९)
" –विधिप्रकरणरूप–३सरा खण्ड ५)
" –४ था खंड ९)
" –स्थानेविधिरूप–५वा खण्ड १०)
महाभाष्य—तत्राङ्गाधिकार–प्रदीपोद्योत
२ भाग पूना ६।=)
" प्रदीपोद्योत तत्वालोक १-५ ६।।)
" प्रदीपोद्योरत्न अन्नंभट्टकृत
व्याख्या दो भाग २९।।।)
महाभाष्य संपूर्ण मराठी अनुवाद ८०)
महाभाष्य शब्दानुक्रमणिका— १५)
महाभाष्यादर्श— १।।)
महाभाष्यकुंचिका पं. हरिशंकर झा १।।)
महाभाष्य प्रकाश प्रश्नोत्तरी ।।।)
महाभाष्य—१-२ आह्निक भा. टी. २।।)
मुग्धबोधव्याकरणसटीक ५)
मंजूषारत्न—पं. हरिशंकर— ।।।)
रचनानुवाद कौमुदी—श्रीकपिलदेव ३)
रामचंद्रिका—शब्दरूपावली— ।।)
रूपकौमुदी—छपता है ३)
रूपचंद्रिका —शब्द-धातुरूपावली २।।)
रूपप्रभा— " " ३।।)
रूपमाला—षट्लिंगविभाग ।।।=)
लघुसिद्धान्त कौमुदी—श्री पं० विश्वनाथ
जी शास्त्री प्रभाकर कृत उपेंद्रविवृति
तथा सूत्रों का सरल हिन्दी अनवाद।
अनेकों छात्रोपयोगी परिशिष्टसमेत।
इसी आवृत्ति के लिए छात्र सदा
लालायित रहते हैं। अनेकों संस्करण
बिक चुके हैं अब नया संस्करण बढ़िया
ग्लेज कागज पर छपा है। ३४०
पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल प्रचा-
रार्थ। छठा संस्करण १।।)

लघुसिद्धान्त कौमुदी–व्याकरणाचार्य पं०
श्रीधरानंद शास्त्री कृत अति विस्तृत
हिन्दी अनुवाद सहित। सब रूप-
सिद्धि दी गई है। १००० पृष्ठ में
समाप्त। बिना गुरु के इसको समझा
जा सकता है। ७)
लघुकौमुदी—सुधा संस्कृत टीका ३), ३।।।)
लघुकौमुदी—सोत्रा प्रयोग सूचि ।।।=)
लघुकौमुदी—प्रश्नोत्तरी–शिवदत्त २।।)
लघुशब्देन्दुकला— १।)
लघुशब्देन्दुशेखर—नित्यानंद पर्वतीय १०)
लघुशब्देन्दुशेषर—६ टीका २०)
" —नागेशोक्ति प्रकाशटीका २।।)
लघुजूटिका— ।।)
लौकिकन्यायशास्त्रार्थकला ।।।)
लिंगानुशासन—सटीक १।।।)
लिंगानुशासन—दुर्गासिंह विरचित ८)
वाक्यपदीय—ब्रह्मकाण्ड १)
वाक्यतत्व— १=)
वादरत्न—२ भाग ५)
वादार्थ संग्रह—४ भाग २।।।)
विभक्त्यर्थ निर्णय गिरिधरोपाध्याय ७।।)
विषमपदवाक्यवृत्ति लघशब्देन्दु व्याख्यान २।।)
वैयाकरणभूषणसार प्रकाश— ।।।=)
वैयाकरणसिद्धान्तकारिका— १।)
वैयाकरण लघुमंजूषा परीक्षोपयोगी ३)
वैयाकरण लघुमंजूषा—कुंजिका-कला
दो टीका संपूर्ण २२।।)
वैयाकरणभूषणसार—कलकत्ता मूल १=)।।
" —सरला सुबोधनी २)
" —दर्पण भूषण ६)
" —दर्पण भैरवी ७)

वैयाकरणभूषणसार—पं. श्रीसभापति जी-श्री बालकृष्ण शास्त्री पंचोली कृत प्रभा स. ५)
वैयाकरणभूषण—कौण्डभट्ट १०)
" " —निबंधसंग्रह ॥=)
व्याकरणदीपिका—औरंगभट्ट १०)
व्याकरणसिद्धान्त सुधानिधि-विश्वेश्वर सूरि १५)
व्युत्पत्तिप्रदर्शन ॥)
वृत्तिदीपिका मौणिश्रीकृष्णभट्ट ॥=)
शब्दकौस्तुभ—भट्टोजीदीक्षित १८)
शब्दकौस्तुभ—नवाह्निकमात्र ६)
शब्दरूपादर्श—जीवानंद ॥।=)
शब्दरूपावली— ।=), ।=)
शब्दापशब्दविवेक—चारुदेवशास्त्री ५)
शाकटायनव्याकरण—यक्षवर्मवृत्ति १२)
शास्त्रार्थरत्नावली—म. म. जयदेव १॥)
श्रीधरी—लघुशब्देन्दु व्याख्या १॥)
शिशुतोषिणी—पं० हरिशंकर झा ॥)
शिक्षासूत्राणि—आपिशालिपाणिनि ।)
शब्देन्दु सुधा—श्री हरिशंकरझा १॥)
शब्दमंजरी— ॥।=)
शब्दरूपमहोदधि— ॥=)
षड्भाषाचंद्रिका ७॥)
सदाशिवभट्टी—लघुशब्देन्दुव्याख्यान ३)
संस्कृतव्याकरणशास्त्र का इतिहास-युधिष्ठिर मीमांसक १०)
सज्जनेद्रप्रयोगकल्पद्रुम १॥)
सविचंद्रिका— १)
समस्यासनव्या—म. म. रामशास्त्रि २)
समासचक्र— =)॥, ।=)
सारमंजरी—
संस्कृतव्याकरण प्रवेशिका—सवसेना ५)
संस्कृत व्याकरणप्रबोध
संस्कृतनिबंधपथप्रदर्शक—आप्टे की पुस्तक का हि. अनुवाद ४)
संस्कृतप्रथमपुस्तक—रामबिहारीशुक्ल २)
" द्वितीय " — " ३)

संस्कृतपाठमाला—सातवलेकर—२४ भाग १२)
संस्कृतसंबोधिनी ।=)
संस्कृतशिक्षा—जीवाराम प्रथम ।=) दूसरा ।) तीसरा ॥=) चौथा ॥), पांचवां ॥=) छठा ॥)
संस्कृत स्वयं शिक्षक—पं. सातवलेकर कृत तीन भाग में ५)
संस्कृतानुवाद-निबंधादर्श—लेखक—आचार्य पूर्णानंद। हाईस्कूल तथा प्रथमा के छात्रों के लिए उपयोगी है १॥)
संस्कृत व्याकरणसार-प्रो. रामचन्द्रशर्मा एम. ए. कृत हिन्दी भाषा द्वारा सं० व्याकरण सीखने के लिए उच्च कक्षाओं के छात्रोपयोगी द्वितीय संस्करण ६)
संस्कृत व्याकरण का मानचित्र-लेखक-प्रो० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री तर्कशिरोमणि, एम. ए., एम. ओ. एल.। उक्त प्रो० साहिब ने अपने जीवन-पर्यन्त अध्ययन तथा अध्यापन के निचोड़ से विलक्षण प्रकार का यह मानचित्र तैयार किया है। उनका दावा है कि इस मानचित्र को याद कर लेने से संस्कृत का बोध हो जाता है और वह इसी के द्वारा अपने छात्रों को पठन पाठन सफलतापूर्वक करवा रहे हैं। १) नेट
सारस्वत मूल-तीनों वृत्ति संपूर्ण २॥)
" —पूर्वार्द्ध १) ॥)
" —भाषाटीका पू० ५)
" —सटीक प्रथम भाग ३॥)
" —संपूर्ण सटीक ८)
सिद्धान्तकौमुदी—मूल गुटका ३)
" —स्थूलाक्षर ३)
" —केवल तत्वबोधनीटीका १३॥)
सिद्धान्तकौमुदी—वासुदेव दीक्षित कृत बालमनोरमा तथा ज्ञानेन्द्रसरस्वती कृत तत्वबोधिनी दो संस्कृत टीकाओं सहित। म० म० श्री गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी तथा म. म. परमेश्वरानंद जी द्वारा संशोधित। संपूर्ण चार भागों में १६) संपूर्ण पुस्तक दो पक्की कपड़े की जिल्दों में द्वितीय संस्करण १८)
सिद्धान्तकौमुदी-केवल बालमनोरमा टीका काशी-पूर्वार्द्ध ६) उत्तरार्द्ध ६)
सिद्धान्तकौमुदी—केवल उत्तरार्द्ध बालमनोरमा टीका मदरास ७॥)
सिद्धान्तकौमुदीसोत्तरा—प्रयोगसूची कारकान्त ॥=) शेषिकान्त ॥)
विकारार्थकादि चुराद्यन्त १=) ण्यन्तादि उत्तरकृदन्त १)
सिद्धान्तकौमुदीसोत्तरास्वरवैदिकप्रयोग-सूची ॥।=)
स्वरवैदिकप्रक्रियाप्रश्नोत्तरी १॥)
स्वरसिद्धान्तचंद्रिका—श्रीनिवास ५॥)
सिद्धान्तचंद्रिका-बालबोधिनीटीका पूर्वार्द्ध २॥)
" —उत्तरार्द्ध २) संपूर्ण ३॥)
" —सुबोधिनी-तत्वदीपिका १२)
स्फोटवाद—नागेश सटीक १०)
स्फोटसिद्धि ॥=)
" —मंडनमिश्र-गोपालिका— ३।=)
सरस्वतीकण्ठाभरण-भोजदेवव्याकरण ६॥)
" —भोज-नारायण दण्डनाथ सव्याख्या ३ भाग ६)
सुगम संस्कृत व्याकरण-लेखक— आनन्द-स्वरूप गुप्त, एम. ए.। उत्तरप्रदेशीय शिक्षाबोर्ड द्वारा हाईस्कूल तथा इंटर परीक्षाओं के लिए निर्धारित पाठ्य-क्रम का पूर्णरूप से अनुसरण किया गया है। छात्रों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपादेय है। २॥)

———

काव्य, अलंकार, छन्द, चम्पु ग्रन्थ

अकबर शाहि शृंगार दर्पण—पद्मसुन्दर २)
अच्युतराभ्युदय—राजनाथ (७-१२) सर्ग ५)
अच्युतराभ्युदय—१-६ सर्ग सटीक १॥)
अनूपसिंह गुणवतार— १)
अन्योक्तष्टक संग्रह २)
अन्योक्त साहस्री— ॥=)
अब्दुल्लाचरित—लक्ष्मीपति ८)
अभिनव संस्कृतपरिचय—प्रो० रामचन्द्र शर्मा, एम. ए. तथा प्रो० श्रीचारुदेव शास्त्री, एम. ए., एम. ओ. एल. द्वारा संकलित। प्रभाकर परीक्षा में नियत है। २)
अमरुशतक—रसिक संजीवनी व्याख्या १॥)
अमरुशतक—भा. टी. १=)
अमरमंडन—कृष्णसूरि ३)
अलंकारकौमुदी—एस. एन. शास्त्री ३)
अलंकारकौस्तुभ—कविकर्णपूर दो भाग १०)
अलंकार प्रदीप—विश्वेश्वर ॥)
अलंकार मंजूषा—भट्टदेवशंकर ४)
अलंकारशेखर—केशव १), ॥)
अलंकार मुक्तावली—विश्वेश्वर ॥)
अलंकारमणिहार— २, ३, ४ भाग ८)
अलंकारमहोदधि—नरेंद्र प्रभसूरि ७॥)
अलंकारसर्वस्व—राजानक रुय्यक २)
अलंकार संग्रह—अमृतानंद ४), १६)
अलंकाररत्नाकर—शोभाकर ३॥)
अलंकृति मणिमाला १॥)
अलंकारसारमंजरी— ॥)
आनंदकंदचंपु—मित्र १॥)
आनंदरंगचंपु—श्रीनिवासकृत डा. राघवण द्वारा संपादित ४)
आनन्द वृन्दावन चंपु—पद्यात्मक १०)
आर्या सप्तशती—गोवर्धनाचार्य-सटीक २)
" —विश्वेश्वरस्वोपज्ञ व्याख्या ४॥)

आर्याशतक---अप्पयदीक्षित १)
उज्ज्वल नीलमणि-रूपगोस्वामी-सटीक ४)
उत्तर रामचरित चंपु-- २)
उत्कीर्णलेखांजलि---शिलालेखसंग्रह ॥)
उदयवर्म चरित १=)
उदारराघव--मल्लाचार्यप्रणीत २॥)
उषानिरुद्ध---रामपाणिवाद १)
ऋजुलघ्वी---मालतीमाधवकथा २॥)
ऋतुसंहार---कालिदास भा. टी. ॥=)
ऋतुसंहार-चन्द्रिका व्याख्या ॥)
कथासरित्सागर---सोमदेव कृत्-पद्य १०)
" ---जीवानंद कृत-गद्य १०)
कथा कोष प्रकरण---जिनेश्वर सूरि १०॥)
कथा पंचकम्-लेखिका क्षमाराव १)
कर्णभूषण---गंगानंद १)
कविरहस्य---हलायुध कृत ।), ॥)
कवीन्द्र चंद्रोदय---डा. हरदत्त संपादित २॥)
कादंबरी---संपूर्ण-मूल पूना १०)
" ---भानुचन्द्रसिद्धचंद्र-संस्कृत-
व्याख्या सहित संपूर्ण १६)
" ---संस्कृत, हिन्दी टी. जाबाल्याश्रम ३)
" ---संस्कृत हिन्दी टी.--कथामुख ३॥)
" ---संस्कृत, हिन्दी टीका पूर्वार्द्धम् १२॥)
" ---हरिदास कृत संस्कृतटीका-
बंगला पूर्वार्द्ध १२॥)
" ---संपूर्ण हिन्दी अनुवाद ऋषीश्वर-
नाथ कृत ५)
कादंबरी कथासार---अभिनंद १)
कालिदास---कवि सम्राट् कालिदास पर
ऐसी पुस्तक किसी भाषा में नहीं लिखी
गई। हर एक भारतीय के पढ़ने के
लायक। ले०---श्रीचन्द्रबलीपाण्डेय ७॥)

कालिदास ग्रंथावली---संपूर्ण-भाषाटीका
पं० सीताराम चतुर्वेदी कृत १०)
काव्य कल्पलतावृत्ति---अमरचन्द ५)
काव्य डाकिनी---गंगानंद ।=)॥
काव्यदीपिका---कांतिचन्द्र सं० हि० ३)
" ---जीवानंद १॥)
" ---केवलअष्टमशिखा ॥)
काव्यप्रकाश---महेश्वरी टीका १२)
" ---नागेश्वरीटीका ६)
काव्यप्रकाश---वामनाचार्य टीका १२)
" ---संकेतटीका ४॥=)
" ---प्रदीपोद्योतटीका ९।=)
" ---दीपिकाटीका प्रथम भाग ॥=)
" ---संप्रदाय प्रकाशिनी तथा
साहित्य चूडामणिटीका १-१०
उल्लास १५)
काव्य प्रकाश रहस्य १)
काव्य निर्णय---भाषा ३)
काव्यप्रदीप---गोविंद कृत वैद्यनाथ ३)
काव्यमाला---१४ गुच्छक लघुकाव्य
(३, १० अप्राप्य) २४)
काव्य मीमांसा (राजशेखर)-मूल बड़ोदा २)
काव्यमीमांसा---मधुसूदनी सं. टीका ३)
" ---चंद्रिकाटीका १-५ ॥=)
काव्यमीमांसा---हिन्दी टीका सहित-
संपूर्ण तथा अनेक टिप्पणी, परिशिष्ट
पं० केदारनाथ शर्मा सारस्वत द्वारा
संपादित ९॥)
काव्यमंजूषा नाम रत्नावलीगद्यकाव्य १॥)
काव्यरत्न---अर्हद्दास--- ॥=)
काव्यविलास---चिरंजीव ॥)
काव्यादर्श---(दण्डि) जीवानंद व्या. ३=)
काव्यादर्श (दण्डि)---रंगाचार्य-व्या. ४॥)

काव्यादर्श---भाषाटीका १॥)
काव्यदर्पण---राजचूड़ामणि--प्रथम भाग ३॥)
काव्यानुशासन---वाग्भट्ट १)
" ---श्रीहेमचंद्राचार्य ३॥)
" " विस्तृतभूमिका आदि
२ भाग ६॥)
काव्यालंकारसूत्रवृत्ति---पंचमधिकरण २)
काव्यालंकार सूत्र वामनकृत तथा काव्या-
लंकार सूत्र वृत्ति की हिन्दी व्याख्या
आचार्य विश्वेश्वरकृत १२)
काव्यालंकारसूत्र---वामन स्वीयवृत्ति १)
काव्यालंकारसूत्र---कामधेनु व्याख्या २)
काव्यलंकार सूत्र वृत्ति-कामधेनु टिप्पणी २॥)
काव्यलंकार---भामह विरचित--- २॥)
काव्यालंकार सार संग्रह---उद्भट २), २॥)
किरातार्जुनीय संपूर्ण सं. हि. ३) ग्लेज ४)
किरातार्जुनीय मल्लिनाथ टीका संपूर्ण २॥)
किरातार्जुनीय---सं. हि. टी. १-२ सर्ग १)
किरातार्जुनीय---सं. हि. टी. १-५ सर्ग १)
कुमार संभव---संपूर्ण संजीवनीटीका २॥)
" ---१-७ सर्ग सं. हि. बंगला ३)
" ---पुंसवनी सं हि. १-७ सर्ग ५)
" ---अन्वय व्याख्या व्युत्पत्ति,
भावार्थ हि. भाषा १-४ २)
" ---प्रथम-पंचमसर्ग--सं. हि. १॥)
" ---केवल पंचमसर्ग १)
" --- " डा० कैलाशनाथ १॥)
कुमारसम्भवचम्पु---सारभोजिमहाराज १)
कुवलयानंद---अप्पय दीक्षित ३)
कुट्टनीमत काव्य---दामोदरगुप्त ३)

काकसंदेश--- ॥=)
गउडवहो---प्राकृतकाव्य ५॥)
गाथासप्तशती---सातवाहनकृत ४॥)
गीतगोविन्द---अभिनयसहित २)
गीतगोविन्द---रसिकप्रिया---रसमंजरी ३)
" ---भाषाटीका १)
" ---मूल ।=)
गीत गौरीपति---भानुदत्त १॥)
गंगावतरण---नीलकंठ विरचित ॥)
घटखर्परकाव्य---सुधाख्या व्याख्या आंगल
अनुवाद---सहित डा. चौधरी ४)
चतुरंग चातुरी---श्रीअम्बिकादत्त व्यास ॥)
चम्पुरामायण--भोज--रामचन्द्र बुधेन्द्र व्या. ४)
चम्पुरामायण--जीवानंदकृत व्याख्या १॥=)
चंद्रालोक---पौर्णमासी सं० हि. टीका २)
" ---राकागमसंस्कृतटीका २)
" ---रमासंस्कृतव्याख्या १)
" ---पं० गौरीनाथ पाठक कृत
सं० हि० टीका २)
" ---हिन्दी टीका सहित १)
चंद्रप्रभचरित १-३ सर्ग सटिप्पण ।=), ≡)
चंद्रप्रभ चरित---वीरनंदिकृत संपूर्ण २)
चंद्रपीड़कथा---अनन्ताचार्य विरचित १)
चम्पुभारत---रामचंद्र बुधेन्द्र व्याख्या ७)
चांमर्णीचरित---नीलकण्ठविरचित २)
चोलचंपू---विरूपाक्ष कवि विरचित १=)
चौरपचाशिका---बिल्हणकृत २॥)
छन्दकौमुदी---सिरसे ॥)
छन्दशास्त्र (पिंगल) हलायुधकृत टीका ३)
" ---कलकत्ता--जीवानंद ३॥)
छंदोमंजरी---सं. हि. टीका २)
" ---सटीक कलकत्ता २)
" ---वृत्तरत्नाकर सहित १॥)
छंदोमंदाकिनी--- ≡)

छंदसंग्रह—गौरीनाथ पाठक ≡)
जगद्विजय छंद-- ३।)
जयदामन--(जयदेव छंद, जयकीर्ति छन्दोनुशासन केदार वृत्ति, हेमचंद्र छन्दोनुशासन १०)
जयन्तविजय--अभयदेव १।)
जातकमाला--आर्यशूर विरचित संपूर्ण अमरीका ३६)
" --मूल परीक्षोपयोगी २) हिन्दीटी. ३)
जानाश्रयीछन्द--जानाश्रय छन्दो विरचित १)
जानकीहरण--कुमारदास ६)
जामविजयकाव्य--वाणीनाथ विरचित ५)
तुकारामचरितम्--पंडित सी. क्षमाराव ५)
तिलकमंजरी--धनपाल ३।)
" " --श्री शान्ताचार्य टीका ६)
दशकुमारचरित--दण्डिकृत-पददीपिका, पदचंद्रिका, भूषण, लघुदीपिका टीका ३)
" --जीवानंद सटीक ३=)
" --मनोरमासटीक २।)
" --सं. हि. पूर्वपीठिका १)
" --केवल हिन्दीभाषा १।)
" --हिन्दी में सरलअनुवाद पं. निरंजनदेव संपूर्ण ५।)
" --पूर्वपीठिका १, २, ८ उच्छ्वास सं. हिं. टीका ३)
" --अपहारवर्म चरित पर्यन्त ३)
" --(पूर्वपीठिका, उत्तर १-३) विस्तृत भूमिका, हिन्दी अनुवादसहित सुधीरकुमारगुप्त ५।)
दशकुमार कथासार--अप्पयामात्य २)
दशरूपक--धनंजयचरित--धनिक व्या. १।)
" --धनिककृतव्याख्या, तामिल अनुवाद ४)
दशावतारचरित--क्षेमेन्द्र १।)
दिग्विजय महाकाव्य--मेघविजय ८)

देवानंद महाकाव्य--श्रीमेघविजय ४)
देलारामकथा--राजानक ।।)
देशोपदेश तथा नर्ममाला--क्षेमेंद्र ४।।)
द्वात्रिंशत पुत्तलिका--जीवानंद २)
धर्माभ्युदय महाकाव्य--(वस्तुपालचरित) उदयप्रभसूरि ८।।)
धर्माकूतम्--सुन्दरकाण्ड--त्र्यम्बक-मखिन ४।।)
धर्मोपदेशमाला--विवरणकथा ९।।)
ध्वन्यालोक--बालप्रिया, लोचन दो टीका ८)
" --दीधिति व्याख्या तथा हिन्दी पं. बदरीनाथ ८)
" --श्रीअलखदेव कृत सं. हिं. टीका (१-२ उद्योत) २।।)
" --लोचन तथा कुप्पुस्वामी व्याख्या--प्रथम भाग ९)
" --आचार्य विश्वेश्वर कृत हिन्दी व्याख्या सहित १०)
ध्वन्यालोकसार--पं० पुरुषोत्तम चतुर्वेदी १।)
धूर्ताख्यान--श्री हरिभद्र सूरि ८)
धूर्तविडम्बना -- ३)
नञ्जराजयशोभूषण--नृसिंहकवि ५)
नलचंपु--विषम पद व्याख्या प्रकाश ३)
नलोदय काव्य-- १।।)
नाटक कथासंग्रह -- १)
नारायणशतक--विद्याधर पीताम्बर व्या. २)
निम्बादित्यदशश्लोकी--भाष्य सहित १)
नीलकंठ विजय चंपू -- १)
नरेश्वर परीक्षा--सद्योज्योतिकृत सटीक ६)
नेमि निर्वाण काव्य--वाग्भट्ट १।)
नैषधीयचरित--(श्री हर्ष) नारायणी टीका संपूर्ण १४), १२)
" --हरिदासटीका संपूर्ण २०।।)

नैषधीयचरित--जीवातु मणीप्रभा --सं. हिं. टीका १-९ सर्ग ६)
" --जीवातुमणीप्रभा संपूर्ण २ भाग में १३)
" --ऋषीश्वरनाथ भा. टी. ६)
" --चंडिका प्रसाद भा. टी. ८)
" --मल्लिनाथ कृत सं. टीका १-८ सर्ग ४)
नैषधीयचरित--सं० हिन्दी टीका १-५ सर्ग ३।।) १-३ सर्ग १।।), १।)
पउमसिरि चरिउ--धाहिल विरचित-अपभ्रंशकाव्य ४।।)
पतञ्जलिचरित--रामभद्रकृत ।।।=)
पद्यपुष्पाञ्जलि--सुब्रह्मण्यविरचित २)
पद्यवेणी--वेणीदत्त विरचित सुभाषित १०)
पद्यहर्षचरित--राजगोपाल १।)
पद्मानंद महाकाव्य--अमरचंदकवि १४)
पद्यामृततरंगिणी--हरिभास्कर १०)
प्रतापरुद्रीय (वैद्यनाथ) रत्नापन व्याख्या ४)
पन्थद्वत--भोलानाथ-- १)
परमानंद काव्य--कवि परमानंद विरचित १०)
पवनदूत--धोयीविरचित १।)
पारिजातहरण-चम्पू--शेषकृष्ण ।।)
पिंगलछन्दसूत्र--हलायुधकृत व्याख्या तथा हिन्दी व्याख्या ७)
पिंगलछन्द--वैदिक छंदान्त ।।)
पुष्पवाणीविलास--कालिदास ।)
पुरातन प्रबंध संग्रह--ऐतिहासिक ७)
प्रबंधकोष--राजशेखर सूरि ६)
प्रबंध चिन्तामणि--मेरुतुंगाचार्य मूल ६)
" -- केवल हिन्दी अनुवाद ६)
प्रभावक चरित्र--प्रभाचंद्रसूरिकृत ७)
प्रेमरसायन--सटीक (विश्वनाथ) १)
पृथ्वीराज विजय--जोनराज अपूर्ण २)
बल्लाल चरित--आनंदभट्ट १।)

बालभारत--अगस्त्यपंडित २)
बालराम भारत--श्री बलराम २।।=)
बुद्धचरित--भाषाटीका (अश्वघोष) प्रथम
" --केवल हिन्दी अनुवाद दूसरा १।)
बुद्धभूषण-- १।)
बृहत्कथा मंजरी--क्षेमेंद्र ८)
बृहत्कथा कोष--हरिषेण १६)
भंगाभंगभाषा-- ।)
भरत-चरित--कृष्णकवि १।।)
भट्टिकाव्य--जयमंगला सं. टीका संपूर्ण ५)
" --जयमंगला-भरत मल्लिक दो व्याख्या कलकत्ता ७।)
" --संस्कृत तथा हिन्दी टीका-- ३ भाग में संपूर्ण १२)
--सं० हिं० टीका १-६ सर्ग ३।), ७-११ ३।), १२-२२ सर्ग ५)
भामिनी विलास--सटीक-जीवानंद ।।)।।
" --हिन्दीटीका २)
भानुचंद्रगणिचरित--सिद्धि चंद्रोपाध्याय ८)
भागीरथ चंपू-- १।)
भारतीस्तव--संस्कृत १)
भारती वैभवम्--स्वोपज्ञटिप्पणी समेत पं० माधव प्रसाद प्रणीत १=)
भागवतचंपु--अभिनव कालिदास १।)
भारतीयसिद्धान्तादेश-- ।=)
भूपशतक--राघववाचस्पति १)
भोजप्रबंध-मूल--बल्लाल सेन कृत ।।)
" --जीवानंद सटीक १।।=)
" --हिन्दी टीका ३)
भोज और कालिदास--हिन्दी ३।)
भोटप्रकाश --संस्कृत-तिब्बती भाषा में ५)
भृंग संदेश--वासुदेव विरचित ।।)
मन्दारमंजरी--विश्वेश्वर सटीक ४)
मन्दारमन्दचम्पू--कृष्णकविकृत २)

माधवानल कामकन्दला प्रबंध— १०)
मानसोल्लास-(सोमेश्वर) दूसरा भाग ५)
मयूर संदेश—उदयेन विरचित ३॥)
मातृमुक्तावली— ॥)
मीरालहरी—पण्डिता सौ. क्षमादेव्या राव १)
मुकुन्दानन्दभाण—काशिपति ॥)
मुद्राराक्षस पूर्व संकथानक—अनन्तराम १॥)
मूलरामायण—भाषाटीका -)॥
" —सं० हिं० टीका ।-)
मूकपञ्चशती— १=)
मेघदूत—कवि कालिदास प्रणीत, मल्लिनाथ कृत संस्कृत व्याख्या, विस्तृत हिन्दी अनुवाद, पदच्छेद, दण्डान्वय, व्याकरण-नोट्स—लेखक—प्रो० संसारचन्द्र एम. ए. तथा प्रो० मोहन देव शास्त्री। संपूर्ण पक्की कपड़े की जिल्द — ५)
" —मल्लिनाथ सं० टीका बंबई १)
" —सनातनशर्मा कृत तात्पर्य दीपिका ८)
" —संस्कृत तथा हिन्दी टीका ॥) १)
" —भरत मल्लिक कृत व्याख्या तथा आठ संस्कृत टीकाओं से टिप्पण किया हुआ ८)
" —हरिदास संस्कृत टीका २)
मेघदूत—एक अध्ययन—डा. वासुदेव ४)
मेघ संदेश—सटीक २)
यशस्तिलक-चम्पू-सोमदेव-सटीक पूर्वार्ध ६॥)
यात्रा प्रबंध—समरपुंगव २)
युधिष्ठिर विजय वासुदेव ३)
रघुवंश—मल्लिनाथकृत टीका संपूर्ण ३)
" स्थूलाक्षर बंबई— ५)
" —मल्लिनाथकृत-संजीवनी-वल्लभ हेमाद्रि दिनकरमिश्र चरित्र-वर्धन समतिविजयादिटीका, सार, परिशिष्ट सहित ४॥)
रघुवंश—मल्लिनाथी, छात्रोपयोगी सं. टीका, अन्वय पद समास हिन्दी अनुवाद तथा कथासार सहित १-५ सर्ग ३)
सब सर्ग पृथक में मिलते हैं हर एक ॥=)
रघुवंश—सं० हिन्दी टीका ५-१४ सर्ग २॥)
" मल्लिनाथी तथा हिन्दी अनुवाद सहित संपूर्ण ५) रफ ४)
रंभाशुकसंवाद— भा. टी. ।)
रत्नसमुच्चय— ।=)
रसचंद्रिका—विश्वेश्वर १)
" —सुरभिव्याख्या ३)
" —व्यङ्ग्यार्थकौमुदी २)
रसिकाष्टक काव्य— =), -)
रसिकजीवन—गदाधर भट्ट ७॥), ३)
रसविलास-भूदेवशुक्ल-प्रेमलता संपादित ५)
रघुनाथ अभ्युदय काव्य १≡)
रघुनाथचरितकाव्य २)
रसतरंगणी—भाषा २॥)
रसगंगाधर-रहस्य—मदनमोहन झा ॥)
रसप्रदीप—प्रभाकर ॥-)
रसरत्नप्रदीपिका—अल्लराज ३)
रससदन भाण—युवकराज १)
राघवपांडवीय—प्रेमचन्द्र तर्कवागीश टी. ५)
रामचरित-अभिनंदविरचित ७॥)
रामचंद्रयशःप्रबंध ॥)
रामदास चरितम्—पं० क्षमाराव ५)
राघवनैषधीय—हरदत्तसूरिसटीक १)
राघव पाण्डवीय-सारचंद्रिका टीका ३)
रावणार्जुनीय काव्य—भट्टभीम २)
रामविवाह चित्रकाव्य—लक्ष्मण शास्त्री १)
रामविजय महाकाव्य—रूपनाथ १)
रामवनगमन—सं० तथा हिन्दी १) १॥)
रामवन गमन भा. टी कैलाशनाथ २)
राक्षस काव्य—सव्याख्या ≡)
रामायणमंजरी—क्षेमेंद्र ८)
रामकथा—वासुदेव ॥)
रामोदन्तम् ।-)
रोमावलिशतक—रामचंद्रभट्ट १)
रामानुज चंपु—सटीक ३)
रिष्ट समुच्चय—दुर्ग देव विरचित १०)
रुक्मिणी कल्याणमहाकाव्य—राज चूड़ामणिदीक्षित विरचित ५)
रूपक परिशुद्धि—ताताचार्य विरचित २)
लक्ष्मीसहस्र (वेंकटाध्व) सुबोधिनी १२)
लक्ष्मीश्वरोपायन— ॥)
लघुकाव्यानि—नीलकंठ १)
ललिता त्रिशतीस्तोत्र-शंकरभाष्य स. २)
लीलावाई कहा-कौतुहल (प्राकृत काव्य) संस्कृत व्याख्या १५)
लोकप्रकाश—क्षेमेंद्र ३)
वज्जालग्गं—संस्कृत छाया सहित ४॥)
वसंततिलक—भाण ॥)
वाङ्मण्डन-गुणदूत—चन्द्रदूतकाव्य—डा० चौधरी संपादित २॥)
वाग्भटालंकार—संस्कृत हिन्दी टीका ३)
" —सटीक ॥)
वातदूतसटीक—श्रीकृष्ण न्यायपंचानन ॥)
वङ्गीय-दूतकाव्येतिहास—डा० जे. बी. चौधरी लिखित ५)
वरदाम्बिका परिणयचंपु—तिरुमलम्बा ४)
वरदराजस्तव—अप्पयदीक्षितसटीक—१=)
वाग्वल्लभ—दुःख भंजनकृत २॥)
वाणीभूषण—दामोदर ॥)
वासवदत्ता—सुबन्धु विरचित सटीक १)
वासवदत्ता—संस्कृत तथा हिन्दी टीका ४)
विष्णुचतुर्विंशत्यवतारस्तोत्र—लक्ष्मण शास्त्री प्रणीत १)
विष्णु चरितामृत—चित्रकाव्य स्वा. लक्ष्मणशास्त्री २)
विदग्धमुखमंडन—धर्मदाससूरि सटीक ॥)
विक्रमार्क चरित्रम्-सटीक १॥≡)
विदुलोपाख्यान-संस्कृत तथा हिन्दी टीका ॥)
विद्वन्मोदतरंगिनी-चिरञ्जीव भट्टाचार्य ।≡)
विद्वच्चरित्रपंचक १)
विद्यासुन्दर—चौरपंचाशिका—भा. टी. ।≡)
विष्णुभक्तिकल्पलता—पुरुषोत्तमविरचित १)
वीरभद्रचम्पु-पद्मनाभमिश्रविरचित २॥)
वेमभूपालचरित-वामनभट्ट बाण विरचित २॥)
वृत्तालंकार— २)
वृत्तरत्नाकर—नारायणी संस्कृत तथा हिन्दी टीका ३)
" —केवल हिन्दी टीका ॥)
" —पंचिका सं० व्याख्या २)
" —संस्कृत हिन्दी टीका बंबई १॥)
वृत्तिवार्तिक—राम पाणिपाद १॥)
वृत्तिदीपिका—श्रीकृष्ण भट्ट विरचित ॥-)
वृत्तिवार्तिक—अप्पय दीक्षित ॥=)
वृत्तरत्नावलि—व्यंकटेशकृत ४)
वेतालपंचविंशतिका—जीवानंद २॥)
" —जम्भल कृत ३॥)
व्यक्तिविवेक—मधुसूदनीवृत्ति सहित ८)
शंकर जीवनाख्यानम् पण्डिता सौ. क्षमा राव २)
शक्तिसाधन—डा. चौधरी १)
शतकत्रयादि सुभाषित संग्रह १२॥)
शतरंजकुतुहल ॥=)
शाहेन्द्रविलास—श्रीधरवेंकटेशकृत ३॥)
शिव परिणय (६ भाग) कृष्णराजानक-राजदान विरचित छाया सहित ५॥)

सर्वप्रकार की पुस्तकें मिलने का एकमात्र पता—मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, नेपाली खपरा, पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस

शिवराज विजय---अम्बिकादत्त व्यास
वैजयंती टीका संपूर्ण ६)
" ---१-८ सर्ग ३॥) १-४
विश्वास २) १-२ विश्वास १॥)
शिशुपालवध---संपूर्ण-मल्लिनाथ टीका ६)
" " " १-९ सर्ग ३)
शिशुपालवध---सं. हिं. टीका १-२ सर्ग २)
शिशुपालवध---वल्लभदेवकृत संस्कृत टीका संपूर्ण ९)
" ---हिन्दी अनुवाद सहित संपूर्ण ८)
शेक्सपियर नाटक कथावली संस्कृत २॥)
श्री कंठचरित---मंख कविकृत ३॥)
श्रीनिवास विलास--चंपु--काव्य १)
श्रुतबोध---सं० हिं० टीका ॥)
" ---सं० हि० बालोपयोगी--पं० गौरीनाथ ।)
" ---वृत्तरत्नाकरसहित सटीक ॥=)
शृंगारादि नवरस---निरूपण ॥=)
शृंगारकल्लोल---रामभट्ट कृत १)
शृंगार प्रकाश---भोज कृत प्रथम भाग २)
शृंगार काव्य---कविकृष्ण कौर २)
शृंगार तिलक---कालिदास -), =), ।=)
शृंगारतिलक भाण---रामभद्र दीक्षित ।)
" ---भूषणभाण ।=)
शृंगार सर्वस्वभाण--- ॥=)
शृंगारमंजरी---अकबरशाहि विरचित डा० राघवनसंपादित २०)
षोडशोलंकार---संग्रह ।)
सत्यानुभव--- ५)
समस्या समज्या---समस्यापूर्ति ग्रन्थ २)
समय मातृका---क्षेमेंद्र १)
समयोतिचपद्यमालिका-सुभाषित संग्रह ॥)
समीक्षा शास्त्र---पं० सीताराम चतुर्वेदी हिन्दी २१)

सम्यालकरण---गोविन्दजीत ३)
सरस्वतीकंठाभरण (भोज) सटीक ७)
सरस्वतीसुषमा---प्रथमवर्ष का प्रथम अंक और चतुर्थवर्ष का प्रथम अंक ५)
सहृदयानंद---कृष्णानंद विरचित ॥=)
संस्कृत रत्नावली---सं० श्री मुकुन्द शास्त्री खिस्ते साहित्याचार्य तथा श्री चन्द्रकान्त शास्त्री, एम. ए. उत्तरप्रदेशीय हाई स्कूल परीक्षा के लिए अनिवार्य संस्कृत १॥)
संस्कृत रत्नावली प्रवेशिका---लेखक-प्रो० आनन्दस्वरूप गुप्त। उक्त संस्कृत रत्नावली की यह कुंजी (नोट्स) टीका आदि है। ३)
संस्कृतगद्यमंजरी--- २।)
संस्कृत साहित्येतिहास हंसराज अग्रवाल कृत संस्कृत में २ भाग [१०)
संदेशरासक---अब्दुल रहमान १०)
साबपंचाशिका---सटीक १=)
सारस्वतालोक---भारवि ॥=)
साहित्यदर्पण---हरिदास टीका १२॥)
" ---रुचिराव्याख्या १२)
" ---काणे कृत अंग्रेजी नोट्स १५)
" ---जीवानंदव्याख्या ६।)
साहित्यदर्पण-प्रश्नोत्तरी---लेखक-- पं० देवदत्त शास्त्री द्वितीय संस्करण १)
साहित्यरत्नाकर---यज्ञनारायण १॥)
साहित्य विमर्श---सोमेश्वर शर्मा २॥)
साहित्यसार---अच्युत राम स्वोपज्ञ व्याख्या ४॥)
साहित्यसार---सर्वेश्वर विरचित २।)
सावित्र्युपाख्यान---प्रियवदारकटीका १।)
सुभाषितरत्नसंदोह---अमितगति १॥)
सुभाषितरत्नाकर--- ३)

सुभाषितरत्न भांडागार---परिवर्धित १२)
सुभाषितरत्नसुधाभांडागार--- १२)
सुरजन चरित---चंद्रशेखर--- ८)
सुरथोत्सव--सोमेश्वर विरचित १।)
सूक्तिमुक्तावली---जल्हण ११)
" ---हरिहर सुभाषित ७॥)
सूक्तिरत्नहार--- २।=)
सूक्ति संग्रह =)
सूर्यशतक---मयूरभट्ट विरचित ।)
सूर्यशतक---मयूर कवि सव्याख्या ॥=)
सेतुबंध---प्रवरसेन ४॥)
स्यानन्दूरपुरवर्णन---प्रबंध २॥)
स्तव माला---(रूपदेव सभाष्य) ३)
सौंदरानंद---काव्य-अश्वघोष विरचित सं० डा० हरप्रसाद ३)
" ---भाषाटीका ३)
सौंदर्यलहरी---लक्ष्मीधर व्याख्या, भावनोपनिषत, भास्करराज भाष्य
" ---मूल ।) देवी पंचस्तवी ३॥)
" ---हिन्दी अनवाद सहित ५), २॥)
स्त्रीप्रशंसा---क्षितिन्द्रचट्टोपाध्याय १)
हंसदूत---वामन भट्ट बाण विरचित २॥)
हरचरित चिन्तामणि--राजानक जयरथ ३)
हर्ष चरित---संकेत टीका ६)
" ---जीवानंद व्याख्या ६।)
" ---भाषानुवाद १-९ ५)
" ---प्रथम उछ्वा सं० हिं० १।)
" ---अंग्रेजी नोट्स सहित ३।)
हर्षचरितसार---अनन्ताचार्य ॥=)
" ---भाषा ।)
हरिचरित---परमेश्वर विरचित ७॥)
हरिद्वादशाक्षरीस्तोत्रम् --लक्ष्मणशास्त्री १)
हरिहर चतुरंगम---गोदावर मिश्र ६॥)

त्रिवेणिका ॥=)
हितोपदेश-मित्रलाभ---परीक्षोपयोगी, पं० विश्वनाथ शास्त्री कृत विमला नामक सरल संस्कृत व्याख्या, हिन्दी अनुवाद संक्षिप्त कथासार श्लोकानुक्रमणिका सहित। द्वितीयावृत्ति। ग्लेज कागज सबसे सस्ता संस्करण १)

नाटकनाट्य ग्रन्थ

अभिज्ञानशाकुन्तल---प्रो० पिशल संस्करण अमरीका ३०)
अभिज्ञानशाकुंतल-सुबोधिनी टीका ३)
" --राघव भट्टटीकासहित ३॥)
" --गुरुप्रसाद कृत सं० हिं० ६)
" --किशोर केलि सं० हिं० ६)
" --श्रीनिवास राघवभट्ट ४॥)
" --भाषाटीका २॥)
अभिनव नाट्यशास्त्र--सीताराम चतुर्वेदी हिन्दी १५)
अद्भुतदर्पण--महादेव १)
अमृतोदय--गोकुलनाथ ॥)
आश्चर्यचूड़ामणि--शक्ति भद्र सटीक १॥)
उन्मत्तराघव--भास्कर कवि ।)
" --विरुपाक्ष विरचित २॥)
उत्तर रामचरित---वीरराघव टीका २॥)
" ---सं० हिं० टीका ४॥), ३)
" ---जीवानंद टीका ४॥)
उरुभंग---भास भाषा टीका ।)
कर्पूर मंजरी---राजशेखर संस्कृत छाया २॥)
" --- " अंग्रेजी भूमिका नोट्स ३॥)

कर्पूर मंजरी—संस्कृत हिन्दी टीका यंत्रस्थ
" —जीवानंद सटीक ॥)॥
कमलिनी काल हंस—नाटक ॥=)
कंसवध—शेषकृष्णकृत ॥)
गान्धर्व विवाह—मैथिलीभाषा १)
चंद्रलेखा सट्टक—रुद्रदास ८)
चैतन्य चंद्रोदय—कविकर्णपूर ३॥)
जीवानंद नाटक—आनंदराव १)
" —आनंदराय मखि संस्कृत व्याख्या ३०)
जीवन मुक्ति कल्याण —नल्लाध्व १॥)
दूतांगदछाया—सुभट कृत हिन्दी टीका १) ॥)
धनञ्जय विजय—नाटक ।=)
धर्मविजयनाटक—भूदेवशुक्ल ॥=)
नलचरितनाटक—नीलकंठ विरचित १)
नलदमयंतीनाटक—कलकत्ता २॥)
नलविलास— रामचंद्र सूरि २)
नागानंद—जीवानंद सटीक १)
" —सं० हिं० टीका ३)
नागानंद—केवलभाषा ॥≡)
नागानंद का सरल अध्ययन सु० क० गुप्त २)
नाट्यशास्त्र—भरतमुनि संपूर्ण १०)
" —१ अध्याय ॥)
" —१-२ अध्याय हि० टीका ॥=)
" —१-२ अध्याय हि० टीका नोट्स भूमिका २॥)
" —अभिनव गुप्त टी. २रा भाग ५)
" — " ३रा भाग १५)
पार्वतीपरिणय—बाण ॥)
प्रबोधचंद्रोदय—सटीक-बंबई २)
" —नाटकाभरण व्याख्या २॥)
प्रतिमा—भास सं० हिं० व्याख्या २)
प्रतिज्ञा यौगंधरायन—हिन्दीअनुवाद १॥)
प्रसन्नराघव—जयदेव १॥)
" —हिन्दी संस्कृत टीका ३)
प्रद्युम्नरत्नाकर—कालीपद तर्काचार्य २)
प्रियदर्शिका—सटीक ॥≡), १≡)

बालमार्तंडविजय—देवराज कवि १॥)
बालरामभारत ३)
बंगीयप्रताप—हरिदास २)
भारत विजय—म० म० पं० मथुराप्रसाद कृत हिन्दी टीका सहित सचित्र श्रेष्ठराष्ट्रीय नाटक २॥)
भर्तृहरिनिर्वेद—हिं० टीका १)
भासनाटकचक्र—भास के १३ नाटक मूल १५)
भास के तीन नाटक—भाषा ॥=)
मनोरंजननाटक—अनन्तदेव ॥)
महानाटक—जीवानंद सटीक ३॥)
महावीर चरित (भवभूति) वीरराघव २॥)
" —जीवानंदटीका २॥)
माधवानलकामकंदला १०)
मालती माधव—(भवभूति) त्रिपुरारि, नान्यदेव जगद् व्याख्या ३॥)
" —हरिदास सटीक ५)
" —संस्कृत तथा हिन्दी टीका ५)
मालविकाग्निमित्र—कालिदास कुमार गिरि व्याख्या १॥)
" —संस्कृत हिं० टीका ३)
" —अप्पा शास्त्रि सं० व्याख्या ३)
मुद्राराक्षस—(विशाखदत्त) जीवानंद सं० व्या० २॥)
" —सं० तथा हिन्दी टीका ३॥) २॥), २)
मृगांकलेखा—नाटिका—श्री विश्वनाथ ॥)
मृच्छकटिक—शूद्रक—पृथ्वीधरव्याख्या ३॥)
" —जीवानंद सं० व्या. ४)
" सं० हिन्दी टीका ६) रफ ५)
रत्नावलि —हर्षदेव—प्रभाव्याख्या २)
रत्नावलि—सं० हिं० टीका ३)
रत्नावलि—भाषाटीका बंबई १॥)

रत्नावली—केवल भाषा ॥=)
" —जीवानंद सं० व्या० ॥=)
रुक्मिणीहरण—हरिदाससिद्धान्तवागीश ३)
रुक्मिणीपरिणय—रामवर्मा ॥)
राजविजयनाटक २)
रत्नेश्वरप्रसाद नाटक—गुरुरामकवि १)
रतिमन्मथ—नाटक—पं० जगन्नाथ २)
विक्रमोर्वशी—कालीदास—रंगनाथ व्या० १॥)
" —जीवानंदकृत सं० व्या० १)
" —प्रो० सुरेंद्रनाथ व्याख्या ३)
" —सं० हिं० टीका ३)
विदग्धमाधव—रूपगोस्वामि—सटीक २)
विद्यापरिणय—आनंदराम ॥)
विद्धशालभंजिका—सं० डा० चौधरी ८)
वीणावासवदत्ता—नाटक ॥≡)
विश्वमोहननाटक ताडपतरीकर ३॥)
विराजसरोजिनी १)
वेणीसंहार—भट्टनारायण सटीक १॥)
" —सं० हिं० टीका ३), ४)
" —जीवानंदटीका २)
वृषभानुजा—मथुरादास ॥)
सरस्वतीनाटिका—पं० सदाशिव दीक्षित ॥)
साम्बवतनाटक—पं० अम्बिकादत्त व्यास २॥)
सुभद्रापरिणय—छायानाटक ।=)
सुभद्राहरण—माधवभट्ट ॥)
सौगंधिकाहरण—विश्वनाथ ॥)
संकल्पसूर्योदय—सटीक ४)
" —वेंकटनाथ-प्रभा विलास प्रभावलि २ टीका ४५)
स्वप्नवासवदत्ता—भास सं० टीका १॥)
" —सं० हिं० टीका २॥), २॥)
हनुमन्नाटक—हिन्दीटीका ३॥)
" —सं० टीका २॥)
हास्यार्णवप्रहसन—जगदीश्वर भट्ट ॥)

ज्योतिष-ग्रन्थ

अध्यात्म ज्योतिष—करवे, भाषा १०)
अद्भुत सागर श्रीवल्लालसेन, मूल १५)
अवकहडाचक्र—भाषाटीका बड़ा बंबई ॥=)
" " " " छोटा ।=)
" " व्यवहारविवेक—सीताराम ।≡)
अर्घ प्रकाश ज्योतिष—भाषाटीका ॥=)
अर्घमार्तण्ड (तेजी-मन्दी का अनुपम ग्रन्थ) राजज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभ जी के आयु पर्यन्त अनुभव दिये हैं। अत्यन्त उपयोगी। १०)
अयनांशनिर्णय—केतकर
अहिबल चक्र—भाषाटीका ।=)
आर्यभट्टीय—प्रो० करण २०)
आर्यभट्टीय—नीलकंठ कृत भाष्य सहित ४)
आर्यमहीप—भाषाटीका २॥)
आशुबोध ज्योतिष—संस्कृत ।=)
आर्यासप्तति—भट्टोत्पलकृत सटीक ॥)
एक दिन में ज्योतिषी १)
उपपतीन्दुशेखर—संस्कृत १०)
करण कुतूहल—भास्कराचार्य संस्कृतटीका १)
करणकौस्तुभ—कृष्णदैवज्ञकृत ॥=)
करणपद्धति—मूल यज्वविरचित ।=)
करणप्रकाश—ब्रह्मदेव संस्कृत १॥)
कर्मविपाक—नक्षत्रचरणगत-भाषाटीका ४॥) ३)
कुण्डलीदर्पण—भाषा १)
केतकी ग्रहगणित सपरिमल भाष्य सहित १५)
केरलप्रश्न संग्रह—भाषा टीका ॥)
केरलीयजातक—भाषाछंदबद्ध ॥)
केरलीयप्रश्नरत्न भा. टी. २)
केवलज्ञानप्रश्न चूडामणि—भाषानुवाद, विस्तृत विवेचन सहित ४)
केशवी जातक—सं० हिं० टीका पं० सीताराम २॥)
केशवीजातक—सान्वयसोदाहरणभाषा टीका बंबई ३॥)

खण्डखाद्यक--ब्रह्मगुप्त कृत तथा पृथूदक स्वा. कृत विवरण भाष्य सहित दो भाग ४॥)
खेट कौतुक--भाषाटीका--खानखाना ।=), ≡)
गणक तरंगिणी--सुधाकर द्विवेदी १॥)
गणित कौमुदी--नारायण पंडित दो भाग ३।-)
गणित कौमुदी--भाषा प्रथम भाग १)
गणित का इतिहास--भाषा, सुधाकर २॥)
गणित मुक्तावलि--संपूर्ण १॥)
गणित चंद्रिका प्रथमा के लिए ॥=)
गणिततिलक (श्रीपति) सटीक-- ४)
गणितप्रभा--प्रथमोपयोगी ॥≡)
गर्गमनोरमा--भाषाटीका ≡), ।=)
गर्गजातक--भाषाटीका सहित ।-)
गोलद्वयप्रश्नविमर्श--केतकर मराठी १०)
गोल परिभाषा--पं० सीताराम ।), ≡)
गोलाध्याय--मरीचि संस्कृत २ भाग ८॥)
गोलीय रेखागणित--सटीक छपता है
ग्रहगणिताध्याय--वासनाभाष्य शिरोमणि प्रकाश टीकोपेत (भास्कराचार्य) दो भाग पूना ६॥) =)॥
ग्रहगोचर--भाषाटीका १)
ग्रहणफल दर्पण--भाषाटीका ॥=)
गृहरत्नभूषण--वास्तु प्रबंध
ग्रहलाघवकरण--मल्लारि--विश्वनाथ संस्कृत व्याख्या ७)
ग्रहलाघव--हिन्दीटीका सहित ३), ३॥)
ग्रहलाघव सारणि--बहुत सरल १॥)
चंद्रवाक्यानि वररुची कृत ३)
चन्द्रसारणी--हिन्दी २)
चक्रावलीसंग्रह--संस्कृतटीका ४॥)
चमत्कार चिन्तामणि भा. टी. ।-), ॥), ॥-)
चलन-कलन--१-६ अध्याय सुधाकर २॥)
चलन-कलन प्रश्नोत्तर विवरण ॥)
चलराशिकलन--सुधाकर द्विवेदी विरचित दो भाग १।-)
चापीयत्रिकोण गणित--सटीक १॥)
जन्मपत्र व्यवस्था--भाषा टीका ॥)

जन्मपत्रिका विधान--संस्कृत टीका १॥)
जन्मपत्र निर्माण करने के कुण्डली फार्म ४) रु० सैंकडा
जन्मांग--नक्षत्रदीपिका १ म. भा. १॥)
जन्मपत्र दीपक--सोदाहरण भाषा टीका १।)
जातकालंकार--सं. हिन्दी टीका ॥=) १)
जातकतत्व--भाषा टीका रतलाम ६॥)
जातक पारिजात--सं. हिन्दी टीका सहित रफ १०) ग्लेज १२)
जातकशिरोमणि--भाषाटीका ३॥)
जातकसंग्रह--मूल १॥) भाषाटीका ५)
जातक सारदीप--नृसिंह विरचित १४)
जातकाभरण--भाषाटीका, काशी ५), ७)
जैमिनी पद्यामृत--मूलकन्दली वृत्ति कारिका सहित १॥)
जैमिनीसूत्र--सं. हिन्दी टीका सोदाहरण, सीताराम १॥)
जैमिनीसूत्र--विमला सं. हिं. टीका २)
ज्योतिर्गणितम्--श्रीकेतकर ३०)
ज्योतिषसर्वसंग्रह--भाषाटीका २)
ज्योतिष चन्द्रार्क--संस्कृत पूर्वखंड ३)
ज्योतिष चमत्कार--भाषा बद्रीप्रसाद ३॥=)
ज्योतिष श्यामसंग्रह--भाषाटीका ७)
ज्योतिष तत्वविवेक--भाषाटीका २॥)
ज्योतिषतत्व सुधार्णव--भाषाटीका ७)
ज्योतिष कल्पद्रुम--भाषा म. शम्भुसिंह २॥=)
ज्योतिषसार--भाषाटीका बंबई ३॥)
ज्योतिर्निबंध--शिवराज कृत मूल ५॥≡)
ज्योतिषवेदांग--सुधाकर भाष्य १॥)
ज्योतिर्विवेकरत्नाकर--लक्ष्मीप्रसाद ६)
तत्वप्रदीप जातक भाषाटीका ।)
ताजिक नीलकण्ठी--संस्कृत टीका २॥), २)
ताजिक नीलकण्ठी--सं. हिन्दी टीका सोदाहरण, सीताराम ३॥)
ताजिक नीलकण्ठी--संस्कृत तथा भाषा टीका जलदर्जन ४॥)
ताजिक नीलकण्ठी--भाषाटीका बंबई ४)

ताजिकभूषण--भाषाटीका १)
ताजिकसंग्रह--भाषाटीका ॥)
तिथिचिन्तामणि--(गणेश) भाषाटीका ॥)
तिलविचार--भाषा, रतलाम १)
तेजीमंदीविचार रतलाम भाषा १॥)
दीपिका वा शुद्धि दीपिका--भाषाटीका ३॥)
दैवज्ञवल्लभ--भाषाटीका ॥=)
दीर्घवृत्तलक्षण--सुधाकर द्विवेदी १॥)
देवकेरल--मूल चन्द्रकलानाडी प्राचीन ११)
दशाफल दर्पण--रतलाम संस्कृत ४)
दैवज्ञ कामधेनु--संस्कृत संघराज ४॥)
द्वात्रिंशयोगावली--संस्कृत =)
द्विरागमनव्यवस्था ।=)
दशवर्षीय पंचांग--२००५ से २०१४ ५॥)
दशवर्षीय पंचांग--२०११ से २०२० ६)
धराचक्र--भाषाटीका ≡), ।-)
धराभ्रम--सटीक सुधाकर द्विवेदी ॥)
नरपतिजय चर्या--सटीक संपूर्ण ४।)
नक्षत्र विज्ञान--केतकर मराठी ४)
नन्दिदत्तपंचविंशतिका भा. टी. -), =)
नारद संहिता--मूल १)
नारदसंहिता--भा. टी. सहित ३॥)
नष्टजन्मांगदीपिका और पंचांगदीपिका ।≡)
निधि-प्रदीप--संस्कृत ।=)
नेपच्यून--भाषा रतलाम ॥)
परमसिद्धान्त ज्योतिष--प्रेमवल्लभ मूल ७)
परीक्षा चक्रावली--भाषाटीका ।≡)
पल्लीपतन--भाषाटीका ≡)
पत्रीमार्गप्रदीपिका और वर्षदीपक भाषाटीका २॥)
प्रश्नशिरोमणि--भाषाटीका ३॥)
पद्मकोष--भाषाटीका ।=)
प्रतिभाबोधक--पं. गंगाधर सटीक ॥)
प्रश्नज्ञान प्रदीप भा. टी. १॥)
प्राथमिक अंकगणित १।=)

प्रश्नांक चूड़ामणि--ध्वजादि प्रश्न =)
प्रस्तारचक्र-भाषाटीका =)
पंचस्वरा--सुबोधिनीटीका १॥)
पंचपक्षी--स., भाषाटीका सहित ॥=)
पंचांगविज्ञान--भाषाटीका सहित ।=)
परवलय क्षेत्र--मुरलीधर ठक्कुर ॥)
प्रश्नवैष्णव--मूल ॥) भाषाटीका १॥)
प्रश्नपयोनिधि भाषाटीका ≡)
पंचांगपद्धति ।=)
पंचांगमंजूषा--भाषाटीका ॥)
प्रश्नभूषण--भाषाटीका ॥), ॥=)
पंचांगदर्पण--बंगला ≡)
परीक्षाविचार--रतलाम =)
फलितसंग्रह--भाषाटीका रामयत्न ॥)
फलितप्रकाश--पं. मातृकाप्रसाद भा. टी. २)
फलदीपिका--संस्कृत ५)
बटुकपंचांग--रा. ज्यो० मुकुन्दवल्लभजी कृत छोटा पंचांग ।=)
बालबोध ज्योतिष--भाषाटीका १॥)
बृहज्जातक--दशाध्यायी नौकाटीका २॥)
बृहज्जातक--सं. हिन्दी टीका सोदाहरण, ३॥) बंबई ४)
बृहत्पाराशर होरा--पूर्वभाग मूल, उत्तरभाग भाषाटीका सहित, बंबई १६)
बृहत्पाराशर होरा--पं० सीतारामकृत भाषाटीका, संपूर्ण रफ १२) ग्लेज १५)
बृहद्वकहडाचक्र छोटा ।-)
बृहद्वकहडाचक्र--भाषाटीका बंबई ॥=)
बृहद्वनजातक--भा. टी. ३)
बृहत्सिद्धखेटी १॥)
बृहत् ज्योतिषसार--भाषाटीका ४), २॥)
बीजगणित--भाषाटीका, लखनऊ २॥)
बीजगणित--संस्कृत-हिन्दीटीका ८)
बीजगणित--सटीक, पूना ३)
बीजगणित--राधावल्लभ टीका ५)
बृहद्होडाचक्रविवरण--भाषा टीका ॥)
बीजवासना--गंगाधर ॥)

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का एकमात्र पता--मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, नैपाली खपरा, पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस

बृहद् वास्तुमाला—भाषाटीका २।)
बृहत्संहिता (वाराही संहिता) मूल २।।)
बृहत्संहिता—भा. टी. वाराहीसंहिता ९)
भद्रबाहुसंहिता—जैनग्रंथ मूल ५।।।)
भारतीय ज्योतिष—भाषा, नेमचन्द्रजैन ६)
भृगुसंहिता—योगावलीखंड, संस्कृत ५।)
भार्गवनाडिका—मूल प्राचीन संस्कृत ग्रंथ पहली बार छपा है ६)
भाग्यप्रबोध—दयानंद ।।)
भाग्यम रेखानिरूपण—सुधाकर ।।)
भावप्रकाश ज्योतिष भाषाटीका सहित १।)
भावफलाध्याय—भाषाटीका ।)
भाव कुतूहल—भाषाटीका ३)
भाग्यरहस्य—भाषा १=)
भविष्यफल—भास्कर भा. टी. ३।।)
भविष्यफल संवत् २०११ बंबई का १।।)
भूमण्डलीय सूर्य ग्रहगणित—केतकर ३)
भुवनदीपका—भाषाटीका १)
भृगुसंहितापद्धति—सरलभाषा में। श्री भगवानदास ज्योतिषी ने हर कुण्डली का फलादेश भृगुसंहितावत प्रत्यक्ष कर दिखाया है। नवग्रहजन्मांग कुण्डली १२९६ संख्या १०)
भृगुसंहिता मेरठवाली ५०)
महाभास्करीय—संस्कृत १।।=)
श्रीमार्तण्ड पंचाङ्ग—राजज्योतिषी पं० मकुन्दवल्लभजी कृत । हर वर्ष हजारों की गिनती में हाथोंहाथ बिकता है । १)
मनुष्यजातक—संस्कृत टीका सहित २)
मयूरचित्रक—मूल (वराहमिहराचार्य) ।=)
मुहूर्तप्रकाश—भाषाटीका पं. चतुर्थीलाल ४।।)
मुहूर्तदीपक—संस्कृत टीका सहित ।=)
मुहूर्त मंजरी—भाषा टीका ।।=)
मुहूर्तकल्पद्रुम—संस्कृत विट्ठल दीक्षित ।।।)
मुहूर्तगणपति भाषाटीका सहित ८)

मुहूर्तचिन्तामणि—पीयूषधारा सं. व्याख्या ५)
मुहूर्त चिन्तामणि—प्रमिताक्षरा सं. टीका ३)
मुहूर्त चिन्तामणि—भा. टी. २।।), ३)
महासिद्धान्त—आर्यभट्ट मूल ४।।)
मुहूर्तमार्तण्ड—सं. हिन्दी टीका २।।), ३)
मानसागरी—भाषाटीका सहित ७), ६)
मानसप्रश्नदीपिका—भाषा ।=)
महावीर प्रश्नावली—भाषा -)।।
योगिनी जातक—भाषाटीका ।-)
यवनजातक—मूल ।)
यंत्रराज-यंत्रशिरोमणि—महेन्द्रकृत २)
रमलसार प्रश्नावली =)
रमलगुलजार हिन्दी ४।)
रमलशास्त्र—भाषा, बेचानपांडे २।।)
रमल-रहस्य—संस्कृत ९)
रमलनवरत्न—भाषाटीका २)
रमलमार्तण्ड—सरल हिन्दी भाषा ।।।=)
रत्नद्योत—भाषाटीका ।।=) ।।।)
रत्नपरीक्षा—भाषा ≡)
रणदीपिका—मूल ।=)
रावसिद्धान्तमंजरी—संस्कृत ।।।)
रत्नदीपरत्नशास्त्र—संस्कृत २।)
रत्नदीपका—लक्ष्मी नारायण १)
रत्नगर्भचक्र ≡)
रेखागणित—११-१२ अध्याय १।।)
रेखागणित—५-६ ठा अध्याय ।=)
राशिमाला—भाषा =)
रेखागणित—संपूर्ण दो भाग २१)
लघुभास्करीय—संस्कृत १।।।=)
लघुमानस—संस्कृत ।।।=)
लघुमानस—कलकत्ता ५)
लीलावती—सटीक मुरलीधर ठाकुर ३)
लीलावती—सटीक पूना २ भाग ४।।)
लीलावती—भाषाटीका २।।)
लग्नचंद्रिका—भाषाटीका २)
लग्नजातक—भाषाटीका ।-)
लग्नप्रदीप प्रथमभाग ।-)

लग्नरत्नाकर—भाषाटीका ।-)
लग्नवाराही— =)
लघुजातक—सं. हिं. टी. सीताराम १।।)
लघुजातक—भाषाटीका सहित बंबई १)
लग्नसारणी समुच्चय—चिमनलाल २)
लघुपराशरी, मध्यपराशरी—भाषा टीका १)
लघुपाराशरी—पं. रामेश्वरभट्ट भा. टी. ।।-)
लघुसंग्रह—भाषाटीका सहित १।।)
वास्तवचन्द्र श्रृंगोन्नति—संस्कृतटीका १।।)
वर्षपद्धति—मूलसंस्कृत २)
वर्षदीपक पत्रीमार्गप्रदीपिका—पं. श्री निवासकृत सरल भाषाटीका तथा उदाहरण ३)
विश्वहितम् १)
विद्यामाधवीय (मुहूर्तदीपिका) ३ भाग ५।।)
वृद्धसूर्यार्णवकर्मविपाक—मूल संस्कृत १२)
वरवधुनक्षत्र मेलापक—पं. श्रीनिवास ३।)
वनमाला—भाषाटीका जीवनाथ ।)
वास्तुरत्नावली—संस्कृत-हिन्दी टीका २।।)
विवाह वृन्दावन—संस्कृत-हिन्दी टीका २।।)
विवाह वृन्दावन—भाषाटीका बंबई ३।।)
वसन्तराजशकुन—सं. तथा भा. टी. ९)
वशिष्ठ संहिता—वृद्धवासिष्ठकृतमूल ३।।)
वास्तुमुक्तावली १)
वैजयन्ती पंचांग गणित—केतकर
वृन्दावली—भाषाटीका ।।)
विश्वकर्मा प्रकाश (शिल्पशास्त्र) भाषा टीका खुलापत्रा ३।।)
वास्तुराजवल्लभ—भाषाटीका २)
वास्तुसारणी—भाषाटीका ३)
वास्तुप्रबन्ध—भाषाटीकासहित ।।=)
वास्तुमाणिक्यरत्नाकर—भाषाटीका २।)
षट्पंचाशिका—भाषाटीका ।=), ।।)
शास्त्र शुद्ध पंचांग अयनांश निर्णय २)
शीघ्रबोध—भाषाटीका ।।।)
शिशुबोध—भाषाटीका ।।=)
शिवजातक—भाषाटीका =)

शकुनविचार— ≡)
शनिविचार—रतलाम ।।।)
शम्भुहोराप्रकाश—भाषाटीका ४।।)
समरसार—संस्कृत टीका, भाषाटीका १।।)
सर्वसंग्रह—भाषाटीका सहित ४।।)
सिद्धान्तदैवज्ञविनोद—सं. तथा भा. टी. ५।)
सूर्यसिद्धान्त—संस्कृतहिन्दी दो टीका ५।)
सूर्यसिद्धान्त—तत्वामृतभाष्य ४)
संकेतनिधि—भाषाटीका ३।।)
संवत्सरनिर्णय—अर्घकाण्ड सहित ।।।=)
स्कान्दशरीर—सामुद्रिक, संस्कृत २।।=)
संग्राम विजय—संस्कृत २।=)
सूर्यसारणी— २)
सर्वतोभद्र—भाषाटीका १)
सर्वार्थचिन्तामणि—मूलमात्र खुला १।।।)
संतति समयविचार—रतलाम १)
स्त्रीजातक—वृद्धयवनोक्त भाषाटीका ।।।=)
स्त्रीजातक—भाषाटीका पं. सीताराम १।)
स्त्रीजातक भा. टी. बड़ा ३।।)
स्वप्न प्रकाशिका—भाषाटीका ।-)
स्वप्नाध्याय—भाषाटीका ≡)
सिद्धांतयोगाकर—भाषाटीका ।≡)
सोरार्य ब्राह्मपक्षीय तिथिगणितम् ४)
सामुद्रिक—भाषाटीका ।।)
सामुद्रिक शास्त्र—राधाकृष्णकृत भाषा टीका, बंबई ३।।)
सामुद्रिक कुञ्चिका— ।।=)
सामुद्रिक दर्पण १)
सामुद्रिकरहस्य—भाषाटीका ३)
सामुद्रिकदीपिका—दो भाग, सचित्र ११)
सिद्धान्तशिरोमणि—वासनाभाष्यसंपूर्ण ६)
सिद्धान्तशिरोमणि—नवीन वैज्ञानिक उपपत्ति टीका सहित पं० मुरलीधर, स्पष्टाधिकारान्त ५)
सिद्धान्तशिरोमणि—गणिताध्याय, भाषा टीका लखनऊ २।।)
सिद्धान्तशिरोमणि—गोलाध्याय, भा. टी. २)

सिद्धांत तत्वविवेक ११।) ७।)
सिद्धान्तशेखर—श्रीपति, सटीक दो भाग २२।।)
सारावली—मूल २।।) भाषाटीका ८)
सरल त्रिकोणमिति—बापूदेव ४।।)
सरलरेखागणित—१-२ अध्याय १)
सौरपरिवार-भाषा १२)
हर्षल—भाषा रतलाम ।।)
हनुमानज्योतिष— ।।)
हायनरत्नमूल—खुलापत्रा ३।।)
हायनबोध—भाषाटीका ।।=)
हायनफलरत्न—भाषाटीका ।।।)
होराशास्त्र—वाराहमिहिर, (१-१०) प्रथम भाग २५)
हरिहरचतुरंग—मूल संस्कृत ६।।)
हस्तपरीक्षा—भाषा, रतलाम (हिन्दी पामिस्ट्री) ६।।)

कोष

अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोष भार्गव बड़ा ९)
" " छोटा गुटका ४)
अनेकार्थ तिलक—महीपकृत ६)
अनेकार्थ ध्वनिमंजरी—द्विरूप-एकाक्षर =)
अनेकार्थ संग्रह—श्रीहेमचन्द्र ३)
अभिधान राजेन्द्र कोष-संपूर्ण ७ जिल्द अर्धमागधी २००)
अमरकोष—मूल-संपूर्ण १), १।।)
" —गुरुप्रसाद भाषाटीका २)
" —स्थूलाक्षर मूल बंबई १।।)
" —१ म काण्ड भा. टी. ।-)
" —मणिप्रभा—१मकाण्ड ।।।)
" —२य काण्ड २)
" —व्याख्यासुधा (रामाश्रमी) १०)
" संक्षिप्त माहेश्वरी टीका ३)
" —क्षीर स्वामीकृत १०)
" —नाम चंद्रिका आदि ८)
" —हिन्दी टीका—बंबई ५)
आख्यात चंद्रिका—भट्टमल १।।)
आंग्ल भारतीय प्रशासन कोष डा. रघुवीर ८।।।)
आंग्ल भारतीय महाकोष-डा. रघुवीर २५)
कोषावतंस—राघव काव्यमय २)
जीवरसायनकोष—ब्रजकिशोर ६)
तुलसी-शब्दसागर-हरगोविन्दतिवारी १२)
देशीनाम माला—श्रीहेमचन्द्र, पूना ४।।)
" —कलकत्ता ६)
नानार्थ संग्रह—अजयपाल १।।।)
नालंदा हिन्दीकोष—१५०००० शब्द १५)
नालंदा हिन्दी कोष गुटका ३।।।)
नाममाला—(धनंजय) अमरकीर्तिभाष्य ३।।)
पाइअसद्दमहण्णवो—प्राकृत हिन्दी कोष ७५)
प्रामाणिक हिं. कोष—रामचन्द्रवर्मा १२।।)
भार्गव हिन्दी कोष—बड़ा १२)
" " —छोटा ६)
बिजनेस डाइरेक्टरी हिन्दी १२।।)
ब्रजभाषासूर कोष—४ भाग १२)
बृहत् हिन्दी कोष—ज्ञानमंडल २०)
भरत कोष—संगीत-नृत्य शब्दों का २५)
भाषाशब्दकोष-रसाल १२)
मेदनी कोष—मेदनी संस्कृत मूल ३)
विशेषामृत—त्र्यम्बकमिश्र १)
विद्यार्थी कोष हिन्दी ३)
विश्व प्रकाश कोष-महेश्वर ३)
शब्दभेद प्रकाश ।)
शब्दरत्न समन्वय—शाहजी-संस्कृत ११)
शारदीयाख्यान नाममाला—हर्षकीर्ति ५)
शाश्वत कोष— २।।
शासनशब्दकोष—राहुलजी १५)
शिवकोष—पं० शिवदत्त मिश्र १२)
श्रीकोष—सं० हिं० —छोटा १।)
संस्कृतशब्दार्थकौस्तुभ—सं० हिं० चतु० द्वारकाप्रसाद १०)
संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर—हिन्दी १५)
स्टुडेण्ट्स प्रैक्टिकल डिक्शनरी संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी २।।)
स्टुडेण्ट्स प्रैक्टिकल डिक्शनरी—अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू ३)
हिन्दी बंगलाकोष— ६।।)
हिन्दी अंग्रेजी भार्गव शब्दकोष—बड़ा ९)
" "—गुटका ४)
हिन्दी राष्ट्रभाषाकोष १४)
हिन्दी संस्कृत शब्द-कोष—छात्रोपयोगी १)
त्रिकांडकोष सटीका ५)

नीतिशास्त्र

अभिलाषार्थ चिन्तामणि सोमेश्वर २)
ईसबनीति—२ भाग संस्कृत १।।=)
उद्योगप्रारब्ध विचार—हिन्दी २।।)
कहावत कल्पद्रुम—हिन्दी १।)
कौटिल्य अर्थशास्त्र—हिन्दीटीका सहित १०)
कौटिल्यार्थशास्त्र-गणपतिशास्त्री सं. टी. १५)
कामंदक नीतिसार—भा. टी. २)
चाणक्यशतक —जीवानंद ।-)
चाणक्यनीति—भाषाटीका ।।।=), ।।=)
चाणक्यसूत्र—सं. हिं. ।=)
दम्पतिवाक्यविलास—दोहा भा. टी. १।।।)
धर्मचौर्य—रसायन-गोपालयोगीन्द्र २)
धौम्य नीति—भा. टी. ।=)
नीतिमंजरी— ४)
नीतिशतक—भर्तृहरि सं. हिं. टीका १)
" —(भा. टी.) हरीदास ४)
नीतिसंग्रह—भाषा दोहा ।=)
नीति वाक्यामृत—सोमदेव सटीक २)
" —भा. टी. १२)
पंचतंत्र —मूल २), ३), १।।।)
" —जीवानंद—सं. टी. ३।।।)
" —जीवाराम " २।)
" सटीक-बंबई ४)
" —भाषाटीका बंबई ६)
पंचतंत्र—मित्रभेद सटीक १)
" " भाषाटीका २।।)
पंचतंत्र—(गुरुप्रसाद) सं० हिं० टीका संपूर्ण ६)
पंचतंत्र—डा० मोतीचंद केवल भाषा ४।।)
पंचतंत्र—अपरीक्षितकारक ।।।)
पुरुष परीक्षा—भा. टी. २।।=)
बुधभूषण—संभुविरचित १।।)
विदुरनीति—सटीक ।), ।।)
" —सं. हिं० टीका २), १)
विदुर प्रजागर भाषा— ।।=)
वैराग्यशतक—हरद्याल पद्यानुवाद १।), १।)
" —भाषाटीका ।।।=)
" —संस्कृति टीका ।।)
" —हरिदास भा. टी. सचित्र ६)
नीति, वैराग्य, श्रृंगार-तीनोंशतक भाषा टीका— १)
रत्नसमुच्चय ।=)
राजनीति रत्नाकर—चंडेश्वर ५)
शतकत्रय—भर्तृहरि सं० टीका २।)
" — "—श्रीकौशांबी सं० ६)
" —हिन्दी अंग्रेजी अनुवाद ७)
शतकत्रयादि सुभाषित संग्रह १२।।)
शुक्रनीति—हिं० टी. ४।।)
श्रृंगार शतक—भर्तृहरि सटीक ।)
" सचित्र हरिदास—हिन्दी टीका ४।।)
सरस्वतीविलास २।।)
हितोपदेश—मूल १) बंबई १।।)
हितोपदेश—जीवानंद—सं. टीका ३।।।)
" —गुरुप्रसाद सं. हिं. ३।।)
" —हिं० टी० काशी १।।)
" —बंबई भाषाटीका ३।)
हितोपदेश-मित्रलाभ—संस्कृत तथा हिन्दी टीका पं० विश्वनाथ। बहुत बढ़िया कथासार। श्लोकसूची १)

चिकित्सा—(आयुर्वेद, एलोपैथी, होमियोपैथी इत्यादि)

अगदतंत्र—रमानाथ द्विवेदी ।।।)
अंग्रेजी हिन्दी मेडिकल डिक्शनरी—भट्टाचार्य १०)
अंड तथा अंत्रवृद्धिचिकित्सा—कृष्णप्रसाद ।=)
अनुभूत चिकित्सा के प्रयोग—जानकी शरण २।।)
अजीर्णतिमिरभास्कर—हिन्दी ।।=)
अजीर्णमंजरी—हिन्दी टीका ।≡)
अञ्जननिदान—मूल ≡) हिन्दी टीका १), ।=)
अञ्जीर—रमेशवेदी
अत्तारी शिक्षा— ।।)
अनुपान कल्पतरु—पं० जगन्नाथ प्रसाद २।।)
अनुपानदर्पण—हिन्दी टीका २)
अनुपानविधि—श्यामसुन्दर ।।)
अनुभूतयोग—दो भाग में २)
अनुभूतयोगचिन्तामणि—दो भाग डा० गणपतिसिंह ८)
अनुभूतयोगप्रकाश—डा० गणपतिसिंह ६।)
अनुभविक औषधे—यादवजी (मराठी) ४)
अपना इलाज आप करो—हिन्दी ।।)
अपूर्व चिकित्सा विधान—महेन्द्रनाथ ६)
अभिधानमंजरी—भिषगार्य २)
अभिनवप्रसूतितंत्र—दामोदर गौड संस्कृत १२)
अभिनवप्राकृतिकचिकित्सा—कुलरंजन मुकर्जी ४)
अभिनवबूटीदर्पण—(सचित्र) श्री रूपलालजी १०)
अभिनव शरीर क्रिया विज्ञान—पं० प्रियव्रत शर्मा ७।।)
अमृतसागर—(नूतन) बंबई ९) मथुरा ७)
अमृतसागर—लखनऊ ७)
अरिष्ठक (रीठा) गुणविधान, हिन्दी ।।)
अर्कगुणविधान—हिन्दी १।।)
अर्कप्रकाश—रावण भा. टी. ३), १।।)
अर्शरोगचिकित्सा—हिन्दी ।।)

अश्व शास्त्रम्—संस्कृत (नकुल) १२)
अश्व वैद्यक (जयदत्त) संस्कृत २।।)
अष्टांगसंग्रह—(सूत्रस्थान) छांगाणीजी की हिन्दीटीका ८)
अष्टांगसंग्रह—इन्दुसहित शरीरस्थान ३)
अष्टांगसंग्रह—इन्दुसहित निदानस्थान ३)
अष्टांगसंग्रह—श्रीअत्रिदेव हिन्दी टीका प्रथम भाग ११)
अष्टांगहृदय—अरुणदत्तकृत सर्वांगसुन्दरी तथा हेमाद्रिकृत आयुर्वेदरसायन दो प्राचीन संस्कृतव्याख्या २५)
अष्टांगहृदय—वाक्यप्रदीपिका व्या. प्रथमभाग ३)
अष्टांगहृदय—सूत्रस्थान ३ संस्कृटीका (सर्वांगसुन्दरी-पदार्थ चंद्रिका—आयुर्वेदरसायन) १०)
अष्टांगहृदय—उत्तरस्थान-केरली संस्कृत-व्याख्या ७)
अष्टांगहृदय-उत्तरतन्त्र—शिवदाससेन सं.व्या. ४)
अष्टांगहृदय-सूत्रस्थान—शिवशर्माकृत हिन्दी टीका ७)
अष्टांगहृदय—श्री अत्रिदेव विद्योतिनी हिन्दी टीका-संपूर्ण १६)
अष्टांगहृदय—दास पंडित संस्कृतव्याख्या सूत्रस्थान ५)
अष्टांगहृदय कोश—माणिक्य भिषगवर १२)
आकृति निदान—डा० लुई कोने २)
आत्मसर्वस्व—भागीरथस्वामी हिन्दी ५।)
आदर्श आहार—डा० एस० सी० दास १)
आदर्शभोजन—श्रीकेदारनाथ १।)
आप के बच्चे की खुराक—डा० सुरेन्द्रनाथ ३।=)
आदिशास्त्र अर्थात् रतिशास्त्र—हिन्दी टीका १।।)
आधुनिक हिन्दी नेत्र-रोगविज्ञान—ले० श्री वामनदिनकर साठये—दूसरा तथा तीसरा भाग (नेत्रप्रकृति विज्ञान तथा नेत्रवक्रीभवन दोष) २८)

आधुनिक चिकित्सा सार (एलोपैथी चिकित्सा-विज्ञान) ३)
आनंद कंद—मूलसंस्कृत १।।)
आम्रगुणविधान—डा० गणपतिसिंह १)
आयुर्वेद का संक्षिप्त इतिहास—श्रीमहेन्द्रनाथ शास्त्री, हिन्दी ३)
आयुर्वेद चिन्तामणि—(अपूर्व निघण्टु) ४)
आयुर्वेदादर्श संग्रह—दामोदर शर्मा गौड़ २)
आयुर्वेदपरिचय—स्वा० शिवानन्दजी ।।।≡)
आयुर्वेदप्रकाश—(१म भाग) प्रो० सोमदेवकृत सं० तथा हिन्दी ५)
आयुर्वेद प्रदीप—राजकुमार द्विवेदी ८)
आयुर्वेद प्रश्नोत्तरी—डी. आई. एम. एस. का आद्य परीक्षांत भाग ३)
आयुर्वेदमीमांसा श्रीजगन्नाथ १)
आयुर्वेद महोदधि—(अन्नपान विधि) सुषेण कृत संस्कृत १।=)
आयुर्वेद विज्ञान— ।।।)
आयुर्वेद विज्ञानसार—हिन्दी टीका सहित १।।)
आयुर्वेद शास्त्र का इतिहास—वैद्य सूरमचन्द ८)
आयुर्वेदसार संग्रह हिन्दी-चिकित्सा, औषधनिर्माण, अनुपान, पथ्यापथ्य ७)
आयुर्वेद सुषेणसंहिता—हिन्दीटीका २)
आयुर्वेदसूत्र—योगानन्द कृत सं. व्या. २।।)
आयुर्वेदसूत्र—पं० रामप्रसादकृत हि. टी. ।।।=)
आयुर्वेदिकइंजेक्शनचिकित्सा—ले० डा० श्यामसुन्दर हिन्दी २।।)
आयुर्वेदीय औषधगुणधर्मशास्त्र—भस्में, ले. श्रीगंगाधर गुणे हिन्दी १।।)
आयुर्वेदीय औषधसंशोधन—डा० वामणकर १)
आयुर्वेदीयक्रियाशरीर—वैद्यरणजीतराय ११)
आयुर्वेदीयपदार्थविज्ञान—वै० रणजीत राय हिन्दी ६)
आयुर्वेदीयपरिभाषा—हिन्दी टीका १)
आयुर्वेदीय यंत्रशस्त्रपरिचय—सुरेन्द्रमोहन १।।)

आयुर्वेदीय व्याधिविज्ञान-पूर्वार्द्ध—वै. यादव जी २।।)
आयुर्वेदीय-विश्वकोष—(केवल दूसरा तथा तीसरा भाग मिलता है) केवल अ से क तक है १४
आरोग्य की कुंजी—महात्मागांधी के प्रयोग ।।)
आरोग्यचिंतामणि—दामोदरकृत मूल ९)
आरोग्यप्रकाश—श्रीरामनारायण १।।।)
आरोग्यमंदिर—हिन्दी १)
आरोग्यलेखांजलि—केदारनाथ १)
आरोग्यविधान—जगन्नाथप्रसाद ६)
आरोग्यशास्त्र—डा० भावे, हिन्दी २।।)
आरोग्यशिक्षा—पं० मुरलीधर, हिन्दी ।।।)
आरोग्यसाधन—श्रीमहात्मागांधी, हिन्दी ।।।-)
आर्गेनन—(भट्टाचार्य) होमियो ३।।)
आर्गेनन—(होमियो) डा० टण्डन २।।)
आर्गेनन—हिन्दी, डा० सुरेश प्रसाद, होमियो ४)
आसन चिकित्सा—डा० हरिकिशनदास गांधी ४)
आसवविज्ञान—ले० हरिशरणानन्द, हिन्दी १।।)
आसवारिष्टसंग्रह—हिन्दी १।।।)
आहार—श्रीरामरक्ष पाठक ५)
आहार—लक्ष्मी नारायण शर्मा १।।)
आहार और आरोग्य—ज्योतिर्मयी-ठाकुर ३)
आहारसूत्रावली—केदारनाथ ।।)
आंख का अचूक इलाज—ले० महेन्द्रनाथ २।)
आंखों की प्राकृतिकचिकित्सा—स्वामिनाथ सिंह, हिन्दी १)
इंजेक्शन—नवीनतम—डा० सुरेशप्रसादकृत चतुर्थसंस्करण १०)
इंजेक्शनचिकित्सा—डा० भवानीप्रसाद ३)
इंजेक्शनचिकित्साज्ञानसंग्रह डा० राधावल्लभ पाठक ५)
इंजेक्शनतत्वप्रदीप—गणपति सिंह ५)

अर्शरोगचिकित्सा—हिन्दी ॥) | तथा नेत्रवक्रीभवन दोष) २८) | मोहन १॥) | इंजेक्शनतत्वप्रदीप—गणपति सिंह ५)

इंजेक्शन विज्ञान—प्यारेलालगुप्त ५)
इन्द्रायणगुणविधान—हिन्दी ॥=)
इलाजुलगुर्बा—यूनानी इलाज ३), ३॥)
उठो! शारीरिक और मानसिक रोग की पहचान कराने वाला ग्रंथ १॥)
उदररोग चिकित्सा—दाऊदयाल १)
ऊर्ध्वाङ्गचिकित्सा—ले० श्रीजगन्नाथ प्रसाद शुक्ल चार भागों में १०॥) (यह पृथक् भी मिलते हैं मुखरोग विज्ञान २॥) कर्णरोगविज्ञान २) नासारोग-विज्ञान २) शिरोरोगविज्ञान ४)
उपचारपद्धति और पथ्य—रवीन्द्र
उपदंशतिमिर—(गर्मी) नाशक ।=)
उपदंशविज्ञान—पं० बालकराम १)
उपवासचिकित्सा—मैकफेडन, हिन्दी २)
उपवास से लाभ—विट्ठलदास हिन्दी १॥)
उपयोगी नुस्खे और हुनर—२००० नुस्खे-डा० गोरख प्रसाद ३॥)
उषः पान—लल्ली प्रसाद पाण्डेय ॥)
ऋद्धिखंड वादिखंड-मूल, नित्यनाथसिंह ४)
एकऔषधिगुणविधान—गणपतिसिंह १॥=)
एनाटमी—(शरीर ज्ञान) राधावल्लभ ५)
एनीमा और कैथेटर—डा० सुरेशप्रसाद ।=)
एलोपैथिक गाईड—ले० डा० रामनाथ वर्मा, ऐसी उपयोगी पुस्तक एलोपैथिक संबंधी आजतक नहीं छपी। यही कारण है कि एक साल में इसके दो संस्करण हो गये। चतुर्थ परिवर्धित संस्करण १०)
एलोपैथिक निघंटु—अर्थात् एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका, ले० डा० रामनाथ वर्मा, प्रथम संस्करण ६ महीने में समाप्त हो गया। परिवर्धित तृतीय संस्करण १०॥)
एलोपैथिकऔषधिसंग्रह—ले० पं० जगन्नाथशास्त्री ६)
एलोपैथिक इंजेक्शन चिकित्सा—डा० बी० श्रीवास्तव ३)
एलोपैथिक पेटेंट मेडीसिन—अयोध्यानाथ पाठक ३॥)
एलोपैथिक प्रैक्टिस—भवानी प्रसाद ७॥)
एलेन्स के नोट्स-होमियो—भट्टाचार्य ४॥)
औपसर्गिकरोग—ले० डा० घाणेकर १८)
औषधिकल्पलता—भाषाटीका ॥)
औषधिक्रिया—भाषाटीका सहित १=)
औषध गुणधर्म विवेचन—कालेडा बोंगला का अजिल्द ३) सजिल्द ४॥)
औषधिगुणधर्म विवेचन—दो भागों में ले० कृष्ण प्रसाद २)
औषधि पीयूष-ले० ज्वाला प्रसाद, दोहे १॥)
औषधि विज्ञान—ले० धर्मदत्त २ भाग १॥)
कब्ज—(कारण और निवारण) महावीर प्रसाद पोद्दार २)
कब्ज या कोष्ठबद्धता—डा० बालेश्वरसिंह १)
कब्ज या मलावरोध—महेन्द्रनाथ ॥)
कफ परीक्षा—(कफ की परीक्षा पद्धतियों का शर्तिया वर्णन) डा० रमेशचन्द्र वर्मा कृत १॥)
कर्णरोगविज्ञान—जगन्नाथ २)
कराबादीन कादरी—यूनानी ५)
कराबादीन शिफाई—यूनानी २)
करिकल्पलता—छन्दोबद्ध, हाथियों की चिकित्सा ३॥)
कल्याणकारक—श्रीउग्रदित्याचार्य कृत १०)
काकचण्डीश्वर कल्पतंत्र—संस्कृत (सं०) १)
कान के रोग और उनकी चिकित्सा ॥)
कामकुंज—सन्तराम हिन्दी २॥)
कामरत्न—नित्यनाथ हिन्दी टीका ५)
कामसूत्र-वात्स्यायन, जयमंगला सं. टी. ६)
कामसूत्र—वात्स्यायन कृत यशोधर कृत जयमंगला संस्कृत व्याख्या तथा पं० माधवाचार्य कृत मूल तथा संस्कृत टीका दोनों का हिन्दी अनुवाद २०)
क्या खूब डिबिया—(जर्राहीयोग) ॥=)
कालरा वा हैजा—डा० टंडन २)
क्लीनिकल मेडिसिन—एम. बी. बी. एस. तथा उसकी समकक्ष श्रेणियों के छात्रों को पूर्वीय और पाश्चात्य निदान और चिकित्सा प्रणाली का सम्यक् ज्ञान कराने वाला, राष्ट्रभाषा में पहला और अद्वितीय ग्रंथ अत्रिदेव गुप्त द्वारा लिखित, दो हजार पृष्ठ के लगभग पहला भाग १२॥), दूसरा भाग छप रहा है।
क्वाथमणिमाला—हिन्दी टीका १॥)
काश्यप संहिता—(वृहज्जीवकीय तंत्र) भाषा टीका १६)
किशोर रक्षा और ब्रह्मचर्य—ले० रवीनाथशास्त्री ॥)
किसान सम्पत्ति—गाय बैलों की चिकित्सा १)
कुचुमारतंत्र—हिन्दीटीका ॥)
कुल्लियात—हकीम दलजीतसिंह १॥)
कूटमुद्गर—हिन्दी टीका ।)
कूपीपक्वरसनिर्माण—श्रीहरिशरणानन्द ५)
केण्ट मेटेरियामेडिका—भट्टाचार्य हिन्दी (होमियो) २४)
केलिकुतूहल—मूल संस्कृत ले० म. म. पं. मथुरा प्रसाद दीक्षित कृत ग्रंथ संस्कृत में २)
केस टेकिंग चार्ट—डा० टंडन ।)
कोकसार—वैद्यक ले० नारायण प्रसाद ५॥)
कोकसार—आनंदकृत १)
कौमारभृत्य—अथवा बालचिकित्सा—किशोरीदत्त १॥)
कौमारभृत्य—ले० श्रीरघुवीरप्रसाद ९)
खाद्य और स्वास्थ्य—डा० ओंकारनाथ ॥)
खूबचंद चिकित्सा—हिन्दी अनुभूत १॥)
गंगयतिनिदान—सरल हिन्दी में निदान विषय बड़ी सरलता से समझाया है। हर रोग का निदान दिया है जिसे अनजान भी समझ सकता है ६)
गर्भस्थशिशु की कहानी—ले० गिल्बर्ट २॥)
गर्भवती स्त्री और प्रसव की पूर्व व्यवस्था ॥)
गाँवों में औषधरत्न—८८ सुलभ प्राप्त वनौषधियों का विस्तृत २), ३)
गांवों में औषधरत्न-द्वितीय भाग ३॥), ५)
गुड़पाक विज्ञान— ॥)
गुणविज्ञान—पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल २॥)
गुणों की पिटारी-ले० स्वा० परमानन्द २)
गुप्तयोग रत्नावली—डा० गणपतिवर्मा २॥)
गुलरगुणविकास—(आरोग्यप्रकाश) ले० चंद्रशेखर शास्त्री १॥)
गौरीकांचलि का तन्त्र—हिन्दीटीका ॥=)
गृहचिकित्सा—टंडन (हिं०) (होमियो) १॥)
गृहवास्तुचिकित्सा—किशोरीदत्त (हिं०) १)
गृहविज्ञान—व्यावहारिक प्रयोग ॥)
ग्रन्थि और ग्रन्थि प्रणाली के रोग—ले० श्रीमहेन्द्रनाथ (हिं०) १)
ग्राम्यचिकित्सा—श्रीकेदारनाथ हिन्दी ॥=)
ग्रामीणों का स्वास्थ्य—केदारनाथपाठक १)
घर का वैद्य—अमोलकचन्द्र शुक्ल ६)
घरेलू औषधियां—श्रीकृष्णवर्मा १॥)
घरेलू चिकित्सा— १)
घरेलूडाक्टर—चार डाक्टरों द्वारा ४)
घरेलूवैद्य—महादेव प्रसाद ॥=)
घरेलूशिक्षा—(पाक प्रकाश) ज्योतिर्मयी ठाकुर ४॥)
घरेलू सस्ती दवायें—हिन्दी ३)
घावचिकित्सा—ले० श्यामसुन्दर हो० १)
घृत गुणविधान —हिन्दी ॥)
घृतचिकित्सा—ले० रामदेव त्रिपाठी ॥=)
चक्रदत्त—(चक्रपाणिविरचित) शिवदासकृत संस्कृतटीका सहित ६॥)
चक्रदत्त—पं० जगदीश्वर प्रसाद कृत हिन्दीटीका सहित काशी १०)
चरक मुनिका प्रामाणिक जीवन हिन्दी ॥)
चरकसंहिता—अग्निवेश मूल ६)
चरकसंहिता—भागीरथी ७)

- ...संहिता—आयुर्वेद दीपिका तथा जल्पकल्पतरु संस्कृत टीका सहित ३ भागों में संपूर्ण २०)
- चरकसंहिता—चक्रपाणिकृत आयुर्वेद-दीपिका तथा जेजट कृत निरन्तर पददीपिका दो संस्कृत टीका सहित बहुत बढ़िया निर्णय सागरी टाईप में दो जिल्दों में संपूर्ण १५)
- चरकसंहिता—आयुर्वेदाचार्य श्रीजयदेव विद्यालंकार कृत सुविस्तृत विवेचनात्मक सरल हिन्दी अनुवाद संपूर्ण दो बढ़िया जिल्दों में—इससे बढ़कर सरल हिन्दी अनुवाद आजतक नहीं छपा। पांचवां संस्करण २५)
- चरकसंहिता—मूल एवं हिन्दी, अंग्रेजी और गुजराती में अनुवाद, इतिहास, सामान्य विवरण तथा परिशिष्ट आदि सहित ६ भाग ७५)
- चर्याचन्द्रोदय—हिन्दीटीका ४।)
- चक्षुरक्षक—और ऐनकाभ्यास— ।=)
- चिकित्सा कलिका—तीसटाचार्य २)
- चिकित्सा की कुंजी—होमियोपैथिक एवं बायोकेमिक चिकित्सा २।)
- चिकित्सक के कर्तव्य—तथा अंग्रेजी औषधों का असंमिलन १।)
- चिकित्सकव्यवहारविज्ञान—(हिं०) ले० सूर्यनारायण ॥)
- चिकित्सक हस्तपुस्तिका—या अनुपान —रामबिहारीलाल हिं० १)
- चिकित्सकोपदेशिका—पं० गणेशदत्त १)
- चिकित्सा चन्द्रोदय—ले० हरिदास वैद्य संपूर्ण चिकित्सा सात भाग ४८)
- चिकित्साचक्रवर्ति—(मुजर्बात अकबरी) १॥)
- चिकित्सातत्व प्रदीप—द्वितीय भाग ८)
- चिकित्सा तिलक—(सूत्रस्थान) श्रीनिवासविरचित संस्कृत ९।)
- चिकित्सा दर्पण—स्वा० रामानंद ४)
- चिकित्साधातुसार—हिन्दी ॥=)
- चिकित्सासारसंग्रह—वङ्गसेन मूल ७।)
- चिकित्सा ज्ञानसंग्रह—डा० राधावल्लभ ५)
- चिकित्सांजन—हिन्दी १=)
- चूर्णचिकित्सा—पं० रामदेव त्रिपाठी ॥=)
- छातीपरीक्षा —डा० टण्डन ॥)
- जननी और शिशु— ॥।)
- जननेन्द्रिय के रोग—ले० भट्टाचार्य (हिं.) १॥)
- जन्मनिरोध—सचित्र ६)
- जर्राही प्रकाश—चारों भाग चीर फाड़ ३॥)
- जलचिकित्सा—राखालचन्द्र ५)
- जलचिकित्साविज्ञान—देवराज (हिं०) २॥)
- ज्वरचिकित्सा—श्रीमहेन्द्रनाथ (हिं०) २॥।)
- ज्वरतिमिरनाशक—भाषा टीका १॥।)
- ज्वरमीमांसा—ले० श्रीहरिशरणानंद ३)
- ज्वरविज्ञान—(हिं०) सजिल्द ४॥)
- जीने की कला —श्रीविट्ठलदास १॥)
- जीवनतत्त्व—(हिं०) ले० श्रीमहेन्द्रनाथ १॥)
- जीवतिक्त विमर्श—ले० हरिश्चन्द्र (हिं०) १।)
- जीवाणुविज्ञान—ले० डा० घाणेकर (हि.) १०)
- जुकाम—ले० श्रीमहेन्द्रनाथ (हिं०) १॥।)
- टोटका विज्ञान—केदारनाथ (हिं०) ।=)
- डाक्टरी चिकित्सार्णव बड़ा—(एलोपैथी तथा होमियो) हिं० ४॥)
- डाक्टरी नुस्खे— २॥)
- डाक्टरी ज्ञान का मैटेरियामेडिका— ५)
- डोरों का इलाज—रामेश्वरवर्मा ॥)
- तन्त्रयुक्तिविचार—मूलसंस्कृत ॥।)
- तपेदिक—श्रीमहेन्द्रनाथ ४)
- तपेदिक का प्राकृतिक इलाज—डा० पाण्डेय ४॥)
- तात्कालिक चिकित्सा—शिवदयाल १)
- तिब्ब इहसानी—यूनानी १॥।)
- तीन महामारी—प्लेग, चेचक, हैजा (हिं०) ले० डा० वर्मा होमियो १॥)
- तुलसी—श्रीरमेश बेदी २)
- तुलसी—केदारनाथ पाठक =)
- तुलसी विज्ञान—सरल भाषा ।)
- तैलचिकित्सा—हिं० पं० ज्ञानेन्द्रदत्त ॥=)
- थर्मामीटर—हिन्दी ।)
- दन्तविज्ञान (हिं०) पं० गोपीनाथ ।=)
- दमा, श्वास, कफ, खांसी का इलाज— ।)
- दवा का भूत— ।=)
- दवाओं से बचो—गंगाप्रसाद १)
- दशमूल—सचित्र—रूपलाल ।)
- देहाती प्राकृतिक चिकित्सा अमोलकचन्द ५)
- द्रव्यगुण—चक्रपाणि हिन्दी टीका २)
- द्रव्यगुण-आदर्श-हिन्दी—श्रीमहेन्द्रनाथ २।)
- द्रव्यगुणविज्ञान—ले० आचार्य यादवजी त्रिकमजी—पूर्वार्द्ध (द्रव्यगुण-रस-विपाक-वीर्य-प्रभाव विज्ञानात्मक) हिन्दी में ३॥)
- द्रव्यगुणविज्ञान—श्रीयादवजी उत्तरार्द्ध परिभाषाखंड ३॥)
- द्रव्यगुणविज्ञान—ले० आचार्य श्रीयादवजी उत्तरार्द्ध का औषधद्रव्यविज्ञानीय नामक द्वितीय खण्ड हिन्दी १२)
- द्रव्यगुणशतक—त्रिमल्लभट्टकृत हिन्दी ॥=)
- द्रव्यगुणसंग्रह—शिवदासकृत सटीक १॥=)
- द्रव्य-संग्रह विज्ञान—पं० जगन्नाथ १।)
- दि निऊ मदर टिञ्चर मटेरियामेडिका—॥।)
- दिल्लगनचिकित्सा— ॥)
- दीर्घजीवन—विश्वेश्वरदयालु ।)
- दीर्घायु—आरोग्यसूत्रावली २)
- दीर्घायु और दीर्घ जीवियों के अनुभव—विनयमोहन शर्मा ॥।)
- दुग्धचिकित्सा—महेन्द्रनाथ ४)
- दुग्धचिकित्सा— छोटेलाल गांधी ।-)
- दुग्धचिकित्सा—स्वा० जगदीश्वरानंद ।)
- दुग्धगुणविधान—हिन्दी १)
- दूध ही अमृत है—हनुमानप्रसाद गोयल २॥)
- देहाती इलाज —श्रीरमेशबेदी १)
- देहातियों की तन्दुरुस्ती—केदारनाथ ॥)
- दैनन्दिन रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा—कुलरंजन मुखर्जी ३)
- दैनिक प्रयोगावली—गंगाशरण प्रथमभाग ३॥)
- दोषधातुविज्ञान सचित्र— ॥=)
- धतूरागुण विधान— ॥।)
- धन्वन्तरि परिचय—रघुवीरशरण २॥)
- धन्वन्तरीय निघण्टु—राजनिघण्टु स. १०॥)
- धन्वन्तरि के विशेषांक—
  - १ कल्प एवं पंचकर्म ४)
  - २ गुप्तसिद्ध योगांक तीन भाग १०)
  - ३ नारीरोगांक ६)
  - ४ पुरुष रोगांक ६)
  - ५ बाल रोगांक ६)
  - ६ भैषज्य कल्पनांक दो भाग ८॥)
  - ७ संक्रामकरोगांक ४)
  - ८ सिद्धचिकित्सांक ४)
  - ९ इंजेक्शन विज्ञानांक ४)
- धातुविज्ञान—हरिशंकर १।)
- धूप-हवा-सर्दी का इलाज—हिन्दी १)
- नपुंसकचिकित्सा व यौवन के गुप्त रहस्य— ३)
- नपुंसकचिकित्सा—हिन्दी टीका ॥=)
- नपुंसकामृतार्णव—हिन्दी टीका २॥)
- नमक—विश्वेश्वरदयाल ॥=)
- नमकचिकित्सा— ।)
- नलपाक—पाकदर्पण मूल १॥)
- नवपरिभाषा—उपेन्द्रनाथ दास १॥।)
- नवीन चिकित्सा पद्धति १।)
- नवीन चिकित्साविज्ञान—लुईकूने ५)
- नवीन प्राकृतिकचिकित्सा—डा० हीरालाल २॥=)
- नव्यरोगनिदान—(माधवनिदान परिशिष्ट) ॥।)
- न्यूमोनिया प्रकाश—देवकरण ।=)
- नागरसर्वस्व—(पद्मश्री) हिन्दी टीका ४।)
- नाड़ी तत्व दर्शन—नाड़ी विज्ञान की रहस्यपूर्ण प्रामाणिक पुस्तक—ले० श्री सत्यदेव वशिष्ठ ५)
- नाड़ीदर्पण—भाषा टीका १)
- नाड़ीपरीक्षा—डा० टंडन ॥)

- नाड़ीपरीक्षा—हिन्दी टीका ।≈)
- नाड़ीविज्ञान—(कणादविरचित) हिं० ।≈)
- नाड़ीविज्ञान—(जीवानंद) सटीक १)
- नाड़ीज्ञानतरंगिणी–अनुपानतरंगिणी २), १॥)
- नाड़ीज्ञानदर्पण—हिन्दी टीका ॥)
- नारी आरोग्यदर्शन—इन्दुमती सिनहा ५)
- नारूरोग—हिन्दी भाषा ।)
- नासारोगविज्ञान—जगन्नाथ २)
- निघंटुविज्ञान—मखजन उल मुफरदात २)
- निघंटुशिरोमणि—जगन्नाथ प्रसाद १)
- निंबु और उसके १०० उपयोग ।=)
- निंबुगुणविधान—गणपति सिंह ॥)
- निमोनिया चिकित्सा—टण्डन ॥)
- नीम और उसके १०० उपयोग–हिन्दी ।=)
- नीम के उपयोग १)
- नीम-बकायन रमेशवेदी २॥)
- नीमगुणविधान–अब्दुल्ला ॥≡)
- नूतन अमृतसागर—सरल हिन्दी ७)
- नूतन शिशुपालन—महेन्द्रलाल =)
- नेश लीडर—भट्टाचार्य ५।≈)
- नेत्र चिकित्सा—संस्कृत मुंजे ७)
- नेत्रचिकित्सा–पं० विश्वनाथ द्विवेदी यंत्रस्थ
- नेत्ररोगविज्ञान–डा० यादव जी हंसराज १५)
- नेत्ररोगविज्ञान शास्त्र—डा० साठे कृत २२० चित्रों सहित दूसरा तीसरा २८)
- नैसर्गिक आरोग्य–(Nature Cure) श्रीजगन्नाथ २)
- न्यायवैद्यक—व्यवहारायुर्वेद और विषतंत्र—अत्रिदेवगुप्त ४)
- पंचभूत विज्ञान —उपेन्द्रनाथ दास ३)
- पंचसायक—ज्योतीश्वराचार्य १)
- पंचसायक—हिं० टीका ३॥)
- पथ्यापथ्य—(विश्वनाथ) हिन्दीटीका २)
- पथ्यापथ्यनिर्णय—हिन्दीटीका खूबचंद ॥)
- पथ्यापथ्यनिरूपण—जगन्नाथ ॥=)
- पदार्थविनिश्चय—ले० श्रीअनन्तकुलकर्णी १)
- पदार्थविज्ञान—ले० रामरक्ष पाठक हिं० ३॥)
- पदार्थविज्ञान—बलवंत शर्मा ४)
- पन्द्रहदिन में स्वस्थ बनो— १॥=)
- पर्यायमुक्तावली–श्रीहरिचरणसेन मूल ५॥)
- पर्यायरत्नमाला—श्रीमाधवकर मूल ६)
- परिचर्या और गृह-प्रबंध—रानी टंडन २)
- पलाण्डु चिकित्सा—हिन्दी ॥)
- पशुचिकित्सा—(वृषकल्पद्रुम) छन्दोबद्ध ३।=)
- पशुचिकित्सा— ४), ३)
- पशुचिकित्सा–गंगाधर मिश्र (होमियो) २)
- पशुसंक्रामकरोग चिकित्सा—ले० डा० राजेन्द्रप्रसाद सिंह। आधुनिक ढंग से पशुओं की प्रायः सभी बीमारियों का ठीक इलाज ५॥≈)
- पशुओं का इलाज— ॥)
- पाकविज्ञान भोजन शास्त्र—अन्नपूर्णा ४)
- पाकप्रदीप—और पुष्टिप्रकाश १=)
- पाकविलास—हिन्दी १)
- पाकावली ग्रंथ—मूल ॥=)
- पाचन प्रणाली के रोग—महेन्द्रनाथ ३)
- पायोरियाचिकित्सा—दाऊ दयाल १)
- पारिवारिक चिकित्सा—(होमियो) भट्टाचार्य १०॥)
- पारिवारिक भेषजतत्त्व—(होमियो) भट्टाचार्य ६)
- पाश्चात्य द्रव्यगुण-विज्ञान—(मेटेरिया मेडिका) प्रथम भाग श्रीरामसुशील १२)
- पीपल गुणविधान— अब्दुल्ला ॥)
- पुरुष-रोग— दाऊ दयाल ॥)
- पुरुषेन्द्रिय के रोग—तथा उनकी चिकित्सा ले० टण्डन (होमियो) २)
- पेटन्ट औषधें और भारतवर्ष—दो भाग श्रीविश्वेश्वरदयाल १॥)
- पेटेन्ट औषधें और भारतवर्ष—दो भाग ले० डा० रामकृष्ण (हिं०) ३≡)
- पेठा—श्रीरमेशवेदी ॥)
- पेनिसिलीन व स्ट्रेप्टोमाइसीन तथा मूत्र परीक्षा—राजकुमार १)
- पेसे पैर के चुटकले—ले० गणपतिसिंह ३)
- प्रत्यक्ष औषधि-निर्माण—श्रीविश्वनाथ ३)
- प्रत्यक्षशरीर—ले० श्रीगणनाथ सेन हिन्दी अनुवाद १म भाग सजिल्द यंत्रस्थ
- प्रत्यक्षशरीर—ले० श्रीगणनाथ सेन हिन्दी अनुवाद २रा भाग सजिल्द ८॥)
- प्रत्यक्ष शारीर कोष—श्रीसेन गुप्त ८)
- प्रति संस्कृतनिदान चिकित्सा—संकृत, घनानंदपंत १)
- प्रमाणविज्ञान—पं० जगन्नाथ प्रसाद २॥)
- प्रमेह और अर्शरोग—(आयुर्वेद परिषद निबंधावली) १)
- प्रमेह भास्कर—वैद्य किशोरीदत्त =)॥
- प्रमेहविवेचन—ले० श्रीमहेन्द्रनाथ हिं० २)
- प्रयोग मणिमाला— वैद्यक बांकेलाल ८)
- प्रयोगमंजूषा—ले० कृष्ण बलवन्त ॥≡)
- प्रयोग शतक—भागीरथी स्वामी ।≈)
- प्रयोग साहस्री—(उत्तरखंड) रामदेव १॥=)
- प्रसवविद्या— कान्तिनारायण मिश्र ५)
- प्रसवविज्ञान–धात्रीविद्या—शिवशरण १५)
- प्रसूतितंत्र—डा० काशीनाथ गोखले ३॥)
- प्रसूतितंत्र—ले० डा० रामदयाल कपूर ५)
- प्रसूति विज्ञान—रमानाथ द्विवेदी ९)
- प्राकृतिक चिकित्सा—केदारनाथ गुप्त ४)
- प्राकृतिक चिकित्सा—डा० कुलरंजन ३)
- प्राकृतिकचिकित्सा—हिं०—रामनारायण ॥)
- प्राकृतिकचिकित्सा पथप्रदर्शक—हिन्दी ॥)
- प्राकृतिकचिकित्सा प्रश्नोत्तरी—हिन्दी ॥=)
- प्राकृतिकचिकित्सा सागर—हिन्दी १॥)
- प्राकृतिकजीवन की ओर—(हिं०) ले० जस्ट अनु० विट्ठलदास ३)
- प्राकृतिकज्वर—राधावल्लभ ।≈)
- प्राणाचार्य का शिशुरोगांक— ७)
- " —स्त्रीरोगांक ४॥)
- " —ऊर्ध्वजत्रुजरोगांक ५)
- प्राणिज औषधि—शंकरदाजी हिं. ।–)
- प्रारम्भिक उद्भिद्शास्त्र—(वनस्पति) ले० बलवन्तसिंह ४॥)
- प्रारंभिकजीवविज्ञान—ले० सन्तप्रसाद ३॥)
- प्रारंभिकभौतिकी—निहालकरण ५॥)
- प्रारंभिकरसायन—फूलदेवसहाय ४॥)
- प्रिंस मेटेरिया मेडिका—होमियो डा० सुरेशप्रसाद ५)
- प्लीहा रोगचिकित्सा—ले० ज्ञानचन्द ।)
- प्लीहा के रोग और उनकी चिकित्सा– ।≈)
- पौराणिक वनस्पतियां—केदारनाथ १)
- फल और उनके गुण तथा उपयोग— केशव कुमार ठाकुर २)
- फल संरक्षण—डा० गोरख प्रसाद २॥)
- फलसंरक्षणविज्ञान–ले० युगल किशोर १)
- फलाहार—ले० नारायण प्रसाद (हिं०) १)
- फलाहार चिकित्सा–ले० श्री महेन्द्रनाथ २॥)
- फलों से इलाज—ले० गणपतिसिंह २॥)
- फिटकरी—(स्फटिक) हिन्दी ।=)
- फिटकरीगुणविधान—ले० अब्दुल्ला १॥)
- फिरंगादर्श—हिन्दी (आतशक सुजाक) ॥=)
- फेफड़ों की परीक्षा, रोग व चिकित्सा– सचित्र—शिवशरण ५)
- फुप्फुस सन्निपात चिकित्सा—वैद्य हनुमान प्रसाद जोशी हिं० २॥≡)
- बच्चों की रक्षा—लूई कुने हिन्दी ।=)
- बच्चों के रोग और उनका इलाज—ले० श्रीमहेन्द्रनाथ (हिं०) २)
- वनौषधिचन्द्रोदय—श्रीचन्द्रराजभंडारी संपूर्ण दश भागों में बूटियों सम्बन्धी इतना बड़ा संग्रह हिन्दी में नहीं छपा ४०)
- बबूल–ले० श्रीविश्वेश्वरदयालु (हिं०) ।=)
- बबूल–गुणविधान—ले० मु. अब्दुल्ला ॥)
- ब्रह्मचर्य-मीमांसा—विजय बहादुर सिंह १॥)
- ब्रह्मचर्य सन्देश—ले० सत्यव्रत (हिं०) ४॥)
- ब्रह्मचर्य ही जीवन है—स्वा० शिवानन्द १)

चि

रासायनिक चिकित्सा—केवल १२ औषधों से चिकित्सा सुरेश प्रसाद ४)
बायोकेमिक चिकित्सा विज्ञान—भट्टाचार्य (हिं०) ६॥)
बायोकेमिक पाकेट गाइड—ले० डा० सुरेश प्रसाद (हिं०) १)
बालतन्त्र—(कल्याण वैद्य विरचित) २॥)
बालरोगचिकित्सा—दाऊदयाल गुप्त १)
बालरोगचिकित्सा—पं० महावीर प्रसाद १)
बाल बोधोदय—(पाकमाला) ≡)
बुखार का अचूक इलाज—हिन्दी ।≡)
बुखार, खांसी, जुकाम की चिकित्सा— १)
बुढ़ाई की रोक थाम और दीर्घ जीवन— ≡)
बुढ़ापा बीमारी से बचने के उपाय—हिन्दी ॥)
बूटी प्रचार वैद्यक— १॥)
बृहत् कंपाउन्डरी शिक्षा—राजेश २॥)
बृहत् पाकावली—पं० गंगा प्रसाद शर्मा १)
बृहत्पाक-संग्रह—ले० पं० कृष्ण प्रसाद ४)
बृहत्बूटी प्रचार—हिन्दी भाषा सचित्र २॥)
बृहद् इंजेक्शन चिकित्सा—ले० रामविचार हिन्दी ६)
बृहद्योगतरंगिणी—त्रिमल्लभट्ट १८)
बृहद् रसराजसुन्दर—श्रीदत्तराम १२)
बृहदासवारिष्टसंग्रह—कविराजदेवी सिंह ३॥)
बृहदासवारिष्ट संग्रह—कृष्णप्रसाद त्रिवेदी, दो भाग तीसरा संस्करण ७)
बृहन्निघंटु रत्नाकर—ला० सालिगराम कृत सप्तम अष्टम भाग बूटी २४)
बृहन्निघंटुरत्नाकर—हिन्दीटीका सहित चतुर्थ भाग (चिकित्सा खंड ८) पंचम भाग (रोगों का कर्म विपाक) १६)
बोपदेवशतक—हिन्दीटीका सहित ॥≡)
भस्म और रसायन—वेणी प्रसाद ।≡)
भारतभैषज्यरत्नाकर—संपूर्ण पांच भागों में हिन्दीटीका—(तीसरा भाग नहीं मिलता) चार भाग ४०)

भारतीय औषधावली तथा होमियो-पेटेन्टमेडीसीन—सुरेशप्रसाद १॥)
भारतीय जड़ीबूटी—ले० गणपतिसिंह (संन्यासियों की गुप्तबूटियां) ५॥)
भारतीय जड़ी बूटी अंक रसायन—ले० गणपति सिंह १॥)
भारतीय जीवाणु विज्ञान—ले० रघुवीर १॥)
भारतीय वनौषधि परिचय—ले० डा० विश्वास-बंगाली भाषा में बंगलाक्षर २२)
भारतीय भौतिक विज्ञान—ले० जगन्नाथ ॥)
भारतीय रसपद्धति—ले० श्रीअत्रिदेव १॥)
भारतीय रसायनशास्त्र—ले० विश्वेश्वर १)
भावप्रकाश—मूल संस्कृत पूर्वार्द्ध ३), मध्यमोत्तर खंड ७), संपूर्ण १०)
भावप्रकाश—मूल संस्कृत स्थूलाक्षर संपूर्ण बंबई ८)
भावप्रकाश—विद्योतिनी हिन्दीटीका सहित बारीक टाईप संपूर्ण ३०)
„ पूर्वार्द्ध १२) मध्यमोत्तर २०)
भावप्रकाश—ला. शालिग्राम कृत सरल हिन्दी टीका स्थूलाक्षर बंबई २५)
भावप्रकाशनिघण्टु—सटिप्पण मूल १॥)
भावप्रकाशनिघंटु—आचार्य श्रीविश्वनाथ जी द्विवेदी कृत ललितार्थ करी अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी टीका सहित परिवर्धित तृतीयावृत्ति ७)
भिन्न भिन्न रोगों का प्राकृतिक इलाज— १)
भेषजलक्षणसंग्रह—भट्टाचार्य हिं० वृहत् होमियो मेटेरियामेडिका २६॥)
भेषजविधान—(होमियो) भट्टाचार्य ७॥)
भैषज्यकल्पना—ले० श्रीअत्रिदेव गुप्त १॥)
भैषज्यरत्नावली—मूलमात्र संस्कृत ४)
भैषज्यरत्नावली—विनोदलाल सेन कृत संस्कृतटीका सहित ७॥)
भैषज्यरत्नावली—अनेक ग्रन्थों के सिद्ध-हस्त टीकाकार सुप्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य श्रीजयदेवजी विद्यालंकार कृत अत्यन्त सरल तथा सब गूढ़ अर्थों को खोलनेवाली हिन्दीटीका सहित जितने योग इस संस्करण में हैं उतने आज तक किसी संस्करण में नहीं छपे। छठा संस्करण बहुत परिवर्धित होकर ग्लेज कागज पर अभी छपा है। १०॥)
भेषजरहस्य—(होमियो) डा० टण्डन ३॥)
भैषजसार—ले० डा० सुरेशप्रसाद (होमियो) २)
भोजन और स्वास्थ्य पर गांधी जी के प्रयोग— २)
भोजन क्यों और कैसे? —डा० सुरेन्द्र ४)
भोजनविधि—व रोग और पथ्यापथ्य—हिं० ले० श्रीकेदारनाथ २)
भोजन ही अमृत है—ले० श्रीमहेन्द्रनाथ १॥)
मकरध्वज—चन्द्रोदय और स्वर्ण सिन्दूर बनाने की विधि ॥≡)
मखजन उल मुफरदात—युनानी हिन्दी २)
मट्ठा उसके गुण तथा उपयोग—ले० श्रीमहेन्द्रनाथ (हिं०) १)
मदनपाल निघंटु—मूल संस्कृत १)
मदनपाल निघंटु—भाषानुवाद पं० शक्तिधर कृत ३) भाषाटीका ५)
मधु के उपयोग—(हिन्दी) केदारनाथ १)
मधुचिकित्सा—(हिन्दी) ले० रामचन्द्र ।−)
मधुगुणविधान—डा० गणपति सिंह १॥)
मधुमेह—ले० श्रीपरशुराम शास्त्री हि. १)
मधुमेह चिकित्सा—ले० श्रीमहेन्द्रनाथ ।≡)
मन्थरज्वरविज्ञान—ले० श्रीहरिशरणानंद २)
मन्थरज्वरचिकित्सा—ले० कविराज हरिवल्लभ (हिन्दी) २)
मर्मविज्ञान—ले० श्रीरामरक्ष पाठक ३॥)
मल-मूत्र रक्तादि परीक्षा—एलोपैथिक ढंग—शिवदयाल गुप्त सचित्र २॥)
मलावरोध चिकित्सा—युगल किशोर १॥)
मलेरिया—श्रीमनमोहन धूप—मलेरिया पर इससे बढ़कर कोई पुस्तक नहीं छपी (एलोपैथिक) नवीनतम औषधियों के वर्णन सहित २)
मलेरिया और कालाजार चिकित्सा—हिन्दी, एलोपैथिक १॥)
मलेरिया अंक (रसायन का) ॥)
मलेरिया मोतीझरा—युगलकिशोर १)
मलेरिया विज्ञान— १)
महामारी विवेचन—हिन्दीटीका सहित ॥≡)
महिलाओं के गुप्तरोग— १॥)
मॉडर्न मेडिकल ट्रीटमेंट—ले० डा० एम० एल० गुजराल। हिन्दी अनुवाद एलोपैथी के चिकित्सा के लिये अत्यन्त उपयोगी यंत्रस्थ
माधवनिदान—सुधालहरी टिप्पणीसहित १॥)
माधवनिदान—मधुकोष आतंकदर्पण दो संस्कृतटीका सहित ८॥)
माधवनिदान—मधुकोष सं० टीका तथा मूल और मधुकोष का हिन्दी अनुवादसहित पं० दीनानाथकृत संपूर्ण १२)
माधवनिदान—मधुकोष संस्कृत टी० तथा विद्योतनी हिन्दी टीका पूर्व ७)
माधवनिदान—हरिनारायण भाषा टीका ४)
माधवनिदान—माधवी हिन्दी टी. सहित २॥)
माधवनिदान—पं० लालचन्दजीकृत सर्वांगसुन्दरी हिन्दी टीका ४॥)
माधवनिदान—पं० दत्तरामचौबेकृत हिन्दीटीका सहित बंबई ६)
माधवनिदान—पं० चण्डिका प्रसाद ६)
माधवनिदान—पं० सुदर्शनलाल हिन्दी ६)
मानवशरीर रहस्य—ले० डा० मुकुन्द स्व० ३॥)
मानवशरीर रहस्य—ले० दूसरा भाग ४॥)
मानवसंतति प्रसूतिशास्त्र—(युवतिसखा) कविराजबलवंत सिंह कृत १॥)
मानसरोगविज्ञान—ले० डा० बालकृष्ण ५॥)
मानसिक चिकित्सा—ले० लालजीराम ४)
मानसिक रोगविज्ञान—ले० श्रीजगन्नाथ ४)

मिक्सचर (एलोपैथिक)-- ले० डा० सुरेशप्रसाद हिन्दी ४)
मिर्च—ले० रमेशवेदी हिन्दी (अनेक रोगों में उपयोगिता) १)
मिदवाइफरी—दार्ईगिरिशिक्षा बसन्तीरानी २॥)
मीजान तिब्ब—अथवा सर्वाङ्ग चिकित्सा ३॥)
मूत्ररोग विज्ञान—श्रीजगन्नाथ हिन्दी २॥)
मूत्रपरीक्षा--भट्टाचार्य (होमियो) ॥=)
मूत्रपरीक्षा--पाश्चात्यमतानुसार--शिवशरण १॥)
मूत्रपरीक्षा--ले० श्रीरामकृष्ण हिन्दी १)
मूत्रपरीक्षा--ले० डा० टण्डन (होमियो) ॥)
मूत्र-विज्ञान--डा० आशानंद १॥)
मेडिकलप्रैक्टिशनर—डा० चौहाण ५)
मैषज्यविनोद—श्रीमेघमुनिप्रणीत— सरल हिन्दी में। हर बीमारी का शर्तिया सरल इलाज। दवाइयां भी वह जो आसानी से बाजार में मिल सकें और पैसों में ही आ सकें। द्वितीयावृत्ति ६)
मैं तन्दुरुस्त हूँ या बीमार—ले० डा० कूईकूने हिन्दी ॥)
मोटापा दूर करने के उपाय—ले० रामनारायण मिश्र १)
यकृत और प्लीहा के रोग—हिन्दी पं० विश्वेश्वर दयालु ॥)
यकृत के रोग और उनकी चिकित्सा— २)
यूनानी चिकित्सा विधि—अर्थात् यूनानी का फार्माकोपिया लेखक हकीम मन्साराम। हर रोग के लिये यूनानी इलाज किस प्रकार करना चाहिये उसी का पूरा तरीका दिया है किस हालत में कौन दवाई देनी। शरीर परिचय सहित हिन्दी ५)
यूनानी चिकित्सा विज्ञान—डा० दलजीत १०)
यूनानी चिकित्सासागर—ले० हकीम मन्साराम—इसमें यूनानी के प्रायः सभी अजमाये हुये नुस्खे दिये हैं। जिस रोग पर काम आते हैं वह भी लिखा है। उनके बनाने के तरीके भी लिखे हैं। हर प्रकार के अर्क, शर्बत, माजून, चटनी इत्यादि कोई भी चीज छूटी नहीं अर्थात् यूनानी में जो भी जानने योग्य नुस्खा है इसमें सब दिया है। १०)
यूनानीद्रव्य गुणविज्ञान—ले० दलजीतसिंह २२)
यूनानी शब्दकोष—अर्थात् अरबी फारसी के शब्दों का हिन्दी ।=)
यूनानीसिद्धयोगसंग्रह—ले० ठाकुर दलजीत सिंह २॥)
योग चिकित्सा—अत्रिदेव गुप्त ४)
योगचिकित्सा और सुगम चिकित्सा— ॥)
योगचिन्तामणि—हिन्दीटीका सहित ४)
योगतरंगिणी (त्रिमल्लभट्ट विरचित) ६)
योग महोदधि—भाषा पद्य ।=)
योगरत्न समुच्चय—मूल संस्कृत ३ भाग में प्राचीन ग्रन्थ ५)
योगरत्नाकर—मूलसंस्कृत ७), स्थूल १८॥)
योगशतक—पं० ज्वालाप्रसाद कृत ॥=)
यूनानी चिकित्सासार—हकीम दलजीत ४॥)
यौन मनोविकार—डा० सुरेन्द्र नाथ ॥।=)
यौवन के गुप्त रहस्य— ३)
रक्त के रोग—ले० डा० घाणेकर हिन्दी १०)
रतिमंजरी—हिन्दी टीका सहित ।=) मूल ।)
रतिरत्न प्रदीपिका—मूल ॥), हिन्दी टीका सहित २॥)
रतिरहस्य—श्रीकोक्कोक विरचित संस्कृत टीका सहित ३)
रतिरहस्य—हिन्दीटीका सहित भागीरथ स्वामीकृत ५)
रतिरोग रहस्य—हनुमान प्रसाद गोयल २॥)
रसचिन्तामणि—हिन्दी टीका सहित ३॥)
रसजलनिधि—भूदेव मुकर्जी विरचित अंग्रेजी अनुवाद सहित ३७॥)
रसतन्त्रसार व सिद्ध योगसंग्रह—कालेडा बोगला वालों का प्रथम ९॥) दूसरा भाग ६)
रसतरंगिणी—लाहौर के सुप्रसिद्ध कविराज नरेन्द्रनाथ के आदेशानुसार प्राणाचार्य श्रीसदानन्दजी विरचित तथा श्री पं० हरिदत्तजीकृत संस्कृत टीका तथा कविराज श्रीधर्मानन्द जी कृत रसविज्ञान नामक सरल हिन्दी टीका सहित। पुस्तक कितनी उपयोगी है इसीसे सिद्ध है कि यह इसका पांचवां संस्करण सफेद कागज पर छपा है। इसमें केवल अनुभूत प्रयोग ही लिखे हैं सभी जगह पाठ्य-ग्रन्थ है। मूल्य १०)
रसप्रकाशसुधाकर—मूल संस्कृत-गुजराती टीका सहित ४)
रसप्रदीप—हिन्दीटीका सहित ।)
रसरत्नसमुच्चय—मूलसंस्कृत ३॥)
रसरत्नसमुच्चय—की सरलार्थ प्रकाशिनी संस्कृत टीका केवल ४॥)
रसरत्नसमुच्चय—जीवानंदकृत बोधनी संस्कृतटीका सहित १०)
रसरत्नसमुच्चय—हिन्दीटीका सहित अंबिकादास १०)
रसरत्नसमुच्चय—पं० शंकरदयालु कृत भाषाटीका स्थूलाक्षर १२)
रसरत्नाकर—भाषापद्य १)
रसराजमहोदधि—संपूर्ण पांचों भाग बंबई १०) तथा मथुरा ८)
रसादिपरिज्ञान—जगन्नाथ प्रसाद २)
रसव्यंजनप्रकाश—भगवानदास कृत (अचार, सिरका, चूर्ण, गोली) १=)
रसाध्याय—संस्कृत टीका सहित ॥=)
रसामृत—ले० वैद्य यादव जी त्रिकम जी आचार्य। आचार्य जी का यह जीवनपर्यंत का रसशास्त्र संबंधी अनुभव है। हिन्दीटीका सहित। यह ग्रन्थ विद्यार्थियों को रसशास्त्र के पाठ्यग्रन्थ के रूप में तथा चिकित्सकों को भस्म, पिष्टि, रसयोग आदि के ठीक निर्माण में उपयुक्तमार्गदर्शक हो इस दृष्टि से लिखा गया है। अभी हाल में प्रकाशित हुआ है ५)
रसायनखंड—नित्यनाथसिद्ध कृत मूल ॥)
रसायनतंत्र—हिन्दीटीका ।)
रसायनविधि— १॥)
रसायनसंहिता—हिन्दीटीका १)
रसायनसार—हिन्दी ले० श्यामसुन्दराचार्य ८)
रसार्णव—नाम रसतंत्र—सटिप्पण २)
रसेन्द्रचिन्तामणि—श्रीढुंढकनाथ सिद्ध विरचित हिन्दी टीका ३॥)
रसेन्द्रपुराण—पं० रामप्रसाद कृत हिन्दीटीका ७)
रसेन्द्रभास्कर—हिन्दीटीका सहित (पं० लक्ष्मीनारायण प्रणीत) २॥)
रसेंद्रसारसंग्रह—सटिप्पण १॥)
रसेंद्रसारसंग्रह—गूढ़ार्थ दीपिका संस्कृत टीका ५)
रसेन्द्रसारसंग्रह—विस्तृत हिन्दीटीका सहित श्रीघनानंद पन्त कृत ११)
रसेन्द्रसारसंग्रह—रसायनी भाषाटीका ३)
रसेन्द्रसारसंग्रह—रसचन्द्रिका हिन्दी-टीका ६)
रसेन्द्रसार संग्रह—जीवानंद कृत संस्कृत टीका ३=)
रसोद्धारतंत्र—राजवैद्य जीवराज कालिदास, कृत, गुजराती भाषा ५)
राजकीय औषध योग संग्रह—ले० रघुवीर प्रसाद हिन्दी ७)
राजनिघंटु—नरहरि कृत संस्कृत टीका ३=)
राजनिघंटु संहिता—धन्वन्तरीयनिघंटु मूल ९।=)
राजयक्ष्मा—ले० विश्वेश्वरदयालु हिन्दी ॥)

राजवल्लभनिघंटु—हिन्दी टीका सहित २॥)
रामविनोद—भाषा लखनौ १), बंबई २॥)
रोगिद्रियचिकित्सा—सिद्धयोगसंग्रह ले० रघुवीर प्रसाद हिन्दी १॥)
रिलेसनशिप—ले० डा० श्यामसुन्दर नित्य व्यावहारिक औषधियों का पारस्परिक संबंध) २)
रूपनिघंटु—केवल दो ही भाग छपे हैं हिन्दी ३)
रेपंटरी—दवा चुनने की सर्वोत्तम पुस्तक होमियो भट्टाचार्य १०॥)
रोगनामावली—कोष (रोगनिदर्शिका) तथा वैद्यकीय मानतौल— ले० ठा० दलजीत सिंह ३॥)
रोगनिदान चिकित्सा— २)
रोग परिचय—डा० शिवनाथ खन्ना १२॥)
रोगपरीक्षा पद्धति—ले० डा० आशानंद पंजरत्न हिन्दी ७)
रोगलक्षणसंग्रह—होमियो ≡)
रोगी सुश्रूषा—महेन्द्रनाथ २॥)
रोगी की सेवा और पथ्य—डा० सुरेश प्रसाद ३)
रोगी परिचर्या—रामदयाल कपूर १।।=)
रोगीपरीक्षा—ले० शिवनाथ खन्ना हिं० ६)
रोगोत्पादक मक्खी—ले० जगन्नाथ ।)
रोगों की अचूक चिकित्सा—ले० जानकीशरण हिं० ७)
रोगों की सरल चिकित्सा—ले० श्री बिट्ठलदास प्राकृतिक इलाज ३)
रुग्ण परिचर्या—हिन्दी डा० म्हस्कर ३॥)
लवंगगुण विधान—डा० गणपतसिंह ।)
लहसुन-प्याज—ले० श्रीरामेशवेदी हिन्दी ३)
लक्ष्मीमोदतरङ्गिणी—ले० पं० गणेशदत्त १॥)
वंगसेन—हिन्दीटीका सहित ला० शालिग्रामकृत १८)

वटिका चिकित्सा—पं० रामदेव त्रिपाठी हिन्दी ।।=)
वनस्पति-विज्ञान—शंकरराव जोशी १॥)
वनौषधि चन्द्रोदय—१० भाग ४०)
वनौषधि दर्शिका—बलवन्तसिंह २॥)
वनौषधिशास्त्र—सचित्र भगीरथस्वामी १५)
वर्मा एलोपैथिक चिकित्सा—घर बैठे डाक्टर बनानेवाली अपूर्व पुस्तक। ४०० रोगों का सफल निदान और सिद्ध चिकित्सा। वैद्यों और हकीमों के लिए भी समान उपयोगी। डा० रामनाथ वर्मा की प्रशंसित कृति। १२)
वसवराजीयम्—पूर्वार्ध उत्तरार्ध भाषा ८॥)
वक्षपरीक्षा—(हिं०) भट्टाचार्य २=)
वात्स्यायन के योग—केदारनाथ पाठक ॥)
वादिखंड ऋद्धिखंड—श्रीनित्यनाथ प्रणीत संस्कृत ३)
विटामिन हीनताजनित—डा० सुरेन्द्रनाथ २)
विद्युतविज्ञान चिकित्सा—हरिहर मिश्रा २॥)
विषचिकित्सादर्पण—हिन्दी ।)
विषतन्त्रचिकित्सा प्रकाश—हिन्दी-टीका १॥)
विषविज्ञान—सरल हिन्दी १॥)
वीरसिंहावलोक—मूलसंस्कृत ३॥)
वृन्दमाधव-सिद्धयोग कण्ठदत्त कृत संस्कृत व्याख्या १०=)
वृन्दवैद्यक—(वृन्द प्रणीत) हिन्दीटीका ७)
वृषकल्पद्रुमअर्थात् पशुचिकित्सा—दोहा चौपाई ३।=)
वेद तथा जीवाणुविज्ञान— १)
वेदनाहीन प्रसव—हिन्दी ॥)
वैद्यकलाधर-हिन्दी—निदान तथा कठिन रोगों का सहज उपाय १॥)
वैद्यककल्पद्रुम—हिन्दीटीका सहित पं० रघुनाथ प्रसाद कृत १०॥)
वैद्यक चन्द्रिका—घरेलू वैद्य ।=)

वैद्यकपरिभाषा प्रदीप—हिन्दीटीका सहित बंबई २)
वैद्यक प्रकाश—सुदर्शनलाल द्विवेदी ३)
वैद्यकरसराजमहोदधि—प्रथम २) दूसरा २) तीसरा २) चौथा २॥) पांचवां २॥), संपूर्ण १०)
वैद्यक विज्ञानप्रकाश—चौहान गुजराती भाषा १६)
वैद्यकशब्दकोष—विश्वेश्वरदयालु ।)
वैद्यकशब्दनिधि—ले० गोपीनाथ जी १)
वैद्यकसंग्रह—पं० रामलग्न पाण्डेय १)
वैद्यकसार शंकर—हिन्दी टीका ।।=)
वैद्यकौस्तुभ—श्रीमेवाराममिश्र विरचित संस्कृत २)
वैद्यचन्द्रोदय—त्रिमल्लभट्टकृत हिन्दी-टीका १)
वैद्यजीवन—लोलिंबराजकृत-हिन्दी-टीका १), तथा ॥)
वैद्य जीवन—संस्कृत तथा हिन्दी टीका ३॥)
वैद्यमनोत्सव—हिन्दी (नैनसुख) ॥)
वैद्यमनोरमा—धाराकल्प—कालिदास कृत, हिन्दीटीका १॥)
वैद्यरहस्य—(विद्यापति प्रणीत) हिन्दी टीका ५)
वैद्यवल्लभ—हस्तिरुचिकृत, भाषा टीका १)
वैद्यावतंस—(बंबई) ।=)
वैद्यविनोदसंहिता—शंकरभट्ट ३॥)
वैद्यविशारद प्रश्नोत्तरी—योगेशचन्द्र शुक्ल ४)
वैद्यसर्वस्व—ज्वाला प्रसाद टीका ।।=)
वैद्य-सहचर—श्रीविश्वनाथ द्विवेदी ३)
व्रण बंधन—डा० श्रीवास्तव ४)
व्रणोपचारपद्धति—महावीर प्रसाद ॥)
व्यवहारायुर्वेद—अर्थात् कानूनीवैद्य—श्रीकृष्णबलवन्त हिन्दी ३॥)

व्यवहारायुर्वेद और विष विज्ञान—युगलकिशोर ४॥)
व्यवहारायुर्वेद और विषतंत्र—(न्याय-वैद्यक) अत्रिदेव ६)
व्याधिनिग्रहप्रशस्तौषधसंग्रह—मूल-संस्कृत १॥)
व्याधिविज्ञान—डा० आशानन्द कृत। रोगों के ज्ञान के लिये अद्भुत ग्रन्थ है अनेकों चित्र सहित प्रथम भाग चतुर्थ संस्करण ९) दूसरा भाग ९)
व्यायाम और शारीरिक विकास—ले० अशोककुमार २॥)
व्यायाम कल्प—युगल किशोर २)
शरीरक्रियाविज्ञान—ले० श्रीरणजीतराय हिन्दी ६)
शरीर-तत्वदर्शन—पी. बी. किर्लोस्कर ६)
शरीर परिचय—जगन्नाथ प्रसाद १)
शरीरपरिभाषा—अंग्रेजी से संस्कृत, संस्कृत से अंग्रेजी ३)
शारीर प्रदीपिका—डा० मुकुन्द स्वरूप ५)
शरीर संबंधी चित्र नकशे पांच रंगीन २०)
शरीररचना—ले० डा० टण्डन २॥)
शरीर विद्या—बंगला में रुद्रकुमार पाल कृत १२)
शरीर विज्ञान—ले० डा० भावे हिन्दी २॥)
शरीरविज्ञान और तात्कालिक चिकित्सा—केदारनाथ गुप्त १)
शरीरविज्ञान और स्वास्थ्य—श्रीमती रानी टण्डन २॥)
शल्यतंत्रम्—पं० धर्मदत्त शास्त्री २॥)
शर्बत संग्रह—प्यारेलाल १॥)
शर्बतों का रोजगार— ॥)
शहद—ले० रमेशवेदी हिन्दी ३)
शहद के गुण और उपयोग—ले० श्री महेन्द्रनाथ ॥)

शारीरिकोन्नति--ले० श्रीठाकुरदत्त अमृतधारा २)
शार्ङ्गधर संहिता--मूल संस्कृत अंजन निदान सहित गुटका २)
शार्ङ्गधर संहिता—दीपिका तथा गूढ़ार्थ दीपिका दो सं० व्याख्या ८)
शार्ङ्गधर संहिता--आढमल्ल कृत दीपिका सं० व्याख्या ३॥)
शार्ङ्गधर संहिता--सुबोधिनी हिं. टी. ६)
शार्ङ्गधर संहिता--रामप्रसाद कृत हिन्दी टीका ७)
शार्ङ्गधर संहिता--श्यामा हिन्दी टीका ४)
शार्ङ्गधर संहिता--भाषाटीका ५)
शार्ङ्गधर संहिता--पं० दुर्गादत्त कृत भाषाटीका ८)
शालिहोत्र--संस्कृत भोजविरचित कुलकर्णी संपादित ८)
शालिहोत्र—बड़ा सचित्र भाषा २) तथा बंबई ५।)
शालाक्यतंत्र—श्रीरमानाथ द्विवेदी ८)
शालिहोत्र—छन्दोबद्ध १।) भाषा-वार्तिक ॥=)
शालिग्रामौषधि शब्दसागर—आयुर्वेदीय शब्दकोष सं० से हिन्दी ४॥)
शिफा उल अमराज—यूनानी दो भाग में २॥)
शिरोरोग विज्ञान--पं० जगन्नाथ ४)
शिवनाथ सागर हिन्दी—डा० शिवनाथ सिंह ७)
शिशुपालन-- ४)
शिशुपालन--नर्मदेश्वर शर्मा १)
शिशुपालन--कविराज बलवन्त सिंह हिन्दी १॥)
शीतला परिहार--अर्थात् आरोग्यामृत बिन्दु २॥)
शुभसन्ततियोगप्रकाश—हिन्दी टीका २॥)
शस्टर साहब की बारह दवाइयां ३)

श्वासरोग चिकित्सा—गोकुल प्रसाद ।=)
संक्रामक पशुरोग चिकित्सा—ले० डा० राजेन्द्र प्रसाद ५॥~)
संक्रामकरोग विज्ञान ६)
संगतरा गुणविधान--हिन्दी ।=)
संजीवनीविद्या— ॥)
संतति निरोध—कब, क्यों और कैसे डा० सुरेन्द्रनाथ २)
संतानमंजरी— ।~)
संतानशास्त्र—ले० पं० गणेशदत्त हिन्दी ५)
संदिग्धनिर्णय वनौषधिशास्त्र—श्रीभागीरथस्वामिविरचित सचित्र १५)
संन्यासी चिकित्सा शास्त्र–अथवा साधू की चुटकी ५)
संस्कारविधि विमर्श—ले० श्री अत्रि-देवगुप्त-चिकित्सा—प्रजनन और प्रजा शास्त्र के आधार पर ३)
संक्षिप्त औषधपरिचय--हिन्दी ॥=)
संक्षिप्तपारिवारिक चिकित्सा— २=)
संक्षिप्तशल्यविज्ञान--ले० डा० मुकुन्द स्वरूप हिन्दी सचित्र ८)
संक्षिप्त होमियोगृह चिकित्सा–डा. टंडन १॥)
संज्ञापंचकविमर्श—संस्कृत–म. म. गणनाथसेन कृत ३)
सचित्र करामात— १॥)
सचित्र नेत्र रोगविज्ञान—डा० शिवदयाल गुप्त ८)
सचित्रवनस्पति गुणादर्श—(प्रथमभाग) ले० श्रीहीरामन हिन्दी २॥)
सरल पाकविज्ञान—ज्योतिर्मयी ठाकुर ४॥)
सरलरोगविज्ञान—ले० श्रीरवीन्द्र शास्त्री हिन्दी ५)
सरलविषविज्ञान—युगलकिशोर हिं० १॥)
सरलशरीरविज्ञान—ले० नारायणदास १॥)
सरलस्वास्थ्य विज्ञान--पी. पी. विश्वकर्मा, ३ भाग; ॥=), ॥), ॥), पूर्ण २=)
सर्जरी--भोलानाथ टंडन ३॥)

सर्दी जुकाम खांसी—ले० डा० अल्सेकर हिन्दी अनुवाद ॥)
सचित्र-इन्जेक्शन विज्ञान—चूनीलाल ५)
साधारण–रसायन—दो भाग, फूलदेव-सहाय कृत ११)
सिद्धपरीक्षा-पद्धति—प्रथमखंड—कालेडा बोगलावालों का ८)
सिद्धप्रयोग दो भाग—ले० विश्वेश्वर दयालु १॥)
सिद्धभैषज्यमणिमाला--सटिप्पण संस्कृत ६॥)
सिद्ध भैषज्यसंग्रह—युगलकिशोर गुप्त—साधारण संस्करण ७), उत्तम ८) राज-संस्करण ९)
सिद्धमृत्युञ्जययोग—५३ सिद्धप्रयोग हिन्दी १)
सिद्धयोगसंग्रह--ले० आचार्य यादव जी त्रिकमजी हिन्दी २॥)
सिद्धरसायन--ले० मोरे वैद्यरत्न हिं० ५)
सिद्धान्तनिदान—ले० श्रीगणनाथसेन—संस्कृत में दो भागों में ११)
सिद्धौषधिप्रकाश—ले० पं० बालमुकुन्द वैद्यशास्त्री हिन्दी १॥)
सुलभचिकित्सा सागर—प्रथम भाग वैद्य शास्त्री सदानन्दकृत हिन्दी २।)
सुश्रुतसंहिता—मूल-शस्त्र परिचायक परिशिष्ट सहित ८)
सुश्रुतसंहिता—सूत्रस्थान-भानुमति संस्कृतटीका सहित अनुवाद ४)
सुश्रुतसंहिता--कविराज श्रीअत्रिदेवगुप्त कृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित संपूर्ण ग्रन्थ एक ही जिल्द में २०)
सुश्रुतसंहिता—(शारीरस्थान केवल) डा० जे० डी० शर्माकृत विवेचनात्मक तथा पाश्चात्यमत से तुलनात्मक अति विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित सचित्र ५)

सुश्रुतसंहिता—केवल शारीरस्थान-प्रभा, दर्पण हिन्दी टीका सहित ३)
सुश्रुतसंहिता—केवल शारीरस्थान–डा० घाणेकरकृत हिन्दी टीका ८)
सुश्रुतसंहिता—केवल, शारीरस्थान मुरलीधरकृत हिन्दीटीका २॥)
सुश्रुतसंहिता—सूत्र-निदान प्रथमभाग घाणेकर १०)
सुश्रुतसंहिता—सूत्रस्थान, नया संस्करण, डा० घाणेकर ९)
सुश्रुतसंहिता—सूत्र निदान प्रथम भाग ७)
सुश्रुतसंहिता—उत्तरतंत्र मुरलीधर शर्मा १०)
सुषेणवैद्यक--हिन्दीटीका सहित २)
सूचीवेधविज्ञान--ले० आचार्य श्रीरमेश चन्द्र। इन्जेक्शन के ऊपर इससे सरल तथा विषय को ठीक तरह समझाने वाला ग्रन्थ आजतक नहीं छपा । दो भागों में । १००० से ऊपर इंजेक्शन परिवर्द्धित तथा संशोधित संस्करण छपता है ।
सूचीवेधविज्ञान—ले० श्रीराजकुमार हिन्दी १॥)
सूर्यकिरणचिकित्सा—हीरालाल १)
सूर्यरश्मिचिकित्सा—(अर्थात् सूर्य-किरण चिकित्सा) ॥)
सोजाकचिकित्सा—ले० पं० गणेशदत्त ।।)
सोंठ--ले० श्रीरमेशवेदी हिन्दी १।।)
सौश्रुती-ले० श्रीरामनाथ द्विवेदी हिन्दी ७॥)
स्टैथेस्कोपविज्ञान—छातीपरीक्षा—ले० डा० टण्डन हिन्दी ।।)
स्टैथेस्कोपविज्ञान—रामविचार पाण्डेय १)
स्टैथस्कोपविज्ञान--डा० श्यामसुन्दर १)
स्नानचिकित्सा-ले० श्रीरवीन्द्रनाथ हिन्दी ।।)
स्वप्नदोषरक्षक--हिन्दी इन्द्रविरचित ।।)
स्वप्नदोषविज्ञान—सरल हिन्दी स्वप्नदोष की चिकित्सा पं० गणेशदत्त २)

स्वप्नदोष और वीर्यसंजीवन—अमरचंद २)
स्वयंचिकित्सक–डा० राधावल्लभ पाठक ३)
स्वर्णक्षीरी गुणविधान—ले० श्रीगणपति सिंह ॥)
स्वस्थ और सुखीसंतान—हनुमान प्रसाद गोयल १॥)
स्वस्थवृत्तसमुच्चय—ले० श्रीराजेश्वरदत्त हिन्दी टीका सहित ६॥)
स्वाभाविक भोजन—युगलकिशोर ॥)
स्वास्थ्य और जल चिकित्सा—केदार नाथ गुप्त २)
स्वास्थ्य और व्यायाम—केशवकुमार ठाकुर २)
स्वास्थ्य और सद्वृत्त—ले० श्री अत्रिदेव गुप्त २)
स्वास्थ्य के लिये शाक तरकारियाँ—ले० श्रीमहेन्द्रनाथ २)
स्वास्थ्य कैसे पाया ?—बिट्ठलदास मोदी १॥)
स्वास्थ्य परिचय—देवेन्द्रभट्टाचार्य ।=)
स्वस्थ्यप्रदीपिका—डा० मुकुन्दस्वरूप १॥)
स्वास्थ्यरक्षा—ले० श्रीहरिदासवैद्य ५)
स्वास्थ्यविज्ञान—ले० डा० घाणेकर (हिन्दी) ६)
स्वास्थ्य विज्ञान—ले० डा० मुकुन्दस्वरूप हिन्दी ७)
स्वास्थ्यसाधन–ले० रामदासगौड़ हिन्दी ३॥)
स्वास्थ्य संहिता—श्रीनानकचंद हिं० २॥)
स्त्रियों का स्वास्थ्य और रोग—ले० श्रीअत्रिदेव गुप्त—युवतियों के जानने योग्य विवाहितों के पढ़ने योग्य, तथा डाक्टरों के बरतने योग्य ३)
स्त्रीचिकित्सा—हिन्दी टीका सहित ॥=)
स्त्रीपुरुषसंजीवन—हिन्दीटीका सहित ॥।=)
स्त्रीरोगचिकित्सा—ले० भट्टाचार्य होमियो ४)
स्त्रीरोगचिकित्सा–श्रीविश्वेश्वर दयालु हिं १)
स्त्रीरोगचिकित्सा–डा० टण्डन (होमियो) २॥)
स्त्रीरोगचिकित्सा—डा० शर्मा कृत, सचित्र (होमियो) ४॥)
स्त्रीरोगचिकित्सा—दाऊदयाल १)
स्त्रीरोगों की गृहचिकित्सा—कुलरंजन मुखर्जी २॥)
स्त्रीविज्ञान—(प्रसूतिशास्त्र) प्रथम भाग सचित्र डा० अन्तुभाई १०)
हँसराजनिदान—हिन्दीटीका सहित २), २॥)
हम सौ वर्ष कैसे जियें !–केदारनाथ गुप्त २)
हमारा भोजन—ले० श्रीमहेन्द्रनाथ हिं० ४)
हमारेबच्चे—ले० श्रीमहेन्द्रनाथ १।॥)
हमारे भोजन की समस्या—राम अवध १॥)
हमारे भोजन की समस्या–अत्रिदेव गुप्त १।॥)
हमारे शरीर की रचना–ले० श्रीत्रिलोकीनाथ वर्मा संपूर्ण दो भागों में सचित्र, २५।॥) पृथक् २ भी मिलते हैं प्रथम भाग १०=) दूसरा भाग १५॥=)
हरमेखला—माहुक विरचित संस्कृत टीका दो भाग २।=)
हरिधारित ग्रन्थरत्न—श्रीवासुदेव हिं० टीका ।=)
हल्दी—हिन्दी ।=) तथा १)
हस्त्यायुर्वेद—पाल्काप्यमुनि विरचित संस्कृत ११-)
हमें क्या खाना चाहिये—हिं० ॥)
हारीत संहिता—हिन्दीटीका ८॥)
हिक्मतप्रकाश—संस्कृतटीका सहित (महादेव विरचित) ३)
हितोपदेश वैद्यक—श्रीकण्ठकृत हिन्दीटीका ३)
हिन्दी मेटेरिया मेडिका—होमियो दो भाग, रवि प्रसाद कृत ३॥)
हिन्दी होमियो फार्म कोपिया—ले० डा० टंडन २)
हृदय परीक्षा—डा० रमेशचन्द्र वर्मा, कृत, आधुनिक प्रणालियों से हृदय परीक्षा को सरलतम रूप में समझाने वाली, सचित्र उपयोगी पुस्तक स्टेथेस्कोप का प्रयोग चुटकी बजाते आ जायगा। २)
हैजा चिकित्सा—ले० डा० श्यामसुन्दर (होमियो) १)
हैजा चिकित्सा—भट्टाचार्य १॥=)
हैजा या कालरा तथा उसका प्रतिकार और चिकित्सा—हि० ले० डा० टंडन २)
होमियो इंजेक्शन चिकित्सा—ले० डा० सुरेशप्रसाद १।॥)
होमियो कम्परेटिव प्रिंस मेटेरिया मेडिका— ८)
होमियो चिकित्सा विज्ञान—श्यामसुन्दर ३॥)
होमियो टाइफाइड चिकित्सा—डा० सुरेशप्रसाद ।॥)
होमियो थाइसिस चिकित्सा—डा० सुरेश प्रसाद ।॥)
होमियो न्यूमोनिया चिकित्सा—डा० सुरेशप्रसाद ।॥)
होमियो पशु चिकित्सा—डा० गंगाधर मिश्र २)
होमियो पाकेट गाइड—डा० सुरेशप्रसाद १)
होमियोपैथिक चिकित्सा—हिन्दी ८)
होमियो पारिवारिक चिकित्सा—डा० सुरेशप्रसाद ३॥)
होमियोपैथिक चिकित्सा विज्ञान—ले० डा० बालकृष्ण अत्यपयोगी ५)
होमियो पैथिक चिकित्सा सिद्धान्त—ले० डा० बालकृष्ण अत्यपयोगी २)
होमियो पैथिक नुस्खा—डा० श्यामसुन्दर १॥)
होमियोपैथिक-पारिवारिक—हिन्दी भट्टाचार्य दो भागों में १०॥=)
होमियो पैथिक मेटेरियामेडिका—बृहद् दो भागों में १३)
होमियो मेटेरिया मेडिका—डा० एस० मुकर्जी २५)
„ „ „ प्रबोधचन्द्र ५)
होमियो पैथिक सारसंग्रह— १।॥)
होमियोपैथिक स्त्री चिकित्सा — ४)
क्षयचिकित्सा—रामनाथ दुबे २)
क्षय रोग चिकित्सा— २॥)
क्षारनिर्माणविज्ञान–ले० हरिशरण नन्द ॥)
त्रिदोषतत्त्वविमर्श–ले० रामरक्ष पाठक २॥=)
त्रिदोषमीमांसा—ले० हरिशरणानन्द २॥)
त्रिदोषविज्ञान—ले० उपेन्द्रनाथदास २॥)
त्रिदोषालोक—विश्वनाथ द्विवेदी २)
त्रिफला—ले० श्री रमेशवेदी ३॥)
त्रिशतिवद्यक–संस्कृतटीका हिन्दी टीका सहित २॥)

वर्मा एलोपैथिक चिकित्सा

चिकित्सा-साहित्य में अभूतपूर्व ग्रन्थ डा० रामनाथ वर्मा की नई रचना

३० वर्ष की चिकित्सा का महत्वपूर्ण अनुभव रखनेवाले डा० रामनाथ वर्मा की **'एलोपैथिक गाइड'** और **'एलोपैथिक निघंटु'** ने चिकित्सा-साहित्य में तहलका मचा दिया है। दोनों पुस्तकें ऐसी लोकप्रिय हुई हैं कि सुदूर देहातों तक में फैल गई हैं, उनके संस्करण तैयार होते ही हाथों-हाथ बिक जाते हैं।

'एलोपैथिक चिकित्सा' इन्हीं **डा० वर्मा** की नई एवं और भी अधिक महत्वपूर्ण रचना है। इसमें उपसर्गजन्यरोग, वातरोग, मांस-पेशियों के रोग, श्वासोच्छ्वास के अङ्गों के रोग, हृदय के रोग, रक्तवाहिनियों के रोग, मुँह, कंठमूल-ग्रंथि और कंठ के रोग, थूक पैदा करनेवाली ग्रंथियों के रोग, अन्नप्रणाली के रोग, आमाशय के रोग, अन्त्र रोग, यकृत-रोग, क्लोमग्रंथि के रोग, उदरकला के रोग, रक्त के रोग, प्लीहा के रोग, लसीका ग्रंथियों के रोग, प्रणाली-विहीन ग्रंथियों के रोग, मूत्र यंत्र के रोग, चर्म रोग, अस्थियों और संधियों के रोग, नेत्र रोग, कर्ण रोग, मसूढ़ों और दाँतों के रोग, स्त्री रोग और बाल रोग आदि सभी प्रमुख २ चारसौ रोगों की अनुभवपूर्ण चिकित्सा विस्तार के साथ लिखी गई है। लेखक का दावा है कि कोई भी मुख्य रोग छूट नहीं पाया।

पुस्तक के प्रारम्भ में और परिशिष्ट में ऐसी कितनी ही बातें बताई गई हैं जिन्हें लाख रुपये की बात कहा जा सकता है और जिनको जान लेने के बाद कोई चिकित्सक कहीं धोखा नहीं खा सकता।

पुस्तक की भाषा अत्यन्तसरल और वर्णन करने की शैली पर्याप्त सुविधापूर्ण है।

महापण्डित **राहुलसांकृत्यायन,** पाकिस्तान में भारत के भूतपूर्व हाई कमिश्नर **सर सीताराम,** महाविद्यालय ज्वालापुर के कुलपति **श्री नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ** और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान् **श्री सत्यकेतु विद्यालंकर** आदि महानुभावों ने पुस्तक की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है।

विद्यार्थी एवं चिकित्सक बन्धु इस पुस्तक की इतनी उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा कर रहे थे कि प्रथम संस्करण की अधिकांश प्रतियाँ छपते ही समाप्त हो गई हैं। काफी बड़ी संख्या में छपवाने के बाद भी बहुत थोड़ी प्रतियाँ बची हैं।

नये मोनो टाइप की नयनाभिराम छपाई, बढ़िया ग्लेज कागज, २०×३०×१६ के लगभग ५५० पृष्ठ कपड़े की पक्की जिल्द—मूल्य केवल १२)।

अर्घ-मार्तण्ड

[तेजी मन्दी का अनुपम ग्रन्थ]

पञ्चाङ्गकर्ता

राजज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभजी कृत

इस ग्रन्थरत्न में रुई, सूत, वस्त्र, शेयर, ऊन, सोना, चांदी, तांबा लोहा आदि धातु तथा गुड़, खांड, रसकस, इलायची, कालीमिर्च, मसाला, मूंगफली, करयाना, जवाहरात, घृत, तिल, तेल, सरसों, बाजरा, अलसी, गेहूं, चावल, खब्बी, बिनौला, लकड़ी, रंग आदि प्रत्येक वस्तु की तेजी मन्दी के उत्तम अचूक सुनहरे चान्सों के योग सरल हिन्दी भाषा में दिल खोलकर लिखे गये हैं। जिन योगों को हजारों रुपये खर्च करने पर भी ज्योतिषी लोग नहीं बतलाते थे वे सब तेजी मन्दी के अनुभव सिद्ध गुप्त भेद २५ वर्ष की जांच के बाद लिखे गये हैं। ऐसा ग्रन्थ अन्यत्र संसार की किसी भाषा में भी छपा हुआ नहीं मिलेगा। यदि आप धन कमाकर लक्षाधीश बनना चाहें तो इसे मँगाकर देखने में देरी न करें। ग्रंथ के अन्त में सर्वोपकारार्थ लक्ष्मीप्राप्ति के सिद्ध प्रयोग भी लिख दिये हैं जिनके करने से निर्भाग्य निर्धन भी लक्ष्मीयुक्त (धनीमानी) होकर सर्वसुख ऐश्वर्य की जिन्दगी भोग सकता है। व्यापारियों का तो यह जीवन ही है। ऐसे अनुपमग्रंथ को अविश्वास करके न मंगाना दुर्भाग्य ही होता है। व्यापार में हानि उठाये हुए गरीब व्यापारी भी यदि इस ग्रन्थ को गौर से विचारेंगे तो वह भी कभी न कभी अपना घाटा पूरा कर ही लेंगे इसमें संदेह नहीं। यह सदैव काम आनेवाली पुस्तक बढ़िया कागज तथा कपड़े की पक्की जिल्द सहित तैयार हुई है, मूल्य १०) रुपये। यह पृष्ठों का मूल्य नहीं, गुण की भेंट मात्र है। इस पुस्तक से अनेकों व्यापारियों ने लाभ उठाकर धन्यवाद-पत्र भेजे हैं और बहुत सज्जनों ने इनाम देकर ग्रन्थ-लेखक को सम्मानित भी किया है। ८५४ को श्रीकृष्णभारतीय गुप्त धमोरा से लिखते हैं—आपके लिखे गये योग तेजी मन्दी के ९५ प्रतिशत सही हैं "अर्घ-मार्तण्ड" वास्तव में अमूल्यनिधि है, इत्यादि अनेकों पत्र प्राप्त हैं।

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का पताः—

मोतीलाल बनारसीदास, पो० ब० ७५, नेपालीखपरा, बनारस।

मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक-विक्रेता, पो० बक्स ७५, बनारस।

किनारी बाजार—देहली

बाँकीपुर—पटना

प्रकाशक—सुन्दरलाल जैन, अध्यक्ष मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक-विक्रेता, नेपालीखपरा, बनारस। मुद्रक—शान्तिलाल जैन, जैनेन्द्र प्रेस, नेपाली खपरा, बनारस।